Shyam -Vidya Classes

(A synonym of success for Ayurveda P.G. Entrance)

MPPSC (Ayurved M.O.) + MD/MS Entrance Exam. Notes

Mob. - 09826438399, 09993961427

" चरक संहिता "

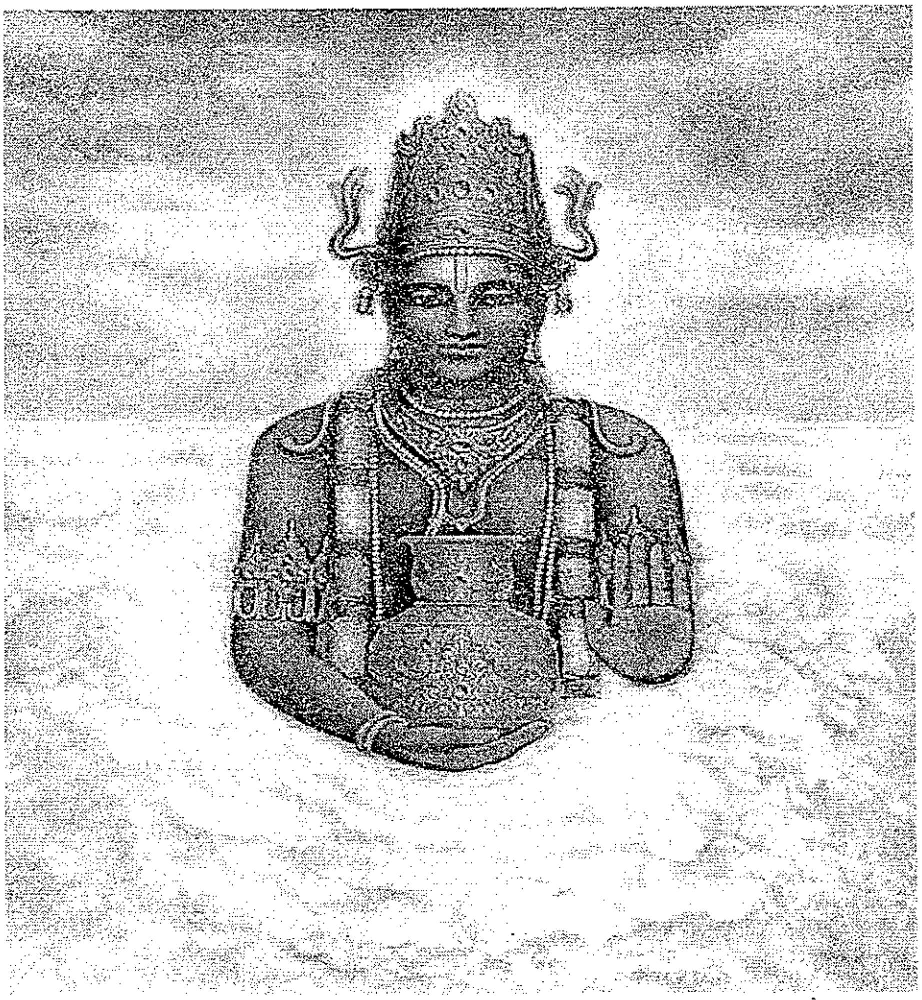

By- Dr. Neelima Singh Lodhi (M.D.)

AYURVEDPG.COM
Online Coaching Centre

श्री गणेशाय नमः जय महाकाल

"चरक संहिता"

Shyam-Vidya Ayurved P.G. Entrance Coaching Center, Bhopal (M.P.)

By- Dr. Neelima Singh Lodhi (M.D.) Mob.- 09826438399, 09993961427

➢ उपदेष्टा (Expounder)	–	पुनर्वसु आत्रेय	– 1000 ई. पूर्व	(उपनिषद काल)
➢ तन्त्रकर्ता (Author)	–	अग्निवेश	– 1000 ई. पूर्व.	(उपनिषद काल)
➢ प्रतिसंस्कर्ता (Redactor)	–	चरक	– 200 ई. पूर्व.	(शुंगकाल)
➢ सम्पूरक (Supplimentater)	–	दृढबल	– 4 शती	(गुप्तकाल)

- आत्रेय के उपदेशों को तंत्ररूप में निबिद्ध करने के कारण अग्निवेश 'तंत्रकर्ता' है।
- अग्निवेश तंत्र का भाष्यात्मक प्रतिसंस्कार करने के कारण चरक 'भाष्यकार' हैं।
- चरक 'अग्निवेश तंत्र' के और दृढबल 'चरक संहिता' के प्रतिसंस्कर्ता (Redactor) हैं।

विषय विवेचन

1.	सूत्र स्थान	30 अध्याय	1952
2.	निदान स्थान	8 "	247
3.	विमान स्थान	8	354
4.	शारीर स्थान	8	382
5.	इन्द्रिय स्थान	12	378
6.	चिकित्सा स्थान	30	4904
7.	कल्प स्थान	12	378
8.	सिद्धि स्थान	12	700
	कुल 8 स्थान	120 अध्याय	9295 सूत्र

- कुल औषध योग – 1950 – इसमें से 1600 योग चिकित्सा स्थान में वर्णित है।
- कुल श्लोक – 12000 – यस्य द्वादश साहस्त्री हृदि तिष्ठति संहिता। (च. सि. 12/52)

चरकसंहिता पर कुल टीकाएं = 43 (17 संस्कृत टीकाएं – इनमें से 6 उपलब्ध है।)

टीका	टीकाकार	काल
1. चरक न्यास (प्रथम टीका)	भट्टार हरिश्चन्द्र	6 वीं शती (सूत्रस्थान 3 अध्याय तक)
2. चरक पंजिका	स्वामि कुमार	7 "
3. निरन्तर पद व्याख्या	जेज्जट	9 "
4. न्यास	अमितप्रभ	9 "
5. चरक वार्त्तिक	क्षीरस्वामीदत्त	9 "
6. परिहार वार्त्तिक	आषाढ़वर्मा	9 "
7. वृहत्तन्त्र प्रदीप	नरदत्त	10 "
8. चरक चन्द्रिका	गयदास	11 "
9. चरक भाष्य	श्रीकृष्ण वैद्य	11 "
10. आयुर्वेद दीपिका	चक्रपाणि	11 " (सन् 1075).
11. चरक तत्व प्रदीपिका	शिवदास सेन	16 " (15 वीं शती के अंत में)
12. चरक प्रकाश कौस्तुभ	नरसिंह कविराज	17 "
13. चरकोपस्कार	योगिन्द्रनाथ सेन	19 "
14. जल्पकल्पतरू	गंगाधर राय	19 "
15. चरक प्रदीपिका	ज्योतिष चन्द्र सरस्वती	20 "

–: हिन्दी टीकाकार :–

1. श्रीकृष्णलाल
2. जयदेव विद्यालंकार कृत
3. अत्रिदेव विद्यालंकार कृत
4. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी कृत – **चरक चन्द्रिका टीका**
5. रविदत्त त्रिपाठी कृत – **वैद्य मनोरमा**
6. डॉ. काशीनाथ पांडे एवं गोरख नाथ शास्त्री – सविमर्श **'विद्योतनी'** हिन्दी व्याख्या।

–: अनुवाद :–

1. चरक संहिता का अरबी अनुवाद 8 वीं शताब्दी में **'शरक इण्डियानस'** नाम से हुआ।
2. चरक संहिता का अंग्रेजी अनुवाद सर्वप्रथम कविरत्न अविनाशचन्द्र ने 1891–99 में कलकत्ता से प्रकाशित किया।
3. अंग्रेजी अनुवाद 6 संस्करणों में डॉ. प्राणजीवन मेहता ने सन् 1949 में जामनगर से प्रकाशित किया।
4. हिन्दी भाषा में प्रथम अनुवाद पं. ज्वाला प्रसाद ने लाहौर से की।
5. तैलगू व्याख्या विश्वनाथ शास्त्री ने 'कौमुदी' नाम से की।

भरद्वाज :– भरद्वाज ने इन्द्र से ज्ञान प्राप्त किया था। भरद्वाज के पिता वृहस्पति और माता का नाम ममता था।

1. चरक संहिता में भरद्वाज को तपस्वी ऋषि होने के कारण **'उग्रतपा'** नाम से संबोधित किया गया है।
2. भरद्वाज को **'अमितायु'** भी कहते है।

आत्रेय :– चरक संहिता में 3 आत्रेय उल्लेख आया है।

1. पुर्नवसु आत्रेय – महर्षि अत्रि के पुत्र एवं शिष्य थे जिन्होंने भरद्वाज से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया था। इनकी माता का नाम चन्द्रभागा था अतएव इन्हे चान्द्रभागी और चान्द्रभाग भी कहा गया है।
2. कृष्णात्रेय – (च. सू. 11/65) में वर्णन आया है।
   महाभारत में भी कायचिकित्सा चिकित्सक के रूप में 'कृष्णात्रेय' का उल्लेख आया है।
3. भिक्षु आत्रेय – (च. सू. 25/24–25) कालवाद के समर्थक है।

आत्रेय के शिष्य – (6) – अग्निवेश, पराशर, जतूकर्ण, हारीत, भेल और क्षीरपाणि। (अ परा जित है भेल क्षीर)

चरक :–

1. चरक का वास्तविक नाम **'कपिष्ठल चरक'** था।
2. चरक **'विशुद्ध'** के पुत्र थे।
3. 'महर्षि **वैशम्पायन**' के शिष्य थे।
4. चरक कुषाणवंशीय **'राजा कनिष्क'** के राजवैद्य थे।
5. भावप्रकाश के अनुसार चरक 'शेषनाग के अवतार' तथा **यायावर कोटी के ऋषि** थे।
   ऋषि 2 प्रकार – 1. शालीन (कुटी में रहने वाले) 2. यायावर (घूमफिर कर ज्ञान अर्जित करने वाले)
6. चरक का निवास स्थान पंचनद प्रान्त में इरावती एवं चन्द्रभागा नदियों के बीच स्थित **'कपिस्थल' ग्राम** में था।
7. कृष्णयर्जुवेद की एक शाखा का नाम भी **'चरक'** है और इस सम्प्रदाय के लोग भी चरक कहलाते थे।

दृढबल :–

1. यह कपिलबली के पुत्र थे।
2. इन्होने चरक संहिता के 120 अध्यायों में से 41 अध्याय (चिकित्सा के 17, कल्प 12, सिद्धि 12) लिखे है।
3. चिकित्सा स्थान के रसायन, बाजीकरण, मदात्यय

   \+ ज्वर, रक्तपित्त, गुंल्म, प्रमेह, कुष्ठ, राजयक्ष्मा, **अर्श, अतिसार**

   \+ द्विवणी, विसर्प

   अध्यायों को छोडकर शेष सभी 17 अध्याय दृढबल ने लिखे है।

—: चरक संहिता :—

1. कविराज गंगाधर रायॅ (19 वीं शती) ने चरक संहिता की 'जल्पकल्पतरू' टीका के प्रारम्भ में चरक संहिता को **"अखिल शास्त्रविद्याकल्पद्रुम"** कहा है। यथा – 'जयत्यसौ सोऽखिलशास्त्रविद्याकल्पद्रुमः सर्वफलोदयत्वात्'।
2. **चरक संहिता में उत्तर तंत्र शामिल था** – ऐसा शिवदास सेन का कथन है।
3. चक्रदत्त पर रचित निश्चलकर की 'रत्नप्रभा' टीका में **चरकोत्तर तंत्र तथा चरक परिशिष्ट** को उदधृत किया गया हैं।
4. वृहत्रयी में चरक संहिता **'मूर्धन्य'** अर्थात शिर के समान मानी गयी है।
5. आचार्य चरक के अनुसार यूनानी चिकित्सा के प्रथम वैद्य 'कांकायन' थे।
6. चक्रपाणि बंगाल के **'लोध्रबली'** कुल में उत्पन्न हुये थे।

—: चरक संहिता की विशेषताए :—

1. चरक संहिता की शैली एवं भाषा **उपनिषदकालीन** है।
2. चरक में उपनिशद शब्द आया है एवं सांख्य शब्द – 5 बार तथा इतिहास शब्द – 2 बार आया है।
3. अग्निवेश ने माण्डूक्य उपनिषद् में उल्लेखित ब्रह्म चतुष्पाद सिद्धान्त को माना है।
   (चतुष्पाद सिद्धान्त – 1. वैश्वानर 2. तैजस 3. प्रोज्ञ 4. **तुरीय** – ये 4 पाद ब्रह्म के कहे गये है।)
4. चकरसंहिता में वैद्य की तृतीयाजाति, पंचमहाभूत, सप्तधातु सिद्धान्त ये सभी उपनिषदकालीन माने जाते है।
   (वैद्य की **तृतीयाजाति** – 1. गर्भ में जन्म 2. प्रसव के पश्चात् जन्म 3. मृत्यु के पश्चात पुर्नजन्म)
5. अग्निवेशतंत्र – सूत्र, संग्रह तथा भाष्य के क्रम में परिणत होकर चरकसंहिता के रूप में विद्यमान है।
   दृढबल ने अग्निवेशकृत ग्रन्थ के लिए 'तंत्र' और चरककृत प्रतिसंस्करण के लिए **'संहिता'** शब्द प्रयोग किया है।
6. अग्निवेश तंत्र संभवतः सौश्रुत तंत्र के बाद का है एवं इसमें धन्वन्तरि संप्रदाय का उल्लेख भी मिलता है।
7. चरक संहिता में 14 देश एवं 68 आचार्य (वाह्लीक को महत्वपूर्ण उल्लेख) का वर्णन मिलता है।
8. चरकसंहिता **4 सूत्रों** – गुरूसूत्र, शिष्यसूत्र, प्रतिसंस्कर्ता सूत्र एवं एकीय सूत्र में विषय वस्तु विभक्त है।
9. **भैषज्य कल्पना का व्यस्थित एवं वैज्ञानिक विवरण** चरक संहिता मे है।
10. **'आचार्य रसायन'** चरक की मौलिक देन है।
11. बौद्ध सम्मत **'स्वभावोपरमवाद'** प्राकृतिक चिकित्सा का मूल हैं। (च. सू. 16/27)
12. चरक ने ग्रहचिकित्सा को 'उभयाभिप्लुता' कहा हैं।
13. **सप्त चतुष्क** के रूप में सूत्र स्थान का वर्णन किया है। (BSNi KRiYA)
    1. भैषज/औषध चतुष्क
    2. स्वास्थ्य चतुष्क
    3. निर्देश चतुष्क
    4. कल्पना चतुष्क
    5. रोग चतुष्क
    6. योजना चतुष्क
    7. अन्नपान चतुष्क + 2 संग्रहद्वय अध्याय (दशप्राणायतन, अर्थेदशमहामूलीय अध्याय)
14. चरक संहिता मे कुल 7 स्थानों पर **संभाषा परिषद** का उल्लेख मिलता है।

(1) सूत्रस्थान में – 4 **(2) शारीरस्थान में – 2** **(3) सिद्धिस्थान में – 1**

1. दीर्घज्जीवितीय	(सूत्रस्थान 1 अध्याय)	– भूलोक में आयुर्वेदावतरण पर विचार
2. वातकलाकलीय	(सूत्रस्थान 12 अध्याय)	– दोष विनिश्चयार्थ
3. यज्जःपुरूषीय	(सूत्रस्थान 25 अध्याय)	– पुरूष भाव विनिश्चयार्थ
4. आत्रेयभद्रकाप्यीय	(सूत्रस्थान 26 अध्याय)	– रस संख्या विनिश्चयार्थ
5. गर्भावक्रान्ति शारीर	(शारीरस्थान 4 अध्याय)	– गर्भ का मासानुमासिक वृद्धि
6. शरीरविचय शारीर	(शारीरस्थान 6 अध्याय)	– गर्भ में प्रथम अंग निर्माण विषयक
7. फलमात्रा सिद्धि	(सिद्धिस्थान 11 अध्याय)	– फलवस्ति सिद्धि विषयक

15. चरक क्लब :– "चरक क्लब" की स्थापना 1898 में न्यूयार्क में प्रो. ऑसलर द्वारा हुई है।

■ श्री गणेशाय नमः **"चरक संहिता सूत्रस्थान"** जय महाकाल

Shyam-Vidya Ayurved P.G. Entrance Coaching Center, Bhopal (M.P.)

By- Dr. N. S. Lodhi (M.D.) Mob. 09300961664, 09993961427

1. दीर्घजीवितीय अध्याय

'सूत्रस्थान' = श्लोकस्थान' भी कहा जाता है। (च. सू. 30/34)

प्रथम सूत्र – अथातो दीर्घञ्जीवितीयमध्यायं व्याख्यास्यामः। (च. सू. 1/1) (अथ शब्द का अर्थ मंगलसूचक होता है)

इस सूत्र में 1. अथ 2. अतः 3. दीर्घ 4. जीवितीयं 5. अध्यायं 6. वि 7. आ 8. ख्यास्यामः। – ये 8 मांगलिक पद है।

इति ह स्माह भगवानात्रेयः। (च. सू. 1/2) – द्वितीय श्लोक में उपदेष्टा का परिचय दिया है।

दीर्घञ्जीवितीयमन्विच्छन् भरद्वाज उपागमत्। इन्द्रमुग्रतपा बुद्ध्वा शरण्यममरेश्वरम् (च. सू. 1/2)

(1) दीर्घ जीवन की इच्छा रखते हुए भरद्वाज (उग्रतपा) देवराज इन्द्र के पास ज्ञान प्राप्त करने के लिए गए।

चरक संहिता अनुसार आयुर्वेदावतरण – ब्रह्मा → दक्ष प्रजापति → अश्विनीद्वय → इन्द्र → भारद्वाज।

(2) ब्रह्मा, दक्षप्रजापति, अश्विनी कुमार, इन्द्र – आयुर्वेदशास्त्र के चार देव उपदेशक आचार्य कहलाते है।

संभाषा परिषद – विषय – आयुर्वेदावतरण

स्थान – हिमालय (समेताः पुण्यकर्माणः पार्श्वे **हिमवतः शुभे** – च. सू. 1/7)

ऋषि संख्या – (53) (अंगिरा जमदग्निश्च वसिष्ठः कश्यपो भृगुः – च. सू. 1/9–14)

आरोग्य – धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्। (च. सू. 1/15)

आरोग्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति का प्रधान साधन है।

इन्द्र के पर्याय – (1) सहस्राक्ष (2) शचीपति (3) शक्र (4) **बलहन्तार** (5) सुरेश्वरम् (6) शतक्रतु।

त्रिसूत्र/त्रिस्कन्ध – हेतुलिंगौषधज्ञानं स्वस्थातुरपरायणम्। त्रिसूत्रं शाश्वतं पुण्यं बुबुधे यं पितामहः।। (च. सू. 1/15, 25)

(स्कन्धत्रय – हेतु, दोष, द्रव्य)

षट्पदार्थ का क्रम – सामान्य, विशेष, गुण, द्रव्य, कर्म, समवाय। – (चरक)।

द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय। – (वैशेषिक दर्शन)।

आत्रेय के शिष्य – (6) – अग्निवेश, पराशर, जतूकर्ण, हारीत, भेल और क्षारपाणि। (अ परा जित है भेल क्षार)

अग्निवेश – बुद्धेर्विशेषस्तत्रासीन्नोपदेशान्तरं मुनेः। तन्त्रस्य कर्ता प्रथममग्निवेशो यतोऽभवत्। **(च. सू. 1/32)**

आत्रेय के सभी शिष्यों में से अग्निवेश प्रथम तन्त्रकर्ता हुए।

अग्निवेश आदि ऋषियों में बुद्धि, सिद्धि, मेधा, धृति, स्मृति, क्षमा, दया, कीर्ति रूप **8 ज्ञान** देवताओं ने प्रवेश किया।

आयुर्वेद की परिभाषा – **'हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।**

मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।। (च.सू. 1/41)

आयु के प्रकार – 4 – (1) हितायु (2) अहितायु (3) सुखायु (4) दुःखायु।

'आयु' – 'शरीरेन्द्रिय सत्वात्मसंयोगो धारि जीवितम्। नित्यगश्चानुबन्धश्च पर्यायैरायुरुच्यते।। (च.सू. 1/42)

आयु – शरीर + इन्द्रिय + सत्व + आत्मा के संयोग को आयु कहते हैं।

आयु के पर्याय – धारि, जीवितम्, नित्यग, अनुबन्ध। + चेतनानुवृत्ति (च. सू. 30/22)।

{काल के 2 भेद –**1. नित्यग** 2. आवस्थिक – कालो हि नित्यगश्चावस्थिकश्च। च. वि. 1/21}

{दोषों के 2 भेद –**1. अनुबन्ध्य** 2. अनुबन्ध – अनुबन्ध्यानुबन्धविशेषकृतस्तु बहुविधो दोषभेदः। च. वि. 6/11}

'तस्य आयुषः पुण्यतमो वेदो वेदविदां मतः। (च.सू. 1/43) – आचार्य चरकानुसार सभी वेदों में **आयुर्वेद पुण्यतम वेद** है।

सामान्य विशेष :– सर्वदा सर्वभावनां सामान्य वृद्धिकारणम्। ह्रासहेतुः विशेषश्च प्रवृत्तिरूभयस्य तु।। (च.सू. 1/44)

सामान्य – सदा सभी भावों की वृद्धि करने वाला। विशेष – सभी भावों का ह्रास करने वाला।

सामान्यमेकत्वकरं विशेषस्तु पृथक्त्वकृत। तुल्यार्थता हि सामान्यं, विशेषस्तु विपर्ययः।। (च.सू. 1/45)

प्रकार – चक्रपाणि (3) – द्रव सामान्य, गुण सामान्य, कर्म सामान्य, – द्रव विशेष, गुण विशेष, कर्म विशेष।

न्याय दर्शन(2) – पर सामान्य, अपर सामान्य।

त्रिदंड – 'सत्वामात्मा शरीरं च त्रयमेतत् त्रिदण्डवत्। लोकस्तिष्ठति संयोगात्तत्र सर्व प्रतिष्ठिम्।'

त्रिदण्ड – सत्व + आत्मा + शरीर। **आयुर्वेद का अधिकरण** – सत्व, आत्मा, शरीर यक्त चेतन (संयोगपुरूष)।

गुण – 'सार्था गुर्वादयो बुद्धिः प्रयत्नान्ताः परादयः। गुणाः प्रोक्ताः– (च.सू. 1/49)

चरकोक्त 41 गुण :–	इन्द्रिय गुण (वैशेषिक/विशिष्ट गुण)	–	5
	गुर्वादि गुण (चिकित्सीय गुण/शारीर गुण)	–	20
	आत्म गुण (अध्यात्मिक गुण/सात्विक गुण)	–	6
	परादि गुण (चिकित्सा सिद्धि के उपाय गुण)	–	10

गुण – समवायी तु निश्चेष्टः कारणं गुणः। (च. सू. 1/51) 1. गुणाश्च गुणान्तरमारभन्ते। (वैशेषिक दर्शन)।

गुण संख्या – चरक – 41, योगीन्द्रनाथसेन – 42

(योगीन्द्रनाथसेन ने चरकोक्त 41 + मन को आत्म गुण (8) में शामिल कर गुण 42 माने है।)

न्याय – 24 वैशेषिक – 17

गुण विभाजन :– आचार्य चक्रपाणि ने गुण को 3 तीन भागों में विभाजित किया है।

1. सामान्य गुण – (30) – गुर्वादि एवं परादि गुण (पंचमहाभूतों में सामान्यतः होने के कारण)
2. विशैषिक गुण – (5) – इन्द्रिय गुण (विशेष रूप से इन्द्रियों में रहने के कारण)
3. आत्म गुण – (6) – आत्म गुण (आत्म से संबंध होने के कारण 'अध्यात्मिक गुण' भी कहते है)

द्रव्य – यत्राश्रिताः कर्मगुणाः कारणं समवायि यत्। तद् द्रव्य – (च. सू. 1/51)

द्रव्य वह है जिसमें कर्म और गुण आश्रित रहते है, और जो अपने कार्य द्रव्यों का समवायिकारण होता है।

द्रव्य लक्षणन्तु क्रियागुणवत् समवायिकारण इति। (सु. सू. 40/3)

द्रव्य – 'खादीन्यात्मा मनः कालो दिगश्च द्रव्यसंग्रहः। सेन्द्रिय चेतनं द्रव्यं, निरिन्द्रियमचेतनम्।। (च.सू. 1/48)

द्रव्य संख्या – 9 – पंचमहाभूत, मन, आत्मा, दिशा, काल – **कारणद्रव्य।**

द्रव्य प्रकार – 2 – 1. सेन्द्रिय (चेतन द्रव्य), 2. निरिन्द्रिय (अचेतनद्रव्य) – **कार्यद्रव्य।**

द्रव्य के भेद – 3 – (1) दोषप्रशमन (2) धातुप्रदूषण (3) स्वस्थहितकर।

कर्म – 'प्रयत्नादि कर्म चेष्टितमुच्यते। (च.सू. 1/49) – प्रयत्न द्वारा की गई चेष्टा कर्म कलाती है।

प्रकार – 5 – (वैशेषिक दर्शन) – उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुन्चन, प्रसारण तथा गमन।

चरक – 3 एवं 5 – दृष्टं हि त्रिविधं कर्म हीनं मध्यममुत्तमम्। (च. वि. 3/31)

कर्म पञ्चविधं मुक्तं वमनादि। (च. सू. 26/10)

समवाय –'समवायोऽपृथग्भावो भूम्यादीनां गुणैः मतः। स नित्यो यत्र हि द्रव्य न तत्रानियतो गुणः।। (च.सू. 1/50)

'पृथ्वी' आदि द्रव्यों का अपने गुणों के साथ अपृथग्भाव होना समवाय है। उदा. पृथ्वी में गंध, जल में शीतलता, अग्नि में उष्णता। यह नित्य है।

अन्नम्भट्ट के मतानुसार – **नित्य सम्बन्ध समवायः** – (तर्क संग्रह)

घटादीनां कपालादौ द्रव्येषु गुणकर्मणोः। तेषु जातेश्च सम्बन्धः समवायः प्रकीर्तितः।। (करिकावली)

कर्म – संयोगे च विभागे च कारणं द्रव्यमाश्रितम्। कर्तव्यस्य क्रिया कर्म, कर्म नान्यदपेक्षते।। (च.सू. 1/52)

आयुर्वेद (तंत्र) का प्रयोजन – इत्युक्तं कारणं कार्य धातुसाम्यमिहोच्यते। **धातुसाम्यक्रिया चोक्ता तंत्रस्यास्य प्रयोजनम्।**

रोगों के त्रिविध हेतु – काल बुद्धीन्द्रियार्थानां योगो मिथ्या न चाति च। द्वयाश्रयाणां व्याधीनां त्रिविधो हेतुसंग्रहः।।

रोगों के तीन कारण – काल, बुद्धि, इन्द्रियार्थ का मिथ्या, हीन, अतियोग होना।

आरोग्य का कारण – काल, बुद्धि, इन्द्रियार्थ का सम्यक् योग होना।

रोग और आरोग्य के आश्रय – 2 – शरीरं सत्वसञ्ज्ञं च व्याधिनाम् आश्रयोमतः। तथा सुखानां। (च. सू. 1/55)
रोग और आरोग्य के आश्रय – **शरीर और मन** है।
(वेदना का आश्रय :– **शरीर, मन, और इन्द्रियाँ** – वेदना का अधिष्ठान है। – च. शा. 1/36)

आत्मा – निर्विकारः परस्त्वात्मा सत्वभूतगुणेन्द्रियैः। चैतन्ये कारणं नित्यो **द्रष्टा पश्यति** हि क्रियाः।। (च. सू. 1/56)
निर्विकारः परस्त्वात्मा सर्वभूतानां निर्विशेषः। सत्वशरीरयोश्च **विशेषाद् विशेषोपलब्धिः।।** (च. शा. 4/33)

शारीरिक दोष :– 3 – 1. वायुः पित्तं **कफश्चोक्तः** शारीरो दोष संग्रहः। (च. सू. 1/57)
2. वात पित्त **श्लेष्माण** एव देह सम्भव हेतवः। (सु. सू. 21/2)
3. वायुः पित्तं कफश्चेति **त्रयो** दोषाः समासतः। (अ.हृ.सू. 1/6)
शारीरिक दोष तीन है – वात, पित्त और कफ।

मानसिक दोष :– 2– मानसः पुनरुद्दिष्टो रजश्च तम एव च। मानसिक दोष 2 है – रज, तम – इनमें रज प्रधान है।

चिकित्सा सूत्र – शारीरिक दोष – दैवव्यपाश्रय, युक्तिव्यपाश्रय चिकित्सा। **(प्रशाम्यत्यौषधैः पूर्वो दैवयुक्तिव्यपाश्रयैः)**
मानसिक दोष – ज्ञान, विज्ञान, धैर्य, स्मृति, समाधि। **(मानसो ज्ञानविज्ञानधैर्यस्मृतिसमाधिभिः)**

वात के गुण :– 7 – रूक्षः शीतो लघुः सूक्ष्मश्चलोऽथ विशदः खरः। (च. सू. 1/59)

पित्त के गुण :– 7 – सस्नेहमुष्णं तीक्ष्णं च द्रवमम्लं सरं कटु। (च. सू. 1/60)

कफ के गुण :– 7 – गुरू शीत मृदु स्निग्ध मधुर स्थिर पिच्छिलाः। (च. सू. 1/61)
वात, कफ दोश के गुणों में 1 गुण समान है – शीत।

असाध्य रोग– **साधनं न त्वसाध्यानां व्याधीनामुपदिश्यते।** असाध्य रोगों की चिकित्सा करने का उपदेश नहीं दिया जाता हैं

रस – **रसनार्थो रसः द्रव्यमापः क्षितिस्तथा। निर्वृतौ च, विशेषे च प्रत्ययाः खादयस्त्रयः।। (च. सू. 1/64)**
जिह्वा के अर्थ (ग्राह्य विषय) को रस कहते हैं।
1. रस की निर्वृत्ति (अभिव्यक्ति) में कारण द्रव्य – जल और पृथ्वी।
2. रस के विशेष ज्ञान में कारण द्रव्य – वायु, आकाश और अग्नि।

षड्रस :– **(1) स्वादु** (2) अम्ल (3) लवण **(4) कटुक** (5) तिक्त (6) कषाय

- अष्टांग हृदयकार ने कटु रस के लिए **'ऊषण'** और लवण रस के लिए 'पटु' शब्द का प्रयोग किया है।

दोष	**रस**	**दोष**	**रस**
वात प्रकोपक	कटु, तिक्त, कषाय	वातशामक	लवण, अम्ल, मधुर
पित्त प्रकोपक	कटु, अम्ल, लवण	पित्तशामक	तिक्त, मधुर, कषाय
कफ प्रकोपक	मधुर, अम्ल, लवण	कफशामक	कटु, तिक्त, कषाय

द्रव्य वर्गीकरण – 'किन्चित् दोषप्रशमनं किन्चित् धातुप्रदूषणम्। स्वस्थवृत्तौ मतं किन्चित् **त्रिविधं द्रव्यमुच्यते।।**
प्रभाव भेद से – 3 – (1) दोषप्रशमन (2) धातुप्रदूषण (3) स्वस्थहितकर।

उत्पत्ति भेद से – 3 –

1. **जांगम** – चरक ने जांगम द्रव्यों के मधु, **गोरस,** पित्त, वसा, मज्जा, रक्त, मांस, विड्, मूत्र, चर्म, रेत, अस्थि, स्नायु, श्रृंग, नख, खुर, केश, लोम और रोचन – **ये 19 ग्राह्य अंग बताये है।**

2. **औदभिद** – चरक ने औदभिद द्रव्यों के में मूल, त्वक्, सार, निर्यास, नाल, स्वरस, पल्लव, क्षार, **क्षीर,** फल, पुष्प, भस्म, तैल, कण्टक, पत्र, शुंग, कन्द और प्ररोह – **ये 18 ग्राह्य अंग बताये है।**
   औदभिद के भेद – 4 – वनस्पति, वानस्पत्य, वीरूध, औषध।
   फलः वनस्पतिः, पुष्पैः वानस्पत्यः फलैरपि। ओषध्यः फलपाकान्ताः, प्रतानैः वीरूधः स्मृताः।। – (च. सू. 1/73)

सुश्रुत – स्थावराश्चतुर्विधा वनस्पत्यो, वृक्षा, वीरूध, औषधय इति।	चरकानुसार
(1) वनस्पति – अपुष्पाः फलवन्तो वनस्पतयः।	(1) वनस्पति – फलः वनस्पति।
(2) वृक्ष – पुष्पफलवन्तो वृक्षाः।	**(2) वानस्पत्य – पुष्पैः वानस्पत्यः फलैरपि।**
(3) वीरूध – प्रतानवत्यः स्तम्बिन्यश्च वीरूधः।	(3) वीरूध – प्रतानैः वीरूधः स्मृता।
(4) औषध – फलपाकनिष्ठा औषधय इति।	(4) औषध – औषध्यः फलपाकान्ताः।

3. **पार्थिव** – स्वर्ण, समला **पंचलोहाः,** सिकता, सुधा, **मनःशिला, हरताल,** मणि, लवण, गैरिक और अंजन – पार्थिव द्रव्य है
   ग्राह्य अंग – (1) स्थावर – 8 – (सुश्रुत) (2) औदभिद् – 18, जांगम – 19 – (चरक)

द्रव्यों का वर्गीकरण – (कुल – 66 द्रव्य)

मूलिनी	फलिनी	महास्नेह	लवण	मूत्र	दुग्ध	शोधनवृक्ष
↓	↓	↓	↓	↓	↓	↓
(16)	(19)	(4)	(5)	(8)	(8)	(6)

–: 16. मूलिनी द्रव्य :–

वर्गीकरण	नाम
वमन हेतु – (3)	बिम्बी, शणपुष्पी, वचा (हिमवती)। – **विश्व**
नस्य हेतु – (2)	श्वेत अपराजिता, ज्योतिष्मती। – श्वेत ज्योति
रेचन हेतु – (11) (वानर = 3 + 2 = 11)	**श्यामा, त्रिवृत्त,** सप्तला, **दन्ती (प्रत्यक्श्रेणी), द्रवन्ती** + हस्तिदन्ती, अजगन्धा, गवाक्षी + अधोगुड़ा, क्षीरिणी, विषाणिका (कर्कटश्रृंगी)।

–: 19 फलिनी द्रव्य :–

वर्गीकरण	नाम
वमन हेतु – (8)	षड्वामक (मदन, जीमूतक, इक्ष्वाकु, धार्मागव, कुटज, कृतवेधन), त्रपुष, हस्तिपर्णी।
नस्य हेतु – (1)	अपामार्ग (प्रत्यक्पुष्पी)।
रेचन हेतु – (10) (वानर = 8 + 1 (9) = 10)	आरग्वध, शंखिनी। **द्विविध क्लीतक (मुलेठी) – 1. आनूप 2. स्थलज।** द्विविध करंज – प्रकीर्या (लताकरंज), उदकीर्या (करंज)। विडंग, **कम्पिल्लक,** हरीतिकी, अन्तःकोटरपुष्पी।

नोट :– 1. सप्तला – मूलनी द्रव्य। (सप्तमूल)
2. हस्तिदन्ती – मूलनी द्रव्य। (दन्तमूल)
3. प्रत्यक्श्रेणी – मूलनी द्रव्य। (मूलश्रेणी)

शंखिनी – फलिनी द्रव्य। (शंख जैसा फल)
हस्तिपर्णी – फलिनी द्रव्य। (फल के पास पत्ते)
प्रत्यक्पुष्पी – फलिनी द्रव्य। (फल के पास पुष्प)

महास्नेह – 4 – 'सर्पिस्तैलं वसा मज्जा **स्नेहो दिष्टश्चतुर्विधः।** पानाभ्यन्जनबस्त्यर्थ नस्यार्थं चैव योगतः।।
चतुर्विध स्नेह –. घृत, तैल, वसा और मज्जा – ये महास्नेह के **4 प्रकार** है।
गुणकर्म – स्नेहना जीवना बल्या वर्णोपचयवर्धनाः। एवं वातपित्तकफापहाः।

पंचलवण :– (1) सौवर्चल (2) सैन्धव (3) विड **(4) औद्भिद** (5) सामुद्र – **(च. सू. 1/90)**
(1) सैन्धव (2) सामुद्र (3) विड (4) सौवर्चल् **(5) रोमक** – **(र. त. 2/3)**
गुण – स्निग्ध, उष्ण, तीक्ष्ण व अग्निदीपक। कर्म – अजीर्ण, आनाह, शूल, वातव्याधि, गुल्म और उदर में उपयोगी।

अष्ट मूत्र :– आवि मूत्र, अजा मूत्र, गोमूत्र, माहिष मूत्र, हस्ति मूत्र, उष्ट्र मूत्र, वाजि मूत्र और खर मूत्र। – ये अष्ट मूत्र है।

गाय, बकरी, भेड़, भैस का मूत्र – **(मादा) – लघु गुण** – गोऽजाविमहिषीणां तु स्त्रीणां मूत्रं प्रशस्यते। – भावप्रकाश	
गदहे, ऊंट, हाथी, घोड़े का मूत्र – **(नर) – गुरू गुण** – खरोष्ट्रेभनराश्वानां पुंसां मूत्रं हितं स्मृतम्। – भावप्रकाश	

मूत्रों के सामान्य गुण :– उष्णं तीक्ष्णमथोऽरूक्षं कटुकं लवणान्वितम्। (च. सू. 1/96)
✓ मूत्र में गुण में उष्ण, तीक्ष्ण, अरूक्ष, प्रधान रस कटु और लवण अनुरस वाला होता है।
प्रयोग रूप :– उत्सादन, आलेप, आस्थापन, विरेचन, स्वेदकर्म, उपनाह एवं प्रिरषेक रूप में मूत्र का प्रयोग होता है।
सामान्य प्रयोग – आनाह, अगद, उदररोग, अर्शरोग, गुल्म, कुष्ठ और किलास में हितकारी।
दीपनीयं विषघ्नं च क्रिमिघ्नं चोपदिश्यते। **पाण्डुरोग उपसृष्टानामुत्तमं शर्म चोत्यते।।**
श्लेष्माणं शमयेत्पीतं मारुतं चानुलोमयेत्। कर्षेत् पित्तमधोभागमित्यस्मिन् गुणसंग्रहः।।
दोशप्रभाव :– मूत्र पाण्डु में उत्तम आरोग्यदाता, कफशामक, वातानुलोमक और पित्तविरेचक होता है।
मूत्रों के गुणों में मतमतान्तर :–

1. पित्तविरेचक – (चरक) – कर्षेत् पित्तमधोभागमित्यस्मिन् गुणसंग्रहः। (च. सू. 1/100)
2. पित्तवर्धक – (वाग्भट्ट) – पित्तलं रूक्षतीक्ष्णोष्णं लवणानुरसं कटु।
3. विषघ्न – (सुश्रुत), – मूत्रं मानुषं च विषापहम्। (सु. सू. 45/220)
   मूत्रं मानुषं तु विषापहम्। (अ. सं. सू.)
4. रसायन – (भावप्रकाश) – नरमूत्रं गरं हन्ति तद् विधं सेवितम् रसायनम्।

मूत्र	प्रधान रस
गोमूत्र	समधुरं
अजा मूत्र	कषायमधुरं (कटु तिक्तान्वितं – सुश्रुत)
माहिष मूत्र	सक्षार
उष्ट्र मूत्र	**तिक्त**
वाजि मूत्र	**तिक्त, कटु**
आवि मूत्र	**तिक्त** (सक्षार तिक्त कटु – सुश्रुत)
हस्ति मूत्र	लवण (सतिक्त लवणं – सुश्रुत)
खर मूत्र	कटु रस

मूत्र	प्रधान कर्म रोगघ्नता
गोमूत्र	किंचित् दोषघ्न, कृमिकुष्ठनुत, कण्डू शामक, उदररोगे हितम्।
अजामूत्र	पथ्य, दोषान्नि हन्ति (त्रिदोषघ्न)।
महिष मूत्र	उदरघ्न, शोफ, अर्शनाशक + सर।
आविमूत्र	स्निग्ध एवं पित्त अवरोधी।
उष्ट्रमूत्र	श्वास, कास और अर्शनाशक
वाजिमूत्र	कुष्ठव्रणविषापहम्।
हस्ति मूत्र	हितं तु क्रिमिकुष्ठिनाम्, प्रशस्तं बद्धविण्मूत्र, विष, श्लेष्मामय, अर्श नाशक।
खर मूत्र	उन्माद, अपस्मार, ग्रहबाधा नाशक।

अष्ट दुग्ध – गाय, भैस, भेडी, बकरी, हथिनी, घोड़ी, ऊंटनी और स्त्री दुग्ध।

सामान्य गुण – 'प्रायशो मधुरं स्निग्धं शीतं स्तन्यं पयो मतम्। प्रीणनं बृंहणं वृष्यं मेध्यं बल्यं मनस्करम्।
जीवनीयं श्रमहरं श्वासकासनिबर्हणम्।। हन्ति शोणितपित्तं च सन्धानं विहतस्य च। (च.सू. 1/108)

रोगघ्नता – दुग्ध श्वास, कास, रक्तपित्त, भग्न, तृष्णा, और **क्षीणक्षत** में **श्रेष्ठं** है।

पाण्डुरोगेऽम्लपित्ते च शोषे गुल्मे तथोदरे। अतिसारे ज्वरे दाहे च श्वयथौ च विशेषतः। (च.सू. 1/111)

योनि, शुक्र दोष, मूत्ररोग, प्रदर, विबन्ध, और वातपित्त रोगियों के लिए पथ्य होता है।

शोधन वृक्ष :– 6 – (1) **क्षीरत्रय** – दुग्ध उपयोगी – 3 द्रव्य बतलाए है। (अर्क, स्नुही, वट, – रस तरंगिणी)।

1. अर्क – (वमन, विरेचन दोनों)
2. स्नुही – (विरेचन)
3. अश्मन्तक – (वमन)

(2) **त्रिवल्कल** – त्वक् उपयोगी – 3 द्रव्य बतलाए है।

1. पूतीक (लताकरंज) – विरेचन कर्म।
2. तिल्वक (लोध्र) – विरेचन कर्म।
3. कृष्णगन्धा (शोभान्जिन)– परिसर्प, शोथ, अर्श, दद्रु, विद्रधि, गण्ड, कुष्ठ और अलजी में।

1. **तत्वविद – 'योगविन्नारूपज्ञस्तासां तत्वविदुच्यते।' – (च. सू. 1/123)**
   जो वैद्य औषध के नाम एवं रूपों के साथ-साथ उन औषधों की सम्यक् योजना करने में समक्ष हो।

2. **भिषगुत्तमः – योगमासां तु यो विद्यात् देशकालोपपादितम्। पुरुषं पुरुषं वीक्ष्य स ज्ञेयो भिषगुत्तमः। (च. सू. 1/124)**
   जो वैद्य रोगी की विधिवत परीक्षा करके देश, काल आदि के विचार कर तदनुसार औषधों के योग को जानता है।

3. **यथा विषं यथा शस्त्रं यथाग्निरशनिर्यथा। तथौषधमविज्ञातं विज्ञातममृतं यथा।। (च. सू. 1/125)**
   अज्ञात औषध 'विष, शस्त्र, अग्नि या इन्द्र वज्र' के समान घातक होती है।
   जबकि विज्ञात औषध 'अमृत' के समान प्राणरक्षक होती है।

4. **योगादपि विषं तीक्ष्णमुत्तमं भेषजं भवेत। भेषजं चापि दुर्यक्तं तीक्ष्णं सम्पद्यते विषम्।। (च. सू. 1/127)**
   अत्यन्त तीक्ष्ण विष भी सम्यक् प्रयोग करने से 'उत्तम भेषज' बन जाता है।
   जबकि श्रेष्ठ औषध भी दुर्युक्त प्रयोग करने से 'तीक्ष्ण विष' बन जाता है।

5. **मूर्ख वैद्य द्वारा रोगी से धन लेने की निन्दा :–**
   जहरीले सांप का विष पीकर अपने प्राण गवाना, या उबाले हुये ताम्र का जल पी लेना या
   अग्नि में तपाये हुए लोहे की गोले खा जाना – ये सब अच्छा है
   ✓ **नतु श्रुतवतां वेषं बिभ्रता शरणागतात्। गृहीतमन्नं पानं वा वित्तं वा रोग पीडितात्। – (च. सू. 1/133)**
   किन्तु छदम्वर वैद्य का वेश बनाकर रोग से पीडित, शरण में आए हुए रोगी से अन्न, पान अथवा धन लेना कदापि ठीक नहीं है।
   (पुत्रवेदवैनं पालयेत आतुरं भिषक्। (सु. सू. 25/44) – वैद्य रोगी की पुत्र के समान चिकित्सादि द्वारा रक्षण करे)

6. **तदेव युक्तं भैषज्यं यदारोग्याय कल्पते।** स चैव भिषजां श्रेष्ठो रोगेभ्यो यः प्रमोचयेत्।। **(च. सू. 1/133)**

7. दीर्घजीवितीय अध्याय – में **कुल श्लोक की संख्या 141** है।

2. अपामार्गतण्डुलीय अध्याय – (अतः परिमार्जन द्रव्यों का वर्णन)

(दीर्घजीवतीय) दीर्घ जीवन के लिए शरीर के उत्तमांग शिर का स्वस्थ रहना अत्यन्त आवश्यक है। अतः आचार्य चरक ने श्रेष्ठ शिरोविरेचक – अपामार्ग से द्वितीय अध्याय का प्रारम्भ कर 'अपामार्ग तण्डुलीय' नाम रखा।

(1) शिरोविरेचन द्रव्य :– (25)

अपामार्गस्य बीजानि पिप्पलीः मरिचानि च। विडंगान्यथ शिग्रूणि सर्षपांस्तुम्बुरूणि।।

..क्रिमिव्याधावपस्मारे घ्राण नाशे प्रमोहके।। (च. सू. 2/3–6)

अपामार्ग, त्रिकटु, **हरिद्राद्वय, लवणद्वय,** विडंग, शिग्रु, सर्षप, **सुरसा,** हरेणुका, शिरीष बीज, लशुन, **ज्योतिष्मती।**

नोट :–

✓ त्रिकटु के सभी द्रव्य पिप्पली, मरिच, और नागर का वर्णन शिरो विरेचन द्रव्यों में किया है।

✓ चरक (च. वि. 8/151) और सुश्रुत (सु. सू. 39/6) दोनों ने **'वचा एवं ज्योतिष्मती'** को शिरोविरेचक द्रव्यों में रखा है।

✓ शिरोविरेचन द्रव्यों में **'मधुर एवं अम्लरस'** नहीं होता है। (च. वि. 8/151)

(2) वमनार्थ द्रव्य :– (10)

मदनं मधुकं निम्बं जीमूतं कृतवेधनम्। पिप्पली कुटजं इक्ष्वाकु एला धामार्गवाणि च।। (च. सू. 2/7)

षड्वामक + मधुक, पिप्पली, निम्ब, एला – (षड्वामक मीठे PiNE में)।

(3) विरेचन द्रव्य :– (17)

त्रिवृतां त्रिफलां दन्तीं नीलिनी सप्तलां वचाम्। कम्पिल्लकं गवाक्षी च क्षीरणीमदुकीर्यकाम्।।

पीलून्यारग्वधं द्राक्षां द्रवन्ती निचुलानि च। पक्वाशयगते दोषे विरेकार्थ प्रयोजयेत्।। (च. सू. 2/9–10)

नवविरचेन में से – त्रिवृत, आरग्वध, सप्तला, दन्ती, द्रवन्ती। + त्रिफला।

अन्य विरेचक :– द्राक्षा, कम्पिल्लक, गवाक्षी (इन्द्रवारुणी) क्षीरिणी (स्वर्ण क्षीरी)।

पीलु, नीलिनी, उदयकीर्या, निचुल, वचा। (पीला, नीला, उसका, नया, बॉयफ्रेन्ड)

नोट :– सर्वप्रथम विरेचन के लिए – **'विरेक' शब्द का प्रयोग किया।**

AYURVEDA P.G. NEELIMA SINGH COACHING CENTER

(4) आस्थापन/अनुवासन :–(29)

(1) 10. दशमूल द्रव्य।	(4) मदन, पलाश, पुर्ननवा, **गुडूची।**
(2) 5. पंचलवण।	(5) यव, **एरण्ड,** बला।
(3) 4. चर्तुस्नेह।	(6) कोल, कुलत्थ, कृतृण।

नोट :–

1. त्रिकटु – शिरोविरेचन।	पिप्पली – शिरोविरेचन, वमन दोनों में वर्णन।
2. त्रिफला – विरेचन।	मदनफल – वमन, आस्थापन/अनुवासन दोनों में वर्णन।
3. दशमूल – आस्थापन/अनुवासन।	

पंचकर्म :— **पंच कर्माणि कुर्वीत मात्राकालौ विचारयन्। – (च. सू. 2/15)**

✓ चरक संहिता में सर्वप्रथम **पंचकर्म शब्द** का उल्लेख यहीं पर आया है।

पंचकर्म से पूर्व स्वेदन, स्वेदनादि पूर्वकर्म सम्यक् रूप से करने निर्देश दिया है।

युक्ति का महत्व :– **मात्रा कलाश्रया युक्तिः सिर्द्धियुक्तौ प्रतिष्ठिता। तिष्ठत्युपरि युक्तिज्ञो द्रव्यज्ञानवतां सदा।।**

✓ औषध की सम्यक् योजना (युक्ति) – **"मात्रा और काल"** पर निर्भर करती है।

✓ युक्ति में सिद्धि (सफलता) स्थित है, द्रव्यज्ञान की रखने वाले वैद्य के स्थान पर 'युक्तिज्ञ' सदा श्रेष्ठ होता है।

अष्टाविशंति यवागू

चरक ने साध्य रोगों में प्रयोज्य 28 यवागू (22 यवागू + 6 पेया) का वर्णन किया है।

✓ **(यवागू में चावल के कण (तण्डुल) और जल का अनुपात 1 : 6 और पेया में 1 : 14 होता है – सुश्रुत)**

6 पेया :– (1) पाचनी एवं ग्रहिणी पेया (2) वातविकारनाशक पेया (3) मूत्रकृच्छ्रनाशिनी पेया। (4) पित्तश्लेष्मातिसार नाशक (5) रक्तातिसार नाशक (6) आमातिसार नाशक।

1. दीपनीय, शूलघ्नी यवागू	पिप्पली पिप्पलीमूल चव्यचित्रकनागरैः।
2. पाचनी एवं ग्राहिणी पेया	**दधित्थबिल्वचांगेरीतक्रदाडिमा** साधिता।
3. वातज विकारनाशक पेया	पन्चमूल (लघुपन्चमूल) साधित।
4. हिक्का, कास, श्वासनाशिनी	**दशमूल** साधित।
5. पित्तश्लेष्मातिसार नाशक	शालपर्णीबलाबिल्वैः पृश्निपर्ण्या च साधिता।
6. रक्तातिसारनाशक पेया	**पयस्यर्धोदके** च्छागे ह्रीबेरोत्पलनागरैः।
7. आमातिसारघ्नी पेया	दघात **सातिविषां** पेयां सामे साम्लां सनागराम्।
8. मूत्रकृच्छ्रनाशिनी पेया	**श्वदंष्ट्रा**कण्टकारिभ्यां मूत्रकृच्छे सफाणिताम।
9. तृष्णाशामक यवागू	**मृद्वीका**सारिवालाजपिप्पली मधुनागरैः।
10. क्रिमिघ्नी यवागू	**विडङ्ग**पिप्पलीमूल शिग्रुभिः मरिचेन च तक्रसाधिता
11. विषघ्नी यवागू	विषघ्नी च सोमराजी विपाचिता।
12. कृशतानाशक यवागू	सिद्धा वराहनिर्यूहे यवागूः बृंहणी मता।
13. कृशताकारक यवागू	गवेधुकानां भृष्टानां कर्शनीया समाक्षिका।
14. स्नेहनार्थ यवागू	**सर्पिष्मती बहुतिला** स्नेहनी लवणान्विता
15. रूक्षणार्थ यवागू	**कुशामलक**निर्यूहे श्यामाकानां विरूक्षणी।
16. पक्वाशयशूलघ्नी	**यमके मदिरासिद्धा** पक्वाशयरुजापहा।
17. ग्राही यवागू	**जम्ब्वाम्रास्थि**–दधित्थाम्लबिल्वैः साङ्ग्राहिकी मता।
18. रेचक यवागू	**शार्के**र्मासैः तिलमाषैः सिद्ध वर्चो निरस्यति।
19. भेदिनी यवागू	**क्षार**चित्रकहिङ्ग्वम्लवेतसैः भेदिनी।
20. वातानुलोमनी यवागू	**अभया**पिप्पलीमूलविश्वैः वातानुलोमनी।
21. घृतव्यापद नाशक	तक्रसिद्धा यवागूः।
22. तैलव्यापद नाशक	तक्र**पिण्याक** साधिता।
23. क्षुधानाशक नाशक	क्षुधं हन्यात् **अपामार्गक्षीर** गोधारसैः श्रृता
24. कण्ठरोग नाशक	कण्ठया यवानां यमके **पिप्ल्यामलकैः** श्रृता।
25. विषमज्वरघ्नी	**गव्यमांसरसैः** साम्ला विषमज्वरनाशिनी।
26. शिश्नपीडाशामक	**ताम्रचूडरसे** सिद्धा रेतोमार्गरुजापहा।
27. बाजीकरण यवागू	**समाषविदला** वृष्या घृतक्षीरोपसाधिता।
28. मदहर यवागू	**उपोदिकादधिभ्यां** तु सिद्धा मदविनाशिनी

अष्टाविंशतिरित्येता **यवाग्वः परिकीर्तिताः**। पंचकर्माणि चाश्रित्य प्रोक्तो भैषज्यसंग्रहः।। (च. सू. 2/34)

चिकित्सक की अर्हताए :– (5) – (1) स्मृतिमान (2) हेतुज्ञ (3) युक्तिज्ञ (4) जितेन्द्रय (5) प्रतिपत्तिमान्।

3. आरग्वधीय अध्याय – (बहिः परिमार्जन द्रव्यों का वर्णन)

✓ चरक ने सिद्धतम चूर्ण/लेप/प्रदेह की **संख्या** – **32** बतलायी हैं।
✓ चरक ने बहिः परिमार्जन हेतु प्रयोज्य 32 लेपों में 1 **स्वेदहर प्रघर्ष** का वर्णन किया है।
✓ चरकोक्त आरग्वधीय अध्याय में कुल सूत्रों की संख्या – 30 है।
✓ **कुष्ठहर 6 सिद्धतम योग** :– षड् सिद्ध योगों (चूर्ण) में **गोपित्त (गोरोचन) की भावना** देते हैं।

कुल 32 लेपों में :–

(1)	**15**	**– कुष्ठनाशक।**	(6)	1	– उदरशूलनाशक।
(2)	4	– वातविकार नाशक।	(7)	1	– पार्श्वशूलनाशक।
(3)	3	– वातरक्त नाशक।	(8)	1	– शीतनाशक।
(4)	2	– शिरःशूल नाशक।	(9)	1	– विषघ्न लेप।
(5)	2	– दाह शामक।	(10)	1	– स्वेदहर लेप।
			(11)	1	– दुर्गन्धनाशक।

कुष्ठनाशक :–(1) – **मनःशिलाले** मरिचानि तैलमार्कं पयः कुष्ठहरः प्रदेहः।
(2) – **तुत्थं** विडंगं मरिचानि कुष्ठं लोध्रं च तद्वत् समनःशिलं स्यात्। **(च. सू. 3/12)**
(3) – **रसांजन** सप्रपुनाडबीजं युक्तं कपित्थस्य रसेन लेपः।
(4) – **करंजबीज** एडगजं सकुष्ठं गोमूत्रपिष्टं च परः प्रदेहः। **(च. सू. 3/13)**

वातहर :– (1) – आनूपमत्स्यामिष **वेसवारै**रुष्णैः प्रदेहः पवनापहः स्यात।
(2) – **स्नेहैश्चतुर्भिः** दशमूलमिश्रैर्गन्धौषधैश्चानिलहः प्रदेहः। **(च. सू. 3/19)**
(3) – कुष्ठं शताह्वा सवचां यवानां चूर्णं सतैलाम्लमुशन्ति वाते। **(च. सू. 3/20)**

उदरशूल – (1) – **तक्रेण युक्तं** यवचूर्णमुष्णं सक्षारमर्तिं जठरे निहन्यात्। **(च. सू. 3/20)**

वातरक्त – (1) – वाते सरक्तै सघृतं प्रदेहो **गोधूम** चूर्णं छगलीपयश्च। **(च. सू. 3/23)**

शिरःशूलहर– (1) – **नतोत्पलं चन्दन**कुष्ठयुक्तं शिरोरूजायां सघृतं प्रदेहः। **(च. सू. 3/23)**

विषघ्न लेप– (1) – **विषं शिरीषस्तु ससिन्धुवारः।** **(च. सू. 3/28)**

स्वेदहर – (1) – शिरीषलामज्जक **हेमलोध्रै** त्वग्दोषसंस्वेदहरः **प्रघर्षः।** **(च. सू. 3/29)**

दुर्गन्धनाशक –(1) – **पत्राम्बु**लोध्राभय चन्दनानि शरीरदौर्गन्ध्यहरः प्रदेहः। **(च. सू. 3/29)**

सुश्रुत – 3 – भेद – 1. प्रलेप 2. प्रदेह 3. आलेप।

सुश्रुतानुसार आलेप के भेद	उपयोग	गुण
1. प्रलेप	– –	शीत, तनु, अविशोषी, विशोषी
2. प्रदेह	वात, कफज व्याधि में	उष्ण/शीत, बहल, अविशोषी।
3. **आलेप**	रक्त, पित्तज व्याधि में	आलेप दोनों की मध्य की स्थिति है।

VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER
DR. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

4. षड्विरचेनशताश्रितीय अध्याय

वमन विरेचन योग :– इह खलु षड् विरेचनशतानि भवन्ति। (च. सू. 4/3) – आयुर्वेद शास्त्र में 600 विरेचन योग है।

वमन योग	–	355	विरेचन योग	–	245
1. मदनफल	–	133	1. श्यामा त्रिवृत्त	–	110
2. जीमूतक	–	39	2. चतुरंगुल	–	12
3. इक्ष्वाकु	–	45	3. तिल्वक	–	16
4. धामार्गव	–	60	4. स्नुही	–	20
5. वत्सक	–	18	5. सप्तला शंखिनी	–	39
6. कृतवेधन	–	60	6. दन्ती द्रवन्ती	–	48

विरेचन योगों के आश्रय :– 6 – षड् विरेचनाश्रया इति क्षीर मूलत्वक् पत्रपुष्पफलानि इति। (च. सू. 4/5)

(1) मूल (2) त्वक् (3) पत्र (4) पुष्प (5) फल (6) क्षीर

शिरोविरेचन द्रव्यों के आश्रय – 7 – मूल, त्वक, पत्र, पुष्प, फल, कन्द एवं निर्यास। (च. वि. 8/151)

कषाय योनि – 5 – (1) मधुर कषाय, (2) अम्ल कषाय, (3) तिक्त कषाय, (4) कटु कषाय, (5) कषाय कषाय।
महाकषाय – 50, कषाय – 500।

–: पंचविध कषाय कल्पनाए :–

1. **चरकानुसार** – स्वरसः, कल्कः, श्रृतः, शीतः, फाण्टः, कषायश्चेति। तेषां यथापूर्वं बलाधिक्यम्।।
   अतः कषायकल्पना व्याध्यातुरबलातुरबलापेक्षिणी। ये पंचविध कषाय कल्पनाएं पूर्व के क्रम में बलवान होती है।
2. **सुश्रुतानुसार** :– क्षीर → स्वरस → कल्क → श्रृत → शीत → फाण्ट → उत्तरोतर **लघु।**
   क्षीरं रसः कल्कमथो कषायः श्रृतश्च शीतश्च तथैव फाण्टम्। कल्पाः षडेते खलु भेजानां **यथोत्तरं ते लघवः प्रदिष्टाः।**
3. **वाग्भट्ट** :– रसः कल्कः श्रृतः शीतः फाण्टश्चेति प्रकल्पना। **पंचधैवं कषायाणां पूर्व पूर्व बलाधिका।।**

–: चक्रपाणि के अनुसार कषाय कल्पनाए :–

कषाय कल्पना :– कषायाणां यथोक्त द्रव्याणां कल्पनमुपयोगार्थ संस्करणं कषायकल्पनम्।

(1) **स्वरस** :– यन्त्रनिष्पीडिताद् द्रव्याद् रसः स्वरस उच्यते।
(2) **कल्क** :– यः पिण्डो रसपिष्टानां स कल्कः परिकार्तितः।
(3) **श्रृत** :– वह्नौ तु क्वथितं द्रव्यं श्रृतमाहुः चिकित्सकाः।
(4) **शीत** :– द्रव्यादापोत्थितात्तोये तत्पुनर्निशि संस्थितात्। कषायो योऽभिनिर्याति स शीतः समुदाहृतः।।
(5) **फाण्ट** :– क्षिप्त्वोष्णतोये मृदितं तत् फाण्टं परिकीर्तितम्।

–: महाकषाय / दशेमानि :–

(1) जीवनीय वर्ग – 6 – जीवनीय, बृंहणीय, लेखनीय, भेदनीय, सन्धानीय, दीपनीय।
(2) तृप्तिघ्नादि वर्ग – 6 – तृप्तिघ्न, अर्शोघ्न, कुष्ठघ्न, कण्डूघ्न, क्रिमिघ्न, विषघ्न।
(3) बल्यादि वर्ग – 4 – बल्य, वर्ण्य, कण्ठय, हृद्य।
(4) स्तन्यजननादि – 4 – स्तन्यजनन, स्तन्यशोधन, शुक्रजनन, शुक्रशोधन।
(5) स्नेहोपगादि – 7 – स्नेहोपण, वमनोपग, विरचनोपग, आस्थापनोपग, अनुवासनोपग, शिरोविरेचनोपग।
(6) छर्दिनिग्रहणादि – 3 – छर्दिनिग्रहण, तृष्णानिग्रहण, हिक्कानिग्रहण।
(7) पुरीष संग्रहणीय – 5 – पुरीषसंग्रहणीय, पुरीषविरंजनीय, मूत्रसंग्रहणीय, मूत्रविरंजनीय, मूत्रविरेचनीय।
(8) कासहरादि वर्ग – 5 – कासहर, श्वासहर, ज्वरहर, शोथहर, श्रमहर।
(9) दाह प्रशमनादि – 5 – दाहप्रशमन, शीतप्रशमन, उदर्दप्रशमन, अंगमर्दप्रशमन, शूलप्रशमन।
(10) शोणिस्थापनादि – 5 – शोणितस्थापन, वेदनास्थापन, संज्ञास्थापन, प्रजास्थापन, वयःस्थापन।

(1) जीवनीय – जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, माषपर्णी, मुदग्पर्णी, जीवन्ती और मुलेठी।

(2) बृंहणीय – क्षीरविदारी, विदारीकन्द, ऋष्यगन्धा (विधारा) + अश्वगंधा, काकोली, क्षीरकाकोली + श्वेतबला, पीतबला, राजक्षवक + **वनकपास (भारद्वाजी)।**

(3) बल्य – ऐन्द्री, **ऋषभी (केवांच), ऋष्यप्रोक्ता (माषपर्णी),** अश्वगंधा, शतावरी, पयस्या, बला, अतिबला, स्थिरा, रोहिणी।

(4) दीपनीय महाकषाय – **षडूषण +** भल्लातकास्थि, **अजमोदा,** अम्लवेतस, हिंगु। (षडूषण BAAH)

(5) शूलप्रशमन महाकषाय – **षडूषण +** अजगन्धा, **अजमोदा,** अजाजी तथा गण्डीर। (षडूषण GAAA)

(6) हृद्य – आम्र, आम्रातक, वृक्षाम्ल, अम्लवेतस, लकुच, करमर्द, बदर (बेर), कुवल (बडी बेर) + दाडिम, मातुलुंग।

(7) विषघ्न महाकषाय – मंजिष्ठा, पालिन्दी, कतक, हल्दी, चंदन, सुवहा, **सूक्ष्मैला, शिरीष, सिन्दुवार, श्लेष्मातक।**

(8) वमनोपग – मधु + मधुयष्टि, **कोविदार (लाल कांचनार), कर्बुदार (श्वेत कांचनार)** + नीप, बिदुल, बिम्बी, + शणपुष्पी, सदापुष्पी, प्रत्यकपुष्पा।

(9) उदर्दप्रशमन – तिन्दुक, प्रियाल + बदर, खदिर, कदर + शाल, सप्तपर्ण + **अर्जुन,** असन और अरिमेद।

(10) ज्वरहर महाकषाय – सारिवा, पाठा, मंजिष्ठा, शर्करा, द्राक्षा, परूषक, पीलु, हरड, बहेडा, आंवला।

(11) पुरीष संग्रहणीय – प्रियंगु, पद्मा, पद्मकेसर, समंगा, लोध्र, कट्वंग, **आम्रास्थि,** धातकीपुष्प, **मोचरस,** अनन्ता।

(12) पुरीष विरंजनीय – जामुन, तिलकण, मधूक, सेमल, शल्लकी, केवांच, विदारीकन्द, नीलकमल, गन्धविजौरा, **भृष्टमृत्तिका।**

(13) मूत्र संग्रहणीय – वट, उदुम्बर, अश्वत्थ, कपीतन, प्लक्ष + भल्लातक + खदिर, अश्मन्तक, जामुन, आम्र।

(14) मूत्र विरंजनीय – **कमल, नीलकमल (उत्पल), सुगन्धित कमल, शतपत्र, पुण्डरीक, नलिन,** मुलेठी, प्रियंगु, कुमुद और धातकीपुष्प। **(कमल के भेदों** का वर्णन मूत्रविरंजनीय महाकषाय में आया है)

(15) मूत्र विरेचनीय – **कुश, कास, दर्भ, गुन्द्रा, इत्कटमूल,** वृक्षादनी, वसुक, वाशेर, पाषाणभेद, गोक्षुर।

(16) स्तन्यजनन – **कुश, कास, दर्भ, गुन्द्रा, इत्कटमूल,** शालि, षष्ठिक, कत्तृण, वीरण, इक्षुवालिका।

(17) स्तन्यशोधन – इन्द्रयव, गुडुची, सारिवा, कटुकी, मुस्तक, देवदारू, मूर्वा, शुण्ठी, पाठा, चिरायता।

(18) शुक्रजनन – जीवक, ऋषभक, काकोली, क्षीरकाकोली, माषपर्णी, मुद्गपर्णी, मेदा, **वृद्धरुहा, कुलिंग, जटिला।**

(19) शुक्रशोधन – **कूठ, कट्फल, कोकिलाक्ष, काण्डेक्षु, कदम्बनिर्यास, खस,** ईख, एलवालुक, वसुक, समुद्रफेन।

(20) प्रजास्थापन – ऐन्द्री, **ब्राह्मी,** शतवीर्या, सहस्रवीर्या, अमोघा (पाटला), अव्यथा (गुडूची), अरिष्टा, शिवा (हरीतकी), वाट्यपुष्पी और विष्वक्सेनकान्ता।

(21) वयःस्थापन – अभया, **अमृता,** आमलकी, शतावरी, श्वेत अपराजिता, जीवन्ती, पुनर्नवा, स्थिरा, मुक्ता, मण्डूकपर्णी।

(22) शोणित स्थापन – रूधिर, मधु, मधुक, मृत्कपाल, मोचरस, शर्करा, प्रियंगु, लोध्र, धान का लाजा, गैरिक।

(23) शोथहर महाकषाय – दशमूल के द्रव्य। **(दशमूल – यह संज्ञा सर्वप्रथम सुश्रुत की दी हुयी है।)**

(24) हिक्कानिग्रहण – **शटी, पुष्करमूल,** वृहती, बदरबीज, वृक्षरूहा, कण्टकारी, दुरालभा अभया, पिप्पली, कर्कटश्रृंगी।

(25) श्वासहर – **शटी, पुष्करमूल,** अम्लवेतस, एला, हिंगु, अगरू, सुरसा, तामलकी, जीवन्ती और चण्डा।

(26) कुष्ठघ्न – खदिर, अभया, आमलकी, हरिद्रा, भल्लातक, सप्तपर्ण, **आरग्वध,** करवीर, विडंग और **जातिप्रवाल।**

(27) कण्डूठघ्न – चंदन, नलद, नक्तमाल, दारूहरिद्रा, कुटज, निम्ब, **कृतमाल,** सर्षप, मुलेठी और **नागरमोथा।**

(28) तृष्णानिग्रहण – शुण्ठी, धन्यवास, मुस्तक, पर्पटक, चंदन, किराततिक्त, **गुडूची,** ह्रीबेर, धान्यक, और पटोल।

(29) वेदना स्थापन – शाल, कायफल, कदम्ब, पद्मक, तुम्ब, मोचरस, शिरीष, जलवेंत एलुआ, और **अशोक।**

(30) विरेचनोपग – हरड, बहेडा, आंवला, द्राक्षा, काश्मर्य, परूषक, **कुवल, बदर,** कर्कन्धु और पीलू।

(31) दाहप्रशमन – लाजा, चंदन, काश्मर्यफल, मधूक, शर्करा, नीलोत्पल, उशीर, सारिवा, **गुडूची,** ह्रीबेर।

(32) संज्ञास्थापन – हींग, कैटर्य, अरिमेद, वचा, वयस्था (ब्राह्मी), चोरक, गोलोमी, जटिला, गुग्गुलु, अशोकरोहिणी।

- ✓ चरक ने जीवनीय से लेकर वयस्थापन तक – 50 महाकषाय का वर्णन किया है।
- ✓ चरक ने 50 महाकषायों का लक्षण और उदाहरण के रूप में वर्णन किया है।
- ✓ चरक ने दीपनीय महाकषाय का वर्णन किया है। किन्तु पाचनीय महाकषाय का वर्णन नहीं किया है।
- ✓ काकोली, क्षीरकाकोली – जीवनीय, बृंहणीय, शुक्रजनन, स्नेहोपग और अंगमर्दप्रशमन में।
- ✓ महाकषायों में मधुक (मुलेठी) शब्द सर्वाधिक 11 बार, पिप्पली 9 बार आया है।
- ✓ 50 महाकषायों में वर्णित कुल औषध द्रव्यो की संख्या 276 है।
- ✓ आरग्वध का वर्णन कुष्ठघ्न व कण्डूघ्न दोनों महाकषाय में आया है।
- ✓ अमृता/गुडूची का वर्णन तृष्णानिग्रहण व वयस्थापन दोनों महाकषाय में आया है।
- ✓ शर्करा का वर्णन ज्वरघ्न, शोणितस्थापन व दाहप्रशमन तीनों में आया है।
- ✓ मोचरस का वर्णन पुरीष संग्रहणीय, शोणितस्थापन व वेदनास्थापन तीनों में आया है।
- ✓ **कमल के भेदों** का वर्णन मूत्रविरंजनीय महाकषाय में आया है।
- ✓ **बेर के भेदों** का वर्णन विरेचनोपग महाकषाय में आया है।
- ✓ मूत्रविरंजनीय द्रव्य शीतवीर्य प्रधान होते है और मुख्यतः पित्तज प्रमेह नाशक होते है।
- ✓ चरक संहिता में वर्णित "पुरीष संग्रहणीय" महाकषाय के द्रव्य 'पक्व संग्राहक अर्थात स्तम्भन' है।
- ✓ **चरक संहिता में वर्णित तृप्तिघ्न महाकषाय को योगीनाथसेन ने "अरोचकहर" कहा हैं।**
- ✓ अर्जुन का वर्णन उदर्द प्रशमन महाकषाय में आया है न कि हृद्य महाकषाय में।
- ✓ अशोक का वर्णन वेदनास्थापन महाकषाय में आया है न कि शोणित स्थापन महाकषाय में।
- ✓ किराततिक्त का वर्णन स्तन्यशोधन महाकषाय में आया है न कि ज्वरघ्न महाकषाय में।

रसा लवणवर्ज्याश्च कषाया इति संज्ञिताः। तस्मात् पंचविधा योनिः कषायाणामुदाहृता। (च. सू. 4/24)

लवण रस को छोडकर शेष रसों का नाम कषाय है।

भिषग्वर :– तेषां कर्मसु बाह्येषु योगमाभ्यन्तरेषु च। संयोगं च प्रयोगं च यो वेद स भिषग्वरः। (च. सू. 4/29)

5. मात्राशितीय अध्याय

आहार मात्रा :– (1) मात्राशी स्यात्। **आहारमात्रा पुनः अग्निबलापेक्षिणी। (च. सू. 5/3)**
मात्रापूर्वक भोजन करें, आहार मात्रा जठराग्नि के बल की अपेक्षा करती है।
(2) गुरू आहार – पूर्णभोजन, आधीतृप्ति। (पृथ्वी, जल प्रधान)।
लघु आहार – कम भोजन, पूर्णतृप्ति। (वायु, अग्नि प्रधान)।

(3) द्रव्यापेक्षया च त्रिभाग सौहित्यम् अर्धसौहित्यं वा गुरूणामुपदिष्यते। – आहार मात्रा द्रव्य पर निर्भर है। गुरु द्रव्यों का आहार पूर्ण आहार मात्रा का ⅓ या ½ भाग लेने का उपदेश किया जाता है।

(4) लघूनामपि च नाति सौहिव्यम् अग्नेः युक्त्यर्थम्। – लघु आहार द्रव्यों का भी अति सौहित्य (अधिक मात्रा) जठराग्नि को ठीक नहीं रहने देती।

(5) मात्रापूर्वक आहार :– बलवर्णसुखायुषा।

निरन्तर वर्जनीय द्रव्य – वल्लूर (शुष्क मांस – चक्र.), शुष्क शाक, शालूक (कमल कन्द), बिस (कमल की नाल), कृश (दुबले–पतले) पशु का मांस, कूर्चिका, किलाट, सुअर, गाय और भैंस का मांस, **मछली, दही,** उड़द व **यवक (जई)** का लगातार सेवन नहीं करना चाहिए।

निरन्तर सेवनीय द्रव्य – षष्टिकात् शालि मुंदगाश्च सैन्धवामलके यवान्। आन्तरीक्षं पयः सर्पिः जांगल मधु चाभ्यसेत।
षष्टिक चावल, शालि चावल, मूंग, सैंधवलवण, आमलक, यव, आन्तरिक्ष जल, दूध, सर्पि, जांगल मांस और मधु । – इनका लगातार प्रयोग करना चाहिए।

स्वस्थवृत्त सम्बन्धी वर्णन

(1) अंजन प्रयोग :– सौवीरांजनं नित्य हितमक्ष्णोः प्रयोजयेत्। पञ्चरात्रेऽष्टरात्रे वा स्रावणार्थे रसान्जनम्। (च. सू. 5/16)
सौवीरांजन (हितमक्ष्णोः) – नित्य प्रयोग करें (सुश्रुत – स्रोत्रोंजन)
रसान्जन (नेत्र स्रावणार्थे) – 5वें या 8वें रात्रि में (7 दिन में 1 बार–वाग्भट्ट)

चक्षुस्तेजोमयं तस्य विशेषाच्छ्लेष्मतो भयम्। ततः श्लेष्महरं कर्म हितं दृष्टेः प्रसादनम्।। (च. सू. 5/16)
1. तीक्ष्णांजन का प्रयोग दिन में नहीं करना चाहिए।
2. नेत्र स्रावणार्थ अंजन प्रयोग रात्रि में करना चाहिए।

(2) धूम्रपान :– प्रायोगिक धूमवर्ती की लम्बाई :–चरक – 8 अंगुल।
विदेह – 6 अंगुल। वाग्भट्ट – 12 अंगुल।

धूमवर्ति घटक द्रव्य – हरेणुका, प्रियंगु, वृहत् एला, केशर, नख, गुग्गुलु, सर्जरस, आदि 34 द्रव्य (च.सू. 5/24)
निर्दिष्ट द्रव्यों को पीसकर सरकण्डे की सींक पर यव आकार लेप कर बनाते हैं। **प्रमाण** – अंगुष्ठप्रमाण मोटी।
लाभ :– धूम्रपान से वात, कफ का निर्हरण।
विधि :– एक आवृत्ति में 3 घूंट, कुल 3 आवृत्ति – कुल 9 आपान (घूंट) धूम्र पीना चाहिए।

धूम्रनेत्र का परिमाण :–

चरक – 3		(सुश्रुत – 5)	(वाग्भट्ट – 3)
1. प्रायोगिक	– 36 अंगुल	48 अंगुल	1. शमन – 40 अंगुल
2. स्नैहिक	– 32 अंगुल	32 अंगुल	2. मृदु – 32 अंगुल
3. विरैचनिक	– 24 अंगुल	24 अंगुल	3. तीक्ष्ण – 24 अंगुल
		16 अंगुल (4. कासघ्न, 5. वमनीय)	

धूम्रनेत्र :– ऋजु त्रिकोषाफलितं कोलास्थ्यग्रप्रमाणितम्। (च. सू. 5/50) (कोलास्थिमात्रछिद्रे– सुश्रुत)।

प्रायोगिक धूम्रपान के काल :– आचार्य चरक ने प्रायोगिक धूम्रपान के 8 काल बताए हैं।

(1) निद्रा के पश्चात्	(2) दातुन के बाद	(3) स्नान पश्चात्	(4) भोजन पश्चात्।
(5) छींक के पश्चात्	(6) वमन के बाद	(7) नस्य के बाद	(8) अंजन के पश्चात्।

धूम्रपान के काल :–

सुश्रुत – 12 – 1. प्रायोगिक – 4 2. स्नैहिक – 5 3. वैरेचनिक – 3।

अष्टांग संग्रह– 24 – 1. प्रायोगिक – 8 2. स्नैहिक – 11 3. वैरेचनिक – 5।

धूम्रपान का दैनिक काल :–

1. प्रायोगिक धूम्र – 2 बार 2. स्नैहिक धूम्र – 1 बार 3. वैरेचनिक धूम्र :– 3–4 बार।

सम्यक धूम्रपान :– हृत्कण्ठेन्द्रियसंशुद्धिः लघुत्वं शिरसः शमः। यथेरितानां दोषाणां सम्यक् पीतस्य लक्षणम्। (च. सू. 5/37)

धूम्रपान विधि :– 1. शिर, नेत्र, नासिका रोगों में – नासिका से धूम्रपान।

2. कण्ठगत रोगों में – मुख से धूम्रपान।

3. धूम्रपान में धूम्र मुख से निकाले नहीं तो 'दृष्टीमण्डल' पर विपरीत प्रभाव होती है।

4. नासिका का एक छिद्र बंदकर धूम्र (3 बार) पीने के बाद मुख से निकालना चाहिए।

अति धूम्रपान के उपद्रव :–(1) बाधिर्य (2) अन्धत्व (3) मूकत्व (4) रक्तपित्त (5) शिरोभ्रम।

धूम्रपान का निषेध :–

वाग्भट्ट – 18 वर्ष से पूर्व निषिद्ध। शारंगधर – 12 वर्ष से पूर्व और 80 वर्ष के बाद निषिद्ध।

(3) नस्य :– प्रावृट, शरद और बंसत ऋतुओं में जब आकाश में बादल न छाए हो नस्य का प्रयोग करना चाहिए।

नस्य से लाभ :–

(1) उर्ध्वजत्रुगत विकारों में सर्वश्रेष्ठ औषध है, नस्य औषध का प्रभाव 'श्रृंगाटक मर्म' पर होता है।

(2) नस्य के प्रयोग से मन्यास्तम्भ, हनुस्तम्भ, शिरःशूल, अर्दित, अर्धावभेदक, पीनस, शिरःकम्प रोग शान्त हो जाते है।

(3) नस्य के प्रयोग से नेत्र, नासिका, कान की शक्ति नष्ट नहीं होती है, बाल सफेद / कपिल नहीं होते है

अणुतैल का नस्य –

1. **घटक द्रव्य :– चन्दनागुरुणी पत्रं दार्वीत्वङ्मधुकं बलाम्। (च. सू. 5/63)**
2. निर्माण विधि :– सभी घटक द्रव्यों का 100 गुना महेन्द्र जल में क्वाथ करते हैं, तैल से 1/10 भाग शेष रहने तक पाक करते है। अन्त में 10वीं बार क्वाथ लेकर पकाने में अजादुग्ध का प्रयोग करते है।
3. **मात्रा :– अस्य मात्रां प्रयुन्जीत तैलस्यार्धपलोन्मिताम्। (च. सू. 5/68)** – अर्द्धपल = 2 तोला।
4. **मात्राकाल :– स्निग्धस्विन्नोत्तमाङ्गस्य पिचुना नावनैस्त्रिभिः। त्र्यहात्त्र्यहाश्च सप्ताहमेतत्कर्म समाचरेत। (च. सू. 5/69)**

इस प्रकार प्रतिदिन 3–3 व तीन तीन दिन पर बार कुल 7 बार नस्य का सेवन करना चाहिए।

- **द्वारं हि शिरसो नासा तेन यद् व्याप्यहन्ति तान् – (च सि 9/88)**
- **नासा हि शिरसो द्वार – (अं. ह. सू. 20)**
- शारंग्धर के अनुसार 7 वर्ष से पूर्व नस्य कर्म निषिद्ध है।

(4) दन्तपवन :– आपोथिताग्रं द्वौ कालौ कषायकटुतिक्तकम्। भक्षयेत् दन्तपवनं दन्तमांसान्यबाधयन्। (च. सू. 5/71)

1. दन्तधावन काल – प्रतिदिन प्रातः–सायं दोनों समय।
2. दन्तधावन काष्ठरस – कटु, तिक्त, कषाय रस।
3. लाभ – **निहन्ति गन्धं वैरस्यं जिह्वादन्तास्यजं मलम्।** निष्कृष्य रुचिमाधत्ते सद्यो दन्तविशोधनम्। **(च. सू. 5/72)**
4. **वृक्ष** – 1. चरक – करंज, करवीर, अर्क, मालती, ककुभ (अर्जुन) एवं असन।

   2. अं. हृ – करंज, खदिर, अर्क, **वट**, अर्जुन।

   3. अं. सं – करंज, खदिर, सर्ज, **वट**, असन, करवीर, **अरिमेद, अपामार्ग**, मालती, ककुभ (अर्जुन)।

   4. सुश्रुत – करंज, खदिर, **मधूक, निम्ब।**

- अष्टांग संग्रहकार ने श्लेशमातक, शिग्रु, शमी, शाल्मली, शण, तिल्वक, तिन्दुक, बिल्व, विभीतक, निर्गुण्डी, पीलु, पीपल, पलाश, पारिभद्र, अरिष्ट, धव, धन्व, कोविदार, इंगुदी, गुग्गुलु, मोचरस की दौतान का निषेध बताया है।
- **सुश्रुत – 'निम्बश्च तिक्ते श्रेष्ठ, कषाये खदिर। मधुको मधुरे श्रेष्ठ, करंज कटुके तथा।।**

- बकुल – दन्तदाढर्यकर, दन्तशोधन – तेजोवती, लताकस्तूरी – मुखवैशद्यकर/मुखशोषहर
- लम्बाई – कनिष्ठिका अंगुली सम स्थूल (मोटी), 12 अंगुल आयत (लम्बी) – सुश्रुत एवं वाग्भट्ट।

(5) जिह्वानिर्लेखन :– जिह्वा शलाका – स्वर्ण, रजत, ताम्र या ऋजु से निर्मित, अग्रभाग तीक्ष्ण न हो एवं वक्र हो।
- प्रमाण लम्बाई – 10 अंगुल (सुश्रुत)
- **जिह्वानिर्लेखन रौप्यं सौवर्ण वार्क्षमेव च। तन्मलापहरं शस्तं मृदु श्लक्ष्णं दशागुंलम्। – (सु. चि. 24/13)**

(6) मुख संगन्धि द्रव्य :– मुख में स्वच्छता एवं भोजन में रुचि हेतु और मुख को सुगन्धित रखने की इच्छा वालों को जायफल, **कटुक (लताकस्तूरी – चक्र.)**, पूगफल (सुपारी), लवंग, कंकोल, सूक्ष्मैला (छोटी इलायची) के – **फल** उत्तम ताम्बूल **पत्र** और कर्पूर **निर्यास** इन सबको मुख में धारण करना चाहिए।
- **लताकस्तूरी** – मुखवैशद्यकर (प्रियव्रत शर्मा)/**मुखशोषहर – लताकस्तूरिका तद्वन्मुखशोषहरा परम् (अ.सं. 22/85)**

(7) मुख में तैल गण्डूष :– हन्वोर्बलं स्वरबलं वदनोपचयः परः। (च. सू. 5/78)
- मुखवैरस्यदौर्गन्ध्यशोफजाड्यहरं सुखम्। **दन्तदार्ढ्यकरं रुच्यं स्नेहगण्डूष धारणम्। (सु. चि. 24/14)**
- मुख संचार्यते या तु मात्रा स कवलः स्मृतः। असंचार्या तु या मात्रा गण्डूषः स प्रकीर्तितः। **(सु. चि. 40/62)**
  - कवल – संचारी, गण्डूष – असंचारी
- **कवल एवं गण्डूष के प्रकार** – 4 – (1) स्नैहिक (2) शोधन (3) शमन (4) रोपण – सुश्रुत, वाग्भट्ट।
- **गण्डूष एंव कवल धारण काल :–** जन्म से 5 वर्ष बाद (शारंर्धर)।

(8) शिर में तैल :– शिरःशूल, खालित्य, पालित्य, कर्णपतन नाशक, केश–कृष्ण, दीर्घ, दृढ़मूल वाले हो जाते है।

इन्द्रियाणि प्रसीदन्ति सुत्वग्भवति चाननम्। निद्रालाभः सुख च स्यान्मूर्ध्नि तैल निषेवणात्।

(9) कर्ण तैलपूरण :– वातज कर्णरोग, मन्याहनुसंग्रह, उच्चै श्रुति, बाधिर्य आदि रोग नहीं होते हैं।

(10) तैल अभ्यंग :– वातनाशक, सुत्वक, शरीर को व्यायाम क्लेश सहने में सक्षम बनाता है।

(11) पादाभ्यंग के गुण :– गृधसी, सिरा स्नायु संकोच आदि रोग होने की सम्भावना नहीं रहती है।
- **पादाभ्यंग – दृष्टिः प्रसादं – चरक, वाग्भट्ट, (चक्षुष्य – सु. चि. 24/70)**
- **पादत्रधारण – चक्षुष्य – चरक (छत्रधारणम् – चक्षुष्यं – सु. चि. 24/75)**
- पादप्रक्षालन – **चक्षुः प्रसादनं** बृष्यं रक्षोघ्नं प्रीतिवर्धनम् – सु. चि. 24/69

(12)	शरीर परिमार्जन –	**दौर्गन्ध्यं गौरवं तन्द्रां कण्डू मलमरोचकम्। स्वेदबीभत्सतां हन्ति शरीर परिमार्जनम्।।**
(13)	स्नान –	**पवित्रं** वृष्यमायुष्यं श्रमस्वेदमलापहम्। शरीरबलसन्धानं स्नानमोजस्करं परम्।
(14)	स्वच्छ वस्त्र धारण –	**काम्यं** यशस्यनामुष्यं अलक्ष्मीघ्न प्रहर्षणं। **श्रीमत्पारिषदं शस्तं निर्मलाम्बरधारणम्।।**
(15)	गन्ध माल्य धारण –	**वृष्यं** सौगन्धमायुष्यं काम्यं पुष्टिबलप्रदम्। सौमनस्यम लक्ष्मीघ्नं गन्धमाल्यनिषेवणम्।।
(16)	रत्न आभूषण धारण –	**धन्यं** मांगल्मायुष्यं श्रीमद्व्यसनसूदनम्। हर्षणं काम्यमोजस्यं रत्नाभरणधारणम्।।
(17)	मलमार्गो की शुद्धि –	**मेध्यं** पवित्रमायुष्ययं अलक्ष्मीकलिनाशनम्। पादयोर्मलमार्गाणां शौचाधानमभीक्ष्णशः।।
(18)	क्षौरकर्म –	**पौष्टिकं** वृष्यमायुष्यं शुचि रूपविराजनम्। केशश्मश्रुनखादीनां कल्पनम् संप्रधानम्।।
(19)	पादत्रधारण –	**चक्षुष्यं स्पर्शनहितम्** पादयोर्व्यसनापहम्। बल्यम् पराक्रमंसुखम् वृष्यं पादत्रधारणम्।
(20)	छत्रधारण –	**ईतेः प्रशमनं** बल्यं गुप्त्यावरणशंकरम्। घर्मानिलरजोऽम्बुघ्नं छत्रधारणमुच्यते।

(21) धर्मसम्मत जीविकोपदेश – आजीविका के साधन धर्म विरूद्ध नहीं होने चाहिए।

शरीररक्षोपदेश – नगरी नगरस्येव रथस्येव रथी सदा। स्वशरीरस्य मेधावी कृत्येष्ववहितो भवेत्।। (च सू 5/103)

6. तस्याशितीय अध्याय

आहार के प्रकार :– (4) – अशित, पीत, लीढ, खादित । – युक्तिपूर्वक सेवन से – **बलं वर्णश्च वर्धते।**

(1) संवत्सर (वर्ष) में छः ऋतु तथा दो अयन होते हैं।

(1) आग्नेय काल/आदान काल/उत्तरायण कालः– सूर्यबल प्रबल, प्राणिबल में ह्रास एंव वायु में रूक्षता होती है।

ऋतु		रस	वायु	प्राणिबल
1. शिशिर	–	तिक्त	अल्परूक्षता	श्रेष्ठ बल।
2. बंसत	–	कषाय	मध्यरूक्षता	मध्य बल।
3. ग्रीष्म	–	कटु	तीव्ररूक्षता	अल्प बल।

(2) सौम्य काल/विसर्गकाल/दक्षिणायन कालः– चन्द्रबल प्रबल, प्राणिबल मे वृद्धि एंव वायु में स्निग्धता होती है।

ऋतु		रस	वायु	प्राणिबल
4. वर्षा	–	अम्ल	अल्पस्निग्ध	अल्प बल।
5. शरद	–	लवण	मध्यस्निग्ध	मध्यम बल।
6. हेमन्त	–	मधुर	श्रेष्ठस्निग्ध	श्रेष्ठ बल।

आदावन्ते च दौर्बल्यं विसर्गादानयोर्नृणाम्। मध्ये मध्यबलं, त्वन्ते श्रेष्ठमग्रे विनिर्दिशेत्। (च. सू. 6/8)

माह के नाम :–

चरकानुसार	सुश्रुत अनुसार	शारंर्ग्धर अनुसार
1. शिशिर – माद्य – फाल्गुन	तप – तपस्य	1. बंसत – कुम्भ – मीन।
2. बंसत – चैत्र – वैशाख	मधु – माधव	2. ग्रीष्म – मेष – वृषभ।
3. ग्रीष्म – ज्येष्ट – आषाढ़	शुचि – शुक्र	3. प्रावृट – मिथुन – कर्क।
4. वर्षा – श्रावण – भाद्रपद्र	नभ – नभस्य	4. वर्षा – सिंह – कन्या।
5. शरद – आश्विन – कार्तिक	ईष – ऊर्ज	5. शरद – वृश्चिक – तुला।
6. हेमन्त – अगहन – पौष	सह – सहस्य	6. हेमन्त – धुन – मकर।

AYURVEDA P.G. NEELIMA SINGH LODHI

ऋतुचर्या प्रारम्भ :– 1. चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट – हेमन्त, 2. नागार्जुन – बर्षा ऋतु 3. ऋग्वेद –शरद ऋतु।

1. प्रावृट् – ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु के मध्य। (शारंर्ग्धर वर्णित)।

2. श्रेष्ठमाह – माघ शीर्ष।

3. प्रदोष – रात्रि का आरम्भिक काल।

4. हंसोदक – चरक, वाग्भट्ट, काश्यप। (आचार्य सुश्रुत ने 'हंसोदक' का वर्णन नहीं किया है।)

5. अंशुदक – भावप्रकाश।

6. ऋतुसंधि – वाग्भट्ट (कुल 14 दिन – गतऋतु का अंतिम संताह + नव ऋतु का प्रथम सप्ताह)

7. यमंदष्ट्रा – कार्तिक माह के अंतिम 8 दिन+अगहन माह के प्रारम्भ के 8 दिन यमंदष्ट्रा कहलाते है – शारंर्ग्धर

1. हेमन्त ऋतु

1. जठराग्नि एवं शरीर बल – उत्तम (श्रेष्ठ)।
2. औदक, आनूपमांस, अतिमेदस्वी पशु–पक्षियों का मांस, **विलेशय एवं प्रसह मांस** जाति के पशु–पक्षियों का मांस।
3. मदिरा, सीधु तथा मधु अनुपान के रूप में लेना चाहिए + उष्ण जल का सेवन करना चाहिए।
4. अभ्यंग, **उत्सादन, मूर्धा तैल, जेन्ताक स्वेद** तथा **उष्ण गर्भगृह में निवास** करना चाहिए।
4. मैथुन – सामर्थ्य एवं रूचि अनुसार कामिनी का आलिंगन करें।
5. अपथ्य – वातल एंव लघु आहार–विहार, **प्रवात**, प्रमिताहार और सत्तू **(उदमन्थ)**।

वर्जयेदन्नपानानि वातलानि लघूनि च। प्रवातं प्रमिताहारमुदमन्थं हिमागमे। – (च. सू. 1/18)

✓ प्रवातं (तीव्र वायु) – रूक्षता, विवर्णता और सतम्भता उतपन्न करती है।

2. शिशिर ऋतु

1. हेमन्त शिशरौ तुल्यौ शिशिरेऽल्पं विशेषणम् – हेमन्त और शिशिर ये दो ऋतुचर्याऐ प्रायः समान होती है।
2. **निवातं उष्णं तु अधिकं शिशिरे गृहमाश्रयेत्।** शिशिर ऋत में शीतलता अधिक बढ जाती है।
3. अपथ्य – कटुतिक्तकषायाणि **वातलानि लघूनि च। वर्जयेदन्नपानानि** शिशिरे शीतलानि च। (च. सू. 1/21)

3. बंसत ऋतु

1. कफ का प्रकोप – वमन कर्म और मधु का सेवन।
2. शारभं, शाशक, ऐण मांस, लावक और कपिजंलम् (सफेद तीतर) का मांस – सेवनीय।
3. **व्यायाम, उर्द्वतन, धूम्र, कवलग्रह तथा अंजन** का प्रयोग करना चाहिए
4 **यवगोधूमभोजनः** एवं निर्गद साधु व माध्वीक मदिरा का पान।
5. मैथुन – वसन्तेऽनुभवेत्स्त्रीणां काननानां च यौवनम्।
6. **अपथ्य – गुर्वम्लस्निग्धमधुरं दिवास्वप्न च वर्जयेत्। (च. सू. 1/23)**

4. ग्रीष्म ऋतु

1. स्वादु शीत द्रवं स्निग्धपानं तथा हितम्। **(च. सू. 1/27)**
2. **घृतं, पयः सशाल्यन्नं भजन्** – घी, दूध के साथ शालि चावल का सेवन।
3 **जांगलान्मृगपक्षिणः मांस** एवं **शीतं सशर्करं मन्थ** (शर्करा युक्त शीतल सत्तू) का सेवन।
4 मैथुन का निषेध – ग्रीष्मकाले निषेवेत मैथुनाद्विरतो नरः।
5 अपथ्य – **मद्यमल्पं न वा पेयमथवा सुबहु उदकम्।** लवणाम्लकटूष्णानि व्यायामं चात्र वर्जयेत्। **(च. सू. 6/29)**

5. वर्षा ऋतु

1. सर्वदोष प्रकोपक ऋतु कहलाती है। वर्षा ऋतु में त्रिदोषघ्न एवं अग्निदीपक (संस्कारित) अन्न पान करें।
   आदानदुर्बले देहे <u>पक्ता</u> भवति दुर्बलः। स वर्षास्वनिलादीनां दूषणैर्बाध्यते पुनः। (च. सू. 6/33)
2. **प्रघर्ष, उद्धर्तन** और स्नान करके गन्ध माला आदि धारण करना चाहिए।
3. पुराणा **जांगलैर्मांसर्भोज्या** यूषैश्च संस्कृतैः।
4. अपथ्य – **उदमन्थ दिवास्वप्नवश्यायं नदीजलम्।** व्यायाममातपं चैव व्यवायं चात्र वर्जयेत्। **(च. सू. 6/35)**
   मैथुन – व्यायाम, आतप और व्यवाय (मैथुन) वर्जित है।
5. सेवनीय – मधु मिला हुआ माध्वीक अरिष्ट, माहेन्द्र जल, कौप, सारस का श्रृतशीत जल।
   मधु – **पानभोजनसंस्करान् प्रायः क्षौद्रान्वितान् भजेत् – (च. सू. 6/37)**
   बर्षा ऋतु में खाने पाने की सभी चीजों बनाते समय उनमें में मधु अवश्य मिलाकर देना चाहिए।

6. शरद ऋतु

1. पित्त प्रकोपक – पित्त शामक आहार–विहार, तिक्त सर्पिपान, विरेचन कर्म एवं रक्तमोक्षण।
2. लावा (बटेर), कपिन्जलान (गौरया), एण, उरभ्र (दुम्बा भेड), शरभ (बारहसिंगा) और शशक मांस का सेवन।
3. आहार – शालीन् सयवगोधूमान् सेव्यानाहुर्घनात्यये। (च. सू. 6/43)
4. विहार – शारदानि च माल्यानि वासांसि विमलानि च। शरत्काले प्रशस्यन्ते प्रदोषे चेन्दुरश्मयः।
5. **हंसोदक जल** –दिवा सूर्याशूसंतप्तं निशि चन्द्रांशुशीतलम्। कालेन पक्वं निर्दोषमगस्त्येनाविषीकृतम्।
   हंसोदकमिति ख्यातं शारदं विमलं शुचि। स्नानपानावगाहेषु शस्यते तद्यथाऽमृतम्।। **(च. सू. 6/47)**
6 अपथ्य – आतपसेवन, वसा, तैल, **अवश्याय (ओस), औदक** और आनूप प्राणियों का मांस सेवन का निषेध हैं।
   क्षार दधि दिवास्वप्नं प्राग्वातं चात्र वर्जयेत्। **(च. सू. 6/45)**

ओकसात्म्य :– उपशेते यदौचित्यात् ओकः **सात्म्यं तदुच्यते। (च. सू. 6/49) (अभ्याससात्म्यं – गंगाधर रॉय)**

सात्म्य के प्रकार :– 4 – (1) ऋतुसात्म्य (2) ओकसात्म्य (3) देशसात्म्य (4) रोग सात्म्य।

VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER

7. न वेगान धारणीय अध्याय

अधारणीय वेग :–(13) –

न वेगान् धारयेद् धीमान्जातान् मूत्रपुरीषयोः। न रेतसो न वातस्य न च्छर्द्याः क्षवथोर्न च।।

नोद्गारस्य न जृम्भाया न वेगान् क्षुत्पिपासयोः। न वाष्पस्य न निद्राया निःश्वासस्य श्रमेण च।। (च. सू. 7/4)

(13) – गुदा – 4 – मूत्र, पुरीष, रेतस, अपानवायु। नाक – 2 – क्षवथु, निः श्वास।

मुख – 5 – वमन, उदगार, जृम्भा, क्षुत, पिपासा। नेत्र – 2 – वाष्प, निद्रा।

वाग्भट्ट –(14) – वेगान्न धारयेत् वातविड्मूत्रक्षवतृट्क्षुधाम्। निद्राकास श्रम श्वास जृम्भाश्रुच्छर्दिरेतसाम्।। (अं.सं.सू. 5)

(उदगार के स्थान पर कास बताया है। वात – अधोवायु, उर्ध्ववायु 2 बतलाई है।)

वेगनिग्रह	**वेगधारणजन्य रोग**	**उत्पन्न रोग चिकित्सा**
1. मूत्र	वस्ति, मेहन में शूल, मूत्रकृच्छ्र, **शिरोरूजा,** वंक्षण में **आनाह, विनाम।** (अंगभंग – वाग्भट्ट)	**स्वेदन, अवगाहन, अभ्यंग,** त्रिविध वस्ति, **अवपीडक घृतपान।**
2. पुरीष	पक्वाशय शूल, वातवर्चोऽप्रवर्तनम, **शिरः शूल आध्मान, पिण्डिकोद्वेष्टन**	**स्वेदन, अभ्यंग, अवगाहन,** वर्ति प्रयोग, बस्ति कर्म, **प्रमाथि अन्नपान**
3. शुक्र	मेढ्र, वृषणों में शूल, मूत्रावरोध (विबद्ध) **अंगमर्द, हृदि व्यथा।** (अंगभंग – वाग्भट्ट)	**अभ्यंग, अवगाहन,** चरणायुधमांस, मदिरा, मैथुन, निरूहवस्ति
4. अधोवायु	**विण्मूत्रवात संग,** वेदना, क्लम, **आध्मान,** वातविकार।	**स्नेहन, स्वेदन,** गुद वर्ति **वातानुलोमक औषध** अन्नपान, वस्ति।
5. छर्दि	**कण्डू, कोठ, व्यंग, कुष्ठ, विसर्प,** हल्लास, शोथ, पाण्डु, ज्वर।	भुक्त्वा प्रच्छर्दनं, धूम्र, लंघन, **रक्तमोक्षण** रूक्षान्नपान, व्यायाम, **विरेक।**
6. क्षवथु	मन्यास्तम्भ, शिरःशूल, अर्दित, अर्धावभेदक, इन्द्रियदौर्बल्य	**ऊर्ध्वजत्रुगत अभ्यंग, स्वेद,** नावन नस्य, धूम्र, वातघ्न चिकि. **भोजनोत्तर घृत**
7. उदगार	हिक्का, श्वास, कम्पन, हृदय, उर क्रिया में विबंध।	हिक्का तुल्य औषध।
8. जृम्भा	विनाम, आक्षेप, संकोच, **कम्पन,** सुप्ति, **प्रवेपन।**	वातघ्न औषध।
9. क्षुधा	कार्श्य, दौर्बल्य, **वैवर्ण्य, अंगमर्द,** अरूचि, **भ्रम।** (अंगभंग–वाग्भट्ट)	स्निग्ध, उष्ण, लघु भोजनं।
10. पिपासा	कण्ठास्य शोष, **बाधिर्य,** श्रम, **साद, हृदि व्यथा।**	शीत उपचार एवं तर्पण पान।
11. वाष्प	प्रतिश्याय, अक्षिरोग, **हृद्रोग,** अरूचि, **भ्रम।**	स्वप्न, **मद्यपान,** प्रिय कथा।
12. निद्रा	जृम्भा, अंगमर्द, तन्द्रा, अक्षिगौरव, **शिरोरोग।**	स्वप्न एवं संवाहन।
13. श्रमःनिश्वास	गुल्म, **हृद्रोग,** सम्मोह अर्थात मूर्च्छा।	विश्राम एवं **वातघ्न** क्रिया।

शिरोरूजा – मूत्रवेगनिग्रह। **शिरोरोग**– निद्रा वेगनिग्रह। **शिरः शूल** – पुरीष, क्षवथु वेगनिग्रह।

हृदय विबंध – उदगारवेगनिग्रह **हृद्रोग** – वाष्प, श्रमःनिश्वास। **हृदयव्यथा** – शुक्र, पिपासा वेगनिग्रह।

विनाम – मूत्र, जृम्भा **अंगमर्द** – क्षुधा, निद्रा, शुक्र। **अक्षिरोग** – वाष्प वेगनिग्रह।

–: धारणीय वेग – (18) :–

मन के धारणीय वेग (9) – लोभ, शोक, भय, क्रोध, अभिमान, निर्लज्जता, ईर्ष्या, अतिराग (कामवासना) एवं अभिध्या।

वाणी के धारणीय वेग (5) – परूष (कठोर वचन), अधिक मात्रा में बोलना, सूचक (चुगली), अनृत (झूठ बोलना), और अकालयुक्तस्य (बिना अवसर की बात करना)।

शरीर के धारणीय वेग (4) –परपीड्या प्रवृत्ति (दूसरों को कष्ट पहुँचाना), परस्त्रीसंभोग, स्तेय (चोरी करना), हिंसा।

व्यायाम

परिभाषा :– **शरीर चेष्टा या चेष्टा स्थैर्यार्था बलवर्धिनी। देहव्यायाम संख्याता मात्रया तं समाचरेत्।। (च. सू. 7/31)**
शरीरायासजननं कर्म व्यायाम् **संज्ञितम्**। (सुश्रुत),
शरीरायासजननं कर्म व्यायाम **उच्यते**। (वाग्भट्ट)

व्यायाम मात्रा :– चरक – मात्रानुसार, सुश्रुत – बलार्द्ध, वाग्भट्ट – शीतकाल, बसंत – अर्द्धशक्ति, अन्य ऋतु–मन्द।

व्यायाम लाभ :– **लाघवं कर्मसामर्थ्य** स्थैर्य दुःखसहिष्णुता। दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते।। **(च. सू. 7/32)**
लाघवं कर्मसामर्थ्य दीप्तोऽग्निर्**मेदसः क्षयः**। विभक्तघनगात्रत्वं व्यायामादुपजायते।। **(अ. सं. सू. 3/62)**

व्यायाम लक्षण – स्वेदागमः श्वासवृद्धिः गात्राणां लाघव तथा हृदयाद्युपरोधश्च इति व्यायामलक्षणम् – योगीन्द्र नाथसेन।

बलार्द्ध व्यायाम –हदि स्थानस्थितो वार्युयदा वक्त्रं प्रपद्यते। व्यायामं कुर्वतो जन्तोस्तद्बलार्द्धस्य लक्षणम्। **(सु. चि. 24/47)**

बलार्द्ध लक्षण :– कक्षाललाटनासासु हस्तपाददिषु। प्रस्वेदान्मुखशोषाश्च बलार्द्ध तद्विनिर्दिशेत् इति। – डल्हण

उपद्रव :– श्रमः क्लमः क्षयस्तृष्णा **रक्तपित्त प्रतामकः**। अतिव्यायामतः **कासो ज्वरश्छर्दिश्च** जायते। (च.सू. 7/33)

चंक्रमण :– (सुश्रुत) – यह कृश एवं दुर्बल के लिए लघु व्यायाम होता है।
लाभ – (1) आयुवर्धक (2) बलवर्धक (3) मेधावर्धक (4) अग्निवर्धक (5) इन्द्रिय चैतन्यकर है।

अतिमात्रा निषेधः– व्यायाम हास्य भाष्य अध्व ग्राम्यधर्म प्रजागरान्। नोचितानपि सेवेत बुद्धिमान् अतिमात्रया।
अन्यथा – गज सिंह इवार्षन् साहसा सन्निनश्यति।

व्यायाम के अयोग्य :– रक्तपित्त, कृश, शोष, श्वास, कास, उरक्षत रोगी, बालक वृद्ध, भोजन एंव व्यावाय पश्चात् पिपासित, क्षुधित – व्यायाम न करें।

प्रादांशिक क्रम :– अहितकर आहार के क्रमशः त्याग और हितकर आहार का क्रमपूर्वक सेवन करना।

एकान्तर (1 दिन)	द्वयन्तर (2–3)	त्र्यन्तर (4,5,6)	7 दिन
1 पथ्य	2 पथ्य	3 पथ्य	4 पथ्य
3 अपथ्य	2 अपथ्य	1 अपथ्य	–

पादांशिक क्रम से लाभ :– 1. क्रमेणापचिता दोषाः – पुनः प्रादुर्भाव नहीं होते हैं।
2. क्रमेणोपचिता गुणाः – अप्रकम्प्य (सुस्थिर) हो जाते हैं।

शारीरिक प्रकृति :– समपित्तानिलकफाः केचिद्गर्भादि मानवाः।

(1) वात प्रकृति – प्रकृति के विपरीत गुण वाले आहार विहार का सेवन।
(2) पित्त प्रकृति – (विपरीत गुणस्तेषां स्वस्थवृत्तेः विधिः हितः।)
(3) कफ प्रकृति – (विपरीत गुणस्तेषां स्वस्थवृत्तेः विधिः हितः।)
(4) सम प्रकृति – सर्वरसाभ्यासः करे। (सभी रसों का उपयोग हितकर है)

सदातुराः – **वातलाद्याः सदातुराः। (च.सू. 7/40)** (वातिकाद्याः सदाऽऽतुराः – **काश्यप लेह्याध्याय**)

मलायन :– (1) अधोभाग –2– गुदा, मूत्रमार्ग। (2) शिरोभाग –7– नेत्र–2, कर्ण–2, नासा–2, मुख।

दोषों का निर्हरणकाल :– माधव प्रथमे मासि नभस्य प्रथमे पुनः। सहस्य प्रथमे चैव हारयेत् दोषसन्चयम्।।

दोष	**कर्म**	**निर्हरण काल**	**(चरकोक्त माह)**
वात	वस्ति	श्रावण	नभ – नभस्य
पित्त	विरेचन	अगहन	सहा – सहस्य
कफ	वमन	चैत्र	मधु – माधव

निज रोग प्रतिषेधक उपाय :–हेतु विपरीत, व्याधि विपरीत तथा हेतु व्याधि विपरीतकारी औषध, अन्न एवं विहार से साध्य रोगों की चिकित्सा करना, **पंचकर्म** का क्रमिक प्रयोग तदन्तर **रसायन बाजीकरण का प्रयोग**।

आगन्तुक रोग प्रतिषेध उपाय :– प्रज्ञापराध का परित्याग, देश–काल का ज्ञान, **स्वस्थवृत्त** पालन और आप्तोपदेश का ज्ञान, **सत्संग**, सहचर्य एवं असत्संग का परित्याग।

दधि सेवन विधि :– (1) रात्रि में एवं गर्म करके दधि नहीं खाना चाहिए।
(2) घृत/शर्करा/मुदगयूष/मधु/ऑवले – को बिना मिलाए दहीं न खाये।
अन्यथा उपद्रव– ज्वर, रक्तपित्त + कुष्ठ, विसर्प + पाण्डु, उग्र कामला+ भ्रम रोग रोग होने की संभावना रहती है

8. इन्द्रियोपक्रमणीय अध्याय

मन के पर्याय :– अतीन्द्रिय, सत्व एवं चेत – **अतीन्द्रियं पुनर्मनः सत्वसंज्ञकं चेत इत्याहुरेके (च. सू. 8/4)**
मन सभी इन्द्रियों की चेष्टाओं का प्रधान कारण है। – **चेष्टाप्रत्ययभूतम् इन्द्रियाणाम्। (च. सू. 8/4)**
कर्म – **मनः पुरः सराणीन्द्रियाण्यर्थग्रहण समर्थानि भवन्ति।** (च. सू. 8/7)

इन्द्रिय पंच पंचक

पंच इन्द्रिय	पंच इन्द्रिय द्रव्य	अधिष्ठान	इन्द्रियार्थ	पंचेन्द्रिय बुद्धि
1. श्रोत्र	ख (आकाश)	कर्ण	शब्द	श्रोत्र बुद्धि
2. स्पर्शन	वायु	त्वचा	स्पर्श	स्पर्शन बुद्धि
3. चक्षु	ज्योति	अक्षि	रूप	चक्षु बुद्धि
4. रसन	जल	जिह्वा	रस	रसन् बुद्धि
5. घ्राण	भू	नासिका	गन्ध	घ्राण बुद्धि

पंचेन्द्रिय बुद्धि के प्रकार – 2 – (1) क्षणिका (2) निश्चयात्मिका।
1. मन व आत्मा, मन के विषय तथा बुद्धि – आध्यात्म द्रव्य गुण संग्रह है।
(मनो मनोंऽर्थो बुद्धिरात्मा चेत्यध्यात्मद्रव्यगुणसंग्रह। – च. सू. 8/13)
कर्म – शुभाशुभप्रवृत्तिनिवृतिहेतुश्च, द्रव्याश्रितं च कर्म यदुच्यते क्रियेति।
2. मन का अर्थ – मन का अर्थ (विषय) चिन्त्य है। (मनसस्तु चिन्त्यमर्थः। च. सू. 8/16)
मन के विषय :–(5) – चिन्त्यं विचार्यम् ऊह्यं च ध्येयं संकल्पमेव च। (च शा. 1/20)
3. मानसिक विकृतियां – मन के अर्थ व इन्द्रियार्थ का अयोग/अतियोग/मिथ्यायोग।

इन्द्रियों का भौतिकत्व :– (1) अंहकारिक – सांख्य, सुश्रुत।
(2) भौतिक – न्याय, वैशेषिक, वेदान्त, चरक।

सदवृत वर्णन :– सदवृत्त का पालन करने से मनुष्य एक साथ दो लाभ प्राप्त करता है।
अर्थद्वय प्राप्ति :– आरोग्य एवं इन्द्रियविजय।
(1) **त्रिः पक्षस्य केशश्मश्रुलोमनखान् संहारयेत्।** (पक्ष में 3 बार बाल कटवाएं)
(2) प्राक् श्रमाद् व्यायामवर्जी स्यात्। (थकने से पहले ही व्यायाम करना बंद कर दें)
(3) न उच्चै हसेत् (जोर से न हंसे)
(4) न नखान वादयेत (नखों को न बजावें)
(5) रत्न, घृत, पूज्यदेवगण, मंगल पदार्थ और उत्तम पुष्पों के स्पर्श बिना घर से न निकले।
(6) पूर्वाभिभाषी – किसी के मिलने पर उसके बोलने से पहले ही कुशल क्षेम पूछे।
(7) चरकानुसार **उत्तर दिशा** में मुख करके भोजन करना चाहिए।
(8) **न स्त्रियमवजानीय, नातिविश्रम्भयेत्, न गुह्यमनुश्रावयेत्।**
स्त्री का अपमान न करें, स्त्री का अधिक विश्वास न करें, गुप्त बात न बतायें और उसे पूर्ण अधिकार न दें।

सत्तु सेवन विधि :– रात में/भोजन के पश्चात्/अधिक मात्रा में/जलपान पश्चात/दिन में 2 बार सत्तु न खाएं।
इस प्रकार कर्तव्य और अकर्तव्य सदवृत्त, आहार, मलोत्सर्ग, स्त्री, मैथुन, पूज्यजन, अध्ययन, सामाजिक कर्तव्य, मानसिक कर्तव्य तथा हवन संबंधी सदवृत्त का वर्णन किया गया है।

9. खुड्डाक चतुष्पाद

'खुड्डाक':– 'खुड्डाक' शब्द 'अल्प' का बोधक है। यह चतुष्पाद का संक्षेप में परिचय देने वाला अध्याय है।

रोग/आरोग्य : – **विकारो धातुवैषम्यं, साम्यं प्रकृतिरुच्यते। सुखसंज्ञकमारोग्यं, विकारो दुःखमेव च।।** (च.सू. 9/4)

- **रोगस्तु दोषवैषम्यं दोषसाम्यमरोगता। - (अ. हृ. सू. 1/19)**

चिकित्सा :– चतुर्णां भिषगादीनां शस्तानां धातुवैकृते। प्रवृत्तिः धातुसाम्यार्था चिकित्सेत्यभिधीयते।। (च.सू. 9/5)

चिकित्सा के चतुष्पाद :– भिषग्द्रव्याण्युपस्थाता रोगी पादचतुष्टयम्। गुणवत् कारणं ज्ञेयं विकारव्युपशान्तये।।

1. भिषक के गुण	2. औषध के गुण	3. उपास्थाता के गुण	4. रोगी के गुण
(1) श्रुते पर्यवदातत्वं	(1) बहुता	(1) उपचारज्ञता	(1) स्मृतिः
(2) बहुशो दृष्टकर्मता	(2) योग्यत्वं	(2) दाक्ष्यं	(2) निर्देशकारित्व
(3) दाक्ष्यं	(3) अनेकविधकल्पना	(3) अनुरागश्च	(3) अभीरुत्वम्
(4) शौचम्	(4) संपत्	(4) शौचम्	(4) ज्ञापकत्वम्

वैद्य की प्रधानता :– कारणं षोडशगुणं सिद्धौ पादचतुष्टयम्। विज्ञाता शासिता योक्ता प्रधानं भिषगत्र तु। (च.सू. 9/10)

(1) चिकित्सा के चतुष्पाद में वैद्य विज्ञाता एवं शासिता होने से प्रधान है – (चरक)

प्राणाभिसर वैद्य लक्षण– (4) – तस्मात् शास्त्रऽर्थ विज्ञाने प्रवृत्तौ कर्मदर्शने। भिषक् चतुष्टये युक्तः प्राणाभिसर उच्यते।

(1) शास्त्र ज्ञान में (2) शास्त्र अर्थ के समझने में (3) प्रत्यक्ष कर्म (4) प्रत्यक्ष दर्शन में – प्रवृत्ति वाला प्राणाभिसर वैद्य कहलाता है।

(प्राणाचार्य :– शीलवान् मतिमान् युक्तो द्विजातिः शास्त्रपारगः। प्राणिभिर्गुरुवत्पूज्यः प्राणाचार्यः स हि स्मृतः। च. चि.1/4/51)

राजार्ह वैद्य ज्ञान :– (4) – हेतो लिंगे प्रशमने रोगाणामपुनर्भवे। ज्ञानं चतुर्विधं यस्य स राजार्हो भिषक्तम्।।

(1) रोगों के हेतु (2) रोगों के लक्षण (3) रोगों का प्रशमन उपाय (4) रोग को पुनः न होने देने का उपाय – इन चारों बातों का ज्ञानी हो।

वैद्य के गुण :– (6) विद्या वितर्की विज्ञानं स्मृतिः तत्परता क्रिया। यस्यैते षड्गुणास्तस्य न साध्यमति वर्तते।

(1) विधा (2) वितर्क (3) विज्ञान (4) स्मृति (5) तत्परता और (6) चिकित्सा क्रिया में संलग्नता। – ये छः गुण रहते हैं तो उसकी चिकित्सा से जो साध्य रोग है वे अश्यमेव ठीक हो जाते हैं।

उपमा :– शास्त्रं ज्योतिः प्रकाशनार्थं दर्शनं बुद्धिरात्मनः। शास्त्र – ज्योति शास्त्र बुद्धि – नेत्र।

विषयों को प्रकाशित करने के लिए शास्त्र एक ज्योति है और अपनी बुद्धि ही नेत्र है।

वैद्य की 4 वृत्तियां :– मैत्री कारूण्यमार्तेषु शक्ये प्रीतिरुपेक्षणम्। प्रकृतिस्थेषु भूतेषु वैद्यवृत्तिः चतुर्विधा।। (च.सू. 9/26)

(1) मैत्री – प्राणीमात्र से मित्रता।
(2) कारूण्य – रोगी पर दया।
(3) शक्ये प्रीति – साध्य रोगों में प्रेमपूर्वक चिकित्सा।
(4) उपेक्षा – असाध्य रोग/रोगी के प्रति उपेक्षा।

प्रकृतिस्थ – मरण के समीप गया हुआ – चक्रपाणि।

शस्त्रं शास्त्राणि सलिलं गुणदोष प्रवृतये। पात्रापेक्षीण्यतः प्रज्ञां चिकित्सार्थं विशोधयेत्।। (च.सू. 9/20)

शस्त्रं, शास्त्राणि, सलिलं अपने में गुण या दोष उत्पन्न करने के लिए पात्र की अपेक्षा करते हैं। वे जैसे पात्र में जाते हैं उसके अनुसार ही गुण या दोष ग्रहण कर लेते हैं।

10. महाचतुष्पाद अध्याय

चतुष्पाद :– चतुष्पादं षोडशकलां भेषजमिति भिषजो भाषन्ते। – षोड्शकला से युक्त चतुष्पाद को 'भेषज' कहते हैं।
नोट :– इस अध्याय में चतुष्पाद की सफलता में **'मैत्रेय की शंका'** और आत्रेय द्वारा सन्देह – निवारण का वर्णन है।
रोग के भेद :– सुख साध्यं मतं साध्यं कृच्छ्रसाध्यमथापि च। द्विविधं चाप्यसाध्यं स्याद्याप्यं यच्चानुपक्रमम्।।

(1) साध्य :– 2 – 1. सुख साध्य 2. कृच्छ्रसाध्य। **(2) असाध्य :–** 1. याप्य 2. अनुपक्रम।

साध्य के पुनः 3 भेद होते है। – 1. अल्प उपाय साध्य 2. मध्य उपाय साध्य 3. उत्कृष्ट उपाय साध्य

- **विकल्पो न त्वसाध्यानां नियतानां विकल्पना।** जो रोग निश्चित रूप से असाध्य हैं उनका कोई भेद नहीं होता हैं।

1. सुखसाध्य रोग

(1) **हेतवः पूर्वरूपाणि रूपाण्यल्पानि** – रोग के हेतु, पूर्वरूप और लक्षण अल्प मात्रा में हो।
(2) **न च तुल्य गुणो दूष्यो न दोषः प्रकृति भवेत्** –(1) रोगोत्पादक दोष, दूष्य और रोगी की प्रकृति समान न हो।
(3) **न च काल गुणस्तुल्यो** – दोष के गुण और काल (ऋतु) के गुण समान न हो
(4) **न देशो दुरूपक्रमः** – देश चिकित्सा करने में रूकावट उत्पन्न करने वाला न हो।
(5) **गतिः एका नवत्वं च** – रोग एक मार्ग वाला और नवीन हो।
(6) **रोगस्य उपद्रवो न च** – रोग किसी भी प्रकार के उपद्रव से रहित हो।
(7) **दोषश्चैकः समुत्पत्तौ** – रोग की उत्पत्ति का कारण एक ही दोष हो।
(8) **देहः सर्वौषधक्षमः** – रोगी की देह सर्व प्रकार की ओषधो के सेवन में समक्ष हो
(9) **चतुष्पादोपपत्तिश्च सुखसाध्यस्य लक्षणम्** – चिकित्सा के चतुष्पाद गुणसम्पन्न हो।

2. कृच्छ्र साध्य रोग

(1) **निमित्तपूर्वरूपाणां रूपाणां मध्यमे बले** – हेतु, पूर्वरूप, रूप – मध्यम बल वाले हो
(2) **काल प्रकृति दूष्याणां सामान्येऽन्यतमस्य च** – काल, प्रकृति, दूष्य– इनमें से कोई 1 रोगोत्पादक दोष के समान गुण वाला हो।
(3) **गर्भिणीवृद्ध बालानां नात्युपद्रवपीडितम्** – रोगी गर्भिणी, बालक या वृद्ध हो, उपद्रव अधिक हो।
(4) **शस्त्रक्षाराग्नि कृत्यानां अनंव कृच्छ्रदेशम्** – शस्त्रधार, अग्निकर्म साध्य, पुरातन, मर्माश्रित हो।
(5) **द्विपथं नातिकालं वा** – रोग दो मार्गो में हो, अल्प पुरातन हो, दो दोषों से उत्पन्न हो।
(6) **नातिपूर्ण चतुष्पदम्** – चिकित्सा के चतुष्पाद पूर्ण न हो।
(7) **कृच्छ्रसाध्यं द्विदोषजम्** – जो दो दोष से उत्पन्न हुआ हो।

3. याप्य रोग

(1) **शेषत्वाद् आयुषो याप्यम्** – आयु शेष रहने से रोगी जीवित रहता है।
(2) **पथ्य सेवया लब्धाल्पसुखं** – पथ्य आहार विहार के सेवन से थोड़ा लाभ होता है।
(3) **अल्पेन हेतुना आशुप्रवर्तकम्** – पुनः अल्प कारण से ही शीघ्र उग्र हो जाए याप्य है।
(4) **गम्भीरं बहु धातुस्थं** – जो रोग गम्भीर धातुगत हो, कई धातुओं में फैला हो।
(5) **मर्मसन्धिसमाश्रितम्** – मर्म और संधि प्रदेशों में हुआ हो।
(6) **नित्यानुशायिन रोगं** – जो नित्य ही बार बार दौरे के रूप में आता है।
(7) **रोगं दीर्घकालम् अवस्थितम्** – जो दीर्घकाल से चला आ रहा हो।
(8) **विद्याद् द्विदोषजं** – जो दो दोष से उत्पन्न हुआ हो – याप्य है।

4. अनुपक्रम (प्रत्याख्येय) रोग

(1) **तद्वत प्रत्याख्येयं त्रिदोषजम्**– जो रोग तीनों दोषों से उत्पन्न हुआ हो।
(2) **क्रियापथम् अतिक्रान्तं** – चिकित्सा की सीमा लांघ गया हो।
(3) **सर्वमार्गानुसारिणम्** – सभी मार्गो में व्याप्त हो गया हो।
(4) **औत्सुक्यं, अरति** – उत्सुकता (जीवन की रक्षा होगी/नहीं) बैचनी हो।
(5) **संमोहकरम्, इन्द्रियनाशनम्** – मूर्च्छा उत्पन्न होती हो, इन्द्रियों की शक्ति क्षीण हो गई।
(6) **दुर्बलस्य सुसंवृद्धं व्याधिं** – दुर्बल रोगी हो और रोग खूब बढ़ा हुआ हो।
(7) **सारिष्टमेव च** – जिस रोग में अरिष्ट के लक्षण उत्पन्न हो गये हो।

- **नहि भेषज साध्यानां व्याधीनां भेषजकारणं भवति।** – औषध साध्य व्याधियों में औषध का प्रयोग व्यर्थ नहीं होता है।

सुखसाध्य रोग के अपवाद :– ज्वरे तुल्यर्तु दोषत्वं प्रमेहे तुल्यदृष्यता। रक्तगुल्मे पुराणत्वं सुखासाध्यस्य लक्षणं।

(1) ज्वर – प्राकृत ज्वर शरद, बंसन्त में – सुखसाध्य। वर्षा ऋतु में– कष्टसाध्य।

(2) गुल्म – रक्तगुल्म (पुराना हो तब) – सुखसाध्य

(3) प्रमेह में – कफज प्रेमह (तुल्य दोष–दूष्य)– सुखसाध्य

पित्तज प्रमेह (अतुल्य दोष–दूष्य) – याप्य।

11. त्रिऐषणीय अध्याय

त्रिऐषणाएं :– त्रि अर्थात 3 + एषणा अर्थात तीव्र इच्छा।

(1) प्राणैषणा – स्वस्थस्य स्वस्थवृत्तानुवृत्तिः आतुरस्य च विकारप्रशमयेऽप्रमादः।

(2) धनैषणा – 4 उपाय – कृषि, पाशुपालन, वाणिज्य, राजसेवा।

(3) परलोकैषणा – पुनर्जन्म में आस्था रखकर सर्वजन हितकारी कार्य व सदवृत्त का पालन करें।

(1. प्राणैषणा 2. धनैषणा 3. धर्मैषणा – मोक्ष)।

अपुनर्भववादी :–
- प्रत्यक्षवादी
- श्रुतिवादी
  - मातृपितृवादी
  - स्वभाववादी
  - परनिर्माणवादी
  - यदृच्छावादी

(1) प्रत्यक्षवादी :– चार्वाक आदि प्रत्यक्ष न होने से पुनर्जन्म नहीं मानते हैं नास्तिक है।

खण्डन – प्रत्यक्ष ज्ञान साधन इन्द्रियां स्वयं प्रत्यक्ष गम्य नहीं है।

प्रत्यक्ष प्रमाण में बाधक :– 8 कारण

(1) अतिसामीप्य (3) अतिसूक्ष्म (5) इन्द्रिय दौर्बल्य (7) समानाभिहार।

(2) अतिदूर (4) आवरण (6) अनवस्थित मन (8) अभिभव।

(2) मातृपितृवादी :– कुछ लोग माता पिता को जन्म का कारण मानते हैं।

खण्डन – आत्मा जैसे सूक्ष्म द्रव्य का अवयव (छोटा अंश) नहीं होता। आत्मा तो निर्वयव है।

(3) स्वभाववादी :– कुछ लोग स्वभाव को जन्म के प्रति कारण मानते हैं।

पंचमहाभूत और आत्मा इनके अपने लक्षण (अग्नि में उष्णता आदि) स्वाभाविक जानना चाहिए किन्तु इनके संयोग और वियोग में कर्म ही कारण है।

(4) परनिर्माणवादी :– कुछ लोग पर (अर्थात् ईश्वर) निर्माण को जन्म का कारण मानते हैं।

खण्डन – जो अनादि चेतना धातु है उसका दूसरे निर्माण नहीं हो सकता।

(5) यदृच्छावादी :– कुछ लोगों का मत है कि यों ही जगत की उत्पत्ति हो जाती है कोई कारण नहीं है।

खण्डन – यदृच्छावादी प्रमाण, परीक्षा, कर्ता, कारण, देव, ऋर्षि, सिद्ध, कर्म, कर्मफल, और आत्मा को नहीं मानता है। इसलिए ये **सबसे घोर नास्तिक** है, इस नास्तिक मत को मानना सब पापों से बड़ा पाप है।

चतुर्विध परीक्षाएँ

द्विविधमेव खलु सर्व सच्चासच्च, तस्य चतुर्विद्या परीक्षा – आप्तोपदेशः प्रत्यक्षं, अनुमानं, युक्तिश्चेति।।

1. आप्तोपदेश :– रजस्तमोभ्यां निर्मुक्ताः तपोज्ञान बलेन ये। येषां त्रिकालममलं ज्ञानमव्याहतं सदा।।
आप्ताः शिष्टा विबुद्धास्ते तेषां वाक्यमसंशयम्। सत्यं, वक्ष्यन्ति ते कस्मादसत्यं नीरजस्तमाः। (च.सू. 11/8)
आप्तपुरूषों के वाक्यों के आप्तोपदेश प्रमाण माना जाता है।

आप्त लक्षण :– तप, ज्ञान बल से जो रज औ तम से सर्वथा मुक्त हो गए हो जिन्हें तीनों कालों का यथार्थ तथा बाधारहित ज्ञान हो वे **आप्त/शिष्ट/विबुद्ध** है। इन आप्त पुरुषों के वचन संशयरहित और सत्य होते हैं वे रज और तम से मुक्त है तो फिर असत्य क्यों कहेंगे।

(1) आप्ति – विषयों का साक्षात्कार (2) आप्त – जो आप्ति द्वारा कर्म करें।

आप्तोपदेश/एतिह्य/आगम प्रमाण को न्याय वर्तिकार ने शब्द प्रमाण माना है।

2. प्रत्यक्ष :– आत्मेन्द्रियमनोर्थानां सन्निकर्षात् प्रवर्तते। व्यक्ता तदात्वे या बुद्धिः प्रत्यक्ष सा निरूच्यते। (च.सू. 11/19)
आत्मा + इन्द्रिय + मन + विषय–इन चारों के संयोग से तत्काल जो निश्चयात्मक ज्ञान होता है उसे प्रत्यक्ष कहते हैं

3. अनुमान :– प्रत्यक्षपूर्व त्रिविधं त्रिकालं चानुमीयते। वह्निनिगूढो धूमेन मैथुनं गर्भदर्शनात्।।
एवं व्यवस्यन्त्यतीतं बीजात्फलमनागतम्। दृष्ट्वा बीजात्फलं जातमिहैव सदृशं बुधाः।। (च.सू. 11/20)

प्रत्यक्ष ज्ञान हो जाने के बाद उसके ही आधार पर तीन प्रकार का तथा तीनों कालों का अनुमान किया जाता है। जैसे – धूम देखकर छिपी हुई है। (वर्तमानकालिक) अग्नि को अनुमान से जान लिया जाता है। गर्भ को देखकर (भूतकाल में) स्त्री का पुरुष से सहवास होना जाना जाता है। इसी प्रकार बीज को देखकर (इसी प्रकार बीज को देखकर भविष्य में उत्पन्न होने वाले) अनागत फल का अनुमान कर लिया जाता है यही अनुमान प्रमाण है।

4. युक्ति :–(1). जल कर्षण बीजः ऋतुसंयोगात् शस्य सम्भवः। युक्तिः षड्धातु संयोगाद् गर्भणां संभवस्तथा।।
मन्थ मन्थन मन्थान संयोगादग्नि सम्भवः। युक्ति युक्ता चतुष्पादसंपद व्याधिनिर्वहणी।।

1. जिस प्रकार – जल, कर्षित भूमि, बीज, ऋतु – वृक्ष उत्पत्ति।
   उसी प्रकार – पंचमहाभूत और आत्मा के संयोग – शिशु (गर्भ) उत्पत्ति — युक्ति है।
2. जिस प्रकार – मन्थ, मन्थन और मन्थान – अग्नि निर्माण।
   उसी प्रकार – स्वगुण सम्पन्न चिकित्सा के चतुष्पाद – व्याधिनाश। — युक्ति है।

(2.) बुद्धि पश्यति या भावान् बहुकारणयोगजान्। युक्तिस्त्रिकाला या ज्ञेया त्रिवर्गः साध्यते यया।।
अनेक कारणों के संयोग से उत्पन्न हुए अविज्ञात भावों (विषयों) को विज्ञात विषयों के कार्य कारणभाव के अनुसार जो बुद्धि देखती है अर्थात् ज्ञान कराती है उसे युक्ति कहते हैं। **त्रिवर्ग – धर्म, अर्थ और काम।** सिद्धि में युक्ति साधक है।

पुर्नजन्म सिद्धि :– आचार्य चरक ने इन्हीं चतुर्विध प्रमाणों द्वारा सिद्ध किया है कि पुर्नजन्म होता है।
आचार्य चरक ने प्रत्यक्ष से पुनर्जन्म सिद्धि में 13 उदाहरण दिये हैं।

अष्टत्रिक वर्णन – कृष्णात्रेय

1. **त्रिउपस्तम्भ** :– आहार, स्वप्न, ब्रह्मचर्य। (त्रिस्तम्भ :– वात, पित्त, कफ)
   त्रय उपस्तम्भा इति – आहारः स्वप्नो ब्रह्मचर्यमिति। (च. सू. 11/33)

2. **त्रिविध बल :– सहज,** कालज, युक्तिकृत।
   1. सहज – शरीर और सत्व का स्वाभाविक बल।
   2. कालज – ऋतु अनुसार आदान–विसर्ग काल में बल, आयुनुसार बाल, युवा, वृद्ध में बल।
   3. युक्तिकृत – पौष्टिक आहार, व्यायाम, रसायन, बाजीकरण योगों से प्राप्त बल।

3. **त्रिविध आयतन हेतु :–** असात्यमेन्यिार्थ संयोग, कर्म, काल।

त्रिविध विकल्प – (1) अतियोग (2) अयोग (3) मिथ्यायोग।

त्रिविध कर्म – (1) कायिक कर्म (2) वाचिक कर्म (3) मानस कर्म।

प्रज्ञापराध :– त्रिविध विकल्प + त्रिविध कर्म। **इति त्रिविधं विकल्पं त्रिविधमेव कर्म प्रज्ञापराध इति व्यवस्येत्।**

स्पर्शनेन्द्रिय का व्याप्कत्व :– तत्रैकं स्पर्शनमिन्द्रियाणां इन्द्रियव्यापकं चेतः समवायि। (च.सू. 11/38)
स्पर्शेन्द्रिय सभी इन्द्रियों में व्याप्त रहती है

4. **त्रिविध रोग :–** निज, आगन्तुज और मानसं।

1. निज – तत्र निजः शरीदोषसमुत्थः।
2. आगन्तुज – आगन्तुः भूतविष वाप्वग्नि सम्प्रहारादि समुत्थः।
3. मानस – मानसः पुनरिष्टस्य लाभाल्लाभाच्चनिष्टस्योपजायते।

5. **त्रिविध रोगमार्ग :–** शाखा, कोष्ठ, मर्मास्थि संधि।

1. **शाखा** – तत्र शाखा रक्तदयो धातवस्त्वक च, स **बाह्यरोग मार्गः।**
2. **कोष्ठ** – कोष्ठः पुर्नरूच्यते महास्रोत शरीर मध्यं महानिम्नामपक्वाशयश्चेति पर्यायशब्दैस्तन्त्रे **स रोगमार्ग आभ्यंतरः।**
3. **अस्थिसंधिमर्म** – मर्माणि पुनः बस्तिहृदयमूर्धादीनि अस्थिसन्धयोऽस्थिसंयोगास्तत्रोपनिबद्धाश्च स्नायु कण्डरा स **मध्यम रोगमार्गः।**

1. **शाखा आश्रित – 14 –** गलगण्ड, पिडका, अलजी, अपची, अधिमांस, चर्मकील, मषक, कुष्ठ, व्यंग आदि + विद्रधि, अर्श, विसर्प, शोथ, गुल्म।
2. **कोष्ठ आश्रित – 16 –**ज्वर, अतिसार, वमन + अलसक, विसूचिका + श्वास, कास, हिक्का + आनाह, उदररोग, प्लीहा + विद्रधि, अर्श, विसर्प ,शोथ, गुल्म।
3. **अस्थिसंधिमर्माश्रित – 11 –** पक्षवध, पक्षग्रह + अपतानक, अर्दित + शोष, राजयक्ष्मा + अस्थिसंधि शूल, गुदभ्रंश, + हृदय, बस्ति, शिर के रोग।

6. **त्रिविध औषध :–** दैवव्यपाश्रय, युक्तिव्यपाश्रय, सत्वाजय।

1. **दैवव्यापाश्रय** – मन्त्रौषधि मणिमंगलबल्युपहार होमनियम प्रायश्चित उपवास स्वस्त्ययन प्राणिपात गमनादि।
2. **युक्तिव्यपाश्रय** – पुनराहार औषधद्रव्याणां योजना।
3. **सत्वावजय** – पुनः अहितेभ्योऽर्थेभ्यो मनोनिग्रहः।

अन्य त्रिविध औषध :–

1. **अन्तः परिमार्जन** – जो औषध शरीर के अंदर प्रवेश कर दूषित आहार जन्य रोगों का नाश करें।
2. **बहिः परिमार्जन** – शरीर की त्वचा का आश्रय लेकर रोगनाश। अभ्यंग, स्वेद, प्रदेह, परिषेक, उन्मर्दन।
3. **शस्त्रप्रणिधान** – इसमें अष्टविध(1)छेदन (2) भेदन (3) व्यधन (4) लेखन (5) दारण (6)उत्पादन (7) प्रच्छान (8) सीवन शस्त्रकर्म, क्षारकर्म, अग्निकर्म और जलौका का प्रयोग कर रोगों को दूर किया जाता है।

7. **त्रिविध वैद्य :–** छद्मचर, सिद्धसाधित और जीविताभिसर।

(1) छद्मर वैद्य :– वैद्यभाण्डौषधैः पुस्तैः पल्लवैरवलोकनैः। लभन्ते ये भिषक् शब्दमज्ञास्ते प्रतिरूपकाः।।
वैद्यों के समान औषध निर्माण यंत्रो, पुस्तक और **(पल्लव ग्राही)** उपकरणों आदि बाह्य आडम्बरों के प्रयोग से रोगी को देखने वाले, ऐसे अपठित व्यक्ति, जो ठगने के लिए वैद्यों की वेशभूषा धारण करते हैं वे छद्मचर वैद्य होते हैं।

(2) सिद्धसाधित वैद्य – श्री यशोज्ञानसिद्धानां व्यपदेशादतद्विधाः। वैद्यशब्द लभन्ते येज्ञेयास्ते सिद्धसाधिताः।।
जो स्वयं पढे लिखे नहीं है और न ही शास्त्र ज्ञान, व्यावहारिक ज्ञान सम्पन्न है, किन्तु धनी, यशस्वी, विद्वान वैद्यों के साथ अपना सम्बन्ध बताकर या स्वयं वही बनकर वैद्य नाम से प्रसिद्धि प्राप्त कर लेते हैं वे सिद्धसाधित वैद्य हैं

(3) जीविताभिसर :– प्रयोग ज्ञान विज्ञान सिद्धि सिद्धाः सुखप्रदाः। जीविताभिसरास्ते स्युः।

12. वातकलाकलीय अध्याय

तद्विध सम्भाषा परिषद् :— 8 आचार्यो द्वारा वात संबंधी 8 प्रश्न। **वातकलाकलीय** :— वात + कला + अकलीय।

1. **कला** – गुण (वात का 16वां भाग)   2. **अकला** – दोष (कला का भी सूक्ष्मतम भाग)

(वात संबंधी अष्ट प्रश्न – उत्तर)

(1) **कुश** :— वात के 6 गुण बताये। **'रूक्ष लघु शीत दारूण खरविशदाः षडिमे वातगुणा भवन्ति'। (कुश)**
(दीर्घजीवितीय अध्याय में वात के 7 गुण बताये यहां सूक्ष्म, चल के स्थान दारूण गुण बताया है।)
वात के गुण :– 7 – रूक्षः शीतो लघुः सूक्ष्मश्चलोऽथ विशदः खरः। (च.सू. 1/59)

(2) **कुमार शिरा भारद्वाज** :— 'वात के प्रकोपक कारण' बतलाए।
वात के समान गुणवर्धक वाले आहार–विहार, कर्म करने से वात प्रकोपित होता है।

(3) **वाह्रीक ऋर्षि काकांयन** :— 'वात के शमन कारण' बताए।
वात के रूक्षादि गुणों के विपरीत प्रकृति वाले द्रव्यों एवं कर्माभ्यास से वातशमन होता है।

(4) **वडिश** :— 'असंघात एवं अनावस्थित वात के प्रकोप एवं शमन की प्रक्रिया' बतायी।
(1) रूक्ष लघु शीतदारूण खर विशद और सुषिर उत्पादक पदार्थ – वात का प्रकोपक।
(2) स्निग्ध गुरूष्णश्लक्षण मृदुपिच्छिल और घन कारक पदार्थ – वात प्रशमनानि।

(5) **वार्योविद** :— 'प्राकृत शरीर चर वायु के कर्मों का वर्णन'।
वायु के 4 प्रकार के कर्म :— (1) कुपित शरीर चर। (2) कुपित लोक चर।
(3) अकुपित शरीर चर। (4) अकुपित लोक चर।

प्राकृत (अकुपित) शरीरचर वायु के कर्म :—
'वायुस्तन्त्रयन्त्रधर, प्राणोदानसमानव्यानापानात्मा, **प्रवर्तकश्चेष्टामुच्चावचानां, सर्वेन्द्रियाणामुद्योजकः, नियन्ता प्रणेता च मनसः,** (मन का नियंत्रण कर्ता – वायु, मन का निग्रह कर्ता – स्वयं मन)
सर्वेन्द्रियार्थानामभिवोढा, **सर्वशरीरव्यूहकरः,** सन्धाकरः शरीरस्य............ ....कर्ता गर्भाकृतीनाम्,
आयुषोऽनुवृत्ति प्रत्ययभूतो भवत्य कुपितः। (तन्त्र = शरीर, यंत्र = शरीरायव)

(6) **मरिच** :— 'पित्त संबंधी वर्णन' किया। **'अग्निरेव शरीरे पित्तान्गर्तः कुपिताकुपितः शुभाशुभानि करोतिः'।**
पक्ति–अपक्ति, दर्शन–अदर्शन, प्राकृत–विकृत वर्ण, शौर्य–भय, क्रोध–हर्ष, मोह–प्रसाद आदि अनेक प्रकार के द्वन्द्व प्राकृतिक पित्त की स्थिति का ही परिणाम है।

(7) **काप्य** :— 'कफ संबंधी वर्णन' किया। **'सोम एवं शरीरे श्लेष्मान्तर्गतः कुपिताकुपितः शुभाशुभानि करोति'।**
दृढ़ता–शैथिल्य, स्थूलता–कृशता, उत्साह–आलस्य, वृषता–क्लीवता, **ज्ञान–अज्ञान,** बुद्धि–मोह तथा अन्य भी द्वन्द्वों को कफ उत्पन्न करता है।

(8) **आत्रेय** :— **'त्रिदोष सम्बन्धी निर्णयात्मक मत'** एवं उसका सर्वसमर्थन। अतः में सभी के मत अनुसार आत्रेय ने अपने विचार व्यक्त किए कि वात पित्त ये तीनों ही सम (प्राकृत) स्थिति में रहते हैं तब – आरोग्य व दीर्घायु की प्राप्ति होती है विषमास्था में रोग एवं मृत्युकारण है। आश्रेय के मत का सभी ने समर्थन किया।

वायु के पर्याय – मृत्यु, यम, नियन्ता, प्रजापति, अदिति, **विश्वकर्मा,** विश्वरूपा, सर्वग, भगवान्, **सूक्ष्म, अव्यय, विभु,** विष्णु।

- आचार्य काश्यप ने अन्न को 'प्रजापति' की संज्ञा दी है।
- आचार्य चरकानुसार अव्यय, विभु, विश्वकर्मा और विश्वरूपा वायु और आत्मा दोनों के पर्याय है।
- आचार्य सुश्रुत ने वायु, काल और जठराग्नि इन सभी को 'भगवान्' शब्द से सम्बोधित किया है।

13. स्नेहाध्याय

अग्निवेश के स्नेह विषयक '**25 प्रश्नों**' का वर्णन हुआ है।

(1) स्नेह की योनियां :– (1) स्थावर – तिल आदि का स्नेह (2) जांगम – दूध, दही, मांस, घृत, वसा मज्जा, स्नेह।

1. तिल तैल – शरीर के बलार्थ और स्नेहन हेतु **2. एरण्ड तैल** – विरेचन हेतु – अग्र/सर्वश्रेष्ठ द्रव्य है।

(2) स्नेह के भेद :– चतुर्विध स्नेह – घृत, तैल, वसा मज्जा।

घृत (उत्तम) – संस्कारों से दूसरों के गुणों का अनुवर्तन करने वाला।

स्नेह	गुणकर्म	प्रयोज्य ऋतु
घृत	घृतं **पित्तानिलहरं** रसशुक्रौजसां हितम्। **निर्वापणं** मृदुकरं, स्वरवर्ण प्रसादनम्।	शरद
तैल	**मारूतघ्नं** न च श्लेष्मवर्धन **बलवर्धनम्। त्वच्यं** उष्णं स्थिरकरं तैल **योनिविशोधमन्।**	प्रावृट
वसा	विद्ध, **भग्न, भ्रष्टयोनि,** कर्णशूल, शिरोरूजि। पौरूषोपचये, **स्नेहार्थ व्यायामसेवी।**	माधव (वैशाख)
मज्जा	बल,शुक्र,रस,श्लेष्म,मेदो,मज्जा, विवर्धनः। मज्जा **विशेषतोऽस्थ्नां** च **बलकृत** स्नेहने हितः।	माधव (वैशाख)

(4) स्नेह प्रयोग काल :– अत्यन्त शीत और अत्यंत उष्ण काल में सर्वथा स्नेह का सेवन नहीं करना चाहिए

1. वातपित्ताधिक एवं उष्णकाल में – **रात्रि में स्नेहपान**
2. कफाधिक एवं शीतकाल में – **दिन में स्नेहपान**

- वातपित्ताधिक एवं उष्णकाल में – **दिन में स्नेहपान** से मूर्च्छा, पिपासा, उन्माद व कामला रोग हो सकते है।
- कफाधिक एवं शीतकाल में – **रात्रि में स्नेहपान** से अन्यथा आनाह, अरूचि, शूल व पाण्डु रोग हो सकते है।

(5) स्नेहपान का अनुपान :– '**जलमुष्णं घृत पेयं, यूषस्तैलेऽनुशस्यते। वसामज्जोस्तु मण्डः स्यात्सर्वेषूष्णमथाम्बु वा।।**

(1) घृत – उष्ण जल (3) वसा मज्जा – मण्ड।
(2) तैल – यूष (4) अथवा सबके साथ – उष्ण जल।

(6) स्नेह की प्रविचारणाये :– (24) – चरक (काश्यप – 20)

(1) रस	(5) मासं	(9) दूध	(13) खण्ड	(17) भक्ष्य	(21) नस्य
(2) ओदन	(6) सूप	(10) दही	(14) काम्बलिक	(18) अभ्यांजन	(22) गण्डूष
(3) विलेपी	(7) शाक	(11) मद्य	(15) तिलकल्क	(19) कर्णतैल	(23) वस्ति
(4) यवागू	(8) यूष	(12) लेह	(16) सत्तू	(20) अक्षितर्पण	(24) उत्तरवस्ति

1. प्रविचारणा :– स्नेह को भोज्य पदार्थो के साथ लेना। **2. 'अच्छपान'** – केवल स्नेहपान (प्रथम कल्पना)।

अच्छपेयस्तु यः स्नेहो न तामाहुर्विचारणाम्। स्नेहस्य य भिषग्दृष्टः कल्पः प्रथमकल्पिकः। (च. सू 13/26)

रसों के संयोग से 64 प्रविचारणाएं :– 64 – (चरक एवं वाग्भट्ट) – 1) रसों के संयोग से –63 (2) अच्छपान – 1।

स्नेह की मात्रा	पाचन काल	रोग	अवस्था
1. ह्रस्व मात्रा	अर्ध दिन (6 घंटे में) पच जाये। (2 याम/प्रहर – वाग्भट्ट)	**ज्वर, कास, अतिसार,**	मंदाग्नि, रिक्तकोष्ठी, बालक, वृद्ध, सुकुमार, अवर बल।
2. मध्यम मात्रा	1 दिन (12 घंटे में) पच जाये। (4 याम/प्रहर – वाग्भट्ट)	**'क्षुद्रकुष्ठ' कुष्ठ, प्रमेह, वातरक्त में,**	मृदुकोष्ठ, मध्यम – अग्नि बल, शरीरबल।
3. उत्तम मात्रा	1 अहोरात्र (24 घंटे में) पच जाये (8 याम/प्रहर – वाग्भट्ट)	**सर्पदंष्ट्र, विसर्प, उन्माद, गुल्म, मूत्रकृच्छ्र, बिबन्ध**	तीक्ष्णाग्नि, शरीर बल– श्रेष्ठ। नित्यप्रभूतस्नेहसेवी, क्षुत्पिपासासहा नर

(मदविभ्रंशा :– सुखपूर्वक स्नेहन एवं शोधन के लिए प्रयुक्त स्नेह की मध्यम मात्रा)

ह्रस्वयसी मात्रा – स्नेह परीक्षार्थ ह्रस्व में भी कम मात्रा जो 2 याम से भी कम समय में जीर्ण हो जाए। – (वाग्भट्ट)

स्नेह	गुणकर्म
1. घृत	वातपित्त प्रकृति, वातपित्तज रोग, **क्षतक्षीण**, दाह,शस्त्र,विष,अग्नि–हत रोगी, सौकुमार्य बल–वर्ण,स्वर प्रसादन **चक्षुःकामा, आयुःप्रकर्षकामा, पुष्टिकामाः, प्रजाकामाः**, दीप्ति, ओज, स्मृति, मेधा, अग्नि, बुद्धि, इन्द्रियबल –हेतु
2. तैल	प्रवृद्ध श्लेष्ममेद, **स्थौल्य,** वातप्रकृति, वातव्याधि, **'कृमिकोष्णं, क्रूरकोष्ठ, नाडीव्रण में।** (शरीर में – बल, तनुत्व, लघुता, दृढ़ता हेतु) (त्वचा में स्निग्ध श्लक्षणता हेतु)।
3. वसा	वातातसहा, रूक्षा, भाराध्वकर्शिता, संशुष्क रेतोरूधिरा, कफमेदक्षया, **महत् अग्निबल, वसासात्म्य अस्थि–सन्धि–सिरा–स्नायु–मर्मकोष्ठ महारूजः**, स्रोत्रोवृत्त बलवान वायु प्रकोप में।
4. मज्जा	दीप्ताग्नि, **क्लेशसहा, घस्मरा,** सदास्नेहसेविनः वातार्ता, **क्रूरकोष्ठा।**

अच्छ स्नेह प्रहर्ष काल :– (1) मृदुकोष्ठी में – 3 दिन तक। (2) क्रूर कोष्ठी में – 7 दिन तक।

स्नेहन योग्य :– स्वेद्याः शोधयिताव्याश्च रूक्षा वातविकारिणः। व्यायाममद्य स्त्रीनित्याः स्नेहयाः स्युर्ये च चिन्तकाः।

जिनको स्वेदन/शोधन कराना हो, रूक्ष, वातव्याधि से पीड़ित रोगी, नित्य व्यायाम, मद्य, स्त्रीप्रसंग का सेवी एवं चिन्ताशील व्यक्तियों को स्नेहन करें।

स्नेहन आयोग्य :– उरूस्तम्भ, आमवात, उत्पन्न कफमेद वाले रोग, मन्दाग्नि, गर्भिणी, **तालुशोष, तृष्णा,** मूर्च्छा के रोगी, अन्नद्वेषी, छर्दि, उदररोग, आमदोष, विषार्त रोगी, दुर्बल, क्षीण एवं जिन्हें नस्य, बस्ति दी गई हो– स्नेहन अयोग्य है।

अस्निग्ध :– ग्रंथित, रूक्ष – पुरीष, प्रतिलोम – वायु, मंद – अग्नि, रूक्ष, खर – शरीर।

सम्यक् स्निग्ध :– वर्च – स्निग्ध, असंहतम्, वातुलोमिन, दीप्ताग्नि, शरीर में मार्दव, स्निग्धता।

अतिस्निग्ध :– पाण्डुता, गौरव, कफज, जाड्य, **पुरीषस्याविपक्वता,** तन्द्रा अरूचि उत्क्लेश स्यात् अतिस्निग्ध लक्षणम्।

स्नेहपान से पूर्व भोजन :– स्नेहपान से 1 दिन पूर्व – द्रव, उष्ण, अनभिष्यन्दी, नीति स्निग्ध – ऐसा भोजन करे।

(1) संशोधन हेतु – रात्रि भोजन जीर्णोपरान्त – मध्यम मात्रा।

(2) संशमन हेतु – भोजन के समय भूख लगने पर – प्रधान मात्रा।

(1) साम पित्त में – केवल घृतपान (अच्छपान) का निषेध है।

(2) निराम पित्त में – केवल घृतपान (अच्छपान) कराना चाहिए।

मृदुकोष्ठ :– उदीर्णपित्तऽल्पकफा ग्रहणी मन्दमारूता। मृदुकोष्ठस्य तस्मात् स सुविरेच्यो नरः स्मृतः। (च.सू. 13/71)

जिसकी ग्रहणी कला में पित्त – प्रबल, कफ – न्यून एवं वात – मंद रहती है 'वह मृदु कोष्ठ' व्यक्ति है। उसका सूखपूर्वक विरेचन होता है। विरेच्य द्रव्य – गुड़, दूध, इक्षुरस, मस्तु, कर्शरा, काश्मर्य, त्रिफला, द्राक्षारस।

स्नेह व्यापद :– (19 उपद्रव) – तन्द्रा, उत्क्लेश, आनाह, ज्वर, स्तम्भ, विसंज्ञता, कुष्ठ, कण्डू, पाण्डू, अर्श, शोथ, अरूचि, उदररोग, ग्रहणी, उदरशूल, स्तैमित्य, तृष्णा, जिह्वास्तभ और आमदोष।

चिकित्सा – 1. स्वेदन, वमन, संस्रन।
2. रूक्षान्नपान, **तक्रारिष्ट,** त्रिफला एवं मूलों का प्रयोग।

1. वमनार्थ स्नेह – स्नेह पान के **'1 दिन बाद'** द्रव, उष्ण, मांस रस और भात खिलाकर वमन कराना चाहिए।
2. विरेचनार्थ स्नेह – स्नेहपान के **'3 दिन बाद'** विरेचन कराये हैं। **(प्रस्कंदन – विरेचन का पर्याय है)**

सद्यः स्नेहन विधि :– पांचप्रसृतिकी पेया + दूध में बना उदड़ मिश्रित भात + घृत इसका सेवन करने से शीघ्र ही स्नेहन हो जाता है। **(पांच प्रसृतिकी पेया – घृत, तैल, वसा, मज्जा और तण्डुल – प्रत्येक 1 प्रसृत)**

सलवण स्नेह :–लवण मिश्रित सभी स्नेहों से शीघ्र ही स्नेहन होता है (लवण– अभिष्यन्दी, अरूक्ष, सूक्ष्म, उष्ण व्यवायी)

'तद्धयभिष्यन्द्यरूक्षं च सूक्ष्ममुष्णं व्यवायि च' – (च. सू. 13/98)

विचारणा योग्य – स्नेह द्वेषी, स्नेहनित्या, मृदुकोष्ठी, क्लेशसहा, नित्यमद्यसेवी व्यक्तियों के लिए।

14. स्वेदाध्याय

स्वेदन :– स्वेदसाध्याः प्रशाम्यन्ति गदा वातकफात्मकाः। स्वेदन से वात, कफज, विकार दूर हो जाते हैं।

स्वेदन के भेद :– (1) महान – रोग बलवान (2) मध्यम – रोग मध्यम (3) दुर्बल – रोग अल्प।

(1) स्निग्ध स्वेद – V रोगों में। (2) रूक्ष स्वेद – K रोगों में। (3) स्निग्धरूक्ष स्वेद – VK रोगों में।

(1) आमाशय में कुपित वात → (1) रूक्ष स्वेद (2) स्निग्ध स्वेद।

(2) पक्वाशय में कुपित कफ → (1) स्निग्ध स्वेद (2) रूक्ष स्वेद।

षट् स्वेदसंग्रह/3 द्वन्द्वज भेद :– (1) साग्नि, निराग्नि (2) एकांग, सर्वांग (3) स्निग्ध, रूक्ष।

(1) वृषण, हृदय, नेत्र में – स्वेदन निषेध है आवश्यक होने पर 'मृदु स्वेद' कराए। (आचार्य वाग्भट्ट – स्वल्प स्वेद)

(2) वंक्षण में – 'मध्यम स्वेद' कराते हैं (वाग्भट्ट – अल्प स्वेद)

सम्यक स्वेदन :– (1) शीत'–शूल की शान्ति (2) स्तम्भता, गौरवता का निग्रह (3) स्वेद आना (4) शरीर का मार्दव।

स्वेद का अतियोग :–(1) पित्त प्रकोप, तृष्णा, दाह, मूर्च्छा (2) शरीर सदन (3) स्वेदांग (4) अतिदौर्बल्यता।

चिकित्सा – (चरक संहिता) ग्रीष्म ऋतु चर्या में वर्णित – 'मधुर, स्निग्ध एवं शीतल आहार विहार।

(शीतोपचार चिकित्सा – सुश्रुत, शारङ्धर विसर्प रोग की चिकित्सा – काश्यप, स्तम्भन चिकित्सा – वाग्भट्ट)

स्वेदन अयोग्य :– कषाय रस सेवी, पित्तविकार, रक्तपित्त, **वातरक्त, कामला, प्रमेह, मधुमेह, अतिसार, उदररोग,** नित्यमद्य सेवी, क्षार, अग्निदग्ध, गुदपाक, गुद्रभ्रंश, गर्भिणी, विशीर्ण, नष्टसंज्ञा और तिमिर रोगी स्वेदन अयोग्य है।

स्वेदन योग्य :– प्रतिश्याय, कास, श्वास, हिक्का, स्वरभेद, श्लेष्मदोष, शीतदोष, विबन्ध, मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र शिरःशूल, गृधसी, स्तम्भ, संकोच, खल्ली, वातकण्टक इत्यादि समस्त वातकफज **विकारों में।**

उपनाह बंधन :– रात्रि में बंधा उपनाह दिन में खोल देना चाहिए और दिन में बंधा हो तो रात में खोल देना चाहिए। शीतकला में अधिक समय तक पुलिस बंधी रह सकती है।

<u>त्रयोदश साग्नि स्वेद</u>

साग्नि स्वेद :– चरक – 13 भेद, काश्यप – 8 भेद, सुश्रुत, वाग्भट्ट – 4 भेद (ताप, उष्म, द्रव्य, उपनाह)।

अष्टांग संग्रहकार ने उष्म स्वेद के अतंगर्त 8 साग्नि स्वेदों का वर्णन किया है ? (अ. सू. 26/7)

संकरः प्रस्तरो नाडी परिषेकोऽवगाहनम्। जेन्ताकोऽश्मघनः कर्षू कुटी भू कुम्भिकैव च। **कूपो होलाक इत्येते स्वेदयन्ति त्रयोदशः।**

1.संकर 2.प्रस्तर 3.नाडी 4.परिषेक 5.अवगाहन 6.जेन्ताक 7.अश्मघन 8.कूर्ष 9.कुटी 10.भू 11.कुम्भी 12.कूप 13.होलाक।

(1) संकर – इसके अंतर्गत **'पिण्ड स्वेद'** आता है।

(2) प्रस्तर – गर्म गर्म कृशरा/वेशवार को मनुष्य लंबाई तुल्य चौकी पर फैला देते हैं उस पर रेशमी वस्त्र/एरण्ड पत्र बिछाकर, तैल स्नेहित मनुष्य को सुलाकर कम्बल उड़ा देने स्वेदन हो जाता है।

(3) नाडी – 1. आकृति – **'गंजाग्रहस्त संस्थानया'** – हाथी की सूंड की तरह उतार चढ़ाव वाली।

2. लंबाई – 1 व्याम या ½ व्याम + मूलभाग ¼ मोटा + अग्रभाग ⅛ मोटा

3. स्वरूप – **'द्विस्त्रिर्वा विनामितया' 2/3 भागों में टेढ़ी घुमावदार बनी है।**

(4) परिषेक – वातहर या वातश्लेष्महर द्रव्यों के क्वाथ का फव्वारा।

(5) अवगाहन– वातनाशक द्रव्यों के क्वाथ,तैल,घृत, मांसरस/उष्णजल से भरे टब में बैठाकर स्वेदन। (मात्रा – 4 मुहूर्त – भावप्रकाश)

(6) जेन्ताक – (1) हेमन्त ऋतु में।

(2) कूटागार (गोलाकार उष्ण गर्भगृह) बनवाए। – **लं x चौ x ऊ = 16 x 16 x 16 अरत्नि।**

(3) जलाशय के <u>दक्षिण/पश्चिम</u> में 8 अरत्नि दूरी पर।

(7) कर्षू स्वेद – चारपाई के विस्तर के नीचे गढ्ढे में धूम्ररहित अंगारों की अग्नि से।

(8) कुटी स्वेद – छोटी वृत्ताकार कुटी जिसमें 'झरोखा न हो' **<u>हन्सतिका</u> की अग्नि** से।

(9) कूर्प स्वेद – चारपाई की लंबाई से दुगना गहरा कुआं में निर्धूम अग्नि द्वारा।

(निराग्नि स्वेद) (चरक – 10, सुश्रुत – 7)

'व्यायाम उष्णसदनं गुरूप्रावरणं क्षुधा।'बहुपानं भय क्रोधावुपनाहाहवातपाः।। स्वेदयन्ति दशैतानि नरमग्निगुणादृते।

(1) व्यायाम	(2) उष्णगृह	(4) भारी वस्त्र	(4) आतप	(5) आहव
(6) क्रोध	**(7) भय**	**(8) भूख**	**(9) बहु मद्यपान**	**(10) उपनाह।**

उपनाह स्वेद – चरक – निराग्नि सुश्रुत – साग्नि। अंष्टाग हृदय (साग्नि, निराग्नि दोनों)

सुश्रुतानुसार निरिग्न स्वेद :– (7) – व्यायाम, निवात, गुरूप्रावरण, आतप, मल्लयुद्ध, क्रोध, **अध्व।**

"त्रयोदशविधः स्वेदो बिना दशाविधोऽग्निा। <u>संग्रहेण च षट् स्वेदाः</u> स्वेदाध्याये निदर्शिताः।।" (च. सू. 14/70)

15. उपकल्पनीयमध्याय

(1) संशोधन औषध संग्रह :– संशोधन चिकित्सा से पूर्व संशोधन के समस्त परिणामों के अपेक्षा अनुसार औषध संग्रह कर लेना चाहिए। दोष, औषध, देश, काल, बल, शरीर, आहार, सात्म्य, सत्व, प्रकृति और वय इनकी अवस्थाएं सूक्ष्म होती है। चिन्तन से परे है – 'अग्निवेश' उपर्युक्त **11** बिन्दु चिकित्सा में सफलता हेतु अत्यंत विचारणीय है।

(2) संशोधन से पूर्व – **संशोधन से पूर्व 'स्नेहन, स्वेदन' आदि पूर्वकर्म** कर लें।

वमन कर्म :– अभिमन्त्रित मदनफल कषाय की एक मात्रा मधु, मुलेठी, सैंधव और फाणित मिलाकर पीने को देवें।

(व्यवहार की दृष्टि से मदनफल चूर्ण की वमनार्थ मात्रा = 3–6 माशा, वमनार्थ क्वाथ की मात्रा = 4 –8 तोला)

वमन द्रव्य पिलाने के **'1 मुहूर्त तक प्रतीक्षा'** करें उसके बाद यदि –

– स्वेद का प्रादुर्भाव होने पर – दोषों का विलयन होना।

– लोम हर्ष होने पर – दोषों का अपने स्थान से प्रचलित होना।

– कुक्षि में अध्यमान – दोषों का कुक्षि में पहुचंना।

– हल्लास तथा आस्य स्रावण – दोषों का ऊर्ध्व मुखी होना।

1. जानु समान ऊंचे विस्तर पर बिठाएं एंव सहायक/मित्रगण पीठ के नीचे से ऊपर को गले, नाभि दबाएं।
2. नखकर्तित दो अंगुलियों से कण्ठ के भीतर स्पर्श कराते हुए वमन करने को प्रेरित करिए।

वमन के अयोग :– वमन के वेगों का किसी कारणवश बाहर न निकला, अथवा केवल औषध की प्रवृत्ति होना, वायु की गति प्रतिलोम हो जाना या वेगों का विभ्रंश और विबन्ध होना – ये अयोग के लक्षण है।

सम्यक वमन के लक्षण :– क्रमशः कफ → पित्त → वायु का निकलना एंव वमन के वेगों का स्वयं रूक जाना

वमन के अतियोग :– फेनिलरक्त चन्द्रिकोपगमनम्' इति अतियोगलक्षणानि।– झागदार रक्त निकलना एवं उसमें चमकती रक्त चन्द्रिकाएं दिखना। – इसे वमन का अतियोग जानना चाहिए।

वमन पश्चात् :– ' 1 मुहूर्त पश्चात्' स्नैहिक, प्रायोगिक या वैरेचनिक 'धूम्रपान' कराये।

वमन के पश्चात् संसर्जन क्रम – क्रमशः **यवागू,** विलेपी, **ओदन + यूष, मांस रस** का सेवन कराए।

(1) प्रधान शुद्धि –	7 दिन	12 अन्नकाल
(2) मध्य शुद्धि –	5 दिन	8 अन्नकाल
(3) अल्प शुद्धि –	3 दिन	4 अन्नकाल

वमन के अतियोग तथा अयोग से उपद्रव :– (चरक – 10, वाग्भट्ट– 12, सुश्रुत – 15)

आध्मान, परिकर्तिका, परिस्राव, हृदयोपसरण, अंगग्रह, **जीवादान, विभ्रंश स्तम्भ,** क्लम, उपद्रव। **(च. सू. 15/13)**

विरेचन विधि :– त्रिवृत्त कल्क का 1 **अक्ष मात्रा** जल अथवा किसी द्रव में घोलकर पिलाये।

अतियोग – मांस और मेद के धोवन के समान काला रक्त निकलना।

संशोधन से लाभ :– मलापह रोगहरं बलवर्णप्रसादनम्। पीत्वा संशोधन सम्यगायुषा युज्यते चिरम्। **(च. सू. 15/22)**

16. चिकित्सा प्राभृतीय अध्याय

चिकित्सा प्राभृत :— चिकित्सा में प्रयुक्त होने वाली सभी सामग्रियों तथा उपकरणों से युक्त।

सम्यक् विरेचन के लक्षण :—

> **दौर्बल्यं लाघवं** ग्लानिर्व्याधिनामणुता रूचिः। **हृद्वर्णशुद्धिः** क्षुत्तृष्णा काले वेगप्रवर्तनम्।
> **बुद्धीन्द्रियमनःशुद्धि** मारूतस्यानुलोमता। सम्यकविरिक्तिलिंगानि कायाग्नेश्चानुवर्तनम्।। **(च. सू. 16/6)**

अविरिक्त के लक्षण :—

> ष्ठीवन हृदयाशुद्धिरुत्क्लेशः श्लेष्मपित्तयोः। आध्मानमरूचि छर्दिर**दौर्बल्यलाघवम्।**
> जंघोरू सदनं तन्द्रा स्तैमित्यं पीनसागमः। **लक्षणान्य विरिक्तानां मारूतस्य च निग्रह। (च. सू. 16/8)**

विरेचन के अतियोग के लक्षण :—

> विट्पित्तश्लेष्मवातानामागतानां यथाक्रमम्। परं स्रवति **यद्रक्तं मेदोमांसोदकोपमम्।**
> निःश्लेष्मपित्तमुदकं शोणित कृष्णमेव वा। तृप्यतो मारूतार्तस्य सोऽतियोगः प्रमुह्यतः।। **(च. सू. 16/10)**

1. क्रमशः **विट्→ पित्त→ श्लेष्म→ वात** के आ जाने के बाद 'मेदोमांसोदकोपम' रक्त (मेद,मांस, धोवन सम) आता है।
2. निःश्लेष्म पित्तमुदकं – बिना कफ, पित्त के जल निकलता है/'**शोणित कृष्णमेव**' – काला रक्त निकलता हो।
3. अधिक तृष्णा, वातव्यथा, प्रमुह्यत = मूर्च्छा आने लगती है।

वमन के अतियोग के लक्षण :— विरेचन के अतियोग के सम लक्षण + **ऊर्ध्वगत वातरोग, वाक्ग्रह।**

संशोधन से लाभ :— (1) विशुद्ध कोष्ठ (2) कायाग्नि – वर्धित (3) व्याधि का उपशमन (4) स्वस्थता बनी रहती है (5) इन्द्रिय, मन, बुद्धि, वर्ण – प्रसादति (6) शरीर बल, पुष्टि, वृषता में वृद्धि (7) जरां कृच्छ्रेण लभते (10) चिर जीवनम्।

संशोधन चिकित्सा की श्रेष्ठता :— संशोधन चिकित्सा संशमन चिकित्सा से श्रेष्ठ होती है।

> **"दोषाः कदाचित् कुप्यन्ति जिता लंघनपाचनैः। जिताः संशोधनैर्ये तु न तेषां पुनरूद्भवः।" (च. सू. 16/20)**

वमन विरेचन अतियोग चिकित्सा :— अतियोगानुबद्धानां सर्पिःपानं प्रशस्यते। तैलं मधुरकैः सिद्धं अथवाऽप्यनुवासनम्।।
सर्पिपान, मधुरौषध सिद्ध तैल का पान अथवा अनुवासन बस्ति देनी चाहिए।

वमन विरेचन अयोग चिकित्सा :— **यस्य त्वयोगस्तं स्निग्धं पुनः संशोधयेत् नरम्।** – स्नेहन करके पुनः संशोधन दे।

—: स्वभावोपरमवाद :—

पर्याय :— कारण निरपेक्ष विनाश – (चक्रपाणि)। **(स्वभावोपरमवाद बौद्धों का मत है।)**

> **'स्वभावात् विनाशकारणनिरपेक्षात् उपरमो विनाशः स्वभावोपरमः।' – चक्रपाणि।**

इसके अनुसार – भाव पदार्थों की उत्पत्ति में कारण होता है। परन्तु उनके नाश में कारण नहीं होता है।

> **"जायन्ते हेतु वैषम्याद् विषमा देहधातवः। हेतु साम्यात् समास्तेषां स्वभावोपरमः सदा।।" (च. सू. 16/27) (jam-07)**

देह की धातुऐं अपने उत्पादक कारणों की विषमता से विषम हो जाती है, यदि उनके उत्पादक कारण सम रहते हैं, तो भी सम रहती है। – इन धातुओं का स्वभाव से अपने आप प्रतिक्षण विनाश होता रहता है।

> **"प्रवृत्तिहेतुर्भावानां न निरोधेऽस्ति कारणम्। केचित्तत्रापि मन्यन्ते हेतुं हेतोरवर्तनम्।।" (च. सू. 16/28)**

—: चिकित्सा :—

चिकित्सा :—याभिः क्रियाभिः जायन्ते शरीरे धातवः समाः। सा चिकित्सा विकारणां कर्म तत् भिषजां मतम्। (च.सू. 16/34)

जिन क्रियाओं के द्वारा शरीर के धातु सम हो जाते हैं वही क्रिया रोगों की चिकित्सा कहलाती है।
अतः धातुओं को सम करना ही वैद्य का कर्म है।

उद्देश्य :— (1) शरीर में समधातुओं का अनुबन्ध बनाए रखना। (2) धातुओं को सम करना।

17. कियन्तः शिरसीयाध्याय

शिरोरोग के निदान :– वेगसंधारण, दिवास्वप्न, रात्रिजागरण, अवश्याय, प्राग्वात, उच्च भाष्य, अतिमैथुन, शीतरम्बुसेवनात्।
शिर :– प्राणाः प्राणभृतां यत्राश्रिताः सर्वेन्द्रियाणि च। यदुत्तमांगमगांनां शिरस्तदभिधीयते। (च. सू. 17/3)
उत्तमांग :– चरक शिर को प्राणियों के प्राण एवं इन्द्रियों का आश्रय कहा है एंव शिर को उत्तमांग की संज्ञा दी है।

शिरोरोग :– 5– वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज और कृमिज। – चरक।

- **(माधव, सुश्रुत, भाव प्रकाश एवं योग रत्नाकर – 11)**
- **(अष्टांग संग्रह –** 9, **अष्टांग हृदय– 19** = 10 शिरोरोग + 9 शिरकपाल के रोग)

1. वातज शिरोरोग – निस्तुद्येते भृशं शंखौ घाटा संभिद्यते तथा। **सभ्रूमध्य ललाटं च तपतीवातिवेदनाम्।**
   - **(शीतमारूतसंस्पर्शात्** – शीतपित्त और वातज शिरोरोग दोनों का निदान है)

2. पित्तज शिरोरोग – दह्यते रूच्यते तेन शिरः शीतं सुष्यते। दह्येते **चक्षुषी तृष्णा भ्रमः** स्वेदश्च जायते।।
   - **(क्षार तथा मद्य का अधिक सेवन एवं क्रोध –** पित्तज शिरोरोग का निदान है)
   -

3. कफज शिरोरोग – शिरो मन्दरूजं तेन **सुप्त स्तिमितभारिकम्।** भवत्युत्पद्यते तन्द्राऽऽलस्यमरोचकम्।
   - **(आस्यासुखैः स्वप्नसुखैर्गुरूस्निग्धातिभोजनैः –** कफज शिरोरोग का निदान है)
   - **(आस्यासुखं स्वप्नसुखं दधीनि ग्राम्योदकानूपरसाः पयांसि –** प्रमेह का निदान है)

4. त्रिदोज शिरोरोग – वाताच्छूलं भ्रमः कम्पः पित्ताद्दाहो मदस्तृषा। कफाद्गुरूत्वं तन्द्रा च शिरोरोगे त्रिदोषजे।

5. कृमिज शिरोरोग – **व्यधच्छेदरूजा कण्डू शोफ दौर्गन्ध्यदुःखितम्।** (च. सू. 17/19)

हृद्रोग :– 5 वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज और कृमिज। – चरक।

- सुश्रुत – 4 – सन्निपातज हृदय रोग नहीं माना है।

1. वातज हृद्रोग – वेपथुर्वेष्टनं स्तम्भः प्रमोहः शून्यता दरः। हृदि वातातुरे रूपं जीर्णे चात्यर्थवेदना।
   - **(दर = हृदय में दरदर या मरमर ध्वनि की प्रतीति होना)**

2. पित्तज हृद्रोग – हृद् दाह, वक्रे तिक्तता, तिक्तोम्लोद्गर।
3. कफज हृद्रोग – हृदयं कफहृद्रोगे **सुप्तं स्तिमितभारिकम्।** तन्द्रारूचिपरीतस्य **भवत्यश्मावृत्तं यथा।**
   - **(श्लेष्मणा हृदयं स्तब्धं भारिकं साश्मगर्भवत्।** – अ. हृदय)
   - **अचिन्तन** कफज हृद्रोग का कारण है।

4. कृमिज हृद्रोग – **तुद्यमानं स हृदय सूचीभिरिव मन्यते।** छिद्यमानं यथा शस्त्रैर्जातकण्डूं महारूजम्।
5. त्रिदोज हृद्रोग – हृदरोगः कष्टदः **कष्टसाध्य** उक्तो महर्षिभिः।

दोषमान विकल्पज रोग – 62 – वात, पित्त और कफ इनमें क्षय, स्थान, वृद्धि आदि मान विकल्प से – **62 व्याधियां।**

सन्निपातज	– 13	25 घटने पर – क्षीण दोष होने पर।
संसर्ग	– 9	25 बढ़ने पर – वृद्ध दोष होने पर।
पृथक्	– 3	12 त्रिदोष में युगपत वृद्धि तथा क्षय से।

क्षय के भेद :– चरक – 18, सुश्रुत– 2, शारंगर्धर – 5, हारीत – 10।
18 प्रकार के क्षय :– दोष क्षय– 3, धातु क्षय– 7, मल क्षय – 7 (पंचेन्द्रिय मलायतन, मूत्र, पुरीष क्षय) ओज क्षय–1।

धातुक्षय	चरकानुसार
1. रस	घट्टते सहते, शब्दं न उच्चै, **द्रवति** शूल्यते। **हृदयं ताम्यति**, स्वल्पचेष्टास्यापि रसक्षये।
2. रक्त	परूषा स्फुिटिता म्लाना त्वग् रूक्षा रक्तसंक्षये।
3. मांस	मांसक्षये विशेषेण **स्फिग्ग्रीवोदर शुष्कता।**
4. मेद	**संधिस्फुटन**, ग्लानि, नेत्रों में आलस्य, उदर का तनु होना।
5. अस्थि	**अस्थितोद,** केशलोमनखश्मश्रुद्विज – प्रपतनं, **श्रम, संधिशैथिल्य।**
6. मज्जा	अस्थियां – शीर्ण, दुर्बल, लघु + **प्रततं वातरोगीणि।**
7. शुक्र	दौर्बल्यं **मुखशोषश्च** पाण्डुत्वं सदनं श्रमः। **क्लैव्यं** शुक्रविसर्गश्च क्षीण शुक्रस्य लक्षणम्।
8. मूत्र	मूत्रक्षये मूत्रकृच्छं मूत्रवैवर्ण्यमेव च। **पिपासा** बाधते चास्य **मुखं च परिशुष्यति। – चरक।**
9. पुरीष	शरीर में रूक्षता वृद्धि, वात की कुक्षि में पीड़ा करते हुए तियर्क, उर्ध्वगति ।
10 मलायन क्षय	मलायनानि, चान्याति शून्यानि च लघुनि च। विशुष्काणि च लक्ष्यन्ते यथास्वं मल संक्षये।

SHYAM-VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER BY DR. NEELIMA SINGH LODHI

नोट :– (1) संधि स्फुटन – मेदक्षय। (4) मुखशोष – शुक्रक्षय।
(2) संधि शैथिल्य – अस्थिक्षय। (5) मुख परिशुष्यं – मूत्रक्षय।
(3) अस्थि सौशीर्य – मज्जाक्षय। (6) पिपासा – मूत्रक्षय।
(7) प्रततंवातरोगीणि – मज्जाक्षय। (8) हृदय ताम्यति – रसक्षय।

"ओज"

हृदयस्थ ओज लक्षण :– हृदि तिष्ठति यच्छुद्धं रक्तमीषत्सपीतकम्। ओजः शरीरे संख्यातं **तन्नाशान्ना विनश्यति। (17/74)**
ओज का स्थान – हृदय, **हृदयस्थ ओज का वर्ण** – रक्तमीषत्सपीतकम्।
गर्भावस्था में ओज :– प्रथमं जायते ह्योजः शरीरेऽस्मिन् शरीरिणाम्। सर्पिर्वर्ण मधुरस लाजगन्धि प्रजायते। (च. सू. 17/75)
गर्भस्थ शरीर में सर्वप्रथम ओज की उत्पत्ति होती है। वर्ण – सर्पिवर्ण, रस – मधुरस, गन्ध – लाजगन्धि।
ओजक्षय :– "विभेति दुर्बलोऽभीक्ष्णं ध्यायति व्यथितेन्द्रियः। दुश्छायो दुर्मना रूक्षः क्षामश्चैव ओजसःक्षये।।"
मनुष्य भयभीत रहता है, दुर्बल हो जाता है, सदैव चिन्तित और ध्यान मग्न रहता है, इन्द्रियां व्यथित रहती है, क्रान्ति मलिन, मन उदास रहता है और शरीर रूक्ष एंव कृश हो जाता है।
ओजक्षय के कारण : –
(1) व्यायमोऽनशनं चिन्ता रूक्षाल्प प्रमिताशनम्। (2) वातातप सेवन, भय, शोक, रूक्ष मद्यपान, प्रजागरण।
(3) कफ, रक्त, शुक्र और मलों का अधिक मात्रा में निकलना। (4) काल एंव भूतोपघात (जीवाणु संक्रमण)।
ओज के गुण :– गुरू शीतं मृदु स्निग्ध बहलं मधुरं स्थिरम्। प्रसन्नं पिच्छिलं श्लक्ष्णमोजो दशगुणं स्मृतम्। (च. चि. 24)

"मधुमेह का निदान एंव सम्प्राप्ति"

निदान :– (1) गुरू, स्निग्ध, अम्ल, लवण पदार्थ – अतिमात्रा में सेवन। (2) नवान्न पानं, निद्रा, **आस्यासुख,**
(3) व्यायाम, चिन्ता, संशोधन (पंचकर्म) – न करना।
सम्प्राप्ति :– उपयुक्त कारणों से शरीर में कफ, पित्त, मेद तथा मांस अत्यधिक बढ जाते है। इनके बढ़ने से वायु की गति रूक जाती है और कुपित वायु ओज को लेकर मूत्राशय में प्रवेश कर जाती है तब **कष्टकर** मधुमेह रोग की उत्पत्ति होती है।

"प्रमेह पिडिका"

मधुमेह की उपेक्षा करने से शरीर के **मांसल प्रदेशों, मर्म स्थानों तथा संधियों में** सप्त दारूण प्रमेह पिडिकाऐ होती है।
1. चरक – 7 :– 1. शराविका 2. कच्छपिका 3. जालिनी – **कच्छ्रसाध्य। – (ह्यातिबलाः प्रभूत श्लेष्ममेदसः)।**
4. सर्षपी 5. अलजी 6 विनता 7. विद्रधि – **अल्प मेदस में साध्य। –(पित्त प्रधान/ पित्तोल्वणा)।**
2. काश्यप – 8 :– चरकोक्त – 7 + अरूंषिका।
3. भोज – 9 :– चरकोक्त 7 + **'कुलत्थिका',** पुत्रिणी, विदारिका। (– मसूरिका, विनता नहीं मानी है।)
4. सुश्रुत, वाग्भट्ट – 10 :– चरकोक्त 7 + 'मसूरिका' पुत्रिणी, विदारिका।

प्रमेह पिडिका	लक्षण (चरक सूत्र अ. 17/82–90)
1. शराविका	**अन्तोन्नता मध्यनिम्ना श्यावा क्लेदरूगान्विता।** शराविका स्यात् पिडका **शरावाकृतिसंस्थिता।।**
2. कच्छपिका	**अवगाढार्ति निस्तोदा, महावास्तुपरिग्रहा।** श्लक्षणा कच्छ्रपृष्ठाभा पिडका कच्छपी मता।
3. जालिनी	स्तब्धा शिराजालवती स्निग्धस्रावा महाशया। रूजानिस्तोदबहुला सूक्ष्माछिद्रा च जालिनी।।
4. सर्षपिका	**पिडका नातिमहती, क्षिप्रपाका महारूजा।** सर्षपी सर्षपाभाभिः पिडकाभिश्चिता भवेत्।।
5. अलजी	**दहति** त्वचमुत्थाने **तृष्णामोहज्वरप्रदा। विसर्पत्यनिशं,** दुःखात् दहत्यग्निरिवालजी।।
6. विनता	**अवगाढ़रूजा,** क्लेदा, **पृष्ठ/उदर पर उत्पन्न। महती विनता नीला पिडका** विनता मता।
7. विद्रधि	2 प्रकार की होती है (1) बाह्य (2) आभ्यंतर।

"विद्रधि"

निरूक्ति :– दुष्टरक्तातिमात्रात्वात् स वै शीघ्रं विदह्यते। ततः शीघ्र विदाहित्वाद् विद्रधिः इत्यभिधीयते।। (च. सू. 17/95)

दुष्ट रक्त की अतिमात्रा होने से यह शीघ्र विदाहयुक्त हो जाती है। इसलिये इसे विद्रधि कहते हैं।

चरक ने विद्रधि के **2 भेद** माने है। (सुश्रुत – 6)

1. बाह्य विद्रधि :– (3 स्थान) – त्वक, मांस, स्नायु में उत्पन्न होती है।– क्रण्डाराभा महारूजा।

2. आभ्यतर विद्रधि :–(9 स्थान) – हृदय, वस्ति, नाभि, यकृत, प्लीहा, क्लोम वृक्क, कुक्षि, वंक्षण। (सुश्रुत–10– गुदा)।

बाह्य विद्रधि – 5	लक्षण
1. वातज	व्यधच्छेद **भ्रमनाह** शब्दस्फुरणसर्पणैः वातिकी।
2. पित्तज	पैत्तिकी तृष्णादाहमोह मदज्वरैः।
3. कफज	**जृम्भा,** उत्क्लेश, अरूचि, स्तम्भ, शीतकैः श्लैष्मिकी।
4. त्रिदोषज	सर्वासु च **महच्छूलं** विद्रधीषूपजायते। – अत्यंत कष्टकारी, मिश्रित लक्षण।
5. पंचमान विद्रधि	1. तप्तैः शस्त्रैः यथा मथ्येत – अग्नितप्त शस्त्र से मंथा जा रहा है। 2. उल्मुकैरिव दह्यते – उन्मुक (लुकारी) से स्पर्श कर जलाया गया हो। **3. व्यम्लतां याता वृश्चिकैरिव दश्यते।** – बहुत से विच्छू एक साथ काट दें।

विद्रधि –	दोशानुसार स्राव
1. वातज	तनु, रूक्ष, अरूण, श्याष, फेनिल स्राव।
2. पित्तज	**तिल, माष, कुलत्थोद सन्निभं (क्वाथ) स्राव।**
3. कफज	श्वेत, पिच्छिलं, बहलं, बहु स्राव।

"अन्तर्विद्रधियों का सापेक्ष निदान"		
	चरकानुसार – 9 स्थान	सुश्रुतानुसार – 10 स्थान
1. हृदय	हृद्घट्टन, तमक, प्रमोह, कास, श्वास	सर्वांगग्रह, तीव्र हृदि शूल।
2. नाभि	हिक्का	हिक्का, आटोप।
3. यकृत	श्वास	श्वास, तृष्णा।
4. प्लीहा	उच्छ्वासोपरोध (श्वासावरोध)	उच्छ्वासावरोध (श्वासावरोध)
5. क्लोम	पिपासा, मुखशोष, गलग्रह	पिपासा।
6. कुक्षि	कुक्षिपार्श्वान्तर शूल, अंसशूल	मारूत कोपनम्।
7. वंक्षण	सक्थिसाद	तीव्र कटिपृष्ठग्रह।
8. वस्ति	कच्छ्र, पूतिमूत्रवर्चस्त्वं	मल–मूत्र त्याग में कष्ट, दुर्गन्ध (पूति)।
9. वृक्क	पृष्ठकटिग्रह	पार्श्व संकोच।
10. गुदा		वातनिरोध, कच्छ्र, अल्पमूत्रता।

विद्रधि स्राव मार्ग :– 1. नाभि के ऊपरी भाग में होने वाली विद्रधि का स्राव – मुख मार्ग से।
2. नाभि के नीचे के भाग में होने वाली विद्रधि का स्राव – गुद मार्ग से।
3. नाभि के मध्य भाग में होने वाली विद्रधि का स्राव – मुख, गुदामार्ग से

विद्रधि असाध्यता :– त्रिमर्मस्थली (हृदय, वस्ति, नाभि), परिपक्व, त्रिदोषज विद्रधि। **चिकित्सा – गुल्मवत।**

बिना प्रमेह की पिडकाएं – मेद के दुष्ट होने पर पर बिना प्रमेह के भी पिडकाएं होती है।
स्थानानुसार असाध्यता – मर्म स्वंसे गुदे पाण्योः स्तनसंधिषु पादयोः। जायन्ते यस्य पिडकाः स प्रमेही न जीवति।।
उपद्रव – (1) तृट्श्वास **(2) मांस संकोथ** (3) मोह, हिक्का, मद, ज्वरा (4) विसर्प, मर्म संरोधा।

–: दोषों की कुल 11 गतियां :–

त्रिविधा गति :– (1) अधः (2) उर्ध्व (3) तिर्यक
(1) कोष्ठ (2) शाखा (3) मर्मास्थि संधि
(1) स्थान (2) क्षय (3) वृद्धि

- **ज्वर एवं मंदाग्नि – दोषों की तिर्यकगति से उत्पन्न होते हैं।**

द्विविधा गति :– 1. प्राकृत गति 2. वैकृत गति।

- **क्रियाशरीर में दोषों की गतियॉं – 9 मानी जाती है।**
- **आशयापकर्ष दोषों की गतियॉं – 10 होती है।**

ऋतुनुसार गति :– चयप्रकोपप्रशमाः पित्तादीनां यथाक्रमम्। भवन्त्येकैकशः षट्सु कालेष्वभ्रागमादिषु।। (च. सू. 17/114)
पित्त, कफ और वायु इन तीन दोषों का क्रम से सचय, प्रकोप एवं प्रशम वर्षा, शरद, हेमन्त, बंसत, ग्रीष्म और प्रावृट् में एक एक का होता रहता है।
(1) प्राकृतास्तु बलं श्लेष्मा विकृतो मल उच्यते। स चैवौजः स्मृतः काये स च पाप्मोपदिश्यते।। (च. सू. 17/117)
प्राकृत कफ = बल/ओज विकृत कफ = मल/पाप्मा।
(2) सर्वा हि चेष्टा वातेन स प्राणः प्राणिनां स्मृतः। (च. सू. 17/118)

18. त्रिशोथीय अध्याय

शोथ के भेद :– 3 – त्रयः शोथा भवन्ति वातपित्तश्लेष्मनिमित्ताः ते पुनः द्विविधा निजागन्तु भेदेन्। (च. सू. 18/3)
1. त्रिविध शोथ – वातज, पित्तज, कफज शोथ। 2. द्विविध शोथ – निज, आगन्तुज भोथ।
चरक ने शोथ के भेद 1 (उत्सेध भेद से), 2 (निज, आगन्तुज भेद से), 3, 4, 7, और 8 (दोषानुसार) बताए हैं।

त्रिविध शोथ :– **चरक** – एकांग, सर्वांग और अर्द्धांग।
- **माधव** – उर्ध्वगत, मध्यगत और अधोगत।
- **वाग्भट्ट** – पृथु, उन्नत और ग्रंथित।

शोथ	दोषानुसार लक्षण
वातज	पीडितान्युन्नमन्त्याशु वातशोथं – जो दबाने पर शीघ्र पुनः उठ जाता है। **शोथो नक्तं प्रणश्यति।** – रात्रि में नष्ट हो जावें। **(दिवावली) वातिक – सर्षपकल्कावलिप्त।** **स्नेहोष्णमर्दनाभ्यां च प्रणश्येत् स च वातिकः।** – स्नेहन, स्वेदन एंव मर्दन से नष्ट हो जावें।
पित्तज	पिपासा, ज्वर, दाह और स्वेद से युक्त शोथ। **'पूर्व मध्यात् प्रशूयते।'**– जो शरीर मध्य से आरम्भ हो **तनुत्वकं चातिसारी च पित्तशोथः स उच्यते।** – अतिसार युक्त। **पैत्तिक – कपिलताम्र रोमा।**
कफज	शीतल, स्थिर, कण्डूयुक्त, **कफज शोथ – निशावली।** **निपीडतो नोन्नमति श्वयथु** – शोथ दबाने पर शीघ्र नहीं उठता है एंव शोथ रात्रि में बढ़ जाता है।

शोथ के उपद्रव :– चरक – (7) – ज्वर, अरूचि, तृष्णा + वमन, अतिसार, दौबर्ल्य + श्वास।
सुश्रुत – (9) – चरकोक्त 7 उपद्रव + कास तथा हिक्का।

साध्यासाध्यता :–

1. पुरूष के लिए– जो शोथ पैर से उत्पन्न होकर सम्पूर्ण शरीर में फैल जाये – वह कष्टसाध्य है।
2. स्त्री के लिए – जो शोथ मुख से उत्पन्न होकर सम्पूर्ण शरीर में फैल जाये – वह कष्टसाध्य है।
3. पुरूष/स्त्री – जो शोथ गुह्य स्थान से उत्पन्न होकर सम्पूर्ण शरीर फैल जाये – वह कष्टसाध्य है।
4. ज्वर, अरूचि, तृष्णा, वमन, अतिसार, दौबर्ल्य, श्वास आदि उपद्रवों से युक्त शोथ कष्टसाध्य होता है।

"एकदेशीय शोथ"

शोथ	दोष	स्थानीय लक्षण
1. उपजिह्विका	K	प्रकुपित कफ **जिह्वा मूल में** स्थित होकर शोथ उत्पन्न करें
2. गलशुण्डिका	K	प्रकुपित कफ **काकल प्रदेश (तालुमूल) में** रूककर शीघ्र शोथ।
3. गलग्रह	K	कुपित कफ **गले के अन्तः भाग में** शोथ उत्पन्न करें। (आशु संजनयेच्छोथं)
4. गलगण्ड	K	कुपित कफ **गले बाह्य भाग में** संचित होकर मंद शोथ (शनैः संजनयेच्छोथं)।
5. विसर्प	P+ R	यस्य पित्त प्रकुपित सरक्त त्वचि। शोथं सरागं जनयेद् **विसर्पस्तस्य** जायते।
6. पिडिका	P+ R	यस्य पित्त प्रकुपितं त्वचि रक्तऽवतिष्ठते। शोथं सरागं जनयेद् पिडिका जायते।(स्थिर शोथ)
7.तिलका,8.पिप्लव, 9.व्यंग,10.नीलिका	P	यस्य पित्त प्रकुपितं शोणितं प्राप्य **शुष्यति**। प्रकुपित पित्त का रक्त में जाकर सूख जाना। **(सुश्रुत – पिप्लु = जतुमणि) (श्यामलं मण्डलं व्यंग वक्त्रादन्यत्र नीलिका – वाग्भट्ट)**
11. शंखक	P	पित्तं प्रकुपित शंखयोर्वतिष्ठते। **श्वयथुः शंखको** नाम दारूणस्तस्य जायते।।
12. कर्णमूलशोथ	P	पित्तं प्रकुपितं कर्णमूलेऽवतिष्ठते। ज्वरान्ते दुर्जयोऽन्ताय शोथस्तस्योपजावते।।
13. प्लीहा वृद्धि	V	कुपित वायु प्लीहा को हटाकर वामपार्श्व में वेदना।
14. गुल्म	V	कुपित वायु गुल्मस्थान में आश्रित होकर शूल और शोथ को उत्पन्न कर देती है।
15. वृद्धि रोग	V	कुपित वायु शोथ, शूल युक्त वायु का वंक्षण से → वृषणों में संचलन।
16. उदररोग	V	कुपित वायु शरीर में **'त्वङ्मांसान्तर आश्रित'** होकर कुक्षि में शोथ।
17. आनाह	V	प्रकुपित वायु कुक्षि में आश्रित होकर स्थित रहे।
18. उत्सेध	V	अर्बुद, अधिमांस में उत्सेध युक्त शोथ रहता है।
19. रोहिणी	T	प्रकुपित त्रिदोष एक ही समय में **जिह्वामूल** में अवस्थित होकर विदाह, वेदना युक्त भंयकर शोथ उत्पन्न करते है। इस रोग का नाम रोहिणी है (3 दिन में मृत्यु) **त्रिरात्रं परमं तस्य जन्तोः भवति जीवितम्। कुशलेन त्वनुक्रान्तः क्षिप्रं संपद्यते सुखी**

व्याधि के भेद :– 2 – **(1). साध्य** – 1. मृदु (सुखसाध्य) 2. दारूण (कृच्छ्रसाध्य)
(2). असाध्य – 1. मृदु (याप्य) 2. दारूण (प्रत्याख्येय)

➢ **त एवापरिसंख्येया भिद्यमाना भवनि हि। रूजावर्णसमुत्थानस्थानसंस्थाननामभिः।** (च.सू. 18/42)
यही चतुर्विध रोग रूजा, वर्ण, निदान, स्थान और लक्षण एवं नाम भेद से असंख्य होते हैं।

➢ **'न हि सर्वविकाराणां नामतोऽस्ति ध्रुवा स्थितिः।** – सभी रोगों का नाम निश्चित करना (नामकरण) सम्भव नहीं है।

दोष	प्राकृत कर्म
1. वात	उत्साहोच्छ्वासनिःश्वासचेष्टा धातुगतिः समा। समो मोक्षो गतिमतां वायोःकर्माविकारजम्। (च.सू. 18/49)
2. पित्त	दर्शनं पक्तिरूष्मा च क्षुत्तृष्णा देहमार्दवम्। प्रभा प्रसादो मेधा च पित्त कर्माविकारजम्।। (च. सू. 18/50)
3. कफ	स्नेहो बन्धः स्थिरत्वं च गौरव वृषता बलम्। क्षमा धृतिरलोभश्च कफकर्माविकारजम्।। (च. सू. 18/51)

19. अष्टौदरीय अध्याय

सामान्यज रोग	–48	नाम
1. भेद वाले रोग	3	उरुस्तम्भ, सन्यास, महागद
2. भेद वाले रोग	8	ज्वर, अर्श, व्रण, आयाम, गृधसी, वातरक्त, आमदोष, कामला
3. भेद वाले रोग	3	शोथ, रक्तपित्त, किलास
4. भेद वाले रोग	10	नेत्ररोग, कर्णरोग, मुखरोग, प्रतिश्याय, मद, मूर्च्छा, शोष, क्लैव्य, ग्रहणी, अपस्मार।
5. भेद वाले रोग	12	श्वास,कांस,हिक्का, तृष्णा,छर्दि, अरूचि, गुल्म, प्लीहदोष, पाण्डु, हृद्रोग, शिरोरोग, उन्माद
6. भेद वाले रोग	2	अतिसार, उदावर्त
7. भेद वाले रोग	3	कुष्ठ, विसर्प, प्रमेहपिडिका
8. भेद वाले रोग	4	उदरोग, मूत्राघात, क्षीरदोष, शुक्रदोष
20 भेद वाले रोग	3	प्रमेह, योनिव्यापद, कृमिरोग

1. उदरोग – 8	V,P,K,S, प्लीहोदर, बद्धोदर, छिद्रोदर, दकोदर।	(सुश्रुत – 8)
2. मूत्राघात – 8	**V,P,K,S, अश्मरीजन्य, शर्करा, रक्तजन्य, शुक्रदोष।**	**(सुश्रुत – 12)**
3. क्षीरदोष – 8	वैवर्ण्य, वैगन्ध्य, वैरस्य, पैच्छिल्य, फेनसंघात, रौक्ष्य, गौरव, स्नेह।	(सुश्रुत – 11)
4. शुक्रदोष – 8	तनु, शुष्क, फेनिल, श्वेत, पूति, पिच्छिला, रक्तवाहि, शुक्त, अवसादि।	(सुश्रुत – 11)

5. कुष्ठ – 7	कपाल, औदुम्बर, मंडल, ऋष्यजिह्वा, पुण्डरीक, सिध्म, काकणक।	(सुश्रुत – 7)
6. प्रमेहपिडिका–7	शराविका, कच्छपिका, जालिनी, सर्षपी, अलजी, विनता, विद्रधि।	(सुश्रुत – 10)
7. विसर्प – 7	वतज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, आग्नेय, ग्रन्थि, कर्दम।	(सुश्रुत – 5)

8. अतिसार – 6	**वतज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, भयज, शोकज।**	**(सुश्रुत – 6)**
9. उदावर्त – 6	वात, मूत्र, पुरीष, शुक्र, **छर्दि, क्षवथु निरोधजन्य।**	(सुश्रुत – 13)

1. श्वास – 5	महा, उर्ध्व, छिन्न, तमक और क्षुद्र श्वास।	(सुश्रुत – 5)
2. कास – 5	वातज, पित्तज, कफज, क्षतज, और क्षयज।	(सुश्रुत – 5)
3. हिक्का – 5	महती, गम्भीरा, व्यपेता, क्षुद्रा, अन्नजा।	(सुश्रुत – 5)
4. तृष्णा – 5	वातज, पित्तज, आमज, क्षयज, उपसर्गज।	(सुश्रुत – 7)
5. छर्दि – 5	वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज द्विष्टार्थ संयोगज।	(सुश्रुत – 5)
6. अरोचक – 5	वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, द्वेषजन्य।	(सुश्रुत – 5)
7. गुल्म – 5	V,P,K,S रक्तज।	(सुश्रुत – 5)
8. प्लीहदोश – 5	**V,P,K,S रक्तज।**	
9. पाण्डु – 5	V,P,K,S मृद्विका भक्षण जन्य।	(सुश्रुत– 4)
10. हृदय – 5	V,P,K,S कृमिज।	(सुश्रुत– 4)
11. शिर – 5	V,P,K,S कृमिज।	(सुश्रुत – 11)
12. उन्माद – 5	V,P,K,S आगन्तुज।	(सुश्रुत – 6)

AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER

1. अपस्मार – 4	वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज (V,P,K,S,)।	(सुश्रुत – 4)
2. नेत्ररोग – 4	वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज (V,P,K,S,)।	(सुश्रुत – 76)
3. प्रतिश्याय – 4	वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज (V,P,K,S,)।	(सुश्रुत – 5)
4. कर्णरोग – 4	वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज (V,P,K,S,)।	(सुश्रुत – 28)
5. ग्रहणी – 4	**वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज (V,P,K,S,)।**	**(सुश्रुत – 4)**
6. मुखरोग – 4	वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज (V,P,K,S,)।	(सुश्रुत – 65)
7. मद – 4	वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज (V,P,K,S,)।	(सुश्रुत – 4)
8. मूर्च्छा – 4	वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज (V,P,K,S,)।	(सुश्रुत – 4)
9. शोष – 4	साहसजन्य, वेगसंधारणजन्य, धातुक्षयजन्य, विषमाशनजन्य।	(सुश्रुत – 4)
10. क्लैब्य – 4	**बीजोपघात्, ध्वजभंग, जराजन्य, शुक्रक्षयजन्य।**	**(सुश्रुत – 6)**

1. शोथ – 3	वातज, पित्तज, कफज।	(सुश्रुत – 6)
2. किलास – 3	ताम्रवर्ण, रक्तवर्ण, श्वेतवर्ण।	
3. रक्तपित्त – 3	अधोग, उर्ध्वग, उभयमार्गज।	(सुश्रुत – 7)

1. ज्वर – 2	(1) शीत आहारविहार जन्य (2) उष्ण आहारविहार जन्य।	(सुश्रुत – 6)
2. आम – 2	(1) अलसक (2) विसूचिका।	(सुश्रुत – 3)
3. अर्श – 2	(1) शुष्कार्श (2) आर्द्र अर्श।	(सुश्रुत – 6)
4. व्रण – 2	(1) निज (2) आगन्तुज।	
5. आयाम – 2	(1) बहिरायाम (2) अन्तरायाम।	
6. कामला – 2	(1) कोष्ठाश्रयी (2) शाखाश्रयी।	
7. वातरक्त – 2	(1) गम्भीर (2) उत्तान।	
8. गृधसी – 2	(1) वातज (2) वात कफज।	

1. उरुस्तंभ –1	एक ऊरुस्तम्भ इति आमत्रिदोषसमुत्थः।
2. सन्यास – 1	एक सन्यास इति त्रिदोशात्मको मनःशरीराधिष्ठानः।
3. अतत्वाभिनिवेश – 1	एको 'महागद' इति अतत्वाभिनिवेशः। **(महाव्याधि = हलीमक – चरक)**

कृमिरोग – 20	नाम (चरक, वाग्भट्ट – MPRK – 2567 सुश्रुत – MPRK – 0776)
1. बर्हिमलज	यूका, पिप्पलिका।
2. शोणितज	केशाद्, लोमाद, लोमद्वीप, सौरस, औदुम्बर, जन्तुमाता।
3. कफज	अन्त्राद्, उदराद्, हृदयाद, चरू, दर्भपुष्प, सुगन्ध, महागुद
4. पुरीषज	ककेरूक, मकेरूक, लेलिह, सौसुराद, सशुलक।

प्रमेह भेद – सुश्रुत, चरक, वाग्भट्ट – 20।

योनिव्यापद के भेद – सुश्रुत, चरक, माधव, वाग्भट्ट – 20। (चरक ने रक्तजा योनिव्यापद को 'रक्तयोनि व्यापद' कहा है।)

'सर्व एवं निजा विकारा नान्यत्र वातपित्तफेभ्यो निर्वर्तन्ते" – (च. सू. 19/5)

सभी 'निजविकार' बिना वात, पित्त, कफ के नहीं उत्पन्न होते है जैसे –पक्षी दिन भर उड़ता रहे किंतु अपनी छाया से दूर नहीं जा सकता है, उसी प्रकार अपनी धातुवैषम्यता से उत्पन्न होने वाले रोग वात, पित्त, कफ से परे नहीं जा सकते है

- **दोषा एव हि सर्वेषां रोगाणामेककारणम् – (अष्टांग हृदय सू. 12)**

20. महारोगाध्याय

रोग भेद :– चरक ने रोग का **1 भेद** (रूक् सामान्यात् होने से), **2 प्रकृति भेद** से (निज, आगन्तुज भेद से), 2 अधिष्ठान भेद से (मनः शरीर विशेषात्) और 4 दोषानुसार (V, P, K, आगन्तुज) भेद बताए हैं।

रोग असंख्य :– विकाराः पुनरापरिसंख्येयाः प्रकृत्यधिष्ठान लिंगायतन विकल्पविशेषापरिसंख्येयत्वात्।

रोगों के हेतु :– (1) आगन्तुक रोग – नखदशन, पतन, अभिचार, अभिशाप, अभिषंग, अभिघात आदि।
(2) निज रोग – वात, पित्त तथा कफ का विषम होना।
(3) दोनों के कारण – **(1) असात्मेन्द्रियार्थ संयोग (2) प्रज्ञापराध (3) परिणाम।**

दोष	मुख्य स्थान	अन्य स्थान
1. वात	चरक – पक्वाशय ✓ सुश्रुत – श्रोणिगुदा, ✓वाग्भट्ट – पक्वाधान ✓	वस्तिःपुरीषाधानं कटिःसक्थिनी पादावस्थीनि पक्वाशयश्च वातस्थानानि तत्रापि **पक्वाशयो विशेषेण वातस्थानं।**
2. पित्त	चरक – आमाशय ✓ सुश्रुत – पक्वामाशय मध्य, वाग्भट्ट – नाभि	स्वेदो रसो लसीका रूधिरम् आमाशयश्च पित्तस्थानानि, तत्रापि **आमाशयो विशेषण पित्तस्थानम्।**
3. कफ	चरक – उरः प्रदेश सुश्रुत – आमाशय, वाग्भट्ट – मध्य, उर्ध्वप्रदेश	उरः शिरो ग्रीवा पर्वाण्यमाशयो मेदश्च श्लेष्म स्थानानि, तत्रापि **उरो विशेषेण श्लेष्मस्थानम्।**

–: नानात्मज विकार :–

1. **वातज 80 विकार** – नखभेद, **विपादिका,** गुदभ्रंश, हृन्मोह, हृद्द्रव, ग्रीवास्तम्भ, मुखशोष, कर्णशूल, अर्दित, वाधिर्य, **भ्रम,** विषाद, अस्वप्नश्चन्, **तम और तिमिर** आदि सभी वातज नानात्मज विकारों में आते हैं।

1. नखभेद	21. विड्भेद	41. दन्तभेद	61. शिरोरूक्
2. विपादिका	**22. उदावर्त**	42. दन्तशैथिल्य	62. केशभूमिस्फुटन
3. पादशूल	23. खञ्ज	43. मूकत्व	**63. अर्दित**
4. पादभ्रंश	24. कुब्जत्व	44. वाक्यसङ्ग	64. एकांग रोग
5. पादसुप्तता	25. वामनत्व	45. कषायास्यता	65. सर्वांग रोग
6. वातखुड्डता	26. त्रिकपृष्ठग्रह	46. मुखशोष	66. आक्षेपक
7. गुल्फग्रह	27. पार्श्वावमर्द	47. अरसज्ञता	**67. दण्डक**
8. पिण्डिकोद्वेष्टन	28. उदरावेष्ट	48. घ्राणनाश	68. तम
9. गृधसी	29. हृन्मोह	49. कर्णशूल	69. भ्रम
10. जानुभेद	**30. हृद्द्रव**	50. अशब्दश्रवण	70. वेपथु
11. जानुविश्लेष	31. वक्षोद्घर्ष	**51. उच्चैश्रुति**	71. जृम्भा
12. ऊरूस्तम्भ	32. वक्षोपरोध	52. बाधिर्य	**72. हिक्का**
13. ऊरूसाद	33. वक्षतोद	53. वर्त्मस्तम्भ	**73. विषाद**
14. पांगुल्य	34. बाहुशोष	54. वर्त्मसंकोच	74. अतिप्रलाप
15. गुदभ्रंश	**35. मन्यास्तम्भ**	**55. तिमिर**	75. रौक्ष्य
16. गुदार्ति	36. ग्रीवास्तम्भ	56. अक्षिशूल	***76. पारुष्य***
17. वृषणाक्षेप	37. कण्ठोद्ध्वंस	**57. अक्षिव्युदास**	77. श्यावभाषता
18. शेफःस्तम्भ	38. हनुभेद	58. भ्रव्युदास	78. अरूणभाषता
19. वंक्षणानाह	39. ओष्टभेद	59. शंखभेद	79. अस्वप्न
20. श्रोणिभेद	40. अक्षिभेद	60. ललाटभेद	80. अनवस्थितचित्तत्व

✓ वातज नानात्मज विकार– 'उरूस्तंभ, ग्रधसी, हिक्का तथा उदावर्त' ये सामान्यज और नानात्मज दोनों विकारों में आते हैं।

2. **पित्तज :– 40 विकार – ओष, प्लोष, दाह, दवथु, धूमक**, अम्लक, विदाह, अर्न्तदाह, अंसदाह, ऊष्माधिक्य, **तमः प्रवेश, मांसक्लेद**, नीलिका, अतृप्ति, आस्यविपाक, **रक्तकोठ** एंव **जीवादान** आदि पित्तज नानात्मज विकारों में आते हैं।

1. ओष – सम्पूर्ण शरीर में स्वेद एंव बेचैनी के साथ तीव्र दाह।
2. प्लोष – शरीर के किसी अंग में स्वेदरहित, अग्निदाह सम अल्प जलन।
3. दवथु – इन्द्रियों में जलन
4. धूमक – मुख से धूम निकलते हुए की तरह प्रतीत होना

✓ पित्तज नानात्मज विकार – "रक्तपित्त और कामला" सामान्यज और नानात्मज दोनों विकारों में आते है।

1. ओष	11. अतिस्वेद	21. रक्तपित्त	31. **तृष्णाधिक्य**
2. **प्लोष**	12. **अंगगन्ध**	22. **रक्तमण्डल**	32. **अतृप्ति**
3. दाह	13. **अंगावदारण**	23. हरितत्व	33. आस्यविपाक
4. दवथु	14. शोणितक्लेद	24. हारिद्रत्व	34. गलपाक
5. धूमक	15. मांसक्लेद	25. नीलिका	35. अक्षिपाक
6. अम्लक	16. त्वग्दाह	26. कक्षा	36. गुदपाक
7. विदाह	17. **त्वगवदरण**	27. कामला	37. मेढ्रपाक
8. अर्न्तदाह	18. चर्मदलन	28. तिक्तास्यता	38. जीवादान
9. अंसदाह	19. रक्तकोठ	29. लोहितगन्धास्यता	39. तमःप्रवेशश्च
10. ऊश्माधिक्य	20. रक्तविस्फोट	30. **पूतिमुखता**	40. हरितहारिद्रनेत्रमूत्रवर्चस्त्व

3. **कफज :– 20 विकार –**

1. तृप्ति	11. आलस्य	21. बलासक	31. अतिस्थौल्य
2. तन्द्रा	12. मुखमाधुर्य	22. अपक्ति	32. शीताग्निता
3. **निद्राधिक्य**	13. मुखस्राव	23. हृल्लोकण्ठोलेप	33. **उदर्द**
4. स्तैमित्य	14. श्लेष्मोद्गिरण	24. धमनीप्रतिचय	34. श्वेतावभासता
5. गुरूगात्रता	15. मलस्याधिक्य	25. **गलगण्ड**	35. श्वेत मूत्रनेत्रवर्चस्त्वं

4. **10 रक्तज :– 10 विकार –** रक्तमण्डलता, रक्तनेत्रत्व, रक्तमूत्रता, रक्तनिष्ठीवन, रक्तपिटिकादर्शन, औष्ण्यं, पूतिगन्धित्वं, पीडा, कोथ और पाक। – ये 10 रक्तज विकार "शार्ग्धर" ने बतलाये है।

–: वात के गुण–कर्म :–

1. **आत्म रूप – रौक्ष्यं भौत्यं लाघवं वैशद्यं गतिः अमूर्तत्वमनवस्थितत्वं चेति वायोरात्मरूपाणि।**
2. कर्म – संस्र, भ्रंस, व्यास, **संग**, भेद, साद, हर्ष, तर्ष, कम्प, वर्त, चाल, तोद, व्यथा, चेष्टा, खर, **परूष**, विशद, सुषिर, अरूण वर्ण, कषायरस, विरसमुखत्व, शोष, स्तंभन, खज्जता।

–: पित्त के गुण–कर्म :–

1. **औष्ठयंतैक्ष्ण्यं द्रवत्वनतिस्नेहो वर्णश्च शुक्लारूणवर्जो गन्धश्च विस्रो रसौ च कटुकाअम्लौ सरत्वं च पित्तस्यात्मरूपाणि।**
2. कर्म – दाह, उष्णता, पाक, स्वेद, क्लेद, कोथ, **कण्डू**, स्राव, राग, तथा अपने जैसी गन्ध, वर्ण व रस उत्पन्न करना।

–: कफ के गुण–कर्म :–

1. **आत्मरूप – स्नेह, शैत्यं, शौक्ल्य, गौरव, माधुर्य, स्थैर्य, पैच्छियं, मात्स्न्यानि श्लेश्म आत्मरूपाणि।**
2. कर्म – श्वेतता, शैत्य, **कण्डू**, स्थैर्य, गौरव ,स्नेहो, सुप्ति, क्लेद, उपदेह, बन्ध, माधैर्य, चिरकारित्व।

चिकित्सा पूर्व रोगपरीक्षा :– रोगमादौ परीक्षयेत ततोऽनन्तरमौषधम् । ततः कर्म भिषक् पश्चात् ज्ञानपूर्व समाचरेत्।।

21. अष्टौनिन्दितीय अध्याय

अष्टनिन्दित पुरूष :– (1) अतिदीर्घ (2) अतिह्रस्व (3) अतिलोमा (4) अलोमा (5) अतिकृष्ण (6) अतिगौर (7) अतिस्थूल (8) अतिकृश।

काश्यप ने दशविध निन्दित बालक :– अष्टनिन्दित + 9. अतिमृदु 10. अतिकठिन।

अतिस्थूलता के कारण –

(1) अतिसम्पूरणात् (2) गुरू,मधुर,शीत,स्निग्धोपयेग (3) अव्यायाम (4) अव्यवाय (5) दिवास्वप्न (6) नित्यहर्ष (7) अचिंतन (8) बीज स्वभाव।

अतिस्थूलता के लक्षण –मेदोमांसातिवृद्धत्वात् चलस्फिग् उदर स्तनः। अयथोपचयोत्साहो नरोऽतिस्थूल उच्यते।।

अतिस्थूलताजन्य दोष :– 8

(1) आयुह्रास (2) निरूत्साही (3) कृच्छ्रव्यवायता (4) दौर्बल्य (5) दौर्गन्ध्य (6) स्वेदाबाध (7) अतिक्षुत (8) अति पिपासा।

अतिकृशता के कारण :–

(1) रूक्षान्नपान (2) लंघन (3) प्रमिताशन (4) शरीर, मन, वाणी क्रियातियोग (5) शोक (6) वेगनिद्राविनिग्रह (7) रूक्षद्रव्यो का उद्वर्तन (8) स्नानात्यांभ्यास (9) वातप्रकृति (10) जरावस्था (11) विकारानुशय (12) क्रोध

अतिकृशता के दोष :–

1. व्यायाम 2. अतिसौहित्य 3. क्षुत 4. पिपासा 5.औषध 6.रोग 7. अतिशीतोष्ण 8. मैथुन को सहन नहीं कर सकता।

(1) कास (2) श्वास (3) क्षय (4) गुल्म (5) प्लीहा (6) उदर (7) अर्श (8) ग्रहणी – प्रायः हो जाया करते हैं

अतिकृशता के लक्षण –शुष्कस्फिगुदरग्रीवो धमनीजालसंततः। त्वगस्थिशेषोऽतिकृश स्थूलपर्वा नरोमतः। (च.सू. 21/11)

अतिस्थूल और अतिकृश इनकी चिकित्सा क्रमशः कर्षण और बृंहण के द्वारा करनी चाहिए।

स्थूल और कृश में श्रेष्ठता :– 'अतिकृश स्थूल से श्रेष्ठ माना है।

1. **स्थौल्यकार्श्ये वरं कार्श्य समोपकरणौ हि तौ। यद्युभौ व्याधिरागच्छेत् स्थूलमेवातिपीडयेत।। (च.सू. 21/17)**
2. **कार्श्यमेव वरं स्थौल्याद् न हि स्थूलस्य भेषजम्। (अ .हृ. 14/31)**

समसंहनन पुरूष का लक्षण :– (सुश्रुत – स्वस्थ पुरूष का लक्षण।)

संममांस प्रमाणस्तु समसंहननों नरः। दृढेन्द्रियो विकाराणां न बलेनाभियूयते।
क्षुत्पिपासातपसहः शीतव्यायामसंसहः। समपक्ता समज्वरः सममांसचयोमताः।। (च.सू. 21/18 – 19)

चिकित्सा :– (1) अतिस्थूलता चिकित्सा – कर्षण– गुरू, अवतर्पण द्रव्य। **(गुरू चातर्पणं चेष्टं स्थूलानां कर्षणं प्रति)**
(2) अतिकृशता चिकित्सा – बृंहण – लघु, संतर्पण द्रव्य। **(कृशानां बृंहणार्थं च लघु संतर्पणं च यत्)**

चिकित्सासूत्रः–(1) स्थूलता चर्तुसूत्र ✓ (1) प्रजागरं (2) व्यवायं (3) व्यायाम (4) चिन्ता।
(2) कृशता त्रिसूत्र ✓– (1) अचिन्ता (2) अतिनिद्रा (3) पौष्टिक आहार।

अतिस्थूल चिकित्सा	अतिकृश चिकित्सा
1. वातनाशक, श्लेष्म मेद अपहरण अन्नपान	1. सुनिद्रा, सुशय्या, मनसंतुष्टि, शांतिमय वातावरण
2. रूक्ष, उष्ण तथा तीक्ष्ण बस्तियों का प्रयोग	2. हर्ष, प्रिय, व्यक्ति एवं वस्तुओं का दर्शन
3. गुडूची, मुस्तक + त्रिफला का सेवन	**3. चिन्ता, व्यवाय, व्यायाम विराम।**
4. तक्रारिष्ट एवं मधुशर्बत का प्रयोग।	4. नवान्न, नवमद्य, ग्राम्य, आनूप, औदक मांसरस
5. विड़ंग+शुण्ठी+यवक्षार + तीक्ष्ण लोहभस्म, मधु	5. दूध+दधि+घी + शालि + उड़द + गेहूं + गुड़ पदार्थ
6. यवामलक चूर्ण – उत्तम पथ्य।	**6. स्निग्ध मधुर बस्तियां**, तैलाभ्यंग, उबटन लगाना।
7. बिल्वादि वृहत पंचमूल क्वाथ + मधु	7. स्नान, सुगन्ध, माला, वस्त्र आभूषण धारण।
8. अग्निमंथ स्वरस से शिलाजीत का सेवन	**8. यथा उचित संशोधन, रसायन बाजीकरण का प्रयोग।**

"निद्रा"

निद्रा की उत्पत्ति :— यदा तु मनसि क्लन्ति कर्मात्मानः क्लमान्विताः। विषयेभ्यो निवर्तन्ते तदा स्वपिति मानवः।।

मन के साथ इन्द्रियों का अपने विषयों से निवृत्त होना ही निद्रा है।

आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य — ये त्रि उपस्तम्भ है। **त्रय उपस्तम्भा इत्याहारः स्वप्नो बह्मचर्यमिति। (च. सू. 11/33)**

सम्यक निद्राश्रित :— सुख—दुख, पुष्टि—कार्श्य, बलाबलम्, वृषता—क्लीवता, ज्ञान—अज्ञान, जीवन—मृत्यु।

अति/अकाल/अनिद्रा का परिमाण :— आरोग्य (सुख) और आयुनाश।

दिवास्वप्न के योग्य — (1) गीताध्ययनमद्यस्त्रीकर्ममाराध्वकर्षिता (2) अजीर्णिनः (3) क्षताःक्षीणा (4) वृद्धाबालास्तथाऽबलाः। (5) तृष्णातिसारशूलार्ताः (4) हिक्का —श्वास रोगी (6) कृशाः (8) पतितभिहत (9) यानप्रजागरैः क्रोधशोकभय क्लान्ताः।

(सुश्रुतानुसार दिवास्वप्न का विधान— दिवास्वप्नश्च तृट् शूल हिक्का जीर्णातिसारिणाम् — सु. शा. 4/47)

दिवास्वप्न हेतु ऋतु :— ग्रीष्म ऋतु को छोड़कर अन्य ऋतु में दिवास्वप्न से **कफपित्त का प्रकोप** होता है।

(सुश्रुतानुसार ग्रीष्म ऋतु को छोड़कर अन्य ऋतु में दिवास्वप्न से त्रिदोष का प्रकोप होता है।)

दिवास्वप्न का निषेध :— मेदस्विनः स्नेहनित्याः श्लेमलाः श्लेष्मरोगिणः। दूषीविषार्तश्च दिवा न शयीरन् कदाचन।।

(कण्ठरोगी — वाग्भट्ट)।

दिवास्वप्नजन्य विकार :— हलीमक, शिरःशूल, स्तैमित्य, गुरुगात्रता, अंगमर्द, अग्निनाश, प्रलेपोहृदयस्य च।

कास, कोठ कण्डू, व पिडका— उत्पत्ति, स्मृतिबुद्धिप्रमोह, शोफ, पीनस, अर्द्धावभेदक, इन्द्रियार्थ विकार।

रात्रि जागरण हितकारी — कफ मेदो विषार्तानां रात्रौ जागरणं हितम्। (सु. शा. 4/42)

(1) रात्रौ जागरण रुक्षं — (2) स्निग्धं प्रस्वपनं दिवा।

(3) अरुक्षं अनभिष्यन्दि — त्वासीनं प्रचलायितम्।। (च.सू. 21/50)

देहवृत्तौ यथाऽऽहारस्तथा स्वप्नः सुखो मतः। स्वप्नाहारसमुत्थे च स्थौल्यकार्श्ये विशेषतः। (च.सू. 21/51)

स्थौल्य और कार्श्य विशेषतः आहार एवं स्वप्न पर निर्भर है।

स्थौल्य एवं कार्श्य — **रस निमित्तमेव स्थौल्यं कार्श्य च। (सु. सू. 15/32)**

निद्रानाश की चिकित्सा :— अभ्यंग, उत्सादन, स्नान, मनोनुकूल शब्दगंध, संवाहन, नेत्रतर्पण, शिर एंव वदन में लेप, शाल्यन्न, ग्राम्यानूपोदक मांसरस, दूध, घी, मद्य और मानसिक सुख।

निद्रानिवारक उपाय :— कायविरेचन, शिरोविरेचन, वमन, चिन्ता, क्रोध, भय, व्यायाम, धूम्रपान करना, **रक्तमोक्षण,** उपवास, असुखशय्या, सत्वगुण की अधिकता, तमो गुण पर विजय तथा उदार प्रवृत्ति।

निद्रानाश के हेतु :— (5) — **कार्य कालो विकारश्च प्रकृतिः वायुरेव च।**

(1) कार्य व्यवस्था (2) प्रतिकूल समय (3) विकारग्रस्त (4) वात एवं पित्त प्रकृति (5) वातप्रकोप।

निद्रा के भेद :—

चरक — (6) — तमोभवा, श्लेष्मसमुद्भवा, मनःशरीरश्रमसम्भवा, आगन्तुकी, व्याध्यनुवर्तनी, रात्रिस्वभावप्रभवा।

रात्रिस्वभावप्रभवा निद्रा = भूधात्री,

तमोभवा निद्रा = पापों का मूल

तथा शेष 4 निद्राऍं श्लेष्मसमुद्भवा, मनःशरीरश्रमसम्भवा, आगन्तुकी और व्याध्यनुवर्तनी **व्याधि को निर्दिष्ट करती है।**

सुश्रुत — (3) — (1) वैष्णवी (स्वाभावात्) (2) वैकारिकी (3) तामसी।

वाग्भट्ट — (7) — तमोभवा, कफजन्य, **चित्तखेदजन्य, देहखेदजन्य,** आगन्तुज, आमयजन्य, तथा काल स्वभावज।

22. लंघन बृंहणीय अध्याय

षड्विध उपक्रम :– (1) लंघन (2) बृंहण (3) रूक्षण (4) स्तम्भन (5) स्नेहन (6) स्वेदन।

(1) लंघन – यत्किञ्चित् लाघवकरं देहे तत्लघनं स्मृतम्। (2) बृंहण – बृहत्वं यच्छरीरस्य जनयेत् तच्च् बृंहणम्।
(3) रूक्षण – रौक्ष्यं खरत्वं वैशद्यं यत् कुर्यात्तद्धि रूक्षणम्। (4) स्वेदन – स्तम्भनगौरवशीतघ्नं स्वेदनं स्वेदकारकम्।
(5) स्नेहन – स्नेहनं स्नेहविष्यन्मार्दवक्लेदकारकम्। (6) स्तम्भन– स्तम्भनं स्तम्भयति यद् गतिमन्तं चलं ध्रुवम्।

1. लंघन द्रव्य – लघूष्णतीक्ष्णत विशदं रूक्षं सूक्ष्मं खरं सरम्। कठिनं चैव यद्द्रव्यं प्रायस्तल्लंघनं स्मृतम्। (च.सू. 22/12)

2. बृंहण द्रव्य – गुरू शीतं मृदु स्निग्ध बहलं **स्थूलपिच्छिलम्। प्रायो मन्दं स्थिरं श्लक्षणं द्रव्यं बृंहणमुच्यते। (च.सू. 22/13)**

3. रूक्षण द्रव्य – रूक्षं लघु खरं तीक्ष्णमुष्णं **स्थिरपिच्छिलम्।** प्रायशः कठिनं चैव यद् द्रव्यं तद्धि रूक्षणम्। (च.सू. 22/14)

4. स्नेहन द्रव्य – द्रवं सूक्ष्मं सरं स्निग्धं पिच्छिलम् गुरू शीतलम्। **प्रायो मन्दं मृदु च यद् द्रव्यं तत् स्नेहनम् मतम्।**

5. स्वेदन द्रव्य – उष्णं तीक्ष्णं सरं **स्निग्धं रूक्षं** सूक्ष्म द्रव स्थिरम्। द्रव्य गुरू च तत् प्रायस्तद्धि स्वेदनमुच्यते।

6. स्तम्भन द्रव्य :– शीतं मन्दं मृदु श्लक्ष्णं रूक्षं सूक्ष्मं द्रव स्थिरम्। यद् द्रव्यं लघु चोदिष्टं प्रायस्तत् स्तम्भनं स्मृतम्।

लंघन के 10 प्रकार :– चतुष्प्रकारा संशुद्धि :– वमन, विरेचन, शिरोविरेचन (नस्य), निरूहवस्ति। – (4)
एवं 5. पिपासा 6. उपवास 7. व्यायाम 8. वायु 9. आतप 10. पाचन। – (6)

वाग्भट्टानुसार लंघन के 2 प्रकार :– **शोधनं शमनं चेति द्विधा तत्रापि लंघनम्।**
शोधन – (5) – वमन, विरेचन, नस्य, निरूहवस्ति, **रक्तमोक्षण।** – (5)।
शमन – (7) – क्षुधा, पिपासा, व्यायाम, वायु, आतप, दीपन, पाचन। – (7)।

(1) संशोधन द्वारा लंघन – प्रभूतश्लेष्मपित्तास्रमलाः संसृष्टमारुताः, वृहत् एवं बलवान् शरीर में।
(2) पाचन द्वारा लंघन – मध्यबला रोगाः कफपित्तसमुत्थिताः,
वमन, अतिसार, हृद्रोग, विसूचिका, अलसक, ज्वर, विबन्ध, गौरव, उद्‌गार, हल्लास, अरोचक में।
(3) पिपासानिग्रह एंव उपवास द्वारा लंघन – उपर्युक्त रोग यदि अल्प बल वाले हो तो
(4) व्यायाम, आतप, मारूत सेवन द्वारा लंघन – बलवान् शरीर एवं मध्यबल/अल्प बल रोग

लंघन योग्य :– त्वगरोगी, प्रमेह, स्निग्ध,अभिष्यन्दी बृंहणी एवं वातविकार रोगी में **शिशिर ऋतु में** लंघन करना चाहिए।

बृंहण योग्य – क्षीण, क्षत, कृश, वृद्ध, दुर्बल, पथिक, नित्य स्त्रीमद्यसेवी में सदा बृंहण **ग्रीष्म ऋतु में** बृंहण करना चाहिए।
"शोष, अर्श, ग्रहणीदोष व्याधि से कर्षित रोगी में – क्रव्याद मांस का प्रयोग कर बृंहण कराना चाहिए।"

रूक्षण द्रव्य :– कटु,तिक्त,कषाय रस सेवन, असंयमित स्त्री संभोग, **खलि,पिण्याक,तक्र,** एवं मधु द्वारा रूक्षण करना चाहिए।
रूक्षण योग्य – अभिष्यन्दि, महादोष, मर्माश्रित व्याधि एवं उरूस्तम्भ आदि रोगों में रूक्षता की जाती है।

स्तंभन द्रव्य :– मधुर, तिक्त, कषाय रस सेवन, द्रव, तनु, स्थिर, शीतीकरण औषध।
स्तंभन योग्य – **पित्तक्षाराग्निदग्धा ये वम्यातिसारपीडिता।**
विषस्वेदातियोगार्ताः स्तम्भनीया निदर्शिताः।। (च.सू. 22/33)

अतिलंघन लक्षण :– पर्वभेदोऽगमर्दश्च कासः शोषो मुखस्य च।....**देहाग्निबलनाशश्च** लंघनेऽतिकृते भवेत्। (22/37)
अतिस्तम्भन लक्षण – श्यावता स्तब्धगात्रत्वमुद्वेगो हनुसंग्रहः। हृद्वर्चोनिग्रहश्च स्यादतिस्तम्भितलक्षणम्। (च.सू. 22/40)

23. संतर्पणीयमध्यायं

1. संतर्पण :– बृंहण, स्नेहन, स्तम्भन। **2. अवतर्पण :–** लंघन, रूक्षण, स्वेदन।

सन्तर्पण के कारण :–

(1) स्निग्ध, मधुर, गुरू तथा पिच्छिल गुण युक्त आहार नवान्न, नवमद्य तथा आनूप तथा जलचर प्राणियों का मांस।

(3) दुग्ध, गुड से बने पदार्थ तथा पिष्टी वाले पदार्थ, **चेष्टाद्वेषी**, आस्थासुखं, स्वप्नमुखं तथा दिवास्वप्न सेवी।

संतपर्ण जन्य रोग :– **प्रमेह पिडका कोठपाण्ड्वामय ज्वराः।**

कुष्ठान्याम प्रदोषाश्च मूत्रकृच्छ्रमरोचकः। तन्द्रा क्लैव्यमति स्थौल्यंमालस्यं गुरूगात्रता।

इन्द्रिय स्रोत्रसां लेपो बुद्धेर्मोहः प्रमीलकः।। शोफाश्चैवविधाश्चान्ये शीघ्रमप्रतिकुर्वतः।। (च.सू. 23/6–7)

(1) प्रमेह पिडका (2) कुष्ठ, कोठ कण्डू **(3) पाण्डु** (4) आमय (अलसक, विसूचिका) (5) ज्वर **(6) मूत्रकृच्छ्र**
(7) अरोचक (8) तन्द्रा (9) क्लैव्य (नपुंसकता) (10) अतिस्थूलता (11) आलस्य (12) गुरूगात्रता
(13) शोफ (14) बुद्धि मोह (15) इन्द्रिय, स्रोत्रों का कफ से लिप्त रहना **(16)** प्रमीलक (सदैव ध्यानमग्न रखना)

चिकित्सा :–1. उल्लेखन (वमन), विरेचन, रक्तमोक्षण। 2. व्यायाम, उपवास, धूम्रपान और स्वेदन।

3. मधु + हरीतिकी (सक्षौद्रश्चाभयाप्राशः), 4. रूक्षान्नसेवनम्।

5. तक्र, हरीतिकी चूर्ण, त्रिफला और अरिष्ट का सेवन।

योग – (1) त्रिफलादि क्वाथ, मुस्तादि क्वाथ (2) कुष्ठादि चूर्ण (गोमेद युक्त) **(3) त्र्यूषणादि मन्थ (4) व्योषद्य सत्तु।**

पथ्य – (1) नित्य व्यायाम, (3) जीर्ण भोजन (3) यवगोधूम भोजन।

अपर्तपण – लघंन का पर्याय है।

अपर्तपण के कारण :–

(1) उपवास, अल्पाशन, प्रमिताशन, अनशन, लंघन, प्रवृद्ध वेगसंधारण, विषमाशन, धातुक्षय।

(2) रूक्षान्न पान, अधिक व्यवाय, स्नान, शोक, भय, चिंताग्रस्त बने रहना।

(3) वमन विरेचनादि पंचकर्मो का अतियोग।

अपतर्पण जन्य रोग :–

देहाग्नि बलवर्णोजः शुक्रमांस परिक्षयः। ज्वरः कासानुबन्धश्च पार्श्वशूलमरोचकः।।

श्रोत्रदौर्बल्यमुन्माद प्रलापो हृदय व्यथा। विण्मूत्र संग्रहः शूलं जंघोरूत्रिकसंशयम्।।

पर्वास्थिसंधिभेदश्च ये चान्ये वातजा गदाः। उर्ध्ववातादयः सर्वे जायन्ते तेऽपतर्पणात्।। (च.सू. 23/27)

(1) देह, अग्नि, बल, वर्ण, ओज, शुक्र, मांस – परिक्षय। (2) कासानुबन्ध ज्वर। (3) पार्श्वशूल, अरोचक
(4) श्रोत्रेन्द्रिय दौर्बल्य (कम सुनाई देना) **(5) उन्माद, प्रलाप, हृदय व्यथा।** (6) विण्मूत्र, संग्रह
(7) जंघा, उरू, त्रिक प्रदेश में शूल। (8) पर्वभेद, अस्थि, संधि भेद। (9) उर्ध्ववात एवं अन्य वातज रोग।

चिकित्सा :– संतर्पण दो प्रकार का होता है।

(1) सद्यः संतर्पण – सद्यः क्षीण हेतु।

(2) **संतर्पण अभ्यास – चिर क्षीण हेतु।** –मांसरस, दुग्ध, घृत, स्नान, बस्ति का प्रयोग, अभ्यंग। **(NIA -2011)**

योग :–

(1) ज्वरादिनाशक मन्थ :–

शर्करा + पिप्पलीचूर्ण + तैल + घृत + क्षौद्र – समभाग + दुगुना सत्तु जल में घोलकर पीने से यह मन्थ – **"बृष्य"** होता है। **(NIA lec. -2010)**

(2) अनुलोमन तर्पण :– जौ सत्तु + समाभाग चीनी + मधु + मदिरा में मिलाकर।

(3) मूत्रकृच्छ्रनाशक तर्पण।

(4) मद्यविकार नाशक खर्जूरादि मन्थ।

(5) सद्यः संतर्पण मन्थ।

24. विधि शोणितीयम अध्याय

विशुद्ध रक्त :– तद्विशुद्धं हि रूधिरं **बलवर्ण सुखायुषा**। युनक्ति प्राणिनं प्राणः शोणितं ह्यनुवर्तते। (च. सू. 24/4)

1. रक्तवर्ण प्रसादं मांसपुष्टि जीवयति च। (सु. सू. 15/12)
2. देहस्य रूधिरं मूलं रूधिरेणैव धार्यते। (सु. सू. 14)
3. लोहितं प्रभवः शुद्धं तनोस्तेनैव च स्थितिः। (अ. ह. सू. 27)

✓ तन्द्रा, निद्राधिक्य, प्रमीलक व उपकुश की गणना रक्तज रोगों में की गयी है।
✓ **रक्तज विकारों का अनुपशय ज्ञान :–** रक्तज रोगों का निदान **"अनुपशय"** से होता है।
✓ **रक्तज विकारों का चिकित्सा सूत्र :– रक्तपित्तहर चिकित्सा,** विरेचन, उपवास या रक्तमोक्षण करना चाहिए।
✓ **रक्तदुष्टि का कारण –** हरितवर्गोक्त पदार्थों, आनूप, **प्रसह मांस का अत्यधिक सेवन**।
✓ **मात्रा :–** देहबल और दोष का विचार कर रक्तमोक्षण के तत्पश्चात् विशेष रूप से **अग्नि की रक्षा** करनी चाहिए।

विशुद्ध रक्त – **1. तपनीयेन्द्रगोपाभं पद्मालक्तक सन्निभम्। गुञ्जाफल सवर्ण च विशुद्धं विद्धि शोणितम्। (च.सू 24/22)**
2. इन्द्रगोपाकप्रतीकाशमसंहतमविवर्णं च प्रकतिस्थं जानीयात् (सु.सू. 14/22)
(1) इन्द्रगोप (वीरबहूटी) के वर्ण का। (2) विविध वर्ण (3) असंहत (गाढ़ा)।
3. मधुरं लवणं किंचित् शीतोष्णमसंहतम्। पदमेन्द्रगोप हेमाविशशलोहित लोहितम्।। (अ.ह.सू. 27/1)

विशुद्ध रक्त पुरुष के लक्षण :– **प्रसन्न वर्णेन्द्रियं इन्द्रियार्थानिच्छन्तम् अव्याहतपक्तृवेगम्। सुखान्वितं पुष्टि बलोपपन्नं।**

"मद, मूर्च्छा, और संन्यास का वर्णन"

हेतु–रज व तमोगुण से **रस, रक्त एंव संज्ञावाही स्रोत्रस** के आवृत्त हो जाने पर मद, मूर्च्छा, सन्यास की उत्पत्ति होती है
(मद→मूर्च्छा→ संन्यास –ये उत्तरोत्तर बलवान होते है।)

4 प्रकार के मद – 1. वातज – अस्पष्ट, अल्पद्रुतभाषं चलस्खलितचेष्टितं। रूक्षश्यावारूणाकृतिम्।
2. पित्तज – सक्रोध परुषाभाषं संप्रहार कलिप्रियम्। रक्तपीतासिताकृतिम्।
3. कफज – **स्वल्पासम्बद्धवचनं तन्द्रालस्यसमन्वितम्। पाण्डु प्रध्यानतत्परं।**
4.सन्निपातज– सर्वाण्येतानि रूपाणि सन्निपातकृते मदे। जायते शाम्यति त्वाशु मद्यो मद्यमदाकृतिः।

4 प्रकार के मूर्च्छा– 1. वातज – **शीघ्रं च प्रतिबुध्यते।** वेपथु, अंगमर्द, हृदय प्रपीड़ा कार्श्य, श्यावा, अरूणा छाया।
2. पित्तज – **सस्वेदः प्रति बुध्यते।** पिपासा, संताप, नेत्र–रक्तपीत, **संभिन्नवर्चाः,** पीताभ छाया।
3. कफज – **चिराच्च प्रतिबुध्यते।** गौरव, प्रसेक, हल्लास, आलस्य, श्वेताभ छाया।
4. सन्निपातज – **सर्वाकृति सन्निपातादपस्मार इवागतः। स जन्तु पातयत्याशु बिना बीभत्सचैष्टितैः।**

✓ सन्निपातज मूर्च्छा में अपस्मार रोग के लक्षण मिलते है। और इसमे बीभत्स चेष्टाएँ नही हेती है।

संयास :– 1. काष्ठीभूतो मृतोपमः। (नरः पतति काष्ठवत् – मूर्च्छा)
2. दोषेसु मदमूर्च्छायाः कृतवेगेषु देहिनाम्। स्वयमेवोपशाम्यन्ति **सन्यासो नौषधैर्यना। (च. सू 24/42)**
दोषों के वेग शांत होने पर मद एवं मूर्च्छा शान्त हो जाते है, किन्तु संयास में दोष वेग बिना औषध के शान्त नहीं होते है।
सन्यास चिकित्सा :– (आशुकारी – प्राणैर्वियुज्यते शीघ्रं मुक्त्वा सद्यःफलां क्रियाम्।)
(1) तीक्ष्ण अंजन, अवपीड, धूम्र, प्रधमन नस्य का प्रयोग। (2) नखान्तर में सुई चुभोना, दाह, नख छेदन।
(3) लुंचनं केशलोम्नां – शिर के बाल/दाढ़ी, मूंछ के बाल उखाड़ना, दांत से काटना। (4) आत्मगुप्ता घर्षणम्

मद तथा मूर्च्छा में पंचकर्म – सर्वप्रथम स्नेहन, स्वेदन कराएं तत्पश्चात् पंचकर्म।
मद मूर्च्छा, औषध उपचार –
(1) **पानीयकल्याण घृत,** तिक्तघृत, महातिक्त घृत, तिक्तषट्पल घृत, **कौम्भघृत** का प्रयोग
(2) **शिलाजीत का प्रयोग**
(3) **रसायन द्रव्यों का प्रयोग**
(4) मद, मूर्च्छा के वेग रक्तमोक्षण, शास्त्रों के श्रवण, सत्संग से शान्त हो जाते है।

25. यज्जः पुरुषीयं अध्याय

सम्भाषा परिषद् :– पुरुष (राशि पुरुष) व रोगों के उत्पत्ति के संदर्भ में। प्रश्नकर्ता और आयोजक – **'काशिपति वामक'**।
कुल आचार्यगण – नव मत – 9 आचार्य + आत्रेय और अग्निवेश।

वाद	प्रवर्तक ऋषि
1 आत्मवाद	मौद्गल्य परीक्ष
2. कालवाद	भिक्षु आत्रेय
3. स्वभाववाद	भरद्वाज
4. कर्मवाद	भद्रकाप्य
5. प्रजापतिवाद	कांकायन
6. मातृपितृवाद	शौनक–कौशिक
7. रसवाद →	वीर्योविद
8. सत्ववाद	शरलोमा
9. षड्धातुवाद	हिरण्याक्ष

प्रयोग भेद से आहार के भेद – 4 – पान, अशन, भक्ष्य, लेह्य।
अर्थ भेद से आहार के भेद – 1 – आहारत्वमाहारस्यैकविधम् अर्थभेदात् – आहार्य अर्थ से आहार एक ही होता है।
चक्रपाणि के अनुसार आहार में **अन्न – 1 कुडव, सूप – 1 पल, मांस – 2 पल** और अन्य अवयव 1 पल मात्रा में होने चाहिए।

आहार द्रव्य का वर्ग	हिततम (20)	अहिततम (20)
1. शूकधान्य	1. रक्त शालि	1. यवक
2. शमी धान्य	2. मुद्ग	2. माष
3. जल	3. आन्तरिक्ष जल	3. वर्षा ऋतु में नदी का जल
4. लवण	4. सैन्धव	4. औषर
5. पत्रशाक	5. जीवन्ती	5. सर्षप
6. मृगमास	6. ऐणेय	6. गोमांस
7. पक्षी	7. लाव	7. काण–कपोत
8. विलेशय	8. गोधा	8. मण्डूक (भेंक)
9. मृत्स्य	9. रोहित	9. चिलचिम
10. घृत	10 गोघृत	10 मेषीघृत
11. दुग्ध	11. गोदुग्ध	11. मेषी दुग्ध
12. स्थावर स्नेह	12. तिलतैल	12. कुसुम्भ तैल
13. आनूपमृगवसा	13. वराहवसा	13. माहिष वसा
14. मृत्स्य वसा	14. चुलुकी वसा	14. कुम्भीर वसा
15. जलचर–पक्षीवसा	15. पाकहंस वसा	15. काकमद्गु वसा
16. विष्किर–पक्षीवसा	16. कुक्कुट वसा	16. चटकवसा
17. शाखामेदस	17. अजमेदस	17. हस्तिमेदस्
18. कन्द	18. आर्द्रक (सुश्रुत, भा. प्र. –सूरण)	18. आलुक
19. फल	19. मृद्वीका (सुश्रुत – आमलकी)	19. लकुच
20. इक्षुविकार	20. शर्करा	20. फाणित

श्रेष्ठ/अग्रय भावों (द्रव्यों) की सख्या :– चरक – 152 (वाग्भट्ट – 155)

श्रेष्ठ भाव	कर्म
1. अन्न	वृत्तिकराणां।
2. उद्कम्	आश्वासकराणां।
3. जल	स्तम्भनीयानां।
4. वायु	प्राणसंज्ञाप्रदान हेतुनाम्।
5. अग्नि	आम, स्तम्भ, शीत, शूलोद्वेपन प्रशमनानां।
6. सुरा	श्रमहराणां।
7. मद्य	सौमनस्यजननं।
8. मांस	बृंहणीयानां
9. रसः	तर्पणीयानां
10. क्षीर	जीवनीयां
11. कुक्कुटो	बल्यानां।
12. नक्र रेतस	वृष्याणां।
13. लवणं	अन्नद्रव्यरूचिकाराणां
14. तिन्दुक	अन्नद्रव्य अरूचिकराणां।
15. अम्ल	अद्यानां।
16. आविकं सर्पि	अहृद्यानां।
17. माहिषी क्षीर	स्वप्नजनानां।
18. अजाक्षीरं	शोषघ्न स्तन्य सात्म्य रक्तसंग्राहिक रक्तपित्तप्रशमनानाम्।
19. अविक्षीर	श्लेष्मपित्तजननानां।
20. आम कपित्थ	अकण्ठ्यानां।
21. तैल	वातश्लेष्म प्रशमनानां।
22. सर्पिः	वातपित्त प्रशमनानां।
23. मधु	श्लेष्मपित्त प्रशमनानां।
24. मद्याक्षेपो	धी, धृति, स्मृतिनाशक।
25. जम्बु	वातजननानां।
26. इक्षु	मूत्रजननानां।
27. यवाः	पुरीष जननानां।
28. मृद्भष्टलोष्ट्र निर्वापित उदक्	तृष्णा छर्द्यातियोग प्रशमनानां।
29. त्रिवृत्त	सुखविरेचनानां।
30. चतुरगुंल	मृदुविरेचनानां।
31. स्नुक्पयः	तीक्ष्णविरेचनानां।
32. प्रत्यक्पुष्पा (अपामार्ग)	शिरोविरेचनानां।
33. खदिर	कुष्ठघ्न।
34 शिरीष	विषघ्न।
35. विडंग	कृमिघ्न।
36. रास्ना	वातहरणाम्।
37. आमलकं	वयःस्थापनानां।
38. हरीतिकी	पथ्यानाम्।
39. एरण्ड	वृष्य, वातहराणां।
40. शालपर्णी	वृष्य, त्रिदोषहर।
41. विदारीगन्धा	वृष्य, सर्वदोषहाराणां।
42. गोक्षुर	मूत्रकृच्छ्रहर, अनिलहराणां।
43. वमन	श्लेष्महराणां।
44. विरेचन	पित्तहराणां।
45. बस्ति	वातहराणां।

46. स्वेदो	मादर्वकराणां
47. व्यायामः	स्थैर्यकराणां।
48. क्षारः	पुंस्त्वोपघातिनां।
49. मदनफल	वमन, आस्थापन, अनुवासनोपयोगिनां।
50. शष्कुली	श्लेष्मपित्त जननानां।
51 माष (उड़द)	श्लेष्मपित्त जननानां।
52. कुलत्थ	अम्लपित्त जननानां।
53. कुट्ज त्वक्	श्लेष्मपित्त, रक्तसंग्राहक, **उपशोषणानां।**
54. दुरालभा	पित्तश्लेष्म प्रशमनानां।
55. गन्धप्रियंगु	शोणित्तपित्तातियोग प्रशमानानां।
56. काश्मर्य (गम्भारीफल)	रक्तसांग्राहिक, रक्तपित्त प्रशमानानां।
57. गवेधुकान्नं	कर्शनीयानाम्।
58. उद्दालकान्नं	विरूक्षणीयानाम्।
59. मन्दक दधि	अभिष्यन्दकराणां।
60. अतिमात्राशन	आमप्रदोष हेतुनां। (आमदोषवर्धक)
61. प्रमिताशन	कृशताकारक। (कर्शनीयानाम्)।
62. एक काल भोजन	सुख परिणाम कारक।
63. विषमाशन	अग्निविषमता कारक।
64. अनशन	आयुहास कराणां।
65. विरूद्धवीर्याशन	निन्दित, व्याधिकरं।
66. गुरू भोजन	दुर्विपाककराणां।
67. सर्वरसाभ्यास	बलकराणां।
68. एक रसाभ्यास	दौबर्ल्यकराणां।
69. तृप्ति	आहार गुणों में। (आहार गुणानां)।
70. सोम	औषधियों में। (औषधीनां)
71. विज्ञान	औषधियों में। (औषधीनां)
72. जलौकां	अनुशस्त्रों में (अनुशस्त्राणां)।
73. वेगसंधारण	अनारोग्यकारणां।
74. शुक्र वेगधारण	षाण्ढयकराणां।
75. मरू भूमि	आरोग्य देशानां।
76. आनूप देश	अहित देशानां (अहित देशों में)।
77. हिमालय	औषध भूमि (औषध भूमिनां)।
78. प्रशमः	पथ्यानां (हितकारक)।
79. आयासः	सर्व अपथ्यानां (अहितकारक)।
80. सौमनस्य	गर्भधारक। (गर्भधारणानां)।
81. दौमर्नस्य	नपुंसकता कारक (अवृष्याणां)।

82. पिप्पलीमूल	दीपनीय, पाचनीय, आनाह प्रशमनानां।
83. चित्रक मूल	दीपनीय, पाचनीय, **गुदशोथ, अर्श,** शूलहराणां।
84. अतिविषा मूल	दीपनीय, पाचनीय, सांग्राहिक, सर्वदोषहराणाम्।
85. उदीच्यं (सुगन्धबाला)	**निर्वापण,** दीपनीय, पाचनीय, छर्दि, अतिसार नाशक।
86. कट्वंग (सोनापाठा)	सांग्राहिक, पाचनीय, **दीपनीयानाम्।**
87. मुस्तक (नागरमोथा)	सांग्राहिक, **दीपनीय,** पाचनीयानाम्।
88. विल्ब	सांग्राहिक दीपनीय, **वातकफप्रशमनानां।**
89. अमृता (गुडूची)	सांग्राहिक, **वातहर,** दीपनीय, **श्लेष्मशोणितविबन्धप्रशमनानां।**
90. पृश्निपर्णी	सांग्राहिक, वातहर, दीपनीय, बृष्याणां।

91. बला	सांग्राहिक, बल्य, वातहराणां।
92. अनन्तमूल (सारिवा)	सांग्राहिक, रक्तपित्तप्रशमनानां।
93. उत्पल, कुमद, पद्मकेसर	सांग्राहिक, रक्तपित्तप्रशमनानां।
94. पुष्कर मूल	हिक्का, श्वास, कास, पार्श्वशूलहराणां।
95. हींगु निर्यास	छेदनीय, दीपनीय, अनुलोमन, वातकफ प्रशमनानां।
96. अम्लवेतस	भेदनीय, दीपनीय, अनुलोमन, वातश्लेष्महराणां।
97. मधुयष्ठी	चक्षुष्य, वृष्य, केश्य, कण्ठ, वर्ण, विरंजनीय, रोपणीय।
98. यवक्षार (यवशूक)	संस्रनीय, पाचनीय, अर्शोघ्नानां।
99. कूठाभ्यंग (कुष्ठ)	वात नाशक, अभ्यंग, उपनाहोपयोगी।
100. तद्विद्य संभाषा	ज्ञानवर्धक (बुद्धि वर्धनानाम्)।
101. बहमुचर्य	आयुवर्धक (आयुष्याणां)।
102. संकल्प	वृष्यकारक (वृष्याणां)
103. स्त्री संयोग कामना	वाजीकरणानां।
104. पर स्त्रीगमन	आयुनाशक (अनायुष्णानां)।
105. अति स्त्रीप्रसंग	शोष कारक।
106. रजस्वला गमन	अलक्ष्मीमुखानां (दरिद्रता जनक)
107 वस्ति	तन्त्राणां
108. तक्र सेवनाभ्यास	ग्रहणीदोष, शोफ, अर्श, घृतव्यापद प्रशमनानां।
109. क्रव्याद रसाभ्यास	ग्रहणीदोष, शोष, अर्शोघ्नानां।
110. क्षीर घृताभ्यास	रसायनों में श्रेष्ठ (रसायनानां)
111. समघृतसक्तु प्राशाभ्यास	वृष्य, उ[illegible]
112. तैलगण्डूषाभ्यास	दन्तबल [illegible]
113. यथा अग्नि भोजन	अग्निदीप्ति कारक। (अग्निसंधुक्षणानां)
114. यथा सात्म्य चेष्टा भोजन	सेवनीय। (सेव्यानां)
115. यथा काल भोजन	आरोग्य कारकों में श्रेष्ठ (आरोग्यकराणां)
116. अजीर्ण में भोजन	ग्रहणी विकारकारक।
118. चन्दन	दुर्गन्धहर, दाहनिर्वापण लेपनानां।
119. रास्नागुरूणी	शीतापनयन प्रलेपनानां।
120. लामज्जकोशीरं	दाहत्वदोष, स्वेदापनयन प्रलेपानां।
121. ज्वर	रोगों में प्रमुख। (रोगाणां)
122. कुष्ठ	दीर्घकालीन रोग। (दीर्घरोगाणां)
123. राजयक्ष्मा	रोगों का समूह। (रोग समूहानां)
124. प्रमेह	अनुषंगीणां।
125. बालक	मृदुभेषज योग्य। (मृदुभेषजीयानां)
126. वृद्ध	यापन के योग्य।
127. गर्भिणी	तीक्ष्ण भोजन, मैथुन, व्यायाम के अयोग्य।
128. वध स्थान (पराघातनम्)	अश्रद्धाजननानां।
129. अथया बलारम्भ	प्रणापरोधिनां।
130. मिथ्या योग	व्याधिकरणां।
131. विषाद	रोगवर्धनाना।
132. अजीर्ण	निवारण करने योग्य। (उद्धार्याणां)।
133. स्नान	श्रमहरणाम्।
134. हर्ष	प्रीणनानां।

135. शोक	शोषाणानां।
136. निवृत्ति (संतोष)	पुष्टिकराणां।
137. पुष्टि	निद्राकारक (स्वप्नकराणाम्)
138. अतिस्वप्न	तन्द्राकराणां
139. लोलुपता (लौल्यं)	क्लेशकारक। (क्लेश कराणाम्)
140. नास्तिक	वर्जनीय। (वर्ज्यानां)
141. गर्भशल्य	आहार्याणाम्।
142. सन्निपात	दुश्चिकित्सीय (दुश्चिकित्स्यानां)।
143. आमविष	विमषचिकित्सीय।
144. निर्देशकारित्व	आतुरगुण।
145. अनिर्देशकारित्व	अरिष्ट लक्षण।
146. भिषक्	चतुष्पाद में श्रेष्ठ। (चिकित्सांगनां)
147. वैद्यसमूह	निःसंशयकरणां।
148. आचार्य	शास्त्राधिगम हेतुनाम्। (शास्त्र ज्ञानार्थ)
149. आयुर्वेद	अमृतानां।
150. अनिर्वेद	श्रेष्ठ आरोग्य लक्षण। (वार्त लक्षणानां)
151. औषध योग	वैद्यगुणानां।
152. शास्त्रसहितस्तर्क	चिकित्सा का साधन। (साधनानां)
153. सम्प्रतिपत्ति	कालज्ञान प्रयोजनानाम्।
154. अव्यवसाय	समय व्यर्थता। (कालातिपत्तिहेतुनां)
155. दृष्टकर्मता	निःसंशयकराणां।
156. असमर्थता	भयकाराणां।
157. सद्वचन	अनुष्ठेयानाम्। (पालनीय)
158. असद्ग्रहण	सर्वाहितानां।
159. सर्वसंयास	सुखकारकों में श्रेष्ठ (सुखानां)

1. औषधीनां – सोम, विज्ञान।
2. वस्ति – वातहारणां, तन्त्राणां।
3. वृष्याणा – नक्ररेतस, संकल्प।
4. कर्शनीयानां – गवेधुक, प्रतिमाशन।
5. कफपित्तजनानां –शष्कुली, माष, आविक्षीर।
6. स्वप्नजनानां – माहिषी दुग्ध, पुष्टि।
7. श्रमहाराणानां – सुरा, स्नान

पथ्यं पथोऽनपेतं यद्यच्चोक्तं मनसः प्रियम्। यच्चाप्रियमपथ्यं च नियतं तन्न लक्षयेत्। (च. सू. 25/45)

पथ्य :– जो आहार द्रव्य पथ (शारीरिक स्रोत्र) में अपकार करने वाला न हो और मन को प्रिय हो उसे **'पथ्य'** कहते है।

अपथ्य– जो आहार द्रव्य पथ (शारीरिक स्रोत्र) में अपकार करने वाला हो और मन को अप्रिय हो उसे **'पथ्य'** कहते है।

"आसव"

आसव :– आसव नाम आसुत्वाद् आसव संज्ञा। – चरक 'आसुतत्वात् सन्धानरूपत्वात्' । – चक्रपाणि।

आसव की योनियाँ :– 9 – फल, सार, मूल, पुष्प, धान्य, त्वक, काण्ड, पत्र, और शर्करा।

आसवयोनि संख्या (84) – फल (26), सार (20), मूल (11), पुष्प (10), धान्य (6), त्वग् (4), काण्ड (4), पत्र(2), शर्करा(1)

धान्यासव – 6 – सुरा, सौवीर, तुषोदक, मैरेय, मेदक, धान्याम्ल।

त्वगासव – 4 – तिल्वक, लोध्र, एलुआ, क्रमुक (सुपारी)।

कण्डासन – 4 – इक्षु, काण्डेक्षु, इक्षुवालिका, पुण्ड्रक।

पत्रासव – 2 – पटोलपत्र, ताडकपत्र।

शर्करासव – 1 – शर्करासव।

❖ धन्वन – फलासव और सारासव दोनों आसवों में है। **(यद पक्वकौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः। – शारंग्धर)**

26. आत्रेय भद्रकाप्यीय अध्याय

रस संख्या विषयक् संभाषा परिषद् का वर्णन किया है। स्थान – चैत्ररथ नामक वन। आचार्य – 10 महर्षि।

Funda	प्रवर्तक आचार्य	संख्या	रस
भद्र	1. भद्रकाप्य	1	**एक एव रस इत्युवाच भद्रकाप्यः** – रस और जल एक ही है
शाकुन्तला	2. शाकुन्तेय	2	(1) छेदनीय (2) उपशमनीय
मोहित हुई	3. मौद्गल्य पूर्णाक्ष	3	(1) छेदनीय (2) उपशमनीय (3) साधारण।
हिरण पर	4. हिरण्याक्ष कौशिक	4	(1) स्वादु – हित, अहितकर (2) अस्वादु – हित, अहितकर।
कुमार	5. कुमारशिरा भरद्वाज	5	(1) भौम, (2) औदक (3) आग्नेय (4) वायवीय (5) आकाशीय
वीर	6. वार्योविद	6	गुरू, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष।
ने	7. वैदेह निमि	7	मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय, **क्षार।**
धर पकडा	8. धामार्गव बडिश	8	मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय, **क्षार,** अव्यक्त रस।
कंकड असंख्य	9. कांकायन	∞	असंख्येयरस **(अपरिसंख्येया रसा इति कांकायनो बाह्लीकभिशग्)**
	10. पुनर्वसु आत्रेय	6	मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय रस।

रस की योनि :– तेषां षण्णां रसानां योनिरुदकम् (च. सू. 26/9) – सभी 6 रसो की योनि 'जल' है।

द्रव्य की पान्चभौतिकता :– संसार मे विद्यमान समस्त द्रव्य पांचभौतिक होते है। द्रव्य – 2 – (1) चेतन (2) अचेतन।

- **सर्व द्रव्यं पाञ्चभौतिकम् अस्मिन्नर्थे।** (च. सू. 26/10)
- **इह हि द्रव्यं पञ्चमहाभूतात्मकम्।** (अ.सं.सू. 17/3)

कर्म :– कर्म पञ्चविंध मुक्तं वमनादि। (च. सू. 26/10)

द्रव्य	गुण	कर्म
1. पार्थिव	गुरू, कठिन, मन्द, स्थिर, विशद, खर, सान्द्र, स्थूल, गंधगुण,	उपचय, संधात, गौरव, स्थैर्य
2. जलीय	द्रव, स्निग्ध, शीत, मन्द, मृदु, पिच्छिल एवं रसगुण बहुल	उपक्लेद,स्नेह,बन्ध,मार्दव,विष्यन्द,प्रह्लादकर
3. आग्नेय	उष्ण, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, लघु, रूक्ष, विशद एवं रूपगुण बहुल	दाह, पाक, प्रभा, प्रकाश, वर्णकर
4. वायव्य	लघु, शीत, रूक्ष, विशद, सूक्ष्म, खर एवं स्पर्शगुण बहुल	रौक्ष्य, ग्लानि, विचार, वैशद्य, लाघवकर
5. आकाश	मृदु, लघु, सूक्ष्म, श्लक्ष्ण एवं शब्दगुण बहुल	मार्दव, सौषिर्य, लाघवकर

द्रव्य	चरकोक्त पंचमहाभैतिक द्रव्यों के गुणों से अन्य आचार्यो का मत–मतान्तर
1. पार्थिव	सुश्रुत ने **'विशद'** गुण नहीं माना है। वाग्भट्ट ने **'खर'** गुण नहीं माना है।
2. जलीय	सुश्रुत ने **द्रव** गुण नहीं माना है। सुश्रुत ने **"स्तिमित, गुरू, सान्द्र, सर"** अश्टांग संग्रहकार ने **गुरू, सान्द्र, सर'** गुण अतिरिक्त माने है।
3. आग्नेय	सुश्रुत ने **'खर'** गुण अतिरिक्त माना है।
4. वायव्य	अश्टांग संग्रहकार ने **'व्यवायी, विकाशि'** गुण अतिरिक्त माने है।
5. आकाश	सुश्रुत और वाग्भट्ट ने लघु गुण नहीं माना हैं। सुश्रुत और वाग्भट्ट ने **विशद, व्यवायी, विविक्त** अतिरिक्त गुण माने है।

द्रव्य का औषधत्व :– संसार में कोई भी द्रव्य ऐसा नहीं है जो औषधि नहीं हो।

- अनेन **उपदेशेन** नानौषधिभूतं जगति किञ्चिद् **द्रव्यमुपलभ्यते।** – (च. सू. 26/12)
- अनेन **निदर्शनेन** नानौषधीभूतं जगति किञ्चिद् **द्रव्यमस्तीति।** – (सु. सू. 41/9)
- इत्थं च नानौषधभूतं जगति किञ्चिद **द्रव्यमस्ति** विविधार्थप्रयोगवशात्। – (अ.सं.सू. 17/6)

क्रमांक	(च. सू. 26/13)	(सु. सू. 41/9)
1. कर्म,	यत् कुर्वन्ति तत् कर्म,	–
2. वीर्य,	येन कुर्वन्ति तद्वीर्य,	–
3. अधिकरण	यत्र कुर्वन्ति तदधिकरणं	यत्कुर्वन्ति तदधिकरणं
4. काल	**यदा कुर्वन्ति स कालः,**	**यदा कुर्वन्ति स कालः,**
5. उपाय	**यथा कुर्वन्ति स उपायः**	यथा कुर्वन्ति स उपाय,
6. फल	यत् साधयन्ति तत् फलम्	यन्निष्पादयन्ति तत् फलमिति

द्रव्य, देश एवं काल के प्रभाव से रसों के 63 विकल्प भेद – भेदश्चैषां त्रिषष्टिविधविकल्पो द्रव्यदेशकालप्रभावाद् भवति।

(1) 1 रस वाले – 6
(2) 2 रस वाले – 15
(3) 3 रस वाले – 20
(4) 4 रस वाले – 15
(5) 5 रस वाले – 6
(6) 6 रस वाले – 1

'संयोगाः सप्तपन्चाशत् कल्पना तु त्रिषष्टिधा। रसानां तत्र योग्यत्वात् कल्पिता रसचिन्तकैः। (च.सू. 26/24)

(1) रसों के संयोग भेद 57 (2) रसों के कल्पना भेद 63

अनुरस :– व्यक्तः शुष्कस्य चादौ च रसो द्रव्यस्य लक्ष्यते। विपर्ययेणानुरसो रसो नास्तीह सप्तमः। (च.सू. 26/24)

रस	अनुरस (रस विपर्यय)
जिह्वा द्वारा आस्वादन करने पर जो रस आदि में स्पष्ट ज्ञात होता है वह 'रस' कहलाता है।	जो रस दूसरे रस से अभिभूत होने के कारण स्पष्ट ज्ञात नहीं होती है। उसे 'अनुरस' कहते हैं।

" परादि गुण – सिद्ध्युपायश्चिकित्सायाः "

परादिगुण :– **'परापरत्वे युक्तिश्च संख्या संयोग एव च। विभागश्च पृथक्त्वं च परिमाणमथापि च। (च.सू. – 28/29)**
संस्कारोऽभ्यास इत्येते गुणा ज्ञेयाः परादयः।। (कणाद – 7 – युक्ति, संसकार, अभ्यास नहीं माने है।)

10 परादिगुण :–

1. **परत्व :–** देश, काल, आयु, मान, विपाक, रस, वीर्यादि में जो श्रेष्ठ या प्रधान हो।
2. **अपरत्व :–** देश, काल, वय, मान, विपाक, रस, वीर्यादि में जो निकृष्ट या अप्रधान हो
3. **युक्ति – 'युक्तिश्च योजना या तु युज्यते। (च. सू. 26/31)**
   दोष, देश, प्रकृति, काल को देखकर औषध आदि की सम्यक् योजना को युक्ति कहते हैं।
4. **संख्या :– 'संख्या स्याद् गणितम्'**। एक, दो, तीन, चार, आठ, दस आदि संख्या की गणना को गणित कहते हैं।
5. **संयोग :– 'योगः सह संयोग उच्यते। द्रव्याणां द्वन्द्वसर्वेककर्मजोऽनित्य एव च।'** (च. सू. 26/32)
   द्रव्यों के एक साथ मिलने को संयोग कहते हैं। – भेद – (1) द्वन्द्वकर्मज (2) सर्वकर्मज (3) एककर्मज
6. **विभाग – 'विभागस्तु विभक्तिः स्याद् वियोगो भागशो ग्रहः।'** (च. सू. 26/33)
   संयुक्त वस्तु का अलग होना ही विभाग कहलाता है। भेद – (1) विभक्ति (2) वियोग (3) भाग शोग्रह।
7. **पृथक्त्व – 'पृथक्त्वं स्यादसंयोगो वैलक्षण्यमनेकता'।** (च. सू. 26/33)
   एक द्रव्य को अन्य से भिन्न करने वाला गुण पृथक्त्व कहलाता है। भेद – (1) असंयोग (2) वैलक्षण्य (3) अनेकता।
8. **परिमाण – 'परिमाणं पुनर्मानं'। –** जिससे किसी वस्तु की मात्रा जानी जाती है उसे 'परिमाण' या 'मान' कहते हैं।
9. **संस्कार – 'संस्कारः करणं मतम्।'** क्रिया द्वारा किसी वस्तु में गुणाधान करने को 'संस्कार' या 'करण' कहते है।
10. **अभ्यास – 'भावाभ्ययसनम् अभ्यासः शीलनं सततक्रिया।'** – किसी वस्तु या कार्य का निरन्तर प्रयोग करना अभ्यास कहलाता है। शीलन और सतत क्रिया – ये दोनों अभ्यास के पर्याय है।

षड्रस प्रकरण :– अंतरिक्ष जल – सौम्य, स्वभाव से शीतल, लघु और अव्यक्त रस वाला होता है।

चरक	वर्णन	नागार्जुन	वाग्भट्ट
सोमगुण प्रधान	सोमगुणातिरेकन्मधुरो रसः	पृथ्वी + जल	पृथ्वी + जल →
पृथ्वी + अग्नि	पृथिव्यग्निभूयिष्ठत्वादम्लः	**जल + अग्नि**	↓ पृथ्वी + **अग्नि**
जल + अग्नि	सलिलाग्निभूयिष्ठत्वाल्लवणः	**पृथ्वी + अग्नि**	जल + **अग्नि**
वायु + अग्नि	वाय्वग्निभूयिष्ठाल्कटुकः	वायु + अग्नि	**वायु + अग्नि**
वायु + आकाश	वाय्वाकाशातिरिक्तत्वातिक्त	वायु + आकाश	**वायु** + आकाश
वायु + पृथ्वी	**पवनपृथ्वीव्यतिरेकात् कषाय**	वायु + पृथ्वी	**वायु + पृथ्वी**

मधुर रस	अम्ल रस	लवण रस
सप्तधातु, ओजवर्धक, **आयुष्यः**	**देहं बृंहयति,** ऊर्जयति, प्रीणयति	**च्यावन,** छेदन, भेदन, तीक्ष्ण सर
षडिन्द्रिय प्रसादन	इन्द्रियाणि दृढीकरोति	**सर्वरसप्रत्यनीक भूतः**
प्रीणन, जीवन, तर्पण	**हृदयं तर्पयति**	स्त्रस्रबन्धसंगातविधमनः
बलवर्णकर, शरीरसात्म्य	**मनो बोधयति**	संस्यवकाशकरो
पित्तविषमारूतघ्न	वातमनुलोमयति	**वातहरः,** कफं विष्यन्दयति
तृष्णादाह प्रशमन	भक्तं रोचयति	**रोचयत्याहारम्**
त्वच्य, केश्य, कण्ठय, बल्य	**अग्नि दीपयति**	दीपन, पाचन
वृंहण, स्थैर्यकर	**बलं वर्धयति**	**मार्गान् विशोधयति**
क्षीतक्षतससन्धान करो	भुक्तम अपकर्षयति	**आहार योगी**
दाहमूर्च्छाप्रशमन	क्लेदयति	क्लेदनो
षट्पदपिपीलिकाना मिष्टतम	जरयति	सर्वशरीरावयवान् मृदुकरोति
घ्राणमुखकण्ठौष्ठजिह्वा प्रह्लादनो	आस्यमास्रावयति	आस्यमास्रावयति
अतिसेवन जन्य लक्षण	**अतिसेवन जन्य लक्षण**	**अतिसेवन जन्य लक्षण**
श्वास, कास, प्रतिश्याय	**दन्तान् हर्षयति,** तर्षयति	मूर्च्छयति, तापयति, दारयति
ग्लगण्ड, गण्डमाला, गलशोफ	सम्मीलयत्यक्षिणी, **रक्तं दूषयति**	**रक्तं वर्धयति, विषं वर्धयति,** पुंस्त्वमुपहन्ति
दौर्बल्य अग्नि, अतिस्वप्न	मांसविदहति, कायंशिथिलीकरोति	**शोफान् स्फोटटयति, इन्द्रियाण्युपरूणद्धि**
कटु रस	**तिक्त रस**	**कषाय रस**
वक्त्रं शोधयति, अग्नि दीपयति	स्वयमरोचिष्णुरप्यरोचकघ्नो	**संशमन**
रोचयत्यशनं	मूर्च्छादाह, कण्डूकुष्ठ तृष्णाप्रशमन	**संधानकर**
भुक्तं शोषयति	त्वंगमांसयो स्थिरीकरणो	**संग्राहीं, स्तंभन**
शोणितसंघात भिनत्ति	**दीपन पाचन**	**पीडन**
स्फुटीकरोतीन्द्रियाणि	**विषघ्न**	**रोपण**
चक्षुविरेचयति	कृमिघ्न	**शोषण**
स्नेहस्वेदक्लेदमलानुपहन्ति	**ज्वरघ्न, स्तन्यशोधन**	श्लेष्म रक्तपित्त प्रशमन
कण्डू विनाशयति	लेखन	शरीरक्लेदस्योपयोक्ता
व्रणानवसादयति	क्लेदमेदोवसामज्जालसिका	**पक्षवधग्रहपतानकार्दिन प्रभृततीश्च**
क्रिमीन् हिनस्ति	पूयस्वेद मूत्र........ उपशोषण	
अतिसेवन जन्य लक्षण	**अतिसेवन जन्य लक्षण**	**अतिसेवन जन्य लक्षण**
पुंस्त्वमुपहन्ति, ग्लायपति	सोत्रसां खरत्वमुपपादयति	**आस्यं शोषयति,** विष्टम्भं जरां गच्छति।
मूर्च्छयति, नमयति, भ्रमयति	कर्षयति, **मोहयति, भ्रमयति**	कर्शयति, ग्लपयति, तर्षयति, **हृदयंपीडयति**
तृष्णा जनयति	ग्लपयति, वदनमुपशोषयति	स्रोतांस्यवबध्नाति, पुंस्त्वमुपहन्ति।

रस	गुण	वर्णन
1. मधुर	**गुरू, शीत, स्निग्ध**	स्निग्ध शीतो गुरूश्च
2. अम्ल	**लघु, उष्ण, स्निग्ध**	लघुरूष्णः स्निग्धश्च
3. लवण	**गुरू, उष्ण, स्निग्ध**	**नात्यर्थ गुरूः स्निग्ध उष्णश्च**
4. कटु	**लघु, उश्ण, रूक्ष**	लघुरूष्णो रूक्षश्च
5. तिक्त	**लघु, शीत, रूक्ष**	रूक्षः शीतो लघुश्च
6. कशाय	**गुरू, शीत, रूक्ष**	रूक्षः **शीतोऽलघुश्च**

नियम – 1. रस, विपाक → मधुर → शीतवीर्य। 2. रस, विपाक → अम्ल/कटु → उष्ण वीर्य।

अपवाद – (1) जलीय तथा आनूप मांस – मधुर रस – किन्तु उष्ण वीर्य।
(2) सैंधव लवण – लवण रस – किन्तु शीत वीर्य।
(2) अर्क, अगरू, गुडूची – तिक्त रस – किन्तु उष्ण वीर्य।

गुण	प्रधान	मध्य	अवर	
1. स्निग्ध	मधुर	अम्ल	लवण	(123 - Solid)
2. रूक्ष	कषाय	कटु	तिक्त	(6/45 Run)
3. गुरू	मधुर	कषाय	लवण	(163/0 Good)
4. लघु	तिक्त	कटु	लवण	(5/43 Low)
5. शीत	मधुर	कषाय	तिक्त	(Total 165)
6. उष्ण	लवण	अम्ल	कटु	(Total 324)

रस	गुण	गुण कर्म
1. मधुर, अम्ल, लवण रस	स्निग्ध	वात, मूत्र, पुरीष विसर्जक।
2. कटु, तिक्त, कषाय रस	रूक्ष	वात, मूत्र, पुरीष, बद्ध।

(M.P.) SHYAM-VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER BHOPAL
DR. NEELIMA SINGH

विपाक

रस	विपाक	गुण कर्म	दोश प्रभाव
कटु, तिक्त, कषाय	**1. कटु विपाक**	बद्धविण्मूत्रल, शुक्रनाशनः	वातलः
अम्ल रस	**2. अम्ल विपाक**	सृष्टविण्मूत्रल, शुक्रलः	पित्तकृत
मधुर, लवण रस	**3. मधुर विपाक**	सृष्टविण्मूत्रल, शुक्रहा,	कफ वर्धक

वीर्य

"वीर्य तु क्रियते येन या क्रिया" (च. सू. 26/64) – द्रव्य की क्रिया जिसके द्वारा निष्पन्न की जाती है उसे वीर्य कहते हैं।

(1) द्विविध वीर्य :– (1) शीत वीर्य (2) उष्ण वीर्य (चरक, सुश्रुत)

(2) अष्ट विध :– गुरू, लघु, स्निग्ध, रूक्ष, मृदु, तीक्ष्ण, शीत, उष्ण। (चरक)

विशद, पिच्छिल, स्निग्ध, रूक्ष, मदु, तीक्ष्ण, शीत, उष्ण। (सुश्रत)

रसो निपाते द्रव्याणां, विपाकः कर्मनिष्ठया। वीर्यः यावत् अधिवासासन्निपाताच्चोपलभ्यते। (च. सू. 26/66)

रस, विपाक और वीर्य का ज्ञान – 1. द्रव्यों का रस जिह्वा पर (निपात) स्पर्श होते हीं ज्ञान हो जाता हैं।
2. कर्म का समाप्ति से विपाक का ज्ञान होता हैं।
3. किन्तु वीर्य का ज्ञान निपात और अधिवास से होता है।

उदा. **(1) निपात – शरीर के साथ संयोग होने के साथ। – मरिच के उष्ण वीर्य का ज्ञान।**

(2) अधिवास – जब तक शरीर में वह द्रव्य रहे। – मरिच की तीक्ष्णता एंव दीपनीयता का ज्ञान।

"प्रभाव"

प्रभाव :–'रसवीर्य विपाकानां सामान्यं यत्र लक्ष्यते। विशेषः कर्मणां चैव प्रभावस्तस्य स स्मृतः।। (च.सू. 26/87)
रस, वीर्य और विपाक समान रहने पर भी जहां कर्म में विशेषता होती है उसका कारण एक विशिष्ट शक्ति मानी जाती है। इस विशिष्ट शक्ति को 'प्रभाव' कहते हैं।
उदा. :– (1) चित्रक और दन्ती – दोनों 432 है किन्तु दन्ती रेचक है चित्रक नहीं।
इसका कारण दन्ती में विशिष्ट शक्ति है जो चित्रक में नहीं है। इसका नाम प्रभाव है।

द्रव्यों की क्रियाशीलता –कोई द्रव्य रस से, तो कोई वीर्य, कोई विपाक तो कोई प्रभाव से अपना कार्य दिखलाता हैं।
रसादि का नैसर्गिक बल :– रस ⟶ विपाक ⟶ वीर्य ⟶ प्रभाव (उत्तरोत्तर बलवान)।

रसों का अभिज्ञान :–

(1) मधुर रस :– स्नेहन, प्रीणन, आह्लाद, मार्दवैः उपलभ्यते मुखस्थो मधुरश्चास्यं व्याप्नुवैल्लिम्पतीव। **(च.सू. 26/74)**
(2) अम्ल रस :– **दन्तहर्षात्** मुखस्रावात स्वेदनात्, मुखबोधनात। **विदाहाच्चास्य कण्ठस्य**, अम्लं रस वदेत। **(च.सू. 26/75)**
(3) लवण रस :–प्रलीयन, क्लेद, विष्यन्दन, मार्दवं कुरुते मुखे। यः शीघ्रं लवणो ज्ञेयः **स विदाहान्मुखस्य च।**
(4) कटु रस :– सवेजयेद्यो रसानां निपाते तद्वतीव च। **विदहन्मुखनासाक्षिसंस्रावी** सः कटु स्मृतः। **(च.सू. 26/77)**
(5) तिक्तरस :– प्रतिहन्ति निपाते यो रसनं स्वदते न च। स तिक्तो **मुखवैशद्यशोषप्रह्लादकारकः।** **(च.सू. 26/76)**
(6) कषायरस :– वैशद्यस्तम्भजाड्यैर्यो रसनं योजयेद्रसः। बध्नातीव च यः कण्ठं कषायः स विकास्यपि। **(च.सू. 26/78)**

वैरोधिक आहार के भेद – 18

1. देश विरूद्ध	जांगल देश में रूक्ष, तीक्ष्ण एवं आनूप देश में स्निग्ध, शीत औषध प्रयोग
2. काल विरूद्ध	शीतकाल में शीत, रूक्ष वस्तुओं का सेवन।
3. अग्नि विरूद्ध	मंदाग्नि वाले व्यक्ति को गरिष्ठ आहार देना
4. मात्रा विरूद्ध	**मधु और सर्पि समान मात्रा में लेना।**
5. सात्म्य विरूद्ध	कटुरस सात्म्य व्यक्ति को मधुर रस खिलाना।
6. दोष विरूद्ध	वात–पित्त–कफ के समान गुणी आहार, औषध एवं कर्म सेवन करना।
7. वीर्य विरूद्ध	**शीत वीर्य दूध एवं उष्णवीर्य मछली का साथ सेवन**
8. कोष्ठ विरूद्ध	क्रूर कोष्ठ व्यक्ति को अल्यल्प एवं लघु आहार देना।
9. संस्कार विरूद्ध	**एरण्ड की लकड़ी की सींक पर भुना हुआ मोर का मांस।**
10. परिहार विरूद्ध	**वाराह आदि का मांस सेवन कर फिर उष्ण वस्तुओं का सेवन करना।**
11. अवस्था विरूद्ध	प्रमेही, निद्रालु एवं आलसी व्यक्ति को कफप्रकोपक आहार देना।
12. क्रम विरूद्ध	बिना मल–मूत्र त्याग या बिना भूख के भोजन करना।
13. उपचार विरूद्ध	**घृत आदि स्नेहों को पीकर शीतल आहार–औषध या जल पीना।**
14. पाक विरूद्ध	अर्धपक्व या अपक्व भात आदि का सेवन।
15. संयोग विरूद्ध	गुड के साथ मकोय खाना या **अम्ल पदार्थों के साथ दूध खाना।**
16. हृदय विरूद्ध	ऐसा आहार जो मन को प्रिया या पसंद न हो।
17. सम्पद् विरूद्ध	कच्चा या सडा हुआ फल या आहार का सेवन।
18. विधि विरूद्ध	आहार विधि विशेषायतन के नियमों के विरूद्ध भोजन करना।

मत्स्य और दूध एक साथ नहीं खाने चाहिए क्योकि दोनों क्रमशः उष्ण और शीत वीर्य होने से **विरूद्ध वीर्य** है। – आत्रेय
सभी मछलियों को दूध के साथ खाना चाहिए किन्तु चिलिचिम मछली को छोडकर – भद्रकाप्य
कपोत मांस को मधु और दूध के साथ नहीं खाना चाहिए
मूली, लहसुन, आम, सहिजन, अर्जक–सुमुख–सुरसा (तुलसी के भेद) आदि खाकर दूध का सेवन नहीं करना चाहिए।
मूली, आम, जामुन, खरगोश, गोधा और सूकर मांस खाकर दूध का सेवन नहीं करना चाहिए। – सुश्रुत।

27. अन्नपानविधि अध्याय

हितकर द्रव्य – कर्म	हितकर द्रव्य – कर्म
1. उदकं क्लेदयतिं।	11. द्राक्षासव दीपयति।
2. लवणं विष्यन्दयति।	**12. फाणित माचिनोति।**
3. क्षारः पाचयति।	**13. दधि शोफं जनयति।**
4. मधु सन्दधीति।	14. पिण्याकशांक ग्लपयति।
5. सर्पिः स्नेहयति।	15. माषसूपः प्रभूतान्तर्मलों।
6. क्षीर जीवयति।	16. क्षारः दृष्टिशुक्रघ्नः।
7. मांस बृंहयति।	17. अम्लम् प्रायःपित्तलम् (दाडिम, ऑवला को छोडकर)
8. रसः प्राणयति।	18. मधुर प्रायः श्लेष्मलं (मधु, गोधूम को छोडकर)
9. सुरा जर्जरीकरोति।	**19. प्रायतिक्तं वातलं वृष्यं (वेताग्र,पटोल को छोडकर)**
10. सीधु वधमति	**20. प्रायःकटुकंवातल अवृष्यं (पिप्पली,शुण्ठी को छोडकर)**

1. चरकानुसार आहार द्रव्यों के 12 वर्ग :–

(1) शूकधान्य (2) शमीधान्य (3) मांसवर्ग (4) शाकवर्ग (5) फलवर्ग (6) हरितवर्ग
(7) मद्यवर्ग (8) जलवर्ग (9) गोरसवर्ग (10) इक्षुवर्ग (11) कृतान्न वर्ग (12) आहारयोगी वर्ग

2. सुश्रुतानुसार :– 2 महा वर्ग :–

(1) द्रव वर्ग – 10 वर्ग (2) अन्न वर्ग – 13 वर्ग

1. द्रव वर्ग – 10 – जल, क्षीर, दधि, तक्र, घृत, तैल, मधु, इक्षु, मद्य और मूत्र वर्ग।

2. अन्न वर्ग–12– शालि, कुधान्य, मुदगादि(वैदल), मांस, फल, शाक, पुष्प, कन्द, लवण, कृतान्न, भक्ष्य, सर्वानुपान वर्ग

3. अष्टांगसंग्रह के अनुसार – आहार द्रव्यों के 12 वर्ग।

1. द्रवद्रव्यवर्ग (6) – 1. जलवर्ग 2. क्षीरवर्ग 3. इक्षुवर्ग 4. तैलवर्ग 5. मद्यवर्ग 6. <u>मूत्रवर्ग</u>

2. अन्नद्रव्य वर्ग (6)– 1. शुकधान्य 2. शिम्बीधान्य 3. कृतान्नवर्ग 4. मांसवर्ग 5. शाकवर्ग 6. फलवर्ग।

4. अष्टांगहृदय के अनुसार – आहार द्रव्यों के 12 वर्ग।

1. द्रवद्रव्यवर्ग (5) – 1. तोयवर्ग 2. क्षीरवर्ग 3. इक्षुवर्ग 4. तैलवर्ग 5. मद्यवर्ग

2. अन्नद्रव्य वर्ग (6)– 1. शुकधान्य 2. शिम्बिधान्य 3. कृतान्न 4. मांसवर्ग 5. शाकवर्ग 6. फलवर्ग 7. <u>औषधवर्ग</u>

–: कुछ महत्वपूर्ण बिन्दू :–

(1) चरक ने गोरस वर्ग ही में दुग्ध, दधि, तक्र, घृत आदि का समाविष्ट लिया है।
किन्तु सुश्रुत ने क्षीर, दधि, तक्र, घृतवर्ग इनका 4 वर्गो में पृथक–पृथक वर्णन किया हैं।

(2) सुश्रुत ने वैदल वर्ग, कुधान्य, पुष्प, कन्द लवण और सर्वानुपान वर्गो का सर्वप्रथम वर्णन किया हैं,

(3) सर्वप्रथम सुश्रुत संहिता में लवण वर्ग में धातु एवं रत्नों का चिकित्सीय प्रयोग का वर्णन आया गया है।

(4) अष्टांग हृदय में द्रव वर्गो में 'मूत्रवर्ग' का उल्लेख नहीं है किन्तु अष्टांग संग्रह में 'मूत्रवर्ग' वर्णन है।

(5) 'औषधवर्ग' मूलतः अष्टांगहृदय की देन है।
औषधवर्ग में लवण, क्षार, त्रिफला, पंचकोल एवं पंचमूल की औशधियों का वर्णन किया है।

(6) चरक एवं वाग्भट्ट दानों ने मधुवर्ग का समावेश इक्षुवर्ग में किया है।
जबकि सुश्रुत ने 'मधुवर्ग' का स्वतंत्र उल्लेख किया है।

(7) मुदग, कलाय, मसूर, हरेणु आदि चरकोक्त 'शमी धान्य' वर्ग के द्रव्यों को सुश्रुत ने वैदल (द्विदली) कहा है।

(1) शूक धान्य वर्ग

(1) भालि धान्य :–

1) रक्तशालि
(2) महाशालि
(3) कलम
(4) शकुनाहृत
(5) तूर्णक
(6) दीर्घशूक
(7) गौरधान्य
(8) पाण्डुक
(9) लांगुल
(10) सुगन्धक
(11) लोहवाल
(12) सारिवा
(13) प्रमोदक
(14) पंतग
(15) तपनीय

– ये **पंद्रह प्रकार के धान्य** होते है। इन सभी धान्यों में **कलम → महाशालि → रक्तशालि** चावल गुणों में श्रेष्ठ है।
गुण :– ये सभी मधुर रस, विपाक व शीतवीर्य वाले, **अल्प वातल,** बद्धाल्पवर्चसः, स्निग्ध, बृंहण और भाुक्रमूत्रल होते है।
– यवक, हायन, पांसु, वाप्य और नैषधक धान्य रक्तशालि आदि धान्य के विपरीत गुण वाले होते है।

(2) षष्टिक धान्य – मधुर रस, विपाक व भीतवीर्य वाले, लघु, स्निग्ध और **त्रिदोषघ्न है,** शरीर में स्थिरता पैदा करते है।
षष्टिक धान्य के भेद –2 – (1) गौर (2) कृष्ण।
वरक, उद्दालक, चीन, शारद, ज्जवल, दर्दुर, गन्धन, कुरुविन्द – ये सभी षष्टिक धान्य गुणों से अल्पगुण वाले होते है।

(3) कुधान्य – कोरदूश, **श्यामाक,** हस्तिश्यामाक, अम्भश्यामाक, निवार, तोयपर्णी, **गवेधुक,** प्रवाहिका, लोहिताणु, **प्रियंगु,** मुकुन्द, झिण्टी, वरूक, वरक, शिबिर, उत्कट, जूर्णह – सभी कषायमधुर, शीतवीर्य, लघु, **वातल** एवं कफपित्तघ्न होते है।

(4) यव :– सकषाय स्वादु रस, रूक्ष शीतोऽगुरू, **बहुवातशकृत कारक,** श्लेष्मविकारनुत् और बल्य, शरीर स्थैर्यकृत होता है।

(5) गोधूम :– सन्धानकर, मधुर रस, मधुर विपाक, शीतवीर्य, गुरू, बलदायक, जीवनीय, बृंहण, वृष्य, स्निग्ध, स्थैर्यकर, गुरू है।

(2) शमीधान्य वर्ग

1. **मूंग :–** कषायमधुर रस, कटु विपाक एवं शीत वीर्य, लघु, रूक्ष, विशद गुण वाला (631 LRV) कफपित्तघ्न होता है।
सभी शमी धान्यों में मुदग् उत्तम होता है।

2. **माष :–** मधुर रस, विपाक व **उष्णवीर्य,** गुरू, स्निग्ध (112 GS) बल्य **वृष्य, परं वातहर, बहुमल, और पुंस्त्व उत्पादक** है।

3. **राजमाष :–** राजमाष गुण में सर (विरेचक), रूच्य, **कफशुक्राम्लपित्तनुत्** (अम्लपित्तनाशक) **और वातल** है।

4. कुलत्थ :– कषाय रस, अम्ल विपाक व उष्ण वीर्य, **कफशुक्रानिलापहाः। कुलत्थां ग्राहिणः कासहिक्काश्वासार्शसां हिताः।** (622), कफ, शुक्र, **वातनाशक,** संग्राहक और कास, हिक्का, श्वास, अर्शनाशक है।

5. मोठ :– मधुर रस, विपाक एवं शीत वीर्य, रूक्ष गुण वाली (111 R) ग्राही एवं **रक्तपित्त व ज्वर में प्रशस्त** है।
मसूर की दाल संग्राही और कलाय (मटर) की दाल परम् वातल होती है।

7. तिल :– मधुर, कटुक, तिक्त, कषाय रस, उष्णवीर्य, स्निग्ध है। **त्वच्यः केशयश्च बल्यश्च वातघ्नः कफपित्तकृत।**

8. शिम्बी :– शिम्बी रूक्षा कषाया च **कोष्ठे वातप्रकोपपिनी।**

9. अरहर :– **आढकी कफपित्तघ्नी वातला –** कफपित्तनाशक और वातल है।

7. काकाण्डोल (शूकशिम्बी) और आत्मगुप्ता (केवांच) – के गुणधर्म माष के समान है।

(3) मांसवर्ग – 8 योनि

1. **प्रसह** :– जो पशु, पक्षी दूसरों से आहार द्रव्य बलपूर्वक छीनकर खा जाते हैं। उन्हे **'प्रसह'** कहा जाता है।
   उदा. – गो (गाय), गधा, घोड़ा, खच्चर, ऊँट, चीता, सिंह, भालू, वानर, मार्जार, मूषक, **श्येन, उलूक**, वायस।

2. **भूशय** :– जो बिलों में निवास करते हैं वह 'भूशय' कहलाते हैं।
   उदा. – काकुली मृग, कूर्चिका (अंधा सर्प), कदली (वनविलाब), चिल्लट, **भेंक (मेढक), गोधा व नकुल।**

3. **आनूप** :– जल के समीपवर्ती प्रदेश या आनूप देश में रहते है। उन्हे 'आनूप' कहते है।
   उदा. – सृमर, चमरः, खड्‌गो, माहिष (भैंस), **गवय (नीलगाय)**, गज (हाथी), **वराह और रूरू (बारहसिंगा)।**

4. **वारिशय** :–जो जल में निवास करते है उन्हें 'जलज या वारिशय' कहते हैं।
   उदा. – **कूर्म, कर्कटक**, मगर, चुलुकी, मत्स्य, शिशुमार, उद्र (वन विलाब), **शुक्ति, शंखक।**

5. **वारिचर** :– जो जल में चलने फिरने वाले होते हैं। उन्हें 'जलचर या वारिचर' कहते हैं।
   उदा. – **हंस, कौन्च**, कारण्डव, प्लव, केशरी, उत्क्रोश, रक्तशीर्षक, नन्दीमुख, मदगु, **रोहिणी**, चक्रवाक।

6. **जांगल** :– जो स्थल (भूमि) पर उत्पन्न होते हैं और जंगलो में विचरण करते हैं उन्हे 'जांगल' कहते हैं।
   उदा – **पृषत, शरभ, शश, हरिण, एण, शम्बर**, मृगमातृका, उरण, **राम, श्वदंष्ट्र, कुरंग, गोकर्ण, ऋष्य**, वरपोत।

7. **विष्किर** :– जो पक्षी अपनी चोंच या पैरों से कुरेद कर आहार को खोजकर खाते हैं। उन्हें **'विष्किर'** कहा जाता हैं।
   उदा – **लाव, तित्तिर, बटेर**, चकोर, कपिञ्जल, [illegible], कुकुक्ट (मुर्गा), कंक, बर्ही (मोर), वर्तक, वर्तिका।

8. **प्रदुत** :– जो जो पक्षी अपनी अपनी चोंच या पैर से प्रहार कर आहार को खाते हो। उन्हें **'प्रदुत'** कहा जाता हैं।
   उदा – शतपत्र, **भृंगराज, बभ्रु, जीवंजीवक**, नंदी, दुन्दुभि, सारिका, कुलिंगक, चटक, **कपोत, पारावत।**

- **प्रसह, भूशय, आनूप, वारिज, वारिचर जीवों का मांस :– गुरू, उष्ण वीर्य**, स्निग्ध और **रस में मधुर** होता है। बल्य, वृष्य, वातहर तथा कफपित्तवर्धक होता है। – जीर्णार्शोग्रहणीदोषशोषार्तानां प्रयोजयेत्।
- **जांगल, विष्किर, प्रतुद मांस :– लघु, शीत वीर्य**, सकषाय मधुर रस होता है। मांस पित्तप्रधान, मध्यवात और हीन कफ वाले रोग में हितकर होता है। – पित्तोत्तरे वातमध्ये सन्निपाते कफानुगे।
   ➢ (जांगल विहार प्रतिषेध लागू है = जांगल, विष्किर, प्रतुद मांस – लघु है)

अजमांस (बकरे का मांस)– नातिशीतगुरूस्निग्धं मांसमाजमदोषलम्। शरीरधातुसामान्यादनभिष्यन्दि बृंहणम्। (च.सू. 27/61)

चरणायुधा (मुर्गे का मांस) – स्निग्धाश्चोष्णाश्च वृष्याश्च बृंहणाः स्वरबोधनाः। बल्याः परं वातहराः स्वेदनाश्चरणायुधाः।

एण मांस (काला हिरण) – **मधुरा मधुराः पाके त्रिदोष शमनाः शिवाः।** लघवो बद्धविण्मूत्राः शीतःश्चैणाः प्रकीर्तिताः।

मत्स्य मांस (मछली का मांस) – **गुरूणा मधुरा बल्या** बृंहणाः पवनापहाः। मत्स्याः स्निग्धा च वृष्या च बहुदोषः प्रकीर्तिताः।

कूर्म मांस (कछुए का मांस) – **मेधास्मृतिकरः पथ्यः शोषघ्नः कूर्म उच्यते।** (च.सू. 27/84)

- **शरीरबंहणे नान्यत् खाद्यं मांसाद्विशिष्यते।** – (च. सू. 27/87)
  शरीर को बढाने वाला हेतु मांस को छोडकर अन्य दूसरा कोई खाद्य पदार्थ नहीं है।

(4) शाकवर्ग

पाठा, शुष्का, शटी, वास्तुक एवं सुनिषण्णक शाक – 'ग्राहि त्रिदोषघ्नं भिन्नवर्चस्तु वास्तुकम्।

काकमाची (मकोय) शाक – **त्रिदोषशमनी वृष्या काकमाची रसायनी।, नात्युष्णशीतवीर्या,** भेदिनी, कुष्ठनाशिनी।

राजक्षवक – राजक्षवकशाकं तु त्रिदोषशमनं लघु। **ग्राहि शस्तं ग्रहण्यर्शोविकारिणाम्।** ग्रहणी व अर्श में विशेष हितकारी।

उपोदिका (पोई) शाक – 111 S, कफवर्धक, **वृष्या, स्निग्धा च शीता च मदघ्नी चाप्युपोदिका।**

तण्डुलीयक शाक – रूक्षो **मदविषघ्नश्च** प्रशस्तो रक्तपित्तनाम्। मधुरो मधुरः पाके शीतलस्यतण्डुलीयकः। (111 S)

कूष्माण्ड :– सक्षारं पक्वकूष्माण्डं मधुराम्लं तथा लघु। सृष्टमूत्रपुरीषं च सर्वदोषनिबर्हणम्।। (च. सू. 27/113)

विदारीकन्द :– जीवनो बृंहणो वृष्यः कण्ठ्यः शस्तो रसायने। विदारीकन्दो बल्यश्च मूत्रलः स्वादुशीतलः।

अम्लिका कन्द :– अम्लिकायाः स्मृतः कन्दो **ग्रहण्यर्शोहितो** लघुः।

सर्षपशाक – त्रिदोषं बद्धविण्मूत्रं सार्षपं शाकमुच्यते।

(5) फलवर्ग

- फलवर्ग में चरक ने मद्वीका, सुश्रुत ने दाडिम आदि वाग्भट ने द्राक्षा के गुणों का वर्णन किया है।
- **टंक** = नाशपाती, **सिम्बितिकाफल** = सेव, **पारावत** = अमरूद, **फल्गु** = अंजीर, **मोचा** = केला के पर्याय है।

मद्वीका :–'श्रेष्ठ फल' – तृष्णादाहज्वर श्वासरक्तपित्तक्षतक्षय नाशक, कास स्वरभेद को शीघ्र दूर करता है।
मृद्वीका वृंहणी वृष्या मधुरा स्निग्धशीतला। (च. सू. 27/126)

कच्चा कैथ – कपित्थमामं कण्ठघ्नं, विषघ्नं, ग्राहि वातलम्।
पक्का कैथ – परिपक्व च दोषघ्नं, विषघ्न, ग्राहि, गुर्वपि।, मधुराम्लकषाय रस, सुगन्धि होने से रूचिप्रदम्।

कच्चा बिल्व – स्निग्ध, उष्णवीर्य, तीक्ष्ण, दीपन, **कफवातजित्।**
पक्का बिल्व – दुर्जरं (दुष्पाच्य), दोषलं, पूति अपानवायु का निःसारक होता है।

बाल आम :– रक्तपित्तकरं बालम्, **अपक्व आम** – अपूर्ण पित्तवर्धनम्, **पक्व आम – पक्वमाम्रं जयेद्वायुं मांसाशुक्रबलप्रदम्।**

लवलीफल :– कषायविशदत्वाच्च सौगन्धाच्च रूचिप्रदम्। अवदंशक्षमं हृद्यं वातलं लवलीफलम्। (च. सू. 27/143)

आमलक :– विद्यादामलके **सर्वान् रसान्लवणवर्जितान्।** रूक्षं स्वादु कषायाम्ल कफपित्तहरं परम। **(च. सू. 27/147)**
आँवला में लवण रस को छोड़कर सभी रस वर्तमान् हैं, आँवला गुण में रूक्ष, मधुर कषाय, अम्लरस वाला, कफपित्तहर है।

- **विभीतक – रसासृङ्मांसमेदोजान्दोषान् हन्ति विभीतकम्। (च. सू. 27/148)**

- **कर्चूर :– कर्चूरः कफवातघ्नः श्वासहिक्कार्शतां हितः। (च. सू. 27/155)**

(6) हरित वर्ग

(1) **आर्द्रक :–** रोचनं दीपनं वृष्यं आर्द्रकं **विश्वभेषजम्।** (वात, श्लेष्म, रसज विबन्ध नाशक)।

(2) **जम्बीरी नीबू :–** रोचनो दीपनस्तीक्ष्ण सुगन्धिः **मुखशोधनः।** (वातकफघ्न, क्रमिघ्न, भक्तपाचनः)।

(3) **मूलक :– 1. बालं** त्रिदोषहरं **2. वृद्धं** त्रिदोषं 3. मारूतापहम् **स्निग्धसिद्धं 4. विशुष्कं** तु मूलकं कफवातजित।

(4) **सुरस (तुलसी) :–** हिक्काकासविषश्वासपार्श्वशूलविनाशनः। – **श्वास, कास, हिक्का, पार्श्वशूल, एवं विषविनाशनक** है। पित्तकृत, कफवातघ्न, सुरसः पूतिगन्धहा।

(5) **भूस्तृण (रोहितघास) :– पुंस्त्वघ्नः** कटुरूक्षोष्णो भूस्तृणो वक्त्रशोधनः। **(च. सू. 27 / 172)**

(6) **खराह्वा (स्याह जीरा) :– खराह्वा कफवातघ्नी वस्ति रोगरूजापहा।। (च. सू. 27 / 172)**

(7) **गाजर :–** ग्राही गृन्जनकस्तीक्ष्णो **वातश्लेष्मार्शसां हितः।** – अपित्त प्रकृति हेतु स्वेदन व भोजन में प्रयोग करना चाहिए।

(8) **पलाण्डु** – श्लेष्मलो मारूतघ्नश्च पलाण्डुर्न च पित्तनुत। आहारयोगो बल्यश्च गुरुर्वृष्योऽथ रोचनः। **(च. सू. 27 / 175)**

(9) **लशुन :– क्रिमिकुष्ठकिलासघ्नो** वातघ्नो **गुल्मनाशनः।** स्निग्धोष्णः च वृष्यश्च लशुनः कटुको गुरूः। **(च. सू. 27 / 176)**

(7) मद्यवर्ग

सामान्य गुण :– प्रायः सभी प्रकार के मद्य अम्लरस, उष्णवीर्य एवं अम्लविपाकी होते हैं।

1. **सुरा** – कृशानां सक्तमूत्राणां, **ग्रहणी अर्शोविकारिणाम्। सुरा प्रशस्ता वातघ्नी स्तन्यरक्तक्षयेशु च।**

2. **मदिरा** – हिक्का, श्वास, प्रतिश्याय, कास, वर्चोग्रह, अरूचि, वमन, आनाह, विबंध में मदिरा हितकारी होती है।

3. **जगल – शूल प्रवाहिका आटोप कफवातार्शसां हितः। (च. सू. 27 / 181)**

4. **सुरासव** – सुरासवः तीव्रमदो वातघ्नो वदनप्रियः। **तीव्रमद** (उग्र नशा करने वाली) होती है।

5. **मध्वासव – 'छेदी मध्वासवः तीक्ष्णोः।** -- दोशों का छेदन करने वाला और तीक्ष्ण है।

6. **मैरेय – 'मैरेयो मधुरो गुरूः।'** – रस में मधुर एवं पाक में गुरू होता है।

7. **मधूलिका – 'श्लेष्मला तु मधूलिका'।** – यह कफ को बढ़ाने वाली होती है।

8. **सौवीरक, तुषोदक :–** ग्रहण्यर्शोहितं भेदि सौवीरकतुषोदकम्। **(च. सू. 27 / 192)**

- **नवीन मद्य :–** 'प्रायशोऽभिनवं मद्यं **गुरू दोषसमीरणात।**
- **पुराण मद्य :–** 'पुराण स्रोत्रसां शोधनं दीपनं **लघु रोचनम्।**

सात्विक मद्य :– सात्विकैर्विधिवद्युक्तया पीतं स्यादमृतं यथा – सात्त्विक मनुष्यो द्वारा विधिपूर्वक सेवित मद्य अमृत के समान फल देता है।

(8.) जल वर्ग

आन्तरिक्ष जल :– शीतं शुचि शिवं मृष्टं विमलं लघु षडगुणम्। प्रकृत्या दिव्यमुद्रकं – (च. सू. 27/197)
आकाश से गिरने वाला दिव्यजल – शीत, शुचि, कल्याणकरी, मधुर, विमल और लघु इन छः गुणों वाला होता है।

आंतरिक्ष जल का अलग – अलग भूमि पर गिरने के अनुसार जल के रस का परिणाम :–

जल का रस	भूमि
1. मधुर	कृष्ण मृत्तिका (काली मिट्टी)
2. अम्ल	– –
3. लवण	ऊषर भूमि
4. कटु	पर्वत
5. तिक्त	पाण्डु वर्ण
6. कशाय	श्वेत वर्ण
7. क्षार	कपिल वर्ण

अव्यक्त रस – ऐन्द्र, कार और हिम – ये अव्यक्त रस वाले होते है।

उत्तम जल के गुण – ईषत्कषायमधुरं सुसूक्ष्मं विशद लघु। अरूक्ष अनभिष्यन्दि सर्वं पानीयं उत्तमम्। (च.सू. 27/202)

ऋतुनुसार बरसने वाले जल के गुण :–

ऋतु में वर्शा	जल के गुण
1. शिशिर	हेमन्त [illegible] एवं कफवातघ्न होता है।
2. बंसत	कषाय मधुर रूक्ष विद्यात् वासन्तिकं जलम्।
3. ग्रीष्म	ग्रैष्मिक त्वनभिष्यन्दि – निश्चित रूप से अनभिष्यन्दी।
4. वर्षा	गुरू, अभिष्यन्दी, मधुर नवम्।
5. शरद	तनु, लघु, अनभिष्यन्दी होता है।
6. हेमन्त	हेमन्ते सलिलं स्निग्ध बृष्य बलहितं गुरू।

उद्‌भव स्थान के अनुसार नदियों के जल के गुण :–

उद्‌भव स्थान	जल के गुण
1. हिमवत्प्रभवाः	पथ्याः पुण्या, देवर्षि सेविता।
2. मलय प्रभवाः	विमलोदक, अमृत के समान।
3. पश्चिमभिमुखा	पथ्या, निर्मलोदक।
4. पूर्वसमुद्रगा	मृदुवहा (मंदवेग वाला), गुरू।
5. पारियात्र, विन्ध्य, सह्यप्रभवा	शिरोरोग, हृदयरोग, कुष्ठ, श्लीपदजनक।

वर्षाजल : – 'वर्षाजल वहा नद्यः सर्वदोष समीरणाः।' – वर्षा ऋतु में नदी का जल सवदोष प्रकोपक होता है।

समुद्रजल :– 'विस्र त्रिदोषं लवणमम्बु यत् वरूणालयम।' – समुद्रजल विस्रगंधी, त्रिदोषकोपक एवं लवण रस वाला होता है

(9.) गोरस वर्ग

1. गोदुग्ध :– 1. स्वादु शीतं मृदु स्निग्धं बहलं श्लक्षणपिच्छिलम्। गुरू मन्दं प्रसन्नं च गव्यं दशगुणं पयः।।
तदेवगुणमेवौजः सामान्यादभिवर्धयेत्। – गोदुग्ध के ये 10 गुण ओज के गुणों के समान है।
2. प्रवरं जीवनीयानाम क्षीरमुक्तं रसायनम्। (च. सू. 27/218)
गोदुग्ध सभी जीवनीय पदार्थो में श्रेष्ठ तथा रसायन है।

2. माहिषी दुग्ध :– गोदुग्ध से गुरूतर, शीततर होता है और अधिक स्नेहयुक्त, '**अनिद्रा एवं अत्यग्नि रोग में हितकारी** है।

3. उष्ट्रदुग्ध :– ईषत्, लवण, रूक्ष, उष्ण, लघु होता है। शस्तं वातकफानाहक्रिमिशोफोदराशर्सास्। **(च. सू. 27/219)**

4. घोड़ी दुग्ध :– बल्य, स्थैर्यकर और सर्वमुष्णं होता है। साम्लं सलवणं रुक्ष शाखावातहरं लघु।

5. अजा दुग्ध :– छागं **कषाय मधुर**, शीतं, ग्राहि पयो लघु। रक्तपित्तातिसारघ्नं, क्षयकासज्वरापहम्।।

6. आविदुग्ध :– **हिक्काश्वासकरं** तूष्ण पित्तश्लेष्मलम् आविकम्।

7. हस्ति दुग्ध :– **हस्थिनीनां पयो बल्यं गुरु स्थैर्यकरं परम्।** (च. सू. 27/223)

8. स्त्री दुग्ध :– जीवनं बृंहणं सात्म्यं स्नेहनं मानुषं पयः। नावनं रक्तपित्ते च तर्पणं चाक्षिशूलिनाम्।। (च. सू. 27/224)
- स्त्री दुग्ध जीवनीय, बृंहणीय, सात्म्य और स्निग्धता कारी होता है।
- रक्तपित्त में – नावन (नस्य) देने से एवं अक्षिशूल में – तर्पण करने से लाभप्रद होता है।

दधि

दही के गुण :– रोचनं दीपनं वृष्यं स्नेहनं बलवर्धनम्। पाकेऽम्लमुष्णं वातघ्नं मंगल्यं बृंहणं दधि। **(च. सू. 27/225)**
दही का रस अम्ल, विपाक अम्ल, वीर्य उष्ण होता है एवं दधि वातघ्न, मंगल्य और बृंहण होता है
दही का निषेध :– 'शरदग्रीष्म व बसन्तेषु प्रायशो दधि गर्हितम्। – (च. सू. 27/226)
शरद, ग्रीष्म एवं बंसत ऋतुओं में तथा रक्तपित्त, कफज विकारों में दही नहीं सेवन करना चाहिए।
मन्दक :– त्रिदोषं मन्दकं – मन्दक (अच्छी तरह से न जमा हुआ दही) त्रिदोषक प्रकोपक होता है।
दही की मलाई :– वातघ्न एवं शुक्रल है।
दही का मण्ड :– श्लेष्मानिलघ्न एवं **स्रोत्रोविशोधन** होता है।

तक्र

तक्र के गुण :– शोफ, अर्श, ग्रहणी, मूत्रकृच्छ, उदररोग, अरूचि को नष्ट करता है।
स्नेह व्यापत, पाण्डु रोग एवं विषविकार में प्रयोग तक्र का प्रयोग करना चाहिए।
नवनीत के गुण :– संग्राहि, दीपनं, हृद्यं नवनीतं नवोद्धृतम्। ग्रहणी, अर्श, अर्दित एवं अरूचि नाशक है।

घृत

घृत के गुण :– स्मृति, बुद्धि, अग्नि, शुक्र, ओज, कफ और मेद को बढाने वाला होता है।
वातपित्तघ्न है, सभी प्रकार के विषविकार, उन्माद, राजयक्ष्मा, ज्वर इन विकारों को दूर करता है।
जीर्ण घृत – पुराना घृत मद, मूर्च्छा, अपस्मार, शोष, उन्माद, गरविष, ज्वर, **योनिकर्णशिरःशूल नाशक** होता है।
बकरी, भेड़ और भैंस के घी के गुण उनके दूध के गुण को समान होते है।
पीयूष – नवप्रसूता गौ का प्रथम सात दिन का दूध — दीप्ताग्नि, अनिद्रा में हितकारी
मोरट – सात दिन के बाद का स्थिरता वाला दूध – गुरू, वृंहण, तृप्तिदायक, वृष्य।

(10.) इक्षुवर्ग

इक्षुरस :– वृष्य, शीत, सर स्निग्ध, वृंहण, मधुरस और श्लेष्मवर्धक होता है।
पौण्ड्रक :– शीतलता, स्वच्छता और मधुरता के कारण सभी गन्नों में 'श्रेष्ठ है'।
वंशक :– वंशक पौण्ड्रक के समान गुण वाला किन्तु कुछ न्यून गुण होता है।
गुड :– **प्रभूतक्रिमि, मज्जासृड्मेदोमांसकरो गुडः।** (च. सू. 27/238)
गुड – क्रिमि रक्त, मांस, मेद और मज्जा को बढ़ाने वाला होता है।

- मत्स्यण्डिका (मिश्री) → खौड → शर्करा → उत्तरोत्तर निर्मल एवं शीतल।

मधु के 4 भेद

1.	माक्षिक	– तैल वर्ण	(पिंगल वर्ण की बड़ी मक्खियों द्वारा निर्मित)
2.	क्षौद्र	– कपिल वर्ग	(पिंगल वर्ण की छोटी मक्खियों द्वारा निर्मित)
3.	पौत्तिक	– घृत वर्ण	(पिंगल वर्ण की बड़ी 'पुत्तिका नामक' मक्खियों द्वारा)
4.	भ्रामर	– श्वेत वर्ण	(भौंरों की तरह काली मक्खियों द्वारा निर्मित)

- **माक्षिकं प्रवरं तेषां विशेषाद् भ्रामरं गुरू** – (च.सू. 27/244) – माक्षिक मधु– श्रेष्ठ और भ्रामर मधु– गुरू होता है।
- **सामान्य गुण** :– वातलं गुरू शीतं च रक्तपित्त कफापहम्। सन्धातृ च्छेदन रूक्षं **कषायं मधुरं मधु।** (च.सू. 27/245)
 मधु रस में **कषाय मधुर** होता है।
- उष्ण किया हुआ मधु मृत्युकारक होता है।
- **अल्प सेवन** :– **गुरूरूक्षकषायत्वाच्छैत्याच्चाल्पं हितं मधु।** (च. सू. 27/246) –
 मधु, गुरू, शीत, रूक्ष और कषाय होता है अतः अल्प मात्रा में सेवन करना लाभकारी होता है।
- **मध्वाम – नातः कष्टतमं किंचिन्मध्वामात्तद्धि मानवम्। उपक्रमविरोधित्वात् सद्योहन्याद्यथाविषम्।** (च. सू. 27/247)
 मधु सेवनजन्य अजीर्ण से बढकर कोई भी अजीर्ण कष्टकारी नहीं होता है। क्योंकि यह उपक्रम में विरोधी होता है। जिस प्रकार विषसेवन से शीघ्र मृत्यु होती है उसी प्रकार मधु सेवनजन्य अजीर्ण शीघ्र ही मनुष्य को मार डालता है।
- **योगवाहि – 'नानाद्रव्यात्मकत्वाच्च योगवाहि परं मधु।'** (च. सू. 27/249)। –
 अनेक प्रकार के द्रव्यों के संयोग से मधु की उत्पत्ति होती है, इसलिए मधु उत्तम 'योगवाही' होता है।
 ✓ आचार्य चरक ने मधु, वायु और पिप्पली को 'योगवाहि' की संज्ञा दी है।

(11.) कृतान्न वर्ग

1. **पेया**	– क्षुत्तृष्णाग्लानिदौबर्ल्य कुक्षिरोगज्वरापहा। **स्वेदाग्निजननी पेया** वातवर्चोऽनुलोमनी। (च. सू. 27/250)
2. **विलेपी**	– तर्पणी ग्राहिणी लघ्वी **हृद्या** चापि विलेपिका।
3. मण्ड	– **मण्डस्तु दीपयत्यग्निं वातं चाप्यनुलोमयेत्।** (च. सू. 27/251) दीपनत्वात् लघुत्वाच्च मण्डः स्यात् प्राणधारणः। – दीपन, लघु होने से मण्ड **'प्राणधारण'** कहा गया है।
4. लाजपेया	– **लाजपेया श्रमघ्नी तु क्षामकण्ठस्य देहिनः।** (च. सू. 27/253)
5. लाजमण्ड	– तृष्णातिसार शमनो धातुसाम्यकरः **शिवः।** लाजमण्डोऽग्निजननो **दाहमूर्च्छानिवारण।** (च. सू. 27/254) विषमाग्नि व मंदाग्नि वाले मनुष्यों, बालक, वृद्ध, स्त्री और सुकुमार को सुंसस्कृत लाजमण्ड देना चाहिए
6. कुल्माष	– कुल्माष गुरवो रूक्षा वातला भिन्नवर्चसः। (च. सू. 27/260)
7. **वेशवार**	– **वेशवारो गुरूः स्निग्धो बलोपचयवर्धनः।** (च. सू. 27/269)
8. रसाला	– रसाला बंहणी बृष्या स्निग्धा बल्या रूचिप्रदा। (च. सू. 27/278)
9. **रागशाडव**	– **कट्म्लस्वादुलवणा लघवो रागषाडवाः। मुखप्रियाश्च हृद्याश्चदीपना भक्तरोचनाः।** (च. सू. 27/281)

- **अकृतयूष → कृतयूष → तनुमांसरस → संस्कारित मांस → अनम्ल सूप (गुरूपाकी)**

(12.) आहारयोनि वर्ग

तैल

तैल के सामान्य गुण :– सभी प्रकार के तैल मधुर रस, कषायानुरस वाले, उष्ण वीर्य, पित्तलं, कफ को न बढ़ाने वाला, वातघ्न द्रव्यों में उत्तम, सूक्ष्म, व्यवायि, बद्धविण्मूत्रल, बल्य, त्वच्य, और **'मेधाग्निवर्धनम्'** होते है।

तैलं संयोगसंस्करात् सर्वरोगापहं मतम्। – (च. सू. 27/287)

1. एरण्ड तैल – ऐरण्डतैलं मधुरं गुरू श्लेष्माभिवर्धनम्। वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरं परम्।। **(च. सू. 27/289)**
2. सर्षप तैल – कटूष्णं सार्षपं तैलं रक्तपित्तप्रदूषणम्। कफशुक्रानिलहरं कण्डूकोठविनाशनम्।। **(च. सू. 27/290)**
3. कुसुम्भ तैल – 432, अत्यंत विदाहि और विशेषकर **'सर्वदोषप्रकोपण'** होता है।

- शुण्ठी – सस्नेहं दीपनं बृष्यमुष्णं वातकफापहम्। **विपाके मधुरं** हृद्यं रोचनं विश्वभेषजम्।
- पिप्पली – श्लेष्मला **मधुरा चार्द्रा** गुर्वी स्निग्धा च पिप्पली।
  सा **शुष्का** कफवातघ्नी कटूष्णा **वृष्यसंमता**।
- मरिच – नात्यर्थमुष्णं मरिचवृष्यं लघु रोचनम्। छेदित्वाच्छोशित्वाच्च दीपनं कफवातजित्।

लवण

1. सैन्धव – **रोचनं दीपनं वृष्यं चक्षुष्यं अविदाहि। त्रिदोषघ्नं समधुरं सैन्धवं लवणोत्तमम्। (च.सू. 27/300)**
2. सौवर्चल – **सौवर्चलं विबन्धघ्नं हृद्यमुद्गारशोधि च।** – सूक्ष्म, उष्ण, लघु और **उद्गार शोधक होता** है।
3. विड्लवण – **उर्ध्व चाधश्च वातानामानुलोम्यकरं विडम्।** – तीक्ष्ण, उष्ण, अग्निदीपन और उदरशूल नाशक है।
4. औद्भिद् – सतिक्तकटु सक्षारं **तीक्ष्णमुत्क्लेदि** च औद्भिदम्।
5. काललवण – **सौवर्चल लवण सम गुणवान किन्तु इसमें गन्ध नहीं** होती है।
6. सामुद्र लवण – सामुद्रकं समधुरं।
7. पांशुज लवण – सतिक्त कटु पांशुजम्।

सभी लवण – लवणं सर्व रोचनम् पाकि संस्रं अनिलापहम्। (च. सू. 27/304)

क्षार

सभी क्षार उष्ण, तीक्ष्ण, लघु, रूक्ष, क्लेदी, पाचक, विदारक, दाहक, दीपन, छेदक और अग्नि सम गुण वाले होते हैं।

यवक्षार :– हृत्पाण्डुग्रहणीरोगप्लीहानाहगलग्रहान्। कासं कफजमर्शांसि यावशूको व्यपोहति।। (च. सू. 27/305)

हृद्रोग, पाण्डु, ग्रहणी, प्लीहरोग, आनाह, गलग्रह, कफज कास और सभी प्रकार के अर्श रोगों को दूर करता है।

अन्नपान में परीक्ष्य विषय – 9

चरः शरीरावयवाः स्वभावो धातवः क्रिया। लिंग प्रमाणं संस्कारो मात्रा चास्मिन् परीक्ष्यते।। (च. सू. 27/331)

1. चर 2. शरीरावयव 3. स्वभाव 4. धातु 5. क्रिया 6. लिंग 7. प्रमाण 8. संस्कार 9. मात्रा। – ये अन्नपान परीक्ष्य विषय है।

(1) चर – 1. आनूप जीव – गुरू मांस, 2. जांगल जीव – लघु मांस।

(2) शरीरायव :– सक्थि → स्कन्ध → क्रोड (छाती) → शिर का मांस – उत्तरोत्तर गुरू होता है।
वृषण → चर्म → मेढ्र → श्रोणि → वृक्क → यकृत → गुदा → मध्य देह → गुरूतर मांस।

(3) स्वभाव – मुदग, लाव, कपिन्जल मांस स्वभाव से – लघु, माश, वराह, माहिशी मांस स्वभाव से – **गुरू** होता है।

(4) धातु – धातूनां शोणितादीनां गुरूं विद्यात् यथोत्तरम्। – रक्तादि धातुएं उत्तरोत्तर गुरू होती जाती है।

(5) क्रिया – अलसी प्राणी के स्थान पर क्रियाशील प्राणी का मांस गुरू होता है।

(6) लिंग – एक ही जाति के प्राणियों में – पुरुष का मांस – गुरू, स्त्री का मांस – लघु।

(7) प्रमाण – एक ही जाति के प्राणियों में – स्थूल का मांस – गुरू, कृश का मांस – लघु।

(8) संस्कार – गुरूणां लाघवं विद्यात् संस्कारात् सविपर्ययम्।

(9) मात्रा – गुरू और लघु द्रव्यों की भोज्य मात्रा अग्निबल की अपेक्षा करती है।

- **बलमारोग्यमायुश्च प्राणाश्चाग्नौ प्रतिष्ठितः।** (च.सू. 27/342)

- षट्त्रिंशतं सहस्राणि रात्रिणां हितभोजनम्। (च.सू. 27/348)
  हिताभ्यासी, जितेन्द्रिय मनुष्य 36000 रात्रि अर्थात् 100 वर्ष तक जीवित रहता है।
- **प्राणाः प्राणभृतामन्नमन्नं लोकोऽभिधावति। (च.सू. 27/349)**
- **वर्णः प्रसादः सौस्वर्यं जीवितं प्रतिभा सुखम्। तुष्टिः पुष्टिर्बलं मेधा सर्वमन्ने प्रतिष्ठितम्। (च.सू. 27/350)**
  प्राणियों के प्राण अन्न है, वर्ण, प्रसन्नता, स्वर, जीवन, प्रतिभा, सुख, तृष्टि, पुष्टि, मेधा – ये सभी अन्न से प्रतिष्ठित है।

28. विविधाशितपीतीय अध्याय

आहार भेद –चरक, सुश्रुत–4 – अशित, पीत, लीढ़, खादित (भा. प्र., शा. –6– भोज्य, भक्ष्य, चर्व्य, लेह्य, चोष्ट, पेय)

धातु	धातु प्रदोषज विकार
(1) रस	अश्रद्धा, अरूचि, आस्यवैरस्य, अरसज्ञता, हल्लास, गौरव, तन्द्रा, अंगमर्द, ज्वर, **तमः**, **पाण्डुत्व, स्रोत्रोवरोध, क्लैव्य,** साद, कृशाङ्गता, **अग्निनाश, अकाल बलय, पलित।**
(2) रक्त	कुष्ठ, विसर्प, **पिडका,** रक्तपित्त, असृग्दर, गुदपाक, मेढ्रपाक, मुखपाक, प्लीहा, विद्रधि, **गुल्म** नीलिका, **कामला,** व्यंग, पिप्लु, तिलकालक, दद्रु, चर्मदल, श्वित्र, पामा, कोठ, रक्त मण्डल।
(3) मांस	अधिमांस, अर्बुद, कील, गलशालूक, पूतिमांस, **अलजी,** गलगण्ड, गण्डमाला, उपजिह्विका।
(4) मेद	प्रमेह की पूर्वरूप और अष्ट निन्दित महारोग।
(5) अस्थि	अध्यस्थि, अधिदन्त, दन्तभेद, दन्तशूल, अस्थिभेद, अस्थिशूल, विवर्णता, केशलोमनखश्मश्रु विकार
(6) मज्जा	**पर्वरूजा,** भ्रम, **मूर्च्छा, तमोदर्शन** (आँखों के अंधेरा छाना) **अरूषां स्थूलमूलानां पर्वजानां च दर्शनम्।**
(7) शुक्र	**क्लैव्य,** अहर्ष, **गर्भस्राव, गर्भपात,** कुरूप संतानोत्पत्ति।
(8) इन्द्रिय	उपताप (इन्द्रियों में विकार), उपघात (इन्द्रिय शक्ति का नाश)
(9) उपधातु	स्तम्भ, संकोच, खल्ली, **ग्रन्थि,** [illegible] स्नायु सिरा कण्डरा में।
(10) मल	मलभेद, मलशोष, मलसंग, अतिप्रवृत्ति [illegible] प्रदूषण।

धातु प्रदोषज	चिकित्सा
1. रस	लंघन। **(रसजानां विकाराणां सर्वं लंघनमौषधम्)**
2. रक्त	रक्तपित्तहर चिकित्सा, विरेचन, उपवास या रक्तमोक्षण।
3. मांस	संशोधन, शस्त्र, अग्नि, क्षारकर्म। **(मांसजानां तु संशुद्धिः शस्त्रक्षाराग्निकर्म च)**
4. मेद	**अष्टौनिन्दितिकेऽध्याये मेदोजानां चिकित्सतम्।** – अष्टनिन्दित रोग चिकित्सा
5. अस्थि	अस्थ्याश्रयाणां व्याधिनां पंचकर्माणि भेषजम्। –पन्चकर्म विशेषकर वस्ति, तिक्त साधित क्षीरसर्पि
6. मज्जा	व्यवाय, व्यायाम, यथाकाल संशोधन, मधुर, तिक्त, औषध और अन्न सेवन।
7. शुक्र	व्यवाय, व्यायाम, यथाकाल संशोधन, मधुर, तिक्त, औषध और अन्न सेवन।

कोष्ठ → शाखा दोषगमन

व्यायामात् उष्मणः तैक्ष्ण्यात् अहितस्यानवचारणात्। कोष्ठात् शाखा मलायान्ति द्रुतत्वान्मारूतस्य च।। (च. सू. 28/32)
(1) अधिक व्यायाम (2) उष्मा की तीक्ष्णता (3) अहितकर आहार विहार सेवन (4) वायु की अत्यंत तीव्र गति।

शाखा → कोष्ठ दोषगमन

वृद्धया विष्यन्दनात् पाकात् स्रोत्रोमुखविशोधनात्। शाखा मुक्त्वा मलः कोष्ठं यान्ति वायोश्चनिग्रहात।। (च. सू. 28/33)
(1) दोषों की वृद्धि (2) विष्यंदन (3) दोषों का पाक। (4) स्रोत्रों का मुख शोधन से (5) वायु के निग्रह से।

परीक्षक मनुष्यों के गुण :– 9

परीक्षक :– श्रुतं बुद्धिः स्मृतिः दाक्ष्यं धृतिः हितनिषेवणम्। वाग्विशुद्धि शमो धैर्यमाश्रयन्ति परीक्षकम्।। (च. सू. 28/33)
(1) शास्त्र अभ्यास (2) विवेकशालिनी बुद्धि (3) स्मरण शक्ति (4) कार्यदक्षता (5) धारणा शक्ति
(6) हिताभ्यासी (7) वाणी की पवित्रता। (8) शान्ति। (9) धीरता

29. दशप्राणायतनीय अध्याय

दशविध प्राणायतन :—दशैवायतनान्याहुः प्राणा येषु प्रतिष्ठितः। शखौ मर्मत्रयं कण्ठो रक्तं शुक्रौजसी गुदम।।

(1) शंख द्वय + त्रिमर्म + शुक्र, ओज, रक्त, कण्ठ, गुद। (चरक. सू. 29/3)

(2) मांस, नाभि + त्रिमर्म + शुक्र, ओज, रक्त, कण्ठ, गुद। (चरक. शा. 7/9)

(3) जिह्वाबंधन, नाभि + त्रिमर्म + शुक्र, ओज, रक्त, कण्ठ, गुद। (अ. ह. शा. 3/13)

द्वादश प्राण :— अग्नि, सोम, वायु, सत्व, रज, तम, पंचेन्द्रियां + भूतात्मा। (सुश्रुत)

द्विविध वैद्य :—

1. प्राणाभिसर — प्राणानामभिसरा हन्तारो रोगाणाभिति प्राणाभिसरः।— प्राणों की रक्षा एवं रोगों का नाश करने वाला।

प्राणाभिसर :— तानीन्द्रियाणि विज्ञानं चेतनाहेतुमामयान्। जानीते यः स वै विद्वान प्राणाभिसर उच्यते।।

जो वैद्य (1) दश प्राणायतन (2) इन्द्रियों (3) आयुर्वेद विज्ञान (4) चेतना हेतु (आत्मा) और (5) रोगों को जानता है। उस विद्वान वैद्य को 'प्राणाभिसर' कहा जाता है।

प्राणाभिसर वैद्य के लक्षण —

(1) कुलीन (उत्तम कुल में उत्पन्न)

(2) पर्यवदातश्रुताः (शास्त्र ज्ञान)

(3) परिदृष्टकर्मा (शास्त्र प्रत्यक्ष ज्ञान)

(4) दक्षा (चिकित्साकार्य में निपुण)

(5) शुचि (शरीर, मन, पवित्रता)

(6) जितहस्ता (चि. में हाथ सधे हो)

(7) जितात्मानः (जो जितात्मा हो)

(8) सर्वोपकरणवन्त : चिकित्सा सामग्रियों से युक्त

(9) सर्वेन्द्रियोपपन्ना: सभी इन्द्रियों से युक्त हो

(10) प्रकृतिज्ञा: रोग, रोगी दोनों की प्रकृति का ज्ञाता

(11) प्रतिपत्तिज्ञ — रोग व्याप्ति को जानने वाला

(12) शरीर क्रियाज्ञान — शरीर क्रिया का ज्ञान हो।

(13) शरीर विकृति ज्ञान — शरीर विकृति का ज्ञान हो।

— जिससे शरीर से निकलते प्राणों को लौटा दें।

2. **रोगाभिसर** — रोगाणाभिसरा हन्तारः प्राणानाम् इति रोगाभिसरः।— प्राणों के नाशक एवं रोगों को लाने वाला। 'प्राणाभिसर' के विपरीत एकदम विपरीत जो वैद्य रोगो को बढ़ाने वाले और प्राणों का नाश करने वाले होते हैं। वे रोगियों को ठगने के लिए वैद्य का वेश धारण कर लेते है और अपने वास्तविक रूप को छुपाये रखते है।

श्रुतदृष्टक्रियाकाल मात्राज्ञान बहिष्कृताः। वर्जनीया हि ते मृत्योश्चरन्त्यनुचरा भुवि। (चरक. सू. 29/11)

ऐसे छद्मचर वैद्य श्रुत (शास्त्रज्ञान), प्रत्यक्षकर्माभ्यास, चिकित्सा क्रिया, औषध प्रयोग काल, औषधि का मात्रा — इन सभी का ज्ञान न रखने वाले वैद्यो का सर्वदा परित्याग करना चाहिए। क्योकि ये भूमि पर यमराज के अनुचर रूप में भ्रमण करते हैं।

30. अर्थेदशमहामूलीय अध्याय

दश महामूला — **अर्थे दश महामूलाः समासक्ता महाफलाः महच्चार्थश्च हृदयं पर्यायैरूच्यते बुधैः।। (च. सू. 30/3)**

अर्थ अर्थात् हृदय में महामूल और महाफला दश धमनियां जुड़ी हुई है। पर्याय — अर्थ/महत्/हृदय।

हृदय आश्रय :— षडंगमंग विज्ञानमिन्द्रियाण्यर्थ पञ्चकम्। आत्मा च सगुणश्चेतश्चिन्त्यं हृदि संश्रितम्।। (च. सू. 30/4)

(1) षड्ंगशरीर (2) पञ्च ज्ञानेन्द्रिय (3) इन्द्रियार्थ (4) सगुण आत्मा। (5) मन

(6) मन के विषय — (चिन्त्य, विचार्य, ऊह, ध्येयं, संकल्प)।

आगारकर्णिका के समान हृदय की रक्षा :— अपने विशिष्ट गुणों के कारण ओज को 'महत्' कहते है और जो धमनियां हृदय से ओज को समस्त शरीर में ली जाती है। वे तत्फला/महाफला कहलाती है।

ओज का स्थान :— तत्पस्यौजसः स्थानं तत्र चैतन्यसंङग्रहः। हृदयं महदर्थश्च तस्मादुक्तं चिकित्सकैः।। **(च. सू. 30/7)**

— पर ओज का स्थान हृदय है। हृदय चैतन्य संग्राहक है।

निरूक्ति :– धमनी – ध्मानात् धमन्यः। स्रोत्रस – स्रवणात स्रोतांसि। सिरा – सरणात् सिराः। (च. सू. 30/12)

श्रेष्ठ (उत्कृष्ट)	भाव
1. अंहिसा	प्राणवर्धनानां
2. वीर्य	बलबर्धनानां
3. विद्या	बृंहणाणां
4. जितेन्द्रिय	नन्दनानां (मनः आनंदवर्धक)
5. तत्व बोध	हर्षणानां
6. बह्मचर्य	अयनानां (मार्गों में)

आयुर्वेदज्ञ लक्षण :– **वाक्यशः प्रवचन। वाक्यार्थशः प्रवचन अर्थावयवशः प्रवचन। इन्हें त्रिविध उत्तर भी कहते है।**

वेद – 4– ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। **आयुर्वेद** – अर्थववेद में अपनी श्रद्धा प्रकट करता है।

आयु – तत्रायुश्चेतनानुवृत्तिः जीवितमनुबन्धो धारि चेत्येकोऽर्थः। (च. सू. 30/22)

आयु पर्याय – चेतनानुवृत्ति, जीवितम्, अनुबध, धारि।

सुख एवं असुख आयु के लक्षण – जो मनुष्य शारीरिक या मानसिक रोगों से आक्रान्त नही है, विशेषकर युवा है, समर्थ है बल, वीर्य, यश, पौरूष और पराक्रमशील है, ज्ञान, विज्ञान, इन्द्रिय एवं इन्द्रियार्थ बल के समुदाय से युक्त है, अधिक सम्पत्तिशाली है और अनेक प्रकार के भोगों से युक्त है, जिनके समस्त इच्छित कर्म पूरे हो जाते है, जो अपनी इच्छानुसार भ्रमण करने वाला है – ऐसे पुरूश की आयु सुखायु और इससे भिन्न मनुष्यों की आयु असुख आयु कहलाती है।

हित एवं अहित आयु के लक्षण – प्राणियों की भलाई चाहने वाला, परधन इच्छा न रखने वाला, सत्यवादिन, शान्तिप्रेमी, परीक्ष्य पूर्वक कार्य करने वाला, असवधान न रहने वाला, त्रिवर्ग का बाधा रहित उपार्जन करने वाला, पूजायोग्य मनुष्यों की पूजा करने वाला, ज्ञान, विज्ञान, शान्तिशील, वृद्धों की सेवा करने वाले, राग, ईर्ष्या, मद, मान के वेगों को रोकने वाला, सतत विविध दान करने वाला, सदैव तप, ज्ञान, और शान्ति करने वाले, अध्यात्म विद्या को जानने वाले और उसी के अनुसार आचरण करने वाले, इस लोक और परलोक को ध्यान में रखते हुए स्मरणशक्ति और बुद्धि से युक्त पुरूषों की आयु हितायु और इससे विपरीत पुरूषों की आयु अहितायु कही जाती है।

मृत्यु के पर्याय : – स्वभाव, प्रवृत्तिरूपरम् (प्रवृत्ति का नाश), मरण, अनित्यता और निरोध।

आयुर्वेद का प्रयोजन – प्रयोजनं चास्य स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणं आतुरस्य विकारप्रशमनं च। (च. सू. 30/26)
स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगी व्यक्ति के रोग का उन्मूलन करना – ये 2 आयुर्वेद के प्रयोजन है

आयुर्वेद शाश्वत है – सोऽयमायुर्वेदः शाश्वतो निर्दिश्यते, अनादित्वात्, स्वभावसंसिद्ध लक्षणत्वात् भावस्वभावनित्यात्वाच्य।

(1) अनादि – अनादिकाल से स्थित होने से।
(2) स्वभावसंसिद्धलक्षणत्वात् – आयुर्वेद के लक्षण स्वभावतः सिद्ध होने से।
(3) भावस्वभाव नित्यात्व – पदार्थो के स्वभाव से नित्य होने से।

अष्टांग आयुर्वेद :– कायचिकित्सा, शालक्यं, शल्यापहर्तृकं, **विषगरवैरोधिक प्रशमंन**, भूतविद्या, कौमारभृत्यंक, रसायनं, बाजीकरणमिति। (च.सू. 30/28)

आयुर्वेद का अध्ययन :– सुश्रुत – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, कुलगुणी शुद्र। काश्यप – सर्वगुणसम्पन्न सभी वर्ग के छात्र।

चरक –1. ब्राह्मण – (प्राणिनां अनुग्रहार्थी) – प्राणियों के प्रति कृपाभाव रखते हुए।
2. क्षत्रिय – (आरक्षार्थ राजन्यैः) – प्राणियों की रोगों से रक्ष करने के लिए
3. वैश्य – (वृत्यर्थे वैश्यैः) – जीविका (धनोपार्जन) के लिए।

आयुर्वेद का अध्ययन करना चाहिए।

वैद्य परीक्षा के लिए अष्टविध प्रश्न

- **एक वैद्य दूसरे वैद्य के ज्ञान की परीक्षा करने के लिये सर्वप्रथम 8 प्रश्नों को पूछ सकता है।**

प्रश्न :– 8	(1) तंत्र	(2) तंत्रार्थ	(3) स्थान	(4) स्थानार्थ
	(5) अध्याय	(6) अध्यायार्थ	(7) प्रश्न	(8) प्रश्नार्थ।

1. तत्र :– तत्रायुर्वेदः शाखा विद्या सूत्रं ज्ञानं शास्त्रं लक्षणं तन्त्रम् इत्यानर्थान्तरम्। (च. सू. 30/31)
तन्त्र – आयुर्वेद शाखा, विद्या, सूत्र, ज्ञान, शास्त्र, लक्षण और तंत्र – ये सब शब्द पर्यायवाची है। (तन्त्रणात् तंत्रः)

2. तन्त्रार्थ :– तन्त्रार्थः पुनः स्वलक्षणैरूपदिष्टः। – तन्त्रार्थ 10 प्रकरणों पर विचार किया जाता है।
(1) शरीर (2) वृत्ति (3) हेतु (4) व्याधि (5) कर्म (6) काल (7) कार्य (8) कर्ता (9) कारण (10) विधि

3. स्थानः – 'स्थानम् अर्थ प्रतिष्ठया।' स्थान संख्या – 8।
(1) सूत्र (2) निदान (3) विमान (4) शारीर (5) इन्द्रिय स्थान (6) चिकित्सा (7) कल्प (8) सिद्धि

4. स्थानार्थ :– 'श्लोकौषधारिष्ट विकल्पसिद्धि निदानमानाश्रय संज्ञकेषु। (च.सू. 30/34)

1. सूत्र स्थान	– श्लोक स्थान।	5. इन्द्रिय	– अरिष्ट स्थान।
2. निदान	– –	6. चिकित्सा	– औषध स्थान।
3. विमान	– मान स्थान।	7. कल्प	– विकल्प/दिव्य स्थान।
4. शारीर	– आश्रय स्थान।	8. सिद्धि	– –.

5. अध्याय :– अधिकृत्यार्यम् अध्याय नाम संज्ञा प्रतिष्ठित। (च.सू. 30/70)

120 अध्याय :–	(1) सूत्र	– 30	(5) चिकित्सा	– 30
	(2) निदान	– 8	(6) इन्द्रिय	– 12
	(3) विमान	– 8	(7) कल्प	– 12
	(4) शरीर	– 8	(8) सिद्धि	– 12

6. अध्यायार्थ –(1) सूत्रस्थान – **श्लोक स्थानं समुदिष्टं** तन्त्रस्यास्य शिरः शुभम्।
श्लोक (सूत्र) स्थान इस आयुर्वेद तंत्र का "शुभ शिर" (कल्याणकारक) है।

> इति सर्वविकाराणामुक्तमेतच्चिकित्सितम्। स्थानमेतचिकित्सितम्। स्थान गेतद्धि तन्त्रस्य रहस्यं परगुत्तगग्। **(च. चि. 30/228)**
> चिकित्सा स्थान इस आयुर्वेद तंत्र का "सर्वोत्तम स्थान और परम रहस्य" है।

सप्तचतुष्क :–	(1) भैषज्य चतुष्क	(1 – 4)	(5) रोग चतुष्क	(17 – 20)
	(2) स्वास्थ्य चतुष्क	(5 – 8)	(6) योजना चतुष्क	(21 – 24)
	(3) निर्देश चतुष्क	(9 – 12)	(7) अन्नपान चतुष्क	(25 – 28)
	(4) क्रिया चतुष्क	(13 – 16)	(8) संग्रह द्वय	(29 – 30)

7. प्रश्न :– पृच्छा तन्त्राद्यथाम्नायं विधिना प्रश्न उच्यते। (च. सू 30/69)
शास्त्र में जो विषय जिस प्रकार से कहा गया हो, उसे उसी रूप में विधिपूर्वक पूछना **'प्रश्न'** कहलाता है।

8. प्रश्नार्थ :– प्रश्नार्थो युक्तिमांस्तस्य तन्त्रेणैवार्थ निश्चयः।। (च.सू. 30/69)
युक्ति युक्त ढंग से शास्त्र के द्वारा जो अर्थ निश्चित किया जाता है उसे **'प्रश्नार्थ'** कहते हैं।

Shyam-Vidya Ayurved P.G. Entrance Coaching Center, Bhopal (M.P.)
By- Dr. N. S.Lodhi (M.D.) Mob. 09300961664, 09993961427

1. ज्वर निदान

निदान :– हेतुः निमित्तम् आयतनं कर्ता कारणं प्रत्ययः समुत्थानं निदानमित्यनर्थान्तरम्।

हेतु, निमित्त, आयतन, कर्ता, कारण, **प्रत्यय और समुत्थान** – ये सभी हेतु के पर्याय है।

निदान के प्रकार :– 1. असात्म्येन्द्रियार्थसंयोग 2. प्रज्ञापराध 3. परिणाम।

व्याधि के भेद :– त्रिविध :– 1. आग्नेया 2. सौम्या 3. वायव्या। द्विविध :– 1. राजस 2. तामस।

व्याधि के पर्याय :– व्याधि, आमय, गद, आतंक, **यक्ष्मा, ज्वर,** रोग तथा विकार।

रोग के पर्याय :- व्याधि, आमय, गद, आतंक, यक्ष्मा, ज्वर, रोग, **पाप्मा, आबाध** तथा विकार। – अ. हृ. नि. 1/1

– निदान पंचक :–

(1) निदान :– तत्र निदानं कारणमित्युक्तमग्रे। – निदान रोग के कारण को कहते हैं।

✓ **निदान के 4 भेद** – 1. सन्निकृष्ट 2. विप्रकृष्ट 3. व्यभिचारी 4. प्राधानिक – हरिश्चन्द्र ने माने है। ✓

(निरुक्ति :– **निदीयते निबध्यते हेत्वादि सम्बद्धो व्याधिरनेन निदानम्** – भट्टार हरिश्चन्द्र)

(2) पूर्वरूप :– पूर्वरूप प्रागुत्पत्तिलक्षणं व्याधेः। – रोग उत्पन्न होने के पूर्व के जो लक्षण है उन्हें पूर्वरूप कहते है।

✓ **द्विविधं हि पूर्वरूपं भवति – सामान्य विशिष्टं च।** (सु. उ. 39) – पूर्वरूप के 2 भेद – सामान्य और विशिष्ट सुश्रुत ने बताये है।

✓ **भाविव्याधि बोधकं एव लिंगं पूर्वरूपम्** – माधव निदान।

✓ प्रमेह के पूर्वरूपों की उत्पत्ति हुए बिना हरिद्रा वर्ण के मूत्र का विसर्जन करना रक्तपित्त रोग का निर्णायक है।

(3) रूप :– प्रादुर्भूतलक्षणं पुनर्लिङ्गम्। – रूप के पर्याय – लक्षण, लिंग, आकृति, चिह्न, **संस्थान, व्यंजन,** रूप।

✓ लक्षण – चरकानुसार रूप और तंत्र (आयुर्वेद) दोनों का पर्याय है।

(4) उपशय :– उपशयः पुनर्हेतुव्याधिविपरीतानां विपरीतार्थकारिणां चौषधाहार विहाराणामुपयोगः सुखानुबन्धः। (च. नि. 1/10)

1. हेतुविपरीत 2. व्याधि विपरीत 3. हेतुव्याधिउभय विपरीत 4. हेतुविपरीतार्थकारी 5. व्याधिविपरीतार्थकारी 6. हेतुव्याधि उभय विपरीतार्थकारी – औषध अन्न तथा विहार के परिणाम में सुखप्रद उपयोग को उपशय कहते है।

उपशय के भेद :– चरक – 6 चक्रपाणि – 18।

उपशय के प्रकार	औषध	अन्न	विहार
1. हेतुविपरीत	**शीत, कफज** ज्वर में शुण्ठी आदि उष्ण औषध	**श्रम तथा वातजन्य** ज्वर में मांसरस एंव भात का प्रयोग।	**दिवास्वप्न** से उत्पन्न कफ में रात्रिजागरण।
2 व्याधि विपरीत	**अतिसार** में स्तम्भनार्थ कुटज	**अतिसार** में स्तम्भनार्थ मसूर।	**उदावर्त** में प्रवाहण।
3. हेतुव्याधिउभय विपरीत	वातिक शोथ में वातहर तथा शोथहर दशमूल का क्वाथ।	वात–कफ जन्य ग्रहणी में तक्र का प्रयोग।	स्निग्ध पदार्थो के सेवन और दिवास्वप्न से उत्पन्न तन्द्रा में रूक्ष रात्रिजागरण
4. हेतुविपरीतार्थकारी	**पित्तज व्रण** में उष्ण उपनाह	पैत्तिक व्रण में **विदाही अन्न**	वातज उन्माद मे **भयदर्शन**
5. व्याधिविपरीतार्थकारी	**छर्दि** रोग में वमनकारक मदनफल का प्रयोग।	**अतिसार** में विरेचनार्थ दुग्ध का प्रयोग।	**छर्दि** रोग में वमन कराने के लिए प्रवाहण।
6. हेतुव्याधिउभय विपरीतार्थकारी	प्लुष्ठ अग्निदग्ध में उष्ण **अगरू** का लेप।	मद्यपान जन्य मदात्यय में मद्यकारक **मद्य** का पान।	व्यायाम जनित संमूढवात में जल में **तैरना**।

✓ निदानोक्तोनुपशयः – चरक ने अनुपशय का निदान में ही अन्तर्भाव कर दिया है।

अनुपशय :— उपशय से विपरीत को अनुपशय कहते है इसी को व्याधि असात्म्य कहते हैं।— अ.हृ. नि. 1/7

(5) सम्प्राप्ति :— सम्प्राप्ति, जाति और आगति एक दूसरे के पर्याय है।

✓ **सम्प्राप्ति :- तस्माद् व्याधिजनक दोषव्यापारविशेषयुक्तं व्याधिजन्मेह सम्प्राप्तिः। - चक्रपाणि।**

सम्प्राप्ति के भेद – (5) :– संख्या प्राधान्य विधि विकल्प बलकाल विशेषैर्भिद्यते। (च. नि. 1/11)

वाग्भट्ट – (5) :– संख्या विकल्प प्राधान्य बल काल विशेषेतः। (अ.हृ. नि. 1/9)

✓ वाग्भट्ट ने बल सम्प्राप्ति और काल सम्प्राप्ति को अलग -अलग माना है, जबकि चरक ने 'बलकाल विशेष' एक ही सम्प्राप्ति माना है।

✓ विधि सम्प्राप्ति का वर्णन केवल आचार्य चरक ने ही किया है।

1. **संख्या :–** आठ ज्वर, पॉच गुल्म, सप्त कुष्ठ।
2. **प्राधान्य :– प्राधान्यं पुनर्दोषाणां तरतमाभ्यामुपलभ्यते।**
   ✓ **(स्वातन्त्रय पारतन्त्रयभ्यां व्याधेः प्राधान्यमादिशेत्।** – अ. हृ. नि. 1/10)
3. **विधि :–** रोगों के भेद विधि सम्प्राप्ति के अंतर्गत आते है।
   विधि भेद से 2 प्रकार के रोग होते है – 1. निज और आगन्तुज।
4. **विकल्प :–** समवेतानां **पुनर्दोषाणामंशांशबलविकल्पो, विकल्पोऽस्मिन्नर्थे।**
   दोषों की अंशांश कल्पना को विकल्प सम्प्राप्ति कहते है।
5. **बलकाल :–** व्याधियों का बलकाल विशेष ऋतु, अहोरात्र और भोजन काल पर निर्भर है।

—: ज्वर :—

शरीराश्रित रोगों में सर्वप्रथम ज्वर उत्पन्न हुआ।

1.	**मन्थक ज्वर**	–	**योग रत्नाकर**		
2.	**एषाण ज्वर**	–	**काश्यप**		
3.	**हारिद्रक ज्वर**	–	**वृद्धवाग्भट्ट**		
4.	**ज्वरातिसार**	–	**माधव**		
5.	**वर्णानुसार ज्वर**	–	**हारीत**		
6.	**गम्भीर ज्वर**	–	(VP)	–	सुश्रुत
7.	**वातबलासक ज्वर**	–	(VK)	–	अष्टांग संग्रह
8.	**प्रलेपक ज्वर**	–	(PK)	–	सुश्रुत शोष रोगियों में

ज्वर के कारण – 8 – वातज, पित्तज, कफज, वातपित्तज, वातकफज, पित्तकफज, सन्निपातज और आगुन्तुज।

ज्वर की प्रकृति – 8 – इत्यष्टविधा ज्वरप्रकृतिरुक्ता। (च. सू. 1/31)

ज्वर के भेद :– 2 – निज और आगन्तुज भेद से ज्वर 2 प्रकार का होता है।

✓ ज्वर की उत्पत्ति में **रसवह और स्वेदवह** दोनों स्रोत्रस अवरूद्ध होते है।

✓ घनात्यये	–	शरद ऋतु	(च. सू. 6/43)
✓ हिमात्यये	–	बसंत ऋतु	(सु. उ. 64/35)
✓ तापात्यये	–	प्रावृट् ऋतु	(सु. उ. 64/46)
✓ घर्मकाले	–	ग्रीष्म ऋतु	(सु. उ. 64/42)
✓ **घर्मान्ते**	–	**बर्षा ऋतु**	(च. नि. 1/21)
भावप्रकाश के अनुसार '**घ<u>र्म</u>**' स्वेद का पर्याय है।			

1. **वातज ज्वर लक्षण – विषमारम्भविसर्गित्वम्,** जरणान्ते दिवसान्ते निशान्ते **घर्मान्ते** वा ज्वरस्याभ्यागमभिवृद्धिः, परूष, अरूण वर्ण–नखनयनवदनमूत्रपुरीषत्वचामत्यर्थ, **क्लृप्तिभावश्चः,** पादयो सुप्तता, **पिण्डिकयोरूद्वेष्टनं,** स्वनश्च कर्णयो, शंखयोर्निस्तोद, **कषायास्यता आस्यवैरस्यं,** पिपासा, हृदयग्रह, **शुष्कच्छर्दि,** शुष्क कास, **अन्नरसखेद,** प्रसेकारोचकाविपाकाः, श्रमभ्रमप्रलापप्रजागरण, रोमहर्षदन्तहर्षा, **उष्णाभिप्रायता।**

2. **पित्तज ज्वर लक्षण** – युगपदेव केवले शरीरे ज्वरस्याभ्यागमनभिवृद्धि, भुक्तस्य विदाह काले मध्यन्दिनेऽर्धरात्रे शरदि, हरितहारिद्रत्व वर्ण–नखनयनवदनमूत्रपुरीषत्वचामत्यर्थ, **रक्तकोठाभिर्निवृति, कटुकास्यता, पित्तच्छर्दन, अतिसार, अन्नद्वेष, तृष्णा, मद, भ्रम, मूर्च्छा, शीताभिप्रायता।**

3. **कफज ज्वर लक्षण** – युगपदेव केवले शरीरे ज्वरस्याभ्यागमनभिवृद्धि, भुक्तमात्रे पूर्वाह्ने पूर्वरात्रे बसन्तेकाले वा विशेषण, **अनन्नाभिलाषा, मधुमाधुर्य, छर्दि,** शैत्यं श्वैत्यं–नखनयनवदनमूत्रपुरीषत्वचामत्यर्थ, **शीतपिडका उत्पत्ति, मृद्वग्निता,** हृल्लास, **हृदयोपलेप, तन्द्रा, कास, श्वास, प्रतिश्याय, उष्णाभिप्रायता।**

आगन्तुज ज्वर :–
1. अभिघातज – वायु दुष्ट शोणित जन्य।
2. अभिषंगज – वात, पित्त जन्य।
3. अभिचारज – सन्निपातज।
4. अभिशापज – सन्निपातज।

ज्वर का एकल लक्षण :– ज्वरस्त्वेक एव सन्तापलक्षणः। (च. नि. 1/32)

✓ ज्वर का प्रत्यात्मक लक्षण :– ज्वरप्रत्यात्मिकं लिङ्गं सन्तापो देह मानसः। (च. चि. 3/31)

ज्वर के पूर्वरूप :– मुखवैरस्य, गुरुगात्रत्वम्, अनन्नाभिलाषः, निद्राधिक्यम्, जृम्भा, श्रमभ्रमप्रलापप्रजागरणरोमहर्षदन्तहर्षा, अरति, विनाम, वेपथु, शब्दशीतवातातपसहत्वासहत्वम्, प्रतीपता स्वकार्येषु, अम्ललवणकटुकप्रियता, अल्पप्राणता, दीर्घसूत्रता, गुरूणां वाक्येष्वभ्यसूया, स्वधर्मेष्वचिन्ता, बालेभ्यः प्रद्वेषः, मधुरेभ्यश्च भक्ष्येभ्यः प्रद्वेशः।

ज्वर का महत्व :– ज्वरस्तु खलु **महेश्वरकोपप्रभवः,** सर्वप्राणभृतां प्राणहरो **देहेन्दियमनस्तापकरः,** सर्वरोगाधिपति, **महामोह,** नान्ये व्याध्यस्तथा दारुणा बहुपद्रवा दुश्चिकित्स्याश्च, सर्व प्राणभृतः सज्वरा एव जायन्ते सज्वरा एव म्रियन्ते।

✓ ज्वर को "**सर्वरोगपति**" वाग्भट्ट ने कहा है।

ज्वर का चिकित्सा सूत्र :–

1. ज्वर के पूर्वरूप में – लघु भोजन/अपतर्पण। (ज्वरादौ वा हितं लघ्वशनमपतर्पणं वा। – च. नि. 1/36)
2. जीर्णज्वर में – घृतपान।

(जीर्णज्वरेषु तु सर्वेष्वेव सर्पिषःपानं प्रशस्यते। – च. नि. 1/37)

(जीर्णज्वराणां सर्वेषां पयः प्रशमनं परम्। – च. चि. 3/239) – वातपित्तज ज्वर में धारोष्ण दुग्ध देवें।)

घृत उपयोगिता :– स्नेहात् वात शमयति, शैत्यात् पित्तं नियच्छति। घृतं तुल्यगुणं दोषं संस्कारात्तु जयेत्कफम्।।
नान्यः स्नेहस्तथा कश्चित् संस्कारमनुवर्तते। यथा सर्पिरतः सर्पिः सर्वस्नेहोत्तमं मतम्।।

1. स्निग्धता के कारण – वातशामक।
2. शीतवीर्य होने से – पित्तशामक।
3. **संस्कारवाही गुण से** – कफ शामक।

2. रक्तपित्त निदान

रक्तपित्त :– पित्तं यथाभूतं लोहितपित्तमिति संज्ञा लभते। – रक्तपित्त को "लोहितपित्त" संज्ञा आचार्य चरक ने दी है।

निदान :– 1. दधिदधिमण्डोदश्वित्कट्वराम्लकान्जिकोपसेकं,

2. पिण्याक पिण्डालु शुष्कशाकोपहितं,

3. उष्णाभितप्तो वाऽतिमात्रमतिवेलं वाऽऽमं पयः पिबति।

सम्प्राप्ति :– उपर्युक्त कारणो से पित्त प्रकुपित हो जाता है और साथ ही रक्त भी अपने प्रमाण में **बढ जाता है।** रक्त का **प्रमाण बढने** से प्रकुपित पित्त सर्व शरीर में फैलकर **यकृत्प्लीहा** से उत्पन्न होने वाले रक्त को **लोहितवह स्रोत्रस** के मुखों को अवरूद्ध कर रक्त को दूषित कर 'रक्तपित्त रोग को उत्पन्न कर देता है।

रक्तपित्त की निरूक्ति :– संसर्गाल्लोहितप्रदूषणाल्लोहितगन्धवर्णानुविधानाच्च पित्तं लोहितपित्तं इत्याचक्षते।

रक्तपित्त के पूर्वरूप :– अनन्नाभिलाषः, भुक्तस्य विदाह, शुक्ताम्लगन्धरस उद्‌गार, स्वरभेद, मुखाद्धूमागम इव,

✓ **लोहलोहितमत्स्यामगन्धित्वमिव** – चरक –मुख से लोहा, रुधिर, मछली और आम सी गंध आती है।

✓ **(लोहलोहितमत्स्यामगन्धास्यत्वं – वाग्भट्ट)**

✓ **(लोहगन्धि – सुश्रुत)**

रक्तहरितहारिद्रत्व – अंग, अवयव, शकृत्, मूत्र, स्वेद, लाला, सिंघाणास्य, कर्णमल, पिडकोलिका, पिडका।

रक्तपित्त का ऐतिहासिक कारण :– दक्ष प्रजापति के यज्ञ के विध्वंस के समय भगवान् रूद्र के क्रोधाग्नि की ज्वाला **(रूद्रकोपामर्षाग्निा)** चारों ओर व्याप्त हो गई, और जिनका शरीर एवं प्राण ज्वर के संताप से पहले से ही सन्तप्त था, वे उस तेज को सहन न सके। जिसके परिणामस्वरूप उन्हें ज्वर के साथ रक्तपित्त रोग भी हो गया।

रक्तपित्त के मार्ग (2) :– **1. ऊर्ध्व** – कान, नाक, नेत्र और मुख से स्राव।

2. अधः – गुद मार्ग से स्राव।

रक्तपित्त का चिकित्सा सूत्र :– प्रतिमार्ग च हरणं रक्तपित्ते विधीयते। – रक्तपित्त में प्रतिमार्ग हरणं चिकित्सा करते है।

1. ऊध्वर्ग रक्तपित्त :– विरेचनं तु पित्तस्य जयार्थे परमौषधम्।

2. अधोग रक्तपित्त :– वमनं हि न पित्तस्य हरणे श्रेष्ठमुच्यते।

रक्तपित्त	**दोषानुबन्ध**	साध्यासाध्यता	चिकित्सा	औषध
1. ऊध्वर्ग	**पित्त + कफ**	साध्य	विरेचन	कषाय+तिक्त रस प्रधान औषधे **(औषधाधिक्य)**
2. अधोग	**पित्त + वात**	याप्य	वमन	केवल मधुर रस प्रधान औषधे **(अल्पौषधत्व)**
3.उभयमार्गज	**पित्त + कफ+वात**	असाध्य	विरूद्धोपक्रप	उपक्रमविरोध।

रक्तपित्त के उपद्रव (11) :– दौबर्ल्य, अरोचक, अविपाक, ज्वर, **अतिसार,** श्वास, कास, शोफ, **शोष, पाण्डुरोग, स्वरभेद।**

(कामला और अर्श – रक्तपित्त के उपद्रव नहीं है।)

3. गुल्म निदान

गुल्म :– 'गुड् वेष्टने' धातु से मक प्रत्यय करने पर, 'ड्' के स्थान में 'ल्' होकर गुल्म शब्द बनता है।
गुल्म शब्द का अर्थ आवेष्टन होता है।

गुल्म की निरूक्ति :– स पिण्डितत्वाद् गुल्म इत्यभिधीयते। – (च. नि. 3/7)

निदान :– 1. अस्नेहपूर्वो वा वमन विरेचने पिबति 2. अत्यशितो वा पिबति नवोदकमतिमात्रम्
3. विषमासनशयनस्थानचड्.क्रमणसेवी

उपर्युक्त कारणो से प्रकुपित वायु **"महास्रोत्र"** में प्रवेश कर गुल्म को उत्पन्न करती है।

गुल्म के प्रकार :– 5 – 1. वातज 2. पित्तज 3. कफज **4. निचय (सन्निपातज)** 5. शोणित गुल्म।

गुल्म के आश्रय :– 5 – 1. हृदय 2. वस्ति 3. नाभि 4. दोनों पार्श्व।

1. वातज गुल्म के लक्षण :– अपि च **दिवसान्ते ज्वर्यते,** मुहुः पिपीलिकासंप्रचार इवाङ्गेषु, उच्छवासश्चोपरूध्यते,
उपद्रव – प्लीहा, आटोप, आन्त्रकूजन, **शिरः, शंखशूल,** कृष्णारूणपरूष– त्वड्.नखनयनवदनमूत्रपुरीषश्च भवति।

2. पित्तज गुल्म के लक्षण :– स्पर्शासहोऽल्परोमान्च, हरितहारिद्र– त्वड्.नखनयनवदनमूत्रपुरीषश्च भवति।
उपद्रव – ज्वर, भ्रम, दवथु, पिपासा, गलतालुमुखशोष, प्रमोह, विड्भेद।

3. कफज गुल्म के लक्षण :– श्वैत्यं– त्वड्.नखनयनवदनमूत्रपुरीषेषु भवति, उपद्रव – शीतज्वर, अरोचक, शिरोभिताप।
अतिप्रवृद्ध होने पर – **कास, श्वास, प्रतिश्याय और राजयक्ष्मा की उत्पत्ति।**

✓ पित्तज और कफज गुल्म में बस्ति के स्थान पर आमाशय के एक देश को कहा हैं।

5. रक्तज गुल्म के लक्षण :– शोणिगुल्मस्तु खलु स्त्रिया एव भवति न पुरूषस्य, गर्भकोष्ठार्तवागमन वैशेष्यात्।
रक्तज गुल्म केवल स्त्रियों को होता है, पुरुष को नहीं क्योंकि गर्भाशय में आर्तव के रूकने से उत्पन्न होता हैं।

✓ **स्त्रीणामात्तर्वजो गुल्मो न पुंसामुपजायते। अन्यस्त्वसृग्भवो गुल्मः स्त्रीणां पुंसां-च जायते।** – **क्षारपाणि**

✓ **आर्तवप्रतिबन्धजन्यः शोणितगुल्मः पुरूषस्य न भवति। सामान्य शोणितदुष्टिजन्यस्तु पुरूषस्यापि भवति – चक्रपाणि**

1. **स्तनयोश्च स्तन्यम्** – स्तनों में दुग्ध आने लगता हैं।
2. **ओष्ठयोः स्तनमण्डलयोश्च काष्णर्यम् – ओष्ठ और स्तनमण्डल** में कृष्णता आ जाती है।
3. **अत्यर्थ ग्लानिश्चक्षुषोः** – नेत्रों में ग्लानि रहती है।
4. **दोह्रद** –
5. **श्वयथुश्च पादयो** – पैरों में शोथ रहता हैं।
6. **ईषत् उदगमो रोमराज्याः** –
7. **योन्याश्चाटालत्वम्** – योनिमार्ग का फैल जाना।
8. **योन्या दौगन्ध्यमास्रावश्चोपजायते** – योनि से दुर्गन्ध और स्राव आना।

गुल्म के पूर्वरूप :– अनन्नाभिलषणम्, अरोचक, अविपाक, अग्निवैषम्य, विदाहो भुक्तस्य, छर्दि, उदगार, अबुभुक्षा, दौबर्ल्य, सौहित्यस्य चासहत्वमिति।

गुल्म में वायु की प्रधानता :– सर्वेष्वपि खल्वेतेषु गुल्मेषु न कश्चिद् वातादृते सम्भवति गुल्मः।

गुल्म चिकित्सा सूत्र :– वातशमन चिकित्सा, वातहर स्नेहन, स्वेदन, मृदु विरेचन, बस्ति और मधुर, अम्ल, लवण द्रव्य।

4. प्रमेह निदान

प्रमेह :– त्रिदोषप्रकोपनिमित्तता विंशतिः प्रमेहा भवन्ति। **प्रमेह भेद** – सुश्रुत, चरक, वाग्भट्ट – 20।

प्रमेह के निदान :– 1. ग्राम्य, आनूप और औदक मांस 2. **श्लेष्म, मेद, मूत्र संजनन** करने वाले आहार विहार।

प्रमुख दोष :– बहुद्रवः श्लेष्मा दोषविशेषः।

प्रमेह में दूष्य (10) :– रस, शोणित, मांस, मेद,––, मज्जा, शुक्र + ओज + वसा, लसीका, शरीरजक्लेद।

<u>**बहुबद्धं**</u> **मेदो मांस शरीरजक्लेदः शुक्रं शोणितं** वसा मज्जा लसीका <u>रसश्चौजः संख्यात</u> इति **दूष्याविशेषाः।**

(1) कफज प्रमेह– कफ के 10गुणों में विकार से – श्वेत, शीत, मूर्त, पिच्छिल, अच्छ, स्निग्ध, गुरू, मधुर, सान्द्र, प्रसाद

	चरक	सुश्रुत
1. उदकमेह	– अच्छं बहु सितं शीतं निर्गन्धं उदकोपमम्।	1. उदकमेह
2. इक्षुमेह	– **अत्यर्थमधुरं शीतं** ईषत्पिच्छिलमाविलम् काण्डेक्षुरससंकाश।	2. इक्षुबालिका मेह
3. सान्द्रमेह	– यस्य पर्युषितं मूत्रं सान्द्रीभवति भाजने।	3. सान्द्रमेह
4. सान्द्रप्रसादमेह	**– यस्य संहन्यत मूत्रं किच्चित किच्चितप्रसादति।**	**4. सुरामेह**
5. शुक्लमेह	**– शुक्लपिष्टनिभं** मूत्रभीक्ष्णं यः प्रमेहति।	**5. पिष्टमेह**
6. शुक्रमेह	– शुक्राभं शुक्रमिश्रं वा मुहुर्मेहति यो नरः।	6. शुक्रमेह
7. शीतमेह	**– अत्यर्थमधुरं शीतं** मूत्रं मेहति यो भृशम्।	**7. फेनमेह**
8. सिकतामेह	– सिकतामेहिनं ।	8. सिकतामेह
9. शनैर्मेह	**– मन्दं मन्द वेग युक्त + कृच्छ्रपूर्वक मूत्रत्याग।**	9. शनैर्मेह
10. लालामेह	**– तन्तु बद्धमिवालालं पिच्छिलं यः प्रमेहति।**	**10. लवणामेह**

(2) पित्तज प्रमेह – पित्त के 6 गुणों में विकार से – क्षार, अम्ल, लवण, कटु, विस्र, और उष्ण गुण।

1. नीलमेह	**– चाषपक्षनिभं मूत्रं** अम्ल मेहति यो नरः।	1. नीलमेह
2. हारिद्रमेह	– हारिद्रोदक संकाशं **कटुकं** यः प्रमेहति।	2. हारिद्रमेह
3. कालमेह	**– मसीवर्णमजस्र यो मूत्रमुष्णं** प्रमेहति।	**3. अम्लमेह**
4. क्षारमेह	– गन्ध, वर्ण, रस, स्पर्श में क्षार के समान मूत्रत्याग।	4. क्षारमेह
5. मजिष्ठामेह	– मजिष्ठोदक संकाश भृशं विस्रं प्रमेहति।	5. मंजिष्ठामेह
6. रक्तमेह	– विस्रं, **लवण,** उष्ण रक्त सम मूत्र त्याग।	6. शोणित मेह

(3) वातज प्रमेह :–

1. वसामेह	– वसामिश्रं वसाभं वा मुहुर्मेहति यो नरः।	1.वसामेह
2. हस्तिमेह	– मतवाले हाथी की तरह अधिक मात्रा में मूत्र त्याग।	2. हस्तिमेह
3. मज्जामेह	**– मज्जानं सह मूत्रेण** मुहुर्मेहति यो नरः।	**3. सर्पिमेह**
4. मधुमेह	**– कषायमधुरं पाण्डु रूक्षं** मेहति यो नरः।	**4. क्षौद्रमेह**

> ✓ मधुमेह के लक्षण :– मधुमेहो मधुसमं जायते स किल द्विधा। क्रुद्धे धातुक्षयाद्वायौ दोषावृतपथेऽथवा। (अ.हृ.नि.10/18)
>
> ✓ मधुमेह के भेद – 2 – मधुमेह दो प्रकार का होता हैं।
>
> 1. धातुक्षय के कारण वायु के कुपित होने से। 2. दोषों से मार्ग के रूकने के कारण उत्पन्न वायु के प्रकोप से।

✓ **भस्ममेह** का वर्णन भेल ने एवं **तक्रप्रमेह,** घृतप्रमेह, **खटिका प्रमेह** का वर्णन हारीत ने और **औपसर्गिक मेह** का वर्णन गोविन्द दास सेन ने किया है।

साध्यासाध्यता :– 1. कफज प्रमेह – समानगुण मेदः स्थानकत्वात्, कफस्य प्राधान्यात्, **दोष–दूष्य समक्रिय – साध्य।**

2. पित्तज प्रमेह – संसृष्टदोष मेदः स्थानत्वात्, **विरूद्धोपक्रमत्वात – याप्य।**

3. वातज प्रमेह – **महात्ययिकत्वाद्,** विरूद्धोपक्रमत्वात् – **असाध्य।**

✓ **महात्ययिक :– महात्ययिकत्वादिति मज्जप्रभृतिसारभूतधातुक्षयकरत्वात्। – (चक्रपाणि) –**
वात दोष प्रबल होने के कारण मज्जा आदि गम्भीर धातुओं दूषित तथा क्षीण होती है तो वायु शीघ्रकारी होने से विनाशकारी हो जाता है जिस शीघ्रता से धातुओं का नाश होता है उतनी शीघ्रता से उनकी क्षतिपूर्ति करना सम्भव नहीं है इसलिए महात्ययिक होने से वातज प्रमेह असाध्य होता है।

प्रमेह के पूर्वरूप :– जटिली भावं केशेषु, करपादयोः सुप्ततादाहौ, **परिदाहं,** पिपासा, **दुर्गन्ध, मुखतालुकण्ठशोष,**
सुप्तता च अंगेषु, षट्पदपिपीलिकाभिश्च शरीरमूत्राभिसरणं।

प्रमेह के उपद्रव (11) :– दौबर्ल्य, अरोचक, अविपाक, ज्वर, अतिसार, तृष्णा, **दाह,** पूतिमांस, पिडका, अलजी, विद्रधि।

प्रमेह चिकित्सा सूत्र :– साध्य प्रमेहो में संशोधन करे और जो संशोधन के योग्य न हों, उनकी संशमन चिकित्सा करें।
प्रमेह रोग में उपमा :– प्रमेहः क्षिप्रमभ्येति नीडद्रुममिवाण्डजः।

5. कुष्ठ निदान

कुष्ठ में दोष–दूष्य :– कुष्ठ के 3 दोष वात, पित्त, कफ और 4 दूष्य त्वक्, मांस, शोणित, लसीका हैं।

> ➢ **एवं कुष्ठं समुत्पन्नं त्वचि कालप्रकर्षतः। क्रमेण धातून् व्याप्नोति नरस्याप्रतिकारिणः। – (सु. नि. 5/20)**
> सुश्रुतानुसार कुष्ठ में सर्वप्रथम त्वचा → लसीका → रक्त → मांस आदि क्रम से दूषित होते है।

निदान :– (1) शीत एवं उष्ण पदार्थो का या संतर्पण एवं अपतर्पण पदार्थों का **क्रम विरुद्ध (व्यत्यास) सेवन** करने से।
(2) घृत तैलादि स्नेहपान का प्रयोग अतिमात्रा में करना (स्नेहाश्चातिचरतः)।
(3) चिलिचिम मछली का दूध के साथ सेवन।
(4) भय, श्रम, सन्ताप पश्चात् शीतल जल में स्नान करना।

कुष्ठ के पूर्वरूप :– अस्वेदमतिस्वेदनं, **त्वक् में** – पारुष्य, अतिश्लक्ष्णता, वैवर्ण्य, कण्डू, निस्तोद एवं सुप्तता रहना
शरीर में – परिदाह, परिहर्ष, लोमहर्ष का रहना, गौरव, श्वयथु, विसर्पागमन, पक्वदग्धभग्नक्षतोपस्खलितेष्वतिमात्रं वेदना।

कुष्ठ भेद – चरक – 7 कुष्ठ तथा **असंख्य भेद** सुश्रुत – 18 – 7 महाकुष्ठ, 11 क्षुद्रकुष्ठ।

कुष्ठ	**दोष**	**समान वर्ण**	**लक्षण**
1. कपाल	वातज	कृष्णकपाल वत	तनु, निस्तोदबहुला, जन्तुमन्ति, कृष्ण, अरूण, कपाल।
2. औदुम्बर	पित्तज	पक्वौदुम्बरफल वत	बहुबहल**पूयरक्त**लसीकानि, संसन्तापक्रिमीणि।
3. मण्डल	कफज	परिमण्डल वत	बहुबहलशुक्लपिच्छिलस्रावीणि,**बहुक्लेदकण्डूक्रिमीणि**,परिमण्डलानि।
4. ऋष्यजिह्व	वातपित्तज	ऋष्यजिह्वा सदृश	कर्कशपिडका, दीर्घपरिमण्डल।
5. सिध्म	वातकफज	अलाबुपुष्प वत	अलाबुपुष्प संकाशानि।
6. पुण्डरीक	कफपित्तज	पुण्डरीकपलाशसंकाश	बहुबहल**रक्तपूय**लसीकानि
7. काकणक	त्रिदोषज	गुन्जाफल वत	सर्वकुष्ठलिंगसमन्वितानि।

✓ **चरक संहिता में 'क्षुद्रकुष्ठ' के लक्षणों का वर्णन केवल चिकित्सा स्थान में है।**
साध्यासाध्यता :– काकणक कुष्ठ को छोडकर सभी 6 कुष्ठ साध्य हैं।
कुष्ठ के उपद्रव (10) :– दौबर्ल्य, अरोचक, अविपाक, ज्वर, अतिसार, तृष्णा, दाह, प्रस्रवण, अंगमर्द, पतनान्यगंवयवानां।

6. राजयक्ष्मा निदान

राजयक्ष्मा:- सबसे पहले नक्षत्रों के राजा चन्द्रमा को यह रोग हुआ था अतः इसे "राजयक्ष्मा" कहते है। - सुश्रुत
शोष :- रसादि धातुओं का शोषण करने कारण इसे "शोष" कहते है - सुश्रुत
क्षय :- शरीरिक क्रियाओं का क्षय करने के कारण इसे "क्षय" कहते है। - सुश्रुत

चरकानुसार शोष के आयतन – 4 –	1. साहस	2. सन्धारण	3. क्षय	4. विषमासन
चरकानुसार यक्ष्मा के कारण – 4 –	**1. अयथाबलमारम्भ**	2. वेगसन्धारण	3. क्षय	4. विषमासन
सुश्रुतानुसार शोष के हेतु - 4 -	**1. आघात**	2. वेगप्रतिघात	3. क्षय	**4. विषमासन**
वाग्भट्टानुसार राजयक्ष्मा के निदान - 4 -	1. साहस	2. वेगसंरोध	**3. शुक्रौजःस्नेहसंक्षय**	**4. अन्नपानविधित्याग**

1. साहस जन्य :– साहस करने उरःस्थल में क्षत हो जाता है
साहसं वर्जयेत्कर्म रक्षन्जीवितमात्मनः। जीवन् हि पुरूषस्त्विष्टं कर्मणः फलमश्नुते।। (च. नि. 6/5)
✓ साहस का वर्जन (त्याग) करते हुए अपने शरीर की रक्षा करनी चाहिए।

2. सन्धारण जन्य :– वेगसन्धारण से वात कुपित हो जाती है। – ततः स उपशोषणैरेतैरूपद्रवैरूपद्रुतः शनैः शनैरूपशुष्यति।
✓ **योगक्षेम का प्रयोग** :– तस्मात् पुरूषो मतिमानात्मनः शरीरेष्वेव योगक्षेमकरेषु प्रयतेत विशेषेण: (च. नि. 6/6)
यक्ष्मा रोगी – **योग (अप्राप्त वस्तु को प्राप्त करना)** और क्षेम (प्राप्त वस्तु की रक्षा करना) द्वारा शरीर को स्वस्थ रखे।
सर्वमन्यत्परित्यज्य शरीरमनुपालयेत्। तदभावे हि भावानां सर्वाभावः शरीरिणाम्।। (च. नि. 6/7)

3. क्षय जन्य :– क्षय 2 प्रकार से होता है। – 1. सर्व धातु जन्य क्षय 2. शुक्र धातु जन्य क्षय।
आहारस्य परं धाम शुक्रं तद्रक्ष्यमात्मनः। क्षयो ह्यस्य बहून् रोगान् मरणं वा नियच्छति।। (च. नि. 6/9)
✓ शुक्र ही आहार का परम धाम (सर्वश्रेष्ठ परिणाम) है।

4. विषमासन जन्य :– विषमासन से आहार के अनुपात से अन्य धातुएं नहीं बनती है।
हिताशी स्यान्मिताशी स्यात्कालभोजी जितेन्द्रियः। पश्यन् रोगान् बहून् कष्टान् बुद्धिमान् विषमाशनात्। (च.नि. 6/11)
स पुरीषोपष्टम्भाद्वर्तयति तस्मात् शुष्यतो विशेषेण पुरीषमनुरक्ष्यं।
शोष से पीडित व्यक्ति के मल की रक्षा प्रयत्नपूर्वक करना चाहिए और क्योंकि आहार के अनुपात में अन्य धातुएँ नहीं बनती है केवल मल के बल पर ही जीवित रहता है।
✓ **पुरीष की रक्षा** :– (चरक – उपष्टम्भ) (उपस्तंभ – सुश्रुत), (अवस्तभ – वाग्भट्ट)

राजयक्ष्मा के त्रिरूप :– **अंसपार्श्वाभितापश्च सन्तापः करपादयोः। ज्वरः सर्वागंश्चेति लक्षणं राजयक्ष्मणः।। (च. चि. 8/52)**
(1) अंसपार्श्वाभिताप (2) सन्तापः करपादयोः (3) सर्वागज्वरः।

✓ 1 रक्तस्राव	2. ज्वर	3. कास – सुश्रुत।

राजयक्ष्मा के षड्रूप :– **यक्ष्मिणः षडिमानि वा – कासो ज्वरः पार्श्वशूलं स्वरवर्चोगदोऽरूचि।। (च. चि. 8/46)**
(1) कास (2) ज्वर (3) पार्श्वशूल (4) स्वरभेद (5) अतिसार (6) अरूचि।
1. कास, 2. ज्वर, 3. श्वास, 4. स्वरभेद, 5. **शोणितदर्शनम्** 6. **भक्तद्वेष**। – सुश्रुत।

एकादश रूप :– (1) कास (2) ज्वर (3) पार्श्वशूल (4) स्वरभेद (5) अतिसार (6) अरूचि (7) श्वास, (8) अंसताप, (9) शिरःशूल, (10) श्लेष्मछर्दन, (11) शोणितष्ठीवनं। **(च. नि. 6/14)**

✓ **(चरक – श्लेष्मर्छदन, श्वास = कण्ठोद्ध्वंस, दाह – सुश्रुत)**
वाग्भट्ट :– (1) कास (2) ज्वर (3) पार्श्वशूल (4) स्वररूजा (5) अरूचि (6) अतिसार (विड्भ्रंश) **(7) श्वास** **(8) अंसरूजा** (9) शिरोरूजा (10) वमन (11) विड्शोष।

पूर्वरूप :– **प्रतिश्याय, क्षवथुरभीक्ष्णं, श्लेष्मप्रसेक** + **मुखस्य पादयोश्च शोफः** + अक्ष्णोः श्वेतावभासता चातिमात्रं
+ **बाह्वोश्च प्रमाणजिज्ञासा** + पाण्योश्चावेक्षणमत्यर्थम् + बीभत्सदर्शनता चास्य काये, स्त्रीकामता।

✓ **राजयक्ष्मा के पूर्वरूप** :– रूपं भविष्यतस्तस्य **प्रतिश्यायो भृशं क्षयः। – अ. हृ. नि. 5/7**

साध्यासाध्यता :–

1. रोगी बल, मांस, और रक्त क्षीण न हुआ हो, शरीर बलबान हो, अरिष्ट लक्षण उत्पन्न न हुये हो तो – **साध्य।**
2. रोगी दुर्बल हो, बलहीन, मांस, और रक्त की न्यूनता वाला हो, लक्षण अल्प रहने पर भी – अ**साध्य।**

शोष की कृच्छ्ता :– शोष के चारो कारणो से **वात, पित्त, कफ प्रकुपित** होने लगते है और शरीर को सुखाने लगते है।
1. **सर्वरोगाणां कष्टतमत्वाद्** राजयक्ष्माणमाचक्षते भिषजः।

7. उन्माद निदान

उन्माद :– उत् उपसर्गपूर्वक 'मद' धातु में घञ् प्रत्यय करने पर उन्माद शब्द बनता है।
जिसका अर्थ है – दोषों का उन्मार्गगामी होकर मन में विभ्रम उत्पन्न करना। **मनोवहस्रोत्रस** जन्य व्याधि है।

"उन्मादं पुनः मनोबुद्धि संज्ञाज्ञानस्मृतिभक्तिशीलचेष्टाचार विभ्रमं विद्यात्।" –

उन्माद :– उन्माद रोग हीनसत्व वाले मनुष्यों को ही होता है।

➢ **(स्मृति का नाश :– उन्माद, अपस्मार, प्रज्ञापराध और मदात्यय इन सभी रोगों में होता हैं।)**

उन्माद के भेद :– **5** – वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज और आगन्तुक।

सुश्रुत, वाग्भट्ट :– **6** – 1. वातज 2. पित्तज 3. श्लेष्मज 4. सन्निपातज 5. मानस दुखज 6.विषज।

पूर्वरूप – **शिरसः शून्यता,** चक्षुषोराकुलता, स्वनः श्रवणं, **उच्छ्वासस्य आधिक्य,** हृदग्रह, **अर्दिताकृतिकरणं च व्याधे,**
स्वप्नेश्चाभीक्ष्णं दर्शनं, **सततं लोमहर्ष, तिलपीडकचक्राधिरोहणं, वातकुण्डलिकाभिश्चोन्मथनं निमज्जनं च।**

1. **वातज उन्माद लक्षण** – **परिसरणमजस्रम्, कार्श्य,** सततनियतानां च गिरामुत्सर्ग, यानमयानैः, अलंकरणमनलकारिकैः द्रव्यै
2. **पित्तज उन्माद लक्षण** – शस्त्रलोष्ट्रकशाकाष्ठमुष्टिभिरभिहननं स्वेषां परेषां वा, ताम्रहरितहारिद्रसंरब्धाक्षता।
3. **कफज उन्माद लक्षण** – अल्पशश्चङ्क्रमणं, रहस्यकामता, लालाशिघांणकस्रवणम्, **श्वयथु आनने।**

दोषज उन्माद चिकित्सा सूत्र :– स्नेह, स्वेद, वमन, विरेचन, अनुवासन, निरूह बस्ति, नस्य, धूम, धूप, अंजन, प्रधमन
+ **वित्रासन, विस्मासन, विस्मारण,** अपतर्पण, सिराव्यधन का प्रयोग करें।
+ भोजनं विधानं च यथास्वं युक्त्या – दोषानुसार आहार का सेवन कराना।

आगुन्तुज उन्माद के पूर्वरूप :–

1. देव, गो, ब्राह्मण और तपस्वियों को मारने–पीटने में रूचि होती हैं।
2. नृशंसाभिप्रायता – दूसरों को हानि पहुँचाने की प्रवृत्ति होती है,
3. रोगी के ओज, वर्ण, कान्ति, बल और शरीर में ह्रास हो जाता है।

आगुन्तुज उन्माद का लक्षण :– रोगी के रूग्ण होने के पूर्व जो बल, वीर्य, पौरूष, पराकम, ग्रहणशक्ति, धारणाशक्ति, स्मरणशक्ति, ज्ञान, वचन, और विज्ञान था वह यकायक बढ जाते हैं। उन्माद का समय अनियत रहता है।

✓ **आगुन्तुज उन्माद का कारण प्रज्ञापराध ही है।**

भूतोन्माद के कारण :–**3** – 1. हिंसा 2. रति 3. अभ्यर्चन (पूजा करना)।
साध्य उन्माद चिकित्सा सूत्र – मन्त्रौषधि मणिमंगलबल्युपहारहोमनियम प्रायश्चित उपवास स्वस्त्ययनप्राणिपात गमनादीनि।
ये 5 प्रकार के उन्माद निज और आगन्तुज भेद से अथवा साध्य असाध्य भेद से 2 ही प्रकार के होते हैं।

8. अपस्मार निदान

अपस्मार :– अपगता स्मृति यस्मिन् रोगे सोऽपस्मारः अर्थात् स्मृति के नाश को अपस्मार कहते है।

अपस्मार के भेद :– 4 – वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज।

अपस्मार में प्रकुपित तीनों दोष हृदय में जाकर स्थित हो जाते है। अपस्मार एक **मनोवहस्रोत्रस** जन्य व्याधि है।

अपस्मार पुनः स्मृतिबुद्धिसत्वसम्प्लवाद् बीभत्स चेष्टमावस्थिकं तमः प्रवेशमाचक्षते। – (च. नि. 8/7)

अपस्मार के पूर्वरूप – भ्रूव्युदासः– रोगी भौहें नचाता हैं, सततअक्ष्णोर्वैकृतं – लगातार आखों को विकृत किया करता हैं मोह, मूर्च्छा और तमसो दर्शन देखने को मिलता है, अभीक्ष्णं स्वप्ने च मद–नर्तन व्यधन वेपन **पतनादीनीति।**

1. **वातज अपस्मार लक्षणः–** अभीक्ष्णमपस्मरन्तं क्षणेन संज्ञा प्रतिलभमानम्, **विषमविनताड्.गुलिम्,** अनवस्थितपाणिपादम् अरूणपरूषश्याव नखनयनवदनत्वचम्।
2. **पित्तज अपस्मार लक्षण – अवकूजन्तम्,** अभीक्ष्णमपस्मरन्तं क्षणेन संज्ञा प्रतिलभमानम, हरितहारिद्रताम्र **नखनयनवदनत्वचम्**
3. **कफज अपस्मार के लक्षण –** चिरादपस्मरन्तं चिरस्च संज्ञा प्रतिलभमानम्, अनतिविकृचेष्टं, शुक्ल नखनयनवदनत्वचम्

➢ **दोषज अपस्मार चिकित्सा सूत्र :– तीक्ष्ण संशोधन एवं उपशमन चिकित्सा।**

–: निदान स्थान में वर्णित रोगों की उत्पत्ति :–

1. **ज्वर – ज्वरस्तु खलु महेश्वरललाटप्रभवः।**
2. **रक्तपित्त – तत्संन्तापाद् रक्तपित्तम्।**
3. **गुल्म –** दक्ष प्रजापति के यज्ञ के विध्वंस के समय प्राणियों के नाना दिशा में भागने, जल में तैरने, दौडने, कूदने और लॉघने आदि शरीर में हलचल तथा क्षोभ उत्पन्न करने वाले कारणों से गुल्म रोग उत्पन्न हुआ।
4. **प्रमेह, 5. कुष्ठ :– हविष्प्रशात् प्रमेहकुष्ठानां।** हवि (यज्ञ की आहुति) के खाने से प्रमेह और कुष्ठ रोग उत्पन्न हुए।
6. **राजयक्ष्मा :–** अतिव्यवायात् पुर्ननक्षत्रराजस्य राजयक्ष्मेति।
7. **उन्माद :– भयत्रासशोकैरून्मादानां।** – भय त्रास और शोक से उन्मादों की उत्पत्ति हुयी।
8. **अपस्मार :– विविधभूताशुचिसंस्पर्शादपस्मारणां।** – अनेक प्रकार के जीवों तथा अपवित्र वस्तुओं स्पर्श से अपस्मार उत्पन्न हुआ।

निदानार्थकर रोग :– तद्यथा ज्वरसन्तापाद् रक्तपित्तं उदीर्यते। रक्तपित्ताज्जवरस्ताभ्यां शोषश्चाप्युपजायते।
प्लीहाभिवृद्धया जठरं जठराच्छोथ एव च। अर्शोभ्यो जाठरं दुःखं गुल्मश्चाप्युपजायते।।
प्रतिश्यायाद् भवेत्कासः कासात्सन्जायते क्षयः। क्षयो रोगस्य हेतुत्वे शोषस्याप्युपजायते।

(1) ज्वर संताप → रक्तपित्त एंव रक्तपित्त और ज्वर → शोष।
(2) प्लीहावृद्धि → जठर रोग → शोथ।
(3) अर्श → जठर रोग और गुल्म।
(4) प्रतिश्याय → कास → क्षय।

✓ **त्रयो विकाराः प्रायेण ये परस्परहेतवः।** अर्शांसि चातिसारश्च ग्रहणीदोष एव च। – **(च. चि. 14)**

(5) अर्श, अतिसार और ग्रहणी। प्रायः एक दूसरे के कारण बन जाते है।

व्याधिसंकर :– चरक ने व्याधिसंकर का वर्णन किया हैं।

✓ **यदि कास से क्षय उत्पन्न हो और दोनों रोग** एक साथ चलें तो इसको **व्याधिसंकर कहेगें।**

क्रिया संकर :– एक ही काल में दो विरोधी क्रियाऐं/चिकित्सा न करें। (डल्हण– 7 दिन तक प्रतीक्षा।) – **सु. सू. 35**

आर्दश चिकित्सा :– प्रयोगः शमयेद् व्याधिं योऽन्यमन्यमुदीरयेत्। नासौ विशुद्धः **शुद्धस्तु शमयेद्यो न कोपयेत् च. नि. 8/23**

चिकित्सा – चतुर्णां भिषगादीनां शस्तानां धातुवैकृते। प्रवृत्तिः धातुसाम्यार्था चिकित्सेत्यभिधीयते।। (च. सू. 9/5)
चिकित्सा – याभिः क्रियाभिः जायन्ते शरीरे धातवः समाः। सा चिकित्सा विकारणां कर्म तत् भिषजां मतम्। (च.सू.16/35)

1. रसविमान अध्याय

विमान स्थान – 'विशेषेण मीयते ज्ञायते दोषभेषजाद्यनेनेति विमानम्, तस्य स्थानं विमानस्थानम् – (चक्रपाणि)।
चरक संहिता के इस स्थान में दोष, औषध, देश, काल, बल, शरीर, आहार, सार, सात्म्य, सत्व, प्रकृति और आयु आदि (12) के मान संबंधित वर्णन किया है अतः इसे विमान कहते हैं।

चतुर्विध प्रभाव :– (1) रस प्रभाव (2) द्रव्य प्रभाव (3) दोष प्रभाव (4) विकार प्रभाव।

रस :– रसास्तावत् षट्– मधुराम्लवण कटुतिक्तकषायाः। (Note– च. सू. 1/65 में मधुर रस = स्वादु नाम दिया गया है)

दोष प्रभाव	1. वात	2. पित्त	3. कफ
जनयन्ति रस	कटु, तिक्त, कषाय	कटु, अम्ल, लवण	मधुर, अम्ल, लवण
शमयन्ति रस	मधुर, अम्ल, लवण	मधुर, तिक्त, कषाय	कटु, तिक्त, कषाय

- **'संसर्ग विकल्पविस्तरो ह्येषामपरिसंख्येयो भवति, विकल्पभेदापरिसंख्येयत्वात्।' (च. वि. 1/8)**
  रसों और दोषों के संसर्ग विकल्प भेद भी अपरिसंख्येय होते हैं।

- चरक ने केवल **विकृतिविषमसमवेत** शब्द का उल्लेख किया है। (च. वि. 1/10)

✓ चक्रपाणि ने **प्रकृतिसमसमवेत और विकृतिविषमसमवेत** का वर्णन किया है।
1. प्रकृतिसमसमवेत – रसानां दोषाणाश्च प्रकृत्यनुगुणो यो मिलितानां प्राकृतगुणानुपमर्देन मेलको भवति, स प्रकृतिसमसमवेत शब्देनोच्यते। – (चक्रपाणि)
2. विकृतिविषमसमवेत – विकृत्या हेतुभूतया विषमः प्रकृत्यननुगुणः समवेतो विकृतिविषमसमवेतः। – (चक्रपाणि)

✓ वाग्भट्ट ने **समान प्रत्यारब्ध और विचित्र प्रत्यारब्ध** का वर्णन किया है।

सतत अभ्यस्यमानम् द्रव्य :–
1. तैल – वातशामक – स्निग्ध, उष्ण एवं गुरू होने से वात का शमन करता है।
2. घृत – पित्तशामक – मधुर, शीत एवं मंद होने से पित्त का शमन करता है।
3. मधु – कफशामक – रूक्ष, तीक्ष्ण एवं कषाय रस होने से कफ का शमन करता है

अति वर्जनीय द्रव्य :– तद्यथा – पिप्पली क्षारः लवणमिति।
1. पिप्पली 2. क्षार 3. लवण – इन 3 द्रव्यों का अधिक मात्रा में प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(1) पिप्पली :– पिप्पली 410 **GS** (कटुरस, मधुर विपाक, अनुष्ण एवं गुरू स्निग्ध) होती है।
आपातभद्राः (पिप्पली) – **'प्रक्लेदि एवं योगवाहिनी'** होती है।
पिप्पली सममात्रा यां अल्पमात्रा में थोड़े समय तक प्रयोग करने पर लाभप्रद होती है।
अधिक प्रयोग पर – गुरू, क्लिन्नकारक होने से – कफ का प्रकोप, उष्ण होने से – पित्त का प्रकोप।
अल्प मात्रा में उष्ण एवं स्निग्ध – वात का शमन नहीं करती है।
पिप्पली का अधिक मात्रा में और अधिक प्रयोग करने पर – **दोषसन्चयानुबंधाः।**

(2) क्षार : – क्षार (UTL) उष्ण, तीक्ष्ण और लघु गुण वाला होता है।

'क्षार पचन दहन भेदनार्थम् उपयुच्यते।' क्षार पहले क्लेदन उत्पन्न करता और बाद में शोषण करता है।

1 क्षार अधिक प्रयोग करने पर – **"केश अक्षि हृदय पुंस्त्वोघातकरः सम्पद्यते।"**

2 क्षार सेवी जनसमूह – **आन्ध्यता, षाण्ढयता, खालित्य, हृदय मे परिकर्तिका** से ग्रसित हो जाते है।

3 प्राच्य, चीन देशवासी – उक्त रोंगो से आक्रान्त होते है।

(3) लवण :– लवण उष्ण एवं तीक्ष्ण **(UT)** गुणवाला है न अधिक गुरू, न अधिक स्निग्ध होता है। **आपातभद्रं** (लवण)

लवण – **"उपक्लेदि, विस्रंसन समर्थम् एवं अन्नद्रव्यरूचिकरम्"** होता हैं।

लवण का प्रयोग – **रोचन, पाचन, क्लेदन विस्रंसनार्थम् उपयुच्यते।**

अधिक मात्रा मे अधिक समय तक लवण प्रयोग करनें पर – **दोषसन्चयानुबंधं।**

जिस ग्राम, नगर या देश वासी लवण का अधिक प्रयोग करते है वे **खालित्य, पालित्य, इन्द्रलुप्त और अकाल मे वलय** रोगो से ग्रसित हो जाते है जैसे. **सौराष्ट्र, सिन्धु, सौवीरक, वाह्लीक देश के निवासी** ये दूध के साथ नमक भी खाते है

सात्म्य :– "सात्म्य नाम तद् यदात्मन्युपशेते सात्म्यार्थो ह्युपशयार्थः। जो अपने शरीर के लिए हितकर होता है उसे सात्म्य कहते है सात्म्य का अर्थ उपशय है।

1 त्रिविध सात्म्य :– **(1) प्रवर** – 6 रसों का सेवन **(2) मध्यम** – (5–2 रसों का सेवन) **(3) अवर** – 1 रस का सेवन।

2 सप्तविध सात्म्य :– 1 – 1 रस के उपयोग से 6 एवं सर्व रसो को मिलाकर 7 वाँ सात्म्य।

3. चतुर्विध सात्म्य – (1) ऋतुसात्म्य (2) ओकसात्म्य (3) देशसात्म्य (4) रोग सात्म्य। **(च. सू. 6/50)**

अष्टविध आहारविशेषायतन

(1) प्रकृति – **तत्र प्रकृतिरूच्यते स्वभावो,** यः स पुनराहारौषध द्रव्याणां स्वभाविको गुर्वादि गुणयोग :।

(2) करण – **करणं पुनः स्वाभाविकानां द्रव्याणाभिसंस्कार। संस्कारो हि गुणान्तराधानम् उच्यते।।**

(3) राशि – **राशिस्तु सर्वग्रह परिग्रहौ मात्रामात्रफलविनिश्चयार्थः।** आहार द्रव्यो की मात्रा (प्रमाण) को राशि कहते है।

राशि के 2 भेद – **1. सर्वग्रह** – आहार द्रव्यो की सम्पूर्ण मात्रा। **2. परिग्रह** – आहार घटकों की पृथक पृथक मात्रा।

(4) संयोग – 'संयोग पुर्नद्वयोः बहूनां वा द्रव्याणां संहितीभावः।

(5) देश – आहार द्रव्य तथा उपभोक्ता का उत्पत्ति स्थान देश कहलाता है।

(6) काल – **कालो हि नित्यगश्चावस्थिकश्च।** काल दो प्रकार का होता है।

1. नित्यग – नित्यगस्तु ऋतुसात्म्यापेक्षः। – नित्यग 'ऋतुसात्म्य' की अपेक्षा रखता है। **(नित्यग– आयु का पर्याय)**

2. आवस्थिक – तत्र आवस्थिको विकारमपेक्षेते। – यह 'विकार' की अपेक्षा रखता है।

(7) उपयोग संस्था – **'तत्र उपयोग नियमः स जीर्णलक्षणापेक्षः।'**

(8) उपयोक्ता – आहार का जो उपयोग करता है उसे उपयोक्ता कहते हैं **ओकसात्म्य** उपयोक्ता के अधीन रहता है।

✓ **सप्ताहार कल्पना :–** स्वभाव संयोग संस्कार मात्रा देश काल उपयोगव्यवस्थाः सप्ताहारकल्पना – (अ.सं.सू. 10/4)

आहार विधि :– उष्णं स्निग्धं मात्रावत् जीर्णे वीर्याविरूद्धम इष्टदेशे इष्टसर्वोपकरणं नातिद्रुतं, नातिविलम्बितम् अजल्पन् तन्मना भुन्जीत आत्मानम् अभिसमीक्ष्य सम्यक्।

(1)	उष्ण आहार	–	क्षिप्रं जरा गच्छति।
(2)	स्निग्ध आहार	–	क्षिप्रं जरा गच्छति।
(3)	मात्रापूर्वक	–	वापित्तकफानपीडय दायुरेव विवर्धयति केवलं।
(4)	आहार जीर्ण होने पर	–	अव्यथं च परिपाकमेति। **सर्वान् दोषान् प्रकोपयत्याशु।**
(5)	वीर्य अविरूद्धम	–	विकारों से आक्रान्त नहीं होता है।
(6)	इष्ट देश, इष्ट उपकरण	–	मानसिक उद्विग्नता या मनोविकार नहीं होते हैं।
(7)	नाति द्रुतं	–	भोजनस्या प्रतिष्ठानं च।
(8)	नाति विलम्बितम्	–	न तृप्तिम् अधिगच्छति विषमं च पच्यते।
(9)	अजल्पन न हसन् तमन्ना	–	अतिशीघ्र भोजन करने सम लक्षण।
(10)	आत्म शक्ति के अनुसार	–	अग्निबल की समीक्षा कर भोजन करे।

2. त्रिविधि कुक्षीय विमानं

चरकानुसार कुक्षि के 3 भाग –

1/3 भाग – एकं अवकाशांश – मूर्त आहार हेतु।
1/3 भाग – एकं अवकाशांश – द्रव आहार हेतु।
1/3 भाग – एकं अवकाशांश – वातादि दोष हेतु रिक्त रखे।

✓ **वाग्भट्टानुसार कुक्षि के 4 प्रविभाग –**
अन्नेन कुक्षेर्द्वावंशौ पानेनैकं प्रपूरयेत्। आश्रयं पवनादीनां चतुर्थमवशेषयेत्।। (अं. सं. सू. 10/75) व (अं. हृ. सू. 8/46)

2 भाग – अन्न हेतु।
1 भाग – पान हेतु।
1 भाग – वातादि दोष संचरणार्थ रिक्त रखे।

✓ **काश्यपानुसार कुक्षि के 4 प्रविभाग –**
भागद्वयमिहान्नस्य तृतीयमुदकस्य च। वायोः संचरणार्थं च चतुर्थमवशेषयेत्।। (काश्यप संहिता खिल स्थान 5/53)

2 भाग – अन्न हेतु।
1 भाग – जल हेतु।
1 भाग – वायु संचरणार्थ।

मात्रावत आहार लक्षण – कुक्षेरप्रपीडनम आहारेण हृदयस्यानवरोधः पार्श्वयोरविपाटनम्, अनतिगौरवं बलवर्णोपचयकरत्वं।
अमात्रा :– दो प्रकार की होती है।
(1) हीनमात्रा – शरीरमनोबुद्धिन्द्रियोपघातकरं।
(2) अतिमात्रा – अतिमात्रं पुनः सर्वदोषप्रकोपणमिच्छन्ति कुशलाः।
मात्रयाऽप्यभ्यवहृतं पथ्यं चान्नं न जीर्यति। चिन्ताशोकभयक्रोधदुःखशय्याप्रजागरैः। (च. वि. 2/9)
चिंता, भय, क्रोध, शोक, दुःखशय्या एवं प्रजागरण में – इन कारणों से पथ्याहार भी जीर्ण नहीं होता है।

आमदोष – पुनः आमदोषं आमविषं इत्याचक्षते भिषजः **विषसदृशलिंगत्वात् तत्परमसाध्यं आशुकारित्वादविरूद्धोपक्रमत्वाचेति।**
विरूद्धाध्यसन, अजीर्णाशन से आमदोष होता है जो विषसदृश लक्षण, परम असाध्य, शीघ्रमारक, विरूद्धचिकित्सीय होता है।

आमदोष के भेद :– तं द्विविधं आमप्रदोषमा चक्षते भिषजः – विसूचिकाम् अलसकं च।

✓ आमदोष के भेद :– 3 – अलसक, विसूचिका और **विलम्बिका** – (सुश्रुत उत्तर तंत्र 56/3)

(1) अलसक का लक्षण – छर्दि और अतिसार को छोडकर आम प्रदोष के अन्य लक्षण।
दण्डालसक :– अलसक रोग (आम दोष के कारण – अलसीभूत अन्न) → तिर्यक गति → दण्डालसक।
✓ **अलसक - प्रयाति नोर्ध्वं नाधस्तादाहारो न च पच्यते। आमाशयेऽलसीभूतस्तेन सोऽलसकः स्मृतः। (अं. सं. सू. 11/14)**
(2) विसूचिका का लक्षण – उर्ध्व और अधः मार्ग से आमदोष का प्रवृत्त होना + अतिमात्रा सेवनजन्यलक्षण।
✓ **विसूचिका - विविधैर्वेदनोद्भेदैर्वाय्वादिभृशकोपतः। सूचीभिरिव गात्राणि विध्यतीति विसूचिका। - (अं. सं. सू. 11/15)**

आमदोष की चिकित्सा :–
(1) अलसक चिकित्सा – (1) सलवणमुष्ण जल से वमन → (2) स्वेदन → (3) वर्तिप्रतिधान → (4) उपवास।
(2) विसूचिका चिकित्सा – (1) लंघनमेवाग्रे → (2) विरिक्त वत् संसर्जन क्रम (पेया, विलेपी)।

✓ **आमाशय का वर्णन :– 'नाभिस्तनान्तरं जन्तोरामाशय इति स्मृतः।** अशितं खादितं पीतं लीढं चात्र विपच्यते।

3. जनपदोद्ध्वंसनीय विमानं

(1) पंचाल क्षेत्र (पंजाब) की राजधीनी 'काम्पिल्य' में गंगा तट पर जनपदोद्ध्वंसनीय का उपदेश दिया।
(2) जनपदोद्ध्वंस के पूर्व ही सम्पूर्ण रस वीर्य विपाक सम्पन्न औषध का संग्रह कर लें।
(3) सभी प्राणियों की नियत और अनियत आयु 'युक्ति' की अपेक्षा' करती है।
✓ जनपदोद्ध्वंस का **सुश्रुत ने 'मरक' तथा भेल ने 'जनमार'** नाम से वर्णन किया है।

जनपदोद्ध्वंस के सामान्य भाव या कारण :– 4

1. विकृत वायु → 2. विकृत जल → 3. विकृत देश → 4. विकृत काल।

इन चारों में दुष्परिहार्य होने से **काल** सर्वाधिक प्रधान (बलशाली) होता है।

"वाताज्जलं जलाद्देशं देशात् कालं स्वभावतः। विद्याद्दुष्परिहार्यत्वाद् गरीयस्तरमर्थवित्।।" – (च. वि. 3/10)

जनपदोद्ध्वंस की चिकित्सा :–

(1) पंचकर्म चिकित्सा श्रेष्ठ चिकित्सा है। – **कर्म पंचविधं तेषां भेषजं परमुच्यते।।**
(2) विधिपूर्वक रसायनों का प्रयोग। – रसायनानां विधिवच्चोपयोगः प्रशस्यते।
(3) पूर्व संग्रहीत औषध का प्रयोग करें।

जनपदोद्ध्वसं का मूल कारण – 'अधर्म' है।

(1) सतयुग – अतिभोजन – शरीर गौरव – आलस्य – संचय – परिग्रह – लोभ – (धर्म के प्रथम चरण का ह्रास)
(2) त्रेतायुग – लोभ– अनृतवचन– अभिद्रोह – काम,क्रोध,मान, द्वेष – शोक,चिन्ता,उद्वेग (धर्म के द्वितीय चरण का ह्रास)
(3) द्वापर – क्रमशः धर्मह्रास ——— शस्यगुण ह्रास → 'रोगजनक'।
(4) कलियुग – क्रमशः धर्मह्रास ——— औषध वायु जल दूषित → 'रोगवृद्धि'।

'युगे युग धर्मपादः क्रमेणानेन हीयते। गुणपादश्च भूतानामेवं लोकः प्रलीयते।। – (च. वि. 3/25)

प्रत्येक गुण में धर्म तथा आयु का ह्रास :–

1. कृतयुग	–	4 पाद धर्म	–	4800 दिव्य वर्ष	–	400 वर्ष आयु।
2. त्रेतायुग	–	3 पाद धर्म	–	3600 दिव्य वर्ष	–	300 वर्ष आयु।
3. द्वापर	–	2 पाद धर्म	–	2400 दिव्य वर्ष	–	200 वर्ष आयु।
4. कलियुग	–	1 पाद धर्म	–	1200 दिव्य वर्ष	–	100 वर्ष आयु।

'संवत्सरशते पूर्णे याति संवत्सरः क्षयम्। देहिनामायुषः काले यत्र यन्मानमिष्यते।। – (च. वि. 3/26)
उस युग का शतांश (100 वां) भाग समाप्त होने पर उस युग में मनुष्य की आयु एक वर्ष घट जाती है।

दैव एवं परूषकार – दैव – पूर्वजन्म के शरीर द्वारा किये गए कर्म, **परूषकार** – वर्तमान शरीर से किये जाने वाले कर्म।
कर्म के भेद – (3) – दृश्टं हि **त्रिविधं कर्म** हीनं मध्यममुत्तमम्। – (च. वि. 3/31)

1. उत्तम कर्म – दीर्घ, सुखमायु, नियत आयु।
2. मध्यम कर्म – मध्य, सुखदुःख, अनियत आयु।
3. हीन कर्म – अल्प, दुःखमय, अनियत आयु।

अपतर्पण के भेद – (3) – अपतर्पणमपि च त्रिविधं – लघनं, लघंन पाचनं दोषावसेचनं चेति। (च. वि. 3/43)

1. लघनं – तत्र लघंनम् अल्पबलदोषाणां **लघंनेन ह्यग्निमारूत वृद्धया।**
2. लघंन पाचन – लंघपाचने तु मध्यबलदोषाणां।
3. दोषावसेचनं – बहुदोषाणां पुर्नदोष अवसेचनम्।

देश के भेद – (3) – 1. जांङ्गल 2. अनूप 3. साधारण।

➢ जनपदोद्ध्वंसनीय में आचार्य चरक ने **अकाल और काल मृत्यु** का वर्णन किया है। उदा. – रथ।

4. त्रिविधरोग विशेष विज्ञानीय

त्रिविधं खलु रोगविशेषविज्ञानं भवतिः तद्यथा – आप्तोपदेशः प्रत्यक्षम् अनुमानं चेति। (च. वि. 4/3)
रोगविशेष को बतलाने वाले 3 साधन है। – (1) आप्तोदेश (2) प्रत्यक्ष (3) अनुमान।
(1) आप्तोपदेश :– 'तत्र आप्तोपदेश नाम आप्तवचनम्।' आप्तजनों के वचनों को आप्तोपदेश कहते हैं।
आप्तापुरूष :– 'आप्ता ह्यवितर्कस्मृतिविभाग विदो।'– आप्तजन अवितर्क, अस्मृति और अविभागविद होते हैं।
(2) प्रत्यक्ष :– 'प्रत्यक्षं तु खलु तद्यत् स्वयं इन्द्रियैः मनसा च उपलभ्यते।' (च. वि. 4/4)
अपनी इन्द्रियों और मन द्वारा जो ज्ञान प्राप्त किया जाता है उसे प्रत्यक्ष कहते हैं।
(3) अनुमान :– अनुमानं खलु तर्को युक्त्यपेक्षः। युक्ति के आधार पर लगाये गये तर्क युक्त ज्ञान को अनुमान कहते हैं
त्रिविध परीक्षा में :– त्रिविध त्वस्मिन् ज्ञानसमुदाये पूर्वम् आप्तोपदेशात् ज्ञानं, ततः प्रत्यक्षानुमानाभ्यां परीक्षोपपद्यते।
त्रिविध ज्ञान साधनों में सबसे पहले आप्तोपदेश, उसके बाद उस विषय प्रत्यक्ष और अनुमान के द्वारा करना चाहिए।

'न हि ज्ञानावयवेन कृत्स्ने ज्ञेये ज्ञानमुत्पद्यते।' (च. वि. 4/5) – अर्थात् किसी विषय के एक ही अंश का ज्ञान कर लेने से सम्पूर्ण विषय और ज्ञेय वस्तु की पूर्ण जानकारी नहीं हो पाती है।
आप्तोपदेश द्वारा ज्ञेय विषय :– रोग का कारण, लक्षण, प्रत्यात्मक लक्षण, स्थान, वेदना, रूप, उपद्रव, वर्धनकारक, स्थिति, क्षय, परिणाम का ज्ञान, रोग का नाम एवं औषधि चिकित्सा का ज्ञान आप्तोपदेश द्वारा जाना जाता है।

प्रत्यक्ष परीक्षा द्वारा ज्ञेय विषय :– अपनी सभी इन्द्रियों से रोगी के शरीर में स्थित इन्द्रियार्थो की परीक्षा करें।
(1) श्रोत्रेन्द्रिय – आन्त्रकूजन, संधिस्फुटन, अंगुलिपर्व स्फुटन, स्वर विशेष, हृदय एवं फुफ्फुस ध्वनि आदि।
(2) नेत्रेन्द्रिय – शरीरिक वर्ण, आकृति, प्रमाण, कान्ति, शरीर के प्राकृतिक/वैकारिक भावों का ज्ञान नेत्रेन्द्रिय द्वारा करे
(3) रसेन्द्रिय – अनुमान द्वारा परीक्षा करें।
1. शरीर से यूका अपसर्पण – रस वैरस्य। 2. शरीर से माक्षिक उपसर्पण – रस माधुर्य।
3. रक्तपित्त में वमित रक्त यदि कुत्ते या कौए को खिलाने पर वे खावें तो शुद्ध रक्त है अन्यथा रक्तपित्त है।
(4) घ्राणेन्द्रिय – शरीर में व्याप्त प्राकृतिक या वैकारिक गंध का ज्ञान।
(5) स्पर्शेन्द्रिय – शरीर के स्वाभाविक या अस्वाभाविक स्पर्श का ज्ञान।

अनुमान भाव	परीक्षा	अनुमान भाव	परीक्षा
1. अग्नि	जरण शक्ति	20. ह्रियम् (लज्जा)	अपत्रपणेन
2. बल	व्यायाम शक्ति	21. शील	अनुशील
3. श्रोत्रादीनि	शब्दाद्यर्थ ग्रहण	22. द्वेष	प्रतिषेध
4. मनोऽर्थ	व्यभिचरण	23. उपधि	अनुबन्ध
5. विज्ञान	**व्यवसाय**	24. धृति	अलौल्यम्
6. रज	संग	25. वश्यता	विधेयतया
7. तम (मोह)	अविज्ञान	26. वय	काल
8. क्रोध	अभिद्रोह	27. भक्ति	देश
9. शोक	दैन्य	28. सात्म्य	उपशय
10. हर्ष	आमोद	29. व्याधिसमुत्थान	वेदना विशेष
11. प्रीति	सन्तोष (तोष)	30. गूढलिंग व्याधि	उपशय अनुपशय
12. भय	विषाद	**31. दोष प्रमाण**	**अपचार**
13. धैय	अविषाद	32. आयुषः क्षय	अरिष्ट
14. वीर्य	उत्थान	33. उपस्थित श्रेयत्वं	कल्याणाभिनिवेश
15. अवस्थान	अविभ्रम	34. अमल	सात्विक मन
16. श्रृद्धा	अभिप्राय	35. ग्रहणी	मृदु दारूणत्वं
17. मेधा	**ग्रहण**	36. स्वप्न दर्शन	इच्छा द्वेष
18. संज्ञा	नामग्रहण	37. सुख दुःख	आतुर प्रश्न
19. स्मृति	स्मरण		

5. स्रोत्रोविमान

'यावन्तः पुरूषे मूर्तिमन्तो भावविशेषाः तावन्त एवास्मिन् स्रोतसां प्रकार विशेषाः।' (च. वि. 5/3) – पुरूष के शरीर में जितने मूर्तिमान पदार्थ है उतने ही प्रकार के स्रोत्रस भी होते हैं।

परिभाषा – स्रोत्रांसि खलु परिणाममापद्यमानानां धातूनामभिवाहीनि भवन्त्ययनार्थेन्। (च. वि. 5/3)

स्रोत्रस् अन्नरस के परिणामस्वरूप रूपान्तर को प्राप्त धातुओं को शरीर में इधर–उधर पहुंचाने के मार्ग है।

✓ **स्रोतसामेव समुदयं पुरुषमिच्छन्ति – (च. वि. 5/4)** – स्रोतस के समुदाय को पुरूष मानते है।

पर्याय – स्रोत्रस, सिरा, धमनी, नाडी, रसवाहिनी, शरीरच्छिद्र, आशय, पन्था, मार्ग, संवृत्त/असंवृत्त स्थान, रसायनी, **निकेत।**

✓ चरकानुसार – स्रोत्रस, सिरा, धमनी, नाडी, आशय एक ही है। किन्तु सुश्रुतानुसार अलग–अलग होते है।

स्रोत्रस की संख्या :– चरक – 13 एवं गर्भ प्रकरण में 14 स्रोत्रस, सुश्रुत – 11 योगवाह स्रोत्रस (कुल – 22)

(1) स्तन्यवह स्रोतस – का वर्णन 'शारंर्ग्धर' ने किया है।

(2) चरकोक्त अस्थि, स्वेदवह और मज्जा स्रोत्रस – सुश्रुत नहीं बतलाए है।

स्रोतस	मूल	प्रदुष्ट लक्षण
1. प्राणवह	हृदय, महास्रोत्रस्	अतिसृष्ट, अतिबद्ध, कुपित, थोड़ा थोड़ा, निरन्तर सशब्द सशूल उच्छवास आना
2 उदकवह	तालु, क्लोम	जिह्वा, तालु, ओष्ठ, कण्ठ, क्लोम का सूखना तथा अतिप्रवृद्ध तृष्णां।
3. अन्नवह	आमाशय, वामपार्श्व	अन्नाभिलाषा, अरोचक, अविपाक एवं **छर्दि।**
4. रसवह	हृदय, दश धमनियां	अश्रद्धा, अरूचि, मुखवैरस्य, ज्वर, पाण्डु, **'क्लैव्य'**, अकाल में पालित्य।
5. रक्तवह	यकृत, प्लीहा	यकृत, प्लीहा, कुष्ठ, विसर्प, पिडका, प्रदर, श्वित्र, प्लीहा, चर्मदल, **गुल्म**, विद्रधि
6. मांसवह	स्नायुमूल, त्वचा	अधिमांस, अर्बुद, गलगण्ड, गलशुण्डिका, अलजी।
7. मेदवह	वृक्क, वपावहन्	अतिस्थौल्य एवं प्रमेह के पूर्वरूप।
8. अस्थिवह	मेद, जघनप्रदेश	अध्यस्थि, अधिदन्त, केश, नख, श्मश्रु विकार।
9. मज्जावह	अस्थियां, संधिया	पर्वभेद, **भ्रम, मूर्च्छा**, तम प्रवेश।
10. शुक्रवह	मूत्रेन्द्रिय, वृषण	'क्लैव्य' ध्वजभंग, अप्रहर्ष, नपुंसकता **'गर्भपात, गर्भस्राव'**, विकृत संतान।
11. मूत्रवह	वस्ति, वंक्षण	मूत्र की अति प्रवृत्ति, दूषित मूत्र का आना, **मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात।**
12. पुरीषवह	पक्वाशय, गुद	विबन्ध, अतिसार, बद्धमल, शूल सहित मलत्याग, गांठदार मलत्याग।
13. स्वेदवह	मेद, लोमकूप	स्वेदाभाव सा स्वेदाधिक्य, लोमहर्ष।

स्रोतस	दुष्टि के कारण
(1) प्राणवह	क्षय, वेगसंधारण, रूक्षता, भूख लगने पर व्यायाम आदि कठोर कार्य करने से
(2) उदकवह	उष्णता, **आमदोष, भय, मद्यपान,** अतिशुष्कान्न का सेवन एवं तृष्णा का वेग विधारण करने से
(3) अन्नवह	अतिमात्रा में, अकाल में, अहित भोजन करने से और अग्नि वैगुणता से।
(4) रसवह	गुरू शीत, अतिस्निग्ध, अतिमात्रा भोजन, **समशन, रसवाहीनि दुष्यन्ति चिन्त्यानां चातिचिन्तनात्।**
(5) रक्तवह	**विदाहि अन्नपान,** स्निग्ध, उष्ण तथा द्रव पदार्थो के सेवन से एवं आतप, अनल सेवन से।
(6) मांसवह	अभिष्यन्दी, स्थूल और गुरू भोजन का सेवन, **मांसवाहानि दुष्यन्ति भुक्त्वा च स्वपतां दिवा।**
(7) मेदोवह	अव्यायाम, दिवास्वप्न व मेदस्वी जीवों का अतिमांसभक्षण, **मेदोवहानि दुष्यन्ति वारूण्याश्चातिसेवनात्।**
(8) अस्थिवह	व्यायाम, **अतिसंक्षोभ, अतिविघट्टनात,** अस्थिवहानि दुष्यन्ति वातलानां च सेवनात्।
(9) मज्जावह	उत्पेषण, अत्यभिष्यन्दी स्वाभाव, **अभिघात, प्रपीडनात्, मज्जवाहीनि दुष्यन्ति विरूद्धानां च सेवनात्।**
(10) शुक्रवह	अकाल मैथुन, अयोनिगमन, शुक्रवेग निग्रह, अतिमैथुन, **शुक्रवाहानि दुष्यन्ति शस्त्रक्षाराग्निभिः तथा।**
(11) मूत्रवह	मूत्र वेगसंधारण कर उदक, भक्ष्य एवं स्त्री सेवन करने से, शरीर क्षीणता और अभिघात से।
(12) मलवह	संधारण, अत्यशन, अजीर्णाध्यशन, दुर्बलाग्नि और शरीर की कृशता से।
(13) स्वेदवह	व्यायाम, अतिसन्ताप, शीत–उष्ण का क्रम रहित सेवन, **स्वेदवाहीनि दुष्यन्ति क्रोधशोकभयैः तथा।**

स्रोतोदुष्टि के कारण :– आहारश्च विहारश्च यः स्यात् दोषगुणैः समः। धातुभिः विगुणश्चापि स्रोत्रसां स प्रदूषकः। (च. वि. 5/22)
जो आहार–विहार दोषों के गुणों के समान एंव धातुओं के गुणों के विपरीत हो वह स्त्रोतों प्रदूषक होता है।
सभी स्रोत्रों और धातुओं को दूषित करने वाले स्वयं प्रदुष्ट वात–पित्त–कफ है।
स्रोतोदुष्टि के लक्षण :– अतिप्रवृत्तिः संङ्गो वा सिराणां ग्रन्थोऽपि वा। विमार्गगमनं चापि स्रोत्रसां दुष्टिलक्षणम्।। (च. वि. 5/23)

(1) अतिप्रवृत्ति (2) विमार्गगमन (3) संग (4) सिरा ग्रन्थि।

स्रोतों की आकृति :– स्वधातु समवर्णानि वृत्तस्थूलान्यणूनि च। स्रोत्रांसि दीर्घाण्याकृता प्रतानसदृशानि च। (च. वि. 5/24)
स्रोत्रस जिस धातु के होते हैं उसी धातु सम वर्ण, वृत्त, स्थूल, सूक्ष्म व आकृति से दीर्घ, लताओं के प्रतान सदृश होते है
स्रोत्रस की चिकित्सा :–

1. प्राणवह	–	श्वास रोग की चिकित्सा,	5. मलवह	–	अतिसार की चिकित्सा।
2. उदकवह	–	तृष्णा रोग की चिकित्सा,	4. मूत्रवह	–	**मूत्रकृच्छ्र** की चिकित्सा।
3. अन्नवह	–	**आमप्रदोष** की चिकित्सा,	6. स्वेदवह	–	ज्वर की चिकित्सा।

6. रोगानीक विमान

रोग भेद :– 1. प्रभाव भेद	–	साध्य, असाध्य।	4. आश्रय भेद	–	मनोऽधिष्ठान, शरीराधिष्ठान।
2. बल भेद	–	मृदु, दारुण।	5. निमित्त भेद	–	स्वधातुवैषम्य निमित्त, आगन्तु।
3. **एकत्व**	–	**दुःख सामान्य।**	6. आशय भेद	–	आमाशयोत्पन्न, पक्वाशयोत्पन्न।

रोग, आतंक, यक्ष्म, दोषप्रकृति तथा विकार – दोष और व्याधि दोनों की संज्ञाएं हैं।
✓ **'भेत्ता हि भेद्यमन्यथा भिनत्ति'– (च. वि. 6/4)**
रोगों के भेद करने वाला व्यक्ति भिन्न–भिन्न दृष्टिकोणों से भेद करने योग्य रोगों का भेद करता है।

मानसिक दोष–2– रजस्तमश्च मानसौ दोषौ। मानसिक विकार – काम, क्रोध, मोह, ईर्ष्या, मान, मद, शोक, चिन्ता, भय, हर्ष
शारीरिक दोष–3– वातपित्तश्लेष्माणस्तु खलु शारीरो दोषाः। शारीरिक विकार – ज्वर, अतिसार, शोफ, शोष, श्वास, प्रमेह।

अनुबन्ध्य व अनुबन्ध :– स्वतन्त्रो व्यक्तलिंगो यथोक्तसमुत्थानप्रशमो भवत्यनुबन्ध्यः, तद्विपरीत लक्षणस्त्वनुबन्धः। (च. वि. 6/11)
सन्निपात या संसर्ग वाले रोगों में जो स्वतंत्र होता है जिसके लक्षण प्रकट होते है, जो अपने प्रकोपक कारणों से प्रकुपित तथा अपनी ही चिकित्सा से शान्त होता है उसे अनुबन्ध्य कहते हैं। इसके विपरीत लक्षणों वाला अनुबन्ध कहलाता है।

अग्नि :– 'अग्निषु तु शारीरेषु चतुर्विधो विशेषो बलभेदेन भवति। तद्यथा – तीक्ष्णो मन्दः समो विषमश्चेति।' (च. वि. 6/12)

1. विषमाग्नि	–	वात	–	कभी पचन कभी अपचन।
2. तीक्ष्णाग्नि	–	पित्त	–	**सर्वापचार सहः।**
3. मंदाग्नि	–	कफ	–	विपरीत लक्षण।
4. समाग्नि	–	समदोष	–	कुपथ्य से विकृत, पथ्य से सम।

(1) वातशामक उपाय – स्नेह, स्वेदन, मृदु संशोधन, अभ्यंग, मर्दन, **उन्मर्दन, उद्वेष्टन,** उपनाह, परिषेक अवगाहन, संवाहन, **वित्रासन, विस्मापन, विस्मारण, सुरासव विधान,** शतपाक, सहस्र पाक स्नेह, वस्ति, वस्तिनियम, सुखशीलता।
(2) पित्तशामक उपाय – सर्पिपान, विरेचन, सुगन्ध, माला, वस्त्र, आभूषण धारण करना, **मनोनुकूल गीतवादि यंत्र श्रवण,** अभ्युदय श्रवण एवं मित्रों का सहचर्य, स्त्रियों का संयोग, पर्वतीय प्रदेश में रहना, **चन्द्रमा की किरणों का स्पर्श।**
(3) कफशामक उपाय – तीक्ष्णोष्ण संशोधन, नियुद्ध, व्यायाम, व्यवाय, **उन्मर्दन, उत्सादन,** स्नान, धावन, लंघन, प्लवन, परिसरण, जागरण, **दीर्घकालिक तीक्ष्ण मद्य का उपयोग,** धूम्रपान, सर्वश उपवास, उष्ण वास, सुखप्रतिषेध।

7. व्याधितरूपीय अध्याय

'इह खुल द्वौ पुरुषों व्याधितरूपौ भवतः – गुरूव्याधितः लघुव्याधितश्च। दो प्रकार के रोगी पुरुष होते है।

(1) गुरू व्याधित	–	सत्व बल शरीर सम्पत्	–	लघुव्याधित इव दृश्यते।
(2) लघु व्याधित	–	अपर सत्व बल शरीर	–	गुरूव्याधित इव दृश्यते।

पुर्नरूक्त दोष – **न हि ज्ञानावयवेन कृत्स्ने ज्ञेये ज्ञानमुत्पद्यते।** (च.वि. 7/4) एवं (च.वि. 4/5) – दोनों जगह वर्णन है।
❖ चरक संहिता में कृमियों का वर्णन **"सप्तको गुण"** के रूप में मिलता है – **व्याधितरूपीय अध्याय में।**

कृमि संख्या – 20 – चरक, वाग्भट्ट – 2567 (MPRK), सुश्रुत – 0776 (सुश्रुत ने बाह्य कृमि नहीं माने हैं)
कृमि के प्रकार – 2 – (1) सहज (2) वैकारिक।
4 – (1) मलज (2) पुरीषज (3) रक्तज (4) श्लेष्मज।

कृमि	1. हेतु	2. स्थान	3. आकृति	4. रूप
1. मलज	स्वच्छता न रखना।	केश,श्मश्रु,लोम में वास	अणु, तिल, बहुपादाश्च	कृष्ण, शुक्ल वर्ण।
2. रक्तज	'कुष्ठ के समान'।	रक्तवाहि धमनियां	अणु, वृत्त अपादाश्चं	**ताम्र वर्ण।**
3. श्लेष्मज	कफवर्धक, मलिन, भोजन।	आमाशय	पृथुब्रघ्नसंस्थाना / **गण्डूपद**	श्वेत वर्ण
4. पुरीषज	श्लेष्मज कृमियों के समान।	पक्वाशय	**दीर्घऊणाशु संकाशा**	श्वेत, श्याम, नील, पीत

कृमि	5. नाम	6. प्रभाव
1. मलज	यूका, पिप्पलिका।	कोठ, कण्डू, पिडिकां।
2. रक्तज	केशाद्, लोमाद, लोमद्वीप, सौरस, औदुम्बर, जन्तुमाता।	केश, श्मश्रु, नख, लोम पक्ष्म का नाश
3. श्लेष्मज	अन्त्राद्, उदराद, हृदयाद, चरू, दर्भपुष्प, सुगन्ध, महागुद	अंगमर्द, कार्श्य, ज्वर, मूर्च्छा, छर्दि, क्षवथु।
4. पुरीषज	ककेरूक, मकेरूक, सौसुराद, सशूलक, लेलिह।	पुरीषभेद, लोहमर्ष + कार्श्य, गुद कण्डू

– : कृमिरोग के चिकित्सा सूत्र :–

7. चिकित्सा :– अपकर्षणमेवादौ क्रिमीणां भेषजं स्मृतम्। ततो विघातः प्रकृतेः निदानस्य च वर्जनम्।। (च. वि. 7/28)

1. अपकर्षण :– यन्त्र से या हाथ से पकड़कर कृमियों को बाहर खींच लेना।

चतुर्विध अपकर्षण – (1) शिरो विरेचन (2) वमन (3) विरेचन (4) अस्थापन।

❖ कृमि चिकित्सा में अपकर्षण – आस्थापन, वमन, विरेचन आदि संशोधन **एक दिन में** ही कराने का निर्देश है।

2. प्रकृति विघात :– कटु, तिक्त, कषाय, क्षार, उष्ण एवं श्लेष्म, पुरीष प्रत्यनीक द्रव्यों का प्रयोग करें।

3. निदान परिवर्जनम :– यदुक्तं निदानविधौ तस्य विवर्जनं – क्रिमिनिदान में कथित भावों का परिवर्जन करें।

योग :– (1) कृमिनाशक पूपलिका। (2) कृमिप्रकृतिविघात चूर्ण (3) भल्लातक तैल – विरेचनार्थ

✓ **विड़ंग घृत** :– कृमिनाशक विडंग घृत काश्यप ने बतलाया है।

8. रोगभिषग्जितीय

शास्त्र गुण / तन्त्र गुण :– 18 – च. वि. 8/3 में अध्ययन योग्य शास्त्र के 18 गुण बताये गये हैं।

1. सुमहद्यशस्विधीरपुरुषासेवितम्
2. अर्थबहुल
3. आप्तजनपूजितं
4. त्रिविधशिष्यबुद्धिहितं
5. अपगतपुनरुक्तदोष
6. आर्श सुप्रणीत
7. सुप्रणीत सूत्रभाष्यसंग्रहकम्
8. स्वाधार्
9. अपतितशब्दं
10. अकष्टशब्दं
11. पुष्कलाभिधानं
12. क्रमागतार्थमर्थ
13. तत्त्वविनिश्चयप्रधान
14. संगतार्थ
15. संकुलप्रकरण
16. आशु प्रबोधकं
17. लक्षणवत्
18. उदाहरणवत्

शास्त्रज्ञान के उपाय :– (3) – (1) अध्ययन (2) अध्यापन (3) तद्विद्य सम्भाषा।
(सुश्रुत – (4) – (1) सतत अध्ययन (2) परतन्त्रावलोकन (3) वादविवाद (4) तदविधाचार्य सेवा।

✓ **कृत्स्नो हि लोको बुद्धिमताचार्यः शत्रुश्चाबुद्धिमताम्** – (च. वि. 8/14)
अर्थात् बुद्धिमान् व्यक्तियों के लिए सम्पूर्ण संसार ही गुरू है और मूर्खो का सब संसार शत्रु है।

सम्भाषा विधि – 'सम्भाषा विधिमत उर्ध्व व्याख्यास्यामः – **भिषक् भिषजा सह सम्भाषेत।** (च. वि. 8/15)

तद्विद्य सम्भाषा के भेद :– 1. सन्धाय सम्भाषा – (अनुलोम विधि), 2. विगृह सम्भाषा – (प्रतिपक्षी के साथ)।

जल्पक :– वाद–विवाद करने वाला।

जल्पक के गुण :– 5 – तद्यथा – श्रृतं विज्ञानं धारणं प्रतिमानं वचनशक्तिः इति। (च. वि. 8/18)
(1) श्रुतं (2) विज्ञान (3) धारण (4) प्रतिभा (5) एवं वचनशक्ति।

जल्पक के दोष :– 5 – तद्यथा – कोपनत्वम् अवैशारद्यं भीरूत्वम् धारणत्मनवहितत्वमिति। (च. वि. 8/18)
(1) क्रोधित होना (2) शास्त्रज्ञान न होना (3) भयभीत होना (4) धारणशक्ति न होना (5) असावधान रहना।

प्रतिपक्षी के तीन प्रकार :– तत्र त्रिविधः परः सम्पद्यते – प्रवरः, प्रत्यवरः समो वा गुणविनिक्षेपतः। (च. वि. 8/19)

(1) प्रवर – (अपने से श्रेष्ठ) (2) प्रत्यवर – (अपने से दुर्बल) (3) सम – (अपने समकक्ष)

परिषद् के 2 भेद :– 'परिषत्तु खलु द्विविधा – ज्ञानवती मूढपरिषच्च। (च. वि. 8/20)

(1) ज्ञानवती – ज्ञान, विज्ञान, वचन और प्रतिवचन शक्ति सम्पन्न।

(2) मूढ़ – अशास्त्रज्ञ या अशिक्षित जनों की मूढ़ परिषद् होती है।

परिषद् कुल – 6 – ज्ञानवती और मूढ परिषद् पुनः 3 प्रकार की होती है। – सुहत्, उदासीन और प्रतिनिविष्ट।

(1) ज्ञानवती सुहत् परिषद् (2) ज्ञानवती उदासीन परिषद् (3) ज्ञानवती प्रतिनिविष्ट परिषद्

(4) मूढ़ा सुहत् परिषद् (5) मूढ़ा उदासीन परिषद् (6) मूढ़ा प्रतिनिविष्ट परिषद्

✓ तत्र प्रतिनिविष्टायां परिषदि ज्ञानविज्ञान वचनप्रतिवचन शक्तिसम्पन्नायां मूढ़ायां वा न कथञ्चित केनचित् सह जल्पो विधीयतेः।

प्रतिनिविष्ट परिषद् (मूढ़ा/ज्ञानवती) में कभी भी किसी के साथ जल्प/वादविवाद/शास्त्रचर्चा नहीं करना चाहिए

✓ अपने से श्रेष्ठ (प्रवर प्रतिपक्षी) से विगृह्य नहीं करना चाहिए।

✓ एक बार जो प्रतिस्पर्धी पराजित हो जाता है उससे कभी भी पुनः शास्त्रार्थ नहीं करना चाहिए।

–: वादमार्ग – 44 :–

(1) वाद – **'वादो नाम यत् परेण सह शास्त्रपूर्वक विगृह्य कथयति।**

जल्प – तत्र पक्षाश्रितयों वचनं जल्पः जल्पविपर्ययो वितण्डा। **वितण्डा** – वितण्डा नाम परपक्षे दोषवचन मात्रमेव।

(2) प्रतिज्ञा – **प्रतिज्ञा नाम साध्यवचनं** यथा नित्यः पुरुषः इति।

(3) स्थापना – स्थापना नाम तस्या एवं प्रतिज्ञायाः हेतु – दृष्टान्त – उपनय – निगमनैः स्थापना।

(4) प्रतिष्ठापना – प्रतिष्ठापना नाम या तस्या एव पर प्रतिज्ञाया विपरीतार्थ स्थापना यथा अनित्यः पुरुषः इति प्रतिज्ञा।

(5) हेतु – **हेतु नाम उपलब्धिकारणम्,** तत् प्रत्यक्षम् अनुमानम् ऐतिह्यम् औपम्यमिति।

हेतु – 4 – 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. ऐतिह्य 4. औपम्य।

(6) दृष्टान्त – **दृष्टन्तो नाम यत्र मूर्खविदुषां बुद्धिसाम्यं स वर्ण्यं वर्णयति।**

(7) सिद्धांत – **सिद्धान्तों नाम स यः परीक्षकैः बहुविधं परीक्ष्य हेतुभिश्च साधयित्वा स्थाप्यते निर्णयः।**

परीक्षक विद्वान लोग अनेक बार परीक्षा करके और हेतुओं द्वारा सिद्ध करके जो निर्णय करते है वह सिद्धान्त है।

सिद्धान्त – **4** – 1. सर्वतंत्र 2. प्रतितंत्र 3. अधिकरण 4. अभ्युपगम्

✓ रोग के निदान, व्याधि और चिकित्सा – सर्वतंत्र सिद्धान्त की श्रेणी में आते है।

✓ षडरस, पंचेन्द्रिय, त्रिदोश और पंचमहाभूत – प्रतितंत्र सिद्धान्त की श्रेणी में आते है।

✓ द्रव्य–प्रधान, गुण–प्रधान वीर्य–प्रधान – अभ्युपगम सिद्धान्त की श्रेणी में आते है।

(8) शब्द – **शब्दो नाम वर्णसमाम्नायः। शब्द – 4 –** 1. दृष्टार्थ 2. अदृष्टार्थ 3. सत्य 4. अनृत।

(9) प्रत्यक्ष – प्रत्यक्षं नाम तद्यत् आत्मना चैन्द्रिय मनसा च उपलभ्यते।

(10) अनुमान – **अनुमानं नाम तर्को युक्त्यपेक्षः।**

(11) ऐतिह्य – **ऐतिह्य नामा आप्तोपदेश वेदादिः।**

(12) उपमान – **औपम्यं** नाम यत् अन्येनान्यस्य सादृश्यं अधिकृत्य प्रकाशन यथा दण्डेन दण्डकस्य।

(13) संशय – संशयो नाम सन्देह लक्षणनुसन्दिग्धेष्वु अर्थैश्वनिश्चयः।

(14) प्रयोजन – **प्रयोजनं नाम यदर्थमारभ्यन्त आरम्भाः।**

(15) सव्यभिचार – **सव्यभिचारं नाम यद् व्यभिचरणं।**

(16) जिज्ञासा – **जिज्ञासा नाम परीक्षा।**

(17) व्यवसाय – **व्यवसायो नाम निश्चयः।**

(18) अर्थप्राप्ति – अर्थप्राप्तिः नाम यत एकेन् उक्तेन अपरस्यार्थस्य अनुक्तस्यापि सिद्धिः। **(अनुक्तार्थस्य सिद्धि)**

(19) अनुयोज्य – अनुयोज्यं नाम यद् वाक्यं **वाक्यदोष युक्तं** तत्।

वाक्यदोष – 5 – (1) न्यूनदोष (2) अधिक दोष (3) अनर्थक (4) अपार्थक (5) विरूद्ध

(20) छल – छलं नाम परिशठम् अर्थाभासम् अनर्थकं वाग्वस्तु मात्रमेव।

छल – 2 – (1) वाक्छल (2) सामान्य छल।

(21) उपालम्भ – उपालम्भो नाम **हेतोः दोषवचनं।**

(22) अभ्यनुज्ञा – अभ्यनुज्ञा नाम **सा य इष्टानिष्टाभ्युपगमः।**

(23) अर्थान्तर – अर्थान्तरं नाम एक अस्मिन् वक्तव्येऽपरं यदाह।

(24) हेत्वन्तरं – **हेत्वन्तर नाम प्रकृतहेतौ वाच्ये यद्विकृतहेतुमाह।**

(25) अहेतु – **3** – (1) प्रकरण सम (2) संशयसम (3) वर्ण्यसम।

(26) निग्रह स्थान – निग्रह स्थानं नाम पराजयप्राप्ति। – 3 और 12 प्रकार।

समय –(3) – 1. आयुर्वेदिक – **चतुष्पाद भेषजमिति।**
2. याज्ञिक – यजमानों को पशुओं का वध करना चाहिए।
3. मोक्षशास्त्रीय – प्राणि मात्र के प्रति अंहिसा का व्यवहार करना चाहिए।

"दशविध परीक्ष्य भाव"

(1) कारण – तत्र कारणं नाम तद्यत् करोति, स एव हेतुः स कर्ता।
(2) करणं – करणं पुनस्तद् **यदुपकरणा**योपकल्पते कर्तुः कार्यभिनिर्वृतौ प्रयतामानस्य
(3) कार्ययोनि – कार्ययोनिस्तु सा या **विक्रियमाणा** कार्यत्वमापद्यते।
(4) कार्य – कार्य तु तद्यस्याभिः **निर्वृतिम् अभिसन्धाय** कर्ता प्रवर्तते।
(5) कार्यफल – कार्यफलं पुनस्तद् **यत्प्रयोजना** कार्याभि निर्वृत्तिरिष्यते।
(6) अनुबन्ध – अनुबन्धः खलु स यः कर्तारमवश्यमनुबध्नाति कार्यादुत्तरकालं कार्यानिमितः शुभोवाऽप्यशुभो वा भावः।
(7) देश – देशस्तधिष्ठानम्।
(8) काल – कालः पुनः परिणाम।
(9) प्रवृत्ति – प्रवृत्तिस्तु खलु चेष्टा कार्यार्थाः सैव क्रिया, कर्म यत्नः कार्य समारम्भ।
(10) उपाय – कार्य, कार्यफल एवं अनुबंध को छोड़कर कारण, करण और कार्योत्पादक हो उसे 'उपाय' कहते हैं।

दशविध परीक्ष्य भाव	चिकित्सा शास्त्र में उदाहरण
1. कारण – कारणं भिषक	**भिषक (वैद्य)।**
2. करण – करणं पुनः भेषजं	**भेषज (औषध)।**
3. कार्ययोनि – कार्यायोनिः धातुवैषम्यं	कार्य – रोग, योनि – धातुओं का विषम होना।
4. कार्य – कार्य धातुसाम्यं	रोगनाश या धातु साम्य स्थापना।
5. कार्यफल – **कार्यफलं सुखावाप्तिः**	सुख, हर्ष, अर्थ, यश की प्राप्ति।
6. अनुबन्ध – अनुबन्धः खल्वायुः	आयु का ठीक रहना।
7. देश – देशोः भूमिः आतुरश्च	भूमि एवं रोगी का शरीर।
8. काल – कालः पुनः संवत्सरः आतुरावस्थावस्था च	संवत्सर, आतुर अवस्था।
9. प्रवृत्ति – प्रवृत्तिः प्रतिकर्मसमारम्भः	चिकित्सा कार्य आरम्भ।
10. उपाय – उपायस्तु भिषगादीनां सौष्ठवं अभिविधानं	वैद्य, औषध, कार्ययोनि में कार्य करने की तत्परता।

भेषज :– (2) – (1) – दैवव्यापाश्रय (2) युक्ति व्यपाश्रय – व्यपाश्रय भेद में।

1. दैवव्यापश्रय – **मन्त्र औषधि, मणि मंगल, बलि उपहार होमनियम, उपवास, प्रायश्चित, स्वस्त्ययन, प्राणिपातगमनादि।**
2. युक्तिव्यपाश्रय – संशोधन (पंचकर्म), उपशमन (प्रलेप–परिषेक–पाचन आदि) एवं प्रत्यक्ष फलप्रद क्रियाएं।

भेषज **अंगभेद से** 2 प्रकार का होता है – **(2)** – (1) द्रव्यभूत (2) अद्रव्यभूत।

(1) द्रव्यभूत – (1) इसमें औषधद्रव्यों का प्रयोग करके उपचार किया जाता है।
(2) द्रव्यभूत भेषज का वमन विरेचन आदि क्रियाओं में प्रयोग किया जाता हैं

(2) अद्रव्यभूत – इसमें किन्हीं मूर्त द्रव्यों का प्रयोग नहीं किया जाता, अपितु यह चिकित्सा उपाय पर निर्भर है।
उदा. – भयदर्शन, विस्मापन, विस्मारण, क्षोभण, हर्षण, भर्त्सन, वध, बंधन, स्वप्न, संवाहन।

परीक्षा के भेद :– 1. द्विविध – प्रत्यक्ष, अनुमान, **2. त्रिविध** – प्रत्यक्ष, अनुमान, आप्तोपदेश।

"दशविध रोगी परीक्षा – बलप्रमाणविशेषग्रहणहेतोः"

(1) प्रकृति परीक्षा :– **चरकानुसार दोषज प्रकृति के लक्षण –**

वात प्रकृति पुरूष के लक्षण	पित्तज प्रकृति पुरूष के लक्षण	कफज प्रकृति पुरूष के लक्षण
बहुप्रतानकण्डरासिराप्रतानाः,	सुकुमारअवदातगात्रा, प्रभूतसृष्ट स्वेदमूत्रपुरीषाः	सुकुमारअवदातगात्रा,दृष्टिसुख,
शीघ्रत्रासरागविरागा,	प्रभूतपित्लुव्यंगतिलपिडका,	प्रभूतशुक्रव्यवायापत्या,
श्रुतग्राहि,अल्पस्मृति	क्षिप्रवलीपलितखालित्य दोषाः,	मन्द चेष्टाहार व्यवहार
सततसन्धिशब्दगमिनश्च	**प्रभूताशनपाना, दन्तशूका**	प्रसन्न स्निग्ध वर्णस्वरा,
अल्पबल, अल्पायु, अल्पधन	मध्यम–बल, आयु, ज्ञानविज्ञान।	ओजस्विनः शान्ताः सात्विकः सत्यसन्धः

(2) विकृति परीक्षा :– विकृतिः उच्यते विकारः।

(3) सार परीक्षा :–(8)– त्वक्सार, रक्तसार, मांससार, मेदसार, अस्थिसार, मज्जासार, शुक्रसार, **सत्वसार और सर्वसार।**

(9) ओजसार – का वर्णन 'काश्यप' ने किया है।

1. अस्थिसार – महोत्साहाः क्रियावन्तः क्लेशसहाः। (महाशिरःस्कन्धं – सुश्रुत)
2. मज्जासार – मृद्वंगा बलवन्तः स्निग्धवर्णस्वराः स्थूलदीर्घवृत्तसन्ध्यश्च।
3. शुक्रसार – सौम्याः सौम्यप्रेक्षिणः क्षीरपूर्णलोचना इव प्रहर्षबहुला, **स्निग्धवृत्तसारसमसंहतशिखरवदना** + महास्फिक्श्च
4. सत्वसार – शुचयो महोत्साहा दक्षा धीरा + कल्याणाभिनिवेशिनः।
5. सर्वसार – मन्दजरसो मन्दविकाराः, क्लेशसहाः + कल्याणाभिनिवेशिनः।

बलमानविशेषज्ञानार्थ :– दृश्यन्ते ह्यल्पशरीराः कृशाश्चैके बलवन्तः। तत्र पिपीलिकाभारहरणवत् सिद्धि। **(च. वि. 8/115)**

(4) संहनन परीक्षा :– **1. सुसंहत** **2. मध्यम** **3. असंगठित।**

(5) प्रमाण परीक्षा :–

(1) पैर – 4 अंगुल ऊंचा × 6 अंगुल चौड़ा × 14 अंगुल लंबा।
(2) वृषण – 6 अंगुल लंम्बे / दीर्घ × 8 अंगुल गोल / परिणाह।
(3) शेफ / लिंग – 6 अंगुल लम्बा / दीर्घ x 5 अंगुल गोल / परिणाह।
(4) भग – 12 अंगुल परिणाह / विस्तृत।
(5) हृदय – 2 अंगुल।
(6) ग्रीवा, चिबुक, ओष्ट, कर्ण, अक्षि, नासिका और ललाट – 4 अंगुल।

➢ **मनुष्य की कुल लंबाई 84 अंगुल पर्व = 5 फुट 3 इंच = 1 मीटर 60 सेन्टी मीटर।**

(6) सात्मय परीक्षा :– **1. प्रवर** – 6 रसों का सेवन **2. मध्यम**– (5–2 रसों का सेवन) **3. अवर** – 1 रस का सेवन।

(7) सत्व परीक्षा :– 1. प्रवरसत्व 2. मध्यसत्व 3. अवर सत्व।

(8) आहार शक्ति :– आहारशक्तिः अभ्यवहरणशक्त्या जरणशक्त्या च परीक्ष्या।

आहार शक्ति की परीक्षा अभ्यवहरण शक्ति और जरण शक्ति से की जाती है।

(9) व्यायाम शक्ति :– व्यायामशक्तिरपि कर्मशक्त्या परीक्ष्या।

(10) वय परीक्षा :– (1) बाल्यावस्था – 1. अपरिपक्व धातुकाल – जन्म – 16 वर्ष।
2. विवर्धमान धातुकाल – 16 – 30 वर्ष।
(2) मध्यमावस्था – 30 – 60 वर्ष तक।
(3) वृद्धावस्था – 60 – 100 वर्ष तक। **(चरकानुसार सामान्य आयु – 100 वर्ष)**

दशविधि परीक्षा का प्रयोजन :– परीक्षायास्तु खलु प्रयोजनं प्रतिपत्तिज्ञानम्। (च. वि. 8/132)

काल परीक्षा :– संशोधन ऋतुएं :– (6) – प्रावृट्, वर्षा, शरद, हेमन्त, बसन्त, ग्रीष्म।

साधारण ऋतुएँ :– साधारणलक्षणास्त्रय ऋतवः – प्रावृट शरद्बसन्ता इति। साधारण शीत, उष्ण एवं वर्षा लक्षण वाली।

प्रावृट ऋतु :– प्रावट् इति प्रथमः प्रवृष्टः कालः, तस्यानुबन्धो हि वर्षाः।

वर्षा होने के प्रारम्भिक काल को प्रावृट् ऋतु कहते हैं उस काल के तुरन्त बाद झड़ी लगी हुई वर्षा ऋतु होती है।

—: पंचकर्मार्थ द्रव्यसंग्रह :—

1. **वमन द्रव्य** :— मदन, जीमूतक, इक्ष्वाकु, धामार्गव, वत्सक, कृतवेधन – फल।

मदन, जीमूतक, इक्ष्वाकु, धामार्गव – पत्र, पुष्प। शेष औषधियों का कषाय वामक होता है।

चरक ने **आरग्वध**, क्षार और लवणोदक का वर्णन 'वमन द्रव्यों' के अन्तर्गत किया है।

2. **विरेचन द्रव्य** :— श्यामात्रिवृत, आरग्वध, लोध्र, महावृक्ष, सप्तला शंखिनी, दन्तीद्रवन्ती– क्षीरमूलत्वक्पत्रपुष्पफलानि।

सीधु, सुरा, सौवीर, तुषोदक, मैरेय, मेदक, मदिरा, मधु, मधूलक, धान्याम्ल।

चरक ने दधि, दधिमण्ड और **गो, महिषी, अजा, आवी क्षीर व मूत्र** का वर्णन 'विरेचन द्रव्यों' के अन्तर्गत किया है।

—: 3. षड् आस्थापन स्कंध :—

(1) **मधुरस्कन्ध** :— **तामलकी**, पुर्ननवा, श्वदंष्ट्रा, कर्कटश्रृगी, छिन्नरूहा, हंसपदी, आत्मगुप्ता, **अश्वगंधा**, काकनासा, वीरा **बृहती**, कण्टकारी, बला, अतिबला, छत्रा, अतिछत्रा, सहदेवा, विश्वदेवा, **ऋष्यगन्धा, ऋष्यप्रोक्ता**, क्षुद्रसहा, महासहा।

4 पर्णी – मुदग्पर्णी, माषपर्णी, शालपर्णी, पृश्निपर्णी।

6 वल्ली – क्षीरवल्ली, कपोलवल्ली, कपोतवल्ली, सोमवल्ली, गोपवल्ली, मधुवल्ली।

(2) **अम्ल स्कन्ध** :— **गण्डीर**, आमलकी, सौवीरक, मदिरा, नन्दीतक, दन्तशठ, **दाडिम**, लकुच, करमर्द, बदर।

(3) **लवण स्कन्ध** :— सैंधव, सौवर्चल, काल, पाक्य, विड, सामुद्र, औषर, कूप्य, बालुक पांशुज लवण।

(4) **कटुस्कन्ध** :— पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकशुण्ठी, मरिच, आर्द्रक, विडंग, कुस्तुम्बुरू, **पीलु**, **तेजोवती**, कूठ, हिंगुनिर्यास, **भल्लातकास्थि**, मूलक, सर्षप, लशुन, करंज, शिग्रु, मधुशिग्रु और तुलसी के भेद – सुमुख, सुरस, अर्जक, कुठेरक।

(5) **तिक्त स्कन्ध** :— चन्दन, कृतमाल, नक्तमाल, निम्ब, तुम्बुरू, हरिद्रा, दारूहरिद्रा, मुस्तक, मूर्वा, त्रायमाणा, मण्डूकपर्णी, **कुटकी, किराकतिक्त, कटुरोहिणी, कारवेल्लक, करीर, करवीर, केबुक**, कठिल्लक, **कर्कोटक, काकोदुम्बर, काकमाची**, पंचतिक्त द्रव्य, वेतस, वेताग्र बकुल, अवल्गुज, अगरू, सप्तपर्ण, तगर, वचा, सुगन्धबाला, उशीर।

(6) **कषाय स्कन्ध** :— प्रियंगु, **भल्लातकास्थि**, तिन्दुक, प्रियाल, विभीतक, बदर, कदम्ब, विस, मृणाल, अर्जुन, कशेरूक।

SHYAM VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER BHOPAL BY DR. NEELIMA SINGH LODHI

4. **अनुवासन द्रव्य** :— अनुवासन वस्ति को स्नेह वस्ति भी कहते है। **स्नेह के प्रकार होते है।**

(1) स्थावर – 2 – तैल, अतैल भेद है। (2) जांगम में – वसा, मज्जा, सर्पि आते हैं।

(1) **तैलवसामज्जासर्पिषां यथापूर्व श्रेष्ठं** :— **वातकफ विकारों में अनुवासन हेतु।**

1. तैल ← 2. वसा ← 3. मज्जा ← 4. घृत।

(2) **तैलवसामज्जासर्पिषां यथोत्तरं तु पित्तविकारेषु।** :— **पित्त विकारों में** –

4. तैल → 3. वसा → 2. मज्जा → **1.घृत।**

5. **शिरोविरेचन द्रव्य** :— (ज्योतिष्मंती, वचा – चरक, सुश्रुत)

शिरोविरेचनं द्रव्यों के सप्तविध आश्रय – मूल, त्वक् पत्र, फल, पुष्प, कन्द एवं निर्यास। (च. सू. 8/151)

अर्क, अर्लक, ज्योतिष्मती, अपामार्ग, अतिविषा	– मूल।
लोध्र, मदन, सप्तपर्ण, निम्ब, अर्क	– पुष्प
तेजोवती, शोभान्जन, बृहती, कण्टकारिका	**– त्वचा**
सुमुख, सुरस, कुठेरक (तुलसी के भेद), श्रृंगबेर	– पत्र
अपामार्ग, पिप्पली, मरिच, शिग्रु, विडंग, हरेणुका	– फल
हरिद्रा, श्रृंगबेर मूलक, लशुन	– कन्द

नोट – लवणकटुतिक्तकषायाणि चेन्द्रियोपशयानि। (च.वि. 8/151) शिरोविरेचन द्रव्यों में मधुर एवं अम्लरस नहीं होता है

श्री गणेशाय नमः **"चरक शारीर"** जय महाकाल

Shyam -Vidya Ayurved P.G. Entrance Coaching Center, Bhopal (M.P.)

By - Dr. N. S. Lodhi (M.D.) Mob. 09300961664, 09993961427

शरीर :– 'शीर्यते हिनस्ति आत्मानाम् इति शरीरम्।'
देह :– देग्धि प्रतिक्षणमुपचीयते। अर्थात् वृद्धि, विकास या उपचय।
काय :– चीयतेऽस्मिन् अस्थ्यादिकमिति कायः। (उपापचय के अर्थ में)।
शारीर :– "शरीरम् अधिकृत्य कृत्यम् तन्त्रम शारीरम्।" – शरीर विषयक अध्ययन शारीर कहलाता है।

–: चरकानुसार शारीर विभाग :–

क्र.	अध्याय	वर्णित विषय
1.	कतिधापुरूषीय शारीर	पुरुष विषयक अग्निवेश के 23 प्रश्न।
2.	अतुल्यगोत्रीय शारीर	सन्तानोत्पत्ति विषय प्रश्न, अष्टनपुंसक, गर्भधारण के कुल 36 प्रश्न।
3.	खुड्डिका गर्भावक्रान्ति शारीर	गर्भोत्पत्ति में हेतु/भाव 6।
4.	महती गर्भावक्रान्ति शारीर	गर्भ व गर्भवृद्धि, गर्भिणीलक्षण, 16 मानस प्रकृतियाँ।
5.	पुरूष विचय शारीर	लोकपुरुष साम्य प्रकरण।
6.	शरीर विचय शारीर	शरीरवृद्धिकर भाव, गर्भ अंगोत्पत्ति विषयक प्रश्न, काल अकाल मृत्यु।
7.	शरीर संख्या शारीर	अंग प्रत्यंगों की संख्या व रसादि धातुओं का प्रमाण।
8.	जातिसूत्रीय शारीर	गर्भाधान, गर्भिणीचर्या, सूतिकाचर्या, नवजात शिशु परिचर्या का वर्णन।

–: चरकानुसार आयुर्वेद में पुरुष के भेद – 3 :–

क्र.	भेद	विवरण
1.	एक धातुज पुरूष (शुद्ध पुरूष)	चेतना धातुरप्येकः स्मृतः पुरुषसंज्ञकः। (चरक)
2.	षड्धातुज पुरूष या चिकित्स्य पुरूष या अधिकरण पुरूष या कर्म पुरूष	खादयश्चेतनाषष्ठा धातवः पुरुषः स्मृतः। (च शा 1/16) पंचमहाभूत + आत्मा। – इसके गुण (कला) 16 व भाव 56 है। 1. पार्थिव भाव – 18 2. आप्य भाव – 15 3. आग्नेय भाव – 5 4. वायवीय भाव – 11 5. आकाशीय भाव – 5 6. आत्मज भाव – 2
3.	चतुर्विंशतितत्वात्मक पुरूष या राशि पुरुष (चरक)	अष्ट प्रकृति + षोडश विकार। 8 प्रकृति – अव्यक्त, महान, अहंकार, पंच तन्मात्रायें। 16 विकार – 5 कर्मेन्द्रिय, 5 ज्ञानेन्द्रिय, 5 इन्द्रियार्थ, 1 मन।

मन का लक्षण :– लक्षणं मनसो ज्ञानस्याभावो भाव एवं च। सति ह्यात्मेन्द्रियार्थानां सन्निकर्षे न वर्तते।।
वैवृत्यान्मनसो ज्ञानम् सान्निध्यातच्च वर्तते (च. शा. 1/18)
एक साथ ज्ञान का अभाव या ज्ञान का भाव होना यह मन का लक्षण है।

मन के गुण :– (2) – अणुत्वमथ चैकत्वं दौ गुणो मनसः स्मृतौ। (च. शा. 1/19)

मन के विषय :–(5) – चिन्त्यं विचार्यम् ऊह्यं च ध्येयं संकल्पमेव च। (च. शा. 1/20)

मन के कर्म :– (4) – इन्द्रियाभिनिग्रहः कर्म मनस स्वस्यनिग्रहः। ऊहो विचारस्य ततः परं बुद्धिः प्रवर्तते। (च. शा. 1/21)

ऊह्य एंव विचार – मन के विषय तथा मन के कर्म दोनों है।

गुण :— गुणाः शरीरे गुणिनां र्निदिष्टश्चिह्नमेव च। **अर्थ :— 'अर्था शब्दादि ज्ञेया गोचरा विषया गुणाः।'** (च. शा. 1/31)

ज्ञानेन्द्रियां	कर्म	कर्मेन्द्रियां	कर्म (सुश्रुत)	कर्म (चरक)
1. श्रोत्र	शब्द ग्रहण	1. पाणि	आदान	ग्रहण
2. त्वचा	स्पर्श ग्रहण	2. पाद	विहरण	गमन
3. चक्षु	रूप ग्रहण	3. पायु	विसर्ग	विसर्ग
4. जिह्वा	रस ग्रहण	4. उपस्थ	आनन्द	विसर्ग
5. घ्राण	गंध ग्रहण	5. वाक्	वचन	वचन

जिह्वा :— जिह्वा वागिन्द्रियं वाक् च सत्या ज्योतिः तमोऽनृता।

राशिः पुरूष :— बुद्धिन्द्रिय मनोऽर्थानां विद्याद्योगधर परम्। चतुर्विशतिको ह्येष राशिः पुरूष संज्ञकः।। (च. शा. 1/35)

1. रज–तम से संस्करण कर कर्म करता है। वेदना का अनुभव संयोग पुरूष या राशि पुरूष को होता है।
2. कर्मफल भोगने हेतु पुर्नजन्म लेता रहता है राशिः पुरूष की अनन्त परम्परा है।
3. जब राशिपुरूष में सत्वगुण की वृद्धि होकर विशुद्ध ज्ञान होता है तब उसे मोक्ष प्राप्त होता है
4. राशिपुरूष, मोह, इच्छा, द्वेष कर्म से उत्पन्न होता है अतः यह अनित्य होता है।

देहान्तर गमन :— अंहकार फलं कर्म देहान्तरगतिः स्मृतिः। विद्यते सति भूतानां कारणे देहमन्तरा।। (च शा. 1/52)

पुरूषोत्पत्ति :— 'प्रभवो न ह्यनादित्वात् विद्यते परमात्मनः। पुरूषो राशिसंज्ञस्तु मोहेच्छाद्वेषकर्मजः।। (च. शा. 1/53)
अनादि परमात्मा का कोई प्रभव/कारण नहीं होता है (यदि उसका कारण हो जाएगा तो अनादि नहीं कह सकते क्योंकि उसके पहले कारण वर्तमान रहेगा) राशिपुरूष मोह, इच्छा, द्वेषकर्म से उत्पन्न होता है (अतः यह सकारण होता है)

आत्मा ज्ञानवान है :— **आत्मा ज्ञः करणै योगात् ज्ञानं त्वस्य प्रवर्तते। (च. शा. 1/55)**
आत्मा के पर्याय :— अव्यक्त, आत्मा, क्षेत्रज्ञ, शाश्वत, विभु और अव्यय, कर्ता, वशी, साक्षी, र्निविकार।

आत्मा के करण – "करणानि मनोबुद्धि बुद्धि कर्मेन्द्रियाणि च। कुर्तुः संयोगजः कर्म वेदना बुद्धिरेव च।। (च.शा. 1/56)
मन, बुद्धि, ज्ञानेन्द्रियां तथा कर्मेन्द्रियां – ये आत्मा के 12 करण (साधन) है।

ज्ञानोत्पत्ति :— आत्मा मनसा संयुञ्जते, मन इन्द्रियेण इन्द्रियर्थेन् ततो ज्ञानम्। – जब आत्मा मन के साथ, मन इन्द्रियों के साथ और इन्द्रियां इन्द्रियार्थो (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध) से संयुक्त होती है तब ज्ञान होता है।

चरक ने आत्मा के 22 लक्षण या गुण बताये है। :—
प्राण, अपान, नियंत्रण, निमेष, उन्मेष, जीवन, मन की गति, इन्द्रियान्तर संचार, प्रेरण, धारण, स्वप्न में देशान्तर गमन, पंचतत्वग्रहणं, एक नेत्र से देखी वस्तु को दूसरे नेत्र को देखकर पहचान लेना, **सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, बुद्धि, प्रयत्न**, धृति, स्मृति, चेतना, अंहकार।

स्वरूप :— अचेतनं क्रियावच्च मनश्चेतयिता परः। युक्तस्य मनसा तस्य निर्दिश्यन्ते विभोः क्रियाः। (च. शा. 1/75)
(आत्मा = चेतन + क्रियाहीन)
(मन = अचेतन + क्रियावान)
आत्मा और मन का सम्बन्ध :— नित्यानुबन्धं मनसा। (च शा 1/81)

ज्ञेत्र :— पंचमहाभूत, बुद्धि, अंहकार, षोड्श विकार। = 23 तत्व। **ज्ञेत्रज्ञ :—** अव्यक्त **(आत्मा)** = 1 तत्व।
अष्ट प्रकृति :— खादीनि बुद्धिव्यक्तमंहकारः तथाऽष्टधा – अव्यक्त, महान, अंहकार, पंचतन्मात्रा।
षोड्श विकार :— पच्चमहाभूत + एकादश इन्द्रियां।

चरकानुसार सृष्टि की उत्पत्ति :-

अव्यक्त (पुरूष समन्वित मूल प्रकृति) → महान → अंहकार → पंचतन्मात्रा → पंचमहाभूत → 11 इन्द्रियां।

पंचतत्व :- शरीरं हि गतो तस्मिन् शून्यागारचेतनम्। पंचभूतावशेषत्वात् पंचतत्वं गतमुच्यते।। (च शा 1/74)

नैष्ठिकी चिकित्सा :- सभी प्रवृत्तिओं का कारण दुःख ही है। दुःखो से सदैव के लिए निश्चित रूप से छुटकारा पाने को 'निष्ठा' कहते है और इस प्रयोजन की सिद्धि के लिए जो चिकित्सा की जाती है उसे ही 'नैष्ठिकी चिकित्सा' कहते है। उपधा ही पुरूष के संसार बंधन एवं दुःख का कारण है उपधा का सर्वथा परित्याग करना ही नैष्ठिकी चिकित्सा का मंत्र है।

वेदना का अनुभव :- राशि पुरूष या संयोग पुरूष को होता है।

वेदना का अधिष्ठान :- केश, लोम नखाग्र, अन्नमल, (पुरीष) द्रव (मूत्र) को छोडकर

शरीर, मन, और इन्द्रियां - वेदना का अधिष्ठान है।

वेदना का कारण :- धीधृतिस्मृतिविभ्रंशः संप्राप्तिः कालकर्मणाम्। असात्म्यार्थागमश्चेति ज्ञातव्या दुःखहेतवः। (च. शा. 1/97)

1. प्रज्ञापराध 2. असात्म्येन्द्रियार्थ संयोग 3. परिणाम।

प्रज्ञापराध :- धीधृतिस्मृतिविभ्रष्टः कर्म यत् कुरूतेऽशुभम्। प्रज्ञापराधं तं विद्यात् सर्वदोषप्रकोपणम्।। (च. शा. 1/102)

(धृति - धृति हि नियमात्मिका - च. शा. 1/100)

बुद्धया विषमविज्ञानं विषमं च प्रवर्तनम्। प्रज्ञापराधं जानीयात् मनसो गोचरं हि तत्।। (च. शा. 1/109)

स्वाभाविक रोग :- कालस्य परिणामेन जरामृत्युनिमित्तजाः। रोगाः स्वाभाविका दृष्टाः स्वभावो निष्प्रतिक्रियः। (च. शा. 1/115)

तृष्णा :- इच्छाद्वेषात्मिका तृष्णा सुख दुःखात् प्रवर्तते। तृष्णा च सर्वदुःखानां कारणं पुनरूच्यते।। (च. शा. 1/134)

सुख दुःख का कारण - चतुर्विध योग। - हेतुस्तु सुखदुःखस्य योगो दृष्टश्चतुर्विधः।

सुख - समयोग।

दुःख - अयोग, अतियोग, मिथ्यायोग।

वेदनाओं की निवृत्ति :- योगे मोक्षे च सर्वासां वेदनानाम् अवर्तनम्। मोक्षे निवृत्तिः निःशेषा योगो मोक्षप्रवर्तक।।

मोक्ष - मोक्षो रजस्तमोऽभाव बलवकर्मसंकयात्। वियोगः सर्वसंयोगैः अपुनर्भव उच्वते। (च. शा. 1/142)

मोक्ष - सर्ववेदना निवृत्ति। 2. मोक्ष प्रवर्तक - योगों मोक्ष प्रवर्तकः।

अष्ट योग सिद्धियाँ:- 1. आवेश 2. चेतसो ज्ञानं 3. अर्थानां छन्दतः क्रिया 4. दृष्टि 5. श्रोत्रं 6. स्मृति 7. कान्ति 8. इष्टतश्चाप्यदर्शनम् - ये अष्ट सिद्धियाँ योगियों को योग सिद्ध करने पर ईश्वर से प्राप्त होती है।

स्मृति

स्मृति : - दृष्टश्रुतानुभूतानां स्मरणात् स्मृतिरूच्यते। (च. शा. 1/149)

देखे हुए, सुने हुए तथा अनुभव किये हुए विषयों का स्मरण 'स्मृति' कहलाता है।

स्मृति के कारण :- 8

"निमित्त रूपग्रहणात् सादृश्यात् सविपर्ययात्।
सत्वानुबन्धात् अभ्यात् ज्ञानयोगात् पुनः श्रुतात्।। (च. शा. 1/148-149)

(1) निमित्त कारण	(2) रूपग्रहण	(3) सादृश्य	(4) सविपर्यय
(5) सत्वानुबन्ध	(6) अभ्यास	(7) ज्ञानयोग	(8) पुनःश्रुतः।

2. अतुल्यगोत्रीय शारीर

सन्तानोत्पति विषयक अग्निवेश के 36 प्रश्नों का वर्णन मिलता है।

शुक्र – 1. शुक्र सौम्य (जल महाभूत प्रधान) होता है। शुक्र की उत्पत्ति 6 रसो से अर्थात षड्रस होता है।
2. शुक्र में 4 पाद (वायु, अग्नि, पृथ्वी, जल) होते है। अर्थात आकाश रहित।

भूतहृत गर्भ :– चरक ने "भूतहृत गर्भ" का वर्णन किया है।

सन्तानोत्पति :– (1) कन्या – रक्तेन कन्यामधिकेन्। (2) पुत्र – पुत्रेण शुक्रेण्।

(3) **यमल :–** शुक्र–आर्तव के संयोग को जब वायु दो समान भागों में बॉट देती है।

1. दोनो भागों में शुक्र की अधिकता रहने पर – दोनों **यमल** पुत्र।
2. दोनो भागों में आर्तव की अधिकता रहने पर – दोनों **यमल** कन्या।
3. एक भाग में शुक्र एंव एक भाग में आर्तव की अधिकता रहने पर – 1 पुत्र एंव 1 कन्या।

–: चरकोक्त अष्टविध गर्भविकृतियाँ या क्लीव संताने :–

विकृति	लक्षण	कारण
1. द्विरेता	स्त्री + पुरुष दोनों के लक्षणों से युक्त	शुक्र एवं आर्तव के समभाग से उत्पन्न। शुक्र एवं आर्तव का वातादि दूषित होना
2. पवेन्द्रिय	मैथुन करते समय जननेन्द्रिय से शुक्रस्राव के स्थान पर वायु निकलती हो।	विकृत वायु गर्भस्थ बालक का **"शुक्राशय नष्ट"** कर देती है।
3. व्रकी	सन्तान टेढी–मेढी आकृति की होती है	स्त्री की इनिच्छा + विषमासन मैथुन।
4. ईर्ष्यक	जो अन्य को मैथुन करते देखकर स्वयं प्रवृत हो।	स्त्री पुरुष में मैथुन की इच्छा न होने पर भी ईर्ष्या के कारण मैथुन में प्रवृत्त होना
5. नरषण्ड 6. नारीषण्ड	**पुरूष नपुंसक** **स्त्री नंपुसक**	जब दुर्बल, अल्प शुक्र आर्तव वाले स्त्री पुरुष बिना कामोत्तेजना एवं मैथुनशक्ति में मंदता के साथ मैथुन में प्रवृत्त।
7 संस्कारवाही षण्ड	बाजीकरण औषध सेवन के बाद ही मैथुन समर्थ	विकृत वायु गर्भस्थ बालक का **"शुक्रोशयद्वार विक्षुब्ध"** कर देती है।
8. वातिक षण्ड	**वृषण छोटे या अनुपस्थित**	विकृत वायु + पित्त गर्भस्थ बालक के **"वृषण नष्ट"** कर देती है।

सद्योगृहीत गर्भा के लक्षण – 8 :– निष्ठीविका गौरवमंगसादस्तन्द्रा प्रहर्षो हृदय व्यथा च।
तृप्तिश्च बीजग्रहणं च योन्यां गर्भस्य सद्योऽनुगतस्य लिगंम्।। (च शा 2/23)

1. निष्ठीविका 2. गौरव 3. तृप्ति 4. अंगसाद 5. तन्द्रा 6. प्रहर्ष 7. हृदय व्यथा 8. योनिद्वारा बीजग्रहण

सुश्रुतानुसार सद्योगृहीत गर्भा के लक्षण :– 6
1. श्रमो 2. ग्लानि 3. पिपासा 4. सक्थिसदनं 5. शुक्रशोणितयो अनुबन्धः 6. योनि में स्फुरण।

चरक – कन्या संतान लक्षण :–

1. वाम अंग चेष्टा 2. वामस्तन में दुग्धप्रवृत्ति। 3. स्त्री के वाम कुक्षि में उभार।
4. न च वृत्तगर्भा। 5. पुरुषार्थिनी स्त्री।

पुरुष संतान लक्षण :– विपरीत लक्षण। **नपुंसक संतान लक्षण :–** मिश्रित लक्षण।

गर्भस्य चत्वारि चतुर्विधानि भूतानि मातापितृसंभवानि। आहारजान्यात्मकृतानि चैव सर्वस्य सर्वाणि भवन्ति देहे। (च. शा. 2/26)

गर्भ में 4 महाभूत चार स्रोत्रो से पहुंचते है।

धर्म्याः क्रिया हर्षनिमित्त मुक्तास्ततोऽन्यथा शोकवशं नयन्ति। (च. शा. 2/40)

(1) हर्ष :– धार्मिक क्रियाकलाप से उत्पन्न।
(2) शोक :– अधार्मिक क्रियाकलाप से उत्पन्न।

हैमुन्तिकं दोषचयं वसन्ते प्रवाहयन् ग्रैष्मिकमभ्रकाले। घनात्यये वार्षिकमाशु सम्यक् प्राप्नोति रोगानृतुजान्न जातु।

दोषों का संशोधन सूत्र :–

दोष	संचय काल	निर्हरण काल
1. वात	ग्रीष्म	अभ्रकाल
2. पित्त	बर्षा	**घनात्यये (शरद)**
3. कफ	हेमन्त	**बसंत**

3. खुड्डिका गर्भावक्रान्ति शारीर

खुड्डिका :– खुड्डिका का अर्थ अल्प या संक्षिप्त होता है।
अवक्रान्ति :– अवक्रान्ति का अर्थ उत्पत्ति के आरम्भ से होता है।
खुड्डिका गर्भावक्रान्ति – संक्षिप्त में गर्भोत्पत्ति का भारद्वाज के प्रश्नो के रूप मे वर्णन है।

–: गर्भोत्पादक भाव – 6 :–

मुख्य भाव :– (4) – 1. आत्मज = 22 2. सत्वज = 18 3. मातृज – 20 (15– काश्यप) 4. पितृज – 10
पोषक भाव :–(2) – 5. रसज = 6 6. सात्मज = 8।

चरकानुसार	सुश्रुतानुसार
1. **मातृज – 20** :– त्वक, रक्त, मांस, मेद + वपा + 15 कोष्ठांग	1. **मातृज – 20**– रक्त, मांस, मेद, **मज्जा**, हृदय, ..., नाभि गुदा, आन्त्र, यकृत, प्लीहा ....इत्यादि मृदुभाग।
2. **पितृज** – 10 :– अस्थि, ..., शुक, **धमनी, सिरा, स्नायु** नख, दन्त, केश, लोम, श्मश्रु।	2. **पितृज** –10– अस्थि, ..., शुक, **धमनी, सिरा, स्नायु** नख, दन्त, केश, लोम, श्मश्रु।
3. **रसज** – 6 :– शरीर की अभिनिर्वृत्ति, वृद्धि, "प्राणानुबन्ध" तृप्ति, पुष्टि, **उत्साह**	3. **रसज** –5– शरीर उपचय, बल, वर्ण, स्थिति, हानि।
4. **सात्म्यज** – 8 :– **आरोग्य,** अनालस्य, अलोलुपत्व, बीजसम्पत इन्द्रियसौष्ठव, स्वरसम्पत, वर्णसम्पत, प्रहर्षसम्पत	4. **सात्म्यज** –4– आरोग्य, वीर्य, बल, वर्ण और **"मेधा"**
5. **आत्मज** – 22 :– प्राण, अपान, प्रेरण, धारण विभिन्न योनियों में जन्म, **'मन'**, इन्द्रियॉ, **'आयु' आत्मज्ञान,** सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, बुद्धि, प्रत्यन, अंहकार, चेतना, धृति, **स्मृति,** वर्ण, स्वर, आकृति विशेष।	5. **आत्मज** – इन्द्रियां, ज्ञान, विज्ञान, **"आयु"**, सुख, दुख इत्यादि।
6. **सत्वज** –18 :– भक्ति, शील, शौच, मार्दव, **'उत्साह'**, तन्द्रा, भय, क्रोध, शौर्य, मोह, मात्सर्य, द्वेष, त्याग, गाम्भीर्य, **स्मृति,** अनवस्थित्व तीक्ष्णता, अन्यभाव	**सत्वज** :–

1. **मातृज** – त्वक् (चरक), मज्जा (सुश्रुत)
2. **पितृज** – चरक, सुश्रुत दोनों के समान है।
3. **सात्म्यज** – "आरोग्य" मेधा (सु.) इन्द्रियसौष्ठव।
4. **आत्मज** – "आयु", ज्ञान, मन, इन्द्रियॉ, सुख, दुःख।

- बल, वर्ण = रसज, सात्म्यज दोनों। (सुश्रुत)
- उत्साह = रसज, सत्वज दोनों। (चरक)
- द्वेष, स्मृति = आत्मज, सत्वज दोनों। (चरक)

जातिस्मर :– सात्विक मन का व्यक्ति जिसे पूर्वजन्म की स्मृति रहें उसे **जातिस्मर** कहते है।

4. महती गर्भावक्रान्ति शारीर

गर्भ :– "शुक्र शोणित जीव संयोगे तु खलु कुक्षिगते गर्भ संज्ञा भवति।" (च. शा. 4/5)
ऋतुमती :– गते पुराणे रजसि नवे चावस्थिते शुद्धस्नातां स्त्रियम् अव्यापन्न योनिशोणितगर्भाशय ऋतु अतीमाचक्ष्महे।
आत्मा के पर्याय :– अव्यक्त, आत्मा, क्षेत्रज्ञ, शाश्वत, विभु ,जीव, **पुद्गल,** ज्ञ और अव्यय।

–: गर्भ की मासानुमासिक वृद्धि :–

क्र.	चरक	सुश्रुत	अष्टांग हृदय	काश्यप	भार, लंबाई
1.	खेट भूतो भवत्यव्यक्तविग्रहः 'सदसद् भूतांगवयव'	प्रथमे मासि **कललं** जायते	अव्यक्तः प्रथमे मासि **सप्ताहात्कललो** भवेत्	1. जीवात्मा के प्राण बीज धातु को विभक्त करता है। शरीर प्रविष्ट के चारों ओर रक्त फैल जाता हैं	1.25–1.50 gm 4 mm
2.	घनः सम्पद्यते –3 1. घन– पुरूष 2. पेशी– स्त्री 3. अर्बुद– नंपुंसक	घनः संजायते –3 1. पिण्ड – पुमानं 2. पेशी – स्त्री 3. अर्बुद –नपुसक	हौदयापचार बताया है घन – पुरूष पेशी – स्त्री अर्बुद – नंपुसक	2. शुक्र से गर्भस्थ बालक के अस्थि मांस स्नायु बनते है	4 gm 4 c.m
3.	सर्वेन्द्रियॉ, सर्वांग अवयव युगपतनिर्मित दौहृद, स्पंदन	हस्तपाद, शिरोत्पति से "पंच्चपिण्डक" सूक्ष्म अंगप्रत्यंग विभाग	सक्थि, बाहु द्वे, मूर्धा से "गात्रपंचकम" सर्वसूक्ष्मांग, सुख, दुःख	सर्वेन्द्रियॉ, सर्वांगावयव युगपत प्रकट, गर्भस्पदंन चेतना, वेदना, सुख, दुःख	6 c.m
4.	गर्भ में स्थिरता गर्भिणी गुरूगात्रता	सर्वांग प्रत्यंग प्रव्यक्त गर्भ दौहृद, चेतना	व्यक्तोऽप्राणा	गर्भ गर्भाशय में स्थिर तथा "निरामय"	240 gm 22 c.m
5.	गर्भस्थ शिशु के मांस रक्त में विशेष वृद्धि "गर्भिणी कृाश्र्य"	मनः प्रतिबुद्धतर भवति	चेतना प्रादुर्भाव	गर्भ के मांस, शोणित में वृद्धि, अतः 'गर्भिणी कृश' **पंचमे मासि जीवक।**	480 gm 30 c.m
6.	गर्भ के बल, वर्ण में वृद्धि, अतः गर्भिणी के बल, वर्ण में हानि	बुद्धि का प्रादुर्भाव	स्नायु, सिरा, रोम बलवर्ण, नख, त्वचा की उत्पत्ति	गर्भ के बल, वर्ण, ओज में वृद्धि, मातुश्रमो अधिक (थकावट)	1000 gm 35 c.m
7.	गर्भ की पुष्टि गर्भिणी, सर्वाकारें क्लान्ततमा (उदास)	सर्वांग प्रत्यंग विभाग "प्रव्यक्ततर"	"सर्वे सर्वांग सम्पूर्णो" (किक्किस रोग)	गर्भसर्वधात्वांग संम्पूर्ण गर्भिणी नित्यक्लान्ता "वातपित्तकफान्वितः"	1.5 kg 40 c.m
8.	"ओज अस्थिर" गर्भिणी महुमुर्हु युक्ता मुहुमुर्हु म्लाना/गर्भ	ओज अस्थिर	माता–पुत्र के बीच में बार–बार ओज संचार	ओज का परस्पर आदान–प्रदान (मुर्हम्लाना, मुर्हर्हष्टा)	2.0 kg 45 c.m
9.	प्रसव काल – 9 –10 माह–सामान्य 10 माह बाद–विकृति	प्रसव काल 9–12 माह –सामान्य 12 के बाद विकृति	आठ माह से 1 दिन भी अधिक –प्रसवकाल (1 वर्ष तक सामान्य)	नवमादिषु मासेषु जन्म यथाकमम्। (गर्भवस्था 10– माह)	2.5-3 kg 50 cm

दौहृदया :– गर्भ में जीवात्मा आने पर दौहृदया संज्ञा होती है।

चरक ने तृतीय माह में जन्मोत्तर काल होने वाले स्त्री, पुरूष और नंपुसंक संतान उत्पत्ति संबंधी भाव बताये है।
जन्मोत्तर स्त्रीकर भाव – क्लैव्य, भीरूत्व, अवैशारद्य, मोह, अनवस्थान, गुरूत्व, असंहनन, शैथिल्य, मार्दव।
जन्मोत्तर पुरूष भाव इसके विपरीत और मिश्रित लक्षण नंपुसंक संतान उत्पत्ति संबंधी होते है। (च. शा. 4/14)

:– व्यक्त गर्भा के 14 लक्षण :–

1. **आर्तवादर्शन** 2. आस्य संस्रवण 3. अन्नाभिलाषा 4. अरूचि 5. अस्कामात् छर्दि **6. अम्लकामिता**
7. उत्तम/हीन आहार की इच्छा 8. गुरूगात्रता 9. चक्षुषोग्लानि 10. स्तन्य में दुग्ध प्रवृत्ति
11. स्तनमुख ओष्ठ कृष्णता 12. पाद में अल्प शोथ **13.रोमराजी की उत्पत्ति** 14. योनि का विस्तृत होना।

गर्भ का पोषण :– गर्भ का पोषण प्रारम्भ काल में माता की रसवहा नाडी के उपस्नेह एवं उपस्वेद से होता है।

स्त्रीदोष –3		पुरूषदोष –3	
1. बन्धया	बीज में दोष।	1. बन्ध्य	बीज में दोष।
2. पूतिप्रजा	बीज, बीज अवयव में दोष।	2. पूतिप्रज	बीज, बीज अवयव में दोष।
3. वार्ता	बीज, बीज अवयव एवं **गर्भाशय** में दोष।	3. तृणपुत्रिक	बीज, बीज अवयव एवं **शुक्राशय** में दोष।

आत्मा – निर्विकारः परस्त्वात्मा सत्वभूतगुणेन्द्रियैः। चैतन्ये कारणं नित्यो द्रष्टा पश्यति हि क्रियाः। (च.सू.1/56)
निर्विकारः परस्त्वात्मा सर्वभूतानां निर्विशेषः। सत्वशरीरयोश्च विशेषाद् विशेषोपलब्धिः।। (च.शा.4/33)

मानस प्रकृतियॉ :– 16 चरक, (काश्यप – 18)
सत्व के भेद – (1) शुद्ध (सात्विक) सत्व (2) राजस सत्व (3) तामस (मोह) सत्व।

(A) सात्विक प्रकृतियां – (7) चरक , (काश्यप – 8 + प्राजापत्य सत्व)
1. **ब्रह्मकाय** – शुचि, जितात्मानं, संविभागिनं, समं सर्वभूतेषु, ज्ञानविज्ञानवचनप्रतिवचनसम्पन्नं, स्मृतिमंन्तं। काम–क्रोध–लोभ–मोह–मान–ईर्ष्या–हर्ष–अमर्ष रहित।
2. **ऐन्द्रसत्व** – ऐश्वर्यवन्तम्, **आदेय वाक्यं**, यज्वानं, ओजस्वी, दीर्घ दर्शिनं, धर्मार्थकामाभिरतम्।
3. **याम्य सत्व** – लेखास्थवृत्तं, प्राप्तकारिणम्, असंप्रहार्य, उत्थानवन्त, व्यपगत रागेर्ष्याद्वेषमोहं याम्यं।
4. **गान्धर्वकाय** – प्रियनृत्यगीतवादि स्त्रोतपाठ श्लोकाख्यान, कथा, इतिहास, पुराण में निपुण, स्त्रीविहार कामनित्यम् गन्धमात्या–अनुलेपन–वस्त्रधारण का प्रेमी, **असूयकं**।
5. **कौबेर सत्व** – स्थानमानोपभोग परिवार सम्पन्नं, धर्मार्थकामनित्य, शुचि सुखविहारं, **व्यक्तकोपप्रसादं।**
6. **वारूण सत्व** – शूरं धीरं, **शुचिम्–अशुद्धि द्वेषिणं**, क्लिष्टकर्माणं, स्थानकोप प्रसादं।
7. **आर्षसत्व** – यज्ञ, अध्ययन, व्रत, होम, ब्रह्मचर्य पालन, **प्रतिभा वचन विज्ञानोपधारण शक्ति सम्पन्न,** उपशान्त मद–मान–राग–द्वेष–मोह–लोभ।

ब्राह्म सत्व सर्वोपरि – ब्राह्मत्यन्त शुद्धं व्यवस्येत्।

(B) राजस प्रकृतियां – (6) चरक, (काश्यप – 7 + याक्षसत्व)
1. **आसुर सत्व** – **शूरं चण्डम्, असूयकम्,** ऐश्वर्यवन्तम, औपधिकम्।
2. **राक्षस सत्व** – अमर्षिणम्, **अनुबन्धकोपं, छिद्रप्रहारिण,** क्रूर, स्वप्नायास बहुलं, ईर्ष्यालु।
3. **पिशाच सत्व** – महाशनं, स्त्रैवं स्त्रीरहस्कामम्, **अशुचि–शुचिद्वेषिणं, भीरू–भीषतिसार।**
4. **प्रेत सत्व** – **आहार काममति,** दुःखशीलाचारोपचारं, असूयकम, संविभागिन मति।
5. **सर्प सत्व** – **क्रुद्ध शूरं–अक्रुद्ध भीरू, तीक्ष्णमायास बहुल, सन्त्रस्त गोचरं, आहार विहार परं।**
6. **शाकुन सत्व** – **अनुषक्त काममजस्रम्,** आहार विहार परम्, **अमर्षणम्।**

(C) तामस प्रकृतियां – (3)
1. **पाशव सत्व** – निराकरिष्णुमेधसं, **जुगुप्सित(निन्दनीय)– आहार, विहार,** मैथुनं परं, स्वप्नशीलं।
2. **मात्स्य सत्व** – भीरूम् बुधम्, **आहारलुब्ध,** अनवस्थितमन, अनुषक्त काम–क्रोधं, सरणशीलं।
3. **वानस्पत्य सत्व** – अलसं, **केवलम अभिनिविष्टम् आहारें,** सर्वबुद्धयंगहीन वानस्पत्य विद्यात्।

5. पुरूष विचय शारीर

पुरूषोऽयं लोक सम्मितः – 'यावन्तो हि लोके (मूर्तिमन्तो) भावविशेषाः पुरूषे तावन्तः 'यावन्तः पुरूषे तावन्तो लोके इत्येव।' – पुरूष एवं लोक समान है लोक में जितने मूतिमान् भावविशेष हैं उतने ही पुरूष में भी हैं और जितने पुरूष में है उतने ही लोक में हैं।

लोक पुरूष साम्य

लोक	पुरूष भाव
1. पृथ्वी	मूर्ति (स्थूलरूप)
2. अप्	क्लेद
3. तेज	अभिसंताप
4. वायु	प्राण
5. आकाश	सुषिर (छिद्र)
6. तम	मोह
7. ब्रह्म	अन्तरात्मा
8. ब्रह्म की विभूति	अन्तरात्मा की विभूति
9. ब्रह्म की विभूति प्रजापति	मन
10. विश्वदेव	इन्द्रिय अर्थ
11. अश्विनीकुमार	कान्ति
12. इन्द्र	अहंकार
लोक	पुरूष भाव
13. सृष्टि	गर्भाधान
14. कृतयुग	बाल्यावस्था
15. त्रेता	युवावस्था
16. द्वापर	वृद्धावस्था (स्थाविर्य)
17. कलियुग	रूग्णता (आतुरावस्था)
18. युगान्त	मरण
19. वसु	सुख
20. ज्योति	ज्ञान
21. सोम	प्रसाद
22. मरूत्	उत्साह
23. आदित्य	आदान
24. रूद्र	रोष

VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING ... NEELIMA SINGH LODHI (M.D.) Mob. ...

लोक/षड्धातुक पुरूष की पॉच दशाएँ :– 1. हेतु 2. उत्पत्ति 3. वृद्धि 4. उपप्लव 5. वियोग।

उपप्लवो दुःखागम् :– दुखों का आ जाना उपप्लव कहलाता है।

प्रवृत्ति :– मोहेच्छाद्वेष कर्म मूला प्रवृत्तिः।

प्रवृत्ति के 8 भेद – 1. अंहकार 2.संग 3. विप्रत्यय 4. संशय 5. अभिसम्प्लव 6. अभ्यवपात 7. अविशेष 8. अनुपा

निवृत्ति :– निवृप्तिः अपवर्गः तत परं प्रशान्त तत्दक्षरं तद् ब्रह्म स मोक्षः। (च. शा. 5/11)

मोक्ष के पर्याय – निवृत्ति, अपवर्ग, विपाप, विर, पर, शांत, अक्षर, अमृत, ब्रह्म, अपुर्नभव, निर्वाण और शांति।

सत्या बुद्धि :– शुद्धसत्वस्य या शुद्धा सत्या बुद्धिः प्रवर्तते। (च. शा. 5/16)

6. शरीर विचय शारीर

"शरीर विचयः शारीरोपकरार्थमिष्यते।"

शरीर :– तत्र शरीरं नाम चेतनाधिष्ठान भूतंपंचममहाभूतविकार समुदायत्कं समयोगवाहि। (च. शा. 6/4)

1. चेतनाधिष्ठान भूतम् 2. पंचममहाभूतविकार समुदायत्कम् 3. समयोगवाही।

1. शरीर वृद्धिकर भाव – 4 – शरीर वृद्धिकर भाव = 4 (चरक), (17–वाग्भट्ट)

1. आहार सौष्ठव 2. काल योग 3. अविघात 4. स्वभाव संसिद्ध।

2. आहार परिणामकर भाव = 6 :–

1. अग्नि – उष्मा पचति।
2. वायु – वायुः अपकर्षति।
3. स्नेह – **स्नेहो मार्दवं जनयति।**
4. क्लेद – **क्लेदः शैथिल्यम् आपादयति।**
5. काल – कालः पर्याप्तिभि निर्वर्तयति।
6. समयोग – धातुसाम्यकरः सम्पद्यते।

3. बल वृद्धिकर भाव = 13 :–

1. बलि देश में जन्म ।
2. बलि काल में जन्म।
3. बलि कुल में जन्म ।
4. सुखकारी कालयोग।
5. बीज एंव क्षेत्र गुण सम्पन्न।
6. उत्तम आहार सेवन।
7. शरीर का प्रशस्त संगठन
8. सात्म्य सम्पत्
9. सत्व सम्पत्
10. स्वभाव संसिद्ध।
11. युवावस्था
12. व्यायाम आदि कर्म
13. संहर्ष (प्रसन्न मन)

गर्भिणी आहार रस के 3 भाग – 1. गर्भिणी पोषण, 2. गर्भ पोषण 3. स्तन पुष्टि – स्तन्याय (दुग्ध निर्माणार्थ)।

गर्भासन :– गर्भस्तु खलु मातुः पृष्ठाभिमुख ऊर्ध्वशिरा संकुच्याङ्गान्यास्तेऽन्तःकुक्षौ ॥ (च. शा. 6/22)

प्रसव :– परिवृत्याऽवाक्शिरा निष्क्राम् अपत्यपथेन। [illegible] के ऊपरी भाग से जुड़ा रहता है। ujjain-06

गर्भ की परमायु :– बर्षशतं खल्वायुषः प्रमाणमस्मिन् काले। और सतयुग आरम्भ में गर्भ की परमायु–100 बर्ष है।

VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER BHOPAL (M.P.) BY. Dr. NEELIMA SINGH

गर्भ में सर्वप्रथम अंगोत्पत्ति –

सुश्रुत के अनसार			चरक के अनुसार		
शौनक	–	शिर	कुमार शिरा भारद्वाज	–	शिर
कृतवीर्य	–	हृदय	कांकायन	–	हृदय
पाराशर	–	नाभि	भद्रकाप्य	–	नाभि
मार्कण्डेय	–	पाणिपाद	वडिश	–	हाथ पैर
सुभूति गौतम	–	मध्य शरीर	भद्र शौनक	–	गुद, पक्वाशय
धन्वन्तरि	–	सभी अंग एक साथ	वैदेह जनक	–	इन्द्रिया
			मारिच काश्यप	–	अविचार्य (अचिन्त्य)
			अग्निवेश	–	सभी अंग एक साथ

➢ **अकाल, काल मृत्यु का वर्णन किया है।**

7. शरीर संख्या शारीर

त्वचा की संख्या :– चरक, अष्टांग संग्रह, काश्यप में – 6,
सुश्रुत, अष्टांग हृदय, शार्ंगधर, आधुनिक विज्ञान में – 7।

क्र.	नाम	स्थान
1.	उदकधरा	उदक का धारण व त्वचा के वर्ण की प्रतीति।
2.	रक्तधरा	रक्त वाहिनियों का स्थान।
3.	तृतीय त्वचा	सिध्म, किलास का स्थान।
4.	चतुर्थ त्वचा	द्रदु व कुष्ठ का स्थान।
5.	पंचम त्वचा	अलजी व विद्रधि का स्थान।
6.	षष्ट त्वचा	लाल, काली स्थूलमूल वाली फुन्सियों का स्थान,कट जाने पर तमः प्रवेश।

SDAL   ST C 15 15 AA

शरीर षडगंत्वम

- चरक – दो बाहु, दो सक्थि, शिराग्रीवा, अन्तराधि (मध्यशरीर)।
- सुश्रुत – शाखा – 4, मध्यशरीर, शिर – 1।
- भाव प्रकाश – 1. सिर 2. ग्रीवा 3. हाथ 4. सक्थि 5. वक्ष 6. उदर 7. पार्श्व 8. पृष्ठवंश

कोष्टांग

चरक ने 15 कोष्टांग माने है। 'क्लोम का वर्णन केवल चरक ने किया।

1. हृदय 2. वस्ति 3. नाभि 4. यकृत 5. प्लीहा 6. क्लोम 7. वृक्क 8. वपावहन
9. आमाशय 10. पक्वाशय 11. क्षुद्रान्त्र 12. स्थूलान्त्र 13. उत्तर गुद 14. अधर गुद 15. पुरीषाधार

सुश्रुत ने 8 कोष्टांग माने है।

1. हृदय 2. उण्डूक 3. फुफ्फुस
4. रूधिर स्थान 5. आमस्थान 6. अग्निस्थान 7. पक्वस्थान 8. मूत्रस्थान

अष्टांग सग्रहं ने 8 कोष्टांग माने है। अ. हृदय में – 11 (+ नाभि, क्लोम, डिम्भ)

1. हृदय 2. उण्डुक 3. फुफ्फुस
4 यकृत 5. प्लीहा 6. बस्ति 7. वृक्क 8. अन्त्राणि

1. काश्यप ने 13 कोष्टांग माने है। – उत्तर व अधर गुद को 1 गुद कहा एवं पुरीषाधार को नहीं माना है।
2. भेल ने पक्वाशय के स्थान पर **निवाप्नहन** बताया है।
3. गंगाधर ने क्लोम शब्द से फुफ्फुस व उण्डुक दोनों का ग्रहण किया है।

अस्थि

- चरक, सुश्रुत की अस्थिगणना शिशु या भ्रूण शरीर की है। आधुनिक – वयस्क मानव शरीर की है।

क्र.	मत	संख्या	शरीरगत संख्या
1.	चरक	360	शाखा – 128, मध्य – 140, शिरग्रीता – 92
2.	सुश्रुत	300	शाखा – 120, मध्य – 117 शिरग्रीवा – 63
3.	वाग्भट्ट	360	शाखा – 140, मध्य – 120, शिरग्रीता – 100
4.	आधुनिक	206	शाखा – 120, मध्य – 50, शिरग्रीवा – 36

- श्रोणिगुहा के निर्माण में अस्थियां – चरक – 3 वाग्भट्ट – 4 सुश्रुत – 5।

चरकानुसार शरीर में अस्थि बोधक सारिणी :-

क्र	अस्थि	संख्या	अस्थि	संख्या
1.	दन्त, दन्तोलूखल	32	उरोस्थि	14
2.	नख, पाणिपाद शलाका	20	भगास्थि, जत्रु, हन्वस्थि	1
3.	पाणिपादांगुलि अस्थियां	60	पाणिपाद शलाकाधिष्ठान	4
4.	पृष्ठतल अस्थियां	45	जघांस्थि, अरत्नि, शिरःकपालास्थि	4
5.	पर्शुका + स्थालक + स्थालकार्बुद	24	शेष सभी	2
6.	ग्रीवा अस्थियां	15		

1. पंचेन्द्रिय अधिष्ठान – 1. त्वचा 2. जिह्वा 3. नासिका 4. अक्षिणी 5. कर्ण ।
2. पंच बुद्धिनेन्द्रिय – 1. श्रोत्र 2. स्पर्शन् 3. दर्शन 4. रसन 5. घ्राण।
3. पंच कर्मेन्द्रिय – 1. हस्तौ 2 पादौ 3. पायु, 4. उपस्थ 5. जिह्वा।

4. चेतना का स्थान – **"हृदयं चेतनाधिष्ठानं एकम्।" (च.शा. 7/8)**

दशविध प्राणायतन :— चरक — 10, वाग्भट्ट — 10 (सुश्रुत — द्वादश प्राण)।

(1) शंख द्वय + त्रिमर्म + शुक्र ओज, रक्त, कण्ठ, गुद। (चरक. सू. 29/1)

(2) मांस, नाभि + त्रिमर्म + शुक्र ओज, रक्त, कण्ठ, गुद। (चरक. शा. 7/9)

बर्हिमुख स्त्रोतस :— पुरूष में — 9 बहिर्मुख स्त्रोत, कर्ण — 2, नेत्र— 2, नासा— 2, मुख—1, शिश्न—1, गुदा —1। स्त्री शरीर में — 12 = 9 + चूंचूक — 2 योनि —1। **(शारंर्धर, भावप्रकाश —10 स्रोतस — 9 + 1 ब्रह्मरन्ध्र)**

प्रत्यंग :— " षट्पंचाशत प्रत्यंगानि षट्स्वंगेषूपनिबद्धानि। " :— शरीर में 56 प्रत्यंग है जो षडंगों से जुडे रहते है।

गर्भ में — 29, भावप्रकाश = 38, चरक = 56, सुश्रुत = 61, काश्यप = 87।

1 संख्या वाले प्रत्यंग:— शेफ, बस्तिशीर्ष + उदर + तालु, जिह्वा, गलशुण्डिका + चिबुक और अवटु + दन्तवेष्ट

4 संख्या वाले प्रत्यंग :— अक्षिवर्त्म और पाणिपादहृदय (तल) 4 होते है।

2 संख्या वाले प्रत्यंग :— शेष सभी प्रत्यंग 2—2 की संख्या वाले हैं।

पुरूष शरीर में पंचमहाभूतात्मक अंश :— 56 भाव है। (सभी में आत्मज भाव सर्वप्रधान है :— 1. बुद्धि 2. सत्व)

1. पार्थिव भाव — 18
2. आप्य भाव — 15
3. आग्नेय भाव — 5
4. वायवीय भाव — 11
5. आकाशीय भाव — 5
6. आत्मज भाव — 2

चरकानुसार शरीर में रसादि का अंजलि प्रमाण (अंजलि = 16 तोला)

क्र	धातु	मात्रा (अंजलि प्रमाण)
1.	उदकम् (जल, स्वेद)	10 अंजलि
2.	रस	9 अंजलि
3.	रक्त	8 अंजलि
4.	पुरीष	7 अजलि
5.	कफ	6 अंजलि
6.	पित्त	5 अंजलि
7.	मूत्र, आर्तव (स्त्री)	4 अंजलि
8.	वसा	3 अंजलि
9.	मेद, स्तन्य	2 अंजलि
10.	मज्जा	1 अंजलि
11.	मस्तिस्क, शुक्र, अपर ओज	½ अंजलि
14.	पर ओज	8 बिन्दु (अरूणदत्त — 6 बिन्दु)

अनिर्देश्य किन्तु तर्क्य भावों की एवं संख्या (चरकानुसार)

1.	स्नायु	900
2.	सिरा	700
3.	धमनी	200 (24 सुश्रुत)
4.	पेशी	400 (500 सुश्रुत)
5.	संधि	200 (210 सुश्रुत)
6.	मर्म	107
7.	सिरा, धमनी मुखाग्र	29956
8.	केश, श्मश्रु, रोम	3½ करोड

शरीरावयवास्तु परमाणुभेदेन अपरिसंख्येया भवन्ति। (च. शा. 7/17) — चरक ने परमाणु भेद से शरीर अवयवों की संख्या असंख्य बतायी है।

SHYAM VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER BHOPAL (M.P.) BY. DR. NEELIMA SINGH LODHI

8. जातिसूत्रीय शारीर

गर्भाधान का पूर्वकर्म :– स्त्री, पुरुष दोनों को स्नेहन→स्वेदन→संशोधन→ संसर्जन कराने के बाद गर्भाधान करावे।

गर्भाधान का पूर्व आहार :–

चरक – पुरुष को – मधुर औषध सिद्ध क्षीर घृत सेवन। **सुश्रुत – सर्पिःक्षीराभ्यां शाल्योदनं।**

चरक – स्त्री को – तैल व माष चूर्ण से बने पदार्थ। **सुश्रुत – तैलमाषोत्तराहारां।**

1. **पुत्र प्राप्ति के लिए** – 4, 6, 8, 10 12 वें दिन मैथुन करें। (युग्म रात्रियों में)।
2. **कन्या प्राप्ति के लिए** – 5, 7, 9, 11 वें दिन मैथुन करें। (अयुग्म रात्रियों में)।

गर्भाधान की विधि :–

1. स्त्री से उत्तान अवस्था में मैथुन – सर्व उपयुक्त दोषरहित विधि होती हैं।
2. स्त्री से अधोमुखी (न्युब्ज) अवस्था में मैथुन –वात प्रकुपित – योनि वेदना, योनि रोगों की संभावना।
3. स्त्री से दक्षिण पार्श्व अवस्था में मैथुन – कफ प्रकुपित – गर्भाशय मुख को बंद कर देता हैं।
4. स्त्री से वाम पार्श्व अवस्था में मैथुन – पित्त प्रकुपित – शुक्र को विदग्ध कर देता हैं।

मैथुन में त्याज्य स्त्री :– अतिबालाम् अतिवृद्धां दीर्घरोगिणीम् अन्येन वा विकारेण उपसृष्टां वर्जयेत्।

अतिबाला, अतिवृद्ध, तथां दीर्घकालिक रोगी या विकार ग्रस्त स्त्री/पुरुष से मैथुन न करें।

पुत्रेष्टि यज्ञ :– चरक ने 'पुत्रेष्टि यज्ञ' एंव काश्यप ने 'ऋत्विक् पुत्रीय इष्टि यज्ञ' का विधान बताया है।

1. **कालवधि** – रजस्राव के 8 वें दिन से लगातार 8 दिन तक।
2. **यज्ञ हेतु लकड़ी :–** इगुंदी, उदुम्बर, पलाश और मधूक की लकड़ियों से वेदी पर अग्नि की स्थापना करे।
3. **घृतपान :–** पहले पुरुष घृतपान करे तत्पश्चात् स्त्री घृतप्राशन करें।
4. **मैथुन :–** घृतपान के बाद स्त्री पुरुष 8 रातों तक सहवास करें ।

वर्णोत्पत्ति में सहायक महाभूत :–

(1) अवदात (गौर) – तेज, आकाश, जल। (2) कृष्ण वर्ण – वायु, अग्नि, पृथ्वी।

(3) श्याम वर्ण – सर्व महाभूत समान। (सम सर्वधातु प्रायः श्याम वर्णकरः।)

1. **पुंसवन कर्म :–** **"पुमान् सूयतेऽनेन कर्मणा इति पुसंवनम्।"**

   जिस विधि – विमान के प्रयोग से गर्भ को पुल्लिंग कर दिया जाता है।

2. **पुंसवन संस्कार काल** – (चरक) – भावों के व्यक्त होने से पहले। **(प्राग्व्यक्तीभावात् प्रयुक्तेन् सम्यक्।)**

   (सुश्रुत) – लब्धगर्भा।

1. चरकानुसार पुंसवन विधियॉं – 5

1. **गोशाला में उत्पन्न न्यग्रोध (बरगद) वृक्ष की उत्तर/ पूर्व दिशा मुख वाली 2 शुंग + 2 धान्यमाष (उदड) + 2** गौर सर्षप को दही में पीसकर "पुश्प नक्षत्र" में पान करें।
2. पुष्य नक्षत्र में शालिपिष्ट (चावल का आटा) को पानी मे पकाये और उससे जो भॉप निकले उसे स्त्री सूंघे एवं फिर पके आटे में जल मिलाकर उसे रूई के फोहे से चौखट पर गर्दन रखकर अपने ही हाथ से दाहिने नासाविवर में निचोडकर टपका दें।
3. **गोशाला में जीवक, ऋषभक, अपामार्ग एंव सहचर** – युगपत/अलग – अलग अभींष्ट मात्रा में लेकर कल्क बनाकर दूध में क्षीरपाक विधि से पकाकर"पुष्प नक्षत्र" में पान करें।
4. कुड्य कीट/मत्स्यकं (छोटी मछली) – 1 अंजलि जल में डालकर "पुष्प नक्षत्र" में पान करें।
5. स्वर्ण/रजत/लोह निर्मित छोटी पुरुषाकृति मूर्ति को अग्नि में लालतृप्त कर दूध/दही/जल में डालकर परा द्रव "पुष्प नक्षत्र" में पान करें।

➢ चरकोक्त सभी पुंसवन कर्म :– **"पुष्प नक्षत्र"** में करने का निर्देश है।

2. सुश्रुतानुसार पुंसवन विधि – 1

1.– लक्ष्मणा/वटशुंग/विश्वदेवा /सहदेवा........ में से किसी एक को दूध में पीसकर स्त्री के नासापुट में 3–4 बूँद डालना चाहिए। वह उसे न थूके। पुत्र हेतु – दक्षिणनासापुट में। पुत्रीहेतु – वामनासापुट में।

पुंसवन विधियॉं – चरक– स्त्री स्वयं डाले। सुश्रुत – डलवाएं Ujjain -06

प्रजास्थापन महाकषाय – ऐन्द्री, ब्रह्मी, शतवीर्या, सहस्रवीर्या, अमोघा (पाटला), अव्यथा (गुडूची), अरिष्टा, शिवा (हरीतकी), वाट्यपुष्पी और विष्वक्सेनकान्ता।
उपयोग :– प्रजास्थापन महाकषाय औशधियों का बंधन, स्पर्शन करें + साधित क्षीरघृतपान, साधित जल से स्नान करे।
नोट :– गर्भस्थापक औषधियॉं और आमविकार नाशक औषधियॉं परस्पर विरूद्ध होती है।

1. गर्भस्राव – 3 माह तक। (सुश्रुत – 4 माह तक) **2. गर्भपात – 4 माह या उसके अग्रिम माहों में।**

अष्टम मास में चिकित्सा :– अष्टम मास शुरू हो जाने के बाद यदि कोई 'आत्ययिक रोग' हो जाय जिसमें वमन--विरेचन या नस्य का प्रयोग ही लाभप्रद हो, तो ऐसी स्थिति में मृदु वमन, मृदु विरेचन या मृदु नस्य का प्रयोग करना चाहिए।
8 मास में गर्भिणी में 'उदावर्त' का उपचार :– जिस गर्भवती स्त्री को आठवें महीने में उदावर्त होने के कारण मलावरोध हो जाये और वैद्ध उसे अनुवासन वस्ति हो प्रयोग से ठीक होने लायक न समझे तो 'निरूह वस्ति' देवें।
गर्भाशय में गर्भ के मरण के कारण :–
1. अतिमात्रा दोषोपचयात् 2. तीक्ष्णोष्णातिमात्र सेवनात् 3. वातमूत्रपुरीष वेग विधारण
4. विषम – अशन, शयन 5. स्थान (उदर) सम्पीडनाभिधान
6. क्रोध–शोक–ईर्ष्या–भयत्रास के कारण अथवा साहस से गर्भ गर्भाशय में मर जाता है।

मृतगर्भा के लक्षण :– **स्तिमितं स्तब्धमुदरमाततं शीतमश्मान्तर्गतमिव भवत्य अस्पन्दनो गर्भः।**
1. स्तिमित, स्तब्ध उदर के अंदर शीतल, [illegible] (पत्थर) जैसा अंतर्भाव होता है।
2. गर्भ स्पन्दहीन और अतिशय शूलवान् होता है उसे प्रसवपीड़ा नहीं होती है न ही योनिस्राव होता है।
3. **अक्षिणी चास्य स्रस्ते भवतः।** (आखे भीतर धंस जाती है)
4. ताम्यति, व्यथते, भ्रमते, श्वसिति, अरति बहुला च भवति।
5. न च वेगप्रादुर्भावो – स्त्रियं [illegible]
मृतगर्भा की चिकित्सा :– अथर्ववेदोक्त मन्त्रों से जल को अभिमंत्रित कर उसे पिलाकर गर्भशल्य को बाहर निकाले।

चरकानुसार ऋतुकाल में वर्ज्य = दुष्प्रभाव	
1. सदैव उत्तान सोये	गर्भ की नाभि नाड़ी कण्ठमनुवेष्ट्यति
2. विवृत शायनी, नक्त चारणी	उन्मत्तं जनयति
3. कलहशीला	अपस्मार रोगी
4. व्यवाय शील (गर्भिणी–मैथुन)	विकृत शरीर वाले, निर्लज्ज, स्त्री स्वभाव संतान
5. शोकनित्या	भीतम् (डरपोक), कृशशरीर, अल्पायु
6. अभिध्यात्री परो (दूसरों से द्रोह)	संतापी, ईर्ष्यालु या स्त्राकामी संतान
7. अस्तेय (चोरी करने वाली)	आयास बहुल, अतिद्रोही, नीचकर्म करने वाली संतान
8. अमर्शिणी (क्रोधी स्वभाव)	चण्ड, औपधिक (कपट–छली), असूयकं
9. स्वप्ननित्या (निद्रालु स्त्री)	तन्द्रालु, अल्पबुद्धि, मन्दाग्नि संतान
10. मद्यनित्या (नित्य मद्यसेवी)	पिपासाग्रस्त, अल्पस्मृति, अनस्थितचित्त
11. गोधामांस प्रिया	मूत्रशर्करा / अश्मरी / शनैर्मेह ग्रस्त
12. वाराहमांस प्रिया	रक्ताक्षं, क्रथनं अति, परूश रोम–केश
13. मत्स्यमांसप्रिया	चिरनिमेषं / स्तब्ध नेत्र वाली संतान
14. मधुर नित्या	प्रमेहग्रस्त, मूक, अतिस्थूल
15. अम्ल नित्या	रक्तपित्तग्रस्त, त्वक्, अक्षिरोगी
16. लवण नित्या	शीघ्रं वली पलितं, खालित्यरोगिणं
17. कटु नित्या	दुर्बल, अल्पवीर्य / संतानेपत्ति में असमर्थ
18. तिक्त नित्या	शोषग्रस्त, निर्बल, अविकसित, कृश
19. कषाय नित्या	आनाह, उदावर्त, श्यामवर्ण संतान

—: चरकानुसार गर्भ विकार :—

1. उपविष्टक :— सारभांग एवं सुआकार प्राप्त गर्भ गर्भिणी द्वारा उष्ण और तीक्ष्ण पदार्थो के अधिक सेवन करने से 'गर्भषोषक द्रव' स्रवित हो जाने से गर्भ की पुष्टि एवं वृद्धि नहीं होती है और गर्भ अधिक समय तक रूका रह जाता है। **1. 'गर्भो वृद्धिं न प्राप्नोनि निःस्रुतत्वात्।'**

2. स कालमवतिष्ठतेऽतिमात्रं तम् उपविष्टक इत्याचक्षते केचित्।

2. नागोदर :— गर्भिणी द्वारा उपवास, व्रत एवं स्नेह द्वेष रखने तथा रूक्ष, निस्सार एवं वात प्रकोपक आहार विहार का सेवन करने से गर्भ शुष्क हो जाने के कारण नहीं बढ़ पाता है। ऐसा गर्भ अधिक समय तक गर्भाशय में ही टिका रह जाता है और उसमें स्पंदन की प्रतीति नहीं होती है विद्वान लोग उसे 'नागोदर' नाम से पुकारते है।

1. 'गर्भो वृद्धिं न प्राप्नोति परिशुष्कत्वात्।

2. स चापि कालमवतिष्ठतेऽतिमात्रम् अस्पन्दनश्च भवित तं नु नागोदरं इत्याचक्षते।

3. लीन गर्भ :— जिस स्त्री का गर्भ जैसे सोया हुआ हो, वैसे अल्पगतिशील या एकदम निश्चय बना रहता है उसे लीनगर्भ कहते हैं। **1. गर्भः प्रसुप्तो न स्पन्दते।**

—: चिकित्सा :—

1. उपविष्टक व नागोदर में — 1. जीवनीय, बृंहणीय, मधुर एवं वातघ्न औषधि सिद्ध घृत एवं भूताधिकार में प्रयुक्त औषध सिद्ध घृत का सेवन करें। 2. यान में बैठाकर क्षोभ कराना, **अवजृम्भण, अवमार्जन (बार—बार स्नान)** कराना।

2. लीन गर्भ में चिकित्सा —

1. श्येन गौ, मत्स्य व ताम्रचूड के मांस का प्रयोग। प्रभूत सर्पि में माषयूष / मूलकयूष के साथ सेवन करें।
3. स्त्री के उदर बस्ति, वंक्षण, उरू, कटि, पार्श्व, पृष्ठ प्रदेश में उष्ण तिल या **कटु तैल से मालिश** करना चाहिए

गर्भिणी भोजन	**चरक**	**सुश्रुत**
1. मास	क्षीर अनुस्कृतं	मधुर, शीत, द्रव बहुल भोजन
2. मास	क्षीर + मधुर औषध	"
3. मास	क्षीर + घृत + मधु	"
4. मास	क्षीर + नवनीत (1 कर्ष मात्रा),	क्षीर+नवनीत, जांगलमांस सहित हृद्य अन्न।
5. मास	क्षीर + घृत	क्षीर+सर्पि।
6. मास	क्षीर + घृत + औषध	गोक्षुर साधित घृत / यवागू।
7. मास	क्षीर + घृत + औषध	पृश्निपर्णी साधिक घृत।
8. मास	क्षीर + यवागू	अस्थापन (बदरोदक) एंव अनुवासन बस्ति।
9. मास	वस्ति, योनिपिचु	स्निग्ध यवागू, जांगलरस प्रसवकाल तक।

सप्तम माह में 'किक्किस रोग' :— 1. गर्भोत्पीड़नाद **वातपित्तश्लेष्माण** उरः प्राप्य विदाहं जनयन्ति, ततः कण्डूः उपजायते, कण्डूमूला च किक्किसावाप्तिः भवति। **2. किक्किसः चर्मविदरणम्। (चक्रपाणि)।**

गर्भ की वृद्धि से उत्पीड़ित हुए वात पित्त—कफ उरः प्रदेश में आकर विदाह पैदा करते हैं। तब कण्डूः उत्पन्न होती है और कण्डूः होने से 'किक्किस' विकार की उत्पत्ति हो जाती है।

चिकित्सा :— बदर क्वाथ (कोलोदक) + मधुरौषध सिद्ध नवनीत — 1 कर्ष मात्रा में पिलाये

1. **चन्दनमृणाल कल्क का लेप — स्तन व उदर पर करें।**
2. पृषत हरिण शशरूधिरयुतया त्रिफलया। 4. करवीरक पत्र सिद्धेन तैलेनाभ्यंग।

सूतिकागार :— नवम माह लगने से पूर्व ही बनवा ले। पूर्व / उत्तर दिशा में — चरक (पूर्व / दक्षिण दिशा में — सुश्रुत)

(सूतिकागार का प्रमाण — अष्टहस्तायतं चर्तुहस्तविस्तृतं। = 8 हस्त × 4 हस्त — सुश्रुत)

प्रजननकाल के लक्षण :— 'प्रथम प्रसवावस्था'

1. क्लमो गात्राणां, ग्लानिः आननस्य अक्ष्णोः शैथिल्यं। 2. अधोगुरुत्वं वंक्षण —कटि—कुक्षि—पार्श्व—पृष्ठ—निस्तोद।
3. विमुक्तबन्धनत्वं एवं वक्षसः कुक्षेवस्रंसनम्। 4. योनेः प्रसृवणम् अनन्नाभिलाषा।

ततोऽनन्तरं — आवीनां प्रादुर्भावः प्रसेकश्च गर्भोदकस्य।

प्रसव की अवस्थाएं – 3

1. **प्रथमावस्था – आवी प्रादुर्भाव** (आवी – सामान्य प्रसव वेदना)

2. **द्वितीयावस्था** – 1. प्रसवार्थ मूसल ग्रहण का निषेध बताया है – चरक ने।
   2. कर्ण में मन्त्र पाठ एवं प्रवाहण क्रिया का निर्देश।
   3. **असमय प्रवाहण :–** प्रसव वेदना शुरू होने से पहले प्रवाहण मत करो अन्यथा संतान विकारग्रस्त होगी अथवा गर्भिणी श्वास, कास, शोष, प्लीहा ग्रस्त हो जाएगी।
   4. सहवर्तिनी वनिताएं यह नारा बुलंद करे। **'प्रजाता प्रजाता धन्यं धन्यं पुत्रम्'** इति। (च.शा. 8/40)

3. **तृतीयावस्था** – 1. प्रसवपश्चात् **'अपरा पातन'** कराये। उपाय –
   1. स्त्री के चोटी के बालों के गुच्छे से उसके कष्ठ और तालु को रगड़े।
   2. **भुर्जपत्र काचमणि सर्पनिर्मौकेश्च अस्या योनिं धूपयेत्।**

   उस स्त्री की योनि में भोजपत्र, काचमणि और मणिधर सर्प की केंचुल का धुआं दे।

"<u>नवजात शिशु परिचर्या क्रम</u>"

1. **प्राण प्रत्यागमन :– तस्यास्तु खल्व परायाः प्रपतनार्थे कर्माणि क्रियमाणे जातमात्रस्यैव कुमारस्य कार्याण्येतानि कर्माणि भवन्ति तद्यथा – अश्मनोः सद्यदृनं कर्णयोर्मूले**
   – शीतोकेनोष्णोदकेन वा मुख परिषेकः

तथा स क्लेशवहितान् प्राणान् पुर्नलभेत्। कृष्णकपालिका शूर्पेण चैनं अभिनिष्पुणीयुर्यद्य चेष्टः स्याद् यावत् प्राणानां प्रत्यागमनम्।

2. **स्नान :– ततः प्रत्यागत प्राणं प्रकृतिभूतमभिसमीक्ष्य स्नानोदक ग्रहणाभ्यामुपपादयेत्।**
   वाग्भट्ट – (4) – 1. मन्दोष्ण क्षीरीकषाय 2. सर्वगन्धयुक्त जल 3. प्रतप्त रजत/स्वर्ण जल 4. कोष्ण जल से
   सुश्रुत – (5) – 5. कपित्थ पत्र कषाय से

3. **मुख विशोधनम् :–** 'अथास्थ **ताल्वोष्ठ–कण्ठजिह्वा प्रमार्जनं** आरभेताङ्गुल्यां सुपरिलिखितनखया सुक्षालितो–पधान कार्पासपिचुमत्या। प्रथमं प्रमार्जिततास्य चास्य **शिरस्तालु कार्पास पिचुनास्नेह गर्भेण** प्रति संच्छादयेत्।

4. **गर्भोदक वमन :– ततोऽस्यान्तरं सैन्धवोपहितेन सर्पिषां कार्य प्रच्छदर्नम्।**(जातमात्र का मुखशोधन – सैंधव सर्पि से।

5. **नाभिनाल छेदन :–** नाभिबन्धनात् **प्रभृत्याष्टाङ्गुलमभिज्ञानं कृत्वा** छेदनावकाशस्य द्वयोरन्तरयोः शनैः गृहीत्वा **तीक्ष्णेन रौक्यराजतयसानां छेदनानाम्** अन्यतमेन् **अर्द्धधारेण** छेदयेत्। तामग्रे सूत्रेणोपनिबद्धय कण्ठेडस्य शिथिलमवसृजेत्।
   नालछेदन – चरक, सुश्रुत – 8 अंगुल अष्टांग हृदय – 4 अंगुल।

नाभिपाक में :– लोध्र मधुकप्रियंगुसुरदारू हरिद्राकल्क सिद्धेन तैल का अभ्यंग करें।
असम्यक् नाभिछेदन से आयाम, व्यायाम अधिक होने से – 1. उत्तुण्डिता 2. पिण्डलिका 3. विनामिका 4. विजृम्भिका
चिकित्सा – वातपित्त शामक अभ्यंग, उत्सादन परिषेक तथा **वातपित्तशामक घृत।** (कुष्ठतैल – वाग्भट्ट)

6. **जातकर्म :–** ततोऽनन्तरं जातकर्म कुमारस्य कार्यम् तद्यथा– **मधुसर्पिषी मन्त्रोपमन्त्रिते** यथान्याम्यं प्रथमं प्राशितं दद्यात् स्तनमतोर्ध्वमेतेनैव विधिना दक्षिण पातुं पुरस्तात् प्रयच्छेत्।
   अथातः शीर्षतः स्थापयेदुदकुम्भं मन्त्रोपमन्त्रितम्।
   1. शास्त्रोक्त कुलपरम्परा के अनुसार मन्त्रों से अभिमन्त्रित मधु सर्पि पहले बालक को चाटने को दें।
   2. इसी प्रकार मन्त्रपाठ के बाद पहले दाहिना स्तन पीने के लिए दें। (चरक ने प्रथम दिन ही 'स्तनपान' बताया है)
   प्रथम स्तन्य – मोहठ/पीयूष कहलाता है – हारित ने इसका निषेध बताया है।

7. रक्षाकर्म :–1. आदानी, खदिर, बदिर, पीलू, परूषक इन वृक्षों की शाखाओं को सूतिकागार के चारों ओर लटका दें।
2. सूतिकागार के चारों ओर एवं आंगन में पीली सरसों, अतीस और चावल के दानों को बिखेर देवें।
3. द्वार की चौखट पर मूसल तिरछी अवस्था में रख दें। – 6 दिन रक्षा कर्म करने चाहिए।

नामकरण :– चरक, सुश्रुत – 10 वें दिन, वाग्भट्ट–10/12वें दिन। बच्चे का पिता बच्चे के दो नाम रखें।
1. नाक्षत्रिक नाम – जन्म नक्षत्र के देवता के समान अर्थ का बोधक 2/4 अक्षर का।
2. आभिप्रायिक नाम – माता–पिता को पसंद हो। ऐसा पुकारने वाला नाम होता है।
– नामकर्मणि कुमारं परीक्षितुम् उपक्रमेत् **आयुषः प्रमाणज्ञान हेतोः।**

धात्री परीक्षा :– **1. समान वर्णा 2. युवा 3. उत्तम कुलोत्पन्न 4. स्तन, स्तन्य सम्पत्।**

स्तन सम्पत :–
1. न अधिक ऊँचे
2. न बहुत लम्बे
3. न बहुत कृश
4. न बहुत मोटे
5. स्तन, चूचूक सम्यक
6. शिशु को स्तनपान में सुगमता हो

स्तन्य सम्पत :–
1. प्राकृत (स्वाभाविक) – वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श वाला।
2. जलयुक्त पात्र में दुहे जाने पर उसमें मिलकर एकरस हो जाए।
3. शिशु के लिए – **(तत् पुष्टिकरम् आरोग्यकरं चेति स्तन्यसम्पत्)।**

AYURVEDA P.G. ENTRANCE ... NEELIMA SINGH LODHI ... COACHING CENTER

स्तन्यवर्धक – 1. **क्षीर जननानि तु मद्यानि सीधु वर्ज्यानि।** – सीधु को छोड़कर शेष सभी मदिरा **स्तन्यवर्धक** है।
2. ग्राम्य, आनूप, जलीय – शाक, धान्य, मांस – सभी दुग्धजनक।
3. द्रव, मधुर, अम्ल, लवण भूयिष्ठ आहार – दुग्धजनक।
4. स्तन्यजनन महाकषाय, क्षीरपान और अनायास (विश्राम करना) – दुग्धजनक।

–: विकृत दुग्ध के लक्षण :–

	विकृत वातज दुग्ध	विकृत पित्तज दुग्ध	विकृत कफज दुग्ध
1. वर्ण	याव, अरूण वर्ण	कृष्ण, नील, पीत, ताम्रवर्ण	अत्यर्थ श्वेत
2 रस	–	तिक्त, अम्ल रस	अति मधुर
3. अनुरस	**कषाय अनुरस**	**कटु अनुरस**	**लवण अनुरस**
4. गन्ध	गन्धहीन	**कुपण (मुर्दे)/रक्त गन्धी**	**घृत–तल–वसा–मज्जा गन्धी**
5. जल में	**तैरता रहता है।**	**पीली रेखाएँ छोडता है।**	**डूब जाता है।**

कुमारागार
कुमार के वस्त्र
बाल क्रीडनक
– वर्णन चरक ने

कुमाराधार का वर्णन – वाग्भट्ट ने

कुटागार = गर्भाशय (चरक)

मणिधारण :– बालक को ग्रीवा या बाहु में मणियों को धारण करना चाहिएं
1. जीवित खड्ग, रूरू + गवय वृषभ – दायें सींग के अग्रभाग को धारण करे।
2. ऐन्द्री आदि गर्भस्थापक औषधियों को और जीवक ऋषभक को भी धारण करें।

न ह्यस्य वित्रासनं साधु :– बच्चे को डराना अच्छा नहीं होता है। (च. शा. 8/64)

श्री गणेशाय नमः **"चरक इन्द्रिय स्थान"** जय महाकाल

Shyam -Vidya Ayurved P.G. Entrance Coaching Center, Bhopal (M.P.)

By- Dr. N.S. Lodhi (M.D.) Mob. - 09300961664, 09993961427

1. वर्णस्वरीय अध्याय

अरिष्ट :– हिंसार्थक **रिष धातु** के कर्ता में **क्त प्रत्यय** होकर **नञ समास** करके अरिष्ट शब्द बनता है।
जिन लक्षणों से रोगी के निशचित ही होने वाली मृत्यु का ज्ञान होता है। उन्हें अरिष्ट या रिष्ट कहते है।

- ✓ **नियतमरणख्यापकं लिंगम् अरिष्टम्। – माधव निदान।**
- ✓ **'रोगिणो मरणं यस्मादवश्यं भावि लक्ष्यते। तल्लक्षणमरिष्टं स्याद् रिष्टमप्यभिधीयते' – भावप्रकाश।**

इन्द्रियस्थान :– इन्द्र शब्देन आत्म उच्यते, तस्यान्तगर्तस्य लिंङ्ग रिष्टाख्यमिन्द्रियम्। – (चक्रपाणि)

इन्द्र आत्मा को कहते हैं और शरीर में उसकी स्थिति के ज्ञापक चिह्न को इन्द्रिय कहते हैं।
अरिष्ट रूपी इन्द्रिय का प्रतिपादक होने से इस स्थान का नाम 'इन्द्रियस्थान' है।

अरिष्ट विज्ञान के परीक्ष्य भाव :– अरिष्ट भाव दो प्रकार के होते है। 1. नियत 2. अनियत – **(चक्रपाणि)**

1. **पुरुष आश्रित** :– वर्ण, स्वर, गंध, छाया, प्रभा – प्रकृति और विकृति द्वारा परीक्षा करें।
2. **पुरुष अनाश्रित** :– दूत, मार्गसंबंधी, रोगी के घर संबंधी अरिष्ट – आप्तोपदेश, युक्ति द्वारा परीक्षा करें।

प्रकृति – 6– 1. जाति प्रसक्ता 2. कुल प्रसक्ता 3. देशानुपातिनी 4. कालानुपातिनी 5. वयोऽनुपातिनी 6.प्रत्यात्मनियता

विकृति – 3 – **1. लक्षणनिमित्ता –** जिसमें शरीर [illegible] के अनुसार कारण के सदृश अरिष्ट उत्पन्न हो।
2. लक्ष्यनिमित्ता – यस्या उपलभ्यते निमित्तं [illegible] निदानेषु। – जिसका कारण स्पष्ट हो।
3. निमित्तानुरूपा – निमित्तानुरूपा तु निमित्तार्थानुकारिणी। – आयु प्रमाण ज्ञान में निमित्त होती है।

प्राकृत वर्ण :– 4 – (1) कृष्ण (2) श्याम (3) श्यामावदात (4) अवदात।
विकृत वर्ण :– 5 – (1) नील (2) श्याव (3) ताम्र (4) हरित (5) शुक्ल।

नीलश्यावताम्रहरितशुक्लाश्च वर्णाः शरीरस्य वैकारिका भवन्तिः। (च. इ. 1/9)

प्राकृतिक स्वर :– हंस, कौंच, नेमि, दुन्दुभि, कलविंङ्क, काक, कपोत और जर्जर – इनके स्वरों की अनुकृति वाले (तुल्य) प्राकृतिक स्वर होते हैं।
वैकारिक स्वर :– एड (मिमियाना), ककल (धीमा), ग्रस्त, अव्यक्त, गदगद, क्षाम, दीन और अनुकीर्ण स्वर वैकारिक होते हैं।

- ✓ मुख पर पिप्लु, व्यंग, तिलकालक और पिडकाएं उत्पन्न होना अशुभसूचक है।
- ✓ मुख के आधे भाग में स्निग्धता और आधे भाग में रूक्षता अथवा
  मुख के आधे भाग में ग्लानि और आधे भाग में हर्ष परिलक्षित हो रहा है – तो यह प्रेत का लक्षण है।
- ✓ ओष्ठों का पक्व जम्बु के समान नीला पड़ जाना गतायुष का लक्षण है।

2. पुष्पितक अध्याय

पुष्पं यथा पूर्वरूपं फलस्येह भविष्यतः। यथा लिंगमरिष्टाख्यं पूर्वरूपं मरिष्यतः। (च. इ. 2/3)

पुष्पित पुरुष की मृत्यु 1 वर्ष के अन्दर हो जाती है।
जिस पुरुष के शरीर से किसी एक फूल के गन्ध के समान गंध निकलती है वह गंध चाहे सुगन्ध हो, चाहे वह दुर्गन्ध हो, वह पुरूष **'पुष्पितं'** कहा जाता है।

1. **शुभ गन्ध** :– **चन्दन, कुष्ठ, तगर, अगरू, मधु और माली।**
2. **अशुभ गन्ध** :– मूत्र, पुरुष, मृत पशु, मनुष्य, कुणप गंध।

3. परिमर्शनीय अध्याय

✓ स्पर्श के द्वारा होने वाले मुमूर्षू जनों के लक्षणों का वर्णन 'परिमर्शनीय इन्द्रिय अध्याय' में है।

1. रोगी की मन्याएँ (गलपार्श्ववर्ती धमनियाँ) स्पर्श करने पर स्पंदन करती हुई न प्रतीत हो।
2. रोगी के पक्ष्म के बाल परस्पर उलझकर अकारण ही जटाबद्ध हो जाये।
3. रोगी के नेत्र कृष्ण, पीत, नील, श्याव, ताम्र, हरित, हारिद्र और शुक्ल में से किसी एक वर्ण के हो जाए।
4. **रोगी के बालों को पकड़कर खींचने पर रोगी को वेदना न हो।**
5. रोगी की अंगुलियों को खींचने पर उनके पुटकने की आवाज (स्फुटन) न हो तो – **उस रोगी की मृत्यु आसन्न समझे**

4. इन्द्रियानीक अध्याय

नेत्रादि पन्चेन्द्रियों की परीक्षा '**अनुमान**' से करना चाहिए। ✓

योऽग्निं प्रकृतिवर्णस्थं नीलं पश्यति निष्प्रभम्। कृष्णं वा यदि वा शुक्लं निशां व्रजति सप्तमीम्।। (च. इ. 4/11)

जो रोगी अपने स्वाभाविक वर्ण वाली अग्नि को नीलवर्ण या कान्तिहीन या कृष्ण अथवा श्वेत वर्ण की देखता हैं। वह 7 रात्रि के बाद मर जाता है।

5. पूर्णरूपीय अध्याय

असाध्य रोगों के भिन्न भिन्न पूर्णरूपगत अरिष्टों का वर्णन 'पूर्णरूपीय इन्द्रिय अध्याय' में है।

1. जो व्यक्ति स्वप्न में यह देखता है कि वह नग्न होकर शरीर में घी लगाकर अप्रज्वलित अग्नि में हवन कर रहा है और उसके वक्षस्थल पर कमल के फूल उत्पन्न हो गये तो कुष्ठरोग होकर उसकी मृत्यु हो जाती है।

स्नातानुलिप्तगात्रेऽपि यस्मिन् गृध्नन्ति मक्षिकाः" – प्रमेह रोग का पूर्वरूप विषयक अरिष्ट है।

स्वप्न के भेद – 7 – दृष्टं श्रुतानुभूतं च प्रार्थितं कल्पितं तथा। भाविकं दोषजं चैव स्वप्नं सप्तविधं विदुः। (च. इ. 5/43)

1. दृष्ट 2. श्रुत 3. अनुभूत 4. प्रार्थित 5. कल्पित – **निष्फल** स्वप्न होते हैं।

6. भाविक 7. दोषज – **फलित** स्वप्न होते हैं।

जो स्वप्न रात्रि के प्रथम प्रहर में देखा जाता है उसका फल कम होता है।

जिस स्वप्न को देखने के बाद फिर नहीं सोया जाता है वह स्वप्न अपना पूर्ण फल देने वाला होता है।

–: काश्यपानुसार :–

1. निष्फल स्वप्न – 10 :– (1) प्राथित (2) कल्पित्त (3)दृष्ट (4) अनुश्रुत (5) श्रुत (6) भावित (7) ह्रस्व (8) दीर्घ (9) दिवास्वप्न (10) दोषज। – ये सब स्वप्न 'निष्फल' होते है।

2. फलदायी स्वप्न – 6 :–1. अदृष्ट 2. अश्रुत 3 अभुक्त 4. अकल्पित 5. अभाषित 6. जो केवल कार्य मात्र हो।

6. कतमानि शरीरय अध्याय

1.दुर्बल रोगी में आनाह + अतिसार अथवा आनाह + अतितृष्णा दोनों रोग हो जाए तो उसका जीवित रहना दुर्लभ है।

7. पन्नरूपीय अध्याय

1. 'पन्न' का अर्थ नष्ट होना है। नेत्र की पुतली के लिए "**कुमारिका**" भाब्द का प्रयोग किया है।

2. संस्थान :– संस्थानं आकृतिः श्रेया सुषमा विषमा च सा। संस्थान आकृति को कहते हैं – 2 भेद– 1. सुषमा 2. विषमा।

3. शरीर प्रमाण :– (1) मध्य (2) अल्प (3) महान्।

शरीर के प्रमाण एवं आकार के सदृश जल और दर्पण में जो प्रतिबिम्ब दिखलायी देता है उसे प्रतिच्छाया कहते हैं। छाया वर्ण और प्रभा पर आश्रित है।

छाया के भेद – 5 –	1. नाभसी	–	निर्मल, नील, सस्नेह, **सप्रभा** (प्रभायुक्त)।
	2. वायवी	–	यक्षा, श्याव, अरूणा, **हतप्रभा** (प्रभाहीन)।
	3. आग्नेयी	–	विशुद्ध रक्त वर्ण वाली, दीप्ताभा, **दर्शनप्रिया।**
	4. अम्भसी	–	**शुद्धवैदूर्यविमला**, सुस्निग्धा।
	5. पार्थिवी	–	स्थिरा स्निग्धा घना **शलक्षणा श्यामा श्वेता** च पार्थिवी।

प्रभा के भेद (7) :— 1. रक्त, पीत, श्वेत, श्याव, हरित, पाण्डुर, असित। — सभी प्रभा तेज (अग्नि) से उत्पन्न होती है।
छाया और प्रभा में अन्तर :— छाया वर्ण को आक्रान्त कर आच्छादित करती है और प्रभा वर्ण को प्रकाशित कर प्रकट करती है।

1. सप्ताहिक अरिष्ट :— उत्थाप्यमानः शयनात्प्रमोहं याति यो नरः।
जिस रोगी को मनुष्य नींद से जगाने पर भी पुनः पुनः मूर्छित हो जाये वह 7 दिन के भीतर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

2. पाक्षिक अरिष्ट :— संसृष्टा व्याधयो यस्य प्रतिलोमानुलोमगाः। व्यापन्ना ग्रहणी प्रायः सोऽर्धमासं न जीवति।
जिस रोगी में एक ही साथ प्रतिलोम एवं अनुलोम मार्गागामी रोग (उर्ध्वग एवं अद्योग रक्तपित्त) एवं ग्रहणी विकृत हो जाए तो वह रोगी **15 दिन** भी जीवित नहीं रहता है।

8. अवाक् शिरसीय अध्याय

जिस मनुष्य के रूप में परछाई में शिर नीचे किया प्रतिबिम्ब दीख पड़े या शिर टेढ़ा दिखायी दें अथवा बिना शिर की परछाई दिखायी है उसकी चिकित्सा की इच्छा न करें।

आयम्योत्पाटितान् केशान् यो नरो नावबुध्यते। अनातुरो वा रोगी वा षड्रात्रं नातिवर्तते। (च. इ. 8/8)
जो पुरूष शिर के बालों को खींचकर उखाड़ लेने पर किसी प्रकार की वेदना का अनुभव नहीं करता है वह निरोग हो या रोगी 6 दिन से अधिक नहीं जीवित रहता है।

9. यस्य श्यावनिमित्तीय अध्याय

अष्ट महारोग :— वातव्याधिरपस्मारी कुष्ठो शोफी तथोदरी गुल्मी च मधुमेही च राजयक्ष्मा च यो नरः।। (च. इ. 9/8)
अचिकित्सा भवन्त्येते बलमांसक्षये सति। अन्येष्वपि विकारषु तान् भिषक् परिवर्जयेत्।। (च. इ. 9/9)

1.वात व्याधि 2. शोफ 3. गुल्म 4. कुष्ठ 5. मधुमेह 6. राजयक्ष्मा 7. उदररोग 8. अपस्मार।

1.वात व्याधि	2. अर्श	3. भगन्दर	4. अश्मरी	5. प्रमेह	6. कुष्ठ	7. उदररोग	8. ग्रहणी। — वाग्भट्ट।
1.वात व्याधि	2. अर्श	3. भगन्दर	4. अश्मरी	5. प्रमेह	6. कुष्ठ	7. उदररोग	8. मूढगर्भ। — सुश्रुत।

1. जिस व्यक्ति का **निष्ठीवन पुरीष एवं रेत** जल में डूब जाता है। — वह शीघ्र ही मर जाता है।
2. **पित्तमूष्मानुगं यस्य शंखौ प्राप्य विमूर्च्छति। स रोगः शंखको नाम्ना त्रिरात्राद्धन्ति जीवितम्।** (च. इ. 9/20)
जिस रोगी का पित्त शारीरिक ताप के साथ शंखप्रदेश में चला जाता है। वह 'शंखक' रोग का रोगी **3 दिन/रात में** मर जाता है।

त्रिपक्ष का अरिष्ट :— बलमांसक्षयस्तीव्रो रोगवृद्धिररोचकः। यस्यातुरस्य लक्ष्यन्ते त्रीन् पक्षान्न स जीवति। (च. इ. 9/22)
1. जिस रोगी में तीव्रता से बल तथा मांस का क्षय हो रहा हो **2.** रोगवृद्धि हो रही है **3.** अरूचि हो — वह 3 पक्ष (45 दिन) में कर जाता है।

10. सद्योमरणीय अध्याय

सद्यः शब्देनेह केचित् सप्तरात्रमिच्छन्तिए अपरे त्रिरात्रम् — (चक्रपाणि) — सद्यः शब्द का अर्थ 7 — 3 रात्रि तक कहा है।
उदा. — कण्ठे घुर्घरकं कृत्वा सद्यो हरति जीवितम्। (च. इ. 10/18)

11. अणु ज्योतीय अध्याय

1 वर्ष के अरिष्ट :— (1 पुष्पित, आग्नेय, तारे की, बली)
1. **पुष्पित व्यक्ति** 1 वर्ष के भीतर मर जाता है।
2. जिस व्यक्ति में सभी **आग्नेय भाव** (जठराग्नि, कान्ति, पित्त, प्रभा) नष्ट हो गए हो।
3. जो व्यक्ति सप्तर्षियों के निकट स्थित अरून्धती तारे को नहीं देखना हो।
4. जिस व्यक्ति के हाथों से दी हुई **बलि** खाने वाले जीव नहीं खाते है।

6 माह के अरिष्ट :– (6 वीं बार ललाट पर चन्द्रसम व्रक रेखाओं/धमनियों का जाल)

1. जिस व्यक्ति की इच्छा, अभ्यास, स्मरणशक्ति, त्याग, बुद्धि और बल – ये सब अकारण ही नष्ट हो जाते हो।
2. ललाट में धमनियों का अत्यंत सुंदर जाल शोभायमान हो जाए।
3. ललाट चन्द्रमा के समान आवेग व्रक्र (टेढ़ी) रेखाओं से भरा हुआ दिखलायी देता है।

– उसका अन्त 6 माह में हो जाता है।

1 महीने के अरिष्ट :–

1. शरीरकम्पन + सम्मोह + गर्तिवचन + मत्तयुक्त व्यक्ति।
2. **मल, मूत्र और शुक्र पानी में डालने पर डूब जाये** + स्वजन द्वेष्टा।
3. हस्त, पाद और मुख में शुष्क हो गये हों किन्तु शेष शरीर यथावत हो ऐसा व्यक्ति 1 माह में मर जाता है

शीघ्र मारक अरिष्ट :–

1. जिस व्यक्ति के ललाट, मूर्धा, बस्ति के ऊपर बालचन्द्र के समान कुटिल नीली रेखाएं दिखना।
2. **प्रवालगुटिकाक्रान्ताः यस्य गात्रे मसूरिकाः। (च. इ. 11/14)– सद्यः मारक है।**

अरिष्ट :– क्रियापथमतिक्रान्ताः केवलं देहमाप्लुताः। चिहं कुर्वन्ति यत् दोषास्तद् अरिष्ट निरूच्यते।। (च. इ. 11/29)

12. गोमय चूर्णीय अध्याय

यस्य गोमयचूर्णाभं चूर्ण मूर्धनि जायते। सस्नेहं भ्रश्यते चैव मासान्तं तस्य जीवितम्। (च. इ. 12/3)

जिसके शिर में गोबर के चूर्ण की तरह चूर्ण उत्पन्न हो जाए और गिरता हो तो वह रोगी 1 माह तक ही जीवित रहता है।

मारणायेह रूपाणि पश्यताऽपि भिषग्विदा। अपृष्टेन न वक्तव्यं मरणं प्रत्युपस्थितम्।। (च. इ. 12/62)

बिना पूछे रोगी को अरिष्ट लक्षणों की उपस्थिति को न बतलाए।

15 दिन का अरिष्ट :– (चरक, वाग्भट्ट – उर प्रदेश, सुश्रुत – हृदय, काश्यप – कुक्षि प्रदेश)

स्नान करके चन्दन आदि का लेपन करने के बाद जिसका पहले **उर प्रदेश (वक्षःस्थल)** का भाग सूखता है और शेष अंग आर्द्र रहते हैं तो ऐसा व्यक्ति ½ मास जीवित नहीं रहता है।

1. **दूतगत अरिष्ट** – विकलांग, संयान्सी, ब्रह्मचारी, या गैरिक वस्त्रधारी दूत।
2. **रोगी के घर जाते मार्ग के अरिष्ट** – बिल्ली, कुत्ता या सर्प द्वारा रास्ता काटना।
3. **रोगी के घर के अरिष्ट** – जलपात्र, अग्नि, मिट्टी, बीज, फल, घी, बैल, ब्राह्ममण, रत्न, अन्न का घर से बाहर जाना।
4. **मरणासन्न के लक्षण** – मरणासन्न व्यक्तियों के नखों में फूल जैसे चिह्न उत्पन्न हो जाते है।

1. **उत्तम दूत के लक्षण** :– सदाचारी, सर्वांग सम्पन्न, शुक्ल वस्त्र धारण किये हो।
2. **शुभ सूचक शाकुन** :– दही, अक्षत, द्विजाति, बैल, राजा, रत्न, पूर्णकुम्भ, सफेद घोड़ा, सुरध्वजपताका आदि।
3. **रोगी के घर शुभ लक्षण** :– मंगलाचार सम्पन्न आतुर, श्रद्धालु, अनुकूल रहना, धन संग्रह होना है।
4. शुभ स्वप्न :– (1) **मांसमत्स्यविषामेध्यच्छत्रादर्शपरिग्रह स्वप्ने,** सफेद फूल देखना – **शुभ** फल।
   (2) प्रसन्न देवताओं और प्रसन्न पितरों के साथ वार्तालाप करना – **शुभ** फल।
   (3) अश्व, गोरथ में सवार होकर पूर्व या उत्तर दिशा में यात्रा करना– **शुभ** फल।

गोमय चूर्णीय इन्द्रिय नामक अध्याय में दूत, स्वप्न, रोगियों से सम्बद्ध अरिष्ट, युक्ति और सिद्धि मृत्यु के और आरोग्य के लक्षणों को कहा गया है।

✓ **सुश्रुत संहिता में सूत्रस्थान के अध्याय 28–32 में अरिष्ट का वर्णन है।**

✓ **अश्टांग ह्रदय में शारीर स्थान के अध्याय 5–6 में अरिष्ट का वर्णन है।**

Shyam -Vidya Ayurved P.G. Entrance Coaching Center Bhopal (M.P.)
By - Dr. N. S. Lodhi (M.D.) Mob. 09300961664, 09993961427

1. रसायन चिकित्सा

रसायन चिकित्सा – इसके 4 पाद अथवा उपाध्याय है और कुल योग – 63 है।

पाद का नाम	योग	योग का नाम
1. अभयामलकीय	6	ब्रह्म रसायन प्रथम, द्वितीय, आमलक रसायन, **च्वयनप्राश**, 5, 6 हरितक्यादि रसायन
2. प्राणकामीय	37	शतपाक, सहस्रपाक, आमलक घृत, आमलक चूर्ण, आमलकावलेह,अपर आमलकावलेह, विडंगावलेह, **नागबला रसायन** + 19 बलादि रसायन + **भल्लातक के 10 योग।**
3. करप्रचितीय	16	**4 मेध्य रसायन,** 4 त्रिफला, 2 पिप्पली रसायन, **पिप्पलीबर्द्धमान रसायन,** ऐन्द्र रसायन, **शिलाजतु रसायन,** लौहादि रसायन, केवलामलक रसायन, आमलकायस रसायन
4.आयुर्वेद समुत्थानीय	4	इन्द्रोक्त रसायन प्रथम एंव द्वितीय, **द्रोणी प्रवेशिक रसायन, आचार रसायन।**

1. अभयामलकीय रसायन पाद

भेषज के पर्याय – 9 :– चिकित्सितं व्याधिहरं पथ्यं साधनमौषधम्। प्रायश्चितं प्रशमनं प्रकृतिस्थापनं हितम्। (च. चि. 1/3)
1.चिकित्सित 2. व्याधिहर **3. पथ्य** 4. साधन 5. औषध 6. प्रायश्चित् 7. प्रशमन 8. प्रकृतिस्थापन 9. हित।

भेषज के भेद :– 2 – **1. स्वस्थस्योर्जस्करं** – स्वस्थ व्यक्ति के उत्तम भाव को बढ़ाने वाला।
2. आर्त्तस्य रोगनुत् – रोगाक्रान्त व्यक्ति के रोग को दूर करने वाला।

अभेषज के भेद :– 2 – 1. बाधन – अल्पकालिक अपथ्य से रोग का होना।
2. सानुबाधन – दीर्घकालिक अपथ्य से रोग का होना।

अनौषधं पुनर्द्विविधमेव। बाधनमनुबाधनं च। तत्र सद्यःप्राणहरं बाधनम्। कालान्तरेणानुबधानमिति। (अ. सं. सू. 22/10)
(अष्टांग संग्रह – अनौषध के भेद – 2 – 1. बाधन 2. अनुबाधन)

रसायन :–
1. **स्वस्थस्योर्जस्करं यत्तु तद्वृष्यं तद् रसायनम्। (च. चि. 1/5)**
2. **लाभोपायो हि शस्तानां रसादीनां रसायनम्। (च. चि. 1/8)**
3. **रसायनं च तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशम्। (शारंर्धर पू. ख. 4)**

रसायन के गुण :– दीर्घमायुः स्मृतिं मेधामारोग्यं तरूणं वयः। प्रभावर्णस्वरौदार्य देहेन्द्रियबलं परम्।।
वाक्सिद्धि प्रणति कान्ति लभते ना रसायनात्। (च. चि. 1/7)

रसायन के भेद :– प्रयोग विधि से रसायन 2 प्रकार का होता है – 1. कुटी प्रावेशिक 2. वातातपिक।
कुटी का निर्माण **पूर्व–उत्तर दिशा** में करें। इन दोनो में विधियों में कुटी प्रावेशिक **मुख्य** और वातातपिक गौण विधि है।

प्रयोजन भेद से :–

1. **काम्य रसायन** :– ब्रह्मरसायन, आमलक रसायन, आमलकावलेह, विडंगावलेह, **पिप्पली रसायन,** नागबला रसायन आदि
2. **नैमित्तिक रसायन** – खदिर रसायन, असन रसायन, मधुक रसायन, अमृता रसायन, धात्री रसायन, त्रिफला रसायन, **पिप्पली वर्द्धमान रसायन,** मेध्य रसायन, मण्डूक पर्णी, ब्रह्मी घृत।
3. **आजस्रिक रसायन** :– शीतल जल, दुग्ध, मधु, घृत, वेगविधारण, ब्रह्मचर्य, अहिंसा, साहसवर्जन।

रसायन और बाजीकरण इन दोनो में रसायन का प्रयोग उत्तम माना जाता है क्योंकि रसायन के प्रयोग से शरीर में **'सात्विक गुणों'** की और बाजीकरण के प्रयोग **'राजस गुणों'** की वृद्धि होती है।

रसायन सेवन से पूर्व शोधन :– रसायन सेवन से पूर्व शरीर का संशोधन अति आवश्यक है।
शोधन द्रव्य :– हरीतिकी चूर्ण, सैंधव, आमलकी + सोंठ, पिप्पली, गुड + विडंग, वचा, हरिद्रा को उष्ण जल से देवें।

संसर्जन क्रम :– शोधन पश्चात् प्रवर, मध्यम, हीन शुद्धि में क्रमशः **7, 5 ,3 दिन तक यवागू पान करायें।**

हरीतिकी के गुण – हरीतकीं पञ्चरसामुष्णामलवणां शिवाम्। दोषानुलोमनीं लघ्वीं विद्यात् दीपन पाचनीम्। **(च. चि. 1/29)**
आयुष्यां पौष्टिकीं धन्यां <u>वयसः स्थापनी पराम्।</u> **सर्वरोगप्रशमनी बुद्धीन्द्रिय बलप्रदाम्। (च. चि. 1/30)**

रोगघ्नता :– 1. अर्शांसि ग्रहणीदोषं पुराणं विषमज्वर। 2. स्मृतिबुद्धिप्रमोहं च जयेच्छीघ्रं हरीतकी।

हरीतिकी का निषेध :– अजीर्णिनो रूक्षभुजः स्त्रीमद्यविषकर्शिताः। सेवेरन्नाभयामेते क्षुत्तृष्णोष्णार्दिताश्च ये। (च. चि. 1/35)
अजीर्ण, रूक्षभोजी, स्त्रीसेवी, मद्यसेवी, विषसेवन से कर्शित, तृष्णा, क्षुधा, उष्णता से पीडित रोगी मे हरीतिकी का निषेध है।

हरीतिकी और आमलकी में अंतर :–
हरीतिकी और आमलकी दोनों के गुणकर्म समान है। किन्तु हरीतिकी – **उष्ण वीर्य** और आमलकी – **शीत वीर्य** है।
अतश्चामृतकल्पानि विद्यात् कर्मभिरीदृशैः। हरीतकीनां <u>शस्यानि</u> भिषगामलकस्य च। (च. चि. 1/36)
हरीतिकी और आमलकी के शस्यानि (गुठली रहित फल) – अमृत के समान हितकारी है।

1. ब्रह्म रसायन प्रथम

पंचानां पंचमूलानां भागान् दशपलोन्मितान्। हरीतकीसहस्र च त्रिगुणामलकं नवम्।। (च. चि. 1/41)

पंच पंचमूल :– 10 –10 पल (प्रत्येक द्रव्य 2 –2 पल)
1. लघुपंचमूल
2. वृहतपंचमूल
3. **जीवनीयपंचमूल**
4. **मध्यम पंचमूल**
5. तृणपंचमूल

हरीतिकी – 1000।
आमलकी – 3000।
मिश्री – 1100 पल।
तिलतेल – 2 आढक।
गोघृत – 3 आढक।
मधु – 2 1/2 आढक।

मात्रा :– 1 काल में 'नोपरून्ध्यादाहारमेकं मात्रा'। अनुपान – 'षष्टिकः पयसा'।

2. ब्रह्म रसायन द्वितीय

1000 हजार ऑवलों का चूर्ण + 1000 – 1000 आमलकी, नागबला स्वरस की भावना। **मात्रा** :– 1/2 कर्ष बढाते हुये।
आमलक चूर्ण के 1/8 भाग **स्वर्णभस्म,** रजतभस्म, ताम्र भस्म, प्रवालभस्म और लौह भस्म।

3. च्वयनप्राश रसायन

ऑवला – 500। **क्वाथ द्रव्य** :– कुल 36 द्रव्य 1–1 पल। **प्रक्षेप द्रव्य** – 7।
क्वाथ द्रव्य में अष्टवर्ग घटकों में से महामेदा, क्षीरकाकोली, वृद्धि शामिल नही है।
मात्रा – अस्यं मात्रां प्रयुंजीत योपरून्ध्यान्न भोजनम्।
फलश्रुति :– मेधां स्मृति कान्तिमनामयत्वमायुः प्रकर्ष बलमिन्द्रियाणाम्। (च. चि. 1/73)

4. आमलक रसायन – 4 विधियॉं

1. आमलकी + हरीतकी 2. आमलकी + विभीतकी 3. हरीतकी + विभीतकी 4. हरीतकी + आमलकी + विभीतकी।
नोट :– इसके सेवन काल में अन्नाहार का परित्याग कर दें।

5. हरितक्यादि रसायन

घटक द्रव्य :– त्रिफला, पंचपंचमूल, पिप्पली, मधूक, मधुक, जीवक, ऋषभक, काकोली, क्षीरकाकोली।
भावना :– विदारीकन्द स्वरस + अष्टगुण क्षीर की।

6 . हरितक्यादि रसायन

घटक द्रव्य :– त्रिफला, 1/4 भाग लौह भस्म, गुडूची, सोमवल्क।
भावना :– आमलकी स्वरस की 100 भावना। **मात्रा** :– 1 पादिपल (1 कर्ष) मात्रा।
यथाऽमराणाममृतं यथा भोगवतां सुधा। तथाऽभवन्महर्षीणां रसायनविधिः पुरा।। (च. चि. 1/पाद–1/78)
जिस प्रकार देवताओं के अमृत और नागों के लिए सुधा है, उसी प्रकार प्राचीन काल में महर्षियों के लिए रसायनविधि थी

2. प्राणकामीय रसायन पाद

आमलक घृत

भावना :– बला/अतिबला/शतावरी कल्क की 1000 भावना।

आमलकावलेह

घटक द्रव्य :– 1000 आमलक, 1000 पिप्पली, तरूण पलाश क्षारोदक।

अपर आमलकावलेह

घटक द्रव्य :– 1000 आमलक।

विडंगावलेह

घटक द्रव्य :– 6 – वायविडंग, पिप्पली, तैल, घृत, मधु 1–1 आढक + 1½ मिश्री।

19 बलादि रसायन :–

बला, अतिबला, चंदन, अगरू, धव, तिनिश, **खदिर**, शिंशिपा, असन, **गुडूची**, हरीतकी, आमलकी, रास्ना, श्वेत अपराजिता, जीवन्ती, शतावरी, मण्डूकपर्णी, सारिवा, पुनर्नवा – इनका स्वरस दूध के साथ प्रयोग करना चाहिए।

नागबला रसायन

नागबला मूल का संग्रह :– **(तपसि तपस्ये वा मासे शुचिः) माघ या फाल्गुन के महीने मे। (वाग्भट्ट – शरद ऋतु में)**

भल्लातक रसायन

भल्लातक के फलो का संग्रह :– **(शुचौ शुक्रे वा मासे – चरक) ज्येष्ठ या अषाढ महीने मे (वाग्भट्ट – ग्रीष्म ऋतु में)**

प्रयोग विधि :– 1 –1 भिलावे को बढ़ाते हुए 30 तक ले जाएं फिर पुनः 30 से घटाकर 10 भिलावे तक लाते हुए कुल 1000 भिलावों का प्रयोग करना चाहिए।

भल्लातक के 10 योग :– भल्लातक और आमलक रसायन सेवन काल में अन्न निषिद्ध है।

भल्लातक के 10 योग :– तैल, सर्पि, क्षौद्र, पलल, क्षीर, लवण, **गुड, सक्तू, लवण, यूष।**

(भल्लातक सेवन में निषेध :– कुलथी, दही, शुक्त, तैलाभ्यंग और अग्नि सेवन विशेष रूप से निषेध है। – वाग्भट्ट)

भल्लातक के विशेष :– कफजो न च रोगोऽस्ति न विबन्धोऽस्ति कश्चन। य न भल्लातक हन्याच्छीघ्रं मेधाग्निवर्धनम्।

SHYAM-VIDYA AYURVED P.G. ENTRANCE BY: Dr. NEELIMA SINGH LODHI (INDORE) COACHING CENTER

3. करप्रचितीय रसायन पाद

1. **आमलकायस ब्रह्मरसायन** – 1 आढक आमलक चूर्ण, 21 बार आमलक स्वरस की भवना + ⅛ भाग लौह भस्म मिलाकर मधु और घृत से सेवन करें। **फलश्रुति :– जराव्याधिप्रशमनं बुद्धीन्द्रियबलप्रदम्।**

2. **केवलामलक रसायन :– संवत्सरं पयोवृत्तिः गवां मध्ये वसेत् सदा।** 1 वर्ष तक केवल दूध का सेवन करते गोशाला में रहें। तत्पश्चात सीधे वृक्ष पर चढकर आवले खायें।

3. **लौह रसायन :– धीमान् यशस्वी वाक्सिद्धः श्रुतधारी** महाबलः। **भवेत् समां प्रयुज्जानो नरो लौह रसायनम्।**

4. **ऐन्द्र रसायन :–** ऐन्द्री 3 यव प्रमाण, **स्वर्ण भस्म 2 यव, विष 1 तिल प्रमाण** + घृत 1 फल।

मेध्य रसायन

मण्डूकपर्ण्याः स्वरसः प्रयोज्यः क्षीरेण यष्टीमधुकस्य चूर्णम्। रसो गुडूच्यास्तु समूलपुष्प्याः कल्कः प्रयोज्यः खलु शंखपुष्प्याः।।

1. **मण्डूक पर्णी – स्वरस** – मधु से।
2. **गुडूची – स्वरस** – मधु से।
3. **मधुयष्ठी – चूर्ण** – दूध से।
4. **शंखपुष्पी मूलपुष्प – कल्क** – दूध से।

श्रेष्ठ मेध्य रसायन – शंखपुष्पी :– मेध्यानि चैतानि रसायनानि **मेध्या विशेषण च शंखपुष्पी।।**

— पिप्पली रसायन —

1. **भावना :— पिप्पल्यः किंशुकक्षार भाविता घृतभर्जिताः।** प्रयोज्या मधुसम्मिश्रा रसायनगुणैषिणा।
2. **उपयोग :—** अर्श, ग्रहणीदोष, पाण्डु, **विषमज्वरम्,** स्वरवैषम्य, पीनस, शोफ, गुल्म और वातबलासक ज्वर।
3. प्रातः 3, भोजन से पूर्व 3 और भोजन पश्चात 3 पिप्पली का सेवन करे।

—: वर्द्धमान पिप्पली रसायन :—

पहले दिन 10 पिप्पली दूध के साथ प्रयोग करें और दूसरे से क्रमशः प्रतिदिन 10 पिप्पली बढाते जाए तत्पश्चात् 11 वें दिन से 10– 10 पिप्पली घटाते जाये। इस प्रकार 1000 पिप्पली का प्रयोग इस रसायन में किया जाता है।

आतुर बल	**पिप्पली का स्वरूप**	**चरक**	**सुश्रुत**	**भोज**	**कुल दिन**
1. उत्तम	**पिष्टा (कल्क)**	10	10	10	1000
2. मध्यम	**श्रृता (क्वाथ)**	6	7	7/5	1014
3. हीन	**शीती कृता (चूर्णीकृता)**	3	5	3	1026

फलश्रुति :— बृंहणं स्वर्यमायुष्यं **प्लीहोदरविनाशनम्।** वयसः स्थापनं **मेध्यं पिप्पलीनां** रसायनम्।। **(च. चि. 1/3 पाद/40)**

औषध जीर्ण होने के बाद :— जीर्णे जीर्णे च भुञ्जीत षष्टिकं क्षीरसर्पिषा।

✓ **चरक** – रसायन हेतु **कायश्प** – राजयक्ष्मा में

— 4 त्रिफला रसायन —

त्रिफला रसायन प्रथम :— जरणान्तेऽभयामेकां प्राग्भुक्तात् द्वे बिभीतके। भुक्तवा तु मधुसर्पिर्भ्यां चत्वार्यामलकानि च।।

1. **चरक ने त्रिफला रसायन प्रथम** का प्रयोग समय के अनुसार बताया है :—

त्रिफला रसायन सेवन काल	**मात्रा**
1. भोजन के पूर्व	2 बिभीतक
2. भोजन के बाद	4 आमलकी
3. भोजन के जीर्ण होने पर	1 हरीतिकी

त्रिफला रसायन चतुर्थ :— त्रिफला + **सभी धातुओं की भस्म, स्वर्ण भस्म** + वच, पिप्पली, वायविडंग + मधुसर्पि, लवण।

फलश्रुति :— संवत्सरप्रयोगेण मेधास्मृतिबलप्रदा।

— शिलाजतु रसायन —

1. **शिलाजतु के गुण :— अनम्लं च कषायं च कटु पाके शिलाजतु। नात्युष्णशीतं धातुभ्यश्चतुर्भ्यस्तस्य सम्भवः।।**
   रस – अनम्ल, कषाय। **विपाक** – कटु। **वीर्य** – अनुष्णशीत।
2. शिलाजतु की उत्पत्ति सोने से, रजत से, ताम्र से और कृष्णलौह से होती है।
3. **फलश्रुति :— जराव्याधिप्रशमनं देहादाढर्यकरं परम्। मेधास्मृतिकरं धन्यं क्षीराशी तत् प्रयोजयेत्।। (च. चि. 1/3/53)**
4. **शिलाजतु की मात्रा :—प्रवर मात्रा** – 1 पल – 7 सप्ताह
   मध्य मात्रा – ½ पल – 3 सप्ताह
   अवर मात्रा – 1 कर्ष – 1 सप्ताह
5. शिलाजतु के भेद – **4** प्रकार – स्वर्ण, रजत, ताम्र, लौह – **उत्तरोत्तर श्रेष्ठ।**

भेद	रस	विपाक	वीर्य	वर्ण	दोष
1. स्वर्ण शिलाजतु	मधुर, तिक्त	कटु	शीत	जपापुष्पनिभं	**वातपित्तज**
2. रजत शिलाजतु	**कटुक**	**स्वादु**	शीत	श्वेत	**कफपित्तज**
3. ताम्र शिलाजतु	तिक्त	कटु	**उष्ण**	बर्हिकण्ठाभ	कफ
4. लौह शिलाजतु	तिक्त, लवण	कटु	शीत	गुग्गुलुकाभास	त्रिदोष

6. **शिलाजतु सेवनकाल में अपथ्य :—** विदाही, गुरू अन्नपान व कुलत्थ **(वाग्भट्ट – कुलत्थ, काकमाची व कपोत मांस)**
   शिलाजतुप्रयोगेषु विदाहीनि गुरूणि च। वर्जयेत् सर्वकालं तु कुलत्थान् परिवर्जयेत्।। (च. चि. 1/3/62)
7. **शिलाजतु सेवन :—** दूध, तक्र, मांसरस, यूष, जल, गोमूत्र और विविध कषाय।
8. **फलश्रुति :— न सोऽस्ति रोगो भुवि साध्यरूपः शिलाह्वयं यं न जयेत् प्रसह्य।**

4. आयुर्वेद समुत्थानीय पाद

1. इन्दोक्त रसायन प्रथम :–

इन्दोक्त रसायन प्रथम की औषधियों का सेवन दूध से 6 मास तक करना चाहिए।

2. इन्दोक्त रसायन द्वितीय :–

घटक द्रव्य :– बल्य, बृंहण, जीवनीय और वय स्थापन गण की 40 औषधियाँ + **स्वर्ण,** रजत, ताम्र, लौह भस्म + मुक्ता, प्रवाल, शंख, स्फटिका, वैदूर्य भस्म। मात्रा :– जठराग्नि के बलानुसार ।

औषध जीर्ण होने के बाद :– जीर्णे जीर्णे च भुज्जीत षष्टिकं क्षीरसर्पिषा।

3. द्रोणीप्रावेशिक रसायन – 9 औषध का दूध के साथ 6 माह सेवन।

1. **ब्रह्मसुवर्चला** – हिरण्यक्षीरा, पुष्कर सदृशपत्रा।
2. **आदित्यपर्णी** – सुवर्णक्षीरा, सूर्यमण्डलाकारपुष्पा। सूर्यक्रान्ता भी कहते हैं।
3. **नारी – बल्वज सदृशपत्रा** – इसके पत्ते घास की तरह होते है इसे ***"अश्वबला"*** भी कहते है।
4. **काष्ठगोधा** – काष्ठगोधा नामौषधिः गोधाकारा।
5. सर्पा – सर्पा नामौषधिः सर्पाकारा।
6. सोम – **सोमो नामौषधि राजः पंचदशपर्वा स सोम इव हीयते वर्धते च।**
7. पद्मा – **पद्मा नामौषधिः पद्माकारा पद्मारक्ता पद्मगन्धा च।**
8. अजा – अजा नामौषधिः अजश्रृंगी इति विधीयते।
9. नीला – नीला नामौषधिः नीलाक्षीरा नीलपुष्पा लताप्रतानबहुलेति।

4. आचार्य रसायन

श्रेष्ठ रसायन :– आचार रसायन रसायन श्रेष्ठ – पारद

आचार्य रसायन वास्तव में एक प्रकार का मानसिक रसायन है जिसमें रसायन औषध के प्रयोग के बिना भी केवल सदवृत्त व सदाचार एवं पालन से भी शरीर व मन पर रसायन वत् प्रभाव पड़ता है। और रसायन सेवन के सभी फल प्राप्त होते है।

सत्यवादिनमक्रोधं निवृत्तं मद्यमैथुनात्। अहिंसकमनायासं प्रशान्तं प्रियवादिनम्।
जपशौचंपरं धीरं दाननित्यं तपस्विनम्। देवगोब्राह्मणाचार्यगुरूवृद्धार्चने रतम्।।
आनृशंस्यपरं नित्यं नित्यं करूणवेदिनम्। समजागरणस्वप्नं नित्यं क्षीरघृताशिनम्।
देशकालप्रमाणज्ञं युक्तिज्ञमनहङ्कृतम्। शस्ताचारमसंकीर्णमध्यात्मप्रवणेन्द्रियम्।। (च. चि. 1/पाद 4/30)

✓ आचार्य रसायन में शामिल द्रव्य – 2 – क्षीर, घृत।
✓ आचार्य रसायन में शामिल औषध द्रव्य – शून्य।

अश्विनी कुमारों का चिकित्सा वैशिष्ट्य :– सर्वाधिक प्रसिद्ध देव भिषक। आदर्श भिषक के प्रतीक माने जाते है।

अश्विनौ देवभिषजौ यज्ञवाहाविति स्मृतौ। यज्ञस्य हि शिरश्छिन्नं पुनस्ताभ्यां समाहितम्।
प्रशीर्णा दशनाः पूष्णो नेत्रे नष्टे भगस्य च। वज्रिणश्च भुजस्तम्भसताभ्यामेव चिकित्सितः।।

प्राणाचार्य के गुण :– शीलवान् मतिवान् युक्तो द्विजातिः शास्त्रपारगः। प्राणिभिर्गुरूवत्पूज्यः प्राणाचार्यः स हि स्मृतः।

वैद्य की द्वितीया जाति :– विद्या समाप्तौ भिषजौ द्वितीया जातिरूच्यते। – विद्या अध्ययन पूर्ण हो जाने पर वैद्य का दूसरा जन्म होना कहलाता है।

विद्यासमाप्तौ ब्राह्म वा सत्वमार्षमथापि वा। ध्रुवमाविशति ज्ञानात्तस्माद्वैद्यो द्विजः स्मृतः।। – विद्या अध्ययन समाप्त होने पर वैद्य को **'द्विज'** कहा जाता है। उसका मन ब्राह्म सत्व या आर्ष सत्व से आवेष्टि हो जाता है।

2. बाजीकरण चिकित्सा

बाजीकरण चिकित्सा – इसके 4 पाद अथवा उपाध्याय है। कुल योग – 50 है।

पद का नाम	योग	योग का नाम
1. **संयोगशरमूलीयं**	15	**बृंहणी गुटिका** + 4 वृष्य रस, वृष्य माषयोग, वाजीकरण पिण्डरस, **वाजीकरण घृत।**
2. **आसिक्त क्षीरिकं**	8	**अपत्यकर स्वरस** + वृष्य क्षीर, वृष्य घृत, **वृष्य पूपलिका।**
3. **माषपर्णभृतीय**	15	**अपत्यकर क्षीर** + **वृष्य पूपलिका योग**, वृष्य शतावरी घृत, **अपत्यजनन क्षीरयोग।**
4. **पुमानजातबलादिकं**	12	**अपत्यकर घृत** + वृष्य गुलिका, **वृष्य उत्कारिका।**

1. संयोगशरमूलीयं बाजीकरण पाद

बाजीकरण का प्रयोजन :– वाजीकरण औषध पुत्र होने का कारण है, **4– धर्म, अर्थ, प्रीति व यश** पुत्र पर ही आश्रित है।

सर्वप्रधान वाजीकरण :– वाजीकरणम्रग्यं च क्षेत्रं स्त्री सा प्रहर्षिणी। – स्त्री सर्वश्रेष्ठ वाजीकारक है।

वृष्याणां – नक्र रेतस् व संकल्प (च. सू. 25/400)

वृष्यतमा स्त्री :– सुरूपा, यौवनस्था या लक्षणैर्या विभूषिता। या वश्या शिक्षिता या च सा स्त्री वृष्यतमा मता।।

1. सुरूपा 2. यौवनस्था 3. विभूषिता 4. वश्या 5. शिक्षिता।

संभोग के योग्य स्त्री :– अतुल्यगोत्रां वृष्यां च प्रहृष्टां निरूपद्रवाम्। शुद्धस्नातां व्रजेन्नारीमपत्यार्थी निरामयः।

निःसन्तान पुरूष निन्दनीय :– चित्रदीपः।

सन्तानवान् पुरूष प्रशंसनीय :– **बहुमूर्तिर्बहुमुखो बहुव्यूहो बहुक्रियः। बहुचर्क्षुबहुज्ञानो बहात्मा च बहुप्रजः।**

1. **बृंहणी गुटिका – एष वृष्यः परं योगो बृंहणो बलवर्धनः।**

2. **4 वृष्य रस –** 1. चटक मांस + तित्तिर के मांस रस में। 2. तित्तिर मांस + मुर्गे के मांस रस में। 3. मुर्गे मांस + मोर के मांस रस में। 4. मोर मांस + हंस के मांस रस में।

3. **वृष्य माषयोग –** घृत मिश्रित साठी के भात में उड़द की दाल में मिलाकर, खाकर दूध पियें।

2. आसिक्त क्षीरिकं बाजीकरण पाद

1. **अपत्यकर स्वरस – शतावरी, उदड, केवांच, खर्जूर, सिघांडा, मुनक्का।** 2. वृष्य क्षीर। 3. वृष्य घृत।

3. माषपर्णभृतीय बाजीकरण पाद

1. **वृष्य केवल क्षीरयोग –** माषपर्णभृतां धेनु गृष्टिं पुष्टां।

रोहिणीमथवा कृष्णामूर्ध्वश्रृंगीमदारूणाम् – (रोहिणी अथवा कृष्णा ऊर्ध्वश्रृंगी गाय का – HYB 2009)

2. **5 वृष्य क्षीर प्रयोग – शुक्रल, बृंहण, बल्य, जीवनीय, स्तन्यजनन।**

2. **अपत्यकर क्षीर** 4. अपत्यजनन क्षीरयोग 5. वृष्य पूपलिका योग 6. वृष्य शतावरी घृत।

4. पुमानजातबलादिकं बाजीकरण पाद

1. **अपत्यकर घृत – शतावरी, उदड, केवांच, विदारीकन्द, गोक्षुर।** 2. वृष्य गुलिका – 3. वृष्य उत्कारिका।

यष्टीमधु का रसायन के रूप में (मेध्य रसायन) एंव वाजीकरण योग के रूप में (वृश्य मधुक योग) दोनों में वर्णित है।

स्त्री सहवास (मैथुन)योग्य आयु :– 16 – 70 वर्ष – चरक, सुश्रुत – 25 – 80 वर्ष।

शुक्र क्षीणता के 6 कारण :– 1. जरा 2. चिन्ता 3. व्याधि 4. कर्म कर्षणात् 5. अनशन 6. अति स्त्री संभोग।

शुक्र स्राव के 8 कारण – 1. हर्ष 2. तर्ष 3. सारता 4. पिच्छिलता 5. शुक्र गुरूता 6. शुक्र की सूक्ष्मता 7. प्रणवता 8. अपान वायु की शीघ्रगति।

शुक्र :– चरतो विश्वरूपस्य रूपद्रव्यं यदुच्युते। (चरक चि. 2/पाद 4/49)

शुक्र का प्रकटीकरण :– यथा मुकुलपुष्पस्य सुगन्धो नोपलभयते। (चरक चि. 2/पाद 4/39)

वृष्य :— यत् किचिंन्मधुरं स्निग्धं जीवनं बृंहणं गुरू। हर्षणं मनसश्चैव सर्व तद् वृष्यमुच्यते।। (चरक चि. 2/4/51)

वाजीकरण की निरूक्ति :— येन नारीषु सामर्थ्य बाजीवल्लभते नरः। व्रजेच्चाप्यधिकं येन वाजीकरणमेव तत्।।
फलप्रद शुक्र — बहलं मधुर स्निग्धम विस्त्रं गुरू पिच्छिलम्। शुक्ल बहु च यत शुक्रं फलवत संशयम्।।
(चरक चि. 2/4/50)

शुद्ध शुक्र — स्निग्ध घनं पिच्छिलं च मधुरं चाविदाहि च। रेतः शुद्धं विजानीयात् भवते स्फटिकसन्निभम्। (च.चि. 30/145)

—: शारंग्धर के अनुसार :—

रसायन—रसायनं च तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशम्। यथाऽमृता रूदन्ती च गुग्गुलुश्च हरीतकी।।	जो द्रव्य जरा और रोगों को नष्ट करता है, वह 'रसायन' कहालाता है, **जैसे — गिलोय, रूद्रवन्ती, गूगल और हरीतिकी।**
बाजीकर—यस्माद् द्रव्याभ्दवेत् स्त्रीषुहर्षो बाजीकरं चतत्। यथा नागबलाद्याः स्युर्बीजं च कपिकच्छुजम्।।	जिस द्रव्य के सेवन से स्त्रियों के सहवास (मैथुन—क्रिया) में अधिक हर्ष की प्राप्ति या उत्साह होता है, उसे 'बाजीकर' कहते हैं, **जैसे — नागबला तथा केवांच बीज**
शुक्रलं— यस्माच्छुक्रस्य वृद्धिः स्याच्छुक्रलं हि तदुत्यते। यथाऽश्वगन्धा मुसली शर्करा च शतावरी।।	जिस द्रव्य से वीर्य (शुक्रधातु) की वृद्धि होती है वह शुक्रल कहा जाता है। **जैसे — अश्वगन्धा, मुसली, शर्करा, शतावरी**
शुक्र प्रवर्तक— दुग्धं माषाश्च भल्लातफलमज्जामलकानि च। प्रवर्तकानि कथ्यन्ते जनकानि च रेतसः।।	**दूध, उड़द, भिलावा फल की मज्जा तथा आंवला,** ये द्रव्य शुक्र को प्रवृत्त करने वाले और उत्पन्न करने वाले होते हैं
शुक्र प्रवर्तक, रेचक, स्तम्भक एवं शोषक — प्रवर्तनी स्त्री शुक्रस्य रेचनं बृहतीफलम्। जातीफलं स्तम्भकं च शोषणी च हरीतकी।। (शा. पूर्व खण्ड 4/18)	**शुक्रप्रवर्तक — स्त्री** **शुक्ररेचक — बृहतीफल** **शुक्रस्तम्भक — जातीफल** **शुक्रशोषक — हरीतकी**

—: चक्रपाणि के अनुसार :—

'अनेन त्रिविधमपि निरूक्तेन वृष्यमवरूध्यते यथा — शुक्रवृद्धिकरं च माषादि, तथा स्रुतिकरं संकल्पादि, शुक्रवृद्धिस्रुतिकरं क्षीरादि'। (चरक चि. 2/4/51 पर चक्रपाणि टीका)
वृष्य द्रव्य 3 प्रकार के होते है।
शुक्रस्रुतिकरं किन्चित् किन्चित् शुक्रविवर्धनम्। स्रुतिवृद्धिकरं किन्चित् त्रिविधं वृष्यमुच्यते। — चक्रदत्त
वृष्य द्रव्य 3 प्रकार के होते है।
1. **शुक्रवृद्धिकर** — ये द्रव्य शुक्र की वृद्धि करते है। उदा. — माष
2. **शुक्रस्रुतिकर** — ये द्रव्य शुक्र स्राव को बढाने वाले होते है। उदा. — संकल्प
3. **शुक्रवृद्धिस्रुतिकर** — ये द्रव्य शुक्र की वृद्धि तथा स्राव दोनों को बढाने वाले होते है। उदा. — क्षीर

—: डल्हण के अनुसार :—

तत् त्रिविधं जनकं प्रवर्तकं जनकप्रवर्तकं चेति। — डल्हण। — वृष्य द्रव्य 3 प्रकार के होते है।
1. **देहबलकरं** — केवलं देहबलकरं जनकं गोधूमादिकं। उदा. — गोधूम, माष आदि
2. **मनोबलकरं** — केवलं मनोबलकरं संकल्पादि तु प्रवर्त्तकम्। उदा. — संकल्प
3. **देहमनोबलकरं** — घृतक्षीरादि देहमनोबलकरं सदुभयकरमिति। उदा. — घृत, क्षीर

ज्वर चिकित्सा

ज्वर की संज्ञाएँ :– सर्वरोगाग्रज, रोगराट्, सर्वरोगाधिपति – चरक।
रोगानीकराट्, रूद्रकोपाग्निसम्भूत, सर्वभूतापन, सर्वविकाराणामयं राजा – सुश्रुत।
रोगपति, पाप्मा, मृत्यु, ओजोशन, क्रोध, अन्तक। – वाग्भट्ट

ज्वर के पर्याय :– ज्वरो विकारो रोगश्च व्याधिरातंक एव च। एकोऽर्थो नामपर्यायैर्विविधैरभिधीयते। (च. चि. 3/11)
ज्वर, विकार, रोग, व्याधि तथा आतंक।
व्याधि के पर्याय :– ज्वर, विकार, रोग, व्याधि, आतंक, **आमय, गद, तथा यक्ष्मा।**
तत्र व्याधिरामयो गद आतंको यक्ष्मा ज्वरो विकारो इत्यनर्थान्तरम्। (च. नि. 1/5)
❖ चरकानुसार ज्वर और व्याधि के पर्याय समान है।

ज्वर की प्रकृति :– क्षयस्तमो ज्वरः पाप्मा मृत्युश्चोक्त यमात्मकाः। (च. चि. 3/13)
ज्वर की प्रवृत्ति (प्रथमोत्पत्ति) :– प्रवृत्तिस्तु परिग्रहात्। – ज्वर का प्रादुर्भाव 'परिग्रह' से हुआ है।

ज्वरोत्पत्ति :– निदाने पूर्वमुद्दिष्टा **रूद्रकोपाच्च** दारूणात्। (च. चि. 3/14)
ज्वरस्तु खलु **महेश्वरकोपप्रभवः।** (च. नि. 1/35)
❖ माधव निदान :– **दक्षापमानसंक्रुद्ध रूद्रनिःश्वाससम्भवः। ज्वरोऽष्टधा पृथग्द्वन्द्वसंघातागन्तुजः स्मृतः।।**
❖ **सुश्रुत :– जन्मादौ निधने चैव प्रायो विशति देहिनम्। अतः सर्वविकाराणामयं राजा प्रकीर्त्तितः।।**

ज्वर के कारण – 8 – वातज, पित्तज, कफज, वातपित्तज, वातकफज, पित्तकफज, सन्निपातज और आगुन्तुक।
❖ **सुश्रुत और वाग्भट्ट ने ज्वर के भेद 8 माने है। किन्तु चरक ने ज्वर के कारण 8 और भेद 2 माने है।**

ज्वर के पूर्वरूप :– आलस्यं नयने सास्रे जृम्भणं गौरवं क्लमः। ज्वलनातपवाय्वम्बुभक्तिद्वेषावनिश्चितौ।
अविपाकास्यवैरस्ये हानिश्च बलवर्णयोः । शीलवैकृतमल्पं च ज्वरलक्षणमग्रजम्। (च.चि. 3/28)
ज्वर के पूर्वरूप :–
श्रमोऽरतिर्विवर्णत्वं वैरस्यं नयनप्लवः । इच्छाद्वेषौ मुहुश्चापि शीतवातातपादिषु।
जृम्भाऽगमर्दो गुरुता रोमहर्षोऽरूचिस्तमः। अप्रहर्षो शीतश्च भवत्युत्पत्स्यति ज्वरे। (सु.उ. 39/27)
विशिष्ट पूर्वरूप :–
सामान्यतो विशेषात्तु जृम्भाऽत्यर्थ समीरणात्। पित्तान्नयनयोर्दाहः कफान्नान्नाभिनन्दनम्। – सुश्रुत
❖ **वातज ज्वर – जृम्भा पित्तज ज्वर – नयनदाह कफ ज्वर – अरूचि।**

ज्वर का अधिष्ठान :– केवलं समनस्कं च ज्वराधिष्ठानमुच्यते। – मन सहित सम्पूर्ण शरीर ज्वर का अधिष्ठान है
❖ **ज्वर का प्रत्यात्मक लक्षण :–** ज्वरप्रत्यात्मिकं लिंगं सन्तापो देह मानसः। (च. चि. 3/31)
ज्वर का एकल लक्षण :– ज्वरस्त्वेक एव सन्तापलक्षणः। **(च. नि. 1/32)**

ज्वर की सामान्य सम्प्राप्ति :– मिथ्याहारविहाराभ्यां दोषा ह्यामाशयाश्रयाः।
बहिर्निरस्य कोष्ठाग्नि ज्वरदाः स्यु रसानुगाः।। (माधव निदान)

सामान्य लक्षण :– स्वेदोवरोधः सन्तापः सर्वागंग्रहणं तथा। विकारा युगपद्यस्मिन् ज्वरः स परिकीर्त्तितः। (सु. उ. 39/13)

- **स्वेदोवरोध** – ज्वर का प्रतीतात्मक लक्षण है। लेकिन पित्तज ज्वर व मेदोगत ज्वर में नहीं

ज्वर के भेद :– सुश्रुत और वाग्भट्ट ने ज्वर के भेद 8 माने है।
(शार्ग्धर – 25, अर्थववेद में ज्वर (तक्मा) – 25)
1. वातज, 2. पित्तज, 3. कफज, 4. वातपित्तज, 5. वातकफज, 6. पित्तकफज, 7. सन्निपातज 8. आगुन्तुक।

(1) **ज्वर के द्विविध भेद :–** **1. विधि भेद से – शारीरिक, मानसिक।**
2. पुनः द्विविध भेद – सौम्य, आग्नेय।
3. निमित्त भेद से – प्राकृत, विकृत।
4. वेग की दृष्टि से – अर्न्तवेग, बर्हिवेग।
5. चिकित्सा की दृष्टि से – साध्य, असाध्य।

(2) **दोष के काल बलाबलानुसार :–** 1. संतत 2. सतत 3. अन्येद्युष्क 4. तृतीयक 5. चतुर्थक।

(3) **धातुगत आश्रय भेद से :– 7–** 1. रसगत 2. रक्तगत 3. मांसगत 4. मेदगत 5. अस्थिगत 6. मज्जागत 7. शुक्रगत ज्वर

–: विषम ज्वर :–

व्याधि परिचय –यः स्याद् नियतात् कालात् शीतोष्णाभ्यां तथैव च।वेगतश्चापि विषमः स ज्वरो विषमः स्मृतः।(सिद्धान्त निदान)

जो ज्वर कभी शीतपूर्वक, कभी दाह पूर्वक शरीर में उत्पन्न हो, जिसके उत्पन्न होने, बढने या स्थिर रहने का समय भी निश्चित न हो तथा वेग में भी विषमता हो, इस प्रकार के ज्वर को विषम ज्वर कहते है।

परिभाषा :– "विषमोविषमारम्भः क्रियाकालोऽनुषंगवान्।" – वाग्भट्ट

जिस ज्वर का आरम्भ, क्रिया एवं काल विषम हो वह विषमज्वर कहलाता है।

विषम ज्वर – विषमज्वर में आगन्तुज कारण का सम्बंध रहता है **आगन्तुरनुबन्धो हि प्रायशो विषमज्वरे। (सु. उ. 39/56)**

सुश्रुतानुसार विषम ज्वर के 6 काल :– पूर्वाह्न, मध्यान्ह, अपरान्ह, प्रदोष, अर्द्धरात्रि, प्रत्यूष।

विषम ज्वर सम्प्राप्ति :– दोषोऽल्पोऽहितोसम्भूतो ज्वरोत्सृष्टस्य वा पुनः। धातुमन्यतमं प्राप्य करोति विषमज्वरम्।।

विषम ज्वर की प्रकृति :–"मुक्तानुबन्धित्वं विषमात्वम्। – (विजय रक्षित)

भेद :– चरक – 5काश्यप – 7 – 5 + प्रेतज्वर, ग्रहोत्थ ज्वर।

ज्वर	दोषाधिष्ठान	धातु	धातु (सुश्रुत)	धातु (वाग्भट्ट)	काल
1. संतत	सर्व शरीर	रस	रस	[illegible]	7, 10 या 12 दिन तक लगातार
2. सततक	आमाशय	रक्त	रक्त	रक्त	दिन – रात में 2 बार।
3. अन्येद्युष्क	उरः	मेद	मांस	मांस/मेद	2 रे दिन।
4. तृतीयक	कण्ठ	अस्थि	मेद	मेद/अस्थि	3 रे दिन।
5. चतुर्थक	शिर	मज्जा	अस्थि–मज्जा	मेद/अस्थि/मज्जा	4 थे दिन।

1. **सन्तत ज्वर :– कालदूष्यप्रकृतिभिः दोषस्तुल्यो हि सन्ततम्।** निष्प्रत्यनीकः **कुरुते तस्माज्ज्ञेयः सुदुःसहः।।**
   - **निष्प्रत्यनीक ज्वर** – कई दिनों तक तक चलने वाला अविसर्गी ज्वर है।
   - **सन्तत ज्वर के 12 आश्रय है** – धातु – 7, दोष – 3, मूत्र व पुरीष – 2।
   - मारकता – 7, 10, 12 दिनों में शान्त अन्यथा इसी अवधि में धातु शुद्धि न होने पर मार डालता है।
   - अनुवर्तन – 12 आश्रय शुद्ध न होने पर 12 दिन छोड पुनः 13वें दिन आ जाता है।
   - काश्यप और खरनाद ने सन्तत ज्वर का वर्णन नहीं किया है।
   - वर्तमान कालिक नाम – आन्त्रिक ज्वर, मधुरक ज्वर, मोतीक्षरा, मियादी वुखार और टाईफायड।
 - आन्त्रिक ज्वर – गणनाथ सेन ने 'सिद्धान्त निदानम्' में, **मन्थक ज्वर** – योग रत्नाकर

2. **सततक ज्वर :– रक्तधात्वाश्रयः प्रायो दोषः संततकं ज्वरम्।** सप्रत्यनीकः **कुरुते कालवृद्धिक्षयात्मकम्। (चरक)**
   अहोरात्रे सततको द्वौ कालावनुवर्तते।।

3. **अन्येद्युष्क ज्वर :– कालदूष्यप्रकृतिदूष्याणां प्राप्यैवान्यतमाद्बलम्। अन्येद्युष्क ज्वरं दोषो रूद्ध्वा मेदोवहाः सिरा। (चरक)**

4. **तृतीयक ज्वर के भेद :–** 3 – 1. शिरोग्राही – वातपित्तज 2. पृष्ठग्राही – वातकफज 3. त्रिकग्राही – कफपित्तज।

5. **चतुर्थक ज्वर के भेद :–** 2 – 1. पूर्व में शिर में पीडा – वातज। 2. पूर्व में जंघा में पीडा – कफज।
   ❖ चतुर्थक ज्वर को भेल ने पित्तज कहा है।

6. **चतुर्थक विपर्यय :–विषमज्वर एवान्यश्चतुर्थक विपर्ययः। त्रिविधो धातुरेकैको द्विधातुस्थः करोति यम्।। (चरक)**
   चतुर्थक विपर्यय त्रिदोष जन्य ज्वर है एंव इसका आश्रय अस्थि–मज्जा दोनों होती है।

प्रायशः सन्निपाते दृष्टः पंचविधो ज्वरः। (च. चि. 3/74) – पांचो विषम ज्वर सन्निपातिक होते है।

1. **अन्तर्वेगी ज्वर के लक्षण :— अन्तर्दाहोऽधिकस्तृष्णा प्रलापः श्वसनः भ्रमः। सन्ध्यस्थिशूलमस्वेदो दोषवर्चो विनिग्रहः।। अन्तर्वेगस्य लिंगानि ज्वरस्यैतानि लक्षयेत्।**

2. **बर्हिवेगी ज्वर के लक्षण :— सन्तापोऽभ्यधिको बाह्यस्तृष्णादीनां च मार्दवम्।** बर्हिर्वेगस्य लिंगानि सुखसाध्यत्वमेव च।।

प्राकृत ज्वर :— जिस ऋतु में जिस दोष का प्रकोप होता है उस ऋतु में उस दोष से होने वाला ज्वर प्राकृत कहलाता है

प्राकृत ज्वर	वैकृत ज्वर
(1) शरद ऋतु में पित्तज ज्वर, — सुखसाध्य। बंसन्त ऋतु में कफज ज्वर — सुखसाध्य। ❖ **वर्षा ऋतु में वातज ज्वर — कष्टसाध्य।**	बंसन्त ऋतु में वात या पित्तज ज्वर — कष्टसाध्य। शरद ऋतु में वात या कफज ज्वर — कष्टसाध्य। वर्षा ऋतु में कफ या पित्तज ज्वर — कष्टसाध्य।

धातुगत ज्वर के लक्षण :—

ज्वर	लक्षण	चिकित्सा
(1) रसगत	गौरव, सदन, छर्दि, अरुचि, **बहिस्तापः सागंमर्दो विजृम्भणम्।।**	वमन, उपवास
(2) रक्तगत	सरक्त ष्ठीवन, दाहराग भ्रममदप्रलापा, **पिडका।**	परिषेक, प्रदेह, संशमन
(3) मांसगत	**अन्तर्दाहः** सतृष्णमोह, **दौर्गन्ध्यं,** गात्रविक्षेप।	विरेचन, उपवास
(4) मेदगत	स्वेद, तीव्र पिपासा, प्रलापो वम्यभीक्ष्णशः स्वगन्धस्यासहत्व।	विरेचन, उपवास
(5) अस्थि	**विरेकवमने चाभे,** प्रकूजनम्।	**कृच्छ्रसाध्य**
(6) मज्जागत	हिक्का श्वास कास, तम दर्शन, **मर्मच्छेदो बहिःशैत्य** दाहोऽन्तश्चैव।	**कृच्छ्रसाध्य**
(7) शुक्रगत	शुक्रमोक्षं कृत्वा विनाश्य।	**असाध्य**

साध्यासाध्यता — 1. रस, रक्त, मांस, मेद — साध्य, 2. अस्थि, मज्जागत — कृच्छ्रसाध्य, 3. शुक्रगत — असाध्य।

❖ अन्तर्दाह — मांसगत ज्वर, मज्जागत ज्वर और अन्तर्वेगी ज्वर में पाया जाता है।

- **मुहुर्दाहो मुहुः शीतं स्वेदस्तम्भो मुहुर्मुहुः।** लिप्ततिक्तास्यता तन्द्रा श्लेष्मपित्तज्वराकृति। — कफपित्तज ज्वर
- **क्षणे दाहः क्षणे शीतमस्थिसन्धिशिरोरुजा। — सम सन्निपात ज्वर**
- **कामशोकभयात् वायुः क्रोधात्पित्तं (च. चि. 3/115)** — काम, शोक और भय जन्य ज्वर में — वात दोष और क्रोधजन्य ज्वर में — पित्त दोष का प्रकोप होता है।

आगन्तुज ज्वर भेद :— 1. अभिघातज — वायु, दुष्ट शोणित जन्य। **2. अभिषंगज** — वात, पित्त जन्य।
3. अभिचारज — सन्निपातज। **4. अभिशापज** — सन्निपातज।

चरकानुसार	सुश्रुतानुसार
1. काम जन्य ज्वर :— ध्याननिः श्वासबहुलं लिंगं कामज्वरे स्मृत। **2. भूतावेश ज्वर :— भूतावेशे त्वमानुषम्।** **3. विषजन्य ज्वर :—** मूर्च्छा मोह मद ग्लानि भूयिष्ठ विषसम्भवे। **4. शोकज ज्वर :—** वाष्प बहुलं। **5. भयज ज्वर :—** त्रासप्राये भयज्वरे। **6. क्रोधज ज्वर :—** क्रोधज बहुसंरम्भं।	**1. विषजन्य ज्वर** — श्यावास्यता, दाह, अतिसार, हृदग्रह, अभक्त, पिपासा, तोद, मूर्च्छा, बलक्षय। **2. काम जन्य ज्वर :—** चित्त विभ्रंश, तन्द्रा, आलस्य, अरूचि, हृदिवेदना एंव गात्र शुष्कता। **3. कोपज ज्वर :—** वेपथु। **4. भयज, शोकज ज्वर :—** प्रलाप।

(1.) आमज ज्वर लक्षण :— ज्वरोऽविसर्गी, बहुमूत्रता, न विट् जीर्णा, **न च ग्लानि ज्वरस्यामस्य लक्षणम्।।**

○ **बहुमूत्रता** — आमज ज्वर और आमवात दोनों का लक्षण है।

(2.) पच्यमान ज्वर लक्षण— ज्वरवेगोऽधिकस्तृष्णा प्रलापः श्वसनः भ्रमः। मलप्रवृत्तिरुत्क्लेशः पच्यमानस्य लक्षणम्।।
(अन्तर्दाहोऽधिकस्तृष्णा प्रलापः श्वसनः भ्रमः— **अन्तर्वेगी ज्वर के लक्षण**)

(3.) निराम ज्वर लक्षण :— क्षुत्क्षामता लघुत्वं च गात्राणां ज्वरमार्दवम्। दोषप्रवृत्तिरष्टाहो निरामज्वरलक्षणम्।

—: ज्वर का चिकित्सा सूत्र :—

नवज्वर में अपथ्य :— नवज्वरे दिवास्वप्न स्नानाभ्यंगान्न मैथुनम्। क्रोधप्रवातव्यायामान् कषायाश्च विवर्जयेत्।।

❖ नवज्वर में दिवास्वप्न, स्नान, अभ्यंग, अन्न, मैथुन, क्रोध, प्रवात, व्यायाम और कषाय – इन 9 कारको का निषेध है।

❖ **'स्तभ्यन्ते न विपच्यते कुर्वन्ति विषमज्वरम्।।** (च. चि. 3/161) – नवज्वर में कषाय रस का निषेध बताया गया है कषाय रस ग्राही और स्तम्भक होने के कारण –दोष विबद्ध और स्तब्ध होकर **'विषम ज्वर'** उत्पन्न कर देते है।

❖ **न तु कल्पनमुद्दिश्य कषायः प्रतिषिध्यते। यः कषायकषायः स्यात् स वर्ज्यस्तरुणज्वरे।। (च. चि. 3/161)**

ज्वर में कषाय कल्पनाओं का नहीं वरन् कषाय द्रव्यों से निर्मित कषाय का निषेध बताया गया है।

1. **ज्वरे लघंनमेवादावुपदिष्टमृते ज्वरात्।** – ज्वर सर्वप्रथम लंघन करने का उपदेश दिया गया है।
लेकिन वातज, क्षयज, कामज, क्रोधज, शोकज, भयज और श्रमजन्य ज्वरों में लंघन का निषेध है।

- **योग रत्नाकर :—** ज्वर के आदि में लंघन, मध्य में पाचन तथा अन्त में विरेचन का निर्देश है।
  "ज्वरादौ लघनं शस्तं ज्वरमध्ये तु पाचनम्। ज्वरान्ते रेचनं प्रोक्तमेतज्जवरचिकित्सितम्।।" (यो.र.)
- **भावप्रकाश :—** ज्वर के आदि में लंघन, मध्य में पाचन, अन्त में भेषज तथा मुक्ति पर विरेचन का निर्देश है
  "ज्वरादौ लघनं प्रोक्तं ज्वरमध्ये तु पाचनम्। ज्वरान्ते भेषजं दद्यात् ज्वर मुक्ते विरेचनम्।।" (भाव. प्रकाश.)

2. **तरुण ज्वर में – लंघनं स्वेदनं कालो यवाग्वतिक्तको रसः। पाचनान्यविपक्वानां दोषाणां तरुणे ज्वरे।।** (च. चि. 3/145)
1. लंघन 2. स्वेदन क्रिया 3. काल (8 दिन) 4. तिक्त रस साधित यवागू – आमपाचक होता है।

3. **षड्.गपानीय :— मुस्तपर्पटकोशीर चन्दनोदीच्यनागरैः। शृतशीतं जलं दद्यात् पिपासाज्वरशान्तये।।** (च. चि. 3/145)
(षड्.गपानीय :— उशीर, पित्तपापड़ा, सुगन्धबाला, मुस्तक, शुण्ठी, चन्दन – ज्वर में पिपासा शान्ति हेतु)
➢ वंगसेन व वृन्द ने **शुण्ठी के स्थान** पर धान्यक लिया है।

4. **ज्वर में वमन :— कफप्रधानानुत्क्लिष्टान् दोषानामाशयस्थितान्। बुद्ध्वा ज्वरकरान् काले वम्यानां वमनैर्हरेत्।**
1. कफप्रधान दोष हो 2. आमाशय आश्रित हो 3. उत्क्लिष्ट हो 4. रोगी वमन के योग्य हो – तब वमन कराते है।
तरूण ज्वर में वमन का निषेध है – वमन कराने पर हृदयरोग, श्वासरोग, आनाह और मूर्च्छा रोग होते है।

5. **यवागू सेवन काल** – लंघन और वमन पश्चात् – जब तक ज्वर मृदु न हो जाए या 6 दिन तक यवागू पान करायें।
यवागू का निषेध – मदात्यय, नित्यमद्यसेवी, ग्रीष्म ऋतु में, पित्तकफाधिकता हो तथा **ऊर्ध्वग रक्तपित्त में।**
ऐसी स्थिति में यवागू के स्थान पर लाजसक्तू का **तर्पण प्रयोग** में लाना चाहिए।

6. **दातौन** – भोजन पूर्व रोगी के मुख में जो रस हो उस रस के विपरीत रस वाली दातौन करें।

7. **कषाय पान :— पाचनं शमनीयं वा कषाये पाययेद् भिषक्। ज्वरितं षडहेऽतीते लघ्वन्नप्रतिभोजितम्।।**
❖ प्रथम 6 दिन बीत जाने पर 7 वें दिन लघु अन्नपान कराके औषध पान कराना चाहिए।
❖ आमदोष (अपक्व) में – पाचन कषाय, निराम (पक्व) दोष में – शमन कषाय दें।

8. **घृतपान :— कफ मंद एंव वातपित्तोत्तर ज्वर में 10 दिन बाद** घृत देना चाहिए।
(घृतं द्वादशरात्रात्तु देयं सर्वज्वरेषु च – सुश्रुत – 12 दिन)
ज्वराः कषायैर्वमनैर्लघंनैर्लघुभोजनैः। रूक्षस्य ये न शाम्यन्ति सर्पिस्तेषां भिषग्जितम्।। (च. चि. 3/216)
❖ चरक ने ज्वर में घृतपान को **'भिषग्जितम्'** संज्ञा दी है। (NIA 2007)
❖ **जीर्णज्वर में श्रेष्ठ पेय :— जीर्णज्वरेषु तु सर्वेष्वेव सर्पिषः पानं प्रशस्यते। (चरक निदान. 1/37)**

9. **दुग्ध का प्रयोग :—** दाहतृष्णा युक्त वातपित्तोत्तर ज्वर तथा **निराम ज्वर में।,** वातपित्तज ज्वर में धारोष्ण दुग्ध देवें।
जीर्णज्वर में श्रेष्ठ औषध :— जीर्णज्वराणां सर्वेषां पयः प्रशमनं परम्। (च. चि. 3/239) (जीर्ण ज्वर मे दूध पथ्य हैं – सुश्रुत)

10. **ज्वर में विरेचन :– अक्षीण बल मांसाग्नेः शमयेत्तं विरैचनैः।**

11. **ज्वर में निरूह :–** ज्वर क्षीण व्यक्ति में मलशोधन हेतु दुग्ध या निरूह वस्ति प्रयोग करें।
उदा. – पटोलादि आरग्वधादि, गुडूच्यादि निरूह वस्ति।

12. **जीर्ण में अनुवासन :– ज्वरे पुराणे संकीणे कफपित्ते दृढाग्नये। रूक्षबद्धपुरीषाय प्रदद्यात् अनुवासनम्।**
उदा. – पटोलादि चंदनादि, अनुवासन वस्ति।

13. **ज्वर में मूर्धविरेचन :– गौरवे शिरसः शूले विबद्धेष्विन्द्रियेषुच। जीर्णज्वरे रूचिकरं कुर्यात् मूर्धविरेचनम्।।**
❖ चरक ने ज्वर में नस्य को **'मूर्धविरेचनम्'** संज्ञा दी है। (Jam 2007) उदा. – नावनिकं तैल (अणु तैल)।

14. **ज्वर में बाह्य प्रयोग :–** अभ्यंग, प्रदेह, परिषेक तथा अवगाहन शीतोष्णकृत ज्वर में।
15. **ज्वर में धूपन :–** त्वचाश्रित दोषज ज्वर में।
16. **ज्वर में रक्तावसेचन :–** शाखानुसारी ज्वर में।

ज्वर में अन्नपान :– मुद्ग, मसूर, चना, कुलत्थ और मोठ यूष।
(रक्तपित्त में– मुद्ग, मसूर, चना, अरहर और मोठ यूष।) (जीर्णज्वर में मूंगदाल और करेला निषिद्ध है – वाग्भट्ट)
❖ **पटोलपत्रं सफलं कुलकं पापचेलिकम्। कर्कोटकं कठिल्लं च विद्यात् शाकं ज्वरे हितम्।।**
पटोल पत्र,फल, करेला, पाठा, कर्कोटक और कठिल्ल (रक्त पुर्ननवा) – ये शाक ज्वर में हितकारी है।

ज्वर में चिकित्सीय योग :–

1. क्वाथ – वत्सकादि क्वाथ, जात्यादि क्वाथ।
2. घृत – पिप्पलादि घृत, बलादि घृत, वासादि घृत।
3. **चन्दनाद्य तैल** – दाह जन्य या दाहपूर्वक ज्वर में।
4. **अगुर्वादि तैल** – शीत जन्य या शीतपूर्वक ज्वर में।

विषम ज्वरनाशक 5 कषाय :–

विषमज्वर	विषम ज्वरनाशक 5 कषाय
1. संतत	1. कलिंगादि क्वाथ – **पटोलपत्र, कलिंगक,** कटुकरोहिणी।
2. सतत	2. **पटोलादि क्वाथ** – **पटोल, सारिवा,** मुस्त, पाठा, कटुकरोहिणी।
3. अन्येद्युष्क	3. **निम्बादि क्वाथ** – **निम्ब, पटोल,** त्रिफला, मृद्वीका, मुस्तक, वत्सक।
4. तृतीयक	4. **किराततिक्तादि क्वाथ** – **चिरायता,** अमृता, चंदन, विश्वभेषजम्।
5. चतुर्थक	5. **गुडूच्यादि क्वाथ** – **गुडूची,** आमलक, मुस्तक।

विषमज्वर की चिकित्सा मे **विष्णुसहस्र मूर्धान** अर्थात भगवान् **विष्णु के सहस्रनाम का पाठ** करने को कहा है।
❖ **(भेल – वृषभ ध्वज पूजन, हारीत – रूद्र एंव हनुमत पूजन काश्यप – रूद्रपूजा (राजयक्ष्मा में)**

सन्निपातिक ज्वर लक्षण :– क्षणे दाहः क्षणे शीतमस्थिसन्धिशिरोरूजा। (च. चि. 3/103)
चिकित्सा सूत्र :– वर्धनेनैकदोषस्य क्षपणेनोच्छ्रितस्य वा **कफस्थानानुपूर्व्या** वा सन्निपाति ज्वरं जयेत्।। (च. चि. 3/286)
एक दोष को बढाकर बढे हुए दोष को घटाकर अथवा कफ स्थान के अनुसार चिकित्सा करनी चाहिए।
समवाये तु दोषाणां पूर्व पित्तमुपाचरेत्। ज्वरे चैवातिसारे च सर्वत्रान्यत्र मारूत। (सु. उ. 40/161)
आचार्य सुश्रुत ने सन्निपातिक ज्वर में सर्वप्रथम पित्त की चिकित्सा करने के लिए कहा है। (सु. उ. 40/161)

ज्वर मुक्ति के अपथ्य :– व्यायामं च व्यवायं च स्नानं चङ्क्रमणानि। ज्वरमुक्तो न सेवेत् यावन्न बलवान् भवेत्।।
पुनरावर्तक ज्वर में : – मुदुसंशोधन, शमन चिकित्सा और **'यापना वस्ति'** का प्रयोग करते है।
अभ्यंगोद्वर्तन स्नानधूपनान्यंजनानि च। हितानि पुनरावृत्ते ज्वरे तिक्तघृतानि च।।

4. रक्तपित्त चिकित्सा

रक्तपित्त :– **महागदं महावेगमग्निवच्छीघ्रकारि च।** – अग्नि के समान शीघ्रकारी रोग है रक्तपित्त।

रक्तपित्त की निरूक्ति :– संयोगाद् दूषणात्तु सामान्याद् गन्धवर्णयोः। रक्तस्य पित्तमाख्यातं रक्तपित्तं मनीषिभिः।।

रक्तपित्त में स्रावी रक्त का आश्रय :– यकृत और प्लीहा।

रक्तपित्त की सम्प्राप्ति :– तस्योष्मणा द्रवो धातुर्धातोर्धातोः प्रसिच्यते। स्विद्यतस्तेन संवृद्धिं भूयस्तदधिगच्छति।।

❖ रक्तपित्त में रक्त की ऊष्मा में स्वेदन से पित्त के **'द्रवांश'** में वृद्धि होकर रक्त में मिलने से रक्त की वृद्धि होती है।

पूर्वरूप – सदनं शीतकामित्वं कण्ठधूमायनं वमिः। लोहगन्धिश्च निःश्वासो भवत्यस्मिन् भविष्यति।' (सु. उ. 45/3) **लोहलोहितमत्स्यामगन्धित्वमिव** – मुख से लोहा, रूधिर, मछली और आम सी गंध आती है। (च. नि. 2/6) **(लोहलोहितमत्स्यामगन्धास्यत्वं स्वरक्षय – (अ. हृ. नि. 3/6)**

दोषानुसार रक्तपित्त के लक्षण :–

(1) वातजन्य में – श्यावारूणं सफेनं च तनु रूक्षं च वातिकम् ।

(2) पित्तजन्य में – रक्तपित्तं कषायाभं कृष्णं गोमूत्रसन्निभम्। मेचकागार धूमाभ अंजनाभं च पैत्तिकम्।

(3) कफजन्य में – सान्द्रं सपाण्डु सस्नेह पिच्छिलं च कफान्वितम्।

रक्तपित्त की गतियाँ (2) :– **1. ऊर्ध्वगति – 7 द्वार –** कान, नाक, मुख और नेत्र से स्राव।

2. अधःगति – 2 द्वार – योनि एवं मूत्रमार्ग से स्राव।

आन्तिकी गति :– यदा तु सर्वच्छिद्रेभ्यो रोमकूपेभ्य एव च। वर्तते तामसंङ्ख्येयां गतिं तस्याहुः आन्तिकीम्।।

❖ रक्तपित्त में शरीर के सभी छिद्रों एंव रोमकूपों से रक्त निकलने लगता है तो रक्तपित्त इन असंख्य गतियों को "आन्तिकी गति" कहते है।

साध्यासाध्यता :– 1. साध्य – एकदोषज। 2. याप्य – द्विदोषज। 3. असाध्य – त्रिदोषज।

असाध्य रक्तपित्त – द्विमार्गी, कुणपगन्धी (मुर्दसम गंध वाला) अति कृष्ण रक्तस्राव वाला, वातकफ के लक्षणों से युक्त, तथा उपद्रव युक्त रक्तपित्त असाध्य होता है।

साध्य रक्तपित्त :– एकमार्ग बलवतो नातिवेगं नवोत्थितम्। **रक्तपित्तं सुख काले साध्यं** स्यात् निरूपद्रवम्।।

- **ऊध्वर्ग रक्तपित्त में कारण :–** स्निग्ध और उष्ण आहार – विहार।
- **अधोग रक्तपित्त में कारण :–** रूक्ष और उष्ण आहार – विहार।

रक्तपित्त	दोषानुबन्ध	साध्यासाध्यता	चिकित्सा	औषध
1. ऊर्ध्वग	**पित्त +कफ**	साध्य	विरेचन	कषाय+तिक्त रस प्रधान औषधे (औषधाधिक्य)
2. अधोग	**पित्त +वात**	याप्य	वमन	केवल मधुर रस प्रधान औषधे (अल्पौषधत्व)
3.उभयमार्गज	**पित्त +कफ+वात**	असाध्य	विरूद्धोपक्रप	उपक्रमविरोध।

आचार्य चक्रपाणि के अनुसार ऊर्ध्वग रक्तपित्त में विरेचन कराना – व्याधि प्रत्यानीक चिकित्सा है।

रक्तपित्त का चिकित्सा सूत्र :–

1. अक्षीण बलमांसस्य रक्तपित्तं यदश्नतः तद्दोषदुष्टमुत्क्लिष्टं नादौ स्तम्भनमर्हति।। (च. चि. 4/24)

❖ अक्षीण बलमांस रोगी के रक्तपित्त में प्रारम्भ में स्तम्भन नहीं कराना चाहिए। अन्यथा गलग्रह, पूतिनस्य, मूर्च्छा, अरूचि, विसर्प, गुल्म, प्लीहा, आनाह, किलास, मूत्रकृच्छ्र, कुष्ठ, अर्श, भगन्दर आदि रोग हो सकते है।

2. मार्गौ दोषानुबन्धं च निदानं प्रसमीक्ष्य च। लघनं रक्तपित्तादौ तर्पणं वा प्रयोजयेत्। – रक्तपित्त में रक्तस्राव के मार्ग एंव दोषानुबंध पर विचार कर **लंघन और तर्पण** का आवश्यकतानुसार प्रयोग करना चाहिए।

3. ऊर्ध्वमे तर्पणं पूर्व पेयां पूर्वमधोगते। 1. ऊध्वर्ग रक्तपित्त में :– तर्पण। 2. अधोग रक्तपित्त में :– पेयां।

उदा. :– खर्जूरादि तर्पण, लाजा तर्पण, तथा चन्दनादि पेया, किराततिक्तादि पेया।

4. रक्तपित्त में पेय जल :– ह्रीबेरचन्दनोशीरमुस्तपर्पटकैः। केवलं श्रृतशीतं वा दद्यात्तेयं पिपासवे।।
षड्.गपानीय (–शुण्ठी छोडकर) श्रृतशीत करके देना चाहिए।

5. रक्तपित्त में आहार :– शालि षष्टिक नीवार कोरदूषप्रशान्तिकाः। श्यामाकश्च प्रियंगुश्च भोजनं रक्तपित्तिनाम्।।

अत्यधिक रक्तस्राव हो जाने पर बकरे या एणमृग के रक्त में मधु मिलाकर पिला देना चाहिए। अथवा बकरी के ताजा निकाले हुए कच्चे यकृत को पित्त के सहित खिला देना चाहिए – सुश्रुत।

6. रक्तपित्त में सूप यूष :– मुद्ग मसूराश्चणकाः समकुष्ठाढकीफलाः। प्रशस्ताः सूपयूषार्थे कल्पिता रक्तपित्तिनाम्।।
मुद्ग, मसूर, चना, अरहर और मोठ यूष।

7. दोषानुसार पथ्य :– कफानुगे यूषशाकं दद्यात् वातानुगे रसम्।

रक्तपित्त	दोषानुबन्ध	पथ्य
1. ऊर्ध्वग	पित्त +कफ	यूष और शाक।
2. अधोग	पित्त +वात	मांसरस।

8. शोषेण सानुबन्धं वा तस्य संशमनी क्रिया। – रक्तपित्त में शोष का अनुबंध रहने पर संशमन उपचार ही प्रयोग करें।

9. सक्षौद्र ग्रथिते रक्ते लिह्यात् पारावतं शकृतं।– रक्तपित्त में यदि रक्त मे ग्रथि का जमाव हो गया हो कपोत विष्ठा को मधु के साथ चटना चाहिए।

10. रक्तपित्त में चिकित्सीय योग :–
(1) आटरूषकादि क्वाथ (2) उशीरादि चूर्ण, किराततिक्तादि चूर्ण
(3) वासा घृत, पंचपंचमूलादि घृत, शतवीर्यादि घृत।

11. मूत्रमार्गी रक्तपित्त में प्रशमन योग :– शतावरी क्षीर, गोक्षुर चूर्ण में साधित दुग्ध अथवा **चतुष्पर्णियों** में साधित दुग्ध का प्रयोग करना चाहिए।
12. गुदमार्गी रक्तपित्त में प्रशमन योग :– **मोच रस में** साधित दुग्ध अथवा **वट प्ररोह/वटशुंग में** साधित दुग्ध का प्रयोग करना चाहिए।
13. नासागत रक्तपित्त में स्तंभक नस्य :– द्राक्षारस/इक्षुरस/**दूर्वा स्वरस/पलाण्डुमूल स्वरस**/दाडिमपुष्प स्वरस/सारिवा के स्वरस का नस्य देना चाहिए।

14. कफानुबन्ध (**ऊर्ध्वग रक्तपित्त**) रक्तपित्त में **कमलनाल के क्षार** का प्रयोग करना चाहिए।
15. **रक्तपित्त में दाह प्रशमन** :– चंदन व प्रियंगु लेप की हुई सुन्दर स्त्रियों का आलिगंन एंव मनोनुकूल कथा का विधान।
16. रक्तपित्त में उरःक्षत की चिकित्सा में विधित **सर्पिगुड** के उपयोगी होते है।

सुश्रुतानुसार चिकित्सा – अधःप्रवृत्तं वमनैरूर्ध्वगं च विरेचनैः।
(1) अतिप्रवृद्ध दोषयुक्त रक्तपित्त में सर्वप्रथम अपतर्पण → पेया → तर्पण → पाचन → अवलेह → घृतपान।
(2) **हितश्च खर्जूरफलं समाक्षिकं।**
(3) सुश्रुत ने सारिवादिगण, अंजनादिगण, न्यग्रोधादि गणों को रक्तपित्तहर कहा है।
➢ **रक्तपित्त में पित्तज ज्वर, उरःक्षत और क्षीण की चिकित्सा में विधित सभी औषध उपयोगी होती है। - अष्टांग हृदय**
➢ **वृषः सद्यो जयत्यस्त्रं स ह्यस्य परमौषधम्। (अ. हृ. चि. 2/26)** - वासा स्वरस रक्तपित्त की श्रेष्ठ औषध है।

गुल्म चिकित्सा

गुल्म निरूक्ति :— गुपितानिल मूलत्वाद् गूढ मूलोदयादपि। गुल्मावद्धा विशालत्वाद् गुल्म इत्यमिधीयते। (सु. उ. 42/6)

1. गुपित वायु मूल कारण होने से 2. गूढमूल की तरह उत्पन्न होने से 3. गुल्म वत विशाल होने के कारण —इसे गुल्म कहते है।

❖ श्रमनिःश्वास वेग निग्रह से गुल्म रोग हो जाता है।

गुल्म के आश्रय :— 5 — वस्तौ च नाभ्यां हृदि पाश्वोयोर्वा स्थानानि गुल्मस्य भवन्ति पन्च। (च. चि. 5/8)

1. हृदय 2. वस्ति 3. नाभि 4. दोनों पार्श्व।

❖ चक्रपाणि के अनुसार पित्तज और कफज गुल्म में वस्ति के स्थान पर आमाशय के एक देश को कहा हैं।

❖ गुल्म रोग में कोई दूष्य नहीं होता हैं।

गुल्म में पाकाभाव हेतु :— पानी के बुलबुले की तरह गुल्म अपने ही अवयव में निचय (वृद्धि) को प्राप्त होता है। अतः संचरित होता है। इसलिए इसमें पाक नहीं होता। — **सुश्रुत।**
❖ **चरक** — पित्तज गुल्म में पाक होता है तथा इसकी 3 अवस्थायें होती है। 1. अपक्व 2. पच्यमान 3. पक्व।

गुल्म के प्रकार :— 5 — 1. वातज 2. पित्तज 3. कफज 4. सन्निपातज (निचय) 5. रक्त गुल्म।

शारर्ग्धर, वाग्भट्ट :— 8 — 1. वातज 2. पित्तज 3. कफज 4. सन्निपातज (निचय) 5—7. द्वन्द्वज 8. आर्तव दोष।

निदान :— 1. अस्नेहपूर्वो वा वमन विरेचने पिबति — बिना स्नेहन कराए वमन विरेचन कराने से।

2. अत्यशितो वा पिबति नवोदकमतिमात्रम् — अति मात्रा में नवीन जल सेवन करने से।

उपर्युक्त कारणो से प्रकुपित वायु **"महास्रोत्र"** में प्रवेश करके गुल्म को उत्पन्न करती है।

गुल्म के पूर्वरूप :— अनन्नाभिलषणम्, अरोचक, अविपाक, अग्निवैषम्य, विदाहो भुक्तस्य, छर्दि, उद्गार, अबुभुक्षा, दौबर्ल्य,

चरक — सौहित्यस्य चासहत्वमिति — पूर्ण तृप्ति पूर्वक भोजन न कर पाना।

सुश्रुत — सौहित्यासहता एवं आटोप, अग्निवैषम्य, विबन्ध — उदगार बाहुल्य

1. वातज गुल्म	**भुक्ते मृदुत्वं समुपैति यश्च।** — भोजन के पच जाने पर उपद्रव बढ़ जाते है। कुछ खा लेने पर **शान्तदिवसान्ते ज्वर्यते** — दिन के अन्त में ज्वर की उत्पत्ति, मुहुः पिपीलिकासम्प्रचार इवांगेषु।
2. पित्तज गुल्म	शूलं महत् जीर्यति भोजने च। — भोजन की पक्वावस्था में तीव्र शूल होना, **स्पर्शासहः।**
3. कफज गुल्म	श्वैत्यं रूगल्पा कठिनोन्नत्वं। — गुल्म का कठिन व उन्नत होना अतिप्रवृद्ध होने पर — **कास, श्वास, प्रतिश्याय और राजयक्ष्मा की उत्पत्ति।**
4. सन्निपातज	**'नियच गुल्म'** — महारूजं दाहविपरीतं **अश्मवद् घनोन्नत शीघ्रविदाहि दारूणम्।** (च. चि. 5/17)
5. रक्तज गुल्म	**शोणिगुल्मस्तु खलु स्त्रिया एव भवति न पुरूषस्य, गर्भकोष्ठार्तवागमन वैशेष्यात्।** चरक, सुश्रुत और वाग्भट्ट के अनुसार रक्तज गुल्म केवल स्त्रियों में होता है। ❖ **स्त्रीणामात्तर्वजो गुल्मो न पुंसामुपजायते। अन्यस्त्वसृग्भवो गुल्मः स्त्रीणां पुंसांश्च जायते। —क्षारपाणि** क्षारपाणि के अनुसार रक्तज गुल्म तो पुरूषों को भी हो सकता है। ❖ **आर्तवप्रतिबन्धजन्यः शोणितगुल्मः पुरूषस्य न भवति। सामान्य शोणितदुष्टिजन्यस्तु पुरूषस्यापि भवति - चक्रपाणि** ✓ **समगर्भलिंगः :—** **1. स्तनयोश्च स्तन्यम्** — स्तनों में दुग्ध आने लगता हैं। **2. ओष्ठयोः स्तनमण्डलयोश्च काष्ण्र्यम् — ओष्ठ और स्तनमण्डल** में कृष्णता आ जाती है। **3. अत्यर्थ ग्लानिश्चक्षुषोः** — नेत्रों में ग्लानि रहती है। **4. दोहृद** — **5. श्वयथुश्च पादयो** — पैरों में शोथ रहता हैं। **6. ईषत् उदगमो रोमराज्याः** — **7. योन्याश्चाटालत्वम्** — योनिमार्ग का फैल जाना। **8. योन्या दौगन्ध्यमास्रावश्चोपजायते** — योनि से दुर्गन्ध और स्राव आना।

—: गुल्म का चिकित्सा सूत्र :—

वस्तिकर्म परं विद्याद् तद्धि मारूतम् (च. चि. 5/100) — गुल्म रोग के लिए वस्ति श्रेष्ठ औषध है।

(1.) वातज गुल्म की चिकित्सा :— बृंहण अन्नपान, स्नेहन, स्वेदन, घृतपान, वस्ति, **वमन,** विरेचन तथा **रक्तमोक्षण**

1 पुनः पुनः स्नेहपानं निरूहाः सानुवासनाः।
2. आदावन्ते च मध्ये च मारूतं परिरक्षिता।

(2.) पित्तज गुल्म की चिकित्सा :— स्रंसनं, क्षीरवस्ति, विरेचन **रक्तावसेचन तथा शस्त्रकर्म** कराते है।

1. गुल्मे पैत्तिके **स्रंसनं हितम्।** **2. क्षीरवस्ति** — सतिक्तै क्षीरवस्ति। 3. तिल्वक घृत से विरेचन।
4. रक्तावसेचन। **5. शस्त्रकर्म — धान्वन्तरीयाणामधिकारः क्रियाविधौ।**

(3.) कफज गुल्म की चिकित्सा :— लघंन, वमन, विरेचन, **विलयन,** वस्ति तथा **अग्नि और क्षार कर्म** कराते है।

1. क्षार का प्रयोग :— कफगुल्मी पिबेत्काले सक्षारकटुकं घृतम्।

- **छित्वा छित्वाऽऽशयात् क्षारः क्षरत्वात् क्षारयत्यधः। (च. चि. 5/58)**

2. अग्नि कर्म :— दाहे धान्वतरीयाणामत्रापि भिषजां बलम्। क्षारप्रयोगे भिषजां क्षारतंत्रविदां बलम्।।

1. कफज गुल्म में घटी यंत्र से भेदन द्वारा चिकित्सा की जाती है।

(4.) रक्तज गुल्म की चिकित्सा :— गर्भकालव्यतिक्रमे, स्निग्धस्विन्नशरीरायै दद्यात् स्नेहविरेचनम्। — 10 माह बाद।

❖ **शस्त्रकर्म :—** पित्तज, कफज और रक्तज गुल्म में।
❖ **एरण्ड तैल योग** — कफानुबंधी वातज गुल्म में — वारुणी के साथ।
पित्तानुबंधी वातज गुल्म में — दुग्ध के साथ।

—: गुल्म में चिकित्सीय योग :—

1. वातज गुल्म	1. त्र्यूषणादि घृत, **हिंड्.ग्वादि घृत, हिंगुसौवर्चलादि घृत,** हपुष्यादि घृत, पिप्पलाद्यं घृत, **नीलिनी घृत** 2. हिंड्.ग्वादि चूर्ण, शट्यादि चूर्ण, नीलिन्यादि चूर्ण। **3. लशुन क्षीर पाक** — 8 गुना क्षीरोदक में पाक करके (लशुनाद्य घृत — उन्माद में) **4. तैल पंचक** — (एरण्ड तैल, गोमूत्र, प्रसन्ना, कांजी और यवक्षार को मिलाकर पीना) **5. शिलाजतु + लघु पंचमूल कषाय + क्षार** (षडंग घृत, चित्रकादिघृत, दाधिकं घृत, हिंग्वादि घृत, रसोनादि घृत, स्वर्जिका क्षार चूर्ण, — सुश्रुत)
2. पित्तज गुल्म	**द्राक्षा घृत (अनुपान —शर्करा मधु),** त्रायमाणाघृत, रोहिण्याद्य घृत, आमलकाद्य घृत, **वासाघृत**
3. कफज गुल्म	दशमूली घृत, भल्लातकाद्य घृत, **क्षीर षट्पल घृत, दन्ती हरीतकी (25 हरड), नीलिनी घृत** —दोगुना मात्रा **मिश्रक स्नेह — क्षौद्र के साथ (यमक स्नेह — अपस्मार में)**
4. रक्तज गुल्म	पलाशक्षार यमक — चरक, **पलाशक्षारतायेन सिद्ध सर्पिः,** पिप्पल्यादि घृत उत्तर बस्ति — सुश्रुत

❖ **गुल्म में अनुपान :— कोलदाडिमघर्माम्बु सुरामण्डाम्लकांन्जिकै। शूलानाहहरा पेया बीजपूरसेन वा।। (च. चि. 5/77)**
कोल(बेर),दाडिम, उष्ण जल, सुरामण्ड, कांजी एंव बिजौरा नीबू के साथ गुल्महर योगों को पीना चाहिए।

गुल्म में अपथ्य :— वल्लूर (शुष्क मांस), मूलक, मत्स्य, शुष्क शाक, वैदलम्, आलुक, मधुर फल। (सु. उ. 42/76)

❖ **मन्देऽग्नौ वर्धते गुल्मो दीप्ते चाग्नौ प्रशाम्यति। तस्मान्ना नातिसौहित्यं कुर्यान्नातिविलंगनम्।। (च. चि. 5/112)**
जठराग्नि मन्द होने पर — गुल्म वर्धते,जठराग्नि प्रदीप्त होने पर — गुल्म शान्त
अतः न ज्यादा भोजन करें न एकदम उपवास करे।

❖ **समप्रकोपौ दोषाणां सर्वेषामग्निसंश्रितौ। तस्मादग्निं सदा रक्षेन्निदानानि च वर्जयेत्।। (च. चि. 5/136)**

❖ **गुल्म में वायु की प्रधानता :— सर्वेष्वपि खल्वेतेषु गुल्मेषु न कश्चिद् वातादृते सम्भवति गुल्मः। — चरक निदान**
सभी प्रकार के गुल्म में वात की प्रधानता होती है बिना वात के कोई भी गुल्म नहीं हो सकता है।

6. प्रमेह चिकित्सा

प्रमेह – प्रमेह अनुषंगीणां। (च. सू. 25) – अनुषंगी रोग है। (पुर्नभावी – पुनः होने वाला रोग)
प्रमेह रोग में उपमा :– प्रमेहः क्षिप्रमभ्येति **नीडद्रुममिवाण्डजः। (च. नि. 4)**
प्रमेह के निदान :– आस्यासुखं स्वप्नसुखं दधीनि ग्राम्यौदकानूपरसाः पयांसि।
नवान्नपानं गुडवैकृतं च प्रमेह हेतुः कफकृच्च सर्वम्।। (च. चि. 6/4)

प्रमेह सम्प्राप्ति :– प्रकुपित वात, पित्त और कफ जब मेदोधातु के साथ संयुक्त होकर मूत्रवाहक स्रोतसों का अनुसरण कर नीचे की ओर जाकर वस्ति के मुख को घेर कर प्रमेहो को उत्पन्न करते हैं।

❖ **प्रमेहस्तु व्यानापान प्रकोपजाः (सु. नि. 1/20)** – व्यान व अपान वायु के प्रकोप से प्रमेह होता हैं।

प्रमेह में दोष – (3) :– कफः सपित्तः पवनश्च दोषाः। – (च. चि. 6) प्रमेह में त्रिदोष मुख्यतः कफ दोष के कारण।
बहुद्रवः श्लेष्मा दोषविशेषः। – (च. नि. 4)
सर्व एव सर्वदोषसमुत्थाः सह पिडकाभिः। सु. – सभी प्रमेह एवं प्रमेह पिडिका त्रिदोषज होते है।
प्रमेह में दूष्य (10) :– रस, रक्त, मांस, मेद, ––, मज्जा, शुक्र + ओज + अम्बु, वसा, **लसीका।**
बहबद्धं मेदो मांस शरीरजक्लेदः शुक्रं शोणितं वसा मज्जा लसीका **रसश्चौजः संख्यात** इति दूष्याविशेषाः। – **(च. नि. 4)**

प्रमेह के पूर्वरूप :–
स्वेदोऽगंगन्धः शिथिलागंता च शय्यासनस्वप्नसुखे रतिश्च। हृन्नेत्रजिह्वाश्रवणोपदेहो **घनागंता** केशनखातिवृद्धिः।।
शीतप्रियत्वं गलतालुशोषो **माधुर्यमास्ये करपाददाहः। भविष्यतो मेहगदस्य रूपं मूत्रेऽभिधावन्ति पिपीलिकाश्च।।**
(केशानां नखानां चाभिवर्धनम्) [illegible] पूर्वरूप है।)

माधव निदान – **दन्तादीनां मलाढ्यत्वं प्राग्रूपं** [illegible] **देहे तृट् स्वाद्वास्यं च जायते।**
सुश्रुत – हस्तपादतलदाह, **मधुरशुक्लमूत्रता,** तालुगलजिह्वादन्तेषु मलोत्पत्ति, **केशानां जटिलीभावः,** नखानाम् **वृद्धिश्च।**

❖ सामान्य लक्षण :– **सामान्य लक्षण तेषां प्रभूताविलमूत्रता। (अ. हृ. नि. 10/7)**
साध्यासाध्यता :– साध्याः कफोत्था दश पित्तजाः षड् याप्या, न साध्यः पवनाच्चतुष्कः।।

1. कफज प्रमेह – दोष–दूष्य **समक्रियत्वाद** – साध्य।
2. पित्तज प्रमेह – दोष–दूष्य **विषमक्रियत्वाद** – याप्य।
3. वातज प्रमेह – **महात्ययिक** होने से – असाध्य।

प्रमेह भेद – (20) – सुश्रुत, चरक, वाग्भट्ट, माधव, शारंर्धर – 20।

–: 1. कफज प्रमेह :–

चरकानुसार	सुश्रुतानुसार	वाग्भट्टानुसार
1. उदकमेह – जलो पमं।	1. उदकमेह	1. उदकमेह
2. इक्षुमेह – इक्षुरसपमं।	2. इक्षुबालिकामेह	2. इक्षुमेह
3. सान्द्रमेह – घनं।	3. सान्द्रमेह	3. सान्द्रमेह
4. सान्द्रप्रसादमेह – घनं चोपरि विप्रसन्नम्।	**4. सुरामेह**	**4. सुरामेह**
5. शुक्लमेह – शुक्लं।	**5. पिष्टमेह**	**5. पिष्टमेह**
6. शुक्रमेह – सशुक्रं।	6. शुक्रमेह	6. शुक्रमेह
7. शीतमेह – शिशिरं।	**7. फेनमेह**	**7. शीतमेह**
8. सिकतामेह – वालुकया युतं।	8. सिकतामेह	8. सिकतामेह
9. शनैर्मेह – शनैः।	**9.** शनैर्मेह	**9.** शनैर्मेह
10. लालामेह – लालेव।	**10. लवणमेह**	**10. लालामेह**

—: 2. पित्तज प्रमेह :—

चरकानुसार	सुश्रुतानुसार	वाग्भट्टानुसार
1. नीलमेह — नीलम्।	1. नीलमेह	1. नीलमेह
2. हारिद्रमेह — हारिद्र।	2. हारिद्रमेह	2. हारिद्रमेह
3. कालमेह — कालमथापि ।	**3. अम्लमेह**	**3. कालमेह**
4. क्षारमेह — क्षारोपमं।	4. क्षारमेह	4. क्षारमेह
5. मजिष्ठामेह — मजिष्ठमथापि।	5. मजिष्ठामेह	5. मजिष्ठामेह
6. रक्तमेह — रक्तं।	6. रक्तमेह	6. रक्तमेह

—: 3. वातज प्रमेह :—

चरकानुसार	सुश्रुतानुसार	वाग्भट्टानुसार
1. वसामेह — वसा मिश्रं मूत्र त्याग।	1. वसामेह	1. वसामेह
2. लसीकामेह — लसीका मिश्रं मूत्र त्याग।	2. हस्तिमेह	2. हस्तिमेह
3. मज्जामेह — मज्जा मूत्र त्याग।	**3. सर्पिमेह**	**3. मज्जामेह**
4. मधुमेह — ओज मिश्रं मूत्र त्याग।	**4. क्षौद्रमेह**	**4. मधुमेह**

प्रमेह का चिकित्सा सूत्र :—

1. **स्थूलः प्रमेही बलवानिहैकः कृशस्तथैकः परिदुर्बलश्च। संबृंहणं तत्र कृशस्य कार्यं संशोधनं दोषबलाधिकस्य।।**
   - स्थूल प्रमेही में — संशोधन द्वारा चिकित्सा करें। कृश प्रमेही में — संशमन चिकित्सा करें।

2. **संतर्पण :— ऊर्ध्वं तथाऽधश्च मलेऽपनीते मेहेषु सन्तर्पणमेव कार्यम्।** — (च. चि. 6/16)
   जब ऊर्ध्व और अधः मार्ग से मल का शोधन हो जाए तब प्रमेहों में संतर्पण का प्रयोग करना चाहिए।
   स्थूल प्रमेही के सन्तर्पण में युक्ति :—
   गुल्मः क्षयो मेहनबस्तिशूलं मूत्रग्रहश्चाप्यपतर्पणेन। प्रमेहिणः स्युः परितर्पणानि कार्याणि तस्य प्रसमीक्ष्य वह्निम्।।
   यदि बलवान प्रमेही के संशोधन के पश्चात् उसका अपतर्पण किया जाए तो उससे उसमें वायु की वृद्धि होने से गुल्म, क्षय, मूत्रमार्ग और वस्ति में वेदना और मूत्रावरोध हो सकता है।

3. **प्रमेह में पथ्य :— यवप्रधानस्तु भवेत् प्रमेही।** (च. चि. 6/21) — प्रमेह में मुख्य रूप से यव की ही भोजन करना चाहिए।

4. **प्रमेह और मूत्रगत रक्तपित्त में भेद — हारिद्रवर्णं रुधिरं च मूत्रं विना प्रमेहस्य हि पूर्वरूपैः।**
   यो मूत्रयेत्त न वदेत् रक्तस्य पित्तस्य हि स प्रकोपः।। (च. चि. 6/54)
   ✓ प्रमेह के पूर्वरूप के बिना जो रोगी हल्दी अथवा रक्त वर्ण का मूत्र त्याग करे, उसको प्रमेह नहीं रक्तपित्त समझना चाहिए।

5. **संशमन योग :—**
   1. **दार्वीं सुराह्वां त्रिफलां समुस्तां कषायमुत्क्वाथ्य पिबेत् प्रमेही।** — दारूहरिद्रा, देवदारू, त्रिफला, मुस्तक क्वाथ + मधु
   2. **क्षौद्रेण युक्तामथवा हरिद्रा पिबेद् रसेनामलकीफलानाम्।।** — हरिद्रा चूर्ण को आमलकी स्वरस के साथ पीना चाहिए।
   3. आचार्य चरकानुसार कफज प्रमेह और पित्तज प्रमेह नाशक **10–10 कषाय** योग बतलाए है।

6. **स्नेहन :—** वातज प्रमेह में स्नेहन कराना चाहिए। (च. चि. 6/34) उदा. — त्रिकण्टकाद्य स्नेह

7. **विरूक्षण :—** पित्तज एवं कफज प्रमेह में विरूक्षण कराना चाहिए। (च. चि. 6/49)

8. **प्रमेह में पेय द्रव :—** विजयसारोदक/कुशोदक/मधूदक/त्रिफलारस/सीधु/माध्वीक मदिरा का पान करना चाहिए।
   सारोदकं वाऽथ कुशोदकं वा मधूदकं वा त्रिफलारसं वा। सीधुं पिबेद्वा निगदं प्रमेही माध्वीकमग्र्यं चिरसंस्थितं वा।।

—: प्रमेह में चिकित्सीय योग :—

चरकानुसार	सुश्रुतानुसार
1. फलत्रिकादि क्वाथ :— सर्वप्रमेहहर (दारूहरिद्रा, इन्दवारूणी, त्रिफला, मुस्तक क्वाथ — निशा+मधु से सेवन)	प्रमेह — शालसारादि अवलेह, लोहारिष्ट
2. मध्वासव, लोध्रासव — कफपित्तज प्रमेह — 2 पल मात्रा	प्रमेहपिडिका — धान्वन्तर घृत, नवायस लौह
3. दन्त्यासव, भल्लातकासव	मधुमेह — शिलाजतु, माक्षिक, तुवरक तैल

✓ सिद्धसार निघण्टु में रविगुप्त ने 'फलत्रिकादि क्वाथ' का प्रयोग पाण्डु चिकित्सा में किया है।

❖ वंशानुगत प्रमेह :—**जातः प्रमेही मधुमेहिनो वा न साध्य उक्तः स हि बीजदोषात्।** :— असाध्य होता है।

7. कुष्ठ चिकित्सा

निरूक्ति :– **'कुष्णाति सर्व वपुः** इति कुष्ठम्।' – जो शरीर की त्वचा को विकृत करे वह कुष्ठ है।
कुष्ठ :– चरक – चिरकालिक रोग – कुष्ठ दीर्घरोगाणां । (च. सू. 25/40) सुश्रुत – औपसर्गिक रोग।
पर्याय – त्वगामय – सुश्रुत।
निदान :– (1) विरोधीन्यन्नपानानि द्रवस्निग्धगुरूणि च।
(2) छर्दि आदि का वेगसंधारण करने से।
(3) भोजन करने के पश्चात् अत्यधिक व्यायाम, आतप(धूप) सेवन से।
(4) शीत, उष्ण पदार्थो, उपवास तथा भोजन का क्रम विरूद्ध (व्यत्यास) सेवन करने से।
(5) घर्मश्रमभयार्तानां द्रुतं शीताम्बुसेविनाम्। – धूप, श्रम, भय पश्चात् शीतल जल में स्नान करना।
(6) अजीर्णाध्यशिनां चैव पंच कर्मापचारिणाम्। – अजीर्णाध्यशन एंव पंचकर्मो के अविधि प्रयोग से।
(7) विप्रान् गुरून् धर्षयतां **पापं कर्म च कुर्वताम्।**

❖ **पापं कर्म च कुर्वताम्** – कुष्ठ और उदर रोग दोनों का निदान है।
❖ रक्तज कृमि के निदान –कुष्ठ के समान होते है। – **(शोणितजानां तु खलु कुष्ठैः समानं समुत्थानम् – चरक)**

कुष्ठ में दोष–दूष्य :– वातादयस्त्रयो दुष्टास्त्वग्रक्तं मांसमम्बु च। दूषयन्ति स कुष्ठानां **सप्तको द्रव्यसङ्ग्रहः।** (च. चि. 7/9)
कुष्ठ के **3 दोष वात, पित्त, कफ** और **4 दूष्य त्वक्**, मांस, शोणित, लसीका हैं।

> ➢ **एवं कुष्ठं समुत्पन्नं त्वचि कालप्रकर्षतः। क्रमेण धातून् व्याप्नोति नरस्याप्रतिकारिणः।** – (सु. नि. 5/20)
> सुश्रुतानुसार कुष्ठ में सर्वप्रथम त्वचा → लसीका → रक्त → मांस आदि क्रम से दूषित होते है।

कुष्ठ के पूर्वरूप – स्पर्शाज्ञत्वमतिस्वेदो न वा वैवर्ण्यमुन्नतिः। कोठानां **लोमहर्षश्च कण्डूस्तोदः** श्रमः क्लमः।।
व्रणानामधिकं शूलं शीघ्रोत्पत्तिश्चिरस्थितिः। दाहः सुप्ताङ्गता **चेति कुष्ठलक्षणमग्रजम्।।** (च. चि. 7/12)

कुष्ठ के भेद : – चरक – 18 – 7 महाकुष्ठ तथा 11 क्षुद्र कुष्ठ (असंख्य भेद भी)
सुश्रुत – 18 – 7 महाकुष्ठ तथा 11 क्षुद्र कुष्ठ।

महाकुष्ठ	**चरक**	**सुश्रुत**	**वाग्भट्ट**
K	1. कपाल	**1. अरूण**	1. कपाल
A	2. औदुम्बर	2. उदुम्बर	2. उदुम्बर
M	3. मण्डल	3. मण्डल	3. मण्डल
ऋतिक	4. ऋष्यजिह्व	4. ऋष्यजिह्व	4. ऋष्यजिह्व
S	5. सिध्म	**5. दद्रु**	**5. दद्रु**
थ्ययो	6. पुण्डरीक	6. पुण्डरीक	6. पुण्डरीक
कोक	7. काकणक	7. काकणक	7. काकणक

क्षुद्र कुष्ठ	**चरक**	**सुश्रुत**	**वाग्भट्ट**
एक	1. एककुष्ठ	1. एककुष्ठ	1. एककुष्ठ
चर्मकीट ने	2. चर्मकुष्ठ	**2. महाकुष्ठ**	2. चर्मकुष्ठ
काटा	3. किटिभ	3. किटिभ	3. किटिभ
अ	4. अलसक	**4. विसर्प**	4. अलसक
ब	5. विपादिका	**5. परिसर्प**	5. विपादिका
दद्दु की	6. द्रदु	6. सिध्म	6. सिध्म
चर्म	7. चर्मदल	7. चर्मदल	7. चर्मदल
पर	8. पामा	8. पामा	8. पामा
विस्फोट हुआ	9. विस्फोट	**9. स्थूलारुष्क**	9. विस्फोट
100 वार	10.शतारू	**10. रकसा**	10.शतारू
चर्चा करते रहे	11.विचर्चिका	11. विचर्चिका	11.विचर्चिका

क्षुद्र कुष्ठ	दोष	समान वर्ण	लक्षण
1. कपाल	वातज	कृष्णारूण कपालाभं	रूक्ष, तनु, विषम, **तोदबहुल।**
2. औदुम्बर	पित्तज	उदुम्बर फलाभासं	दाहकण्डूरूजारागपरीतं, **लोमपिंजरम्।**
3. मण्डल	कफज	मण्डल वत	**श्वेतं रक्तं स्थिर स्त्यानं स्निग्धमुत्सन्नमण्डलम्।**
4. ऋष्यजिह्व	वातपित्तज	ऋष्यजिह्वा संस्थानं	कर्कश, **रक्तंपर्यन्तमन्तः श्यावं सवेदनम्।**
5. सिध्म	वातकफज	अलाबुपुष्प वर्ण	श्वेतं ताम्रं तनु च **यद् रजो घृष्टं विमुंचति।**
6. पुण्डरीक	पित्तकफज	पुण्डरीकदलोपमम्	श्वेतं रक्तंपर्यन्तं पुण्डरीकदलोपमम, **सदाह।**
7. काकणक	त्रिदोषज	काकणन्तिका वर्ण	काकणन्तिका वर्णम्, **अपाकं तीव्रवेदनम्।**

क्षुद्र कुष्ठ	दोष	लक्षण
1. एककुष्ठ	वातकफज	अस्वेदनं महावास्तु **यन्मत्स्यशकलोपमम्।**
2. चर्मकुष्ठ	" "	चर्माख्यं **बहलं हस्तिचर्मवत्।**
3. किटिभ	" "	श्यावं **किणखरस्पर्शं परुषं** किटिभ मतम्।
4. विपादिका	" "	वैपादिकं **पाणिपादस्फुटनं** तीव्रवेदनम्।
5. अलसक	" "	कण्डूमभि सरागैश्च **गण्डैरलसकं** चितम्।
6. द्रदु	पित्तकफज	सकण्डूरागपिडकं दद्रुमण्डलमुद्गतम्।
7. चर्मदल	" "	रक्तं सकण्डु सस्फोटं सरूग्दलति, **स्पर्शासहमुच्यते।**
8. पामा	"	पामा श्वेतारुणश्यावाः **कण्डूलाः पिडका** भृशम्।
9. विस्फोट	" "	स्फोटाः श्वेतारुणाभासा विस्फोटाः **स्युस्तनुत्वचः।**
10. शतारू	"	रक्तं श्यावं **सदाहार्ति** शतारूः स्याद् **बहुव्रणम।**
11.विचर्चिका	कफज	सकण्डूः पिडका श्यावा **बहुस्रावा विचर्चिका।**

❖ दोषानुसार कुष्ठ के लक्षणों का वर्णन चरक और सुश्रुत दोनों ने किया है। (च. चि. 7/34)

चरकानुसार कुष्ठादि में वातादि लक्षण :–

(1) वातजन्य में – रौक्ष्यं शोषस्तोदः शूलं संकोच।

(2) पित्तजन्य में – दाह, राग, परिस्रवः, पाक।

(3) कफजन्य में – **श्वैत्यं, शैत्य,** कण्डूः, स्राव, शोध, गौरव।

सुश्रुतानुसार कुष्ठादि में वातादि लक्षण :–

(1) वातजन्य में – त्वक्संकोच, सुप्तता, स्वेदाभाव/आधिक्य, शोफ, **कौण्य,** स्वरोपघात।

(2) पित्तजन्य में – पाकावदरण, अंगुलिपतन, **कर्णनासामंगाक्षिराग, सत्व(कृमि) उत्पत्ति।**

(3) कफजन्य में – कण्डू, **वर्णभेद** (भिन्नता), शोफस्राव, गौरव।

साध्यासाध्यता – 1. **साध्य** :– एकदोषज। 2. **कृच्छ्रसाध्य** :– द्वन्द्वज। 3. **असाध्य** – सर्वदोषज (काकणक)।

- सुश्रुत – काकणक, पुण्डरीक व आदिबलप्रवृत्त कुष्ठ – असाध्य **चरक** – काकणक कुष्ठ – असाध्य।

–: कुष्ठ का चिकित्सा सूत्र :–

1. वातोत्तरेषु सर्पिः वमनं श्लेष्मोत्तरेषु कुष्ठेषु। पित्तोत्तरेषु मोक्षो रक्तस्य विरेचनं चाग्रे।। (च. चि. 7/39)

1. वातिक कुष्ठ में – घृतपान। 2. पैत्तिक कुष्ठ में – विरेचन – रक्तमोक्षण। 3. कफज कुष्ठ में – वमन।

2. बहुदोषः संशोध्यः कुष्ठी बहुशोऽनुरक्षता प्राणान्। (च. चि. 7/41) – कुष्ठ में पुनः पुनः संशोधन का निर्देश मिलता है।

3. तत्रपूर्वरूपेषूभयतः संशोधनमासेवेत। (सु.चि. 9/6)– **सुश्रुत ने कुष्ठ के पूर्वरूप में ही उभय संशोधन कराने का निर्देश दिया है**

कुष्ठ में संशोधन – 'पक्षात् पक्षात् छर्दनान्यभ्युपेयाद्। मासात् मासात् स्रंसनं चापि देयम्।
स्राव्यं रक्तं वत्सरे हि द्विरल्पं। नस्यं दद्याच्च त्रिरात्रात्, त्रिरात्रात्।। (सु. चि. 9/43)

1. नस्य – 3–3 दिन पर।
2. वमन –15 दिन पर।
3. **स्रंसन**–1 माह में विरेचन।
4. रक्तमोक्षण–6 – 6 माह पर (वर्ष में 2 बार)।

—: कुष्ठ में चिकित्सीय योग :—

1. **चूर्ण** — मुस्तादि चूर्ण, त्रिफलादि चूर्ण।
1. **क्वाथ** — पटोलमूलादि क्वाथ, **कृतमाल क्वाथ** :— विशेष रूप से **कफज कुष्ठ में।**
2. **लेप — चित्रकादि लेप, त्र्यादि लेप, एडगजादि लेप।**
3. **रस औषधि — लेलीतक (गंधक), माक्षिक (सप्तदशकुष्ठघाती), पारद** — सर्वव्याधिनिबर्हणमद्यात्कुष्ठी **रस** च निगृहीतम्।
5. **आसव — मध्वासव, त्रिफलास्रव।**
6. **अरिष्ट — कनकबिन्द्वरिष्ट** — 1 मास तक सेवन से महाकुष्ठ और 15 दिन सेवन से क्षुद्रकुष्ठ ठीक हो जाता है।
7. **स्नान — सिद्धार्थक स्नान** — (सिद्धार्थक घृत — अपस्मार में, सिद्धार्थक अगद — सर्वग्रहबाधानाशक)
8. **तैल** — श्वेतकरवीराद्य तैल, तिक्तेक्ष्वाक्वादि तैल, **कनकक्षीरी तैल**
9. **घृत — महातिक्तकं घृत, महाखदिर घृत, तिक्तषटपलं घृत** — 6 पल नवीन घृत का प्रयोग
10. कुष्ठ में पान, आहार, सेचन, धूपन, प्रदेह हेतु कृमिनाशक विडंग तथा कुष्ठघ्न खदिर का प्रयोग करना चाहिए।

❖ **चरक ने खदिरारिष्ट का प्रयोग — मांसधातु-विष चिकित्सा में बतलाया है।**

सुश्रुतोक्त चिकित्सीय योग :—

- **तैल — तुवरक तैल,** भल्लातक तैल, लाक्षादि तैल, **वज्रक तैल, महावज्रक तैल**
- **घृत** — **नील घृत, महानील घृत** — श्वित्र में, कुष्ठ (महानील तैल — पालित्य में — चरक)
- **महाऔषधि** — अयस्कृति (लौह रसायन)
- **स्नान** — स्नान, पान, आहार में सर्वत्र खदिर प्रयोग का प्रयोग करना चाहिए।
- **यवकल्प** — कुष्ठ तथा प्रमेह में **अनुपान** — शालसारादिगण क्वाथ।

—: श्वित्र कुष्ठ का चिकित्सा सूत्र :—

1. **मलपूरस चिकित्सा :— श्वित्राणां सविशेषं योक्तव्यं स्रंसनं विशुद्ध्यर्थम्। श्वित्रे स्रंसनमग्र्यं मलपूरस इष्यते सगुडः।।**
   श्वित्र कुष्ठ में पहले संशोधन विशेष रूप से स्रंसन कराने के बाद **मलपूरस (काष्ठोदुम्बर)** गुड के साथ देना चाहिए।
2. **खदिर क्वाथ** ही श्रेष्ठ श्वित्र कुष्ठनाशक है।
3. मनःशिलादि लेप।

साध्यता — श्वित्रं कस्यचिदेव प्रणश्यति क्षीणपापस्य। — पाप क्षीण होने पर ही श्वित्र साध्य हो पाता है।

✓ वाग्भट्ट के अनुसार श्वित्र असाध्य हो जाने पर कुष्ठ से भी अधिक वीभत्स है।

श्वित्र के भेद — (3) — 1. दारूण :— रक्तवर्णी + रक्ताश्रित
2. अरूण :— ताम्रवर्णी + मांसाश्रित।
3. किलास :— श्वेतवर्णी + मेदोश्रित। — **तीनों त्रिदोषज एंव उत्तरोत्तर दुश्चिकित्सीय है।**

❖ **किलास के 3 भेद** — 1. वातजन्य 2. पित्तजन्य 3. कफजन्य — सुश्रुत ने बतलाए है।)

❖ **किलास और दारूण — ये श्वित्र के ही पर्याय है। — वाग्भट्ट।**

असाध्यता — जिसके मण्डल परस्पर मिले हुए हो, बहुत से मण्डल हो, जिसके बाल लाल हो गये हो एवं जो कई वर्षो में उत्पन्न हुआ हो ऐसा श्वित्र असाध्य होता है।

किलास का निदान — पापक्रिया पूर्वकृतं च कर्म हेतुः किलास विरोधि चान्नम्।।

VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER — DR. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

8. राजयक्ष्मा चिकित्सा

सबसे पहले नक्षत्रों के राजा चन्द्रमा को यह रोग हुआ था अतः इसे राजयक्ष्मा कहते है।

यक्ष्मा के पर्याय :– क्रोध, यक्ष्मा, ज्वर, रोग तथा दुःख। (वाग्भट्ट – शोष, क्षय, राजयक्ष्मा, रोगराट्।)

- ❖ चरक ने क्रोध को राजयक्ष्मा का पर्याय माना है। लेकिन वाग्भट्ट ने ज्वर का।
- ❖ चरक ने रोगराट् को ज्वर का पर्याय माना है। लेकिन वाग्भट्ट ने राजयक्ष्मा का।

राजयक्ष्मा के निदान :– अयथाबलमारम्भं वेगसन्धारणं क्षयम्। यक्ष्मणः कारणं विद्याच्चतुर्थ विषमाशनम्।

हेतु :– 4 –
1. अयथाबलमारम्भ – शारीरिक शक्ति से अधिक कार्य करना। (आघात – सुश्रुत)
2. वेगसंधारण – अधारणीय वेगों को रोकना।
3. शुक्रक्षयात – शरीर का धातुओं का क्षय होना
4. विषमाशनजन्य – नियम विरूद्ध आहार ग्रहण करना।

साहसिक जन्य	**वेगसन्धारण जन्य**	**क्षय जन्य**	**विषमाशनजन्य**
(1) कास	(1) कास	(1) कास	(1) कास
(2) ज्वर	(2) ज्वर	(2) ज्वर	(2) ज्वर
(3) पार्श्वशूल	(3) पार्श्वशूल	(3) पार्श्वशूल	(3) पार्श्वशूल
(4) स्वर भेद	(4) स्वर भेद	(4) स्वर क्षय	(4) स्वर भेद
(5) अतिसार	(5) अतिसार	(5) अतिसार	**(5) रक्तवमन**
(6) अरूचि	(6) अरूचि	(6) अरूचि	(6) अरूचि
(7) शिरःशूल	(7) शिरःशूल	(7) शिरःशूल	(7) शिरःशूल
(8) कण्ठोद्ध्वंस	(8) अंसावमर्द	(8) अंसताप	(8) अंसताप
(9) जृम्भा	(9) अंगमर्द	(9) अंगमर्द	**(9) प्रसेक**
(10) उरःशूल	(10) प्रतिश्याय	(10) प्रतिश्याय	(10) प्रतिश्याय
(11) शोणितष्ठीवनं	(11) वमन	**(11) श्वास**	(11) वमन

राजयक्ष्मा के पूर्वरूप :– **पूर्वरूपं प्रतिश्यायो दौर्बल्य दोषदर्शनम्। + स्त्रीमद्यमांसप्रियता** प्रियता चावगुठने। + प्रायोऽन्नपाने **केशानां नखानां चाभिवर्धनम्।**

❖ **तस्मात् पुरीषं संरक्ष्यं विशेषाद्राजयक्ष्मिणः। सर्वधातुक्षयार्तस्य बलं तस्य हि विड्बलम्।।**

राजयक्ष्मा से पीडित व्यक्ति के मल की रक्षा यत्नपूर्वक करना चाहिए और क्योंकि आहार के अनुपात से अन्य धातुऍं नहीं बनती है। केवल मल के बल पर ही जीवित रहता है।

(1) त्रिरूप :– अंसपार्श्वाभितापश्च सन्तापः करपादयोः। ज्वरः सर्वागंश्चेति लक्षणं राजयक्ष्मणः।। (च. चि. 8/27)

(1) अंसपार्श्वाभिताप (2) सन्तापः करपादयोः (3) सर्वागज्वरः। (काश्यप ने त्रिरूप नहीं माने हैं)
1 ज्वर 2. रक्तस्राव 2. कास – सुश्रुत।
1 ज्वर **2. रक्तपित्त** 3. कास – भोज।

(2) षड्रूप :– यक्ष्मिणः षडिमानि वा। कासो ज्वरः पार्श्वशूलं स्वरवर्चो गदोऽरूचिः।।

(1) कास (2) ज्वर (3) पार्श्वशूलं (4) स्वरभेद (5) अतिसार (6) अरूचि।
(1) कास (2) ज्वर (3) **श्वास** (4) स्वरभेद (5) **शोणितदर्शन** (6) भक्तद्वेष। – सुश्रुत।

(3) एकादश रूप :– (1) कास (2) ज्वर (3) पार्श्वशूलं (4) स्वरभेद (5) अतिसार (6) अरूचि।
(7) **श्वास**, (8) **अंसताप**, (9) **शिरःशूल**, (10) **श्लेष्मछर्दन** (11) **शोणितष्ठीवनं।**

- ❖ सुश्रुत ने एकादशरूपों में चरकोक्त – श्लेष्मछर्दन, श्वास के स्थान पर **'कण्ठोद्ध्वंस, दाह'** माने है।
- ❖ वाग्भट्ट ने एकादशरूपों में चरकोक्त – अतिसार, शोणितष्ठीवन के स्थान पर **विड्भ्रंश, विड्शोष** माने है।

राजयक्ष्मा की साध्यासाध्यता :–

1. रोगी बल, मांस, और रक्त क्षीण न हुआ हो, शरीर बलबान हो, अरिष्ट लक्षण उत्पन्न न हुये हो तो – **साध्य।**
2. रोगी दुर्बल हो, बलहीन, मांस, और रक्त की न्यूनता वाला हो, लक्षण अल्प रहने पर भी – **असाध्य।**

राजयक्ष्मा में कास का स्वरूप :– पिच्छिलं बहलं विस्र हरितं श्वेतपीतकम्।

श्वास :– वातश्लेष्मविबद्धत्वादुरसः श्वासमृच्छति। **अतिसार :–** पिच्छिलता युक्त द्रवमल के रूप में आता है।

–: राजयक्ष्मा का चिकित्सा सूत्र :–

❖ **सर्वत्रिदोषजो यक्ष्मा दोषाणां तु बलाबलम्। – (च. चि. 8/63)** – सभी प्रकार के राजयक्ष्मा त्रिदोषज होते है। अतः दोषों के बलाबल पर विचार कर चिकित्सा करे।

❖ राजयक्ष्मा मे नाडी **(बस्तमत्स्यशिरोभिः वा नाडीस्वेदं प्रयोजयेत्)**, उपनाह स्वेद, प्रदेह, प्रलेप, नस्य का प्रयोग करें

❖ **बृंहण :–** अजा मांस (सुश्रुत – प्रसह वर्ग के प्राणियों का मांस)

❖ **आहार :–** यव, गोधूम, शालि धान्य तथा मूलक व कुलत्थ यूष।

❖ **पेय पदार्थ :–** वारूणी मद्य का ऊपर का स्वच्छ भाग, माध्वीक तथा **पंचमूल साधित जल।**

जो स्वस्थ व्यक्ति वारूणी मद्य सर्वदा पीता है उसे राजयक्ष्मा रोग नहीं हो सकता हैं – चरक।

❖ स्नेहयुक्त मृदु वमन, विरेचन – **दोषाधिकानां वमनं शस्यते सविरेचनम्।**

–: राजयक्ष्मा के चिकित्सीय योग :–

1. **घृत :–** रास्ना घृत, बला घृत, दशमूलाद्य घृत, [illegible] घृत, पंचपंचमूल घृत। **(पाराशर घृत – चक्रदत्त)**

2. **सितोपलादि चूर्ण :– सितोपलां तुगाक्षीरी पिप्पली बहुला त्वचम्। अन्त्यादूर्ध्वं द्विगुणितं लेहयेन्मधुसर्पिषा।।**

5 घटक :– सिता(मिश्री), तुगाक्षीरी(वंशलोचन), पिप्पली, बहुला(छोटी इलायची), त्वच(दालचीनी)– 16 : 8 : 4 : 2 : 1

उपयोग :– श्वास, कास, पार्श्वशूल, कफविकार, सुप्तजिह्वा, अरूचि और अग्निमांध।

❖ वाग्भट्ट ने चरकोक्त – **सितोपलादि चूर्ण** के स्थान पर **त्वगेलादि चूर्ण** का वर्णन किया है।

3. **यवानीषाडव चूर्ण :–** यवानी, तिन्तिडीक, नागर, अम्लवेतस, दाडिम, अम्ल बदर – 1 –1 कर्ष।
धान्य, सौवर्चल लवण, जीरा, वरांग (दालचीनी) – ½ – ½ कर्ष।
पिप्पली 100 नग, मरिच 200 दाने तथा शर्करा 4 पल।

उपयोग :– हृदयरोग, प्लीहा विकार, पार्श्वशूल, विबन्ध, आनाह, श्वास, कास, अर्श, ग्रहणी विकार नाशक है

4. **तालीशादि चूर्ण :–तालीसपत्रं मरिचं नागरं पिप्पली शुभा। यथोत्तरं भागवृद्धया त्वगेले चार्धभागिके।।**
पिप्पल्यष्टगुणा चात्र प्रदेया सितशर्करा। कासश्वासारूचिहरं तच्चूर्णं दीपनं परम्।।

8 घटक :– तालीशपत्र, मरिच, शुण्ठी, पिप्पली वंशलोचन ये क्रमशः 1→ 2→ 3→ 4→ 5 भाग,
त्वग व ऐला – तालीशपत्र से आधी मात्रा में, चीनी – पिप्पली से आठ गुना मात्रा में।

उपयोग :– कासश्वासारूचिहर + हृत्पाण्डुग्रहणीदोषप्लीहाज्वरापहम्।

5. **जुगुप्सा चिकित्सा :– राजयक्ष्मा में जुगुप्सा चिकित्सा का विधान बतलाया गया है।**
उदा. – 1. गृध, उल्लू, नीलकण्ठ के मांस को मोर का मांस कहकर खिलायें।
2. कौवे के मांस को तित्तिर का मांस कहकर खिलायें।

6. **वैदिक चिकित्सा :– राजयक्ष्मा में वैदिक चिकित्सा का उल्लेख मिलता है।**

राजयक्ष्मा के रोगी में बल, मांस की वृद्धि के लिए क्षतक्षीण चिकित्सा में उपदेशित पथ्य का प्रयोग करना चाहिए।

9. उन्माद चिकित्सा

उन्माद का अर्थ है – दोषों का उन्मार्गगामी होकर मन में विभ्रम उत्पन्न करना।

(1) उन्माद का निदान :–

विरूद्धदुष्टाशुचिभोजनानि प्रधर्षणं देवगुरूद्विजानाम्। उन्मादहेतुर्भयहर्षपूर्वो मनोऽभिघातो विषमाश्च चेष्टाः।। (च. चि. 9/4)

1. विरूद्ध, दुष्ट, अपवित्र भोजन करने से
2. देव, गुरू, ब्राह्मणों का अपमान करने से
3. अत्यधिक भय अथवा हर्श।
4. मानसिक आघात और विषम चेष्टा से।

(2) उन्माद की सम्प्राप्तिः– उन्माद रोग हीनसत्व वाले मनुष्यों को ही होता है।

तैरल्पसत्वस्य मलाः प्रदुष्टा बुद्धेर्निवास हृदयं प्रदूष्य। स्रोतांस्यधिष्ठाय मनोवहानि प्रमोहयन्त्याशु नरस्य चेतः।।

(स्मृति का नाश :– उन्माद, अपस्मार, प्रज्ञापराध और मदात्यय इन सभी रोगों में होता हैं।)

(3) उन्माद के लक्षण :–

धीविभ्रमः सत्वपरिप्लवश्च पर्याकुला दृष्टिधीरता च। अबद्धवाक्त्वं हृदयं च शून्यं सामान्यमुन्मादगदस्य लिगंम्।।

1. धीविभ्रमः **(धीधृतिस्मृतिविभ्रमः –प्रज्ञापराध)**
2. मन का भ्रमित होना
3. नेत्रों में व्याकुलता
4. असम्बद्ध प्रलाप और हृदय में शून्यता।

(5) उन्माद के भेद :– 5 – 1. वातज 2. पित्तज 3. कफज 4. सन्निपातज 5. आगुन्तुक। **(सुश्रुत – 6)**

सुश्रुत, वाग्भट्ट :– 6 – 1. वातज 2. पित्तज 3. कफज 4. सन्निपातज 5. मानस दुखज 6. विषज।

1. **वातज उन्माद के लक्षण :– अस्थानहासस्मित नृत्यगीतवागङ्गविक्षेपण रोदनानि।**
2. **पित्तज उन्माद के लक्षण :– अमर्षसंरम्भ विनग्नभावा।**
3. **कफज उन्माद के लक्षण :– नारीविविक्तप्रियता, अतिनिद्रा।**

भूतोन्माद (आगुन्तुक उन्माद) का कारण :– 1. हिंसा 2. रति3. अभ्यर्चन (पूजा करना) – चरक निदान।

देवर्षिगन्धर्वपिशाचयक्षरक्षःपितृणामभिधर्षणानि। आगन्तुहेतुः नियमव्रतादि मिथ्याकृतं कर्म च पूर्वदेहे।। (च. चि. 9/16)

भूतोन्माद के भेद :– 8 – आक्रमण काल –

1. देव – शुक्ल प्रतिपदा, त्रयोदशी।
2. ऋर्षिग्रह – षष्ठी, नवमी।
3. पितृग्रह – दशमी, अमावस्या।
4. गन्धव – द्वादशी, चर्तुदशी।
5. यक्ष – शुक्ल पक्ष की एकादशी, सप्तमी।
6. ब्रह्मराक्षस – शुक्ल पक्ष की पंचमी या पूर्णिमा।
7. राक्षस – द्वितीया, तृतीया या अष्टमीं।
8. पिशाच – द्वितीया, तृतीया या अष्टमीं।

❖ सुश्रुत – 8 – चरकोक्त 'ऋर्षिग्रह व ब्रह्मराक्षस'' के स्थान पर ''देवशत्रुग्रह तथा नागग्रह'' माना है।

❖ भावप्रकाश ने भूतोन्माद को औपसर्गिक रोग माना है।

वाग्भट्ट :– 18 –

1. देव 2. दैत्य 3. गन्धर्व 4. सर्प 5. यक्ष 6. राक्षस 7. ब्रह्मराक्षस 8. पिशाच 9. प्रेत **10. कूष्माण्ड 11. निषाद 12. औकिरण 13. बेताल** 14. पितृ 15.गुरू 16. वृद्ध 17. ऋर्षि 18.सिद्धग्रह

—: उन्माद का चिकित्सा सूत्र :—

1. उन्माद में प्रथम स्नेहन, स्वेदन, वमन (कफज), विरेचन (पित्तज उन्माद), अनुवासन, निरूह बस्ति और नस्य कराये। यदि उपरोक्त चिकित्सा से लाभ न हो तो तीक्ष्ण नस्य, अंजन तीक्ष्ण और ताडन का प्रयोग करें।
2. **तर्जनं त्रासनं दानं हर्षणं सान्त्वनं भयम्। विस्मयो विस्मतेः हेतोर्नयन्ति प्रकृतिं मनः।।**
3. **घृत एंव मांस सेवन — घृतमांसवितृप्त वा निवाते स्थापयेत्सुखम्। त्यक्त्वा मतिस्मृतिभ्रंशं संज्ञा लब्ध्वा प्रमुच्यते।।**

—: उन्माद में चिकित्सीय योग :—

—: उन्माद में चिकित्सीय योग :—

1. **हिंग्वाद घृत** — हिंगु, सौवर्चल, व्योष एवं गोमूत्र सिद्ध घृत
2. **कल्याण घृत — (28 द्रव्य) — कल्याणकमिदं सर्पिः श्रेष्ठं पुंसवनेषु च। (च. चि. 9/42)**
3. **महाकल्याण घृत — (21 द्रव्य)** — कल्याण घृत—विशाला, त्रिफला, कौन्ती, देवदारू, एलवालुकम्।
4. **महापैशाचिक घृत — महापैशाचिक नाम घृतमेतद् यथाऽमृतम्। बुद्धिस्मृतिकरं चैव बालानां चागंवर्धनम्।** (च. चि. 9/48)
5. **लशुनाद्य घृत** — 100 छिले हुए लशुन, पान, अभ्यंग एवं नस्य रूप में उपयोग कर सकते है।
6. **पुराण घृत — उग्रगन्धं पुराणं स्याद् दशवर्षस्थितं घृतम्। (च. चि. 9/60)**
   10 वर्ष पुराना (चरक, सुश्रुत, योगरत्नाकर), 1 वर्ष पुराना (भावप्रकाश)।
   गुण :— **उग्रगन्धी, त्रिदोषघ्न,** ग्रहनाशक। **रस :— कटुतिक्तकम्**
7. **प्रपुराणघृत** — 10 वर्ष से अधिक पुराना घृत **'प्रपुराणघृत'** कहलाता है।
   वर्ण — लाक्षारसनिभं। वीर्य — शीत। **प्रयोग :—** सर्वग्रहापहम्, मेध्यं, विरेचन करने में अग्र।
8. **100 वर्ष पुराना घृत** :— सर्वग्रहापहम्, तथा अंजन, उत्सादन, अभ्यंग एवं नस्य रूप में ग्राह्य।

- **कुम्भघृत** — 11 — 100 वर्ष पुराना (सुश्रुत), 100 वर्ष पुराना (योगरत्नाकर), 10 वर्ष पुराना (चक्रपाणि)।
  उपयोग — **रक्षोघ्नं, कुम्भसर्पिः स्यात्।**
- **महाघृत** — 100 वर्ष के बाद का घी (सुश्रुत)। सर्वभूतहर, बल्यं, पवित्रं, मेध्यं, तिमिरनाशक।
  उपयोग — **"यथा यथा जरां याति सर्पिः गुणवत्स्यास्तथा तथा"**। (हारीत)

9. **सिद्धार्थकादि अगद** — बस्तमूत्र की भावना।
10. **सिद्धार्थक घृत** — गोमूत्र की भावना।

❖ **सिरा व्यधन** — उन्माद, अपस्मार एंव विषमज्वर में शंख प्रदेश और केशान्त संधिप्रदेश में स्थित सिरा मे।

प्रतिद्वन्द्व चिकित्सा :— काम शोक भय क्रोधहर्षेर्ष्यालोभसम्भवान्। परस्पर प्रतिद्वन्द्वैरेभिरेव शमं नयेत्। (च. चि. 9/86)
उन्माद में प्रतिद्वन्द्व चिकित्सा का विधान बतलाया गया है।
उदा. — 1. काम मे क्रोध तथा क्रोध में काम
2. शोक मे हर्ष तथा हर्ष में शोक
3. ईर्ष्या मे लोभ तथा लोभ में ईर्ष्या — को उत्पन्न कर शान्त करना चाहिए।

आश्वासन चिकित्सा :— उन्माद में आश्वासन चिकित्सा का विधान है।

❖ आगुन्तुज उन्माद में दैवव्यपाश्रय चिकित्सा का प्रयोग करना चाहिए।
❖ **आगुन्तुज उन्माद का कारण प्रज्ञापराध ही है।**
❖ **देवर्षिपितृगन्धर्वैरुन्मत्तस्य बद्धिमान्। वर्जयेत् अंजनादीनि तीक्ष्णानि क्रूरकर्म च।** —देव, ऋर्षि, पितृ और गन्धर्व जन्य उन्माद में तीक्ष्ण ताडन, नस्य, अंजन, लेप और त्रासन का निषेध है।
❖ उन्माद, अपस्मार के दोष—दूष्य समान होने से उन्माद **में** अपस्मारनाशक **चिकित्सा का प्रयोग करना चाहिए।**

10. अपस्मार चिकित्सा

अपस्मार :– स्मृतेरपगमं प्राहुरपस्मारं भिषग्विदः। तमः प्रवेशं बीभत्स चेष्टं धी सत्त्वसम्प्लवात्। (च.चि. 10/3)

अर्थात् स्मृति के नाश को अपस्मार कहते है। **मनोवहस्रोत्रस** जन्य व्याधि है।

आश्रय :– धमनीभिः श्रिता दोषा हृदयं पीडयन्ति हि। अपस्मार में धमनियों से आए हुए प्रकुपित दोष **हृदय** में आश्रय बनाकर हृदय को पीडित करते है।

पूर्वरूप :– 1. पश्यत्यसन्ति रूपाणि – अविद्यमान रूप ऑखों के सामने देखने लगते है।

2. प्रस्फुरत्यपि जिह्वाऽक्षिभ्रू: – जिह्वा, नेत्र एंव भ्रू में फडकन होने लगती है।

3. हस्तौ पादौ च विक्षिपन् – रोगी हाथ–पैर को फेंकता है।

4. दोषवेगे च विगते सुप्तवत् प्रतिबुद्धयते – वेग समाप्ति के बाद सोने के जागने से उठना।

सामान्य लक्षण – 'दन्तान् खादन् वमन् फेनं विवृताक्षः पतेत क्षितौ'। – सुश्रुत।

अपस्मार के भेद :– 4 – वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज।

अपस्मार के भेद	**चरकानुसार लक्षण**	**सुश्रुतानुसार विशिष्ट लक्षण**
1. वातज	फेनोद्वामी।	हृदि तोद
2. पित्तज	पीत फेनांगवक्त्राक्ष।	तृड् (तृष्णा)
3. कफज	शुक्ल फेनांगवक्त्राक्ष।	उत्क्लेश
4. सन्निपातज	असाध्य।	प्रलाप, कूजन, क्लेश

अपस्मार के वेग का काल :– 12–12 दिन, 15–15 दिन या 1–1 मास पर।

–: अपस्मार चिकित्सा सूत्र :–

तीक्ष्णैरादौ भिषक् कुर्यात् कर्मभिः वमनादिभिः। (च.चि. 10/15) – तीक्ष्ण संशोधन एवं **उपशमन चिकित्सा** हितकर होती है।

–: अपस्मार चिकित्सीय योग :–

1. **पंचगव्य घृत, महापंचगव्य घृत, ब्राह्मी घृत, वचादि घृत, सैन्धवादि घृत – चरक (सिद्धार्थक घृत, पुराण घृत –सुश्रुत)**
2. **अभ्यंग – 1. सर्षप तैल–** (अभ्यंगः सार्षपं तैलं बस्तमूत्रे चतुर्गुणे) **2. कटभ्यादि तैल 3. पलकंषादि तैल**
3. **उत्सादन – (1)** जौक विष्टा/दग्ध बस्तरोम/खरास्थि/हस्तिनख/गोपुच्छ लोम को जलाकर गोमूत्र में पीसकर उबटन लगाना चाहिए।
   (2) अपस्मार में गाय के गोबर में उत्सादन एवं स्नान करना चाहिए।
4. **नस्य – कपिलानां गवां मूत्रं नावनं परमं हितम्** । श्वश्रृगालबिडालाना सिंहादीनां च शस्यते।।
5. **प्रधमन नस्य – कायस्थादि वर्ती, मुस्तादि वर्ती।**
6. **अंजन** – पुष्प नक्षत्र में निकाले गए कुत्ते के पित्त का अंजन।
7. **धूपन** – नकुल, उलूक, मार्जार, गृध, बिच्छू, सर्प और कौआ की चोंच, पंख एंव विष्ठा को कूटकर।
8. **सिरा व्यधन** – हनुसंधि मध्यगत सिरा का वेधन। – सुश्रुत

–: अतत्वाभिनिवेश :–

अतत्वाभिनिवेश :– विषमां कुरूते बुद्धि नित्यानित्ये हिताहिते। अतत्वाभिनिवेशं तमाहुराप्ता महागदम्। (च.चि. 10/60)

अ – नहीं, तत्व – सत्यज्ञान, अभिनिवेश – हठ करना। **(आयुर्वेद विज्ञान – गदोद्वेग/अपदार्थ गद)**

"महागद" – रोगी नित्य को अनित्य, अनित्य को नित्य, तथा हित को अहित, अहित को हित समझता है।

चिकित्सा सूत्र :–

1. **स्नेहस्वेदोपपन्नं तं संशोध्य वमनादिभिः। कृतसंसर्जनं मेध्यैरन्नपानैरूपाचरेत्।। (च.चि. 10/61)**
   स्नेहन, स्वेदन → संशोधन तथा मेध्य अन्नपान
2. पंचगव्य घृत + ब्राह्मी स्वरस के साथ सेवन।
3. शंखपुष्पी तथा मेध्य रसायनो का सेवन।
4. **आश्वासन क्रिया – संयोजयेयुः .... विज्ञानधैर्यस्मृतिसमाधिभिः। (च.चि. 10/63)**
5. **पांच योग :–** लशुन + तैल, शतावरी + दूध, ब्राह्मी स्वरस/कुष्ठ रस/वचा + मधु।

- **उन्माद, अपस्मार रोगी हेतु निषेध :– जलाग्निद्रुमशैलेभ्यो विषमेभ्यश्च तं सदा। रक्षेतुम् – (च.चि. 10/66)**

क्षतक्षीण चिकित्सा

1. निदान :— 1. वृषं हयं वा धावन्तं। 2. महानदीं वा तरतो। 3. स्त्रीषु चातिप्रसक्तस्य रूक्षाल्पप्रमिताशिनः।

2. पूर्वरूप :— अव्यक्तं लक्षणं तस्य पूर्वरूपमिति स्मृतम्। (तस्य – एकवचन)

(अव्यक्तं लक्षणं तेषां पूर्वरूपमिति स्मृतम्। – वातव्याधि) (तेषा – बहुवचन)

3. लक्षण :— उरोरूक् शोणितच्छर्दिः कासो वैशेषिकः क्षते।

क्षीणे **सरक्तमूत्रत्वं पार्श्वपृष्ठकटिग्रहः**।।(पृष्ठकटिग्रह – वृक्क स्थानगत आभ्यन्तर विद्रधि)

4. साध्यासाध्यता :— परिसंवत्सरो याप्य – 1 वर्ष का पुराना रोग याप्य होता है।

5. चिकित्सीय योग :— लाक्षादि क्षीर, **एलादि गुटिका**, चटकाण्टरस, छागरक्तपान, **4 सर्पिगुड, सर्पिमोदक, अमृतप्राशघृत**, धात्रीफलाद्य घृत, श्वदंष्ट्रादि घृत, **सैन्धवादि चूर्ण।**

नागबला कल्प – अर्ध कर्ष विवर्धितम् पलं क्षीर युतं मासं। (च. चि. 11/91)

प्रथम दिन ½ कर्ष से प्रारम्भ कर ½ कर्ष बढ़ाते हुए 1 पल तक फिर ½ कर्ष तक लाए – 1 मास तक सेवन करते हैं।

❖ **उपेक्षिते भवेत्तस्मिन्नुबन्धो हि यक्ष्मणः।** – क्षतक्षीण की उपेक्षा करने से राजयक्ष्मा होने की संभावना रहती हैं।

12. श्वयथु चिकित्सा

निदान :— अर्शांस्यचेष्टा न च देहशुद्धिर्मर्मोपघातो विषमा प्रसूतिः।

'उत्सेध' शोथ का प्रत्यात्मक लक्षण है।

शोथ के भेद :— (2) – 1. निज – 3 – सर्वांग, एकांग, अर्धांग। 2. आगन्तुज।

माधव – उर्ध्वगत, मध्यगत और अधोगत।
वाग्भट्ट – पृथु, उन्नत और ग्रथित।

शोथ के पूर्वरूप :— ऊष्मा तथा स्याद्दवथुः सिराणामायाम इत्येत तु पूर्वरूपम्। (च. चि. 12/9)

1. ऊष्मा – शोथ स्थान पर उष्मा की वृद्धि।
2. **दवथु – चक्षु आदि इन्द्रियों में ताप का अनुभव।**
3. सिरायाम – रक्तवाहि सिराओं में तनाव।

शोथ के सामान्य लक्षण :— सगौरव, अनवस्थि तत्व, सिरातनुत्वम्, उत्सेध, लोमहर्ष, अंगविवर्णता।

वातिक शोथ – **दिवाबली,** कफज शोथ – **रात्रिबली। – चरक चिकित्सा 12/12–14।**

शोथ में अपथ्य :— ग्राम्य, आनूप मांस, **शुष्क शाक, वल्लूर (शुष्क मांस), नवान्न, दधि, मद्य, अम्ल,** दिवास्वप्न तथा मैथुन।

शोथ में पथ्य :— कुलत्थ यूष, विष्किर और जांगल मांस, सुवर्चला, गाजर, पटोलपत्र, मकोय, मूली और निम्ब पत्र।

—: चिकित्सा सूत्र :—

1. **दुग्ध :— उष्ट्र दुग्धाहार** – 1 सप्ताह तक।
2. **अरिष्ट :— गण्डीराद्यरिष्ट, अष्टशत अरिष्ट, पुर्ननवाद्यरिष्ट, फलत्रिकाद्यरिष्ट**
3. **कृष्णादि चूर्ण**
4. पंचकोल यवागू
5. **क्षार गुटिका**
6. **गुडार्द्रक**
7. **शिलाजतु + त्रिफला क्वाथ – त्रिदोषज शोथ में**
8. **कंसहरीतिकी – 1 आढक (कंस)/100 हरड का प्रयोग।** (चक्रदत्त ने **'दशमूल हरीतकी'** नाम दिया है।)
9. **चित्रक घृत** (चित्रकादि वटी –ग्रहणी)
10. शोथातिसार चिकित्सा :— **गुडाभयां वा गुडनागरं वा सदोष भिन्नामविबद्धवर्चा।** (Jam 2006)

SHAM-VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER, Dr. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

स्थानानुसार शोथ के भेद

(1) **शिरः शोथ :– दोषास्त्रयः** स्वैः कुपिता निदानैः कुर्वन्ति शोफं शिरसः सुघोरम्। – त्रिदोष के कुपित होने से।

(2) **शालूक :– अर्न्तगले घुर्घुरिकान्वितं** च शालूकं **उच्छ्वासनिरोधकारि।** (सुश्रुत – 'कण्ठशालुक' का वर्णन किया है।)

(3) **विडालिका :– बिडालिका स्याद् धन्याद्गले चेत् वलयीकृता सा।** (सुश्रुत – 'वलय' का वर्णन किया है।)

(4) **तालुविद्रधि** :– त्रिदोषज।

(5) **उपजिह्वा :– K प्रकोप से** जिह्वा के ऊपर होने वाला शोथ।

(6) **अधिजिह्वा :– K प्रकोप से** जिह्वा के नीचे होने वाला शोथ।

(7) **उपकुश :– रक्तपित्त के प्रकोप** से दन्तमांस में होने वाला शोथ।

(8) **दन्तविद्रधि :– K के प्रकोप एंव रक्त के संचय के कारण** दन्तमांस में होने वाला शोथ।

(9) **गलगण्ड एंव गण्डमाला** :– गलस्य पार्श्वे गलगण्ड एकः स्यात् गण्डमाला बहुभिश्च गण्डैः।।

(10) **अलजी :– ताम्रा सशूला पिडका भवेद्या सा चालजी नाम परिस्नुताग्रा।** (च. चि. 12/88)

(11) **मांसास्रदूषी** :– शोफोऽक्षतश्चर्मनखान्तरे स्यात् मांसास्रदूषी भृशशोफपाकः।।

(12) **विस्फोट** :–
(13) **कक्षा – वात पित्तज**
(14) **विदारिका – वात कफज**
(15) **रोमान्तिका, मसूरिका – पित्तजकफज।**

(16) **ब्रध्न :– V, P, एंव K के प्रकोप के कारण अन्त्र** अण्डकोषों में चली जाती है और वहाँ से निकलकर अपने स्थान में चली जाती है इसे ब्रध्न रोग कहते है।

(17) **मूत्रजवृद्धि** :– अण्डकोषों में **मूत्र** अधिक मात्रा में भर जाता है। अण्डकोष स्पर्श में मृदु हो जाते है।

(18) **मदोजवृद्धि**:– अण्डकोषों में मेद भर जाने से वृद्धि हो जाती है अण्डकोष स्पर्श में स्निग्ध व कठोर हो जाते हैं।

(19) **भगन्दर** :– क्रिमि, अस्थि द्वारा गुदाक्षत, **मलत्याग समय प्रवाहण से,** व्यवाय से या उत्कटासन से गुदा के पार्श्व में पिडकोत्पत्ति को भगन्दर कहते हैं।
चिकित्सा – विरेचन, **पाटन कर्म**, तैलदाह **और क्षारसूत्र।** (सुश्रुत – "नाडीव्रण चिकित्सा" में वर्णन किया है।)

(20) **श्लीपद** :– मांस, रक्त एंव कफ दोष की दुष्टि के कारण जंघा तथा पिण्डीलियों एंव पैरों के उपरी भाग में शोथ युक्त **'श्लीपद'** रोग होता है। **चिकित्सा** – सिरावेधन, कफनाशक चिकित्सा और **सर्षपलेपन।**

(21) **जालकगर्दभ** :– प्रबल पित्त प्रकोप के कारण विसर्पण शोथ। **चिकित्सा** – लंघन, रक्तमोक्षण, **धात्रीप्रयोग।**

13. उदर रोग चिकित्सा

उदररोग निदान :– अतिसंचितदोषाणां पापं कर्म च कुर्वताम्। उदराण्युपजायन्ते **रोगाः सर्वेऽपि मन्दाग्नीनां विशेषतः।।**

उदररोग सम्प्राप्ति – रूद्ध्वा स्वेदाम्बुवाहीनि दोषाः स्रोतांसि संचिताः। प्राणाग्न्यपानान्सदूष्य जनयन्त्युदरं नृणाम्।।

स्वेद एंव अम्बुवह स्रोतस का अवरोध + प्राण वायु, अपान वायु तथा जठराग्नि की दुष्टिता।

पूर्वरूप :– 1. भुक्तं विदह्यते सर्व जीर्णाजीर्णं न वेत्ति च। 2. शोफश्चः पादयोः। 3. राजीजन्म वलीनाश।

सामान्य लक्षण – कुक्षेराध्यमानमाटोपः शोफः पादकरस्य च। मन्दोऽग्निः श्लक्ष्णगण्डत्वं कार्श्य चोदरलक्षणम्।।

–: उदररोग के भेद :– 8

(1) वातोदर :– उदरविपाटनम् वातवर्चोमूत्रसंग, तन्वसितराजीसिरासन्ततम् वृद्धि। (Football sign - Pneumoperitoneum)

(2) पित्तोदर – कटुकास्यत्वं, मृदुस्पर्श क्षिप्रपाकं।

(3) कफोदर :– पाणिपादमुष्कोरूशोफ, शुक्लराजीसिरासन्ततम।

(4) सन्निपातोदर :– मंद (दूषी) विष के सेवन – नानावर्णराजीसिरासन्ततम्। (सुश्रुत – दूष्योदर कहा है)

(5) प्लीहोदर :– वामपार्श्वाश्रितः प्लीहा च्युतः स्थानात् प्रवर्धते। शोणितं वा रसादिभ्यो विवृद्धं तं विवर्धयेत्।। (NIA 2007)

लक्षण – प्लीहा कठिनोऽष्ठीलेवादौ वर्धमानः कच्छपसंस्थानि उपलभ्यते।

❖ सुश्रुत ने **यकृद्दाल्युदर** का भी वर्णन किया है। – **यकृदपि दक्षिणपार्श्वस्थं कुर्यात्।**

(6) बद्धगुदोदर :– नाभ्युपरि गोपुच्छवदभिनिर्वर्तत इति। – 15 दिन बाद मृत्युकारक होता है।

(7) छिद्रोदर – नाभेः प्रायोऽभिवर्धमानमुदकोदरं भवति। कुणपगन्ध्याम् वर्च। (मुर्दे सी गंधवाला अपक्व पुरीष आना)

छिद्रोदर = परिस्रात्युदर = क्षतोदर = आगन्तुक उदर रोग। जातं जातं जलं स्राव्यमेवं तद्यापयेद् भिषक्।

(8) दकोदर/जलोदर :– कारण – अत्यम्बुपानान्नष्टेऽग्नौ मारुतः क्लोम्नि संस्थितः।

लक्षण – 1. नानावर्णराजीसिरासन्ततम 2. उदकपूर्णदृतिक्षोभसस्पर्शी।

❖ सभी उदर रोग पूर्व के क्रम की उपेक्षा उत्तरोत्तर कष्टसाध्य होते हैं।

❖ सभी उदर रोगों की अंतिम अवस्था दकोदर है। जलोदर एंव छिद्रोदर उदर रोग असाध्य होते है।

अजातोदक :– गुडागुडायच्च सिराजालगवाक्षितम्, नाभिं विष्टम्भ पायौ, मूत्रेऽपि संहते विषि।

–: उदररोग चिकित्सा सूत्र :–

1. **दीपन :–** उदर रोगों की सामान्य चिकित्सा में प्रमुख चिकित्सा 'दीपन' हैं।

2. **नित्य विरेचन :– दोषातिमात्रोपचयात् स्रोत्रोमार्गनिरोधनात्। सम्भवत्युदरं तस्मान्नित्यमेव विरेचनम्।**
   उदर रोग में नित्य विरेचन कराने का निर्देश मिलता है।

2. **शुद्धं संसृज्य च क्षीरं बलार्थं पाययेत्तु तम्।** – वातोदर में संशोधन कराके संसर्जन के बाद दुग्ध पिलाना चाहिए।

3. **प्लीहोदर में – 1. सिरावेधन – समीक्ष्य कारयेद्वाहौ वामे वा व्यधयेत्सिराम्।**
   2. अग्निकर्म – अग्निकर्म च कुर्वीत भिषग्वातकफोल्वणे।
   3. रोहितक घृत का प्रयोग।

4. बद्धगुदोदर में उदावर्तनाशक तथा वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिए।

5. **छिद्रोदर में स्वेदन के अतिरिक्त अन्य सभी उपचार कफोदर के समान करना चाहिए।**

6. सभी उदर रोग प्रायः त्रिदोष होते हैं। अतः सभी उदर रोगों त्रिदोषशामक चिकित्सा करनी चाहिए।

7. उदर रोग में दुग्ध :– शोफोनाहार्ति तृण्मूर्च्छापीडिते **कारभं पयः। – उष्ट्र दुग्ध** का सेवन करते है।

8. **बद्धगुदोदर एंव छिद्रोदर में – वामं कुक्षिं मापयित्वा नाभ्यधश्चतुरङ्गुलम्।**

9. **जलोदर में शस्त्रकर्म :– वामपार्श्वे त्वधो नाभेर्नाडी दत्तवा च गालयेत्।**
   जलोदर में पथ्य :– 6 मास तक – दुग्ध सेवन। 3 मास तक – दूध एंव पेया
   3 मास तक – लवण रहित श्यामक या कोदो का भात।

10. **प्रयोगाणां तु सर्वेषामनु क्षीरं प्रयोजयेत्।** – सभी उदर रोगों में चिकित्सा प्रयोगों के पश्चात् दुग्ध सेवन करें।
    सर्वधातुक्षयार्तानां देवानाममृतं यथा। – **उदर रोग मे दुग्ध अमृत के समान लाभकारी है।**

–: उदररोग चिकित्सीय योग :–

1. देवदार्वादि लेप :– उदर पर सुखोष्ण लेप करना चाहिए।

2. पंचकोल घृत, चित्रक घृत,

3. स्नुहीक्षीर घृत।

4. नारायण चूर्ण के अनुपानानुसार प्रयोग –

1. उदर रोग – तक्र 2. गुल्म – बदर, क्वाथ 3. आनाह – सुरा। 4. वातरोग – प्रसन्ना
5. विड्संग – दधिमण्ड 6. दाडिमाम्बु – अर्श 7. परिकर्तिका – वृक्षाम्ल 8. अजीर्ण – उष्ण जल।

5. पिप्पल्यादि क्षार,

6. क्षार वटी (क्षार गुटिका – ग्रहणी में)

7. एरण्ड तैल का प्रयोग – कफे वातेन पित्तेन ताभ्यां वाऽप्यावृतेऽनिले। बलिनः स्वौषधयुतं तैलमेरण्डजं हितम्।

8. अक्रियायां ध्रुवो मृत्युः क्रियायां संशयो भवेत् – चरक – दूष्योदर/ **(सुश्रुत, वाग्भट्ट– अश्मरी) (हारीत – जलोदर)।**

9. दूष्योदर में विष का प्रयोग :– सर्प से दंशित कराते हुए विषमय फल को रोगी को खिलाना चाहिए।
यस्मिन्वा कुपितः सर्पो विसृजेद्धि फले विषम्। भोजयेत्तदुदरिणं प्रविचार्य भिषग्वरः।

14. अर्श चिकित्सा

(1) अर्श के भेद :– 2 – (1) सहज (2) उत्तरकालज। (सहज भेद है – प्रमेह, अर्श, कृमि, क्लैव्य)
चरक ने दोषानुसार वातज, पित्तज, कफज अर्श के लक्षणों का भी वर्णन किया है।
गुदा का प्रमाण :– (गुदस्यार्ध पंचमांगुलावकाशे) गुदा का प्रमाण 4½ अंगुल होता है।

(2) अर्श में दूष्य :– सर्वेषां चार्श सामधिष्ठानं – मेदो मांसं त्वक् च। (त्वक्, मांस, मेद) (त्वक्, मांस – सुश्रुत)

(3 पूर्वरूप :– विष्टम्भोऽन्नस्य दौर्बल्यं कुक्षेराटोप एवं च। कार्श्यमुदराबाहुल्यं सक्थिसादोऽल्पविट्कता।
ग्रहणीदोष, पाण्डुरोग तथा उदर रोग होने की आशंका होना। – ये अर्श के पूर्वरूप है।

(4) साध्यासाध्यता :– (1) साध्य – एक दोषज अर्श, बाह्यबलि स्थित अर्श, जो चिरकालिक न हो।
(2) कच्छ्रसाध्य – द्वन्द्वज अर्श, द्वितीय बलि स्थित अर्श, 1 साल पुराना अर्श।

(5) अर्श का परिणाम – बद्धगुदोदर। **अर्श के भेद :–** 2 – (1) शुष्क (वातकफज) (2) स्रावी (पित्तरक्तज)।

–: अर्श चिकित्सा सूत्र :–

1. अर्श में अभ्यंग– अर्श में कृष्ण सर्प, वराह, उष्ट्र, चमगादड और वनविलाब की वसा अभ्यंग एंव धूपन देना चाहिए

2. अर्श में धूपन – वराहवृषविट् चैव धूपनं सक्तवो घृतम्। कुंजरस्य पुरीषं तु घृतं सर्जरसस्तथा।।
वराह की विष्ठा और बैल के गोबर में घृत एंव सक्तू मिलाकर धूपन करना चाहिए, हाथी की विष्ठा को घृत, सर्जरस में मिश्रित करके धूपन करना चाहिए।

3. सगुडामभयां वाऽपि प्राशयेत्पौर्वभक्तिकीम्। – भोजन के पहले गुड के हरीतकी चूर्ण का सेवन करना चाहिए।

4. शुष्कार्श :– तक्रारिष्ट :– भोजन के तीन कालों पर सेवन करें।
तक्र :– वातश्लेष्मार्शसां तक्रात् परं नास्तीह भेषजम्। – 7/10/15 या 1 माह की अवधि तक सेवन।
तक्र के भेद : – (3) – 1. रूक्ष 2. अर्धोद्धत 3. अनुद्धृत घृतं। **(भाव मिश्र – 5)**

- **पिप्पलयादि घृत, चव्याद्य घृत, नागराद्य घृत, ह्रीबरादि घृत** ।
- **अभयारिष्ट** (हरीतकी 1 भाग एवं आमलकी 2 भाग होता है)
- **दन्त्यरिष्ट, फलारिष्ट,**
- **कनकारिष्ट** – मुख्य घटक – आमलकी (न तो इसमें धतूरा होता है और न स्वर्ण)

5.रक्तार्श :– पिच्छा बस्ति :– अर्श, अतिसार, प्रवाहिका एंव गुदभ्रंश में।

- **सुनिषण्णकचाङ्गेरी घृत, अवपीडक घृत, कुटजादि रसक्रिया**

निदानार्थकर रोग :– अर्श, अतिसार और ग्रहणी। प्रायः एक दूसरे के कारण बन जाते है।
त्रयो विकाराः प्रायेण ये परस्परहेतवः। अर्शांसि चातिसारश्च ग्रहणीदोष एव च।
एषामग्निबले हीने वृद्धिर्वद्धे परिक्षयः। तस्मादग्निबलं रक्ष्यमेषु त्रिषु विशेषतः।। (च.चि. 15/245)

15 . ग्रहणी चिकित्सा

आहार पाक की 2 अवस्थायें होती है।

(A) अवस्था पाक

(1) प्रथमावस्था – अविदग्धावस्था = मधुर अवस्था पाक :–

1. अन्नस्य भुक्तमात्रस्य षड् रसस्य प्रपाकतः। मधुराद्यात कफो भावात फेनभूतं उदीर्यते।। (च.चि. 15/9)

(2) द्वितीयवस्था – विदग्धावस्था = अम्ल अवस्था पाक :–

2. परं तु पच्यमानस्य विदग्धस्य अम्लभावतः। आशयाच्च्यवमानस्य पित्तं अच्छम् उदीर्यते।। (च.चि. 15/10)

(3) तृतीयावस्था – पक्वावस्था = कटु पाक अवस्था :–

3. पक्वाशयं तु प्राप्तस्य शोष्यमाणस्य बह्निना। परिपिण्डित पक्वस्य वायुः स्यात् कटुभावतः।। (च.चि. 15/11)

अवस्था	स्थान	विघटक – महाभूत	दोष प्रादूर्भाव
1. मधुरावस्था	आमाशय	पृथ्वी + जल	कफ
2. अम्लावस्था	ग्रहणी / पच्यमान	तेज	पित्त
3. पक्ववास्था	पक्वाशय	वायु + आकाश	वात

(B) निष्ठपाक = विपाक

इसके अंतर्गत भूताग्नि एवं धात्वाग्नि पाक आता है।

1. भूताग्नि :– भौमाप्याग्नेयवायव्याः पंचोष्माणः सनाभसाः। पंचाहारगुणान् स्वान्स्वान्पार्थिवादीन्पचन्ति हि।।

आहार गुण पाचकाग्नि – भूताग्नि।

2. धात्वाग्नि :– सप्तभिः देहधातारो धातवो द्विविधं पुनः। यथास्वमाग्निभिः पाकं यान्ति किट्टप्रसादवत्।।

धात्वाग्नियों के पाक के परिणामस्वरूप आहार के प्रसाद तथा किट्टभाग बनते हैं।

धातु	उपधातु (शांरर्ग्धर)	उपधातु (चरक)	मल (चरक)
1. रस	स्तन्य	स्तन्य, आर्तव	कफ
2. रक्त	रज	कण्डरा, सिरा	पित्त
3. मांस	मांसस्नेह	वसा, षडत्वचा	खमल
4. मेद	प्रस्वेद	स्नायु	स्वेद
5. अस्थि	दन्त		केश, लोम
6. मज्जा	केश, रोम		स्नेहऽक्षिविट् त्वचाम्
7. शुक्र	'ओज'		–

धातु पोषण काल अवधि :– षड्भिः केचिदहोरात्रैरिच्छन्ति परिवर्तनम्। –

– रस – शुक्र निर्माण में – 6 रात दिन का समय लगता है। (चरक)

सन्तत्या भोज्यधातूनां परिवृत्तिस्तु चक्रवत् :– अन्न रस से रसादि धातुओं की उत्पत्ति चक्रवत् निरन्तर होती रहती है

रस की रंजन :– तेजो रसानां सर्वेषां मनुजानां यदुच्यते। पित्तोष्मणः स रागेण रसो रक्तत्वमृच्छति।। **(च. चि. 15/28)**

रस का संवहन :– व्यानेन रसधातुः हि विक्षेपोचितकर्मणा। युगपत् सर्वतोऽजस्रं देहे विक्षिप्यते सदा।।

– रस का संवहन सर्व शरीर में व्यान वायु के द्वारा होता है।

– वृष्य द्रव्यों की शीघ्र कार्यमुकता :– अवृष्यादीनां प्रभावस्तु पुष्णाति बलमाशु हि।

जठराग्नि की प्रधानता :— अन्नस्य पक्ता सर्वेषां पक्तृणामधिपो मतः। तन्मूलास्ते हि तद् वृद्धिक्षयवृद्धिक्षयात्मकाः।।

चरकानुसार अग्नियॉ :— (13) — 7 धात्वाग्नि + 5 भूताग्नि + 1 पाचकाग्नि (चरक, चक्रपाणि)

अग्नि के भेद :—
चरक — (13) — 7 धात्वाग्नि + 5 भूताग्नि + 1 पाचकाग्नि (चरक, चक्रपाणि)
सुश्रुत — (5) — पाचकाग्नि, रंजकाग्नि, साधकाग्नि, आलोचकाग्नि, भ्राजकाग्नि।
वाग्भट्ट — (23) — 7 धात्वाग्नि + 5 भूताग्नि + 5 पित्त (जठराग्नि) + 3 दोषाग्नि + 3 मलाग्नि। (अष्टांग संग्रह)
त्रिविध अग्नि :— 1. ज्ञानाग्नि 2. दर्शनाग्नि 3. कोष्ठाग्नि। — गर्भोपनिशद।

❖ **आहारगुण पाचक अग्नि = भूताग्नि :— पंचाहारगुणान्स्वान्स्वान्पार्थिवादीन्पचन्ति। (च. चि. 15/14)**

चतुर्विध अग्नि :— यश्चाग्निः पूर्वमुद्दिष्टो रोगानीके चतुर्विधः। तं चापि ग्रहणीदोषं समवर्ज प्रचक्ष्महे।।

दोष	अग्नि	लक्षण
वात	विषमाग्नि	**विषमो धातुवैषम्यं करोति विषमं पचन्।**
पित्त	तीक्ष्णग्नि	**तीक्ष्णो मन्देन्धनो धातून् विशोषयति पावकः।**
कफ	मंदाग्नि	**दुर्बलो विदहत्यन्नं तद् यात्यूर्ध्वमधोऽपि वा।**
सर्व	समाग्नि	**युक्तं भुक्तवतो युक्तो धातुसाम्यं समं पचन्।**

❖ ग्रहणी रोग का कारण 3 अग्नियॉ है — विषम, तीक्ष्ण और मंदाग्नि।

— : अजीर्ण : —

<u>**अजीर्ण लक्षण**</u> :— **तस्य लिगंम् अजीर्णस्य विष्टम्भः सदनं तथा। शिरसो रुक् च मूर्च्छा च भ्रमः पृष्ठकटिग्रहः।**
जृम्भाऽगंमर्दस्तृष्णा च ज्वरश्छर्दिः प्रवाहणम्। अरोचकोऽविपाकश्च, घोरमन्नविषं च तत्।।
अन्न विष्टम्भता, सदन(शरीर में भारीपन), शिरोरुजा, भ्रम, मूर्च्छा, पृष्ठकटिग्रह, जृम्भा, अंगमर्द, तृष्णा, ज्वर, छर्दि, प्रवाहण (बार बार की प्रवृत्ति का होना), अरुचि तथा अविपाक होना अजीर्ण का सामान्य लक्षण है।

<u>**अजीर्ण के भेद**</u> :— **(3)** — वाताजीर्ण, पित्ताजीर्ण, कफाजीर्ण के लक्षण बतलाए है।

—: ग्रहणी :—

ग्रहणी :— अग्न्यधिष्ठानमन्नस्य ग्रहणाद् ग्रहणी मता। नाभेरुपरि सा ह्यग्निबलोपस्तम्भबृंहिता।। (च. चि. 15/56)
यह अग्नि का आश्रय स्थल है। और यह अन्न को ग्रहण करती है इसलिए इसे 'ग्रहणी' कहा जाता है।
षष्ठी पित्तधरा नाम या कला परिकीर्त्तिता। पक्वाशयमध्यस्था ग्रहणी सा प्रकीर्त्तिता।। (सु. उ. 40/169)

ग्रहणी रोग :— अधस्तु पक्वमामं वा प्रवृत्तं ग्रहणीगदः। उच्यते सर्वमेवान्नं प्रायो ह्यस्य विदह्यते।।
जठराग्नि के मंद होने से — जब गुदामार्ग से पका हुआ या बिना पचे ही आहारांश निकलने लगता है, तो इस स्थिति को ग्रहणीरोग कहते है, जिसमें प्रायः सम्पूर्ण आहार विदग्ध होकर अम्ल हो जाता है।

निदान :— अभोजनादजीर्णातिभोजनाद्विषमाशनात्। असात्म्यगुरुशीतातिरूक्षसन्दुष्टभोजनात्।। (च. चि. 15/42)
ग्रहणी रोग का कारण 3 अग्नियॉ है। — विषमाग्नि, तीक्ष्णाग्नि और मंदाग्नि।
लक्षण :— अतिसृष्टं विबद्धं वा द्रवं तदुपवेश्यते। तृष्णारोचकवैरस्य प्रसेकतमकान्वितः।।
<u>**शूनपादकरः**</u> सास्थिपर्वरुक् छर्दनं ज्वरः। <u>**लोहामगन्धिः**</u> **तिक्ताम्ल उद्‌गारश्चास्य जायते।।** (च. चि. 15/54)

सम्प्राप्ति :— अतिसारेनिवृत्तेऽपि मन्दाग्ने रहिताशिनः। भूयः सन्दूषितो वह्नि ग्रहणीमभिदूषयते।। (सु. उ. 40/167)

पूर्वरूप :— पूर्वरूपं तु तस्येदं **तृष्णाऽऽलस्यं बलक्षयः।** विदाहोऽन्नस्य पाकश्च **चिरात्कायस्य गौरवम्।** (च. चि. 15/55)

❖ सुश्रुत – कास, कर्णक्ष्वडोऽन्त्रकूजनम्।	वाग्भट्ट – कर्णक्ष्वडोऽन्त्रकूजनम्।

ग्रहणी के भेद –4– वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज। (घटीयंत्र ग्रहणी, संग्रहणी का वर्णन – माधव ने किया है)

1. वातज ग्रहणी	हृत्पीडा, **कार्श्यदौर्बल्यं**, वैरस्यं परिकर्तिका। **गृद्धि सर्वरसानां च** मनसः सदनं तथा।। **जीर्णे जीर्यति चाध्मानं भुक्ते स्वास्थ्यमुपैति च। स वातगुल्महृद्रोगप्लीहाशंकी च मानवः।।** **कण्ठास्यशोषः क्षुत्तृष्णा** तिमिरं **कर्णयोः स्वनः**, विसूचिका, पुनः पुनः सृजेत् वर्चः। शुक्त पाक, रोगी कास, श्वास से परेशान रहता है।
2. पित्तज ग्रहणी	सोऽजीर्णं नीलपीताभं पीताभः सार्यते द्रवम्। **– अजीर्ण से पीडित**
3. कफज ग्रहणी	दुष्टो **मधुर उद्गारः** सदनं **स्त्रीष्वहर्षणम्, अकृशस्यापि दौर्बल्यमालस्यं च।**

➢ **संग्रहणी लक्षणः– दिवा प्रकोपो भवति रात्रौ शान्ति व्रजेच्च या।** दुर्विज्ञेयो दुश्चिकित्स्या चिरकालानुबन्धिनी।

- (दिन में प्रकोप होता है व रात्रि को रोग शान्त रहता है।)

संग्रहणी वेग काल– पक्षान्मासदशाहाद्वा नित्यं (10 दिन या 15 दिन या 1 मास या प्रतिदिन में प्रकोप होता है।

➢**घटीयंत्र ग्रहणी – स्वपत पार्श्वयोः शूलं गलज्जलघटीध्वनिः।** तं वदन्ति घटीयंत्रं **असाध्य** ग्रहणीगदम्।।

लेटने से पार्श्व में तथा जल में डूबते हुए घडे के समान ध्वनि से युक्त ग्रहणी रोग को घटीयंत्र ग्रहणी कहते है।

ग्रहणी की साध्यतासाध्यता :– बालकों में ग्रहणी – साध्य, युवाओं में – कृच्छ्रसाध्य, वृद्धो में – असाध्य।

चिकित्सा योग :–

1. दशमूलाद्यं घृत, पंचमूलाद्यं घृतं, चन्दनाद्यं घृत, क्षार घृत।
2. **चित्रकादि वटी :–** मातुलुंग या दाडिम स्वरस की भावना है। – आमदोष पाचनार्थ एवं जाठराग्नि प्रदीपक।
3. **भूनिम्बाद्य चूर्ण, किराताद्य चूर्ण, मरिचादि चूर्ण**
5. **नागराद्यं चूर्णम् :– पैत्तिक ग्रहणी में** – नागर[illegible] चूर्णं कृष्णात्रेयेण पूजितम्।
4. **मध्वरिष्ट, तक्रारिष्ट** – तक्रं तु ग्रहणीदोषे दीपनग्राहिलाघवात्।
6. **मधूकासव, दुरालभासव, मूलासव, पिण्डासव** – (पिण्डासव – [illegible]), पिण्डरस – वृष्य, पिण्ड तैल – वातरक्त)
7. **भल्लातक क्षार**
8. **क्षार गुटिका – 3 लवण – कृष्णात्रेयेण कीर्तिता।**

❖ चरक ने त्रिदोषज ग्रहणी में **"व्यत्यास चिकित्सा"** बतलाई है।
❖ चरक ने कफज ग्रहणी में **"अवस्थिकी चिकित्सा"** बतलाई है।
❖ चक्रपाणि ने दाडिमाष्टक चूर्ण को ग्रहणी रोग में अति प्रभावी बताया है।
❖ ग्रहणी में तक्रपान 7 दिन से 1½ माह तक करने को कहा गया है।
❖ **"स्नेहमेव परं विद्याद् दुर्बलानल दीपनम्। (च. चि. 15/201)** – दुर्बल अग्नि में दीपनार्थ श्रेष्ठ हैं – स्नेह।

ग्रहणीनाशक चिकित्सा सूत्र :–

स्नेहनं स्वेदनं शुद्धिः लघनं दीपनं च यत्। चूर्णानि लवणक्षारमध्वरिष्टसुरासवाः।
विविधास्तक्रयोगाश्च दीपनानां च सर्पिषाम्। ग्रहणीरोगिभिः सेव्याः। (च. चि. 15/197)

–: अत्यग्नि रोग :–

अत्यग्नि रोग :– नरे क्षीणकफे पित्तं कुपितं मारूतानुगम्।

मनुष्य के शरीर में कफ क्षय तथा वात के साथ पित्त प्रकुपित होने अवस्था **'अत्यग्नि रोग'** कहलाता है।

लक्षण :– भुक्तेऽन्ने लमते शान्तिं जीर्णमात्रे प्रताम्यति।

चिकित्सा :–1. आविकं च भृतं मांसमद्यादत्यग्निनाशनम्। भेड़ का घी में भुना हुआ मांस अत्यग्नि को नष्ट करता है।

2. नारीस्तन्येन संयुक्तां पिबेदौदुम्बरीं त्वचम्। उदुम्बर की छाल को स्त्री दुग्ध के साथ पीना चाहिए।

- **समशन :–** पथ्य और अपथ्य को एक साथ मिलाकर सेवन करना।
- **विषमासन :–** भोजन की सामान्य मात्रा से कभी अधिक, कभी कम मात्रा में भोजन करना या भोजन के निर्धारित समय से पहले या निर्धारित समय के बाद में भोजन करना।
- **अध्यसन :–** पहले किये गये आहार के बिना पचे ही पुनः भोजन करना।

16. पाण्डु चिकित्सा

❖ चरक ने पाण्डु रोग का वर्णन ग्रहणी के बाद किया हैं जबकि सुश्रुत ने हृदय रोग के बाद में।
❖ **"पाण्डुस्तु पीतमागार्धः केतकी धूलि सन्निभः।"** – पाण्डु का अर्थ है – केतकी की धूल के समान वर्ण होना।

पाण्डु रोग का निदान :–पित्तवर्धक विदाही आहार विहार, दिवास्वप्न, व्यायाम, मैथुन, वेगविधारण, भय, चिंता।
दोष :– त्रिदोष विशेषतः पित्त (**साधक पित्त** – समुदीर्ण यदा पित्तं हृदये समवस्थितम्)।
दूष्य :– त्वचा, रक्त, मांस। (प्रदूष्य **कफवातासृक्त्वङ्मांसानि** करोति तत्) (सुश्रुत – रक्त)
पाण्डु के भेद –(5) – वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज और मद्विकाभक्षणजन्य।
सुश्रुत –(4) – वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज।
हारीत –(8) – वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज, मृत्तिकाभक्षणजन्य + कामला, कुम्भकामला, हलीमक।

पाण्डु रोग का पूर्वरूप :– तस्यं लिंगम् भविष्यतः हृदयस्पदनं रौक्ष्यं स्वेदाभावः श्रमस्तथा।। (च. चि. 16/12)
1. हृदय स्पन्दन 2. रूक्षता 3. स्वेदाभाव – पसीना न आना 4. शरीर में थकावट।
पाण्डु रोग की सम्प्राप्ति :– सोऽल्परक्तोऽल्पमेदस्को निःसारः शिथिलेन्द्रियः। वैवर्ण्य भजते – (च. चि. 16/6)
पाण्डु रोग का लक्षण :–

1. सर्वः <u>**कर्णक्ष्वेडी**</u> हतानलः।	कर्णक्ष्वेड ग्रहणी का पूर्वरूप है।
2. <u>शूनाक्षिकूटो</u> **हरितः शीर्णलोमा** हतप्रभः।	'शूनाक्षिकूटं वदनश्च' – कफज शिरोरोग का लक्षण है।
3.. कोपनः **शिशिरद्वेषी** निद्रालुःष्ठीवनोऽल्पवाक्।	अम्लशिशिरप्रीति – रक्तक्षय का लक्षण है।

मद्विकाभक्षणजन्य पाण्डु :– मृत्तिकादनशीलस्य कुप्यत्यन्यतमो मलः। **कषाया मारुतं पित्तमूषरा, मधुराकफम्।**
पाण्डुरोगं करोत्याशु बलवर्णाग्निनाशनम्।
शूनगण्डाक्षिकूटभ्रूः शूनपान्नाभिमेहनः, **क्रिमिकोष्ठोऽतिसार्येत मलं सासृक् कफान्वितम्। (च. चि. 16/30)**
गण्डप्रदेश, अधिकूट, भ्रू, नाभि मेहन में शूल, क्रिमिकोष्ठ, मल के साथ कफमिश्रित रक्त का आना।
असाध्य लक्षण :– पाण्डु रोगश्चिरोत्पन्नः खरीभूतो न सिध्यति। – पुराना और शोथ युक्त पाण्डु असाध्य होता है।

–: पाण्डु की चिकित्सा सूत्र :–

चिकित्सा सूत्र :– तत्र पाण्ड्वामयी स्निग्धस्तीक्ष्णैरूर्ध्वानुलोमिकैः। संशोध्यो मृदुभिस्तिक्तैः कामली तु विरेचनैः।
ताभ्यां संशुद्धकोष्ठाभ्यां पथ्यान्यन्नानि दापयेत्। (च. चि. 16/40)
1. पाण्डु रोगी सर्वप्रथम **स्नेहन** → तीक्ष्ण वमन तथा विरेचन द्वारा संशोधन।
2. **स्नेहार्थ घृत** :– पाण्डु, कामला के रोगियों को पंचगव्य घृत, महातिक्तघृत और कल्याणघृत से स्नेहन कराये।
दाडिमाद्य घृत, कटुकाद्य धृत, पथ्या घृत, दन्ती घृत, **द्राक्षा घृत, हरिद्रादि घृत**, दार्वी घृत एंव कालीयक घृत।
3. **विरेचन** :– 1. वातज पाण्डु में – दुग्ध + गोमूत्र से (पयसा मूत्रयुक्तेन बहुशः केवलेन वा – **च. चि. 16/56)**
2. पैत्तिक पाण्डु में – त्रिवृत्त चूर्ण + दुग्ध से
3. कफज पाण्डु में – हरीतकी चूर्ण + गोमूत्र से
5. **गोमूत्र का प्रयोग :– क्षीरमूत्रं पिबेत्** पक्षं गव्यं माहिषमेव वा। पाण्डुर्गोमूत्रयुक्तं वा सप्ताहे त्रिफलारसम्। (च. चि. 16/64)

–: पाण्डु में चिकित्सीय योग :–

1. **गोमूत्र हरीतकी** –
2. **लौह भस्म**– 7 दिन तक गोमूत्र के साथ पान करें।
3. **नवायस चूर्ण** –10 घटक –त्रिफला, त्रिकटु, त्रिमद +9 भाग लौहभस्म) **नवायसमिदं चूर्णं कृष्णात्रेयेण भाषितम्।**
4. **शिलाजतु वटक, मण्डूर वटक** – गोमूत्रेऽष्टगुणे पचेत्।
5. **योगराज** – सेवन काल में कुलत्थ, काकमाची और कपोत मांस का निषेध है – **मात्रा – उदुम्बरसमां मात्रा**
7. **पुर्ननवामण्डूर– मण्डूरं द्विगुणं चूर्णाद्** – अनुपान – तक्र,
8. **धात्र्यवलेह – लिह्याद् पाणितलं।**
9. **बीजकारिष्ट**– विजयसार की लकडी का प्रयोग। – बीजकारिष्ट इत्येष **आत्रेयेण प्रकीर्तितः।**
10. **धात्र्यरिष्ट– 2000 धात्रीफल।**
11. **गौडोऽरिष्ट** – मंजिष्ठा रजनी द्राक्षा बलामूलन्ययोरजः। लोध्रं चैतेषु गौडः स्यादरिष्टः पाण्डुरोगिणाम्।
मद्विकाभक्षणजन्य पाण्डु की चिकित्सा :– तीक्ष्ण संशोधन → **व्योषाद्य घृत**, केशरादि घृत।

–: कामला :–

❖ चरक ने कामला को पाण्डु रोग का ही प्रवृद्ध रूप माना हैं जबकि सुश्रुत ने पाण्डु रोग का उपद्रव माना हैं।

❖ वाग्भट्ट ने पाण्डु रोग के बिना भी कामला को स्वतंत्र रूप में भी उत्पन्न होने वाला रोग माना है।

"भर्वोत्पत्तोल्वणस्यासौ पाण्डुरोगादृतेऽपिच" (अ. हृ. नि. 13/17)

कामला :– पाण्डुरोगी तु योऽत्यर्थं पित्तलानि निषेवते। तस्य पित्तमसृग्मांसं दग्ध्वा रोगाय कल्पते।। (च. चि. 16/34)

दोष :– पित्त **दूष्य** :– रक्त, मांस। (सुश्रुत – रक्त)

कामला लक्षण :– हारिद्रनेत्रः स भृशं हारिद्रत्वङ्नखाननः। **रक्तपीतशकृन्मूत्रो भेकवर्णो हतेन्द्रियः। (च. चि. 16/35)**

कामला के भेद :– 2 – 1. कोष्ठाश्रित कामला – पीत मलप्रवृत्ति।

2. शाखाश्रित कामला – **तिलपिष्टनिभं मलप्रवृत्ति,** हारिद्रनेत्रमूत्रत्वक् **श्वेतवर्चास्तदा** नरः।

चिकित्सा सूत्र :– **मृदुभिस्तिक्तैः कामली तु विरेचनैः। (च.चि. 16/40)** – कामला रोगी में **"मृदु विरेचन"** कराना चाहिए।

योग – 1. चूर्णिताः कामली लिह्याद् गुडक्षौद्रेण वाऽभया। – केवल हरीतकी चूर्ण गुड–मधु के साथ प्रातः काल सेवन करें।

2. मातुलुगंरसं क्षौद्रपिप्पलीमरिचान्वितम्।

3. अजंन – अञ्जनं कामलाऽर्त्तानां द्रोणपुष्पीरसः स्मृतः। (चक्रपाणि) – द्रोणपुष्पी स्वरस का अंजन देना चाहिए।

4. नस्य – निशागैरिक धात्री चूर्ण, कर्कोटमूल या जालिनीफल का नस्य। (चक्रपाणि)

5. कामला में अग्निकर्म – भृकुटि में करते है।

5. श्लेष्मणा रूद्धमार्गं तत् पित्तं कफहरैर्जयेत्। – शाखाश्रित कामला में **कफपित्तहर चिकित्सा** करनी चाहिए।

6. सशर्करा कामलिनां त्रिभण्डी हिता गवाक्षी सगुडा च शुण्ठी। – सुश्रुत 7. धात्रीलौह – चक्रपाणि

8. प्रातःकाल सेवनीय योग :– त्रिफलाया गुडूच्या वा दार्व्या निम्बस्य वा रसम्। शीतं मधुयुतं प्रातः कामलार्तः पिबेन्नरः।

–: कुम्भ कामला :–

कालान्तरात् खरीभूता कृच्छ्रा स्यात्कुम्भकामला। **कृष्णपीतशकृन्मूत्रो भृशं शूनश्च मानवः। (च. चि. 16/37)**

नष्टाग्निसंज्ञः क्षिप्रं हि कामलावान् विपद्यते। – जब पाण्डुरोग अधिक दिनों तक रह जाता है तब सभी धातुओं में रूक्षता हो जाने से 'कुम्भकामला' की उत्पत्ति होती है जो एक कष्टसाध्य रोग है।

उपेक्षया च **शोफाढ्या** कृच्छ्रा कुम्भकामला। – चरक अनुसार कामला की उपेक्षा व शोथ की अधिकता से होता है।

सुश्रुत ने कुम्भकामला को **"कुम्भसाह्व"** कहा – **महान् शोथ एवं पर्वभेद** ये 2 लक्षण है।

सुश्रुतानुसार कुम्भकामला चिकित्सा :– 1. लौहकिट्ट प्रयोग। 2. अक्षकाष्ठदग्धमण्डूर

3. सैंधवमण्डूर का प्रयोग 4. स्वर्णमाक्षिक/शिलाजतु का सेवन गोमूत्र से

वाग्भट्टानुसार **कुम्भकामला चिकित्सा** :– गोमूत्र + शिलाजतु/गोमूत्र + माक्षिक → 1 मास तक पियें।

–: हलीमक :–

जीर्ण शाखाश्रित कामला की उपेक्षा से हलीमक रोग उत्पन्न होता है।

❖ हलीमक **वातपित्तप्रधान** रोग हैं।

❖ चरक ने हलीमक को **"महाव्याधि"** की संज्ञा दी है।

❖ वाग्भट्ट ने हलीमक को **लोढर या अलस** की संज्ञाए दी है।

तन्द्राबलानलभ्रंशो लोढरं तं हलीमक। अलसं चेति :षन्ति । (अ. हृ. नि. 13)

लक्षण :– यदा तु पाण्डोर्वर्णः **स्यात् हरितश्यावपीतकः।** – शरीर वर्ण – हरितश्यावपीतक (सुश्रुत –हरिपीतनील)

बलोत्साहक्षयस्तन्द्रा मन्दाग्नित्वं मृदुज्वरः। – बल, उत्साह का क्षय, तन्द्रा, **मदांग्नि, मृदु ज्वर**

स्त्रीष्वहर्षोऽगंमर्दश्च श्वासस्तृष्णाऽरूचिर्भ्रमः। – स्त्रियों में अनुराग का अभाव, श्वास तृष्णा, अरूचि, भ्रम

हलीमकं तदा तस्य विद्यादनिलपित्ततः।। (च. चि. 16/133)

चिकित्सा :– 1. गुडूचीस्वरसक्षीरसाधितं माहिषं घृतम्।

2. अभयालेह, द्राक्षावलेह

3. यापना, क्षीर बस्ति और अनुवासन वस्ति

–: पानकी :–

चक्रपाणि व डल्हण – ज्वर व अतिसार, पीतशरीर, नेत्र पाण्डु से लक्षण हो तो उसे पानकी कहते है।

सन्तापो भिन्नवर्चस्त्वं **बहिरन्तश्च पीतता।**

पाण्डुता नेत्रयोर्यस्य पानकीलक्षणं भवेत्। – माधव निदान

17. हिक्काश्वास चिकित्सा

हिक्का :– हिग् इति कृत्वा कायति शब्दायते इति हिक्का। – जिस रोग में हिक् हिक् की ध्वनि निकलती है।

✓ **अन्ते संजायते हिक्का श्वासो वा तीव्रवेदनः।** – जीवन की अन्तिम बेला पर तीव्रवेदन के साथ हिक्का श्वास हो ही जाते है।

✓ **यथा श्वासश्च हिक्का च प्राणनाशु निकृन्ततः। (च. चि. 17/6)** –हिक्का श्वास शीघ्र ही प्राणनाश कर देते है।

✓ **मिथ्योपचरितौ क्रुद्धौ हत आशीविषाविव। (च. चि. 17/6)** –हिक्का श्वास क्रुद्ध सर्प के समान शीघ्र ही प्राणनाशक है।

✓ **कफवातात्मकावेतौ पित्तस्थान समुद्भवौ।** हृदयस्य रसादीनां धातूनां चोपशोषणौ।। **(च. चि. 17/8)**
हिक्का श्वास दोनों वातकफ जन्य रोग है और इनकी उत्पत्ति पित्तस्थान (आमाशय–वाग्भट्ट) से होती है।

✓ चरकानुसार हिक्का और श्वास के निदान समान बताये गये है।

✓ वाग्भट्टानुसार हिक्का और श्वास के निदान, पूर्वरूप, संख्या, प्रकृति और संश्रय समान बताये गये है।

हिक्का श्वास के निदान :– रजसा धूमवाताभ्यां शीतस्थानाम्बु सेवनात्। व्यायामाद् ग्राम्यधर्माध्व रूक्षान्नविषमाशनात्।।

हिक्का के पूर्वरूप :– कण्ठोरसोर्गुरूत्वं च वदनस्य कषायता। हिक्कानां पूर्वरूपाणि <u>कुक्षेराटोप</u> एव च। (च. चि. 17/19)

1. कण्ठ एंव उरः प्रदेशः में भारीपन
2. मुख का कषाय होना।
3. कुक्षि में आटोप। (उदर रोग का सामान्य लक्षण है।)

हिक्का की सम्प्राप्ति :– प्राणोदकान्नवाहानि स्रोतांसि सकफोऽनिलः। हिक्काः करोति संरूद्धं –(च. चि. 17/21)

जब **कुपित वायु कफ** को लेकर **प्राण, उदक तथा अन्नवह स्रोतस्** में अवरोध उत्पन्न करती है तो हिक्का उत्पन्न होता है

हिक्का के भेद :– चरक – (5) – अन्नजा, क्षुद्रा, महा, गम्भीरा, व्यपेता हिक्का।
सुश्रुत – (5) – अन्नजा, क्षुद्रा, महती, गम्भीरा, यमला, हिक्का।

हिक्का	चरकानुसार लक्षण	सुश्रुतानुसार लक्षण
1. महा	**महामूला महावेगा महाशब्दा महाबला। सा श्रुविस्तृतनेत्रस्य – <u>सद्यः प्राणहरा मता।</u>**	**सर्वगात्रप्रकम्पिनी**
2. गम्भीरा	**नाभि, पक्वाशय से उत्पन्न,** घोर गम्भीरनादिनी। – **<u>प्राणान्तिकी मता।</u>**	अनेकोपद्रवयुता गम्भारी
3. व्यपेता	**जत्रूमूल से उत्पन्न,** आहार परिणामान्ते भूयस्य लक्षते बलस्य – **<u>प्राणोपरोधिनी।</u>**	
4. अन्नजा	आहार को अत्यधिक शीघ्रता से खाने से उत्पन्न – जल पीने या भोजन करने पर शान्त। **हिक्का पीते च भुक्ते च शमं याति च साऽन्नजा।।**	
5. क्षुद्रा	हृदयं क्लोमं कण्ठ च तालुकं च समाश्रिता। **अतिदुःखा न सा घोरः शिरोमर्मप्रबाधिनी।** **याति भुक्तमात्रे च मार्दवम्।** (भुक्ते मृदुत्वं समुपैति यश्च – वातज गुल्म का लक्षण) **श्रम करने पर बढ जाता है और भोजन करने पर शान्त हो जाता है।**	(वा.– भक्तोद्भवा कहा)

साध्यासाध्यता :– (1) महती, गम्भीरा, व्यपेता –असाध्य (चरक)। (2) **क्षुद्रा, अन्नजा** – साध्य।

–: श्वास :–

- हिक्का और श्वास के निदान समान बताये गये है।
- **श्वास के पूर्वरूप :– आनाहः पार्श्वशूलं च पीडनं हृदयस्य च। प्राणस्य च विलोमत्वं श्वासानां पूर्वलक्षणम्।।**

श्वास की सम्प्राप्ति :– यदा स्रोतांसि संरूद्ध मारूत कफपूर्वकः। विष्वग्व्रजति संरूद्धस्तदा श्वासान्करोति सः।।

श्वास के भेद : – (5) – महा, उर्ध्व, छिन्न, तमक तथा क्षुद्र श्वास।

(1) महाश्वास – उच्चैः श्वसिति, प्रनष्टज्ञानविज्ञान, बद्धमूत्रवर्चा, **विभ्रान्तलोचनः,** दीनः प्रश्वसितं चास्य दूरात् विज्ञायते भृशं।

(2) उर्ध्वश्वास – उर्ध्वश्वासे प्रकुपिते ह्यधःश्वासो निरूध्यते। **विभ्रान्ताक्ष,** दीर्घ श्वसिति, उर्ध्वदृष्टि

(3) छिन्नश्वास – श्वसिति विछिन्नं,**विप्लुताक्षः** परिक्षीणः श्वसन् **रक्तैकलोचनः।**
अष्टांग हृदय – परिदेवी (मर्मो में होने वाली पीडा)

(4) क्षुद्रश्वास – थोड़ा भी श्रम करने पर उत्पन्न बैठने से शान्त।

(5) तमक श्वास :– प्रतिलोमं यदा वायुः स्रोतांसि प्रतिपद्यते। ग्रीवा शिरश्च संगृह्य श्लेष्माणं समुदीर्य च।
<u>करोति पीनस</u> तेन रूद्धो <u>घुर्घुरकं</u> तथाः। अतीव तीव्रवेग च श्वासं प्राणपीडकम्।। (च. चि.
17/52)

लक्षण :– 1. न चापि लभते निद्रां शयानः श्वासपीडितः। – श्वास से पीडित होने के कारण नींद नहीं आती है।

2. **आसीनो लभते सौख्यं उष्णं चैवाभिनन्दति।**– बैठने पर सुख प्राप्त होता है, उष्ण चीजे अच्छी लगती है

3. **उच्छ्रिताक्षो ललाटेन स्विद्यता भृशमर्तिमान्।** – ललाट पर पसीना आता रहता है।

4. **मेघाम्बुशीतप्राग्वातैः श्लेष्मलैश्च विवर्धते।** – बादलों के छा जाने, शीतल जल पीने से बढ जाता है।

1. **प्रतमक श्वास :– 'ज्वरमूर्च्छापरीतस्य विद्यात प्रतमकं तु तम्।** (प्रतमक – मूर्च्छा, ज्वर + तमक श्वास के लक्षण)
2. **संतमक श्वास :– तमसा वर्धते शीतैश्चाशु प्रशाम्यति।** अंधकार से जो बढता है, शीतल उपचारों से शान्त होता है।

✓ सुश्रुत और वाग्भट्ट ने "संतमक श्वास" का वर्णन नहीं किया है।

साध्यासाध्यता :– तमकश्वास – याप्य एवं नवीन होने पर साध्य (चरक) **सुश्रुत – कृच्छ्रसाध्य।**

क्षुद्रश्वास –साध्य, छिन्न, महा, उर्ध्व श्वास – असाध्य।

✓ सुश्रुतानुसार श्वास, कास और विलम्बिका "दुर्निवारणीय रोग" है।

मारकता :– सर्वेऽपि रोगा नाशाय न त्वेवं शीघ्रकारिणः। हिध्मा-श्वासौ यथा तौ हि मृत्युकाले कृतालयौ। (अ. हृ. नि. 4/31)

—: हिक्का–श्वास की चिकित्सा सूत्र :—

हिक्का, श्वास की चिकित्सा समान है। – चरक

हिक्का, कास, श्वास, छर्दि और क्षय में परस्पर एक दूसरे की औशधियों से चिकित्सा करे। – चरक

हिक्काश्वासादितं स्निग्धैरादौ स्वेदैरुपाचरेत्। आक्तं लवण तैलेन नाडी प्रस्तर संकरैः। (च.चि. 17/23)

1. **स्नेहन** – सैंधव + तिल तैल – वृक्ष पर मर्दन 2. **स्वेदन** – स्निग्धो द्रव्यों से युक्त – नाडी, प्रस्तर, संकर स्वेद।
3. **कफवर्धक आहार ⟶ मृदु वमन ⟶ धूम्रपान।**
4. कासिने छर्दनं दद्यात् स्वरभंगे च बुद्धिमान्। **वातश्लेष्महरैर्युक्तं तमके तु विरेचनम्।। (च.चि. 17/121)**

श्वास के रोगी होने पर वमन और तमक श्वास रोग होने पर कफवातहर औषधियों से युक्त विरेचन देना चाहिए।

—: हिक्का–श्वास का चिकित्सीय योग :—

1. **निदिग्धिकाद्य यूष, रास्नादि यूष, मातुलुंगादि यूष, मुदग यूष**
2. **हिंग्वादि यवागू, दशमूलादि यवागू**
3. **पाठाद्यासव**
4. **भार्गीनागरादि योग** – भार्गी, नागर कल्क, मरिच, यवक्षार, दारूहरिद्रा, चित्रक, सारिवा और मूर्वा का चूर्ण उष्ण जल स
   - ✓ **तुल्य गुडनागर योग – गुड और नागर (सोंठ) समान मात्रा में लेकर खाये/नस्य लेवे – वाग्भट्ट।**
   - ✓ भार्गी चूर्ण को मधु एवं घृत से चाटे। – सुश्रुत।
5. **सौवर्चलादि चूर्ण** – सौवर्चलं नागरं च भार्गी द्विशर्करायुतम्। उष्णाम्बुना पिबेत् हिक्काश्वासविकारनुत्।
6. **शट्यादि चूर्ण** – समं चूर्ण कृत्वाऽष्टगुणशर्करम्।
7. **मुक्तादि चूर्ण** – 1 कर्ष मात्रा मधु घृत से। – नेत्र रोगों के लिए विशेष रूप से वर्णित है।
8. **दशमूलादि घृत, मनःशिलादि घृत, तेजोवत्यादि घृत**
9. **नस्य :– लशुनस्य पलाण्डोर्वा मूलं गृन्जनकस्य वा। नादयेच्चन्दनं वाऽपि नारीक्षीरेण संयुतम्।। (च.चि. 17/131)**

   लशुन/पलाण्डु/गाजर स्वरस या स्त्री दुग्ध में चंदन घिसकर नस्य देना चाहिए।
10. **हिक्का में मानसिक उपाय :–**

    शीताम्बुसेकः सहसा त्रासो विस्मासनं भयम्। क्रोधहर्षप्रियोद्वेगा हिक्का प्रच्यावना मताः।। (च.चि. 17/137)

    शीताम्बुसेकः सहसा त्रासविक्षेपभीशुचः। हर्षेर्ष्योच्छ्वासरोधाश्च **हितं कीटैश्च दंशनम्।। (अ. हृ. चि. 4/56)**
11. **हिक्का, श्वास नाशक भेषज, अन्न, पान :–**

    यतकिन्चित् कफवातघ्नं उष्णं वातानुलोमनम्। भेषजं पानमन्नं वा तद्धितं श्वासहिक्किने।

    हिक्का, श्वास में कफवातघ्नं उष्णं तथ वातानुलोमन औषध, अन्न, पान का प्रयोग करना चाहिए।**(च.चि. 17/147)**
12. **हिक्का, श्वास में एकान्तिक चिकित्सा का निषेध :–**

    वातकृद्वा कफहरं कफकृद्वाऽनिलापहम्। कार्य नैकान्तिकं ताभ्यां प्रायः श्रेयोऽनिलापहम्।। (च.चि. 17/148)
13. **बृंहण एंव शमन चिकित्साः** – हिक्का तथा श्वास में बृंहण एंव शमन चिकित्सा का विधान बतलाया गया है।

18. कास चिकित्सा

कास के भेद :– (5) – वातज, पित्तज, कफज, क्षतज तथा क्षयज।

कास पूर्वरूप :– पूर्वरूपं भवेत्तेषां **शूकपूर्णगलास्यता। कण्ठे कण्डूश्च भोज्यानामवरोधश्च जायते। (च. चि. 18/5)**

कास की सम्प्राप्ति :– दुष्ट प्राणवायु उदानवायु से मिलकर फूटे हुए कांस्य पात्र के शब्द के समान शब्द को करता हुआ **कफपित्त आदि दोष** सहित मुख से सहसा निकलता है उसे कास कहते है।

"शुष्को वा सकफो वाऽपि कसनात्कास उच्यते।" (च. चि. 18/8)

कास के लक्षण :–

(1) वातज – हृत्पार्श्वोरः शिरःशूल **स्वरभेद**करो भृशम्। – चरक **क्षामाननः क्षीणबलस्वरौजाः। – सुश्रुत**

(2) पित्तज – **प्रततं कासमानश्च** ज्योतिषीव च पश्यति, उरोधूमायनं, स्वरामय, (खॉसते समय आसमान में तारे दिखना)

(3) कफज – **बहलं मधुरं स्निग्धं निष्ठीवति धनं कफम्। – चरक,** शिरोरूजार्त्तः कफपूर्ण देहः। – सुश्रुत

(4) क्षतज – स पूर्व कासते शुष्क ततः ष्ठीवेत् सशोणितम् + **पारावत इवाकूजन्। (कपोत इव कूजनं – अपतंत्रक)**

(5) क्षयज – **दुर्गन्धं हरितं** रक्तं ष्ठीवेत् **पूयोपमं कफम्। + स्वरभेदोऽनिमित्ततः।**

(पिच्छिलं बहलं विस्र हरितं श्वेतपीतकम्। – राजयक्ष्मा में कास)

अकस्मादुष्णशीतार्तो बह्वाशी दुर्बलः कृशः। – अधिक मात्रा में भोजन करने के बावजूद निंबल एवं दुबर्ल रहता है।

श्रीमद्दर्शनलोचन – नेत्र शोभायुक्त होते है।, सततसूयको घृणी – सभी पदार्थो से घृणा करता है।

कास रोग की उपेक्षा करने से श्वास, क्षय, वमन, स्वरभेद आदि रोग हो जाते है। अतः कास की शीघ्र चिकित्सा करे। - वाग्भट्ट

साध्यासाध्यता :– वातज, पित्तज, कफज कास – साध्य।

(1) क्षयज कास – बलवान व्यक्तियों में – साध्य। – क्षीण व्यक्तियों में – देहनाशन।

(2) क्षतज कास – बलवान व्यक्तियों में – याप्य। – क्षीण व्यक्तियों में – असाध्य।

चिकित्सा योग :–

1. वातज कास – 'रूक्षस्यानिलं कासमादौ स्नेहैरुपाचरेत्। सर्पिर्भिर्बस्तिभिः पेयायूषक्षीररसादिभिः।। (च. चि. 18/32)

'**कण्टकारी घृत**', पिप्पल्यादि घृत, त्र्यूषणाद्य घृत, रास्ना घृत – जीवनीय गण की औषधियों शामिल है।

शट्यादि चूर्ण, दुःस्पर्शादि लेह, चित्रकादि लेह,

अगस्य हरीतकी – 100 हरड – मात्रा – 2 हरड का प्रतिदिन सेवन **(वशिष्ठ हरीतकी – 1100 –वाग्भट्ट)**

मनःशिलादि धूम, प्रपौण्डरीकादि धूम्र, **दशमूल पेया।**

कास में खदिर का प्रयोग :– पिबेत् खदिरसारं वा मदिरादधिमस्तुभिः।

2. पित्तज कास – पैत्तिके सकफे कासे वमनं सर्पिषां हितम्। तथा मदनकाश्मर्यमधुकक्वथितैर्जलैः। (च. चि. 18/32)

कफानुबन्ध पित्तज कास → वमन।, त्वगादि लेह, पिप्पल्यादि लेह, स्थिरादि क्षीरपाक, कासहर गुटिका।

3. कफज कास –बलिनं वमनैरादौ शोधितं कफकासिनम्। यवान्नैः कटुरूक्षोष्णैः कफघ्नैश्चाप्युपाचरेत्।(च.चि.18/32)

कफज कास → वमन। **दशमूल पेया, दशमूलादि** घृत, कुलत्थादि घृत, कण्टकारी घृत।

4. क्षतज कास में :– "संतर्पण चिकित्सा"

✓ क्षतज कासमें पित्त कास में निर्दिष्ट चिकित्सा करनी चाहिए।

5. क्षजय कास – दीपनं बृंहणं चैव स्रोतसां च विशोधनम्। व्यत्यासात् क्षयज कासिभ्यो बल्यं सर्व हितं भवेत्।

व्यत्यास चिकित्सा क्रम :– दीपन → बृंहण → स्रोत्रोविशोधन तत्पश्चात् पुनः **दीपन → बृंहण → स्रोत्रोविशोधन**

यही व्यत्यास चिकित्सा क्षयज कास में दीपन, बृंहण, और स्रोतस विशोधन चिकित्सा का बार बार उलट फेर करते हुए प्रयोग करना चाहिए।

योग – द्विपंचमूलादि घृत, गुडूच्यादि घृत, कासमर्दादि घृत।

सर्व कासहर योग – हरीतकी अवलेह – 20 हरड, पद्मकादि लेह।

19. अतिसार चिकित्सा

पर्याय :– उदरामय, त्रिकाण्ड शोथ, गिलोद शोथ।

❖ राजा पृषध के यज्ञ के समय गोवध के कारण अतिसार रोग उत्पन्न हुआ।

सम्प्राप्ति :– गुरू उष्ण असात्म्य आहार के सेवन से → जाठराग्नि मन्द → अतिसार।

अतिसार के भेद :– **(6)** – वातज, पैत्तिक, कफज, सन्निपातज, शोकज व **भयज**। (36 भेद – चरक सिद्धि)

सुश्रुत, माधव – **(6)** – वातज, पैत्तिक, कफज, सन्निपातज, शोकज व **आमज**।

वाग्भट्ट – (2) – सामो निरामकः। सासृड्.निरस्त्रः (अ. हृ. नि. 8/13) – चरकोक्त 6 भेद अतिरिक्त 2 भी माने है।

संक्षेप में अतिसार – 1. साम 2. निराम और 1. सरक्त 2. निरक्त भेद से 2 प्रकार का होता है।

❖ **ज्वरातिसार** – सर्वप्रथम वर्णन माधव ने किया हैं। ज्वरातिसार की चिकित्सा का वर्णन चक्रपाणि ने किया है।

निदान :– स्नेहादि के अतियोग व मिथ्या योग से, दुष्टाम्बु व **अतिमद्य पान** से, **विष प्रयोग**, अधिक जल क्रीडा, **कृमिदोष**।
माधव निदान में कृमि के उपसर्ग से अतिसार होना – प्रधान माना गया है।

अतिसार के पूर्वरूप :– हृदनाभिपायूदर कुक्षि–तोद गात्रावसाद अनिलसन्निरोधः।
<u>विट्संग</u> आध्मानमथाविपाको भविष्यतस्तस्य पुरः सराणि।। (सु. उ. 40/9)

अतिसार	लक्षण
1. वातज	चरक ने वातज आमातिसार और वातज पक्वातिसार दोनों के लक्षणों का वर्णन किया है। शूलाविष्ट, **सरक्तमूत्रो, अन्त्रकूजन, हृष्टरोमा – सुश्रुत,** **मृष्ट पायु, दग्धगुडाभासं सपिच्छापरिकर्तिकम् – वाग्भट्ट**
2. पित्तज	ब्रघ्नसंतापपाक – चरक दुर्गन्धित, उष्ण, **मांसतोय स**[illegible] – **सुश्रुत,** हारिद्रं **शाद्वलप्रभम् – वाग्भट्ट**
3. कफज	**'कृतेऽप्यकृतसंज्ञः** (मलत्याग के बाद भी पुनः मलत्याग की प्रतीति) सलोमहर्ष, **सप्रवाहिक** – चरक, वाग्भट्ट तन्द्रा, निद्रा, गौरवोत्क्लेश, वेगाशंकी – पुनः मलत्याग की शंका, हृष्टरोमा – सुश्रुत
4. सन्निपातज	**वराहस्नेहमांसाम्बु सदृशं**, सर्वरूपिणम, कृच्छ्रसाध्य – माधव निदान **विविध वर्ण मलत्याग**, तन्द्रायुक्तो, मोह, साद, **कच्छ्रसाध्य** (बालक,वृद्ध में – असाध्य)– सुश्रुत
5. शोकज	(काकणन्तीप्रकाशम्) गुंजाफल के समान स्वरूप, निर्गन्ध या गन्धयुक्त, रक्त प्रवृत्ति – कष्टसाध्य।
6. आमज	**नानावर्ण एंव कच्छ्रपूर्वक** मलत्याग।

आगन्तुज अतिसार :– चरक ने मानस दोष के कारण आगन्तुज अतिसार के 2 भेद शोकज एंव भयज अतिसार कहे है।
इनके लक्षण वातज अतिसार के समान होते है।

शोकज एंव भयज अतिसार में वातहर, करनी चाहिए। – **क्रिया वातहरा हर्षणाश्वासनानि च (च. चि. 19/12)**

आश्वासन एवं हर्षणी चिकित्सा – शोकज अतिसार में हर्षणी एवं भयज अतिसार में आश्वासन चिकित्सा करनी चाहिए।

रक्तातिसार :– जो पित्तातिसार का रोगी पित्तजनक अन्न पान का अधिक सेवन करता है उसका पित्त अत्यधिक दुष्ट होकर रक्तातिसार उत्पन्न कर देती हैं। जिसमें ज्वर, शूल, तृषा, दाह और **दारूण गुदपाक** होता है। (च. चि. 19/70)

असाध्य अतिसार – पक्वशोणिताभं, यकृत्खण्डोपमं, मेदोमांसोदकसंन्निकाशं, **दधिघृतमज्जतैलवसाक्षीरवेश्वाराभं**।

गतातिसार :– यस्योच्चारं विना मूत्रं सम्वग्वायुश्च गच्छति। दीप्ताग्नेर्लघुकोष्ठस्य स्थितस्तस्योदरामयः। (सु. उ. 40)
जिसके मूत्र एवं अधोवायु की प्रवृत्ति मलप्रवृत्ति के बिना भली भॉति होने लगे, अग्नि प्रदीप्त एवं कोष्ठ लघु हो जाए तो उसको अतिसार रोग से मुक्त समझना चाहिए।

—: अतिसार का चिकित्सा सूत्र :—

❖ अतिसार में सर्वप्रथम आम पक्व मल की परीक्षा कर लें तत्पश्चात चिकित्सा प्रारम्भ करें।

❖ बलवान रोगी में आमातिसार में सर्वप्रथम संग्राहक औषध न दें अन्यथा –

दण्डालसक, आध्मान, ग्रहणी, अर्श, शोथ, पाण्डु, कुष्ठ, प्लीहा, गुल्म, ज्वर रोग उत्पन्न हो जाते है।

❖ अल्पदोष वाले अतिसार में – लंघन,

मध्यदोष – दीपन पाचन प्रमथ्या,

बहुदोष – विरेचन का प्रयोग कराना चाहिए।

❖ **अतिसार में मलकृच्छ्रता होने पर – अभया/हरीतकी चूर्ण का प्रयोग करना चाहिए।**

- कफज अतिसार में सर्वप्रथम लंघन कराये → तत्पश्चात् दीपन औषधियों का प्रयोग करना चाहिए।
- अतिसारी के खड, यूष और यवागू सिद्ध करने के लिए पिप्पलयादि गण की औषधियों का प्रयोग करें।
- **खड यूष** :– कल्कः स्याद् बालबिल्वानां तिलकल्कश्च तत्समः। दध्नः सरोऽम्लस्नेहाद्यः **खडो हन्यात् प्रवाहिकम्।।**

सान्निपातज अतिसार का चिकित्सा सूत्र :–

वातस्यानु जयेत् पित्तं पित्तस्यानु जयेत् कफम्। त्रयाणां वा जयेत्पूर्वं यो भवेत् बलवत्तमः।। (च. चि. 19/122)

सान्निपातज अतिसार में सर्वप्रथम वात की → तत्पश्चात पित्त की और → अंत में कफ की चिकित्सा करनी चाहिए।

समवाये तु दोषाणां पूर्व पित्तमुपाचरेत्। ज्वरे चैवातिसारे च सर्वत्रान्यत्र मारुतः। (सु. उ. 40/161)

❖ सुश्रुत ने सन्निपातज अतिसार एंव सन्निपातज ज्वर में प्रथम पित्त की चिकित्सा करनी चाहिए। **(सु. उ 40/161)**

—: अतिसार का चिकित्सीय योग :—

1. **चांङ्गेरी घृत – गुदभ्रंशरुजापहम्।**
2. **चव्यादि घृत – गुदभ्रंश में**
3. **अजाक्षीर एंव पिच्छा वस्ति :–** पित्तज अतिसार में अजाक्षीर एवं पिच्छा वस्ति का प्रयोग करना चाहिए।
4. **पिच्छा वस्ति :–** सेमल के गीले पुष्प या पत्र [illegible] का प्रयोग।

   वातश्लेष्मविबन्धे वा कफे वाऽतिस्रवत्यपि। शूले प्रवाहिकायां वा पिच्छा बस्ति प्रयोजयेत्। (च. चि. 19/117)
5. **दाव्यादि घृत** – त्रिदोषज अतिसार में।
6. रक्तातिसार में हरिण या बकरे के ताजे रक्त को घी में छौंककर सेवन करना चाहिए।
7. कुटजफल यवागूमण्ड।
8. **बालबिल्व चूर्ण** – अतिसार ठीक हो जाता है।
9. **कफज अतिसार की चिकित्सा – कपित्थाष्टक चूर्ण – अष्टांग हृदय**

8 भाग कपित्थ, 6 भाग शर्करा	कपित्थ : शर्करा 4 : 3	प्रयोग :– अतिसार, ग्रहणी

दाडिमाष्टकचूर्ण – अष्टांग हृदय

8 पल दाडिम, 8 पल शर्करा	दाडिम : शर्करा 1 : 1	प्रयोग :– अतिसार, क्षय, गुल्म,ग्रहणी रोग

—: प्रवाहिका :—

चरक में प्रवाहिका का वर्णन नहीं है। लेकिन कफातिसार या आमातिसार में इसक समान लक्षण मिलते हैं।

सुश्रुत संहिता के उत्तर तंत्र अध्याय 40 "अतिसार प्रतिषेध" में प्रवाहिका का सर्वप्रथम वर्णन है।

पर्याय – अ. हृ. – बिम्बिशि, **भोज** – विस्त्रसी, **पराशर** – अर्न्तग्रन्थी/अन्नग्रथी, **हारीत** – निश्चारक/निःसारक

सम्प्राप्ति :– वायुः प्रवृद्धो निचितं बलासं नुदत्यधस्तादहिताशनस्य। प्रवाहमाणस्य मुहुर्मलाक्तं प्रवाहिकां तां प्रवदन्ति तज्ज्ञाः।। –सुश्रुत

सुश्रुत के अनुसार प्रवाहिका का मुख्य कारण – अहिताशन है।

❖ प्रवाहिका में वायु दुष्टि → अपान + समान वायु

प्रवाहिका के भेद :– 1. वातज – सशूला, 2 .पित्तज – सदाहा, 3. कफज – सकफा, 4. रक्तज – सशोणिता

चिकित्सकीय योग :–

1. **चांगेरी घृत – अतिसार, प्रवाहिका, और ग्रहणी रोग** नाशक।
2. **अपराजिता खड –दीपनः पाचनो ग्राही रूच्यो बिम्बिशिनाशनः। (अ.हृ.चि. 9/28) बिम्बिशि** = प्रवाहिका का पर्याय

   : वाय्वाशये सतैले हि **बिम्बिसी** नाबतिष्ठते।। **(अ. हृ. चि. 9/47)** (Mah P.G. o7)

20. छर्दि चिकित्सा

छर्दि का पूर्वरूप :– तासां हृदुत्क्लेशकफप्रसेकौ द्वेषोऽशने चैव हि पूर्वरूपम्। (च. चि. 20/6)

सुश्रुत :– प्रसेको हृदयोत्क्लेशो भक्तस्यानभिनन्दनम्। (सु. उ. 49/8)

दोष :– वात प्रधान – व्यान वायु एवं उदान वायु का विरूद्ध से बढे दोषों को बाहर निकालना।

छर्दि के भेद :– (5) – वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज व द्विष्टार्थ संयोगज।
सुश्रुत – (6) – वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, आगन्तुज, व कृमिज।
वाग्भट्ट –(5) – वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, द्विष्टार्थज।

छर्दि के लक्षण :–

(1) वातज छर्दि– उदगारशब्दप्रबलं सफेनं विच्छिन्न कृष्णं तनुकं कषायम्। (च. चि. 20/9)

(2) पित्तज छर्दि– पीतं भृशोष्णं हरितं सतिक्तं धूम्रं च पित्तेन वमेत् सदाहम्। (च. चि. 20/11)
(वाग्भट्ट – पित्तात्क्षारोदकनिभं धूम्रं हरितपीतकम्।)

(3) कफज छर्दि– उरः शिरो मर्म रसायनीश्च सर्वाः समावृत्य वमिं करोति। (च. चि. 20/13)

(4) सन्निपातज – **समश्नतः सर्वरसान् प्रसक्तं।**

(5) द्विष्टार्थ संयोगज – द्विष्ट (अप्रिय), अशुचि (अपवित्र), [illegible] बीभत्सजा वस्तुओं को देखने मात्र से मन के सन्तप्त या उद्विग्न होने से वमन हो जाता है।

(6) कृमिज छर्दि – उदरशूल, हृल्लास की अधिकता। **(शूलहृल्लासबहुला कृमिजा च विशेषः) – सुश्रुत।**

असाध्य छर्दि – क्षीण व्यक्ति में अतिप्रसक्ता छर्दि, उपद्रवयुक्त छर्दि, शोणितपूयसंयुक्ता एवं सचन्द्रिकां **छर्दि**।

छर्दि के उपद्रव :– 8 – कास, श्वास, ज्वर, हिक्का, तृष्णा, बुद्धिविभ्रम, हृदयरोग, तमक श्वास।
'विण्मूत्रयोस्तत समवर्णगन्धं तृट्श्वासहिक्कार्तियुत'

–: छर्दि का चिकित्सा सूत्र :–

✓ छर्दि में प्रशस्त कर्म – **लंघन, संशोधन, कफपित्तहर चिकित्सा।**
✓ सभी छर्दि में लंघन कराना चाहिए।

(1) वातज छर्दि – वातज छर्दि में लंघन एंव संशोधन नहीं करना चाहिए। (BHU 2008, 2010)
केवल सुसंस्कृत मांसरस का सेवन करना चाहिए।
(2) पित्तज छर्दि – अनुलोमन और वमन।
(3) कफज छर्दि – वमनं प्रशस्तं – दुरालभा के चूर्ण को मधु से चाटना चाहिए।
(4) द्विष्टार्थ संयोगज – आश्वासन और हर्षणी चिकित्सा।
(5) चिरकालीक छर्दि – चिरकालीक छर्दि में **वातनाशक, स्तम्भन और बृंहण** चिकित्सा।
(6) कृमिज छर्दि – कृमिज हृदयरोग सम चिकित्सा।

–: छर्दि का चिकित्सीय योग :–

सर्पिगुड, कल्याणक घृत, त्र्यूषणघृत, जीवनीय घृत, वृष्ययोग, मांसरस,और अवलेहों का प्रयोग करना चाहिए।
लाज सत्तु – सुश्रुत

❖ **वाग्भट्ट :– सौवर्चलादि घृत, पुष्करादिघृत, और दाडिमादि चूर्ण का प्रयोग करना चाहिए।**

21. विसर्प चिकित्सा

विसर्प :– विविधं सर्पति यतो विसर्पस्तेन स स्मृतः। परिसर्पोऽथवा नाम्ना सर्वतः परिसर्पणात्।। (च. चि. 21/11)

शरीर में शीघ्र प्रसारित होने के स्वभाव के कारण इसे विसर्प कहते है। विसर्प परिसर्प एक दूसरे के पर्याय है।

कारण :– छर्दि के वेग को रोकने से रक्तदुष्टि होती है और विसर्प एक रक्त प्रदोषज विकार है

विसर्प के दूष्य :– रक्तं लसीका त्वङ्मांसं दूष्यं दोषोस्त्रयो मलाः।
विसर्पणां समुत्पत्तौ विज्ञेयाः सप्त धातवः।। (च. चि. 21/16)

विसर्प के 3 दोष वात, पित्त, कफ और 4 दूष्य रक्त, लसीका, त्वक्, मांस हैं।

❖ कुष्ठ में प्रथम दूष्य त्वचा होती है जबकि विसर्प में रक्त प्रथम दूष्य होता है

विसर्प के भेद (7) :– 1. वातज 2. पित्तज 3. कफज – साध्य।
4. आग्नेय (वातपित्तज), 5. ग्रन्थि (वातकफज), 6. कर्दम (पित्तकफज), 7. सन्निपातज – – असाध्य।

स्थानानुसार विसर्प के भेद (3) :– विसर्प के तीन भेद किये गए है – ये उत्तरोत्तर बलवान होते है।
1. बहिःश्रितः – सुखसाध्य। 2. अन्तःश्रितः – कृच्छ्रसाध्य। 3. उभयःश्रितः – असाध्य।

विसर्प के लक्षण :–

1. **वातज विसर्प लक्षण** – चक्षुषोराकुलत्वमश्वागमनं, **पिपीलिकासंचार इव चांगेषु।**
2. **पित्तज विसर्प लक्षण** – चक्षुषोराकुलत्वमस्वप्नस्सरतिभ्रमः, शीतवातवारितर्षोऽतिमात्र।
3. **कफज विसर्प लक्षण** – शीतकः शीतज्वर, कृच्छ्रपाकैश्चिरकारिभिर्बहलत्वगुपलेपैः स्फोटैः।
4. **आग्नेय विसर्प लक्षण** – **मर्मानुसारी, हिक्काश्वासौ** जनयति नाश्यति निद्रां।
5. **ग्रन्थि विसर्प लक्षण** – सिरास्नायुमांसत्वगाश्रित, ग्रन्थीनां मालां करूते।
6. **कर्दम विसर्प लक्षण** – **प्रायः आमाशय आश्रित, कुणपगंधी,** मेचकाभः कालो, एकदेशग्राही, संज्ञास्मृतिहन्ता।
7. **सन्निपातज विसर्प** – आशुकारिणं, महात्ययिकं, अचिकित्सीयं।

उपद्रव :– उपद्रवस्तु खलु रोगोत्तरकालजो रोगाश्रयो रोग एव स्थूलोऽणुर्वा, रोगात् पश्चातज्जात इत्युपद्रवसंज्ञः।
तत्र प्रधानो व्याधिः व्याधेर्गुणभूत उपद्रवः, तस्य प्रायः प्रधानप्रशमे प्रशमो भवति।

उपद्रव उसे कहते है, जो रोग उत्पन्न होने के बाद होता है और रोगजनक कारणों से उत्पन्न होने के कारण रोग पर ही निर्भर होता है। वह बडा भी हो सकता है और छोटा भी हो सकता है। वह रोगोत्पत्ति के बाद उत्पन्न होता है, इसलिए उसे उपद्रव कहा जाता हैं। रोग प्रधान और रोग का गुणभूत उपद्रव होता है। प्रायः प्रधान के शान्त हो जाने पर अप्रधान उपद्रव स्वयमेव शान्त हो जाता है।

प्रलेप की मोटाई – चरक – त्रिभागांगुष्ठभाग प्रमाणम्। (अंगुठे के 1/3 भाग के बराबर)
सुश्रुत – आद्रमहिष चर्मोत्सेध प्रमाणम्। (भैंस की गीली चमडी के बराबर)

प्रदेह लगाने के नियम – 1. **सूख जाने पर** थोडी–थोडी देर में पुनः पुनः प्रदेह लगाना चाहिये ।
1. 1 दिन पुराना रखा आलेप या एंक बार प्रयोग में लाया गया आलेप पुनः प्रयुक्त न करें ।

–: विसर्प का चिकित्सा सूत्र :–

➢ **एकतस्तानि सर्वाणि रक्तमोक्षणमेकतः। (च. चि. 21/141)** – विसर्प में रक्तमोक्षण सर्वोत्तम उपचार है।

1. **शोणितस्यावसेकं च विरेकं च विशेषतः।** – पित्तज विसर्प में विरेचन, रक्तमोक्षण।
2. **तिक्त, महातिक्त घृत, त्रायामाणा घृत का सेवन** – वातज एवं अल्पदोष युक्त पित्तज विसर्प में।
4. **रक्तमोक्षण :–** शाखागत विसर्प में।
5. ग्रन्थि विसर्प – **रक्तमोक्षण**, उपनाह, अग्निकर्म, पाटन एवं प्रदेह का प्रयोग करें।
6. **कम्पिल्लकादि तैल – विसर्पजन्य व्रणों में।**
7. कफज गलगण्ड में ग्रन्थि सम चिकित्सा करें।

विसर्प में अपथ्य :– विदाहीन्यन्नपानानि विरूद्धं स्वपनं दिवा। क्रोधव्यायामसूर्याग्निप्रवातांश्च विवर्जयेत्।।

22. तृष्णा चिकित्सा

तृष्णा के भेद :– 1. वातज 2. पित्तज 3. आमजा 4. रसक्षयजा 5. उपसर्गजा।
1. वातज 2. पित्तज 3. कफज 4. क्षयज 5. क्षतज 6. आमज 7. अन्नज। – सुश्रुत।
(चरक ने कफज तथा क्षतज तृष्णा का वर्णन नहीं किया है।)
(वाग्भट्टानुसार तृष्णा के भेद – 6 वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, क्षयज, उपसर्गज।)
तृष्णा में 3 स्रोत्रस – अन्नवह, उदकवह, मेदोवह स्रोत्रस की दुष्टि होती हैं।

तृष्णा के पूर्वरूप :– प्राग्रूप मुखशोषः स्वलक्षणं सर्वदाऽम्बुकामित्वम्। तृष्णानां सर्वासां लिंगानां लाघवमपायः।।
लक्षण :– सर्वदाऽम्बुकामित्वम् – निरन्तर जल पीने की इच्छा का बना रहना।
तृष्णा का उपद्रव :– चित्तनाश, बाधिर्य। – **तृष्णा विसर्प रोग का उपद्रव है।**
तृष्णा के लक्षण :–
1. वातज – निद्रानाश, **शिरोभ्रम,** शुष्कविरसमुखता च।
2. पित्तज – तिक्तास्यत्वं, **शिरोदाह।**
3. आमजा – आध्मान, अरूचि, कफप्रसेक, आमज तृष्णा आम + पित्त से उत्पन्न हाने के कारण **"आग्नेय"** होती है।
4. रसक्षयज – दीनस्वर, संशुष्कहृदयगलतालु।
5. उपसर्गजा – **योपसर्गात्तृष्णा सा शोषिणी कष्टा।**

–: तृष्णा की चिकित्सा :–

1. **तृष्णा में वात एंव** पित्त की प्रधानता रहती है। अतः **वातपित्तशामक** चिकित्सा की जाती है।
2. मद्यता **तृष्णा में अर्द्धजल** मिश्रित **मद्य का प्रयोग करें।**
3. **ऐन्द्र जल का प्रयोग।**
4. **तृणपंचमूल साधित जल का प्रयोग।**
5. **स्पर्श चिकित्सा :–** तृष्णा में स्पर्श चिकित्सा की जाती है।
6. **आमज तृष्णा – व्योषवचामल्लातकतिक्तकषायास्तथाऽऽमतृष्णाघ्नाः।**
7. **गुडाम्बु तथा धान्याम्बु का प्रयोग।**
❖ **उष्णजल पान** – हिक्का, श्वास, नवज्वर, पीनस, घृतपीत, पार्श्वशूल, गलग्रह, वातकफज रोगों में।
❖ **जल का निषेध** – मंदाग्नि, उदर, अतिसार, गुल्म, पाण्डु, पीनस, प्रमेह, प्लीहा + अर्श, ग्रहणी, शोष, शोथ।

23. विष चिकित्सा

विषोत्पत्ति – चरक, वाग्भट्ट – समुद्र मंथन द्वारा। **विष की भेद :–** 1. स्थावर 2. जांगम।
विष की योनि (उत्पत्ति) = 'जल'। विष के 8 वेग, 10 गुण और 24 उपक्रम है।
वर्षाऋतु में विष के वेग में वृद्धि, शरद ऋतु में विष मन्दवीर्य हो जाता है।

गरविष – गरसंयोगजं चान्यद् गरसंज्ञं गदप्रदम। कालान्तरविपाकित्वान्न तदाशु हरत्यसून।।
सविष या निर्विष द्रव्यों के संयोग से बने हुए चूर्णो को गरविष कहते है। यह शीघ्रमारक होता है एवं उसका पाचन बिलम्व से होता हैं।
चिकित्सा :– 1. श्रेष्ठ औषध – पुत्रजीवक। 2. ताम्ररज चूर्ण + 1 शाण स्वर्णयोग से वमन कराते है।

विष	गति	लक्षण
1. स्थावर	उर्ध्वगति	ज्वर, हिक्का, दन्तहर्ष, गलग्रहम्, फेनवम्य, अरूचि, श्वास, मूर्च्छा।
2. जांगम	अधोगति	निद्रा, तन्द्रा, क्लम, दाह, सपाक, लोमहर्ष, शोफ, अतिसार।

— वेगानुसार स्थावर विष लक्षण —

वेग	**चरक** चि. 23/18–20 – **8 वेग**	**चिकित्सा**
1	रस प्रदोष – तृण्मोह, **दन्तहर्ष**, प्रसेक, वमथु, क्लम	वमन।
2	रक्त प्रदोष – **वैवर्ण्य**, वेपथु, भ्रम, **मूर्च्छा**, जृम्भा, अंगचिमचिम, **तमक श्वास**।	विरेचन।
3	मांस दुष्टि – मण्डल, **कोठ**, **कण्डू**, श्वयथु।	क्षारागद।
4	**सर्वदोष प्रकोप** – छर्दि, अंगशूल, दाह, मूर्च्छा।	कपित्थरस + मधु + घृत युक्त **गोमयरस**।
5	**तमःप्रवेश**, विविध नीलवर्ण दर्शन।	केवांच + शिरीष का **आश्च्योतन, अंजन, नस्य**।
6	**हिक्का**	**संज्ञास्थापन** + गोपित्तयुक्त रजनी, मंजिष्ठा, मरिच, पिप्पली चूर्ण।
7	स्कन्ध भग्न।	**प्रतिविष चिकित्सा**। स्थावर में जांगम, जांगम में स्थावर विष प्रयोग।
8	मृत्यु।	पलाशबीज चूर्ण, मोरपित्त।

विषवेग	पशुयो में लक्षण	विषवेग	पशुयो में लक्षण
1.	सीदत्याधे, भ्रमति च	1	ध्यायति (चिन्तित होना)
2	वेपते (कम्पन्न होना)	2	प्रभ्राम्यति (चक्कर काटना)
3.	शून्य रहना, मन्दाहार	3.	स्रस्तांग, मृत्यु
4	श्वास वृद्धि से मृत्यु		

चरक – लघु रूक्षमाशु विशदं व्यवायि तीक्ष्णं विकाशि सूक्ष्मं च। उष्णं अनिर्देश्यरसं दशगुणमुक्तं विषं तज्ज्ञैः।

क्र.	विष गुण	कार्य (सुश्रुत)	कार्य (चरक)
1.	रूक्ष	वात प्रकोप।	वात प्रकोप।
2.	उष्ण	**रक्त**, पित्त प्रकोप।	पित्त प्रकोप।
3.	तीक्ष्ण	बुद्धिमोह, मर्मबंधन।	मर्मघ्नं।
4.	सूक्ष्म	शरीरावय में शीघ्रप्रवेश।	**रक्त** प्रकोप।
5.	आशु	शीघ्र प्रभावी, **सद्यःप्राणहर**।	**अन्नरसानुवर्तते**।
6.	व्यवायि	सम्पूर्ण शरीर में फैलना।	" "
7.	विकाशी	दोष, धातु, मल नाशक।	**प्राणघ्न** ।
8.	विशद	न चिपकना/रूकना।	" "
9.	लघु	**दुश्चिकित्स्य** ।	" "
10.	अविपाकी	कठिनाई से निकलता है।	**कफ प्रकोप**।

दोषानुसार विष लक्षणों का वर्णन चरक ने किया है।

दूषीविष :– **दूषीविषं तु शोणितदुष्टयारुः किटिभकोठलिंग च।** चिकित्सा – शिरावेधन और पंचकर्म ।

विष चिकित्सा – "24 उपक्रम" बताए गए है।

1. मन्त्रोपचार 2. अरिष्टाबंधन 3. उत्कर्तन 4. निष्पीडन 5. चूषण 6. दाह।
7. परिषेक 8. अवगाह 9. रक्तमोक्षण 10. वमन 11. विरेचन 12. उपधान।
13. हृदयावरण 14. अंजन 15. नस्य 16. धूम 17. अवलेह 18. औषध प्रयोग।
19. प्रशमन 20. प्रतिसारण 21. प्रतिविष 22. संज्ञास्थापन 23. लेप 24. मृतसंजीवन।

दोषस्थानानुसार विष का उपचार :–

वात स्थान में – स्वेद, दही, नतकुष्ठकल्कपान।

पित्त स्थान में – घृत, मधु, दूध और जल का घोल बनाकर पान, अवगाह और सेक का प्रयोग।

कफ स्थान में – पहले स्वेदन करे सिरावेधन करके तत्पश्चात् क्षारागद का प्रयोग करें।

1. **मृतसंजीवन अगद** – "ब्रह्मा द्वारा निर्मित"।
   मृततुल्य व्यक्ति को जीवित करने वाला, सर्वविषनाशक एवं ज्वरनाशक।
2. **गंधहस्तीहनामक अगद** – "शिरःप्रदेश व्याप्त विष का नाश"।
   इसमे 7 दिन तक "गाय और घोडे" के पित्त से बारी–बारी भावना देते है।
3. **महागन्धहस्ती अगद** – "षष्टयंगअगद" 60 औषध द्रव्यः + गोपित्त भावना।
   भगवान शंकर ने कुबेर (यक्षाधिपति) के लिए इसका उपदेश किया है।
4. **धूमागद** – सर्वविष एवं श्वथयुनाशक।
5. **क्षारागद** – "तरूणपलाशक्षारं का प्रयोग।
6. **विषजन्य श्वासावरोध में** – काकपद एवं प्रधमन नस्य।

विषदाता – अत्यर्थशंकितः स्याद् बहुवाग्भवाऽल्पवाग्विगतलक्ष्मीः। प्राप्तः प्रकृतिविकारं विषप्रदाता नरो ज्ञेयः।।

विष मिश्रित अन्न की परीक्षा :–

1. अग्निशिखा का रंग मोर की ग्रीवा की भॉति हरापन लिए हुए नीले वर्ण का हो जाता है। (शिखिबर्हविचित्रार्चि)

2. अग्नि तेज असह्य, ज्वाला विभक्त, कुणप गंध युक्त हो जाती है, धुएँ में तीक्ष्णता रहती है।

विष मिश्रित अन्न की जीव परीक्षा :–

मांक्षिका – शीघ्र मर जाते है। काक – क्षाम स्वर। चकोर – विरक्तश्वेत चकोराक्षि (नेत्रों की लालिमा नष्ट)।

(1) मुखगत विष के 9 लक्षण :– ओष्ठ चिमिचिमा, जिह्वा में सूजन, जड़ता, विवर्णता, दंतहर्ष, हनुस्तंम्भ, आस्यदाह, लालास्राव, गलविकार।

(2) आमाशयगत विष के 6 लक्षण :– विवर्णता, स्वेद, सदन, उत्क्लेद, दृष्टिहृदयोपरोध, बिन्दु सम सैकडो फुन्सियां।

(3) पक्वाशयगत विष के 5 लक्षण :– मूर्च्छा, मद, मोह, दाह, बलनाश।

(4) उदरगत विष के 3 लक्षण – तन्द्रा, कार्श्य, और पाण्डुत्व।

–: सर्पो का वर्गीकरण :–

- **दर्वीकर** – चक्र, हल, छत्र, स्वस्तिक, अंकुश चिह्न् युक्त **फण वाले** ।
- **मण्डली** – नाना प्रकार के **मण्डलों से चित्रित**, अग्नि–सूर्य क्रान्ति वाले।
- **राजिमान** – स्निग्ध, नानावर्ण की तिर्यक, उर्ध्वगामी **रेखाओ से युक्त** ।

सर्प	दोषप्रकोप	अवस्था	विचरण काल	विष–गुण
1. दर्वीकर	वात	तरूण	दिन में	रूक्ष – कटु
2. मण्डली	पित्त	वृद्ध	रात्रि के 1, 2, 3, प्रहर में	उष्ण – अम्ल
3. राजिमान	कफ	मध्य	रात्रि के पिछले प्रहर में	शीत – मधुर

(1) दर्वीकर दंश लक्षण – दर्वीकरकृतो दंशः सूक्ष्मदंष्ट्रापदोऽसितः। निरूद्धरक्तः कूर्माभो वातव्याधिकरो मतः।।

1. दंश स्थान – सूक्ष्म, और काला होता है पड जाते है उससे रक्त नहीं निकलता है।

2. कूर्मपृष्ठसम शोथ = चरक।

(2) मण्डली दंश लक्षण – पृथ्वर्पितः सशोथश्च दंशो मण्डलिभिः कृतः। पीताभः पीतरक्तश्च सर्वपित्तहवकारनुत्।।

दंश स्थान मोटा, स्थूल और शोथ युक्त होता है। उसका वर्ण पीत, पीतरक्त होता है।

(3) राजिमान दंश लक्षण– दंश स्थान पिच्छिल होता है स्थिर, स्निग्ध, पाण्डु, शोफ, सान्द्रसृक्स्राव, कफजन्य वेदनाएँ

—: सर्प पहचान :—

पुरूषसर्प – वृत्तभोगो महाकायः श्वसन उर्ध्वेक्षणः पुमान् और स्थूलमूर्धा।
स्त्रीसर्प – इसके विपरीत **नंपुसक सर्प** = क्लीवस्त्रसति।

स्त्रीदंष्ट – अधोदृष्टि स्वरहीन प्रकम्यते। नरदृष्ट में विपरीत लक्षण।
गर्भिणीदंष्ट – पाण्डुवक्त्रता, शूनौष्ठ, असित अक्षणः (काली ऑखें)।
प्रसूतादंष्ट – जृम्भा, क्रोध, उपजिह्वारोग, सरक्तमूत्र प्रवृत्ति। (उदरशूल –सु.)
गोधेरक सर्प :— गोह में दर्वीकर सांपो से उत्पन्न सांप गोधर हैं इनका विष दर्वीकर के समान होते है।
ये चतुष्पाद वाले होते हैं । (कृष्णसर्पेण तुल्य – चरक)।

कष्टप्रद् दंश :— गूढसम्पादितं, वृत्तं, पीडितं लम्बितार्पितम्। सर्पितं च भृशाबाधं, दंशा येऽन्ये न ते भृशाः।।

—: सर्प के दॉत :—

वाम भाग– ऊपर	1.पीत वर्ण – 2 बूंद विष	3.श्याव वर्ण – 4 बूंद विष	दक्षिण भाग– ऊपर
– नीचे	2.असित वर्ण – 1 बूंद विष	4.लाल वर्ण – 3 बूंद विष	– नीचे

कीटों की उत्पत्ति– सर्प की विष्ठा, मूत्र, शुक्र, अण्ड और शव के कोथ (सड़ने) से।
कीट भेद – 2 – 1. दूषीविष कीट 2. प्राणहर कीट ।
1. **दूषी विष कीट** – 1. दंश स्थान श्वेत, काला या श्याम वर्ण का हो जाता है। 2. विसर्प हो जाता है। 3. तृष्णा, अरूचि होती है।
2. **प्राणहर कीट लक्षण** – शोफ उग्रगन्धयुक्त रक्त के साथ होता हुआ निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होता है।

मण्डूक दंश :— एकदंष्ट्रार्दितः शूनः सरूक् स्यात् पीतकः।
जलौकस :— 'कण्डू शोथं ज्वरं मूर्छां' सविषास्तु जलौकसः। (जलौका – वातपित्तहर चिकित्सा)
गृधगोहिका :— "दाहतोदस्वेदशोथकारी" तु गृहगोधिका।
सविष मत्स्य :— मत्स्यास्तु सविषाः कुर्युः "दाहशोफरूजस्तथा"।
शतपदी दंश :— दंशे "स्वेद रूजंदाह" कुर्यात् शतपदीविषम्।।

1.कीटविष – वातपित्तोत्तराः 2. कणभ,मूषक – श्लैष्मिका **3.विच्छू, उष्ट्रधूम – वातप्रधानः** 4.लूता विष – त्रिदोषज

पागल कुत्ते के लक्षण :— श्वा त्रिदोषप्रकोपात्तु तथा धातुविपर्ययात्। –
1. शिरोऽभितापी 2. लालास्राव 3. मुख को नीचे लटकाए रखना।

1. कण्ठगत विष में – आमकपित्थ को पीसकर मधुघृत से चाटे।
2. रसगत विष में – गोधारक्त, मांस भाुश्ककर कपित्थरस के साथ।
3. मांसधातुगत विष में – सक्षौद्र **'खदिरारिष्ट'**/कुटजमूल + जल।
4. मूषक विष में – समभाग दालचीनी + सोंठ पानी में पीसकर पिये।
5. गरविष में – सूक्ष्म ताम्र चूर्ण को मधु में देकर वमन कराये।

1. परम अगद = वचादि योग 2. पंचशिरीष अगद 3. अमृत घृत।
पंचशिरीष अगद :— शिरीषफलमूलत्वक्पुष्पैपत्रैः समैघृतैः। श्रेष्ठः पंचशिरीषोऽयं विषाणां प्रवरो वधे। (च. चि. 23/218)

शंकाविष :— भीरू व्यक्ति में सॉप के छूने मात्र से कुपित वायु किसी किसी व्यक्ति में शोथ उत्पन्न कर देती है उसको सर्पांगभिहत कहा जाता है । (सुश्रुत और वाग्भट्ट) (चरक ने इसे शंकाविष कहा है)

मदात्यय चिकित्सा

मद्य की चरक संहिता में प्रशंसा की गई है (च. चि. 24/3–5) तथा मद्य को अमृत तुल्य कही गई है। (च.चि. 24/7)

बहुद्रव्यं बहुगुणं बहुकर्म मदात्मकम्।

मद्यं हृदयामिव य स्वगुणौजसो गुणान्। दशभिर्दश संक्षोभ्य चेतो नयति विक्रियाम्। (च.चि. 24/29) Udaipur p.g. 07

मद्य के 10 गुण :– लघूष्णतीक्ष्णसूक्ष्माम्लव्यवाय्याशुगमेव। रूक्षं विकासि विशदं मद्यं दशगुणं स्मृतम्।। (च.चि. 24/30)

ओज के 10 गुण :–

गुरू शीत मृदु श्लक्षण बहल मधुरं स्थिरम्। प्रसन्न पिच्छिलं स्निग्धं ओजो दश गुण स्मृत्।। (च.चि. 24/31)

मद्य के 10 गुण, ओज के 10 गुण के विपरीत होने के कारण ओज गुण को नाश करता है।

मद्य की तीन अवस्थायें :– प्रथम मद, मध्य मद, उत्तम मद।

ओजस्यविहते पूर्वो हृदि च प्रतिबोधिते। मध्यमो विहतेऽल्पे च विहते तूत्तमो मदः।। (च.चि. 24/37)

1. प्रथम मद – प्रहर्षण, प्रातिकर, पानान्नगुणवर्धक, वाद्यगीतप्रहासानां कथानां च प्रवर्तकः, **सुखनिद्राप्रबोध।**
2. मध्यम मद – मुहुःस्मृतिः मुहुर्मोहो व्यक्ताऽव्यक्ता च वाङ्मुहुः प्रलापम्।
3. उत्तम मद – **निष्क्रियः**

अविधि मद्यपान परिणाम :– मद्यं मोहो भयं शोकः क्रोधो मृत्युरेव संश्रितः। सोन्मादमदमूर्च्छायाः सापस्मारापतानकाः।।

स्मृति विभ्रशः – यत्रैकः स्मृतिविभ्रंशस्तत्र सर्वमसाधुवत्। (च.चि. 24/57)

विधि पूर्वक मद्य सेवन के लाभ :–

किन्तु मद्यं स्वभावेन यथैवान्नं तथा स्मृतम्। अयुक्तियुक्तं रोगाय युक्तियुक्तं यथाऽमृतम्।।

प्राणाः प्राणभृतामन्नं तदयुक्त्या निहन्त्यसून्। विषं प्राणहरं तच्च युक्तियुक्तं रसायनम्।।

अष्ट त्रिक :– अन्न, पान, वय, व्याधि, बल, काल, त्रिदोष, सत्वगुण।

✓ चरक संहिता में – **सात्विक, राजस और तामस मद्यपान** विधि का वर्णन है। (च. चि. 24/74–78)

✓ **बहुप्रलापस्य वातप्रायं मदात्ययम्।** (च. चि. 24/91)

✓ **महादोषं महागदम्।** (च. चि. 24/54)

✓ **सर्व मदात्ययं विद्यात् त्रिदोषम्।** (च. चि. 24/106) मदात्यय के भेद 4 – वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज।

✓ **अनुतर्ष :–** प्यास लगने के बाद मद्यपान।

✓ **मात्राकालप्रयुक्तेन बलं वर्णश्च वर्धते।।**

✓ **मद्य के रस – श्रेष्ठमम्लेषु मद्यं** च यैर्गुणैस्तान् परं शृणु। **सर्वेषां मद्यमम्लानामुपर्युपरि तिष्ठति।** (च. चि. 24/114)

अनुरस – चत्वारोऽनुरसाः :– मधुरश्च कषायश्च तिक्तः कटुक एव च। – केवल लवण रस नहीं होता है।

–: मदात्यय का चिकित्सा सूत्र :–

- **कफस्थानानुपूर्व्या वा क्रिया कार्या मदात्यये। पित्तमारूत पर्यन्तः प्रायेण हि मदात्ययः।**
- **अष्टांग लवण :–** सौवर्चल, अजाजी, वृक्षाम्ल, अम्लवेतस, शर्करा– 1–1 भाग, त्वक्, एला, और मरिच ½ – ½ भाग।
- **तृष्णानाशक पच्चाम्लक :–** कोल, दाडिम, वृक्षाम्ल, चुक्रीका और चुक्रिका का रस।
- **हर्षणी चिकित्सा :–** मदात्यय में हर्षणी क्रिया करते हैं।
- जो व्यक्ति मद्यपान को छोड चुका हो और सहसा अधिक मद्य पीने लगता है,
  उसे **ध्वंसक और विक्षय** नामक रोग हो जाते हैं।
- ध्वंसक और विक्षय की चिकित्सा – वातज मदात्यय की तरह।
- पैत्तिक मदात्यय में कासादि लक्षण की चिकित्सा करनी चाहिए।

25. द्विव्रणीय चिकित्सा

व्रण के भेद – (2) – निज और आगन्तुज।

तौ द्वौ नानात्वभेदेन निरूक्ता विंशतिः व्रणाः। तेषां **परीक्षा त्रिविधा प्रदुष्टा द्वादश स्मृताः।**

स्थानान्यष्टौ तथा गन्धाः परिस्रावाश्चतुर्दश। षोडशोपद्रव दोषाश्चत्वारो विंशतिस्तथा।।

1. कारण भेद से व्रण – 2।	व्रण के नानात्मक भेद – 20।
2. दुष्ट व्रण – 12।	व्रण की परीक्षा – 3।
3. व्रण के स्थान – 8। (चरक–मेद, सुश्रुत– संधि)।	व्रण के गन्ध – 8।
4. व्रण के स्राव – 14।	व्रण के उपद्रव – 16। (सुश्रुत – 2)।
5. दोष भेद से व्रण – 24 (चरक) (सुश्रुत – 6)।	

व्रण की परीक्षा :– 3 – दर्शनप्रश्नसंस्पर्शैः परीक्षा त्रिविधा स्मृता।

अतिपिंजर एंव कुम्भीमुख व्रण दुष्ट व्रण के अंतगर्त आते है।

व्रण के स्थान – 8 – त्वक, मांस, सिरा, स्नायु, अस्थि, मेद, कोष्ठ और मर्म ये आठ व्रणवस्तुएँ है।

व्रण की गन्ध :– 8 – सर्पि, तैल, वसा, पूय, रक्त, श्याव, अम्ल और पूतिक।

व्रण के उपद्रव :– 16 – विसर्पः पक्षघातश्च सिरास्तम्भोऽपतानकः। मोहोन्मादव्रणरूजो ज्वरस्तृष्णा हनुग्रहः।

कासश्छर्दिरतीसारो हिक्का श्वासः सवेपथुः। षोडशोपद्रवा प्रोक्ता व्रणानां व्रणचिन्तकैः।

पक्षाघात, सिरास्तम्भ, अपतानक, मोह, उन्माद, ज्वर, हिक्का, श्वास, कास, अतिसार, छर्दि, विसर्प, तृष्णा, मुर्च्छा, कम्पन, हनुग्रह।

1. **कृच्छ्रसाध्य व्रण :– परिस्रावाच्च गन्धाच्च दोषाच्चोपद्रवैः सह। व्रणाना बहुदोषाणां कृच्छ्रत्वं चोपजायते।**
2. **शुद्धव्रण** – नातिरक्तो नातिपाण्डुः नातिश्यावो न चातिरुक्। न चोत्सन्नो न चोत्संगी व्रणः शुद्धो रोप्यः परं व्रणः।
3. **सुखसाध्य व्रण :– त्वंड्.मांसजः सुखे देशे तरुणस्यानुपद्रवः। धीमतोऽभिनवः काले सुखसाध्यः स्मृतो व्रणः।।**

व्रण के उपक्रम :– 36 – (सुश्रुत– 60) चरक से (1) शोफघ्न– प्रथम उपक्रम (36) लोमरोहण– अंतिम उपक्रम।

पच्यमान व्रण शोथ :– जलबस्तिससंस्पर्श सम्पक्वं पीडितोन्नतम्।

शस्त्रकर्म – पाटनं व्यधनं चैव छेदनं लेखनं तथा। प्रच्छनं सीवनं चैव षड्विधं **शस्त्रकर्म तत्।।**

चरक –6 :– पाटन, व्यधन, छेदन, लेखन, प्रच्छान, सीवन।

1. **पाटन योग्य व्रण :– नाडी व्रण**, पक्वशोथ, क्षतगुदोदर तथा अन्तः शल्य स्थित शोफ में।
2. **व्यधन योग्य व्रण :–** दकोदर, **पक्व गुल्म**, रक्तज गुल्म तथा शोथ रक्तज विसर्प, पिडका में।
3. **लेखन योग्य व्रण :– कुष्ठ तथा किलास** रोग में।
4. **प्रच्छान योग्य व्रण :–** वातरक्त, ग्रन्थिरोग, पिडका, कोठ, रक्तमण्डल तथा कुष्ठ रोग में।
5. **प्रपीडन योग्य व्रण :–** सूक्ष्माननाः कोषवन्तो ये व्रणास्तान् प्रपीडयेत्।
6. **एषण योग्य व्रण :–** सूक्ष्माननाः बहुस्रावाः कोषवन्तश्च ये व्रणाः। न च मर्माश्रितास्तेषामेषणं हितमुच्यते।

ऐषणी के प्रकार – 2 – 1. मृदु 2. कठिन। (सुश्रुत– 3)

चिकित्सा :– कम्पिल्लादि तैल, प्रपौण्डरीकादि तैल, दूर्वा तैल, कम्पिल्लक तैल।

व्रण का आच्छादन :– कदम्ब, अर्जुन, निम्ब, पाढल, पिप्पल और अर्क के पत्रों करना चाहिए।

व्रण बंधन के प्रकार :– चरक – 2 – 1. दक्षिणावर्त 2. वामावर्त (सुश्रुत – 14 वाग्भट्ट – 15)

व्रण में अवसादन :– भोजग्रन्थि, अश्मकासीस, गुग्गुलु एंव गौरया व कपोत विष्ठा से व्रणों का अवसादन करें।

अग्निदाह के साधन :– घृत, तैल, वसा, मज्जा, मोम एंव लोह शलाका।

धूपन योग्य व्रण :– कठिनत्वं व्रणा यान्ति गन्धैः सारैश्च धूपिता।

त्वचा कृष्ण कर योग :– अयोरजः सकाशीसं त्रिफलाकुसुमानि च। करोति लेपः कृष्णत्वं सद्य एव नवत्वचि।

त्वचा सवर्णीकर योग :– कालीयकन ताम्रास्थि हेमकान्तारसोत्तमैः। लेपः सगोमयरसः सवर्णीकरं परं।।

लोम संसनन योग :– चतुष्पदानां त्वग्लोमखुरश्रृंगास्थिभस्मना। तैलाक्ता चूर्णिता भूमिर्भवेल्लोमवती पुनः।।

26. त्रिमर्मीय चिकित्सा

शरीरस्थ 107 मर्मो में विशेष रूप से वस्ति, हृदय एंव शिर इन्ही तीनों को त्रिमर्म कहा गया है।

—: उदावर्त :—

उदावर्त :— उदार्वत से **विण्मारूतमूत्रसंग** हो जाता है।

उदावर्त के लक्षण :— रूग्बस्तिहृत्कुक्ष्युदरेष्वभीक्ष्णं सपृष्ठपार्श्वेष्वतिदारूणा स्यात्।
आध्मानहृल्लासविकर्तिकाश्च तोदोऽविपाकश्च सबस्तिशोथः।

उदावर्त का चिकित्सा सूत्र :—

शीतनाशक ज्वर से अभ्यंग → स्वेदन → वर्ति, निरूह, अनुवासन बस्ति, विरेचन → वातानुलोमन अन्न।

चिकित्सा योग :— **1. श्यामादि वर्ति** **2. पिण्याकादि वर्ति** **3. क्रिमिघ्नादि वर्ति**

4. द्विरूत्तर हिंग्वादि चूर्ण — द्विरूत्तर हिंड्.गु वचाऽग्निकुष्ठं सुवर्चिका चैव विडड्.चूर्णम्।

हींग 1 भाग, वचा 2 भाग, चित्रक 4 भाग, कूठ 8 भाग, सज्जीक्षार 16 भाग, और 32 भाग वायविडंग।

—: आनाह :—

आनाह का लक्षण :— **हृत्स्तम्भमूर्धामयगौरवाभ्यामुद्गारसंगेन सपीनसेन।**

हृदय स्तम्भ, शिरो रोग, गौरवता, उद्गार संग और पीनस — ये आमदोषजन्य आनाह के लक्षण है।

आनाह का चिकित्सा सूत्र :— आनाहमामप्रभवं जयेत्तु प्रच्छर्दनैः लङ्घनपाचनैश्च।

चिकित्सा :— 1. एरण्ड तैल —मेद, रक्त, पित्त, कफ मिश्रित वाले रोग में — **5 पल मात्रा** — स्वभाव से वातनाशक।

—: मूत्रकृच्छ्र :—

निरूक्ति :— मूत्रस्य कृच्छ्रेण महता दुःखेन प्रवर्तते।

निदान :— व्यायाम, तीक्ष्ण औषध, रूक्ष मद्य सेवन, अधिक स्त्री प्रसंग से, द्रुत पृष्ठयान सवारी से, आनूप मत्स्य मांस सेवन से, अध्यशन और अजीर्ण होने से मनुष्यों को 8 प्रकार के मूत्रकृच्छ्र रोग हो सकते है।

भेद :— 8 —1. वातज 2. पित्तज 3. कफज 4. सन्निपातज 5. अश्मरीज 6. शर्कराज 7. शुक्रज 8. रक्तज।

मूत्रकृच्छ्र की चिकित्सा :—

1. **पुनर्नवादि मिश्रक स्नेह — वातज मूत्रकृच्छ्र में।**
2. शतावर्यादि क्वाथ — पित्तज मूत्रकृच्छ्र में ।
3. **व्योषादि चूर्ण तथा प्रवालचूर्ण तण्डुलोदक के साथ — कफज मूत्रकृच्छ्र में ।**
4. **त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र चिकित्सा :— सर्व त्रिदोषप्रभवे तु वायोः स्थानानुपूर्व्या प्रसमीक्ष्य कार्यम्।**
   त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र में सर्वप्रथम वात की तत्पश्चात पित्त की और अंत में कफ की चिकित्सा करनी चाहिए।
5. **शुक्रज मूत्रकृच्छ्र चिकित्सा** :— पुराण मद्य या मधुकासव पिलाना चाहिए।
6. **रक्तज मूत्रकृच्छ्र चिकित्सा** :— श्वदन्ट्रादि घृत का सेवन करना चाहिए।
7. **सभी मूत्रकृच्छ्र चिकित्सा** :— एर्वारूबीजादि योग।

   सितोपला वा समयावशूका कृच्छ्रेषु सर्वेष्वपि भेषजं स्यात्। — मिश्री + यवक्षार को जल से सेवन करना।

मूत्रकृच्छ्र में अपथ्य :— व्यायाम, व्यवाय, वेगसंधारण, वात व आतप सेवन, शुष्क, रूक्ष पिष्टान्न,
खर्जूर, शालूक, बिस, कपित्थ, जम्बू और कषाय रस का सेवन। — BHU 2011

—: अश्मरी :—

सम्प्राप्ति — विशोषयेद् बस्तिगतं सशुक्रं मूत्रं सपित्तं पवनः कफं वा। यदा तदाऽश्मर्युपजायते तु क्रमेण पित्तेष्विव रोचना गोः।

जब वायु मूत्राशय में आये हुए शुक्रसहित मूत्र को या पित्त सहित कफ को सुखा देती है, तब बस्ति में अश्मरी बन जाती है जैसे कि गाय के पित्ताशय में गोरोचन बन जाता है।

स्वरूप :— कदम्बपुष्पाकृतिरश्मतुल्या श्लक्ष्णा त्रिपुट्यप्यथवाऽपि मृद्वी।

अश्मरी कदम्बपुष्पाकृति, श्लक्ष्ण, त्रिपुटी, अथवा मृद्वी (कोमल) आकार की होती है।

लक्षण :– 1. सेवनी, मेहन, बस्ति में शूल।
2. विशीर्ण धार
3. मुहुः शकृन्मुंचति मेहते च।

शर्करा का स्वरूप :– एषाऽश्मरी मारूतभिन्नमूर्तिः स्याच्छर्करा मूत्रपथात् क्षरन्ती।।

अश्मरी की चिकित्सा :–

1. **पाषणभेदादि चूर्ण और पाषणभेदादि घृत**
2. **गोक्षुरादि योग**
3. पुर्ननवादि योग
4. त्रुट्यादि चूर्ण
5. शिग्रुकमूलकल्क यूष
6. निगद मद्य यथेच्छ पीकर तेज चाल वाले रथ की यात्रा करें।

–: हृदय रोग :–

निदान :– व्यायाम तीक्ष्णातिविरेकबस्ति चिन्ताभयत्रास गदातिचाराः।

भेद (5) :– चरक – (V, P, K,S, कृमिज), सुश्रुत – 4।

सामान्य लक्षण :– वैवर्ण्य मूर्च्छा ज्वरकासहिक्काश्वास आस्यवैरस्यतृषाप्रमोहाः।

कृमिज हृदयरोग – तीव्रार्तितोदं कृमिजं सकण्डूम्।

हृदय रोग की चिकित्सा :–

1. वातज हृदय रोग – पुनर्नवादि तैल, पुष्करमूलादि चूर्ण, पुष्करमूलादि घृत, पथ्यादि कल्क, त्र्यूषणादि घृत।
2. पित्तज हृदय रोग – क्षतक्षीण चिकित्सोक्त सर्पिगुड + द्राक्षाद्य घृत, कशेरुकादि घृत।
3. कफज हृदय रोग – कट्फलादि क्वाथ, कृष्णादि चूर्ण, उदुम्बरादि लेह, **शिलाजतु, च्यवनप्राशावलेह,** अगस्त्यहरीतकी, **ब्रह्मरसायन और अभयाआमलकी रसायन** का प्रयोग करना चाहिए।
4. सन्निपातज हृदय रोग – पहले लंघन फिर त्रिदोषशामक अन्न।

4 कृमिज हृदय रोग – शोधन, लंघन, पाचन और कृमिघ्न चिकित्सा।

–: प्रतिश्याय :–

निदान :– **सन्धारणाजीर्ण रजोऽतिभाष्यक्रोध ऋतुवैषम्य शिरोऽभितापैः। प्रजागरातिस्वप्नाम्बु शीतैरवश्यया मैथुनबाष्पधूमैः।**

वातज प्रतिश्याय का लक्षण	:– क्षवथु, जलाभ स्राव।
पित्तज प्रतिश्याय का लक्षण	:– नासाग्र पाक, वक्त्र शोष, पीत स्राव
कफज प्रतिश्याय का लक्षण	:– कास, अरूचि, घनस्राव।
दुष्ट प्रतिश्याय का लक्षण	:– नासारोध, अभिघात, स्राव, शोष, पाक, **यस्य न वेत्ति गन्धम्।**

सभी प्रतिश्याय चिकित्सा न करने से और अहित आहार का सेवन करने से 'दुष्ट पीनस' बन जाते है।

उपद्रव :– क्षवथु, नासाशोष, प्रतिनाह, परिस्राव, पूति, अपीनस, नासापाक, नासार्बुद, पूयरक्त, शिर, श्रवण, अक्षिरोग, खलित्य **(यक्ष्मा, कृमिनाशक चिकित्सा = वाग्भट्ट)** ।

1. क्षवथु :– प्रकुपित वायु, शिर के चारो ओर व्याप्त होकर नासागत का में स्थित **मर्मस्थानों का स्पर्श कर** को सुखाकर **क्षवथु** रोग को उत्पन्न करती है। **('भ्रंशथु'** – चरक, वाग्भट्ट ने इसका वर्णन नहीं किया है)

2. नासा शोष :– प्रकुपित वायु, कफ को सुखाकर नासिका में स्थित **"श्रृंगाटक मर्म' तथा 'घ्राणाधिष्ठान** को सुखाकर नासा शोष को उत्पन्न करती है।

3. परिस्रव/नासास्राव – मस्तुलुंग के भीतरी भाग से घन, पीत एवं पक्व कफ का स्राव।

4. नासा प्रतिनाह :– उदानवायु, कफ से मिलकर अपने मार्ग में विगुण होकर श्वासमार्ग में अवरोध उत्पन्न करता है।
(नासानाह – वाग्भट्ट, परिनाह – यो.र., भावप्रकाश)

4. परिस्राव/नासास्राव – मस्तुलुंग से घन, पीत एंव पक्व कफ का स्राव।

5. पूतिनस्य – आनह्यते यस्य **विशुष्यते च प्रक्लिद्यते धूप्यति चापि नासा।**

6. अपीनस – 1. रस, गंध, ज्ञान ठीक से न होना। **(न वेत्ति गंधरसा च)। (न वेत्ति गंधम – दुष्टप्रतिश्याय)।**
2. वातकफज रोग – "<u>प्रतिश्याय वत</u>" लक्षण।

7. नासिकापाक – रक्त और पित्त के प्रकोप से दाह, राग, श्वयथु एवं पाक।

8. नासा शोथ :– प्रकुपित वातादि दोष नासिका में स्थित रक्तादि धातुओं को दूषित कर नासा शोथ को उत्पन्न कर देते है।

9. नासा अर्बुद – मांस, रक्त विकार युक्त वायु श्वासमार्ग में श्वासप्रवृत्ति में अवरोध कर **नासा अर्बुद** उत्पन्न करती है।

10. पूयरक्त – जब नाक से, कान से या मुख से पूयमिश्रित रक्त स्राव होता है।

11. नासा अंरूषिका :– जब पित्त के साथ प्रकुपित वायु त्वचा आदि को दूषित कर नासा में छोटी छोटी फुन्सियाँ को उत्पन्न करती है।

12. दीप्त – **नासा प्रदीप्तेव नरस्य यस्य दीप्तं तु।** – नासिका सदा दाहयुक्त।

–: शिरो रोग :–

शिरोरोग के भेदः– (5) – वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, कृमिज।

–: मुख रोग :–

मुखरोग के भेद : – (4) – वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज।
संस्थान, दूष्य, आकृति व नाम भेद से :– 64 – **संस्थानदूष्याकृति नामभेदच्चै ते चतुःषष्टिविधा भवन्ति।**

–: अरोचक :–

अरोचक के भेदः– (5) – – वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, आगन्तुज।

–: कर्ण रोग :–

कर्णरोग के भेद : – (4) – वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज।

–: नेत्र रोग :–

नेत्ररोग के भेद : – (4) – वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज।
संस्थान, दूष्य, आकृति व नाम भेद से :– 96 ।

खलित :– तेजोऽनिलाद्यैः सह केशभूमिं दध्वाऽऽशु कुर्यात् खलतिं नरस्य।

पलित :– किन्चित्तु दग्धवा पलितानि कुर्याद्धरिप्रभत्वं च शिरोरूहाणाम्।।

—: प्रतिश्याय की चिकित्सा :—

1. अणु तैल – अजा दुग्ध की भावना। – वातज प्रतिश्याय में
2. कफज प्रतिश्याय में – **लशुनं मुद्गचूर्णेन व्योषक्षारः घृतैर्युतम्।**
3. रास्नादि तैल, बलादि तैल।
4. **मायूर घृत :—** शिरोरोग, अर्दित, मुखरोग, कर्णरोग, नासारोग, तालुरोग, गलरोग और ऊर्ध्वजत्रुगतरोग नाशक।

—: शिरोरोग की चिकित्सा :—

5. **महामायूर घृत :—** 1. सभी प्रकार के शिरोरोगों में
 2. बन्ध्यासुतप्रदम्– ऋतुस्नाता तथा नारी पीत्वा पुत्रं प्रसूयते।
 3. महामायूरं इत्येतद् घृतं **आत्रेयपूजितम्।**
6. **कफानिलोत्थे दाहस्तु भोशयो रक्तमोक्षणम्।** – कफज एंव वातज शिरोरोग में दाह कर्म और शेष में रक्तमोक्षण करें
7. कृमिज शिरोरोग में तीक्ष्ण शिरोविरेचन कराना चाहिए।

—: मुखरोग की चिकित्सा :—

8. **तेजोह्वादि चूर्ण** – दन्तानां घर्षणं रक्तस्रावकण्डूरुजापहम्।
9. **क्षार गुटिका :—** पंचकोल + त्रिजात + पलाश, मुष्कक्षार, यवक्षार – **कण्ठरोगेषु सर्वेषु धार्याः स्युरमृतोपमा।**
10. **कालक चूर्ण :— कालक नाम तत् चूर्ण दन्तास्यगलरोगनुत्।**
11. **पीतक चूर्ण :— मुखरोगेषु च श्रेष्ठं पीतक नाम कीर्तितम्।**

—: गलरोग की चिकित्सा :—

12. मुद्याकादि चूर्ण, पाठादि चूर्ण और कटुकादि क्वाथ।
13. **खदिरादि गुटिका :— दन्तास्यगलरोगेषु सर्वेष्वेतत् परायणम्।**

—: अरोचक की चिकित्सा :—

14. **अरूचौ कवलग्रहा धूम्राः समुखधावनाः। मनोज्ञमन्नपानं च हर्षणाश्वासनानि च।।**

VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER

—: कर्ण रोग की चिकित्सा :—

1. **कर्णशूले तु वातघ्नी हिता पीनसवत् क्रिया।**
2. **हिंग्वादि तैल,** गन्ध तैल – कर्णशूल नाशक।
3. **क्षार तैल :— बाधिर्य, कर्णनाद, कर्णशूल, कृमिकर्ण और पूयस्राव नाशक है।**

—: नेत्र रोग की चिकित्सा :—

1. जब नेत्ररोग में 3 दिन बाद दोष पाक हो जाए तब अंजन करना चाहिए।
2. **शंखादि वर्ति, सुखवति वर्ति, दृष्टिप्रदा वर्ति :— नेत्ररोगनाशक।**
3. **कृष्णसर्पवसादि रसक्रिया :—** सर्वाक्षिरोगेषु, काच, अर्बुद और नेत्रमल नाशक।

—: खलित, पलित रोग की चिकित्सा :—

1. **संशोधन, नस्य, मूर्धतैल, शिरोवक्त्रप्रलेप।**
2. विदारीगन्धादि तैल, सहचरादि तैल, दुग्धिका योग, भृंगराज तैल – खलित, पलित रोग नाशक।
3. **महानील तैल :— महानीलमिति ख्यातं पलितघ्नं उत्तमम्।**
4. **प्रपौण्डकरीकादि तैल :— पलितघ्नो विशेषण कृष्णात्रेयेण** भाषितः।

27. उरूस्तम्भ चिकित्सा

एक ऊरूस्तम्भ इति **आमत्रिदोषसमुत्थः। (च. सू. 19/8)** – ऊरूस्तम्भ आम और त्रिदोष के संबंध से उत्पन्न होता है। चरक कफप्रधान व सुश्रुत वात प्रधान मानते है। सुश्रुत ने इसे आढयवात कहा है।

निरूक्ति :– ऊरू श्लेष्मा समेदस्को वातपित्तेऽभिभूय तु। स्तम्भयेत्थैर्यशैत्याभ्याम् ऊरूस्तम्भस्ततस्तु सः।। (च. चि. 27/14)
कफदोष मेद के साथ मिलकर वात एंव पित्त को दबाकर ऊरू प्रदेश में जाकर ऊरू में जकडाहट और शीतलता उत्पन्न कर देता है तो ऊरू में स्तंम्भन (निश्चलता –गतिहीनता) होने कारण इस स्थिति ऊरूस्तंभ को कहते है।

निदान :– पूरयन् सक्थिजघोरू दोषो मेदोबलोत्कटः। अविधेयपरिस्पन्दं जनयत्यल्पविक्रमम्।। (च. चि. 27/11)

कोष्ठ में संचित हुआ आम एकत्र होकर मेद के साथ मिलकर वातादि दोषों को रोककर स्वयं भारी हाने के कारण अधोगामी सिरा धमनी स्रोतों से ऊरू प्रदेश में चला जाता है। और मेद के बल से प्रबल आमसंरूद्ध वातादि दोष सक्थि, जंघा और ऊरू प्रदेश का पूरण करके इन अंगों को हिलाने–डुलाने में असमर्थ बना देते हैं। जिससे रोगी का बल क्षीण हो जाता है।

कफ की प्रबलता :– महासरसि गम्भीरे पूर्णेऽम्बु स्तिमित तथा। तिष्ठति स्थिरमक्षोभ्यं तद्वदूरूगतः कफः। (च. चि. 27/12)

पूर्वरूप :– प्राग्रूपं ध्याननिद्रातिस्तैमित्यारोचकज्वराः। लोमहर्षश्च छर्दिश्च जंघोर्वोः सदनं तथा।। (च. चि. 27/16)

ध्यान मग्न रहना, निद्रा, अरोचक, ज्वर, लोमहर्ष, छर्दि, जंघा में भारीपन।

ऊरूस्तंभ के लक्षण :–

जघोरूग्लानिरत्यर्थं शश्वच्चादाहवेदना। **पदं च व्यथते न्यस्तं शीतस्पर्शं न वेत्ति च।**
संस्थाने पीडने गत्यां चालने चाप्यनीश्वरः। **अन्यनेयौ हि सम्भग्नावूरू पादौ च मन्यते।। (च. चि. 27/18)**

1. जमीन पर पैर रखने पर दर्द बढ जाना तथा शीतल वस्तुए ठण्डी नहीं प्रतीत होती है।
2. रोगी अपने पैर को दूसरे के द्वारा उठाने योग्य एवं टूटा हुआ अनुभव करता है।

ऊरूस्तंभ में पंचकर्म की अनुपयोगिता :– वमन, विरेचन, निरूह, अनुवासन वस्ति एंव नस्य – ये पंचकर्म सभी रोगों की चिकित्सा में प्रयुक्त होते है। केवल एक रोग अपवाद है – ऊरूस्तम्भ।

तस्य न स्नेहनं कार्यं न बस्तिर्न विरेचनम्। न चैव वमनं यस्मात्तन्निबोधत कारणम्।।
वृद्धये श्लेष्मणो नित्यं स्नेहनं बस्तिकर्म च। तत्स्थस्योद्धरणे चैव न समर्थं विरेचनम्।। (च. चि. 27/21)

ऊरूस्तंभ में स्नेहन का परिणाम :– पादयोः सदनं सुप्तिः कृच्छ्रादुद्धरणं तथा। – (च. चि. 27/16)

पैरों में थकावट और सूनापन हो जाता है और रोगी बडी कठिनाई से पैरों को उठा पाता है।

उरूस्तम्भ का चिकित्सा सूत्र :–

1. **तस्य संशमनं नित्यं क्षपणं शोषणं तथा। युक्त्यपेक्षी भिषक् कुर्यादधिकत्वात्कफामयोः।। (च. चि. 27/25)**
   ऊरूस्तंभ में कफ व आमदोष नाशक – संशमन, क्षपण और शोषण चिकित्सा की जाती है।
2. **श्लेष्मणः क्षपणं यत्स्यान्न च मारूतकोपनम्। तत्सर्वं सर्वदा कार्यमूरूस्तम्भस्य भेषजम्। (च. चि. 27/60)**
   शरीरं बलग्निं च कार्येषां रक्षता क्रिया।। (च. चि. 27/61)
3. **क्षारारिष्टप्रयोगाश्च हरीतक्यास्तथैव च। मधूदकस्य पिप्पल्या ऊरूस्तम्भविनाशनाः।। (च. चि. 27/28)**
   क्षार, अरिष्टों का प्रयोग, हरीतकी, मधूदक(मधु का शर्बत) और पिप्पली – ये ऊरूस्तम्भ नाशक होते है।

उरूस्तम्भ में चिकित्सा योग :–

1. अष्टकट्वर तैल – **पलाभ्यां पिप्पलीमूलनागरादष्टकट्वरः। तैलस्थः समो दध्ना गृध्रस्यूरूग्रहापहः।**
2. सैन्धवादि तैल, 3. कुष्ठादि तैल, 4. वाल्मीकमृत्तिकादि उत्सादन। 5. वत्सकादि लेप।
6. गुन्जाभद्र रस (यो. र.) 7. स्नेह रहित षडधरण चूर्ण (सुश्रुत) 8. पिप्पल्यादि चूर्ण –उष्णजल से
9. गुग्गुलु या शिलाजतु – मूत्र से पान **(सुश्रुत)**

उरूस्तम्भ में आहार विहार :–

1. आहार – रूक्षाहार।
2.विहार – 1. कफनाशक व्यायाम। 2. प्रतारयेत् प्रतिस्रोतो नदीं शीतजलां शिवाम्। (उभय विपरीतार्थ चिकित्सा)

28. वातव्याधि चिकित्सा

वात के भेद, स्थान व कर्म

वायु	स्थान	कर्म
1 प्राण	मूर्धा, उर, कण्ठ, जिह्वा मुख, नासा में विचरण	ष्ठीवन, क्षवथु, उदगार, श्वसन एवं आहार पान।
2. उदान	उर, नाभि, कण्ठ में संचरण।	वाक् प्रवृत्तिः, प्रयत्न, ऊर्जा, बल, वर्ण।
3. व्यान	समस्त शरीर– देहं व्याप्नोति सर्व तु व्यानः	गति, प्रसारण, आक्षेप, उन्मेष, निमेष।
4. समान	अन्तराग्नि के समीप (चरक)	स्वेददोषाम्बुवाहीनि स्रोत्रासिं समधिष्ठितः, समानोऽग्निबलप्रदः
5. अपान	वृषण, बस्ति, मेढ्र, नाभि, उरू, वंक्षण गुद।	अपान वायु, मूत्र, पुरीष, शुक्र, आर्तव व गर्भ का निष्कासन

वायु का महत्व :– वायुरार्युबलं वार्युवायुर्धाता शरीरिणाम्। (च. चि. 28/3)

पूर्वरूप :– अव्यक्तं लक्षणं तेषां पूर्वरूपमिति स्मृतम्। (अव्यक्तं लक्षणं तस्य पूर्वरूपमिति स्मृतम् – क्षतक्षीण का पूर्वरूप)

लक्षण :– आत्मरूपं तु यद् व्यक्तमपायो लघुता पुनः।

1. स्नायुगत विकृत वात :– जब प्रकुपित वात स्नायु में स्थित रहता है। **बाह्यायाम, आभ्यन्तरायाम, खल्लीरोग, कुब्जरोग, सर्वांगवात या एकांगवात** – इन रोगो को उत्पन्न करता है।

2. सन्धिगत वात :– **वातपूर्णदृतिस्पर्शः शोथः सन्धिगतेऽनिले। प्रसारणाकुञ्चनयोः प्रवृत्तिश्च सवेदना।।**

3. अर्दित :– 1. **अतिवृद्धः शरीरार्धमेकं वायु प्रपद्यते। 2. अर्धे तस्मिन्मुखार्धे वा, केवले स्यात्तदर्दितम्।**
(1. वक्र अर्द्धम् – सुश्रुत। 2. चरक– मुखार्द्धघात। 3. अष्टांग संग्रह– 'एकायाम')

4. **मन्यास्तम्भ/अन्तरायाम :–** दन्तानां दंशनं लाला पृष्ठक्षेपः शिरोग्रहः।
5. **धनुस्तम्भ/बहिरायाम :–** दन्तानां दंशनं जृम्भा लालास्त्रावश्च वाग्ग्रहः।
6. **हनुग्रह :–** हनुस्तम्भ/हनुग्रह – 1. संवृतास्यता – मुख का बंद रहना, 2. विवृतास्यता – मुख का खुला रहना।

7. **आक्षेपक** :– जब शरीरस्थ प्रकुपित वायु पाणिपाद, सिरा, स्नायु और कण्डरा को सुखाकर **(संशोष्य)** शरीर के अंगों में बार–बार आक्षेप उत्पन्न करती है। इस तरह बार बार आक्षेप के दौरे आने से इस रोग को आक्षेपक कहते हैं।
   - ❖ अपतानक और अपतंत्रक का वर्णन चरक सिद्धि स्थान अध्याय 9 – त्रिमर्मीयसिद्धि में किया गया है।

8. **दण्डक** :– प्रकुपित वायु पाणिपाद, **शिर, पृष्ठ और श्रोणि** को जकड **(स्तभ्नाति)** लेती है। और शरीर में दण्डे की तरह अकडन हो जाती है तब इस रोग को दण्डक कहते हैं। दण्डक **असाध्य** रोग है।

9. **पक्षवध** :– प्रकुपित वायु शरीर के किसी एक भाग वाम या दक्षिण को मार कर चेष्टानिवृत्ति, स्पर्श ज्ञान रहित कर देता है पीडा होती है और वाणी अवरूद्ध हो जाती है।
10. **एकांगवात** – प्रकुपित वायु शरीर के किसी एक भाग में आक्रमण करके उस भाग की सिरा और स्नायु को सुखाकर एक हाथ या एक पैर को संकुचित कर देता है तोद और शूल रहता है तो इसे एकांगवात कहते है।
11. **सर्वांगवात** – प्रकुपित वायु समस्त की सिरा और स्नायुओं को सुखाकर चेष्टारहित कर देता है और सर्वांग में पीडा होती है तो इसे सर्वांगवात कहते है।

12. **गृध्रसी का लक्षण :– स्फिक् पूर्वा कटिपृष्ठोरूजानुजघांपदं क्रमात्। गृध्रसी स्तम्भरूक्तोदैर्गृह्णाति स्पन्दते मुहुः।। वाताद् वातकफात् तन्द्रागौरवारोचकान्विता।**
12. **खल्ली का लक्षण :– खल्ली तु पादजंघोरूकरमूलावमोटनी।**

वातप्रकोपक 2 प्रमुख कारण :– वायोर्धातुक्षयात् कोपो मार्गस्यावरणेन च।

(1) धातुक्षय (2) स्वमार्ग में आवरण/अवरोध।

वायु के आवरणों की संख्या :– माधव – 10, सुश्रुत – 13, वाग्भट्ट – 22, चरक – 42।

1. पित्तावृत वात
2. कफावृत वात
3. रक्तावृत वात
4. मांसावृत वात – **पिपीलिकानां च संचार इव** – भारीर में चीटियों के रेंगने जैसी अनुभूति होती है।
5. मेदावृत वात – आढ्यवात कहा चरक ने।
6. अस्थिावृत वात
7. मज्जावृत वात – विनाम।
8. शुक्रावृत वात
9. अन्नावृत वात
10. मूत्रावृत वात
11. मलावृत वात

वातरोग की सामान्य चिकित्सा :– स्नेहन, स्वेदन, मृदुविरेचन, वातानुलोमन, निरूहबस्ति, दीपन–पाचन औषध, नस्य और धूमपान का प्रयोग।

वातरोग की अवस्थानुसार चिकित्सा :–

1. **कोष्ठगत वात में –** क्षार का प्रयोग।
2. **गुद एंव पक्वाशयगत वात में –** उदावर्त नाशक चिकित्सा।
3. **आमाशयगत वात में –** संशोधन।
4. **संर्वांगगत वात में – अभ्यंग, अनुवासन और निरूह बस्ति।**
5. **त्वचागत वात में –** स्वेदन, अभ्यंग, अवगाहन और हृद अन्न।
6. **रक्तगत वात में – प्रदेह, विरेचन और रक्तमोक्षण।**
7. **मांसमेदोगत वात में – विरेचन, निरूह बस्ति और शमन** चिकित्सा।
8. **अस्थिमज्जा गत वात में –** बाह्याभ्यान्तर स्नेह।
9. **हृदय गत वात में – सिद्धं अशुमत्या पयो हितम्।**
10. **बाहुशीर्ष गत वात में –** नस्य **और उत्तरभक्तिकम् घृत/तैल** पान।
11. **अधोनाभिगत वात में – बस्ति और अवपीडक घृत/तैल पान।**

अर्दित की चिकित्सा :– अर्दिते नावनं मूर्ध्नि तैलं तर्पणमेव च। नाडीस्वेदोपनाहाश्चाप्यानूपपिशितैर्हिताः।
पक्षाघात की चिकित्सा :– स्वेदनं स्नेहयुक्तं पक्षाघाते विरेचनम्।
गृधसी की चिकित्सा :– अन्तराकण्डरागुल्फं सिरा बस्त्यग्निकर्म च। गृधसीषु प्रयुन्जीत –
खल्ली की चिकित्सा :– खल्ल्यां तु उष्णोपनाहनम्।

निर्गुण्डी तैल, कार्पास तैल, मूलक तैल, पंचमूल तैल, सहाचर तैल, श्वदंट्रा तैल, बला तैल, रास्ना तैल, अमृताद्यं तैल, लशुन तैल, अगुर्वादि तैल।

संसृष्टे कफपित्ताभ्यां पित्तमादौ विनिर्जयेत् :– जब वायु कफ और पित्त दोनों से संयुक्त रूप से आवृत्त हो, तो सर्वप्रथम पित्त के प्रकोप का शमन करना चाहिए।
रक्तावृत वात में वातरक्त चिकित्सा करनी चाहिए।

SHYAM-VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER
By Dr. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

वायु के परस्पर अन्योन्य आवरण :— 20

प्राण वायु	उदान आवृत, समान आवृत, व्यान आवृत, अपान आवृत।
उदान वायु	प्राण आवृत, समान आवृत, व्यान आवृत, अपान आवृत।
समान वायु	प्राण आवृत, उदान आवृत, व्यान आवृत, अपान आवृत।
व्यान वायु	प्राण आवृत, उदान आवृत, समान आवृत, अपान आवृत।
अपान वायु	प्राण आवृत, उदान आवृत, समान आवृत, व्यान आवृत।

1. **प्राण आवृत व्यान वायु के लक्षण :— सर्वेन्द्रियाणां शून्यत्वं ज्ञात्वा स्मृतिबलक्षयम्।**
2. **प्राण आवृत उदान वायु के लक्षण :— शिरोग्रहः प्रतिश्यायो निःश्वासोच्छ्वाससंग्रहः।**

3. **उदान आवृत, प्राण वायु के लक्षण :— कर्मौजोबलवर्णानां नाशो मृत्युरथापि वा।**
4. **अपान आवृत, व्यान वायु के लक्षण :— भवेत् विण्मूत्ररेतसाम् अतिप्रवृत्ति।**

5. **व्यान आवृत, अपान वायु के लक्षण :— वम्य, आध्मान, उदावर्त, गुल्म और परिकर्तिका।**
6. **समान आवृत, व्यान वायु के लक्षण :— मूर्च्छा, तन्द्रा, प्रलाप, अंगसाद, अग्नि,ओज,बल–क्षय।**

आवृत वात चिकित्सा सूत्र :— क्रममुष्णमनुष्णं वा व्यत्यासादवचारयेत्।

वायु के मिश्रित आवरण :— 10

प्राण वायु	पित्त आवृत, कफ आवृत।
उदान वायु	पित्त आवृत, कफ आवृत।
समान वायु	पित्त आवृत, कफ आवृत।
व्यान वायु	पित्त आवृत, कफ आवृत।
अपान वायु	पित्त आवृत, कफ आवृत।

1. **पित्त आवृत प्राण वायु के लक्षण :— मूर्च्छा, दाह, भ्रम, शूल, विदाह।**
2. **पित्त आवृत उदान वायु के लक्षण :— मूर्च्छा, ओजोभ्रंश।**
3. **पित्त आवृत समान वायु के लक्षण :—** अतिस्वेद, तृष्णा, दाह, मूर्च्छा, उष्माघात।
4. **कफ आवृत व्यान वायु के लक्षण :— गुरूता सर्वगत्राणां सर्वसन्ध्यस्थिजा रूजः।**
5. **पित्त आवृत अपान वायु के लक्षण :—** अति रजःस्राव।
6. **कफ आवृत अपान वायु के लक्षण :— कफज प्रमेह।**

प्राण और उदान वायु :— विशेषात् जीवितं प्राणे उदाने संश्रित बलम्।

आवृत वात की उपेक्षा से – हृदयरोग, विद्रधि, प्लीहा, गुल्म और अतिसार – ये उपद्रव होते है।

सर्वस्थानावृत वायु की चिकित्सा :—

1. **कफपित्तशामक और वातानुलोमक आहार विहार का प्रयोग करना चाहिए।**
2. **यापना बस्ति और मधुर अनुवासन बस्ति का प्रयोग करना चाहिए।**
3. मृदु संस्रन।
4. **रसायनानां सर्वेषामुपयोगः प्रशस्यते।** – रसायन का प्रयोग करना चाहिए।
5. **गुग्गुलु और शुद्ध शिलाजीत का प्रयोग करना चाहिए।**
6. केवल दुग्ध सेवन करते हुए च्वयनप्राशावलेह का प्रयोग करना चाहिए।
7. अभया आमलकी रसायन पादोक्त रसायन योगों का प्रयोग करना चाहिए।

आवृत अपान वायु की चिकित्सा :— अपानेनाऽऽवृते सर्व दीपनं ग्राहि भेषजम्।।

29. वातरक्त चिकित्सा

1. चरक संहिता में वातरक्त अध्याय में स्वतंत्र वर्णन। सुश्रुत संहिता में वात व्याधि प्रकरण में वर्णन।
निदान :– प्रायशः सुकुमाराणां मिथ्याहारविहाराणाम्। अचङ्क्रमणशीलानां कुप्यते वातशोणितम्। (च. चि. 29/7)
प्रायः सुकुमाराणां मिथ्याऽहारविहाराणाम्। स्थूलानां सुखिनां चापि वातरक्तं प्रकुप्यति। – सुश्रुत।
वातरक्त प्रायः सुकुमार, सुखी, स्थूल तथा मिथ्या आहार–विहार सेवी पुरूषों को होता है।
वात प्रकोपक कारणों से **वात प्रकुपित** होकर एवं उष्ण, तीक्ष्ण आदि पित्तवर्धक आहार विहार से **रक्त दूषित** हो जाता है। रक्त, वायु की प्रबलता होने के कारण "वातरक्त" कहते है।
अन्य नाम :– वातरक्त, वातशोणित, वातबलास, खुडंवात, आढ्यवात – चरक ने। आढ्यरोग – वाग्भट्ट ने।
विशेष स्थान :– तस्य स्थानं करौपादावङ्गुल्यः सर्वसन्धयः। कृत्वाऽऽदौ हस्तपादे तु मूलं देहे विधावति।।
वातरक्त रोग दोनों हाथ, दोनों पैर, सभी अंगुलियों और सभी सन्धियों में अपना स्थान बनाता है। सबसे पहले यह हाथों और पैरों में मूल बनाकर फिर सम्पूर्ण भारीर में भ्रमणशील हो जाता है।

वातरक्त का प्रारम्भ :– पादयोर्मूलमास्थाय कदाचित् हस्तयोरपि। पैर के अंगूठे के मूल से प्रारम्भ होता हैं। (माधव)
पूर्वरूप :– स्वेदोऽत्यर्थ न वा कार्ष्ण्यं स्पर्शाज्ञत्वं क्षतेऽतिरुक्।............वैवर्ण्य मण्डलोत्पत्तिः वातासृक्पूर्वलक्षणम्।।
स्पर्शाज्ञत्वमतिस्वेदो न वा पारूष्य → कुष्ठ का पूर्वरूप है।
वातरक्त का प्रसार :– आखोर्विषमिव क्रुद्धं तत् देहमुपसर्पति।। चूहे के विष के समान शरीर में फैलता हैं। (सुश्रुत)
वातरक्त के भेद :– 2 – (1) उत्तान, (2) गम्भीर। (चरक, अष्टांगसंग्रह)।
उत्तानमथ गम्भीरं द्विविधं तत् प्रचक्षते। त्वङ्मांसाश्रयमुत्तानं गम्भीरं त्वन्तराश्रयम्।। (च. चि. 29/19)
सुश्रुत के अनुसार यह 2 प्रकार का नहीं है क्योंकि उत्तान कालान्तर में बढ़कर गम्भीर हो जाता है।
(1) उत्तान :– कण्डू, दाह, रूजा, तोद, स्फुरण, और आकुंचन होता है त्वचा श्याव, रक्त या ताम्रवर्ण की हो जाती है।
(2) गम्भीर :– शोथ में स्तब्धता, कठिनता और अत्यन्त पीड़ा होती है। त्वचा श्याव या ताम्रवर्णी हो जाती है।
जिसमें दाह, तोद, स्फुरण और पाक होता है।
(3) उभयाश्रित वातरक्त के लक्षण :– रोगी को खंज या पंगु बना देता है।
दोषानुसार –8 – चरक एवं माधव ने दोषानुसार 8 प्रकार के वातरक्त का वर्णन किया है।
1. **वात** – विशेषतः सिरायामशूलस्फुरणतोदनम्। धमनियों, अंगुलियों और सभी सन्धियों में संकोच होता है।
2. **पित्त** – विदाह, रूजा, मूर्च्छा, तृष्णा, मद, भ्रम।
3. **कफ** – स्तैमित्यता, गौरव, स्नेहः, सुप्तिर्मन्दा च रुक् कफे।
4. **रक्त – कण्डूक्लेदान्विताऽसृजि।**
5–7. द्वन्द्वज 8. त्रिदोष में – मिश्र लक्षण।
साध्यासाध्यता :– 1. एकदोषज व नवीन – साध्य। 2. द्विदोषज – याप्य, 3. त्रिदोषज व उपद्रव युक्त – असाध्य।
वातरक्त की उपद्रवजनित असाध्यता :– अंगुलीवक्रता, स्फोट, मर्मग्रह और अबुर्द। **(च. चि. 29/32)**

वातरक्त की चिकित्सा :– 1. रक्तमोक्षण → स्नेहन → मृदु विरेचन → वस्ति कर्म।
उत्तान में – आलेपन, अभ्यंग, परिसेचन और उपनाह का प्रयोग।
गम्भीर में – विरेचन, निरूहबस्ति और स्नेहपान का प्रयोग।
1. घृत :– जीवनीय घृत, **पारूषक घृत,** द्राक्षाघृत।
3. बस्ति :– **न हि बस्तिसमं किंचिद्वातरक्तचिकित्सितम्। (च. चि. 29/88)**
3. एरण्ड तैल का प्रयोग :– बहुदोष युक्त वातरक्त में।
4. तैल :– मधुयष्ट्यादि तैल, **सुकुमारक तैल,** अमृताद्यं तैल, महापद्मं तैल, खुड्डाकपद्मंक तैल, शतपाक मधुक तैल, शतपाक मधुपर्णी तैल, सहस्रपाकं, शतपाक बला तैल, **सर्जरस तैल, पिण्ड तैल** (बाह्य प्रयोग)
5. लेप :– प्रपौण्डरीकादि लेप, मधूच्छिष्ट प्रलेप, सर्षपादि लेप, तगरादि लेप।
6. कषाय :– **बोधिवृक्ष कषाय + मधु** – वातरक्तं जयत्याशु त्रिदोषमपि दारूणम्। (च. चि. 29/158)

सुश्रुतानुसार :– 1. 'गुड़ हरीतकी' :– सभी प्रकार के वातरक्त में गुड हरीतकी का सेवन करे। (चरक – अर्श में)।
2. पिप्पली वर्द्धमान :– (5 या 10 **पिप्पली** से प्रारम्भ),
3. "कोकिलाक्ष" का शाक वातरक्त में अत्यन्त उपयोगी है।

30. योनिव्यापद चिकित्सा

- **योनिव्यापद संख्या :– (20)** – विशतिः व्यापदो योनौ निर्दिष्टा रोगसंग्रहे।
- **योनिव्यापद के कारण** – 1. मिथ्या आहार विहार 2. आर्तवदुष्टि 3. बीजदोष 4. दैव।
  वाग्भट्ट ने – 6 – 1.दूषित भोजन 2.दूषित रज 3.बीजदोष **4. विषमांग शयन 5. भृंशमैथुन 6. अपद्रव्यों का प्रयोग।**

–: चरकानुसार – 20 योनिव्यापद :–

1. **वातज** –11–वातला, उदावर्ता, अचरणा, अतिचरणा, प्राक्चरणा, सुचीमुखी, अर्न्तमुखी, शुष्का, षण्डी, महायोनि, **पुत्रघ्नी।**
2. पित्तज – 3 – पित्तजा, असृजा, **अरजस्का।** 3. कफज – 1, 4. सन्निपातिज –1।
5. वातपित्तज– 2– वामिनी, परिप्लुता। 6. वातकफज – 2 – उपप्लुता, कर्णिनी।

1. वातज	
1. चरक	योनि में तोद, वेदना, स्तम्भता, कर्कशता, सुप्ति, आयास एवं अन्य वातज लक्षण रहते है। **'पिपीलिकासृप्तिमिव'** – शरीर में चीटियों के रेंगने जैसी प्रतीति। **आर्तवस्राव** – सशब्दरूक्फेन तनुरूक्षार्तवाऽनिलात्।
2. सुश्रुत	वातला कर्कशा स्तब्धा शूलनिस्तोद पीडिता।
3. अ. हृ.	पिपीलिकासृप्तिमिव स्तम्भं कर्कशतां स्वनम्। **आर्तवस्राव** – फेनिलारूणकृष्णाल्प तनुरूक्षार्तव स्रुतिम्। **आर्तव वर्ण – अरूण, कृष्ण वर्ण आर्तवमात्रा – अल्प** योनि में स्त्रंसं (स्थानच्युति) **वंक्षण एवं पार्श्व में वेदना** तथा धीरे धीरे "गुल्म की उत्पत्ति"।

2. पित्तज	
1. चरक	दाहपाकज्वरोष्णार्ता नीलपीतसितार्तवा भृशोष्णा कुणपस्रावा योनिः स्यात्पित्तदूषिता। **ज्वर युक्त,** आर्तव वर्ण – **नीलपीतसितार्तवा,** स्पर्श – भृशोष्ण स्राव – **'कुणपगंधीस्राव'।**
2. सुश्रुत	पित्तला योनिः दाहपाकज्वरान्विता – (सुश्रुत)
3. अ. हृ.	करोति दाहपाकोषापूतिगन्धिज्वरान्विताम् भृशोष्णमूरिकुणप नीलपीतासितार्तवाम्।

3. कफज	
1. चरक	1. योनि में पिच्छिलता, शीतलता, कण्डू तथा अल्प वेदना रहती है। **2. आर्तव – पाण्डुपिच्छिलार्तववाहिनीम् 3. शरीरवर्ण – पाण्डुवर्णा।**
2. सुश्रुत	श्लेष्मला पिच्छिला योनिः कण्डूयुक्ताऽतिशीतला। – (सुश्रुत)।
3. अ. हृ.	शीतलां कण्डुलां **पाण्डुपिच्छिला** तद्विधस्रुतिम्।

4. सन्निपातज	
1. चरक	1. कारण – समश्नन्त्या रसान् सर्वान् दूषयित्वा त्रयो मलाः। स्त्री के द्वारा **सभी रसों का अत्यधिक** मात्रा **में सेवन** किये जाने से। 2. योनि – **'दाहशूलार्ता'** 3. आर्तव – **'श्वेतपिच्छिल वाहिनी'।**
2. सुश्रुत	सर्वलिंग समुत्थाना सर्वदोषप्रकोपजा ।–(सुश्रुत)
3. अ. हृ.	त्रिभिदोषैः योनिगर्भशयाश्रितैः – (वाग्भट्ट) – तीनों दोष अपने अपने उपद्रव करते हैं।

5. असृजा	
1. चरक	रक्तपित्तकरैर्नार्या रक्तं पित्तेन दूषितम्। अतिप्रवर्तते योन्यां – 1. कारण –रक्त, पित्त वर्धक आहार–विहार के सेवन से पित्त दूषित होकर रक्त को भी दूषित बना देता है 2. **'लब्धे गर्भेऽपि सासृजा'** – स्त्री के गर्भधारण पश्चात् भी योनि से अधिक रक्त स्राव होता रहता है।
लोहितक्षरा – सुश्रुत और वाग्भट्ट	
2. सुश्रुत	सदाहं प्रक्षरत्यस्रं **वामिनी** सा लोहितक्षरा। – (सुश्रुत)।
3. अ. हृ.	**वातपित्ताभ्यां क्षीयते रजः। सदाह कार्श्य वैवर्ण्य यस्याः सा लोहितक्षया।** –(अ. हृ. 33/45)।

6. अरजस्का	
1. चरक	योनि और गर्भाशय आश्रित पित्त जब रक्त दूषित कर देता है, तो स्त्री को रजोधर्म नहीं होता है। तब उसे अरजस्का कहते है। लक्षण – 1."**कार्श्यवैवर्ण्यजननी भृशम्**"
2. सुश्रुत	– – – – – –
रक्तयोनि – वाग्भट्ट	
3. अ. हृ.	**रक्तयोनि** – रक्तयोन्तरत्याऽसगति स्रुतेः। – रक्त की अति प्रवृत्ति से रक्तयोनि होती है।

7. अचरणा	
1. चरक	1. योन्याम् अधावनात् **कण्डू** जाताः कुर्वन्ति जन्तवः। लक्षण – 1. कण्डूयुक्त **2. 'अतिनरकांक्षिणी'**।
2. सुश्रुत	मैथुनेऽचरणा पूर्व पुरूषादतिरिच्यते। – मैथुन के समय स्त्री पुरूष से पहले स्खलित हो जाती है।
3. अ. हृ.	– – – – – –

8. अतिचरणा	
1. चरक	1. अत्यधिक मैथुन से कुपित वायु स्त्री की योनि में "**शोफसुप्तिरूज**" कर देती है।
2. सुश्रुत	बहुशश्च अतिचरणादन्या **बीज न विदति**। – मैथुन के समय पुरूषस्खलन से पूर्व कई बार स्खलित हो जाती है।
3. अ. हृ.	सैवाति चरणा शोफसंयुक्ताऽतिव्यवायतः।

9. प्राक्चरणा	
1. चरक	मैथुनादतिबालायाः **पृष्ठकटयुरुवङ्क्षणम् रुजन्ति**। – अतिबाला कन्या के साथ मैथुन करने से कुपित वायु पृष्ठ, कटि, ऊरू और वंक्षण में रूजा उत्पन्न कर देती है।
2. अ. हृ.	मैथुनादतिबालायाः **पृष्ठजंघोरुवङ्क्षणरुजा** [illegible]
फलिनी – सुश्रुत, माधव – अण्डली	
3. सुश्रुत	अतिकायगृहीतया तरुण्या फलिनी भवेत्। (सुश्रुतानुसार सन्निपातज असाध्य योनिव्यापद हैं।)

10. उपप्लुता	
1. चरक	1. गर्भिणी स्त्री द्वारा कफवर्धक आहार विहार से **2. छर्दि तथा निःश्वास के वेगों** को रोकने से **कुपित वायु + कफ** को योनि में ले देती है तथा योनि को भी दूषित कर देती है। 3. योनि में – तोद के साथ पाण्डुस्राव/कफ के साथ श्वेतस्राव तथा वातकफज अन्य विकृतियाँ।
2. सुश्रुत	– – – – – –
3. अ. हृ.	वातश्लेष्मामयव्याप्ता **श्वेतपिच्छिलवाहिनी**। उपप्लुता स्मृता –

11. परिप्लुता	
1. चरक	1. पित्तप्रकृतिवाली स्त्री से संभोग समय **क्षवथु व उद्गार** के धारणात् वेगों को रोकने से कुपित **वात+पित्त** 2 "**शूना स्पर्शक्षमा**" (चरक) – योनि में शोथ, स्पर्शासहत्व रहता है। **3. सार्तिर्नीलपीतमसृक् स्रवेत्** – वेदना युक्त नील पीत वर्ण का रक्त का स्राव होता है। 4. **श्रोणिवंक्षणपृष्ठार्ति ज्वरार्तायाः** परिप्लुता। – श्रोणि, वक्षंण, पृष्ठ में वेदना रहती है, **ज्वरग्रस्त** हो जाती है
2. सुश्रुत	परिप्लुतायां ग्राम्यधर्मे रूजा भृशम् भवति। – मैथुन के समय योनि में अत्यधिक पीडा का होना –(सुश्रुत)।
3. अ. हृ.	1. शूना स्पर्शासहा 2. बस्तिकुक्षिगुरूत्वातिसारारोचककारिणी।

12. उदावर्ता	
1. चरक	सा रूगार्ता रजः कच्छ्रेणोदावर्त्तं विमुच्यति। **आर्तवे सा विमुक्ते तु तत्क्षणं लभते सुखम्।** 1. वेगावरोध से प्रकुपित वायु – अपने साथ योनि को भी ऊपर खींच लेती है। 2. योनि के उर्ध्वमुखी हो जाने से 'कृच्छ्रार्तव' हो जाता है।
2. सुश्रुत	सफेनिलुदावर्ता रजः कृच्छ्रेण मुंच्चयति। (सुश्रुत)
3. अ. हृ.	स फेनिलं रजः कृच्छ्रादुदावृत्तं विमुंच्चति।

13. कर्णिनी	
1. चरक	आवि के प्रादुर्भाव होने से भी **अकाल में प्रवाहण करने से** वायु गर्भ के द्वारा मार्ग रूक जाने से एंव कफ तथा रक्त से घिरकर योनि में कर्णिका (मांसाकुर) उत्पन्न कर देती है।
2. सुश्रुत	कर्णिन्यां कर्णिका योनों श्लेष्मासृग्भ्यां प्रजायते।
3. अ. हृ.	अकालवाहनात् वायुः श्लेष्मरक्तविमूर्च्छितः। कर्णिकां जनयेद्योनौ रजोमार्गनिरोधिनीम्।

14. पुत्रघ्नी	
1. चरक	रौक्ष्याद्वायुर्यदा गर्भ **जातं जातं विनाशयेत्**। दुष्ट शोणितजं नार्याः पुत्रघ्नी नाम सा मता। – चरक रूक्ष आहार विहार से कुपित वायु + दुष्ट रज से उत्पन्न गर्भ को बार–बार नष्ट कर देती है।
2. सुश्रुत	स्थितं स्थितं हन्ति गर्भ पुत्रघ्नी रक्तसंस्रवात्। (सुश्रुत – पित्त दोषज मानी है।)
जातघ्नी – वाग्भट्ट	
3. अ. हृ.	**जातं जातं सुतं हन्ति** रौक्ष्याद् दुष्टार्तवोभ्दवम्। (वाग्भट्ट – वात दोषज मानी है।)

15. अन्तर्मुखी	
1. चरक	**अतितृप्त होकर** भोजन के पश्चात् मिथ्यास्तिाग अवस्था में मैथुन करने से 1. **वक्रयत्याननं योन्या** – अन्न से पीडित वायु **योनिमुख – व्रक** कर देती है। 2. **साऽस्थिमांसनिलार्तिभि** – योनि के **अस्थि और मांस में वातजन्य पीडा** कर देती हैं। 3. **भृशार्तिमैथुनाशक्ता** – भयंकर वेदना युक्त होने के कारण **स्त्री मैथुन कराने में असमर्थ** हो जाती है।
2. सुश्रुत	– – –
3. अ. हृ.	**अत्याशित** भोजन के पश्चात् **विषम स्थिति में** मैथुन करने से यानि स्रोत्र में स्थित वायु अन्न से पीडित होकर योनि के मुख को अस्थि तथा मांस के साथ टेढ़ा कर देती है। अतिरूजा रहती है।

16. सूचीमुखी	
1. चरक	1. गर्भिणी के रूक्ष आआर से कुपित वायु गर्भस्थ कन्या की योनि में जाकर उसके मुख को सूचीमुख की तरह अत्यंत संकीर्ण बना देता है। **2. असाध्य – मातृदोषात् अणुद्वारां** कुर्यात् सुचीमुखी तु सा।
2. सुश्रुत	अतिसंवृत्ता सूचीवक्त्रा। (सुश्रुतानुसार सन्निपातज असाध्य योनि व्यापद् रोग है।)
3. अ. हृ.	स्त्रियो योनिगणुद्वारां कुर्यात्सूचीमुखीति सा।

17. शुष्का	
1. चरक	व्यवायकाले रून्धन्त्या वेगान् प्रकुपितोऽनिलः। कुर्याद् **विण्मूत्रसंगार्ति शोषं योनिमुखस्य** च।। 1 .संभोग समय वेगावरोध ⟶ प्रकुपित वात ⟶ **विण्मूत्रसंग** ⟶ योनिमुख में शोष।
2. सुश्रुत	– – – – – –
3. अ. हृ.	वेगरोधादृतौ वायुर्दुष्टो विण्मूत्रसंग्रहम् करोति योनेः शोषं च शुष्काख्या साऽतिवेदना।

18. वामिनी	
1. चरक	**षडहात सप्तरात्राद** वा शुक्रं गर्भाशयं गतम्। **सरूज नीरूज** वाऽपि या स्रवेत सा तु वामिनी। गर्भाशयस्थ शुक्र को 6 दिन 7 रात्री में वेदना या अवेदना से बाहर स्रवित कर देती है।
2. सुश्रुत	स्वातमुदिगरेद्बीजं वामिनी रजसायुतम्।– योनि वायु **के साथ रजसहित बीज को बाहर** निकाल देती है।
3. अ. हृ.	

19. षण्डी	
1. चरक	**बीजदोषात्तु गर्भस्थमारूतोपहताशया। नृद्वेषिण्यस्तनी चैव षण्डी स्यादनुपक्रमा। (च. चि. 30/34)** 1. बीजदोषजन्य प्रकुपित वायु गर्भस्थ कन्याओ के गर्भाशय को नष्ट कर देती है। **2. नृद्वेषी** – पुरूषों से द्वेष **3. अस्तनी** – स्तनों का विकास नहीं होता हैं **4. अनुपक्रमा** – असाध्य
2. सुश्रुत	**अनार्त्तवस्तना** षण्डी खरस्पर्शा च मैथुने। (सुश्रुतानुसार सन्निपातज असाध्य योनि व्यापद् रोग है।)
3. अ. हृ.	योनौ वातोपतप्तायां स्त्रीगर्भे बीजदोषतः। नृद्वेषिण्यस्तनी च स्यात् षण्ढसंज्ञाऽनुपक्रमा।

AYURVEDA P.G. ... COACHING CENTER

20. महायोनि	
1. चरक	1. विषमं दुःख शय्यायां मैथुनात → कुपित वायु → असवृंमुखी, मांसात्पन्नां। **2. 'सार्ती रूक्षफेनास्रवाहिनी'।** **3. 'मांसोत्पन्ना महायोनिः पर्ववंक्षणशूलिनी'।**
2. सुश्रुत	विवृताऽति महायोनिः। (सुश्रुतानुसार सन्निपातज असाध्य योनि व्यापद् रोग है।)
3. अ. हृ.	विवृत्तां, उत्सन्नमांसां तामाहुर्महायोनिं महारूजाम्।

(सुश्रुतानुसार – योनिव्यापद)

1. **विप्लुता – विप्लुता नित्यवेदनाम्।**
2. **अत्यानंदा** – अत्यानंदा न संतोषं ग्राम्यधर्मेण गच्छति। – जो योनि मैथुन से कभी तृप्त ही नहीं होती है।
3. **प्रसंसिनी** – प्रसंसिनी स्यन्दते तु क्षोभिता **दुःप्रसूश्च** या। – 1.**'दुष्प्रजाता योनि'** 2. मैथुन के समय अधिक स्राव।
4. **बन्ध्या** – बन्ध्या नष्टार्त्तवा।

▪ **सुश्रुत** – विप्लुता, अत्यानन्दा, प्रस्रंसिनी, बन्ध्या।	**चरक** – शुष्का, उपप्लुता, अर्न्तमुखी, प्राक्चारणा।

(वाग्भट्टानुसार – योनिव्यापद)

चरक	वाग्भट्ट	वर्णन
1. अरजस्का	= रक्तयोनि	**रक्तयोनि** – रक्तयोन्तरत्यसृगति सुते।
2. पुत्रघ्नी	= जातघ्नी	**जातघ्नी** जातं जात सुतं हन्ति रौक्ष्याद् दुष्टार्तवोऽदवम्।
3. अचरणा	= विप्लुता	**विप्लुता** – संजातजन्तुः कण्डूला कण्डवा चाति रतिप्रिया।

चरकानुसार योनिव्यापद की चिकित्सा :– वातव्याधिहर कर्म वातार्तानां सदा हितम्।

योनि रोग	चिकित्सा सूत्र	योग
1. वातजन्य	वातनाशक स्नेहन, **नाडी, कुम्भी स्वेद,** वस्ति	रास्नादि क्षीरपाक, गुडूच्यादि क्वाथ, **हिंस्राकल्क** **गुडूच्यादि तैल**, काश्मर्यादि घृत, **सैन्धवादी तैल।**
2. पित्तजन्य	रक्तपित्त नाशक	बृहत् शतावरी घृत, जीवनीय क्षीर घृत।
3. कफजन्य	रूक्ष एंव उष्ण औषिधियों का प्रयोग	**वाराहपित्त वर्ति**, उदुम्बर तैल, धातक्यादि तैल का प्रयोग

4. द्वन्द्वज एंव सन्निपातज योनि रोगो में – मिश्रित औषिधियों का प्रयोग।
5. **अरजस्का** :– हरिण, बकरी, सूअर या भेड के ताजे रक्त में फलाम्ल + घृत मिलाकर पीना चाहिए।
6. **अचरणा** :– गाय एंव मछली के पित्त से 21 बार भावित वस्त्र की वर्ति बनाकर योनि में धारण।
7. **कर्णिनी, अचरणा, प्राक्चरणा और शुष्कयोनि** – इन वातकफज योनि रोगों में **जीवनीय गण** की औषधियों से साधित **उत्तर वस्ति** का प्रयोग। – BHU 2011
8. **प्राक्चरणा, अतिचरणा** :– शतपाकी तैल की निरूह व अनुवासन वस्ति का प्रयोग।
9. **महायोनि** : – योनि में भालू या सूअर की चर्बी का धारण।
10. **योनिशूल में** :– योनिशूल में **सैन्धवादी तैल व गुडूच्यादि तैल** का र्निदेश है।

–: शुद्ध शुक्र के लक्षण :–

स्निग्ध घनं पिच्छिलं च मधुरं चाविदाहि च। रेतः शुद्धं विजानीयात् भवते स्फटिकसन्निभम्। (चरक चि. 30/145)

शुक्र के दोष :– 8

फेनिलं तनु रूक्षं च विवर्ण पूति पिच्छिलम्। अन्यधातुपसंसृष्टमवसादि तथाऽष्टमम् ।। **(चरक चि. 30/139)**

फलप्रद शुक्र के लक्षण – बहलं मधुर स्निग्धम विस्त्रं गुरू पिच्छिलम्। शुक्ल बहु च यत शुक्रं फलवत संशयम्।।

(चरक चि. 2/4/50)

शुक्र दोष की सामान्य चिकित्सा :—

1. बाजीकरण, रक्तपित्त और योनिव्यापद की चिकित्सा।
2. जीवनीय घृत, च्वयनप्राशावलेह और शुद्ध शिलाजीत का प्रयोग करना चाहिए।
3. प्रशस्ता शुक्र दोषेषु बस्तिकर्म विशेषतः।

शुक्र दोष की विशेष चिकित्सा :—

1. **वात दुष्ट :—** आवश्यकतानुसार निरूह व अनुवासन वस्ति का प्रयोग करें।
2. **पित्त दुष्ट :— अभयामलकी रसायन** का प्रयोग करना चाहिए।
3. **कफ दुष्ट :—** पिप्पली रसायन, आमलकी रसायन, लोह रसायन, **त्रिफला रसायन** और भल्लातक रसायन।

क्लैव्य (नपुंसकता) :— 4 — (सुश्रुत — 5. ब्रह्मचर्य जन्य 6 मर्मछेदन जन्य)

1. बीजोपघात्ज :—
2. ध्वजभंग :— 5 प्रकार का होता है। — असाध्य।
3. जराजन्य :— आयु के 3 वर्ग :— 1. प्रवर 2. मध्यम 3. जघन्य।
4. शुक्रक्षयजन्य :— असाध्य।

सुश्रुतानुसार नपुंसक (क्लीवता) — 6 प्रकार — (असाध्य — सहज एवं मर्मच्छेदजन्य क्लीवता)					
1. मानस	2. आहारजन्य	3. शुक्रक्षयजन्य	4. मर्मछेदन	5. ब्रह्मचर्य जन्य	**6. सहज।**

सामान्य चिकित्सा :— संशोधन, यापना वस्ति, वाजीकरण तथा रसायन का प्रयोग।

विशिष्ट चिकित्सा :—

1. बीजोपघात्ज :— वाजीकरण योगों का प्रयोग।
2. ध्वजभंग :— प्रदेह, परिषेक, **रक्तमोक्षण,** [illegible], **अनुवासन/निरूह वस्ति, वण्रवत चिकित्सा।**
3. जराजन्य व शुक्रक्षयजन्य :— स्नेहन, स्वेदन, संशोधन, [illegible] वृष्य योग, **<u>यापना वस्ति</u>, रसायन प्रयोग।**

—: प्रदर रोग चिकित्सा :—

1. **वातज प्रदर रोग :—** तिलचूर्ण दधि घृतं फाणितं शौकरी वसा। क्षौद्रेण संयुतं पेयं वातासृग्दरनाशनम्।।
2. **पित्तज प्रदर रोग :—**

पुष्यानुग चूर्ण — चूर्ण पुष्यानुगं नाम हितं आत्रेयपूजितम्।

26 घटक :— पाठा, जामुन, आम्र की गुठली, रसांजन, पाषणभेद, मोचरस, रसांजन, लोध्र, गैरिक आदि।

अनुपान :— तण्डुलोदक + मधु से।

अर्शःसु चातिसारेषु रक्तं यच्चाोपवेश्यते। — चरक ने पुष्यानुग चुर्ण का प्रथम निर्देश अर्श में किया है।

3. **श्वेत प्रदर रोग में** — कषाय रस वाले द्रव्यों के चूर्ण में मधु मिलाकर, वर्ति बनाकर योनि में धारण।

<u>असृग्दर/प्रदर रोग</u>

- **प्रदर के भेद :— (4)** — वातज, पैत्तिक, कफज और सन्निपातिक भेद से **असृग्दर** 4 प्रकार का होता है।

  प्रदर के लक्षण :— रजः प्रदीर्यते यस्मात् प्रदरस्तेन स स्मृतः।

- **दोषानुसार लक्षण :—**

  1. वातज — **किंशिकोदकसंकाशं सरूजं वाऽथ नीरूजम्।**
  2. पित्तज — पीत, नील, असित, रक्त वर्णी निरन्तर उष्ण स्राव।
  3. कफज — पिच्छिल, पाण्डु वर्ण का गुरू, स्निग्ध और शीतल स्राव।
  4. सन्निपातिक — सृजत्यपत्यमार्गेण **सर्पिमज्जवसोपमम्।**

आर्तवकाल :— मासान्निष्पिच्छदाहार्ति पंचरात्रानुबन्धि च। नैवतिबहु नात्यल्पमार्तवं शुद्धमादिशेत्।। (चरक)

वाग्भट्ट – रसजं स्रवति त्र्यहम् (3 दिन), **सुश्रुत – 3 दिन,** चरक = पंचरात्रानुबन्धि (5 रात्रि), **हारीत – 5–7 दिन।**

शुद्ध आर्तव :— गुंजाफल सवर्णम् च पदमालक्त सन्निभम्। इन्द्रगोपक संकाशमार्तवं शुद्धमादिशेत्।। (चरक)

आर्तव के दोष 8 – फेनिलं तनु रूक्षं च विवर्ण पूति पिच्छिलम्। अन्यधातुपसंसृष्टमवसादि तथाऽष्टमम्।

स्तन्य दुष्टि का कारण :— **1. अजीर्णासात्म्यविषमविरूद्धात्यर्थभोजनात्** 2. भुक्त्वा दिवास्वप्नान्मद्यस्यातिनिषेवणात्।

दोषानुसार स्तन्य दुष्टि :— 8

1. वातज – (3) – वैरस्य, फैनसंघातो, रौक्ष्य।

परिणाम –
1. वैरस्य – कृशता।
2. फेनसंघात – क्षामस्वर, बद्धविण्मूत्रमारूत, शिरोरोग, पीनस।
3. रूक्षता – बलह्रास।

2. पित्तज – (2) – विवर्णता ,वैगन्ध्य।

परिणाम –
4. विवर्णता – विवर्णगात्र, स्विन्न, तृष्णा, भिन्नविट्।
5. वैगन्ध्य – पाण्डु, कामला।

3. कफज – (3) – स्नेहयुक्त, पैच्छिल्यं, गौरवम्।

परिणाम –
6. पिच्छिल – लालालु, मुख, अक्षि में शोथ, जड़ता।
7. गुरू – हृदय रोग।
8. अतिस्निग्ध – वमन, कुन्थन, तृष्णा, श्वास, कास, प्रसेक और तमक श्वास।

स्तन्य दोष की चिकित्सा :— स्नेहन, संस्वेद विधिवद्वैद्यो वमनेनोपपादयेत्।

1. वैरस्य – **पंचकोलादि प्रलेप।**
2. फेनसंघात – किराततिक्तादि क्वाथ, यवादि लेप, अंजनादि लेप।
3. रूक्षता – जीवकाद्य प्रलेप, **पंचमूल प्रलेप।**
4. विवर्णता – द्राक्षादि लेप।
5. वैगन्ध्य – विषाणिकादि लेप।
6. पिच्छिल – **तक्रारिष्ट,** विदार्यादि लेप।
7. गुरू – बलादि लेप।
8. अतिस्निग्ध – दारूमुस्तपाठा + सैंधव उष्ण जल से।

बालरोग चिकित्सा सिद्यान्त :— औषध मृदु एंव अल्प मात्रा में प्रयोग करें।

चिकित्सा स्थान :— **इति सर्वविकाराणामुक्तमेतच्चिकित्सितम्। स्थानमेतचिकित्सितम्।**
स्थान मेतद्धि तन्त्रस्य रहस्यं परमुत्तमम्। (च चि. 30/228)

दृढबल :— यह कपिलबली के पुत्र थे इन्होने चरक संहिता के 120 अध्यायों में से 41 अध्याय सम्पूरण किये है।
(चिकित्सा के 17, कल्प 12, सिद्धि 12)

चरक चिकित्सा स्थान के रसायन, वाजीकरण, मदायत्य
+ ज्वर, रक्तपित्त, प्रमेह, कुष्ठ, गुंल्म, राजयक्ष्मा, अर्श, अतिसार
+ विसर्प, द्विवर्णी

अध्यायों को छोडकर शेष सभी 17 अध्याय दृढबल ने लिखे है।

VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTRE
NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

–: औषधि सेवन काल :–

(1) चरक, सुश्रुत, काश्यप, अष्टांगहृदय – 10 (2) अष्टांगसंग्रह में – 11 (3) शारंग्धर – 5।

(A) चरक – 10 काल

1. अभक्त – औषध प्रभाव अतितीव्र होने से बलवान पुरूष को दे।
2. प्राग्भक्त– अपानवायु विकार में, अधः कायगत रोगशमनार्थ, कृशीकरणार्थ में।
3. मध्यभक्त – समानवायु विकार में, कोष्ठगतव्याधि, पित्तविकार में दे।
4. प्रातःपश्चातभक्त– व्यानवायु विकार में, पूर्वकायगत व्याधिशमन, कफरोगनाशनार्थ, स्थूलीकरणार्थ में दे।
5. सायं पश्चातभक्त– उदानवायु विकार में सायंकाल में भोजन पश्चात् दे।
6. मुंहुर्मुहु – श्वास, कास, हिक्का, छर्दि, विष, पिपासा में बार–बार दे।
7. सामुदग – हिक्का, कम्प, आक्षेपक, उर्ध्वगत रोग में लघु अन्न के आदि और अन्त में दे।
8. सभक्त – अरूचि, बालक, सुकुमार, औषधद्वेषी व्यक्ति में, सर्वगतविकार में।
9. सग्रास – प्राणवायु विकार, दीपन, बाजीकरण, चूर्ण, वटी, लेह के प्रयोगार्थ में।
10. ग्रासान्तर – प्राणवायु विकार, हृद्रोग में दे।

ज्वर में रोग की अवस्था को देखकर 6 दिन बीत जाने पर पेया, कषाय, क्षीर, सर्पि और विरेचन का प्रयोग करें।

<u>चिकित्सा के पूर्व 10 परीक्ष्य ज्ञान :–</u>

1. दोश 2. औषध 3. देश 4. काल 5. सात्म्य 6. अग्नि 7. सत्व 8. ओक 9. वय 10. बल।

यो हि सम्यक् न जानाति शास्त्रं शास्त्रार्थमेव च। न कुर्यात् स क्रियां चित्रमचक्षुरिव चित्रकृत्। (च. चि. 30/341)

■ श्री गणेशाय नमः **"चरक संहिता कल्पस्थान"** जय महाकाल

Shyam-Vidya Ayurved P.G. Entrance Coaching Center, Bhopal (M.P.)

By- Dr. N. S. Lodhi (M.D.) Mob. 09300961664, 09993961427

1. मदनकल्प अध्याय

निरूक्ति :– 'वमनविरेचनानां कल्पाः तिष्ठन्ति अस्मिन् इति कल्पस्थानम्।' – (चक्रपाणि)।

पर्याय – कल्प स्थान को **विकल्प स्थान तथा दिव्य स्थान** संज्ञा दी भी गई है।

कल्प स्थान में वमन – विरेचनार्थ द्रव्यों के सुखपूर्वक प्रयोग विधि का वर्णन किया गया है।

वमन :– **तत्र दोषहरणं उर्ध्वभागं वमन संज्ञकम्। (च. क. 1/4)**

विरेचन :– **अधोभागं विरेचन संज्ञकम् उभयं वा शरीरमल विरेचनाद् विरेचन संज्ञा लभते। (च. क. 1/4)**

वामक द्रव्य :– षड्वामक – मदनफल, जीमूतक, इक्ष्वाकु, धामार्गव, वत्सक, कृतवेधन। – **उदान वायु से प्रेरित होकर।**

(1) अग्नि एवं वायु महाभूत प्रधान (2) लघु गुण (3) उष्ण, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, व्यवायी, विकासी।

विरेचन द्रव्य :– नव विरेच्य – श्यामा – त्रिवृत, चतुरंगुल, तिल्वक, महावृक्ष, सप्तला–शंखिनी एवं दन्ती–द्रवन्ती।

(1) पृथ्वी एवं जल महाभूत प्रधान (2) गुरु गुण (3) उष्ण, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, व्यवायी, विकासी।

त्रिविधदेश	1. जांगल देश	2. आनूप देश	3. साधारण देश
1. वायु	शुष्क वायु **(पर्याकाशभूयिष्ठः)**	शीतल वायु	
2. वृक्ष	कदर, खदिर, असन, अश्वकर्ण, तिनिश, धव, शल्लकी, अश्वत्थ, वट, आमलकी आदि।	ताल, तमाल, नारिकेल, कदली, वन।	मिश्रित लक्षण एवं उत्तम।
3. पक्षी	लाव, तीतर, चकोर पक्षी।	हंस, चक्रवाक, बगुले, नन्दीमुख, पुण्डरीक, कादम्ब, मदगु, भृंगराज।	
4.दोष,जन	**वातपित्त बहुलः** स्थिरकठिन मनुष्य प्रायो ज्ञेयः।	सुकुमार पुरुष **पवनकफ प्रायो** ज्ञेयः।	

औषध संग्रह काल :– **तेषां शाखा पलाशमचिरप्ररूढं वर्षावसन्तयोग्राह्यं, ग्रीष्मे मूलानि शिशिरे वा शीर्णप्ररूढपर्णानां, शरदि त्वक् कन्दक्षीराणि, हेमन्ते साराणि यथर्तु पुष्पफलमिति। (च. क. 1/9)**

1. शाखा, पत्र – वर्षा, बंसत।
2. मूल – ग्रीष्म, शिशिर।
3. त्वक् कन्द, क्षीर – शरद।
4. सार – हेमन्त।
5. फल, पुष्प – यथा ऋतु।

दोषानुसार अनुपान – (च. क. 1/12)

(1) वात विकार :– सुरा, सौवीर, तुषोदक, मैरेय, मेदक, धान्याम्ल, फलाम्ल और तक्राम्ल।

(2) पित्त विकार :– **मधु**, मधुक (मुलेठी), मृद्वीका, आमलक परूषक, फाणित और क्षीर।

(3) कफज विकार :– **मधु**, मूत्र, कफनाशक कषाय।

औषध संग्रह मंगलाचरण उपरान्त पूर्व/उत्तर मुख होकर औषध ग्रहण करना चाहिए।

औषध रखने की विधि :– औषध को पूर्व या उत्तर द्वार वाले निवात स्थान में रखना प्रशस्त माना जाता है।

मदनफल का संग्रह :– 1. **बंसत एवं ग्रीष्म ऋतु के मध्य में।**

2. **पुण्य, मृगशिरा एवं अश्विनी नक्षत्र में** एंव चैत्र मूहर्त के समय **दिन में** संग्रह करें।
3. जब **पाण्डु वर्ण** के फलों में से मधु जैसी गंध आने लग जाए।
4. **संग्रह** – मदनफल को कुश पोट्टली में बांधकर **8 दिन/रात्रि तक धान्य राशि में रखें।**

1. मदनफल — श्रेष्ठ वामक — 133

पर्याय — मदन, करहाट, राठ, पिण्डीतक, फल, श्वसन (चरक)। मरूबक, शल्यक, नट, छर्दन, विषपुष्पक— **(भा.प्र.)**।

प्रयोज्यांग — फल पिप्पली (बीज) **मात्रा — 1 अन्तर्मुष्टी**

उपयोग — कफप्रसेक, ग्रन्थिज्वर, उदररोग, अरूचि में। **वमनार्थ** — मधु + सैंधानमक का प्रयोग।

प्रयोग कल्प — (1) नव कषाय से — 9 (2) मात्रा योग — 8 (3) फाणित, चूर्ण एवं नस्य प्रयोग— 1 — 1।
(4) मोदक, उत्कारिका, **लेह योग — 20,** (5) षाडव — 10 (6) पूप एवं भाश्कुली के प्रयोग — 16— 16।

2. जीमूतक कल्प — 39

पर्याय — गरागरी, वेणी, देवताडक, देवदाली (घघरबेल), वृत्तकोश, कर्कटी।
मात्रा — **1 शुक्ति चूर्ण (चर्णस्य पयसा शुक्तिं वातपित्तर्दितः पिबेत्) — (च. क. 2/7)**
प्रयोज्यांग — जीर्ण एवं शुष्क फल चूर्ण।
प्रयोग — ज्वर, श्वास, हिक्का एवं त्रिदोषघ्न।
प्रयोग कल्प — (1) षट् क्षीर योग — 6 (2) मात्रा योग — 8 और मात्रा — 1 कोल **(च. क. 2/11)**

3. इक्ष्वाकु कल्प — 45

पर्याय — लम्बा, कटुकालाबु, तुम्बी, कटुतुम्बी, पिण्डफला, फलिनी।
प्रयोज्यांग — फल, पुष्प, बीज।
प्रयोग — श्वास, कास, विष, वमन, ज्वर एवं कफज विकारों में।
इक्ष्वाकु का वर्धमान योग — इक्ष्वाकु के 50 बीजों से प्रारम्भ कर दोषानुसार प्रतिदिन 10—10 बीजों को बढ़ाते हुए मदनफलादि षडवामक द्रव्यों के क्वाथ में अलग—अलग भीगोकर छानकर पीये, जब तक कि 100 संख्या पूरी न हो जाये।

4. धामार्गव कल्प — 60

पर्याय — धामार्गव, कर्कोटकी, कोठफला, महाफलिनी, राजकोशातकी। घोषक, हस्तिघोषा, महाफला — (भा. प्र.)
प्रयोज्यांग — फल, फूल एवं कोमल पत्ते।
प्रयोग — **गरविष**, गुल्म, उदर, वातकफ के आश्रित कफज रोग।

5. वत्सक कल्प — 18

पर्याय — वत्सक, कुटज, शक्र, वृक्षक, गिरिमल्लिका (चरक)। पाण्डुरद्रुम, यवफल, बंसत, चक्रशाखी (भा.प्र.)।
— इसके बीज को **इन्द्रयव या कलिंगक** कहते हैं।
भेद — (2) — 1. पुरूष वत्सक — वृहत, फलः श्वेत पुष्पः स्निग्धपत्रः पुमान् भवेत।
2. स्त्री वत्सक — श्यामा चारूणापुण्या स्त्री फलवृन्तैस्तथाऽणुभिः।
मात्रा — **अन्तनखर्मुष्टि प्रमाण में।** **प्रयोज्यांग** — पक्व फल।
प्रयोग — रक्तपित्तकफघ्नस्तु + हृदयरोग, ज्वर, वातरक्त एवं **विसर्प** रोग में।

6. कृतवेधन कल्प — 60

पर्याय — (रक्तपित्त, कफजरोग) श्वेड़ कोशातकी, मृदंगफल।
प्रयोज्यांग — पत्र, फल, मूल, बीज **गुण** — अत्यन्त कटु, तीक्ष्ण, उष्ण।
प्रयोग — गम्भीर कुष्ठ, पाण्डु, प्लीहा, शोथ, गुल्म एवं गरबिष। **प्रयोग कल्प** — (1) क्वाथ योग — 22
कास रोग में कृतवेधन चूर्ण का प्रयोग इक्षुरस के साथ करना चाहिए। (च. क. 6/12)

✓ 8 मात्रा योग — मदनफल, जीमूतक, इक्ष्वाकु (MaJI)
✓ 1 नस्य (प्रेय) — मदनफल, इक्ष्वाकु + धामार्गव। (MEDha)
✓ 6 फलवर्ति योग — मदनफल, इक्ष्वाकु + कृतवेधन। (MEK)

✓ पिच्छा योग — कृतवेधन।
✓ कृशरा योग — वत्सक।

7. श्यामात्रिवृत्त कल्प – 110

विरेचन द्रव्यों में त्रिवृत्तमूल श्रेष्ठ है। **पर्याय** – श्यामा, त्रिवृत्ता, त्रिभण्डी, सरला, सुबहा, कोटरा, कूटरणा, सर्वानुभति।
प्रयोज्यांग – मूल

मात्रा – **अक्षमात्रं**

गुण – कषाय, मधुर, रूक्ष + **कटुविपाकी** + कफपित्त प्रशमन, वात प्रकोपक। **प्रयोग** – रक्त पित्त शामक।

भेद (2) – (1) अरूण – 10 योग, सुखविरेचक, सुकुमार व्यक्ति, मृदुकोष्ठ में।
(2) श्यामा – 100 योग, तीव्र विरेचक, बहुदोष में, क्रूर कोष्ठ में।

नोट :– श्यामा–त्रिवृत्त कल्पाध्याय में कल्याणक गुड, व्योषदिगुटिका, पथ्यादि मोदक एवं त्र्युषणादि चूर्ण का वर्णन है।

1. **कल्याणक गुड** :– प्रयोग – पुंसवन में, मुख्य द्रव्य – निशोथ – 8 पल,
   भैषज्यरत्नावली एवं चक्रदत्त के अनुसार कल्याण गुड का उपयोग – ग्रहणी में।
2. **व्योषदि गुटिका** :– **मात्रा** – 1 पल। **अनुपान** – शीतल जल, **उपयोग** – विषविकार, मूत्रविकार में।
3. **त्र्यूषणादि चूर्ण** :– **अनुपान** – मांसरस। उपयोग – गुल्म, पार्श्वशूल में – सर्व ऋतु योग्य
4. **ऋतु अनुसार विरेचन योग** :– 'शर्करा त्रिवृत्ता तुल्या ग्रीष्मकाले विरेचनम्'।

8. चतुरंगुल कल्प – 12

पर्याय :– आरग्वध, राजवृक्ष, शम्पाक, प्रग्रह, कृतमाल, कर्णिकार, अवघातक, सुवर्णक, स्वर्णभूषण, व्याधिघात, आरवेत।
गुण :– मृदु, मधुर, शीतल। **प्रयोज्यांग** – फल मज्जा।
प्रयोग :– बालक, वृद्ध, क्षतक्षीण, सुकुमार – सभी के लिए सेवनीय।
उपयोग :– ज्वर, हृदयरोग, वातरक्त एंव **उदावर्त** में। (ज्वर, हृदयरोग, वातरक्त एवं **विसर्प** में – वत्सक)।
संग्रहकाल – आश्विन माह पश्चात् पक्व एवं गुणवान फलों को प्रचुर मात्रा में 7 दिनों तक बालू में दबाकर रखते हैं
चतुरङ्गुल का प्रयोग हिम/फाण्ट कल्पना में करें।
विशेष :–4–12 वर्ष के बालक में **दाह, उदावर्त से पीड़ित होने पर** फलमज्जा को द्राक्षारस में घोलकर विरेचन हेतु पिलाए

9. तिल्वक कल्प – 16

पर्याय :– लोध्र, वृहत्फल, तिरीटक। क्रमुक, वृहत्पत्र, जीर्णपत्र – भाव प्रकाश।
भेद :– पठानी और शावर लोध्र। **प्रयोज्यांग** – मूल त्वक चूर्ण का प्रयोग। **मात्रा** :– 1 पाणितल।
विरोधभास – **चरक** – विड्भेदक (विरेचक)। **सुश्रुत** – स्तम्भक (मलावरोधक)।
तिल्वक कल्प अध्याय में **लोध्रचूर्ण** निर्माण विधि का वर्णन किया है।

10. सुधा कल्प – 20

(1) चरक :– **'महावृक्ष'** की संज्ञा दी है। (2) 'तीक्ष्ण विरेचन द्रव्यों में श्रेष्ठ' कहा है।
पर्याय :– स्नुक्, गुंद्रा, नन्दा, सुधा, निस्त्रिंश पत्रक, सेहुण्ड। सीमन्त दुग्धा, वज्रकंटक, नागद्रु, बहुशाखी, वज्रीगुडा।
चरकानुसार स्नुही क्षीर का शोधन बिल्वादि पंचमूल क्वाथ, बृहती क्वाथ या कण्टकारी के क्वाथ में किया जाता है।
भेद (2) :– (1) अल्पकण्टक – तीक्ष्ण। (2) बहु कण्टक – अल्पतीक्ष्ण – 'श्रेष्ठ'।
प्रयोग :– पाण्डु, उदर, गुल्म, कुष्ठ, **दूषीविष**, शोथ, **मधुमेह**। **संग्रह** :– शिशिर ऋतु के अंत में 2 या 3 वर्ष पुराने वृक्ष से।

11. सप्तला शंखनी कल्प – 39

पर्याय :– **सप्तला** – सप्तला, बहुफेनरसा, फेनिला, चर्मसह्वा। **शंखिनी** – शंखिनी, तिक्तला, यवतिक्ता, अक्षिपीडक।
गुण :– विकासी, तीक्ष्ण, रूक्ष।
प्रयोज्यांग :– सप्तला – मूल (मूलनी द्रव्य)। शंखिनी – अतिशुष्कफल (फलनी द्रव्य)।
प्रयोग :– कफप्रधानदोष में, गुल्म, गरविष, हृदय रोग में। **प्रयोग कल्प** – (1) मद्य योग – 5

12. दन्ती द्रवन्ती कल्प – 48

पर्याय :– **दन्ती** – उदुम्बर पर्णी, निकुम्भ, मुकूलक। **द्रवन्ती** – चित्रा, न्यग्रोधी, मूषिकपर्णी, मूषिकाह्वाया।
गुण :– तीक्ष्ण, उष्ण, आशुकारी, विकासी, गुरू।
प्रयोज्यांग – **दन्ती**– हस्तिदन्त सम मोटे (बहल) श्याम वर्ण के मूल का संग्रह। **द्रवन्ती** – ताम्रवर्ण के मूल का संग्रह
(जमालगोटा के बीज तैल को 'दन्ती' – तीक्ष्ण विरेचक कहा जाता है)

✓ अर्द्ध प्रस्थ द्राक्षा के साथ दन्तीमूल का क्वाथ बनाकर प्रयोग करने पर **पित्तज कास एवं पाण्डु नाशक** हो जाता है।
✓ दन्तीमूल कल्क और गुड दोनों सम मात्रा में शीतल जल के साथ प्रयोग करने पर **उत्तम कामला नाशक** होता है।

(1) **'दन्ती द्रवन्ती कल्पेऽस्मिन् प्रोक्ताः षोडशकास्त्रयः'। (च. क. 12/36) – (कुल 16x3 = 48 योग)**
(2) अपक्वं वमन दोषं **पन्चमानं विरेचनम्**। निहर्रत् वमनस्यातः पाकं न प्रतिपालयेत। – वमन औषध बिना पचे ही दोष को बाहर निकालती है और विरेचन औषध जब पचने लगती है तब दोषों को निकालती है।
(3) **नातिस्निग्ध शरीराय दद्यात् स्नेहविरेचनम्।** (4) **स्नेहोत्क्लिष्ट शरीराय रूक्षं दद्यात् विरेचनम्।**

'द्रव्य प्रमाणं तु यदुक्तम् अस्मिन् मध्येषु तत् कोष्ठवयोबलेषु। – कल्पस्थान में विधित् औषध योगों में जो कर्ष पल आदि द्रव्य प्रमाण बतलाये गये हैं उन्हें **मध्यकोष्ठ, मध्यवय और मध्यबल** वाले को लक्ष्य करके कहा गये हैं।

स्नेह पाक कल्पना

औषध प्रमाण :– (1) औषध मात्रा का उल्लेख न रहने पर 'सम मात्रा' और आर्द्र औषधियां दुगनी मात्रा में लेनी चाहिए।
स्नेह निर्माण :– (1) द्रव – नामोल्लेख न रहने का 'जल' और पाद का अर्थ 'चतुर्थांश' समझना चाहिए।
स्नेह कल्पना :–'तत्र स्यात् औषधात् स्नेहः स्नेहात् तोयं चतुर्गुणम्। – (कल्क : स्नेह : जल – ¼ : 1 : 4)

स्नेहपाक के भेद–3–
(1) मृदु पाक – तुल्ये कल्केन निर्यासे भेषजानां मृदुः स्मृतः।
(2) मध्य पाक – संयाव इव निर्यासे मध्यो दर्वी विमुन्चति।
(3) खर पाक – शीर्यमाणे तु निर्यासे वर्तमाने खरस्तया।।

स्नेह पाक उपयोग :– 'खरोऽभ्यङ्गे स्मृतः मृदुः नस्तः। मध्यपाकं तु पानार्थे बस्तौ च विनियोजयेत्।।

स्नेहपाक	**चरक**	**सुश्रुत**
1. मृदुपाक	नस्य	भोजन, पानार्थ
2. मध्य पाक	पानार्थ, वस्ति	नस्य, अभ्यंग
3. खर पाक	अभ्यंग	वस्ति, कर्णूपरण

मान

मानं च द्विविधं प्राहुः कालिंगः मागधं तथा। कालिंग मागधं श्रेष्ठमेवं मानविदो विदुः।
द्विविध मान – (1) कालिंग मान (2) मागध मान – श्रेष्ठ।

चरकोक्त मान :–

6 ध्वंशी	– 1 मरीचि		**2 कर्ष**	–	**1 शुक्ति**
6 मरीचि	– 1 सर्षप		**2 शुक्ति**	–	**1 पल**
8 सर्षप	– 1 तण्डुल		**2 पल**	–	**1 प्रसृत**
2 तण्डुल	– 1 धान्यमाष		**2 प्रसृत**	–	**1 कुडव**
2 धान्यमाष	– 1 यव		**4 कुडव**	–	**1 प्रस्थ**

(DM ST धान्य – 6 6 8 2 2) (कर्ष SP Passout किया – 2 2 2 2 4)

4 यव	– 1 अण्डिका	4 प्रस्थ	–	1 आढक
4 अण्डिका	– 1 माषक	4 आढक	–	1 द्रोण
3 माषक	– 1 शाण	2 द्रोण	–	1 शूर्प
2 शाण	– 1 कोल	2 शूर्प	–	1 भार/वाह
2 कोल	– 1 कर्ष			

(YAM शाण काला – 4 4 3 2 2) (PAD से – 4 4 2 2 वाह)

मान	चरकानुसार मान के पर्याय
वंशी –	ध्वंशी, त्रसरेणु।
माषक –	हेम, धान्यक, माषक।
शाण –	टंक, निष्क, कला, धरण।
कोल –	बंदर, क्षुद्रक, द्रंक्षण, वटक।
कर्ष –	अक्ष, उदुम्बर, तिन्दुक, बिडालपदक, कवलग्रह, पिचु, पाणितल, करमध्य, हसंपाद, सुवर्ण, षोडशी।
शुक्ति –	अर्द्धपल, अष्टमिका।
पल –	प्रकुंच, आम्र, बिल्व, मुष्टि, षोडशिका, चतुर्थिका।
कुडव –	कुडव, अंजलि, अर्धशरावक, अष्टमान।
शराव –	शराव, मानिका, अष्टपल।
आढक –	भाजन, कंसपात्र, आढक।
द्रोण –	द्रोण, घट, कलश, उन्मान, राशि, नल्वण।
शूर्प –	शूर्प, कुम्भ।
द्रोणी –	खारी, भार, गोणी, वाह।

VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER BHOPAL BY. DR. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

1. कल्पना सिद्धि अध्याय

स्नेहकाल मर्यादा :– त्र्यहावरं सप्तदिनं परं तु स्निग्धो नरः स्वेदयितव्य उक्तः। (च. सि. 1/6)
कम से कम – 3 तीन, अधिक से अधिक – 7।
7 दिन से अधिक स्नेह नहीं करना चाहिए। क्योंकि 7 दिन के बाद स्नेहन सात्म्य हो जाता है।

स्नेहन का फल :– 'स्नेहोऽनिलं हन्ति मृदुकरोति देहं मलानां विनिहन्ति संगम्।' (च. सि. 1/7)
1. स्वेदन से पूर्व – स्नेहन कराया जाता है – दोष का द्रवीकरण – दोषों का बर्हिगमनोन्मुख होना।
2. वमन से पूर्व – कफ उत्क्लेश आहार का सेवन (ग्राम्य एवं आनूप मांस + दूध)
3. विरेचन से पूर्व – पित्त उत्क्लेश आहार का सेवन (जांगल मांस + घी तैलयुक्त यूष)

'श्लेष्मोत्तरश्छर्दयति ह्यदुःखं विरिच्यते मन्दकफस्तु सम्यक्।' (च. सि. 1/9)
1. शरीर में कफ की अधिकता – बिना कष्ट के वमन।
2. शरीर में कफ की कमी – सुखपूर्वक विरेचन।

'अधः कफेऽल्पे वमनं विरेचयेद् विरेचनं वृद्धकफे तथोर्ध्वम्। (च. सि. 1/9)

वमन–विरेचन के बाद संसर्जन क्रम :–
'पेयां विलेपीमकृतं कृतं च यूषं रसं त्रिर्द्विरथैकशश्च। क्रमेण सेवेत विशुद्धकायः प्रधानमध्यावरशुद्धिशुद्ध। (च. सि. 1/11)
क्रमश :– पेया → विलेपी → अकृत यूष → कृत यूष → अकृत मांसरस → कृत मांसरस।
1. प्रधान शुद्धि – 3 अन्नकाल 7 दिन 12 अन्न।
2. मध्य शुद्धि – 2 अन्नकाल 5 दिन 8 अन्न।
3. हीन शुद्धि – 1 अन्नकाल 3 दिन 4 अन्न।

–: वमन–विरेचन शुद्धि बोधक सारणी :–

वमन	वेग	वाम्य द्रव मात्रा = वमनं विरेकादार्ध	आन्तिकी
1. जघन्य शुद्धि	4 वेग	1 प्रस्थ	पित्तान्त
2. मध्यम शुद्धि	6 वेग	1½ प्रस्थ	पित्तान्त
3. प्रवर शुद्धि	8 वेग	2 प्रस्थ	पित्तान्त

विरेचन	वेग	वाम्य द्रव मात्रा	आन्तिकी
1. जघन्य शुद्धि	10 वेग	2 प्रस्थ	कफान्त
2. मध्यम शुद्धि	20 वेग	3 प्रस्थ	कफान्त
3. प्रवर शुद्धि	30 वेग	4 प्रस्थ	कफान्त

सम्यक् वमन :– क्रमात् कफः पित्तमथानिलश्च यस्यैति सम्यग्वमितः स इष्टः।
हृत्पार्श्वमूर्धेन्द्रियमार्ग शुद्धौ तथा लघुत्वेदपि च लक्ष्यमाणे।। (च. सि. 1/15)

असम्यक् वमन :– 'दुश्छर्दिते स्फोटककोठकण्डू हृत्खाविशुद्धिः गुरुगात्रता'। (च. सि. 1/16)

वमन अतियोग :– तृणमोहमूर्च्छानिलकोप निद्राबलादिहानिः वमनेऽति च स्यात्। (च. सि. 1/17)
1. **सम्यक् विरेचन :–** स्रोत्रोविशुद्धीन्द्रियसम्प्रसादौ, प्राप्तिश्च विट्पित्तकफनिलानां सम्याग्विरिक्तस्य भवेत् क्रमेण।
2. **दुर्योग विरेचन :–** स्यात् श्लेष्मपित्तानिलसम्प्रकोपः, प्रतिश्याय, तन्द्रा, छर्दि, अरोचक।
3. **विरेचन अतियोग :–** कफ, रक्त, पित्त क्षय से वायु प्रकोप।

वमन–विरेचन के पश्चात् :– 9 वे दिन सर्पिपान/अनुवासन बस्ति देनी चाहिए।
अनुवासन के बाद वस्ति :– 9 वे दिन अनुवासन → 3 दिन तैलाभ्यंग करने के पश्चात् → निरूह बस्ति देनी चाहिए

"अनुवासन बस्ति प्रयोगकाल"

"शीते बसन्ते च दिवाऽनुवास्यो रात्रौ शरदग्रीष्मघनागमेषु। (च. सि. 1/12)"

1. शीत (हेमन्त, शिशिर) एवं बंसत ऋतु में :– दिन में। **2. शरद, ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु में :–** रात्रि में।

वस्ति संख्या :–1. K विकार में – 1 या 3। 2. P विकार में – 5 या 7 3. V विकार में – 9 या 11।
'बस्तीन् अयुग्मान कुशलो विदध्यात् – बस्तियाँ विषम संख्या में ही दें।

निरूह और विरेचन का परस्पर विरामकाल :– 'नरो विरिक्तस्तु निरूहदानं विवर्जयेत् सप्तदिनान्यवश्यम्'।
विरेचन के बाद 7 दिन तक निरूह और निरूह के 7 दिन बाद तक विरेचन का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

निरूह बस्ति के गुण :–
1. बस्तिः वयःस्थापयिता। 2. सुखायु,बलाग्निमेधास्वरवर्णकृच्च **3. सर्वार्थकारी** 4. शिशूवृद्धयूनां निरत्ययः।
5. विट्श्लेष्मपित्तानिलमूत्रकर्षी 6. शुक्रबलप्रदश्च। 7. सर्वान् विकारान् शमयेत् निरूहः। **(च.सि. 1/28)**

अनुवासन बस्ति के गुण :–
1. स्नेहनं वर्णबलप्रदं 2. तैल – स्नेह, गुरु, उष्ण होने से विशेषकर वातशामक।
3. मनःप्रसादं वीर्य बल वर्णमथाग्नि पुष्टिमं। 4. काले समान पुष्पफलप्रदश्च। – सन्तानदायक होती है।

बृहंण बस्ति का निषेध :– कुष्ठ, प्रमेह, अरोचक, तन्द्रा, श्लीपद एवं मेदस्वी पुरुषों में।
निरूह बस्ति का निषेध :– राजयक्ष्मा, उरःक्षत, शतक्षीण, मूर्च्छा रोगी एवं अत्यंत दुर्बल जिसका जीवन मलाश्रित हो।

बस्ति की प्रधानता :– 1. कायचिकित्सा में वस्ति **अर्द्ध चिकित्सा** कहलाती है।
2. शाखा, रोग, कोष्ठ, मर्म एवं अर्ध या सर्वांग में होने वाले वातजन्य विकारों को नष्ट करती है – वस्ति।

बस्ति की परिभाषा :– नाभिप्रदेश कटिपार्श्वकुक्षि गत्वा शकृत दोषचयं विलोड्य।
संस्नेह्य कायं सपुरीषदोषः सम्यक् सुखेनैति च यः स बस्तिः।। (च. सि. 1/40)

निरूह बस्ति अतियोग :– विरेचन के अतियोग सम लक्षण।
अनुवासन अतियोग :– **हल्लासमोहक्लमसादमूर्च्छा विकर्तिका चात्यनुवासितस्य। (च. सि. 1/45)**

प्रत्यागमन काल :– (1) अनुवासन बस्ति में = 3 याम/प्रहर (9 घण्टे) (2) निरूह बस्ति में = 1 मूर्हत (48 मिनिट)।

1. कर्म बस्ति	:– (30)	(1 + 12 + 12 + 5)	–	1 अनुवासन + 12 निरूह + 12 + 5 अनु.।
2. काल बस्ति	:– (16)	(1 + 6 + 6 + 3)	–	1 अनुवासन + 6 निरूह + 6 + 3 अनु.।
3. योग बस्ति	:– (8)	(1 + 3 + 3 + 1)	–	1 अनुवासन + 3 निरूह + 3 + 1 अनु.।

शिरोविरेचन :– सर्वप्रथम शिरः प्रदेश का स्वेदन करे।
1. प्रबल दोष में – 3 नस्य **(उत्तम)** 2. मध्य दोष में – 2 नस्य **(मध्य)** 3. अल्प दोष में – 1 नस्य **(हीन)**।
1. सम्यक् योग – उरःशिरोलाघवं इन्द्रियाच्छयं स्रोतोविशुद्धिश्च भवेद् विशुद्धे। (च. सि. 1/51)
2. अयोग में – गलोपलेपः **शिरसो गुरूत्वं** निष्ठीवनं चाप्यथ दुर्विरिक्ते।
3. अतियोग में – शिरोऽक्षिशंख श्रवणार्ति तोदावत्यर्थशुद्धे **तिमिरं** च पश्येत्। (च. सि. 1/52)

अपथ्य :– अत्यधिक बैठना/खड़े रहना, ज्यादा बोलना, सवारी, दिवास्वप्न, मैथुन, वेगविधारण एवं शीतोपचार, आतप, शोक या क्रोध करना और अकाल में अहित भोजन करना। (च. सि. 1/54)
द्वि परिहरार काल :– पंचकर्म में जितना समय लगता है उससे **दुगने समय तक उपर्युक्त अपथ्य का परित्याग** करें।

2. पंचकर्म सिद्धि

अचिकित्स्य रोगी :– चण्डः साहसिको भीरू कृतहनो व्यग्र एवं च। **चिकित्स्य रोगी** :– सज्जन, श्रद्धालु व वैद्यादेश पालक

1. अवम्य रोगी :– क्षतक्षीण, अतिस्थूल, अतिकृश, बालक, वृद्ध दुर्बल, श्रान्त, क्षुधित, पिपासित, कर्म, भार अध्व हत, उपवास मैथुन अध्ययन व्यायाम चिन्ताप्रसक्त, क्षाम, गर्भिणी, सुकुमार।

संवृत्तकोष्ठ, दुर्श्छदन, उर्ध्वरक्तपित्त, प्रसक्त छर्दि, उर्ध्ववात, अस्थापित, अनुवासित, हृदयरोग, उदावर्त, मूत्राघात, गुल्म, प्लीहा, उदर, अष्ठीला स्वरभेद, तिमिर, शंखक, शिरःशूल, कर्णशूल, नेत्र शूल रोगी में वमन न करे।

–: गरविष, विरुद्ध एवं अजीर्ण में निषेध स्थिति होने पर भी वमन दिया जाता है।

❖ **मूत्राघात में वमन कराने से तीव्रतर शूल और हृद्रोग में वमन कराने से हृदयोपरोध हो जाता हैं।**

2. अविरेच्य रोगी :– सुभगक्षतगुद, मुक्तनाल, अधोगरक्तपित्त, अजीर्ण, नव ज्वर, मदात्य, आध्मान, अन्तःशल्य एवं आघातजन्य रोगी में। – **अतिस्निग्ध, अतिरूक्ष और अतिक्रूर कोष्ठी में भी विरेचन निषेध है।**

❖ **नवज्वर' में विरेचन देने से वात दोष प्रकुपित होता हैं।**

3. अनास्थाप्य रोगी :– अजीर्ण, पीतस्नेह, वमन व विरेचनोपरान्त, नस्य पश्चात, कास, श्वास, हिक्का, **बद्धोदर,** छिद्रोदर, जलोदर, अलसक, विसूचिका, आमदोष, सूतिकारोग, मधुमेह व कुष्ठ में निषेध।

❖ **नवज्वर, पाण्डु तथा प्रमेह में निरूह बस्ति देने से मंदाग्नि हो जाती हैं।**

4. अननुवास्य रोगी :– **जो रोगी निरूहवस्ति निषिद्ध हैं वहे अनुवासन हेतु भी निषिद्ध है।**
नवज्वर, पाण्डु, कामला, प्रमेह, अर्श, प्रतिश्याय, अरोचक, वर्चोभेद, विष, पित्तज व कफज अभिष्यन्द, शलीपद, गलगण्ड, अपची व उदरस्थ कृमियों में।

5. अशिरोविरेच्य रोगी :– अजीर्ण तत्काल भोजन के पश्चात, स्नेहपान, मद्यपान व जलपानोपरान्त शिर से स्नानोपरान्त एवं **नूतन प्रतिश्याय में** निषेध।

नस्य देने का काल :– **प्रावृट् शरद बंसन्ते अत्ययिकेषु रोगेषु नावनं कुर्यात्।** – प्रावृट्, शरद और बंसत ऋतु में (PCB)

चरकानुसार		वाग्भट्टानुसार	
1. **ग्रीष्म –**	**पूर्वाहे**	ग्रीष्म –	अपराहन्त में।
2. शीते –	मध्याहे	शीत में –	मध्याहे।
3. वर्षा –	दुर्दिन को छोड़कर	**बसंत और शरद –**	**पूर्वाह में।**

3. वस्ति सूत्रीयां सिद्धि

परीक्ष्य विषय :– दोष, औषध, देश, काल, सात्म्य, अग्नि, सत्व, ओक, वय, बल आदि 10 वस्ति में परीक्ष्य विषय है।

वस्ति नेत्र घटक द्रव्य :– स्वर्ण, रजत, ऋजु, ताम्र, रीति, कांस्य, अस्थि, शस्त्र, द्रुम, वेणु, दांत, नल, विषाण, सींग और मणियों से वस्ति नेत्र बनाना चाहिए।

<u>नेत्र वस्ति प्रमाण</u>

चरक	सुश्रुत	वाग्भट्ट
6 वर्ष – 6 अंगुल (मूंग)	1 वर्ष – 6 अंगुल (मूंग)	1 वर्ष – 5 अंगुल (1 अंगुल)।
✓ 12 वर्ष – 8 अंगुल (कलाय)	**8 वर्ष – 8 अंगुल (माष)**	1–6वर्ष – 6 अंगुल (मूंग)।
20 वर्ष – 12 अंगुल (कर्कन्धु)	16 वर्ष – 10 अंगुल (कलाय)	**7 वर्ष – 7 अंगुल (माष)।**
	25 वर्ष – 12 अंगुल (कोलस्थि)	12 वर्ष – 8 अंगुल (शुष्ककलाय)
		16 वर्ष – 9 अंगुल (क्लिन्नकलाय)
		20 वर्ष – 12 अंगुल (कर्कन्धु)।

वस्ति मूल :– अंगुष्ठ प्रमाण।
वस्ति अग्र :– कनिष्ठिका प्रमाण।

वस्ति नेत्र प्रमाण :– **'ऋजूनि गोपुच्छसमाकृतानि श्लक्ष्णानि च स्युः गुडिकामुखानि'। (च. सि. 3/09)**
वस्तिनेत्र में कर्णिकाएँ :– 3 – अग्र चतुर्थ भाग में 1 + मूल में बस्तिनिबन्धन हेतु – **2।**
वस्ति :– वृद्ध बैल/भैस की हरिण, सूअंर या बकरे की बस्ति।

निरूह वस्ति की विधि :– प्रशस्तनक्षत्र मुहूर्तयोगे **जीर्णान्नमेकाग्रमुपक्रमेत्। (च. सि. 3/12)** – अन्न के जीर्ण होने पर

❖ अति लवण युक्त बस्ति देने पर वह दाह और अतिसार उत्पन्न करता है।

वामपार्श्व शयन :– वाम पाद को सीधा फैलाये दाहिने पैर को मोड़कर रखे। – अग्नि→ ग्रहणी → गुदा – वाम भाग मे।

1. पुरूष में – **'वामपार्श्व शयन'** में वस्ति दे। **(च सि. 3/24)** 2. स्त्री में – **'न्युब्ज अवस्था'** में वस्ति दे।

वस्ति में औषधों के मिलाने का क्रम :– 'पूर्व हि दद्यान्मधु सैन्धवं तु स्नेहं विनिर्मथ्य ततोऽनुकल्कम्। (च. सि. 3/23)

मधु → सैंधव लवण + स्नेह (घृत तैल) → कल्क में → क्वाथ द्रव्य में डालकर वस्ति यंत्र द्वारा प्रयोग करे।

(मधु → लवण → स्नेह → कल्क → क्वाथ – वाग्भट्ट)।

निरूह वस्ति/आस्थापन वस्ति/शोधन वस्ति :– निरूह वस्ति में एक बार में अधिकतम 3 बार देना चाहिए।

'एकोऽपकर्षत्यनिलं स्वर्मागात् पित्तं द्वितीयस्तु कफं तृतीयः। (च. सि. 3/26)'

1. प्रथम देय वस्ति – स्वमार्ग से वायु को बाहर निकालती है।
2. द्वितीय बार देय वस्ति – पित्त को बाहर निकालती है।
3. तृतीय बार देय वस्ति – कफ को बाहर निकालती है।

निरूहवस्ति पश्चात् :– 'प्रत्यागते कोष्ठे जलावसिक्तः शाल्यन्नमद्यात्तनुना रसेन'। (च. सि. 3/27)

निरूह वस्ति के प्रत्यागमन के बाद सुखोष्ण जल से स्नान कर पतले मांसरस के साथ शालिचावल का भात खाये।

निरूह वस्ति के घटक :– औषध द्रव्यों का क्वाथ – 1/5 भाग = 2.5 प्रसृत।

1. वातज विकृति में स्नेह – ¼ भाग = 3 प्रसृत
2. पित्तज विकृति में स्नेह – 1/6 भाग = 2 प्रसृत
3. कफज विकृति में स्नेह – ⅛ भाग = 1½ प्रसृत

–: 24 पल (द्वादश प्रसृत) की निरूह वस्ति के घटक :–

छोष	क्वाथ	कल्क	स्नेह	मधु	सैंधव
1. वातज	5 प्रसृत	1 प्रसृत	3 प्रसृत	1½ प्रसृत	1½ प्रसृत
2. पित्तज	5 प्रसृत	1 प्रसृत	2 प्रसृत	2 प्रसृत	2 प्रसृत
3. कफज	5 प्रसृत	1 प्रसृत	1½ प्रसृत	3 प्रसृत	1½ प्रसृत

निरूह वस्ति की मात्रा :–

1 वर्ष में	=	½ प्रसृत।
1 – 12 वर्ष तक	=	Age/2 प्रसृत।
12 – 18 वर्ष तक	=	Age – 6 प्रसृत।
18 से 70 वर्ष तक	=	12 प्रसृत।
70 से 100 वर्ष तक	=	10 प्रसृत।

निरूह वस्ति की उत्तम मात्रा :– 24 पल। (12 प्रसृत = 96 तोला)

अनुवासन वस्ति की उत्तम मात्रा :– 6 पल। (3 प्रसृत = 24 तोला)

दोषानुसार निरूह वस्ति :– वात – 1 पित्त – 2 कफ – 3।

✓ निरूह वस्ति की मात्रा अनुवासन से 4 गुनी होती है। (मनुष्यों में)

✓ निरूह वस्ति की मात्रा अनुवासन से 8 गुनी होती है। (जानवरों में)

✓ सर्वसंसर्गकृत रोगों में – पुर्ननवादि निरूह वस्ति देते हैं।

निरूह वस्ति पश्चात् पथ्य : –

(1) वातज रोगों में – मांसरस।
(2) पित्तज रोगों में – पय (दुग्ध)।
(3) कफज रोगों में – यूष।

अनुवासन वस्ति का योग :–

(1) वातज रोगों में – बिल्व तैल से।
(2) पित्तज रोगों में – जीवनीयगण सिद्ध स्नेह से।
(3) कफज रोगों में – मदनफल साधित तैल से।

4. स्नेह व्यापद सिद्धि

अनुवासन / स्नेह / शमन / बृंहण बस्ति :– अनुवासन बस्ति – प्रतिदिन सेवनीय वस्ति।

गुण :– (1) क्षीणशुक्रस्य चातीव स्नेहबस्तिर्बलप्रदः **(2) जनयेत् प्रजानां च प्रजां स्त्रीणां तथा नृणाम्। (च. सि. 4/24)**

स्नेह बस्ति व्यापद :– 6

(1) वातावृत (2) पित्तावृत (3) कफावृत (4) पुरीशावृत (5) अत्य नावृत (6) अभुक्त स्नेहवस्ति।

✓ स्नेह बस्ति पित्तावृत होने पर – दाह, राग, तृष्णा, मोह, ज्वर और तमक श्वास हो जाता है।

✓ स्नेह बस्ति अन्नावृत होने पर – छर्दि, मूर्च्छा, अरूचि, ग्लानि, शूल, निद्रा और अंगमर्द हो जाता है।

अनुवासन बस्ति पश्चात् कर्म :–

1. **'युक्त स्नेहं द्रवोष्णं च लघु पथ्योपसेवनम्।** – व्यक्ति को स्नेह युक्त द्रव, उष्ण एवं सुपाच्य आहार देवें।
2. **'भुक्तवान् मात्रया भोज्यमनुवास्यः त्र्यहात् त्र्यहात्।** – भोजन पश्चात् उसे 3– 3 दिन पर अनुवासन दे।

मात्रा बस्ति :–**'कर्मव्यायामभाराध्वया नस्त्रीकर्षितेषु च। दुर्बले वातभग्ने च मात्राबस्तिः सदा मतः'।। (च. सि. 4/52)**

मात्रा बस्ति की मात्रा :–

(1) चरक – यथेष्टाहारचेष्टस्य सर्वकालं निरत्ययः। ह्रस्वायाः स्नेहमात्राया मात्राबस्तिः समो भवेत्। (च. सि. 4/53)
सर्वकाल उपद्रव रहित – मात्रा बस्ति की मात्रा – स्नेहपान की **ह्रस्व** मात्रा।

(2) सुश्रुत – तत्रापि निकल्पोऽद्यार्थे मात्रावकृष्टोऽपरिहार्यो मात्रा वस्तिरिति।
अनुवासन वस्ति का ¼ भाग मात्रा वस्ति होती है (मात्रा वस्ति = 1½ पल = 6 तोला)

5. नेत्रबस्ति व्यापद सिद्धि

	चरक	सुश्रुत	काश्यप
1. **बस्ति** दोष –	8	5	9
2. बस्ति **नेत्र** दोष –	8	[illegible]	6
3. बस्ति **दाता** दोष –	10	6	10

शिथिल बन्ध :– बस्ति दोष (सुश्रुत), बस्तिनेत्र दोष (चरक)।

6. वमन विरेचन व्यापत् सिद्धि

ऋतु विभाग :– (1) साधार ऋतुएं – प्रावृट, शरद, बंसत। (2) विशेष ऋतुएं– ग्रीष्म, वर्षा, हेमन्त।

संशोधन योग्य ऋतुएं :–

1. प्रावृट्	–	**शुचि, नभ**	–	बस्ति कर्म।
2. शरद	–	**ऊर्ज, सह**	–	विरेचन कर्म।
3. बसंत	–	**तपस्य, मधु**	–	वमन कर्म।

संशोधन के पूर्व स्नेहन स्वेदन तथा अंत में 'शमन स्नेह' का प्रयोग करना चाहिए।

(1) 'विसर्प पिडका शोफ कामला पाण्डु रोगिणः। अभिघात विषार्तांश्च नातिस्निग्धान विरेचयेत्। (च. सि. 6/8)
विसर्प, पिडका, शोथ, कामला, पाण्डु रोगी तथा अभिघात/विष से पीड़ित रोगियों का अतिस्नेहन हो गया तो उन्हें विरेचन नहीं देना चाहिए।

(2) **नातिस्निग्धशरीराय दद्यात् स्नेहविरेचनम्।** जो अतिशत रूप से स्निग्ध हो तो उसे स्नेह विरेचन नहीं देना चाहिए।
स्नेहोत्क्लिष्टशरीराय रूक्षं दद्यात् विरेचनम्। स्नेह प्रयोग से उक्लिष्ट दोष निकलने हेतु रूक्ष विरेचन देना चाहिए।

संशोधन पूर्व आहार –

(1) वमन से पूर्व – कफवर्धक, सुपाच्य, द्रव्य प्रधान आहार – 1 दिन पूर्व।
(2) विरेचन से पूर्व – लघु और शीतल भोजन। – 1 दिन पूर्व।

स्नेहन स्वेदन के बिना संशोधन औषधि लेने से – **8 व्यापियां** होती है।

वमन विरेचन व्यापद :– **चरक – 10, वाग्भट्ट – 12, सुश्रुत – 15।**

(1) अयोग जन्य – आध्मान, स्राव, हृदयग्रह, अंगग्रह, **स्तम्भ**, उपद्रव, क्लम।
(2) अतियोग जन्य – परिकर्तिका, **जीवादान, गुदभ्रंश। – पिच्छा वस्ति प्रयोग।**

अजीर्ण में संशोधन – अजीर्णे वर्धते ग्लानिर्विबन्धश्चापि जायते। पीतं संशोधनं चैव विपरीतं प्रवर्तते।। (च. सि. 6/14)
अजीर्ण में संशोधन करने पर ग्लानि और विबन्ध हो जाता है। यदि वमन द्रव्य पिलाया जाएगा तो उसे विरेचन होगा एवं विरेचन द्रव्य पिलाने पर वमन होगा।

7. वस्ति व्यापद सिद्धि

निरूह वस्ति व्यापद दोष :— चरक — 12 सुश्रुत — 9।

(1) अयोग (2) अतियोग (3) आध्मान (4) क्लम **(5) हिक्का** (6) हत्प्राप्ति
(7) उर्ध्वगमन **(8) प्रवाहिका** **(9) शिरः शूल** (10) अंगमर्द (11) परिकर्तिका (12) परिस्राव।

1. अयोग में प्रमथ्या एवं फलवर्ति का प्रयोग करते है।
2. परिस्राव में रक्तपित्तनाशक तथा अतिसार नाशक चिकित्सा करें।

आध्मान, परिकर्तिका, क्लम — वमन विरेचन एवं निरूह व्यापद।
जीवादान — वमन, विरेचन व्यापद।
हिक्का, शिरःशूल — निरूह व्यापद।

8. प्रासृत योगीया सिद्धि

1 प्रसृत = 2 पल = 8 तोला होता है।

सुकुमार और कर्म विलुप्त :— व्यक्तियों के लिए 'प्रसृत प्रमाण में निरूह एवं अनुवासन वस्तियों का निर्देश है।

पंचप्रासृतिक वस्ति :— दुग्ध — 2 प्रसृत + मधु, घृत, तैल — 1–1 प्रसृत। — वातनाशक, वल्य और वर्णवर्धक बस्ति है।

अतिसार के 36 भेद — 2–2 दोषों के संसर्ग से अतिसार के 30 भेद होते हैं और पृथक्–पृथक् जो 6 अतिसार होते हैं उन्हें जोड़कर अतिसार के 36 भेद बताए हैं। (1) आमतिसार में वस्ति निषिद्ध है। 'बस्तिरामे हि प्रतिषिध्यते।'

9. त्रिमर्मीय सिद्धि

मर्म संख्या :— **सप्तोत्तरं मर्मशतम् अस्मिन् शरीरे स्कन्ध शाखा समाश्रित।** शरीर में स्कन्ध और शाखाश्रित 107 मर्म है

मर्मों में होने वाली विशेष पीड़ा का कारण :— चेतना निबन्ध वैशेष्यात्।

विशेष महत्व :— शाखाश्रित → स्कंधाश्रित — त्रिमर्म (हृदय, वस्ति, शिर) सद्यः प्राणहर मर्म स्कन्ध में ही होते हैं।

(1) हृदय — 10 धमनिया, प्राण, अपान + मनु, बुद्धि, चेतना, सूक्ष्ममहाभूत का आश्रय स्थान।
(2) शिर — ज्ञानेन्द्रियां, कर्मेन्द्रिय तथा प्राणवह स्रोतसों का आश्रय स्थान।
(3) वस्ति — वस्ति, स्थूलगुद, अण्डकोष, सेवनी, शुक्रवह तथा मूत्रवह स्रोत्रस के मध्य में —
मूत्र और जलवह स्रोत्रों का आधार वस्ति है।

—: मर्माभिघात लक्षण :—

(1) हृदय :— कास, श्वास, बलक्षय + कण्ठशोष, मुखतालु शोष, जिह्वाविभ्रंश क्लोमभाकर्षण
+ उन्माद, अपस्मार, प्रलाप, चित्तनाश।
(2) शिर :— मन्यास्तंभ, अर्दित + चक्षुविभ्रम, अक्षिनिमीलन, गण्डस्पन्दन, जृम्भा, लालास्राव, मूकत्व, गदगदत्व, स्वरभेद,
+ कास श्वास हनुग्रह **+ चेष्टानाश, मोह।**
(3) वस्ति :— वातमूत्रवर्चोनिग्रह, वंक्षणमेहनवस्ति शूल, वस्तिकुण्डल, वातष्ठीला, वस्तिस्तम्भन, नाभिकुक्षिगुदश्रोणि ग्रह,
+ गुल्म, उदावर्त।

(1) विशेषतोऽनिलाद् रक्षयाणि — मर्मस्थानों की रक्षा प्रधानरूप से वायु से करनी चाहिए।
(2) तस्मात् न बस्तिसमं किन्चित् कर्म मर्मपरियालनमति। — मर्मो की रक्षा में 'बस्तिकर्म चिकित्सा' की प्रधानता रहती है।

तन्द्रा :— प्रकुपित **वायु कफ** को चंचल बनाकर उसे लेकर हृदय को आक्रान्त कर हृदयस्थ चेतनावाही स्रोत्र एवं ज्ञान आदि को अच्छादित कर देती है तो 'तन्द्रारोग' की उत्पत्ति होती है।

लक्षण — (1) हृदय में व्याकुलता (2) वाक्चेष्टेन्द्रिय गौरव (3) मनोबुद्धि प्रसन्न न रहना।

चिकित्सा — संशोधन, शमन चि., व्यायाम, रक्तमोक्षण, कटु, तिक्त रस का सेवन।

अपतन्त्रक :— प्रकुपित वात → उर्ध्वगति →हृदय (पीड़ा)→ सिर, शंख में पीड़ा शरीर धनुषवत टेढ़ा → अपतन्त्रक।
'कृच्छ्रेण च उच्छसिति स्तब्धोऽथ निमीलकः। **कपोत इव कूजेच्च** निःसंज्ञ सोऽपतन्त्रकः।

(अपतन्त्रक — वायु, कफ, अपतानक — वायु — दारूण रोग)

अपतानक :— **'दृष्टि संस्तम्भ्य संज्ञां च हत्व कण्ठेन कूजति।** रोगी के नेत्र को वायु जकड़कर ज्ञान को नष्टकर अव्यक्त शब्द उत्पन्न करती है। **'हृदि मुक्ते नरः स्वास्थ्यं याति मोहं वृते पुनः।'** — जब वायु हृदय से निकल जाती हैं। तो रोगी स्वस्थ का अनुभव करता पुनः वायु के हृदय में जाने पर रोग का दौरा हो जाता है।

वस्ति रोग

1. चरक :– **वस्ति रोग/मूत्र दोष – 13,** मूत्राघात – 8, मूत्रकृच्छ्र – 8।
2. सुश्रुत :– **मूत्राघात** – 12, मूत्रकृच्छ्र – 8।
   ✓ सुश्रुत ने चरकोक्त मूत्र दोष वस्तिकुण्डल नहीं माना है एवं मूत्रकृच्छ्र के स्थान पर मूत्रशुक्र बतलाया हैं।
3. वाग्भट्ट :– **मूत्राघात – 20** (बस्तिदोष – 12 + मूत्रकृच्छ्र 4 + अश्मरी – 4)।
4. माधव :– **मूत्राघात – 13।**

(1) मूत्रौकसाद :– वस्ति में पित्त/कफ या दोनों वायु से संगठन कर –
(1) मूत्रं रक्तं पीतं घनं सृजेत्। (2) **सदाह** श्वेतसान्द्रं सर्वलक्षणैः युतम्।
चिकित्सा – मूत्रोकसाद पित्तश्लेष्महरैः जयेत्। (पित्त कफशामक चिकित्सा)

(2) मूत्रकृच्छ्र :– मूत्र का वेग धारण कर व्यवाय (मैथुन) करने से।
(1) मूत्रस्य पूर्व पश्चात् वा वीर्य स्रवेत कृच्छं तदुच्यते। (वाग्भट्ट ने **मूत्रकृच्छ्र=मूत्रशुक्र** कहा है)

(3) मूत्रजठर :– मूत्र का वेग रोकने से होता है।
(1) पूरयत्य उदरं भूज तदा तदुत्थितिरुक्। (2) **अपक्ति** मूत्रविट्संगे तत् मूत्रजठरं वदेत्।
चिकित्सा – मूत्र विरेचन करके चिकित्सा, **त्रिवृद्धिरेचन चूर्ण।**

(4) मूत्रोत्संग :– (1) **खवैगुण्यनिलाक्षेपैः।**
मूत्रोत्सर्ग छिद्र में दोष/वात प्रकोप से मूत्र का कुछ अंश मूत्रेन्द्रिय के मार्ग में, मणि संधि में रुक जाता है।
(1) स्रवेत पश्चात् **अरुजं चातिरुक।** (2) मूत्रोत्संग स **विच्छिन्नमुच्छेष** गुरु शेफसः।

(5) मूत्रक्षय :– वात विकार के कारण मूत्र सूख जाता है। (सुश्रुत – वात पित्तज माना है)

(6) मूत्रातीत :– **(1) चिरं धारयेत** मूत्रं त्वरया न प्रवर्तते। (2) मेहमानस्य मन्दं वा मूत्रातीतः स उच्यते।

(7) वाताष्ठीला :– प्रकुपित वायु वस्तिगुदं रुद्धवा आध्मान उत्पन्न करता है।
(1) कुर्यात् तीव्रर्तिम् अष्ठीलां मूत्रविण्मार्गरोधिनीम्।

(8) उष्णवात :– प्रकुपित वायु पित्त के साथ मिलकर मूत्र को सुखा देता है।
(1) मूत्र वर्ण लाल/पीला हो जाता है। (2) वस्ति, उपस्थ में पीड़ा एवं **दाहसहित कृच्छपूर्वक मूत्रत्याग।**

(9) वातकुण्डिलिका :– अपान वायु के कारण – (1) स्तम्भ अंगगौरवैष्टनै तीव्ररुजः मूत्रविट्संग।

(10) रक्तग्रन्थि :– वात एवं कफ दोषों से दुष्ट रक्त वस्ति के द्वार पर भयंकर कष्टप्रद ग्रन्थि उत्पन्न करता है।
(1) अश्मरीसमशूलं तं रक्तग्रन्थि प्रचक्षते। (मूत्रग्रन्थि – सुश्रुत, वाग्भट्ट)

(11) विडविघात – रूक्ष दुर्बल व्यक्ति में प्रकूपित वायु मलांश को ऊपर मूत्रवह स्रोत में चला जाता है।
(1) विट संसृष्टं विड्गन्धं मूत्रयेत् कृच्छ्रात विड विघात।

(12) वातवस्ति – (1) मूत्र धारयतो वस्त्रौ वायुः कुद्धौ विधारणात्। (2) मूत्ररोधार्ति **कण्डूभिः** वातवस्तिः स उच्यते।

(13) वस्तिकुण्डल :– (1) बस्ति स्थूल होकर गर्भ के समान ऊंची हो जाती है।
(2) पीडितवस्तु सृजेद् धारां – दबाने पर धारा के रूप में मूत्र आता है।
(3) इसे विष या शस्त्र की तरह घातक समझना चाहिए।
चिकित्सा–(1) बस्तिकुण्डल त्रिदोषज मूत्र रोग है। (2) मूत्रकृच्छ्रनाशक औषध एवं उत्तर वस्ति देवे।

(1) 'सरक्त मूत्र' लक्षण है	–	**मूत्रौकसाद, उष्णवात।**
(2) 'नाना वर्ण' का मूत्र त्याग	–	**मूत्रौसाद (वाग्भट्ट)।**
(3) 'भस्मोदक प्रतीकाशं' मूत्रत्याग	–	**मूत्रशुक्र में (वाग्भट्ट)।**
(4) गोरोचन एवं शंखचूर्ण वर्ण का	–	**क्रमशः पित्तज एवं कफज मूत्रौसाद में।**

उत्तर वस्ति

पुरूश में उत्तर वस्ति :–

1. **पुष्प नेत्र** – स्वर्ण या रजत निर्मित।
2. **आकृति** – जात्य् अश्वहन वृन्तेन् समं गोपुच्छसंस्थितम्। **चमेली/कनेर के पुष्पवृन्त सम आकृति का, गोपुच्छाकार।**
3. **लंबाई** – द्वादशाङ्गुलम् – 12 अंगुल (सुश्रुत ने पुरूष में – 14 अंगुल)
4. **छिद्र** – सर्षपच्छिद्रं (पीली सरसों के बराबर)।
5. **कर्णिका** – (2) – (1) वस्ति बाँधने हेतु (2) 6–7 अंगुल छोड़कर।
6. **स्नेह मात्रा** – स्नेहस्यार्धपलं नयेत्। –1/2 पल मात्रा (सुश्रुत – 1 पल)।

स्त्रियों में उत्तर वस्ति :–

(1) रजोधर्म के पश्चात् ऋतुकाल में जब योनि का मुख खुला रहता है तव देवें। – उत्तान शयन अवस्था में 3 दिन तक।
(2) पुष्प नेत्र – स्त्री में 10 अंगुल
(3) छिद्र – मूंग के दाने के बराबर।
(4) स्त्री में – (1) योनि/अपत्य मार्ग में – 4 अंगुल नेत्र प्रविष्ट कराएं।
(2) मूत्र मार्ग में – 2 अंगुल नेत्र प्रविष्ट कराएं।
(3) कन्या के मूत्रमार्ग में – 1 अंगुल नेत्र प्रविष्ट कराएं

शिरोरोग

1. **शंखक :–** चरक – 'रक्तपित्तानिला दुष्टा, सुश्रुत – वातप्रधान त्रिदोष, **वाग्भट्ट** – पित्तप्रधान त्रिदोष + रक्त
   (1) 'रक्त पित्तानिला दुष्टाः शंखदेशे विमूर्च्छिताः। तीव्ररुग्दाहरागं हि शोफं कुर्वन्ति दारूणम्। – दूषित रक्त, पित्त, वायु शंखप्रदेश में परस्पर संयुक्त होकर तीव्र रुजा, दाह, राग के साथ भंयकर शोथ उत्पन्न करते हैं।
   (2) विषवत् वेगी शोथ – विष के समान तीव्र वेगवाला शोथ।
   (3) त्रिराजाज्जवीवितं हन्ति शखको नाम नामतः। – गले, शिर को जकड़ कर 3 दिन में ही प्राणान्त कर देता है।

चिकित्सा–(1) परं त्र्यहाज्जीवितंचेत प्रत्याख्यायाचरेत क्रियाम्। 3 दिन जीवित रहने पर 'प्रत्याख्येय' कहकर चिकित्सा करें।
(2) शिरोविरेचन, सेकादि तथा सभी **विसर्पनाशक** उपचार।

2. **अर्धावभेदक :–** चरक – वात/वातकफज, सुश्रुत – त्रिदोषज, वाग्भट्ट – वातज
   (1) प्रकुपित **वायु अकेले या कफ को साथ लेकर** शिर के आधे भाग को जड़कर –
   (2) मन्याभ्रूशंख – कर्णाक्षिललाटार्धे ऽतिवेदनाम्। – मन्या, भ्रू, शंखप्रदेश, कान, नेत्र एवं ललाट के आधे भाग आक्रान्त कर तीव्र वेदना उत्पन्न करती है।
   (3) शस्त्रारणि निमां कुर्यात् तीव्रां सोऽर्धावभेदकः।
   (4) नयनं वाऽथवा श्रोत्रमतिवृद्धो विनाशयेत्। उपद्रव – रोग बढ़ जाता है तो नयन/श्रोत्र को नष्ट कर देता है।

चिकित्सा –
(1) चतुःस्नेह उत्तमा (प्रधान) मात्रा (2) शिरः काय विरेचनम्। (3) नाड़ीस्वेद, **जीर्णघृत**, वस्तिकर्म, अनुवासनम्।
(4) 'उपनाहः शिरोबस्तिः दहनं चात्र शस्यते। (दाहकर्म) **(5) प्रतिश्याये शिरोरोगे यच्चोदिष्टं चिकित्सतम्।**

3. **अनन्तवात :–** चरक – त्रिदोषज सुश्रुत – त्रिदोषज। चक्रपाणि ने – **'अन्यतोवात'** नाम दिया है।
   (1) दुष्टा दोषास्त्रयो **मन्यापश्चाद् घाटासु वेदनाम्।** – त्रिदोष मन्या के पीछे घाटा में तीव्र वेदना उत्पन्न करते है
   (2) वह वेदना नेत्र, भौहे और शंखप्रदेश में स्थिर हो जाती है। (3) गण्डपार्श्व में स्पन्दन, **नेत्ररोग**, हनुग्रह हो जाता है।
   (4) वातो रूक्षादिभिः क्रुद्धः **शिरःकम्पं** उदीरेत् (च. सि. 9/86)

चिकित्सा – सोऽनन्तवातस्तं **हन्यात् सिरार्कावर्तनाशनैः**। (च. सि. 9/86) – सिराव्यध एवं सूर्यावर्त्त नाशक चिकित्सा।

4. **सूर्यावर्त्त :–** चरक – वात, रक्त सुश्रुत – त्रिदोषज, वाग्भट्ट – पित्तानुबन्ध वात
   (1) दिन में सूर्य वृद्ध के साथ – साथ शिरःशूल बढ़ता जाता है तथा सूर्य ढलते ढलते कम हो जाता है।

चिकित्सा – (1) **सर्पिः उत्तरभक्तिकम्** – भोजनोत्तर घृतपान। **(2) शिरः कायविरेचन मूर्ध्ना त्रिस्नेह धारणम्।**
(3) जांगल मांस से उपनाह, धृतक्षीर से शिरोपरिसेचन।
(4) जीवनीय क्षीराष्ट गुण साधितम् – **'नावन नस्य'**।

❖ गद निग्रह ने द्वन्द्वज (वात पित्तज) सूर्यावर्त्त और विदेह निमि ने सूर्यावर्त्त विपयर्य का वर्णन किया है।

नस्य कर्म

नस्य :— 'नस्तः कर्म च कुर्वीत शिरोरोगेषु शास्त्रवित्। द्वारं हि शिरसो नासा तेन तद् व्याप्य हन्ति तान्।। (च सि 9/88)
नस्य के भेद :— चरक – 5, सुश्रुत – 2, वाग्भट्ट – 3 शारंग्धर – 2।
नस्य के 5 प्रकार :— नावनं चावपीडश्च ध्मापनं धूम एव च। प्रतिमर्शश्च विज्ञेयं **नस्तः कर्म तु पंचधा।** (च सि 9/88)

(1) नावन – (1) स्नेहन (2) शोधन।
(2) अवपीड – (1) शोधन (2) स्तम्भन।
(3) ध्मापन – **'चूर्णस्या ध्मापनं तद्धि देहस्रोत्रोविधोधनम्।**
(4) धूम – (1) प्रायोगिक (2) स्नैहिक (3) वैरेचनिक।
(5) प्रतिमर्श – **'निंदोष और उभयार्थकृत'** – (1) स्नैहिक (2) विरेचन।

(1) नावन :— कपास की रूई के फाहे का औषधसिद्ध **स्नेह** में डुबाकर नाक में बिन्दु डालना 'नावन' कहलाता है।
(2) अवपीड :— औषध के **कल्क** को कपड़े में रखकर उसका रस नाक में टपकाना 'अवपीड' नस्य है।
(3) ध्मापन :— इसमें 'औषध **चूर्ण**' को नाक में फूंककर नस्य दिया जाता है।
(4) धूम्र नस्य:— औषध सिद्ध **'धूम्र'** को नाक से खींचा जाता है।
(5) प्रतिमर्श :— 'स्नेह' में अंगुली डुबोकर **स्नेह की बूंद** नाक में टपकाना ही प्रतिमर्श नस्य है।

क्रियाशीलता के आधार पर नस्य के भेद – (3) – एवं तद्रेचनं कर्म तर्पणं शमनं त्रिधा। (च. सि. 9/92)
1. रेचन :— कफज रोगों में **2. तर्पण :—** वातज रोगों में शिरःकम्प, अर्दित में **3. शमन :—** रक्तपित्त आदि रोगों में।
✓ शिर में स्तम्भता, सुप्ति और गुरुता होने पर कफज रोगों में रेचन नस्य देना चाहिए।
✓ अर्दित, शिरःकम्प आदि वातिक रोगों में तर्पण नस्य देना चाहिए।
✓ रक्तपित्त आदि रोगों में शमन नस्य देना चाहिए।

(1) तर्पण नस्य के पूर्व एवं पश्चात् दोनों समय शिर का मृदुस्वेदन करते हैं एवं स्नेह की सम मात्रा दोनों नासापुटों में डालते हैं।
(2) प्रध्मापन नस्य में एक छः अंगुल लम्बी नली में चूर्ण भरकर मुख की फूंक से नाक पहुंचाते हैं।
(3) वाग्भट्टानुसार मर्श नस्य की उत्तम मात्रा – 10 बूंद और प्रतिमर्श नस्य की मात्रा – 2 बूंद।
(4) 'ततो नस्तः कृते धूमं पिबेत् कफ विनाशनम्।' अर्थात् नस्य कर्म के पश्चात् कफनाशक धूम्रपान करना चाहिए।
(5) नस्य पश्चात् गर्म जल का पान करे, पथ्य भोजन करे तथा निर्वात स्थान में रहे।

10. वस्ति सिद्धि अध्याय

बस्ति की श्रेष्ठता – (1) शीघ्र, सुखपूर्वक मलशोधन (2) शीघ्र अवतर्पण/तर्पण (3) उपद्रवरहित न होने से श्रेष्ठ है।

विरेचन से वस्ति की श्रेष्ठता – (1) निरापद रूप से दोषहरण, बृंहण तथा अरूचिरहित होने के कारण 'वस्ति' विरेचन की अपेक्षा श्रेष्ठ है। (2) कटु, तीक्ष्ण, उष्ण औषध का प्रयोग कर सकते हैं।
वस्ति के भेद – 3 – अनुवासनं निरूहश्चोत्तरबस्तिश्च स त्रिविधः। (च. सि. 10/8)
(1) अनुवासन (2) निरूह (3) उत्तर वस्ति।
वस्ति सिद्ध अध्याय में कुल – 37 वस्तियों का वर्णन है।

11. फल मात्रा सिद्धि अध्याय

निरूक्ति :— फलदीनां तथा गजादिबस्तिमात्रायाश्च प्रतिपादिका सिद्धिः फलमात्रासिद्धिः। – चक्रपाणि

षड् वामक फल	रोग में श्रेष्ठता (च. सि. 11/12–13)		आचार्य अनुसार प्रंशसा
1. मदनफल	सर्वरोगहर	(मदनं सर्वगदाविरोधि तु)	आत्रेय
2. जीमूतक	कुष्ठरोगहर	(इह कुष्ठहिता गरागरी)	शौनक
3. इक्ष्वाकु	प्रमेहरोगहर	(हितमिक्ष्वाकु तु मेहिने मतम्)	वामक
4. धामार्गव	पाण्डुरोगहर	(प्रवरं कोठफलं च पाण्डुषु)	धामार्गव
5. वत्सक	हृदयरोगहर	**(कुटजस्य फलं हृदामये)**	वडिश
6. कृतवेधन	उदररोगहर	(उदरे कृतवेधनं हितं)	काप्य

पशुओं में वस्ति पुटक – 1. हाथी, ऊंट हेतु – भेड़, बकरी की वस्ति।
2. गाय, घोड़ा हेतु – भैंस की वस्ति।
3. भेड़, बकरी हेतु – बूढ़े बैल की वस्ति।

पशु	वस्तिनेत्र प्रमाण	निरूह वस्ति मात्रा	स्नेह वस्ति मात्रा
1. हाथी हेतु	22 अंगुल	4 आढक	2 प्रस्थ
2. ऊंट हेतु	18 अंगुल	2 आढक	1 प्रस्थ
3. गाय, घोड़ा	16 अंगुल	2 प्रस्थ	4 पल
4. भेड़, बकरी	10 अंगुल	1 प्रस्थ	2 पल

पशुओं में वस्ति नेत्र को ¼ भाग को गुदा में प्रविष्ट करना चाहिए।

सदातुर :– सदाऽऽतुराः श्रोत्रिय राजसेवकाः तथैव वैश्या सह पण्यजीविभिः। (च. सि. 11/27)
(1) वेदपाठी (2) राजसेवक (3) वेश्या (4) व्यापारी। चिकित्सा – पुनर्नवादि निरूह एवं निकुम्भ तैल अनुवासन वस्ति।

12. उत्तर वस्ति सिद्धि अध्याय

उत्तर वस्ति :– श्रेष्ठ – **उत्तराणां श्रेष्ठानां** वस्तीनां सिद्धिः उत्तरवस्ति सिद्धिः।
अष्ट महादोषकर भाव :– 8

(1) उच्चै भाष्य – उर्ध्व भाग रोग (5) अजीर्ण में भोजन – आमज रोग
(2) रथक्षोभ – सर्व शरीर रोग (6) अहितकर भोजन – वातादि प्रकोप
(3) अतिचक्रंमण – अधः शरीर रोग (7) दिवास्वप्न – कफज रोग
(4) एक आसने – मध्य शरीर रोग (8) मैथुन – क्षयज रोग

यापना वस्ति :– यापनाश्च बस्तयः सर्वकालं देया। (च. सि. 12/15)
(1) सभी कालों/**सभी ऋतुओं** में देय वस्ति = यापना वस्ति।
(2) कुल वस्तियॉ – 216 वस्तियों।
(3) यापना वस्ति + मधु – पुरूषों हेतु अधिक वृष्यत्व हो जाती है।

यापना वस्ति में अपथ्य :– व्यायाम, मैथुन, मद्यपान, मधु, शिशिराम्बु, रुक्ष क्षोभ, यात्रा।
यापना वस्ति व्यापद :– शोफ, अग्निाश, पाण्डुत्व, शूलार्श, परिकर्तिका, ज्वर, अतिसार – ये 7 रोग होते है।
चिकित्सा – (1) दीपनी क्रिया – अग्निदीपक चिकित्सा करे। (2) अरिष्ट, क्षीर, सीधु आदि का पान करे।

सिद्धि स्थान की निरूक्ति :–
'कर्मणां वमनादीनाम् असभ्यक्करण पदाम्। यत्रोक्तं साधनं स्थाने सिद्धिस्थानं तदुच्यते।। (च. सि. 12/33)
प्रतिसंस्कर्ता :– दृढ़बल (पंदनदपुर में उत्पन्न) – 4 वीं शती।
दृढबल ने चिकित्सा स्थान के 17 अध्याय, कल्प और सिद्धि स्थान के 12, 12 अध्याय (कुल 41 अध्याय) लिखे हैं।

चरक में श्लोक :– (12000 श्लोक) – यस्य द्वाद्वशसाहस्री हदि तिष्ठति संहिता।
चरक संहिता वैशिष्ट्य :–यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्वक्विचित्। अग्निवेशकृते तन्त्रे चरक प्रतिसंस्कृते।।

तंत्र–युक्ति

संख्या :–सुश्रुत – 32 चरक – 36, भट्टार हरिश्चंद्र – 40 भाव प्रकाश – 42
चरक :– 36 – सुश्रुतोक्त 32 + प्रयोजन, प्रत्युत्सार, उद्धार, संभव।
भट्टार हरिश्चंद्र :– 40 – चरकोक्त 36 + परिप्रश्न, व्याकरण, व्युत्क्रान्ताभिधान, हेतु।
चक्रपाणि द्वारा समावेश –
(1) व्याकरण का व्याख्यान में। (2) परिप्रश्न का उद्देश्य में।
(3) व्युत्क्रान्ताभिधान का निर्देश में। (4) हेतु का प्रत्यक्ष, अनुमान तथा आप्तोपदेश प्रमाणों में।

Shyam -Vidya Classes

(A synonym of success for Ayurveda P.G. Entrance)

MPPSC (Ayurved M.O.) + MD/MS Entrance Exam. Notes

Mob. - 09826438399, 09993961427

"चरक संहिता वस्तुनिष्ट प्रश्न"

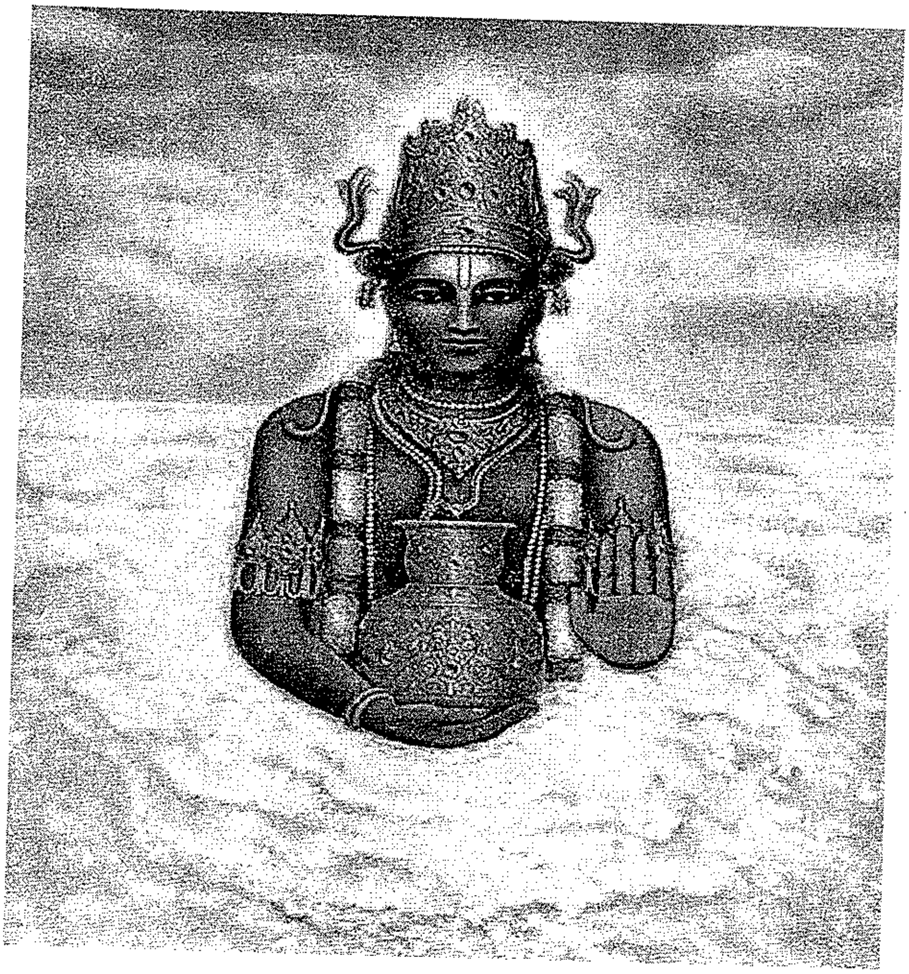

By- Dr. Neelima Singh Lodhi (M.D.)

AYURVEDPG.COM
Online Coaching Centre

Shyam-Vidhya Ayurved P.G. Entrance Coaching Center, Bhopal (M.P.)
Model Test Papers – चरक संहिता
By- Dr. Narendra Singh Lodhi (M.D.) Mob. 09300961664, 09993961427

(1) चरक संहिता के आद्य उपदेष्टा हैं।
(अ) पुर्नवसु आत्रेय (ब) अग्निवेश (स) चरक (द) दृढ़बल

(2) चरकसंहिता के 'भाष्यकार कौन हैं।
(अ) पुर्नवसु आत्रेय (ब) अग्निवेश (स) चरक (द) चक्रपाणि

(3) चरकसंहिता के 'सम्पूरक' कौन हैं।
(अ) आत्रेय (ब) चरक (स) चक्रपाणि (द) दृढबल

(4) चरकसंहिता के 'प्रतिसंस्कर्ता' कौन हैं।
(अ) अग्निवेश (ब) चरक (स) चक्रपाणि (द) दृढबल

(5) 'अग्निवेश तंत्र' के प्रतिसंस्कर्ता कौन है
(अ) चरक (ब) दृढबल (स) चक्रपणि (द) भट्टार हरिश्चन्द्र

(6) आचार्य चरक का काल है।
(अ) 1000 ई. पूर्व (ब) 1000 ई. पश्चात् (स) 200 ई. पूर्व. (द) 200 ई. पश्चात्

(7) चरक संहिता में क्रमशः कितने स्थान और कितने अध्याय हैं।
(अ) 8, 120 (ब) 6, 186 (स) 8, 150 (द) 6, 120

(8) चरक संहिता के चिकित्सा स्थान में कुल कितने अध्याय है।
(अ) 30 (ब) 40 (स) 46 (द) 60

(9) निम्नलिखित में से कौन सा स्थान चरक संहिता में है।
(अ) विमान (ब) खिल (स) उत्तर तंत्र (द) उर्पयुक्त सभी

(10) चरक संहिता के इन्द्रिय स्थान में कुल कितने अध्याय हैं।
(अ) 08 (ब) 06 (स) 12 (द) 24

(11) चरकसंहिता में कुल कितने श्लोक हैं।
(अ) 1950 (ब) 9295 (स) 12000 (द) 8300

(12) चरकसंहिता में कुल कितने औषध योगों का वर्णन हैं।
(अ) 1950 (ब) 9295 (स) 12000 (द) 8300

(13) चरकसंहिता में कुल सूत्र कितने हैं।
(अ) 1950 (ब) 9295 (स) 12000 (द) 8300

(14) चरक संहिता पर लिखित कुल संस्कृत टीकाएं हैं।
(अ) 17 (ब) 19 (स) 43 (द) 44

(15) वृहत्रयी ग्रन्थों में सर्वाधिक टीकाएं किस ग्रन्थ पर लिखी गयी है।
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) अष्टांग ह्रदय (द) अष्टांग संग्रह

(16) चरक संहिता पर रचित टीका "निरंतर पदव्याख्या" के लेखक कौन हैं।
(अ) जेज्जट (ब) चक्रपाणि (स) हेमाद्री (द) गयदास

(17) चरक संहिता पर रचित टीका 'चरकोपस्कार' के टीकाकार कौन है।
(अ) भट्टार हरिश्चन्द्र (ब) गंगाधर राय (स) योगेन्द्रनाथसेन (द) जेज्जट

(18) चरक संहिता की "जल्पकल्पतरू" व्याख्या के टीकाकार कौन थे।
(अ) गंगाधर रॉय (ब) योगेन्द्र सेन (स) गणनाथ सेन (द) शिवदास सेन

(19) चरक संहिता पर रचित 'चरकन्यास' टीका के टीकाकार कौन है।
(अ) जेज्जट (ब) योगेन्द्र सेन (स) स्वामीकुमार (द) भट्टार हरिश्चन्द्र

(20) कविराज गंगाधर रॉय का काल हैं ?
(अ) 13वी शताब्दी (ब) 15वीं शताब्दी (स) 17वीं शताब्दी (द) 19वीं शताब्दी

(21) चरक संहिता पर रचित चक्रपाणि की टीका हैं ?
(अ) दीपिका (ब) गूढ़ार्थ दीपिका (स) आयुर्वेद दीपिका (द) गूढान्त दीपिका

(22) निम्न में से कौन एक चरक संहिता की टीकाकार है।
(अ) योगेन्द्रनाथ सेन (ब) रूद्रभट्ट (स) कौटिल्य (द) डल्हण

(23) चक्रपाणि का काल क्या हैं ?
(अ) 11वीं शताब्दी (ब) 12वीं शताब्दी (स) 13वीं शताब्दी (द) 16वीं शताब्दी

(24) चरकसंहिता की 'चरक प्रकाश कौस्तुभ' टीका के टीकाकार का काल है ?
(अ) 11वीं शती (ब) 15वीं शती (स) 17वीं शती (द) 19वीं शती

(25) चरक संहिता पर रचित हिन्दी टीका "वैद्य मनोरमा" के लेखक कौन हैं।
(अ) जयदेव विद्यालंकार (ब) अत्रिदेव विद्यालंकार (स) ब्रह्मानन्द त्रिपाठी (द) रविदत्त त्रिपाठी

(26) चरक संहिता का अरबी अनुवाद कौनसी सदी में हुआ था।
(अ) 8वी शताब्दी (ब) 9वीं शताब्दी (स) 11वीं शताब्दी (द) 13वीं शताब्दी

(27) 'अमितायु' किसका पर्याय कहा गया है।
(अ) इन्द्र (ब) भरद्वाज (स) अग्निवेश (द) आत्रेय

(28) 'चन्द्रभागा' किसका नाम था।
(अ) पुर्नवसु आत्रेय (ब) आत्रेय पुत्र (स) आत्रेय माता (द) आत्रेय पिता

(29) आत्रेय के शिष्यों की संख्या कितनी हैं।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(30) क्षारपाणि किसका शिष्य था।
(अ) पुर्नवसु आत्रेय (ब) अत्रि (स) भिक्षु आत्रेय (द) अग्निवेश

(31) निम्न में से सभी आत्रेय के शिष्य है एक को छोड़कर –
(अ) अग्निवेश (ब) जतूकर्ण, पाराशर (स) हारीत, क्षारपाणि (द) चक्रपाणि, चरक

(32) चरक किसके शिष्य थे।
(अ) पुर्नवसु आत्रेय (ब) धन्वतरि (स) वैशम्पायन (द) अग्निवेश

(33) चरक किसके पुत्र थे।
(अ) पुर्नवसु आत्रेय (ब) विश्वामित्र (स) विशुद्ध (द) वैशम्पायन

(34) आचार्य चरक वर्तमान भारत वर्ष के किस राज्य के निवासी थे।
(अ) पंजाब (ब) काश्मीर (स) राजस्थान (द) केरल

(35) दृढ़बल के पिता कौन थे।
(अ) चरक (ब) कपिलबली (स) विश्वामित्र (द) इन्दु

(36) दृढ़बल ने चरक संहिता के चिकित्सा स्थान में कितने अध्यायों को पूरित कर सम्पूर्ण किया हैं।
(अ) 17 (ब) 15 (स) 14 (द) 13

(37) चरक संहिता चिकित्सा स्थान का निम्न में से कौनसा अध्याय दृढ़बल द्वारा पूरित नहीं है।
(अ) पाण्डु चिकित्सा (ब) ग्रहणी चिकित्सा (स) छर्दि चिकित्सा (द) अतिसार चिकित्सा

(38) चरक संहिता को "अखिलशास्त्रविद्याकल्पद्रुम" किसने कहा है।
(अ) गंगाधर रॉय (ब) भट्टार हरिश्चन्द्र (स) चक्रपाणि (द) शिवदास सेन

(39) चरक संहिता में "उत्तर तंत्र" शामिल था – ऐसा किसने कहा है।
(अ) गंगाधर रॉय (ब) भट्टार हरिश्चन्द्र (स) चक्रपाणि (द) शिवदास सेन

(40) वृहत्रयी ग्रन्थों में 'मूर्धन्य' संहिता कौन सी है ?
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) अष्टांग हृदय (द) अष्टांग संग्रह

(41) चक्रपाणि का सम्बन्ध कौनसे वंश से था ?
(अ) लोध्रवंश (ब) लोध्रबली वंश (स) मौर्य वंश (द) शुंगवंश

(42) गुरूसूत्र, शिष्यसूत्र, एकीयसूत्र एवं प्रतिसंस्कर्ता सूत्र के रूप में वर्णन किसका ग्रन्थ का है ?
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) दोनों (द) काश्यप संहिता

(43) 'तुरीय अवस्था' किससे संबंधित है।
(अ) निद्रा (ब) स्वप्न (स) ब्रह्म (द) मोक्ष

(44) 'उभयाभिप्लुता' चिकित्सा किसका योगदान हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) उर्पयुक्त सभी

(45) चरकसंहिता के सूत्रस्थान के स्वस्थ्य चतुष्क में कौन–कौन से अध्याय आते हैं।
(अ) 1,2,3,4 (ब) 5,6,7,8 (स) 9,10,11,12 (द) 13,14,15,16

(46) चरक संहिता मे त्रिशोथीयाध्याय कौनसे चतुष्क से सम्बधित है।
(अ) रोग चतुष्क (ब) योजना चतुष्क (स) निर्देश चतुष्क (द) क्रिया चतुष्क

(47) चरक संहिता मे कुल कितने स्थानों पर संभाषा परिषद का उल्लेख मिलता है।
(अ) 7 (ब) 4 (स) 2 (द) 1

(48) चरक संहिता के सूत्रस्थान कुल कितने स्थानों पर संभाषा परिषद का उल्लेख मिलता है।
(अ) 7 (ब) 4 (स) 2 (द) 1

SHYAM VIDYA AYURVEDA P.G. CENTRE
Dr. NEELIMA SINGH

(49) अथातो दीर्घञ्जीवितीयमध्यायं व्याख्यास्यामः। – इस सूत्र में कितने पद है।
(अ) 6 (ब) 7 (स) 8 (द) 9

(50) 'उग्रतपा' किसका पर्याय कहा गया है।
(अ) इन्द्र (ब) भरद्वाज (स) अग्निवेश (द) आत्रेय

(51) चरक संहिता के 'दीर्घञ्जीवितीयमध्याय' में आयुर्वेदावतरण संबंधी सम्भाषा परिषद में कितने ऋषियों ने भाग लिया था
(अ) 56 (ब) 57 (स) 53 (द) 60

(52) "धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्।" – उपर्युक्त सूत्र किस संहिता में वर्णित हैं।
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) अष्टांग हृदय (द) अष्टांग संग्रह

(53) चरक संहिता में 'बलहन्तार' किसका पर्याय कहा गया है
(अ) इन्द्र (ब) भरद्वाज (स) राजयक्ष्मा (द) प्रमेह

(54) चरक संहिता के अनुसार इन्द्र के पास आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त करने कौन गया था।
(अ) आत्रेय (ब) भरद्वाज (स) अश्विनी द्वय (द) अग्निवेश

(55) आचार्य चरक ने "हेतु, लिंग, औषध" को क्या संज्ञा दी है।
(अ) त्रिसूत्र (ब) त्रिस्कन्ध (स) त्रिस्तंभ (द) अ, ब दोनों

(56) "स्कन्धत्रय" है ?
(अ) हेतु, लिंग, औषध (ब) हेतु, दोष, द्रव्य (स) वात, पित्त, कफ (द) सत्व, रज, तम

(57) चरक संहिता के अनुसार षटपदार्थ का क्रम है ?
(अ) द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय (ब) सामान्य, विशेष, गुण, द्रव्य, कर्म, समवाय
(स) सामान्य, विशेष, द्रव्य, गुण, कर्म, समवाय (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

(58) वैशेषिक दर्शन के अनुसार षटपदार्थ का क्रम है ?
(अ) द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय (ब) सामान्य, विशेष, गुण, द्रव्य, कर्म, समवाय
(स) सामान्य, विशेष, द्रव्य, गुण, कर्म, समवाय (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

(59) 'हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्। मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।' – यह आयुर्वेद की .... है
(अ) निरुक्ति (ब) व्युत्पत्ति (स) परिभाषा (द) फलश्रुति

(60) निम्नलिखित में से कौनसा कथन सही हैं ?
(अ) 'नित्यग' आयु का पर्याय है एंव काल का भेद है। (ब) 'अनुबन्ध' आयु का पर्याय है एंव दोष का भेद है।
(स) 'अनुबन्ध' दशविध परीक्ष्य भाव में से एक भाव है। (द) उर्पयुक्त सभी

(61) 'तस्य आयुषः पुण्यतमो वेदो वेदविदां मतः' – उक्त सूत्र का उल्लेख किस ग्रन्थ में है ?
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) अष्टांग संग्रह (द) अष्टांग हृदय।

(62) सामान्य के 3 भेद "द्रव सामान्य, गुण सामान्य और कर्म सामान्य" – किसने बतलाये है।
(अ) सुश्रुत (ब) चरक (स) आत्रेय (द) चक्रपाणि

(63) 'सत्व, आत्मा, शरीर' – ये तीनों कहलाते है।
(अ) त्रिसूत्र (ब) त्रिस्कन्ध (स) त्रिदण्ड (द) त्रिस्तंभ

(64) परादि गुणों की संख्या हैं ?
(अ) 6 (ब) 5 (स) 20 (द) 10

(65) चिकित्सीय गुण हैं।
(अ) इन्द्रिय गुण (ब) गुर्वादि गुण (स) परादि गुण (द) आत्म गुण

(66) 'चिकित्सा की सिद्धि के उपाय' गुण हैं।
(अ) इन्द्रिय गुण (ब) गुर्वादि गुण (स) परादि गुण (द) आत्म गुण

(67) गुर्वादि गुण को शारीरिक गुण की संज्ञा किसने दी हैं।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) योगीनाथ सेन (द) गंगाधर राय

(68) आत्म गुणों की संख्या 7 किसने मानी हैं।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) योगीनाथ सेन (द) गंगाधर राय

(69) सात्विक गुणो में शामिल नही हैं।
(अ) सुख (ब) दुःख (स) प्रयत्न (द) उत्साह

(70) निम्नलिखित में से कौनसा कथन सही हैं ?
(अ) 'गुर्वादि गुण' का विस्तृत वर्णन सुश्रुत और हेमाद्रि ने किया है।
(ब) 'परादि गुण' का विस्तृत वर्णन केवल चरक संहिता में है।
(स) 'इन्द्रिय और आत्म गुण' का विस्तृत वर्णन तर्क संग्रह में है।
(द) उपर्युक्त सभी

(71) गुण के बारे में कौन सा कथन सही नहीं हैं।
(अ) समवायी (ब) निश्चेष्ट (स) चेष्ट (द) द्रव्याश्रयी

(72) कारण द्रव्यों की संख्या हैं।
(अ) 5 (ब) 8 (स) 9 (द) 10

(73) द्रव्य के प्रकार होते हैं।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 9 (द) असंख्य

(74) द्रव्य के भेद होते है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 9 (द) असंख्य

(75) "सेन्द्रिय" का क्या अर्थ होता है ?
(अ) इन्द्रिय युक्त (ब) चेतन युक्त (स) सत्व युक्त (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(76) 'क्रियागुणवत समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम्' – किसका कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वैशेषिक दर्शन (द) नागार्जुन

(77) कर्म के 5 भेद – उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुन्चन, प्रसारण तथा गमन। – किसने बतलाये है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) वैशेषिक दर्शन (द) न्याय दर्शन

(78) 'घटादीनां कपालादौ द्रव्येषु गुणकर्मणोः। तेषु जातेश्च सम्बन्धः समवायः प्रकीर्तितः।।' – किसका कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) तर्क संग्रहे (द) कारिकावली

(79) आचार्य चरक ने 'षटपदार्थ' को क्या कहा है।
(अ) कारण (ब) कार्य (स) पदार्थ (द) प्रमाण

(80) आचार्य चरक कौनसे वाद को मानते हैं।
(अ) कार्यकारण वाद (ब) विवर्तवाद (स) क्षणभंगुरवाद (द) असद्कार्यवाद

(81) व्याधि का अधिष्ठान है।
(अ) शरीर . (ब) मन (स) मन और शरीर (द) मन, शरीर, इन्द्रिय

(82) वेदना का अधिष्ठान है ? (च. शा. 1/136)
(अ) शरीर . (ब) मन (स) इन्द्रियाँ (द) उर्पयुक्त सभी

(83) निर्विकारः परस्त्वात्मा सर्वभूतानां निर्विशेषः। सत्वशरीरयोश्च विशेषाद् विशेषोपलब्धिः। – है।
(अ) (च. सू. 1/36) (ब) (च. सू. 1/52) (स) (च. शा. 4/33) (द) (च. शा. 1/36)

(84) वात पित्त श्लेष्माण एव देह सम्भव हेतवः। – किस आचार्य का कथन हैं।
(अ) सुश्रुत (ब) चरक (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(85) मानसिक दोषों की संख्या है।
(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(86) मानसिक दोषों में प्रधान होता है।
(अ) सत्व (ब) रज (स) तम (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(87) मानसिक गुण नहीं है।
(अ) सत्व (ब) रज (स) तम (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(88) चरकानुसार शारीरिक दोषों की चिकित्सा है।
(अ) दैवव्यपाश्रय, (ब) युक्तिव्यापश्रय (स) दोनों (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(89) चरकानुसार मानसिक दोष का चिकित्सा सूत्र है।
(अ) ज्ञान, विज्ञान, धी, धैर्य, समाधि
(ब) ज्ञान, विज्ञान, योग, स्मृति, समाधि
(स) ज्ञान, विज्ञान, धी, धैर्य, स्मृति
(द) ज्ञान, विज्ञान, धैर्य, स्मृति, समाधि

(90) आचार्य चरक ने कफ के कितने गुण बतलाए हैं।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(91) 'सर' कौनसे दोष का गुण हैं।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) रक्त

(92) चरकोक्त वात के 7 गुणों एवं कफ के 7 गुणों में कितने समान है।
(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(93) 'साधनं न त्वसाध्यानां व्याधीनां उपदिश्यते।' – असाध्य रोगों की चिकित्सा न करने का उपदेश किसने दिया है।
(अ) सुश्रुत (ब) चरक (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(94) रसनार्थो रसः द्रव्यमापः .... । निर्वृतौ च, विशेषें च प्रत्ययाः खादयस्त्रयः।
(अ) पृथ्वीस्तथा (ब) अनलस्तथा (स) क्षितिस्तथा (द) अनिलस्तथा

(95) रस के विशेष ज्ञान में कारण है।
(अ) जल, वायु, पृथ्वी (ब) पृथ्वी, जल अग्नि (स) आकाश, जल, पृथ्वी (द) आकाश, वायु, अ

(96) पित्त शामक रस है।
(अ) मधुर, अम्ल, लवण (ब) कटु, अम्ल, लवण (स) कटु, तिक्त, कषाय (द) मधुर, तिक्त, कषा

(97) कफ प्रकोपक रस है।
(अ) मधुर, अम्ल, लवण (ब) कटु, अम्ल, लवण (स) कटु, तिक्त, कषाय (द) मधुर, तिक्त, कषा

(98) निम्नलिखित में से कौनसा कथन सही हैं ?
(अ) चरक ने मधुर रस के लिए 'स्वादु' एवं कटु रस के लिए 'कटुक' शब्द का प्रयोग किया है। (च.सू. 1/64)
(ब) अष्टांग संग्रहकार ने कटु रस के लिए 'ऊषण' शब्द का प्रयोग किया है। (अ. सं. सू. 1/35)
(स) अष्टांग हृदयकार ने लवण रस के लिए 'पटु' शब्द का प्रयोग किया है। (अ. हृ. नि. 1/16)
(द) उर्पयुक्त सभी।

(99) चरकानुसार जांगम द्रव्यों के प्रयोज्यांग होते है।
(अ) 18 (ब) 19 (स) 8 (द) 6

(100) चरकानुसार औद्भिद द्रव्यों के प्रयोज्यांग होते है।
(अ) 18 (ब) 19 (स) 8 (द) 6

(101) 'औद्भिद' किसका प्रकार है।
(अ) द्रव्य (ब) लवण (स) जल (द) उपर्युक्त सभी

(102) 'उदुम्बर' है।
(अ) वनस्पति (ब) वानस्पत्य (स) वीरूध (द) औषधि

(103) फल पकने पर जिसका अन्त हो जाए वह है ?
(अ) वनस्पति (ब) वानस्पत्य (स) वीरूध (द) औषधि

(104) जिनमें सीधे ही फल दृष्टिगोचर हो – वह है ?
(अ) वनस्पति (ब) वानस्पत्य (स) वीरूध (द) औषधि

(105) सुश्रुतानुसार 'जिसमें पुष्प और फल दोनों आते हैं' – वह स्थावर कहलाता है।
(अ) वनस्पत्य (ब) वानस्पत्य (स) वृक्ष (द) उपर्युक्त सभी

(106) 16 मूलिनी द्रव्यों में शामिल नहीं है।
(अ) बिम्बी (ब) हस्तिपर्णी (स) गवाक्षी (द) प्रत्यकश्रेणी

(107) चरकोक्त 16 मूलिनी द्रव्यों में 'छर्दन' किसका कार्य है।
(अ) शणपुष्पी (ब) बिम्बी (स) हैमवती (द) उपर्युक्त सभी

(108) चरकोक्त 16 मूलिनी द्रव्यों में 'विरेचन' हेतु कितने द्रव्य है।
(अ) दश (ब) एकादश (स) षोडश (द) चतुर्विध

(109) चरकोक्त 19 फलिनी द्रव्यों में शामिल नहीं है।
(अ) क्लीतक (ब) आरग्वध (स) प्रत्यक्पुष्पा (द) सदापुष्पी

(110) चरकोक्त 19 फलिनी द्रव्यों में शामिल नहीं है ?
(अ) आमलकी (ब) हरीतकी (स) कम्पिल्लक (द) अन्तकोटरपुष्पी

(111) चरकानुसार क्लीतक (मुलेठी) के कितने भेद होते है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 5 (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(112) चरकोक्त 19 फलिनी द्रव्यों में नस्य हेतु कितने द्रव्य है।
(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) 8

(113) चरकोक्त 19 फलिनी द्रव्यों में 'विरेचन' हेतु कितने द्रव्य है।
(अ) दश (ब) एकादश (स) अष्ट (द) एकोनविंशति

(114) स्नेहना जीवना बल्या वर्णोपचयवर्धनाः। – किसका गुण है।
(अ) मांस (ब) मद्य (स) पयः (द) महास्नेह

(115) महास्नेह की संख्या है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 8

(116) चरकानुसार 'प्रथम लवण' है।
(अ) सैन्धव (ब) सौवर्चल (स) सामुद्र (द) विड

SHYAM AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER
Dr. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

(117) रस तरंगिणी के अनुसार 'प्रथम लवण' है।
(अ) सैन्धव (ब) सौवर्चल (स) सामुद्र (द) विड

(118) चरकानुसार 'पंच लवण' में शामिल नहीं है ?
(अ) सौवर्चल (ब) सामुद्र (स) औद्भिद (द) रोमक

(119) रस तरंगिणी के अनुसार 'पंच लवण' में शामिल नहीं है ?
(अ) सौवर्चल (ब) सामुद्र (स) औद्भिद (द) रोमक

(120) अष्टमूत्र के संदर्भ में 'लाघवं जातिसामान्ये स्त्रीणां, पुंसां च गौरवम्' – किस आचार्य का कथन है।
(अ) सुश्रुत (ब) चरक (स) हारीत (द) भाव प्रकाश

(121) चरकानुसार मूत्र में 'प्रधान रस' होता है।
(अ) तिक्त (ब) कटु (स) लवण (द) कषाय

(122) चरकानुसार मूत्र का 'अनुरस' होता है।
(अ) तिक्त (ब) कटु (स) लवण (द) कषाय

(123) पाण्डुरोग उपसृष्टानामुत्तमं .... चोत्यते। श्लेष्माणं शमयेत्पीतं मारूतं चानुलोमयेत्।
(अ) मूत्र (ब) गोमूत्र (स) शर्म (द) पित्तविरेचन

(124) चरकानुसार मूत्र का गुण है।
(अ) वातानुलोमन (ब) पित्तविरेचक (स) कफशामक (द) उपर्युक्त सभी

(125) वाग्भट्टानुसार मूत्र होता है।
(अ) पित्तविरेचक (ब) पित्तवर्धक (स) विषापह (द) रसायन

(126) 'मूत्रं मानुषं च विषापहम्।' – किस आचार्य का कथन है –
(अ) सुश्रुत (ब) चरक (स) अष्टांग संग्रह (द) भाव प्रकाश

(127) हस्ति मूत्र का रस होता है।
(अ) तिक्त (ब) कटु, तिक्त (स) लवण (द) क्षार

(128) माहिष मूत्र का रस होता है।
(अ) तिक्त (ब) कटु, तिक्त (स) लवण (द) क्षार

(129) किसका मूत्र 'सर' गुण वाला होता है।
(अ) हस्ति (ब) उष्ट्र (स) माहिषी (द) वाजि

(130) किसका मूत्र 'पथ्य' होता है।
(अ) गोमूत्र (ब) अजामूत्र (स) उष्ट्रमूत्र (द) खरमूत्र

(131) कुष्ठ व्रण विषापहम् – मूत्र है।
(अ) हस्ति (ब) आवि (स) माहिषी (द) वाजि

(132) चरकानुसार 'अर्श नाशक' मूत्र है।
(अ) हस्ति (ब) उष्ट्र (स) माहिषी (द) उपर्युक्त सभी

(133) उन्माद, अपस्मार, ग्रहबाधा नाशक मूत्र है ?
(अ) हस्ति (ब) उष्ट्र (स) खर (द) वाजि

(134) चरक ने 'श्रेष्ठं क्षीणक्षतेषु च' किसके लिए कहा है।
(अ) महास्नेह (ब) मांस (स) पयः (द) नागबला

(135) पाण्डुरोगेऽम्लपित्ते च शोषे गुल्मे तथोदरे। अतिसारे ज्वरे दाहे च श्वयथौ च विशेषतः। – किसके लिए कहा है।
(अ) महास्नेह (ब) अष्टमूत्र (स) पयः (द) घृत

(136) चरक संहिता में मूलनी, फलिनी, लवण और मूत्र की संख्या क्रमशः है।
(अ) 19, 16, 5, 8 (ब) 16, 19, 5, 8 (स) 16, 19, 8, 5 (द) 19, 16, 4, 8

(137) शोधनार्थ वृक्षों की संख्या की संख्या है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 6

(138) चरकानुसार क्षीरत्रय होता है।
(अ) अर्क, स्नुही, वट (ब) अर्क, स्नुही, अश्मन्तक (स) अर्क, वट, अश्मन्तक (द) उपर्युक्त कोई न

(139) 'अर्कक्षीर' का प्रयोग किसमें निर्दिष्ट है।
(अ) वमन में (ब) विरेचन में (स) वमन, विरेचन दोनो में (द) उपर्युक्त कोई न

(140) चरकानुसार अश्मन्तक का प्रयोग किसमें निर्दिष्ट है।
(अ) वमन में (ब) विरेचन में (स) वमन, विरेचन दोनो में (द) उपर्युक्त कोई

(141) चरक ने तिल्वक का प्रयोग बतलाया है।
(अ) वमन में (ब) विरेचन में (स) वमन, विरेचन दोनो में (द) उपर्युक्त कोई

(142) चरकानुसार "परिसर्प, शोथ, अर्श, दद्रु, विद्रधि, गण्ड, कुष्ठ और अलजी" में शोधन के लिए प्रयुक्त होता है।
(अ) पूतीक (ब) कृष्णगंधा (स) तिल्वक (द) उपर्युक्त सभी

(143) 'योगविन्नारूपज्ञस्तासां .... उच्यते।
(अ) श्रेष्ठतम भिषक (ब) तत्वविद (स) छदम्चर वैद्य (द) भिषक

(144) पुरूषं पुरूषं वीक्ष्य स ज्ञेयो भिषगुत्तमः। – किसका कथन हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) हारीत

(145) यथा विषं यथा शस्त्रं यथाग्निरशर्नियथा। – किसका कथन हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) भाव प्रकाश

(146) चरकानुसार 'भिषगुत्तम' है।
(अ) तस्मात् शास्त्रेऽर्थ विज्ञाने प्रवृतौ कर्मदर्शने। (ब) हेतो लिंगे प्रशमने रोगाणाम् अपुनर्भवे।
(स) विद्या वितर्को विज्ञानं स्मृतिः तत्परता क्रिया। (द) योगमासां तु यो विद्यात् देशकालोपपादितम्।

(147) ताम्र का प्रथम उल्लेख किसने किया हैं।
(अ) सुश्रुत (ब) चरक (स) सोढल (द) नागार्जुन

(148) "पुत्रवेदवैनं पालयेत आतुरं भिषक्।" – किसका कथन हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(149) चरक संहिता मे अन्तः परिमार्जन द्रव्यों से सम्बधित अध्याय है।
(अ) दीर्घञ्जीवतीय (ब) अपामार्गतण्डुलीय (स) आरग्वधीय (द) षडविरेचनशताश्रिती

(150) शिरोविरेचनार्थ 'अपामार्ग' का प्रयोज्यांग है ?
(अ) तण्डुल (ब) बीज (स) फल (द) फल रज चूर्ण

(151) 'वचा एवं ज्योतिष्मति' दोनों द्रव्यों को शिरोविरेचन द्रव्यों के गण में कौनसे आचार्य ने शामिल किया है।
(अ) सुश्रुत (ब) चरक (स) वाग्भट्ट (द) अ, ब दोनों

(152) शिरोविरेचन द्रव्यों में कौनसा रस शामिल नहीं होता है।
(अ) मधुर (ब) अम्ल (स) लवण (द) अ, ब दोनों

(153) चरक ने अपामार्गतण्डुलीय अध्याय में 'वचा' को कौनसे वर्ग में शामिल किया है।
(अ) शिरोविरेचन (ब) वमन (स) विरेचन (द) आस्थापन/अनुवास

(154) चरक ने अपामार्गतण्डुलीय अध्याय में 'एरण्ड' को कौनसे वर्ग में शामिल किया है।
(अ) शिरोविरेचन (ब) वमन (स) विरेचन (द) आस्थापन/अनुवास

(155) चरक संहिता में सर्वप्रथम 'पंचकर्म' शब्द कौनसे अध्याय में आया है।
(अ) दीर्घन्जीवतीय (ब) अपामार्गतण्डुलीय (स) आरग्वधीय (द) षडविरेचनशताश्रिती

(156) चरकानुसार औषध की सम्यक् योजना किस पर निर्भर करती है ?
(अ) औषध की मात्रा और काल पर (ब) रोगी के बल और काल पर
(स) रोगी के कोष्ठ और अग्निबल पर (द) रोगी के वय और काल पर

(157) .... यवाग्वः परिकीर्तिताः।
(अ) अष्टादश (ब) षड् (स) चर्तुविंशति (द) अष्टाविंशति

(158) चरकोक्त 28 यवागू में कुल कितनी पेया हैं।
(अ) 4 (ब) 6 (स) 32 (द) 28

(159) किसके क्वाथ से सिद्ध यवागू विषनाशक होती हैं।
(अ) शिरीष (ब) सिन्धुवार (स) सोमराजी (द) विडंग

(160) यवानां यमके पिप्पल्यामलकैः श्रृता। – यवागू का कर्म है।
(अ) कण्ठरोगनाशक (ब) वातानुलोमक (स) पक्वाशयशूल रूजापहा (द) रूक्षणार्थ

(161) यमके मदिरा सिद्धा .... यवागू।
(अ) कण्ठरोगनाशक (ब) वातानुलोमक (स) पक्वाशयशूल रूजापहा (द) रूक्षणार्थ

(162) दधित्थबिल्वचांगेरीतक्रदाडिमा साधिता। – यवागू है।
(अ) दीपनीय, शूलघ्न यवागू (ब) आमातिसारघ्नी पेया (स) रक्तातिसारनाशक पेया (द) पाचनी, ग्राहिणी पे

(163) तक्रसिद्धा यवागूः।
(अ) घृतव्यापद नाशक (ब) तैलव्यापद नाशक (स) मद्यव्यापद नाशक (द) क्षुधानाशक

(164) तक्रपिण्याक साधिता यवागू।
(अ) घृतव्यापद नाशक (ब) तैलव्यापद नाशक (स) मद्यव्यापद नाशक (द) क्षुधानाशक

(165) ताम्रचूडरसे सिद्धा ....।
(अ) शिश्नपीडाशामकः (ब) शुक्रमार्गरूजापहा (स) रेतोमार्गरूजापहा (द) उपर्युक्त सभी

(166) दशमूलं क्वाथ से सिद्ध यवागू होती हैं ?
(अ) श्वासनाशक (ब) कासनाशक (स) हिक्कानाशक (द) उपर्युक्त सभी

(167) चरकानुसार मुर्गे का पर्याय है।
(अ) ताम्रचूड (ब) चरणायुधा (स) कुक्कुट (द) उपर्युक्त सभी

(168) उपोदिकादधिम्यां तु सिद्धा............... यवागू।
(अ) विषमज्वरनाशक (ब) मदविनाशिनी (स) भेदनी (द) रोचक

(169) चरकानुसार चिकित्सक की अर्हताएँ में शामिल नहीं है।
(अ) हेतुज्ञ (ब) व्यवसायी (स) युक्तिज्ञ (द) जितेन्द्रय

(170) चरक संहिता मे बर्हिपरिमार्जन द्रव्यों से सम्बधित अध्याय है।
(अ) दीर्घञ्जीवतीय (ब) अपामार्गतण्डुलीय (स) आरग्वधीय (द) षडविरेचनशताश्रिती

(171) चरकोक्त आरग्वधीय अध्याय में कुष्ठहर कुल कितने 'लेप' बताए गए है।
(अ) 32 (ब) 15 (स) 6 (द) 16

(172) चरकोक्त आरग्वधीय अध्याय में वातविकारनाशक कुल कितने 'लेप' बताए गए है।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 4

(173) चरकोक्त आरग्वधीय अध्याय में कितने 'प्रघर्ष' बताए गए है।
(अ) 32 (ब) 4 (स) 1 (द) शून्य

(174) नतोत्पलं चन्दनकुष्ठयुक्तं शिरोरुजायां सघृतं प्रदेहः।
(अ) विषघ्न (ब) शिरोरुजायां (स) स्वेदहर (द) कुष्ठहर

(175) शिरीष और सिन्धुवार के लेप होता हैं ?
(अ) विषघ्न (ब) शरीरदौर्गन्ध्यहर (स) स्वेदहर (द) कुष्ठहर

(176) तेजपत्र, सुगन्धबाला, लोध्र, अभय और चन्दन के लेप का प्रयोग किस संदर्भ हैं ?
(अ) विषघ्न (ब) शरीरदौर्गन्ध्यहर (स) स्वेदहर (द) कुष्ठहर

(177) चक्रपाणि के अनुसार 'अभय' किस औषध का पर्याय है ?
(अ) हरीतकी (ब) उशीर (स) तगर (द) देवदारू

(178) चरक संहिता में प्रलेप की मोटाई और उसे लगाने की विधि का वर्णन कौनसे अध्याय में है।
(अ) अपामार्गतण्डुलीय (ब) आरग्वधीय (स) विसर्पचिकित्सा (द) वातरक्तचिकित्सा

(179) चरकोक्त आरग्वधीय अध्याय में कुल कितने सूत्र है।
(अ) 30 (ब) 32 (स) 34 (द) 36

(180) चरक ने विरेचन द्रव्यों के कितने आश्रय बतलाए है।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(181) चरक ने शिरो विरेचन द्रव्यों के कितने आश्रय बतलाए है।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(182) सप्तला–शंखिनी के विरेचन योगों की संख्या हैं।
(अ) 45 (ब) 48 (स) 39 (द) 60

(183) धामार्गव के वामक योगों की संख्या हैं।
(अ) 45 (ब) 48 (स) 39 (द) 60

(184) दन्ती–द्रवन्ती के विरेचन योगों की संख्या हैं।
(अ) 45 (ब) 48 (स) 39 (द) 60

(185) स्वरसः, कल्कः, श्रृतः, शीतः फाण्टः कषायश्चेति। ....।
(अ) पूर्व पूर्व बलाधिका (ब) यथोत्तरं ते लघवः प्रदिष्टा (स) तेषां यथापूर्व बलाधिक्यम् (द) कोई नहीं

(186) 'पंचविध कषाय कल्पनाओं' के संदर्भ में 'पंचधैवं कषायाणां पूर्व पूर्व बलाधिका' किस आचार्य ने कहा है।
(अ) सुश्रुत (ब) चरक (स) वाग्भट्ट (द) शारंर्ग्धर

(187) "द्रव्यादापोत्थितात्तोये तत्पुनर्निशि संस्थितात्" – किस कषाय कल्पना के लिये कहा गया है।
(अ) क्वाथ (ब) कल्क (स) शीत (द) फाण्ट

(188) 'यः पिण्डो रसपिष्टानां स कल्कः परिकार्तितः' किस आचार्य का कथन है।
(अ) सुश्रुत (ब) चरक (स) चक्रपाणि (द) शारंर्ग्धर

(189) चरक मत से कषाय कल्पनाओं का प्रयोग किस पर निर्भर करता है ?
(अ) व्याधि के बल पर (ब) आतुर के बल पर (स) व्याधि एवं आतुर के बल पर (द) कोई नहीं

(190) चरक के पंचाशन्महाकषाय में स्थापन महाकषायों की संख्या है।
(अ) 3 (ब) 5 (स) 6 (द) 7

(191) चरक के पंचाशन्महाकषाय में निग्रहण महाकषायों की संख्या है।
(अ) 3 (ब) 5 (स) 6 (द) 7

(192) चरकोक्त पचास महाकषायों में सबसें अधिक 11 बार सम्मिलित द्रव्य है।
(अ) मुलेठी (ब) आरग्वध (स) मोचरस (द) पिप्पली

(193) चरकोक्त पचास महाकषायों में सम्मिलित कुल द्रव्यों की संख्या है।
(अ) 50 (ब) 500 (स) 276 (द) 352

(194) चरक संहिता में महाकषाय का वर्ण किस स्वरूप में हैं।
(अ) लक्षण व उदाहरण (ब) कर्म और उदाहरण (स) कर्म और लक्षण (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(195) चरकोक्त जीवनीय महाकषाय में अष्टवर्ग के कितने द्रव्य शामिल है।
(अ) 8 (ब) 5 (स) 6 (द) 7

(196) 'भारद्वाजी' किसका पर्याय है।
(अ) सारिवा (ब) वनकपास (स) मंजिष्ठा (द) धातकी

(197) चरक ने निम्न किस महाकषाय का वर्णन नहीं किया है।
(अ) दीपनीय (ब) पाचनीय (स) कण्ठय (द) संज्ञास्थापक

(198) चक्रपाणि के अनुसार 'सदापुष्पी' किसका पर्याय है।
(अ) कमल (ब) कुमुद (स) आरग्वध (द) अर्क

(199) चरक ने अर्जुन का प्रयोग किस महाकषाय में वर्णित किया है।
(अ) हृद्य (ब) शूल प्रशमन (स) मूत्र संग्रहणीय (द) उदर्द प्रशमन

(200) चरकोक्त ज्वरहर दशेमानि के मध्य में किसको ग्रहण नहीं किया है।
(अ) सारिवा (ब) मंजिष्ठा (स) मुस्ता (द) पाठा

(201) 'आम्रास्थि' का वर्णन चरकोक्त किस दशेमानि वर्ग में है।
(अ) पुरीषसंग्रहणीय (ब) हृद्य (स) पुरीषविरंजनीय (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(202) कमल के भेदों का वर्णन चरकोक्त किस दशेमानि वर्ग में है।
(अ) मूत्रसंग्रहणीय (ब) मूत्रविरेचनीय (स) मूत्रविरंजनीय (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(203) मूत्रविरेचनीय महाकषाय में किसका उल्लेख नहीं है।
(अ) दर्भ का (ब) कुश का (स) काश का (द) शर का

(204) 'भृष्टमृत्तिका' का वर्णन चरकोक्त किस दशेमानि वर्ग में है।
(अ) मूत्रसंग्रहणीय (ब) मूत्रविरेचनीय (स) पुरीषविरंजनीय (द) पुरीषसंग्रहणीय

(205) 'स्तन्यशोधन महाकषाय' में सम्मिलित नहीं है।
(अ) कटुकी (ब) नागरमोथा (स) हरिद्रा (द) मूर्वा

(206) 'प्रजास्थापन महाकषाय' में सम्मिलित नहीं है।
(अ) अमोघा (ब) अव्यथा (स) अरिष्टा (द) अश्वगंधा

(207) निम्नलिखित में से किस चरकोक्त दशेमानि में 'मोचरस' शामिल नहीं हैं।
(अ) पुरीष संग्रहणीय (ब) वेदनास्थापन (स) शोणितस्थापन (द) पुरीषविरंजनीय

(208) निम्नलिखित में से किस चरकोक्त दशेमानि में 'शर्करा' शामिल हैं।
(अ) दाहप्रशमन (ब) वेदनास्थापन (स) शोणितस्थापन (द) ज्वरघ्न

(209) दशमूल के द्रव्यों का वर्णन चरकोक्त किस दशेमानि वर्ग में है।
(अ) वातहर (ब) बल्य (स) शोथहर (द) उर्पयुक्त कोई नहीं

(210) अशोक का वर्णन चरकोक्त किस दशेमानि वर्ग में है।
(अ) वेदनास्थापन (ब) शोणितस्थापन (स) वयःस्थापन (द) शूलप्रशमन

(211) तृष्णानिग्रहण एंव वयः स्थापन महाकषायों में समाविष्ट है।
(अ) अभया (ब) अमृता (स) नागर (द) पुनर्नवा

(212) चरकोक्त कुष्ठघ्न व कण्डूघ्न दोनों महाकषाय में समाविष्ट है।
(अ) हरिद्रा (ब) खदिर (स) आरग्वध (द) विडंग

(213) चरकोक्त कुष्ठघ्न व कृमिघ्न दोनों महाकषाय में समाविष्ट है।
(अ) हरिद्रा (ब) खदिर (स) आरग्वध (द) विडंग

(214) बेर के भेदों का वर्णन किस महाकषाय में है।
(अ) वमनोपग (ब) विरेचनोपग (स) स्नेहोपग (द) स्वेदनोपग

(215) चरक संहिता में वर्णित "पुरीष संग्रहणीय" महाकषाय के द्रव्य है।
(अ) आम संग्राहक (ग्राही) (ब) पक्व संग्राहक (स्तम्भन) (स) दोनों (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(216) चरक संहिता में वर्णित कौनसे महाकषाय को योगीनाथसेन ने "अरोचकहर" कहा हैं।
(अ) दीपनीय (ब) पाचनीय (स) कण्ठय (द) तृप्तिघ्न

(217) कालमेह, नीलमेह एवं हारिद्रमेह की चिकित्सा में चरकोक्त किस दशेमानि वर्ग के द्रव्यों करना चाहिए।
(अ) मूत्रसंग्रहणीय (ब) मूत्रविरेचनीय (स) मूत्रविरंजनीय (द) उपयुर्क्त कोई नहीं

(218) 'विदारीगंधा' किसका पर्याय हैं ?
(अ) क्षीरविदारी (ब) विदारी (स) शालपर्णी (द) पृश्निपर्णी

(219) रसा लवणवर्ज्याश्च कषाया इति संज्ञिताः' – किस आचार्य का कथन है।
(अ) सुश्रुत (ब) चरक (स) चक्रपाणि (द) शारंग्धर

(220) 'भिषग्वर' का वर्णन चरक संहिता के किस अध्याय में है।
(अ) दीर्घन्जीवितीय (ब) खुड्डाक चतुष्पाद (स) षड्विरचेनशताश्रितीय (द) महारोगाध्याय

(221) चरक के मत से लघु द्रव्यों में किसकी की बहुलता रहती है।
(अ) वाय्वग्निगुण बहुल (ब) आकाशवाय्वग्निगुण बहुल (स) पृथ्वीसोमगुण बहुल (द) उपरोक्त सभी

(222) चरक के मत से गुरू द्रव्यों में किसकी की बहुलता रहती हैं।
(अ) वाय्वग्निगुण बहुल (ब) आकाशवाय्वग्निगुण बहुल (स) पृथ्वीसोमगुण बहुल (द) कोई नहीं

(223) 'बलवर्णसुखायुषा' किस से प्राप्त होता है।
(अ) शुद्ध रुधिर (ब) ओज (स) मात्रापूर्वक आहार (द) अ, स दोनों

(224) निरन्तर वर्जनीय आहार द्रव्य है।
(अ) मत्स्य (ब) दही (स) मांस (द) उपरोक्त सभी

(225) 'वल्लूर' शब्द का चक्रपाणिकृत अर्थ है ?
(अ) शुष्क फलम् (ब) शुष्क मांसम् (स) शुष्क शाकम् (द) शुष्क कन्दम्

(226) न शीलयेत् आहार द्रव्य है।
(अ) सैंधव लवण (ब) यव (स) यवक (द) जांगल मांस

(227) निरन्तर अभ्यसेत् द्रव्य नहीं है।
(अ) दूध (ब) दही (स) घृत (द) मधु

(228) 'नित्य तर्पणीय है।
(अ) शालि (ब) मुद्ग (स) सर्पि (द) उपरोक्त सभी

(229) चरक संहिता के किस अध्याय में स्वस्थवृत्त का वर्णन किया गया है।
(अ) मात्राशितीय (ब) तस्याशितीय (स) इन्द्रियोपक्रमणीय (द) न वेगान्धारणीय

(230) चरक संहिता के किस अध्याय में 'सद्वृत्त' का वर्णन किया गया है।
(अ) चू. सू. अ. 5 (ब) चू. सू. अ. 6 (स) चू. सू. अ. 7 (द) चू. सू. अ. 8

(231) चरकानुसार नित्य प्रयोज्य अंजन कौनसा है ?
(अ) सौवीराजंन (ब) स्रोत्रोजंन (स) रसाजंन (द) पुष्पाजंन

(232) नेत्र से स्राव निकालने के लिए कौनसे अंजन का प्रयोग करना चाहिए।
(अ) सौवीराजंन (ब) स्रोत्रोजंन (स) रसाजंन (द) पुष्पाजंन

(233) चरक ने नेत्र विस्राणार्थ रसांजन का प्रयोग बतलाया है।
(अ) 5 वें या 8 वें दिन (ब) 3 वें दिन (स) 7 वें दिन (द) 5वें या 8वें रात्रि

(233) चरक ने नेत्र विस्राणार्थ रसांजन का प्रयोग कब बतलाया है।
(अ) पन्चरात्रे अष्टरात्रे (ब) त्रिरात्रे (स) सप्तरात्रे (द) एकान्तरेरात्रे

(234) चक्षुस्तेजोमयं तस्य विशेषाच्छ्लेष्मतो भयम्। ततः .... कर्म हितं दृष्टेः प्रसादनम्।। (च. सू. 5/16)
(अ) वातहरं (ब) पित्तहरं (स) श्लेष्महरं (द) त्रिदोषहरं

(235) चरक ने प्रायोगिक धूमवर्ती की लम्बाई बतलायी है।
(अ) 8 अंगुल (ब) 6 अंगुल (स) 10 अंगुल (द) 12 अंगुल

(236) आचार्य चरक ने प्रायोगिक धूम्रपान के कितने काल बताए हैं।
(अ) 8 (ब) 6 (स) 10 (द) 5

(237) चरकमतेन स्नैहिक धूम्रपान दिन में कितनी बार करना चाहिए हैं ?
(अ) 8 (ब) 2 (स) 1 (द) 3–4

(238) चरकमतेन धूम्रनेत्र का अग्र छिद्र किसके सम होना चाहिए।
(अ) कोलास्थ्यग्रप्रमाणितम् (ब) कोलमात्रछिद्रे (स) हरेणुका प्रमाणितम् (द) सर्पषमात्रछिद्रे

(239) "हृत्कण्ठेन्द्रियसंशुद्धिः लघुत्वं शिरसः शमः" – किसका लक्षण है।
(अ) सम्यक् वमन (ब) सम्यक् नस्य (स) सम्यक् धूम्रपान (द) सम्यक् निरुह

(240) 12 वर्ष से पूर्व और 80 वर्ष के बाद धूम्रपान निषेध किसने बतलाया है।
(अ) सुश्रुत (ब) चरक (स) चक्रपाणि (द) शारंग्धर

(241) चरक के मत से नस्य का प्रयोग किस ऋतु में करना चाहिए।
(अ) प्रावृट, शरद और बंसत (ब) शिशिर, बसंत, ग्रीष्म (स) बर्षा, शरद, हेमन्त (द) उपरोक्त सभी

(242) नस्य औषधि का प्रभाव कौनसी मर्म पर होता हैं।
(अ) शंख (ब) श्रृंगाटक (स) मूर्धा (द) फण

(243) नासा हि शिरसो द्वारं तेन तद्व्याप्य हन्ति तान्। – किस आचार्य का कथन हैं।
(अ) सुश्रुत (ब) चरक (स) वाग्भट्ट (द) शार्ग्धर

(244) चरकमतेन 'अणुतैल' की मात्रा कितनी होती है।
(अ) 1 पल (ब) 1 कोल (स) 1 कर्ष (द) अर्द्ध पल

(245) चरकानुसार 'अणुतैल' की निर्माण प्रक्रिया मे तैल का कितनी बार पाक किया जाता हैं ?
(अ) एक बार (ब) दश बार (स) सौ बार (द) हजार बार

(246) शारंग्धर के अनुसार कितने वर्ष से पूर्व नस्य का निषेध है।
(अ) 10 बर्ष (ब) 12 बर्ष (स) 7 बर्ष (द) 8 बर्ष

(247) वाग्भट्ट ने दातुन की लम्बाई बतलायी है।
(अ) 8 अंगुल (ब) 6 अंगुल (स) 10 अंगुल (द) 12 अंगुल

(248) निहन्ति गन्धं वैरस्यं जिह्वादन्तास्यजं मलम्। – किसका गुणधर्म है।
(अ) दन्तपवन (ब) जिह्वा निर्लेखन (स) मुख संगन्धि द्रव्य (द) गण्डूषकवलधारण

(249) 'निम्ब' वृक्ष की दन्तपवन (दांतौन) का प्रयोग करने का उल्लेख किस आचार्य ने किया हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) उपरोक्त सभी

(250) 'दन्तशोधन चूर्ण' का वर्णन किस आचार्य ने किया है ?
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शार्ग्धर

(251) वृद्ध वाग्भट्टानुसार दंत धावन के लिए कौन से वृक्षों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
(अ) पीलु, पीपल, पारिभद्र (ब) श्लेष्मातक, शिग्रु, शमी, शाल्मली, शण
(स) तिल्वक, तिन्दुक, बिल्व, विभीतक, निर्गुण्डी (द) उर्पयुक्त सभी

(252) अष्टांग संग्रह के अनुसार निषिद्ध दन्तवन है।
(अ) धव (ब) अर्क (स) वट (द) अपामार्ग

(253) 'दन्तदाढर्यकर' है।
(अ) बकुल (ब) तेजोवती (स) पीलू (द) उपरोक्त सभी

(254) सुश्रुत ने जिह्वा निलेखन की लम्बाई बतलायी है।
(अ) 6 अंगुल (ब) 8 अंगुल (स) 10 अंगुल (द) 12 अंगुल

(255) चक्रपाणि के अनुसार 'कटुक' किसका पर्याय है ?
(अ) कटुकी (ब) मरिच (स) कटुरोहिणी (द) लताकस्तूरी

(256) मुखशोष में संग्रहकार के अनुसार हितकर है।
(अ) ताम्बूल (ब) जातीपत्री (स) लताकस्तूरी (द) कर्पूर

(257) दंतदार्ढयकर, दन्तहर्षनाशक, रूच्यकर एंव मुखवैरस्यनाशक हैं।
(अ) दन्तधावन (ब) जिह्वा निर्लेखन (स) मुखसंगन्धि द्रव्य (द) गण्डूष कवल धार

(258) मुख संचार्यते या तु मात्रा स .... स्मृतः।
(अ) कवलः (ब) गण्डूषः (स) कवलगण्डूषः (द) मुखवैशद्यकरः

(259) शारंग्धर के अनुसार जन्म से कितने वर्ष बाद गण्डूष कवल धारण करना चाहिए।
(अ) 5 बर्ष (ब) 6 बर्ष (स) 7 बर्ष (द) 8 बर्ष

(260) चरक के अनुसार 'दृष्टिः प्रसादं' है।
(अ) पादाभ्यंग (ब) पादत्रधारण (स) पादप्रक्षालन (द) छत्रधारणम्

(261) 'चक्षुष्यम् स्पर्शनहितम्' कहा गया है।
(अ) अंजन को (ब) गण्डूष धारण (स) पादाभ्यंग (द) पादत्रधारण

(262) 'वृष्यं सौगन्धमायुष्यं काम्यं पुष्टिबलप्रदम्' – किसके लिए कहा गया है।
(अ) क्षौरकर्म (ब) स्वच्छ वस्त्र धारण (स) गन्धमाल्य धारण (द) स्नान

(263) श्रीमत्पारिषदं शस्तं निर्मलाम्बरधारणम्।– किसके लिए कहा गया है।
(अ) क्षौरकर्म (ब) स्वच्छ वस्त्र धारण (स) गन्धमाल्य धारण (द) स्नान

(264) बल, वर्ण वर्धन करता है।
(अ) शुक्र (ब) ओज (स) सत्व (द) आहार

(265) चरक के मत से 'आदान काल' में कौनसी ऋतुए शामिल होती है।
(अ) प्रावृट, शरद और बंसत (ब) शिशिर, बसंत, ग्रीष्म (स) बर्षा, शरद, हेमन्त (द) हेमन्त, शरद, बसंत

(266) 'विसर्ग काल' कहलाता है।
(अ) आग्नेय काल (ब) उत्तरायण काल (स) दक्षिणायन काल (द) उपरोक्त कोई नहीं

(267) आदान काल में कौनसे गुण की वृद्धि होती है।
(अ) उष्ण (ब) शीत (स) रूक्ष (द) स्निग्ध

(268) विसर्ग काल में कौनसे गुण की वृद्धि होती है।
(अ) उष्ण (ब) शीत (स) रूक्ष (द) स्निग्ध

(269) 'बसंत ऋतु' में कौन से रस की उत्पत्ति होती हैं ?
(अ) तिक्त (ब) कषाय (स) कटु (द) उपरोक्त सभी

(270) 'हेमन्त ऋतु' में कौन से रस की उत्पत्ति होती हैं ?
(अ) मधुर (ब) अम्ल (स) लवण (द) उपरोक्त सभी

(271) "मध्ये मध्यबलं त्वन्ते श्रेष्ठमग्रे विनिर्दिशेत्" यहाँ चक्रपाणि अनुसार 'अग्रे' पद का उचित अर्थ है ? (च. सू. 6/8)
(अ) शिशिरे (ब) प्रधाने (स) चैत्रे (द) वर्षायाम्

(272) आचार्य चरक ने ऋतुचर्या का वर्णन कौनसी ऋतु से प्रारम्भ किया है।
(अ) शिशिर (ब) प्रावृट (स) हेमन्त (द) शरद

(273) किस आचार्य ने 'हंसोदक' का वर्णन नहीं किया है।
(अ) सुश्रुत (ब) चरक (स) वाग्भट्ट (द) भावप्रकाश

(274) 'यमदंष्ट्रा काल' का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) सुश्रुत (ब) चरक (स) वाग्भट्ट (द) शार्रंगधर

(275) जेन्ताक स्वेद का प्रयोग किस ऋतु मे करना चाहिए।
(अ) शिशिर (ब) बंसत (स) हेमन्त (द) शरद

(276) 'वर्जयेदन्नपानानि वातलानि लघूनि च' – सूत्र किस ऋतु के लिये कहा गया है।
(अ) शिशिर (ब) बंसत (स) हेमन्त (द) शरद

(277) 'वातलानि लघूनि च वर्जयेदन्नपानानि' – सूत्र किस ऋतु के लिये कहा गया है।
(अ) शरद ऋतु (ब) हेमन्त ऋतु (स) शिशिर ऋतु (द) बंसत ऋतु

(278) 'उष्ण गर्भगृह में निवास' – किस ऋतु के लिये कहा गया है।
(अ) शरद ऋतु (ब) हेमन्त ऋतु (स) शिशिर ऋतु (द) बंसत ऋतु

(279) 'निवात व उष्ण गृह में निवास' – किस ऋतु के लिये कहा गया है।
(अ) शरद ऋतु (ब) हेमन्त ऋतु (स) शिशिर ऋतु (द) बंसत ऋतु

(280) 'प्रवात (तीव्र वायु)' का निषेध किस ऋतु के लिये कहा गया है।
(अ) शरद ऋतु (ब) हेमन्त ऋतु (स) शिशिर ऋतु (द) बंसत ऋतु

(281) 'प्राग्वात (पूर्वी वायु)' का निषेध किस ऋतु के लिये कहा गया है।
(अ) शरद ऋतु (ब) हेमन्त ऋतु (स) शिशिर ऋतु (द) बंसत ऋतु

(282) 'औदक, आनूप, विलेशय एवं प्रसह मांस जाति के पशु–पक्षियों का मांस का सेवन किस ऋतु में करना चाहिए।
(अ) शरद ऋतु (ब) हेमन्त ऋतु (स) बर्षा ऋतु (द) बंसत ऋतु

(283) चरक के मत से 'शारभं, शाशक, ऐणमांस, लावक और कपिजंलम् के मांस का सेवन किस ऋतु में करना चाहिए।
(अ) शरद ऋतु (ब) हेमन्त ऋतु (स) बर्षा ऋतु (द) बंसत ऋतु

(284) चरकानुसार 'लाव, कपिन्जल, ऐण, उरभ्र, शरभ और शशक मांस के मांस का सेवन किस ऋतु में करना चाहिए।
(अ) शरद ऋतु (ब) हेमन्त ऋतु (स) बर्षा ऋतु (द) बंसत ऋतु

(285) 'जांगलैः मांसैर्भोज्या' का निर्देश किस ऋतु में है।
(अ) हेमंत ऋतु (ब) बंसत ऋतु (स) वर्षा ऋतु (द) ग्रीष्म ऋतु

(286) 'जांगलान्मृगपक्षिणः मांस' का निर्देश किस ऋतु में है।
(अ) हेमंत ऋतु (ब) बंसत ऋतु (स) वर्षा ऋतु (द) ग्रीष्म ऋतु

(287) चरकानुसार शिशिर ऋतु में किस ऋतुतुल्य चर्या करनी चाहिए है –
(अ) शरद (ब) हेमन्त (स) ग्रीष्म (द) बंसत

(288) शिशिर ऋतु में कौनसे रस वर्ज्य हैं ?
(अ) कटु, तिक्त, कषाय (ब) मधुर, तिक्त, कषाय (स) मधुर, अम्ल, लवण (द) कटु, अम्ल, लव

(289) 'गुर्वम्लस्निग्धमधुरं दिवास्वप्न च वर्जयेत्' – सूत्र किस ऋतु के लिये कहा गया है।
(अ) बर्षा (ब) बंसत (स) हेमन्त (द) शरद

(290) 'व्यायाममातपं चैव व्यवायं चात्र वर्जयेत्' – सूत्र किस ऋतु के लिये कहा गया है।
(अ) बर्षा (ब) बंसत (स) हेमन्त (द) शरद

(291) चरक के मत से 'कवलग्रह तथा अंजन' का प्रयोग किस ऋतु मे करना चाहिए।
(अ) बर्षा (ब) बंसत (स) हेमन्त (द) शरद

(292) मद्यमल्पं न वा पेयमथवा सुबहु उदकम्। – किस ऋतु के लिये कहा गया है।
(अ) शरद (ब) हेमन्त (स) ग्रीष्म (द) बंसत

(293) सर्वदोष प्रकोपक ऋतु है।
(अ) शिशिर (ब) बंसत (स) वर्षा (द) शरद

(294) 'प्रघर्षोद्वर्तन स्नानगन्धमाल्यपरो भवेत' का निर्देश किस ऋतु में है।
(अ) हेमंत ऋतु (ब) बंसत ऋतु (स) वर्षा ऋतु (द) ग्रीष्म ऋतु

(295) आदान दुर्बले देहे .... भवति दुर्बलः। उपयुक्त विकल्प में रिक्त स्थान की पूर्ति करें। (च. सू. 6/33)
(अ) कफो (ब) वायु (स) पक्ता (द) पुरूषो

(296) वर्षा ऋतु में मधु का प्रयोग किस तरह करना चाहिए।
(अ) पान में (ब) भोजन में (स) संस्कार में (द) उपरोक्त सभी

(297) चरकानुसार 'दिवास्वप्न' किस–किस ऋतु में वर्जनीय है।
(अ) बसंत, बर्षा, शरद (ब) प्रावृट, शरद और बंसत (स) बर्षा, शरद, हेमन्त (द) हेमन्त, शरद, बसंत

(298) हंसोदक जल का किस ऋतु में तैयार होता है ?
(अ) हेमंत ऋतु (ब) बर्षा ऋतु (स) शरद ऋतु (द) उपर्युक्त सभी में

(299) 'उपशेते यदौचित्यात् .... तदुच्यते।' – रिक्त स्थान की पूर्ति उपयुक्त विकल्प से करें। (च. सू. 6/49)
(अ) ओकः सात्म्यं (ब) सदा पथ्यम् (स) नैवसात्म्यम् (द) असात्म्यम्

(300) ओकः सात्म्य को 'अभ्यास सात्म्य' किस आचार्य ने कहा है ?
(अ) चक्रपाणि (ब) योगीन्द्रनाथ सेन (स) गंगाधर राय (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(301) चरक के मत से अधारणीय वेगों की संख्या है ?
(अ) 6 (ब) 11 (स) 13 (द) 14

(302) 'कास' को अधारणीय वेग किसने माना है ?
(अ) सुश्रुत (ब) चरक (स) वाग्भट्ट (द) शार्ंगधर

(303) वाग्भट्ट निम्न में से कौनसा अधारणीय वेग नहीं माना है ?
(अ) उद्‌गार (ब) क्षवथु (स) कास (द) श्रमः निश्वास

(304) 'शिरोरूजा' किसके वेगनिग्रह का लक्षण है।
(अ) मूत्र (ब) पुरीष (स) शुक्र (द) उपर्युक्त सभी

(305) 'पिण्डिकोद्वेष्टन' किसके वेगावरोध का लक्षण है ?
(अ) मूत्र (ब) पुरीष (स) शुक्र (द) श्रमःनिश्वास

(306) 'हृद् व्यथा' लक्षण किसमें मिलता है।
(अ) शुक्र वेग निग्रह (ब) शुक्र व पुरीष वेग निग्रह
(स) शुक्र व पिपासा वेग निग्रह (द) क्षुधा व पिपासा वेग निग्रह

(307) स्वेदन, अवगाहन, अभ्यंग का निर्देश किसकी चिकित्सा में है।
(अ) मूत्रवेग निग्रह (ब) पुरीषवेग निग्रह (स) शुक्रवेग निग्रह (द) अधोवात वेग निग्रह

(308) चरकानुसार पुरीषवेग निग्रह किसकी चिकित्सा का क्रम है।
(अ) स्वेदन, अवगाहन, अभ्यंग (ब) स्वेदन, अभ्यंग, अवगाहन (स) अभ्यंग, अवगाहन, स्वेद (द) अभ्यंग, अवगाहन

(309) अभ्यंग, अवगाहन का क्रमशः निर्देश किसकी चिकित्सा में है।
(अ) मूत्रवेग निग्रह (ब) पुरीषवेग निग्रह (स) शुक्रवेग निग्रह (द) उपर्युक्त सभी

(310) आचार्य चरकानुसार मूत्रवेग निग्रह की चिकित्सा में देय बस्ति है।
(अ) अनुवासन बस्ति (ब) निरूह बस्ति (स) उत्तर बस्ति (द) त्रिविध बस्ति

(311) चरक के मत से शुक्रवेग निग्रह की चिकित्सा में देय बस्ति है।
(अ) अनुवासन बस्ति (ब) निरूह बस्ति (स) उत्तर बस्ति (द) त्रिविध बस्ति

(312) 'प्रमाथि अन्नपान' का निर्देश किसकी चिकित्सा में है।
(अ) मूत्रवेग निग्रह (ब) पुरीषवेग निग्रह (स) छर्दि वेग निग्रह (द) क्षवथु वेग निग्रह

(313) 'रूक्षान्नपान' का निर्देश किसकी चिकित्सा में है।
(अ) मूत्रवेग निग्रह (ब) पुरीषवेग निग्रह (स) छर्दि वेग निग्रह (द) क्षवथु वेग निग्रह

(314) 'अवपीडक सर्पिपान' का निर्देश किसकी चिकित्सा में है।
(अ) मूत्रवेग निग्रह (ब) पुरीषवेग निग्रह (स) छर्दि वेग निग्रह (द) क्षवथु वेग निग्रह

(315) चरकानुसार किस वेगरोधजन्य व्याधि में 'भोजनोत्तर घृतपान' करते है।
(अ) क्षवथु (ब) उदगार (स) पिपासा (द) क्षुधा

(316) 'विण्मूत्रवातसंग' किसके वेगनिग्रह का लक्षण है।
(अ) मूत्र (ब) पुरीष (स) शुक्र (द) अधोवात

(317) 'विनाम' किसके वेगनिग्रह का लक्षण है।
(अ) मूत्र (ब) पुरीष (स) क्षवथु (द) मूत्र एवं जृम्भा

(318) 'शिरोरोग' किसके वेगनिग्रह का लक्षण है।
(अ) मूत्र (ब) निद्रा (स) क्षवथु (द) पुरीष, क्षवथु

(319) 'हृद्रोग' किसके वेगनिग्रह का लक्षण है।
(अ) वाष्प (ब) निद्रा (स) क्षवथु (द) जृम्भा

(320) 'अर्दित' किसके वेगनिग्रह का लक्षण है।
(अ) छर्दि (ब) निद्रा (स) क्षवथु (द) उदगार

(321) 'कुष्ठ, विसर्प' किसके वेगनिग्रह का लक्षण है।
(अ) छर्दि (ब) निद्रा (स) क्षवथु (द) उदगार

(322) 'बाधिर्य' किसके वेगनिग्रह का लक्षण है।
(अ) क्षुधा (ब) पिपासा (स) निद्रा (द) श्रमः निश्वास

(323) 'भ्रम' किसके वेगनिग्रह का लक्षण है।
(अ) क्षुधा (ब) बाष्प (स) निद्रा (द) अ, ब दोनों

(324) 'मद्य/मदिरा पान' किसकी चिकित्सा में है।
(अ) वाष्प वेग धारण (ब) निद्रावेग धारण (स) शुक्रवेग धारण (द) अ, स दोनो में

(325) 'भुक्त्वा प्रच्छर्दनं' का निर्देश किसके वेगनिग्रह की चिकित्सा में है।
(अ) छर्दि (ब) निद्रा (स) क्षवथु (द) उदगार

(326) 'रक्तमोक्षण' का निर्देश किसके वेगनिग्रह की चिकित्सा में है।
(अ) छर्दि (ब) निद्रा (स) क्षवथु (द) उदगार

(327) 'चरणायुधा' किसका पर्याय है।
(अ) कुक्कुट (ब) मयूर (स) काक (द) कबूतर

(328) जृम्भा वेगधारण मे कौनसी चिकित्सा की जाती है।
(अ) वातघ्न (ब) वातपित्तघ्न (स) कफपित्तघ्न (द) त्रिदोषघ्न

(329) 'वातघ्न' किसके वेगनिग्रह की चिकित्सा में है।
(अ) क्षवथु (ब) जृम्भा (स) श्रमः निश्वास (द) उपर्युक्त सभी

(330) 'वाणी' के धारणीय वेगों की संख्या है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 6 (द) 9

(331) 'मन' के धारणीय वेगों की संख्या है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 6 (द) 9

(332) 'अभिध्या' किसका धारणीय वेग है।
(अ) मन (ब) वाणी (स) शरीर (द) उपर्युक्त कोई न

(333) 'स्तेय' किसका धारणीय वेग है।
(अ) मन (ब) वाणी (स) शरीर (द) उपर्युक्त कोई न

(334) शरीरायासजननं कर्म व्यायाम उच्यते – किसका कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(335) दिनचर्या के अन्तर्गत 'व्यायाम' का वर्णन किस ग्रन्थ में नही है।
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) अष्टांग संग्रह (द) अष्टांग हृदय

(336) चरक के अनुसार व्यायाम कब तक करना चाहिए।
(अ) बलार्द्ध (ब) मात्रानुसार (स) अर्द्धशक्ति (द) मन्दशक्ति

(337) सुश्रुत के अनुसार व्यायाम कब तक करना चाहिए।
(अ) बलार्द्ध (ब) मात्रानुसार (स) अर्द्धशक्ति (द) मन्दशक्ति

(338) व्यायाम करने से मेद का क्षय होता है – यह किस आचार्य ने कहा है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(339) चरकानुसार अतिव्यायाम से हो सकता है –
(अ) प्रतमक श्वास (ब) वमन (स) रक्तपित्त (द) उपर्युक्त सभी

AYURVEDA DR. NEELIMA SINGH ENTRANCE COACHING CENTER 9826438399

(340) निम्न में से कौनसा एक लक्षण बलार्द्ध व्यायाम का नहीं है।
(अ) मुखशोष (ब) ललाट प्रदेश में स्वेद (स) कक्षा प्रदेश में स्वेद (द) हृद्स्पन्दन में वृद्धि

(341) बुद्धिमान व्यक्ति को कौनसा कार्य अति मात्रा में नहीं करना चाहिए।
(अ) व्यायाम (ब) ग्राम्यधर्म (स) हास्य (द) उपर्युक्त सभी

(342) "वातलाद्याः सदातुराः" – किसका कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(343) "वातिकाद्याः सदाऽऽतुराः" – किसका कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(344) आचार्य चरक ने बहिर्मुख स्रोत्रस को कहा है।
(अ) मलायन (ब) मलायतन (स) दोनों (द) कोई नहीं

(345) चरकानुसार कफ का निर्हरण किस मास में करना चाहिए।
(अ) चैत्र (ब) श्रावण (स) अगहन (द) पौष

(346) चरक मतानुसार पित्त का निर्हरण विरेचन द्वारा किस मास में करना चाहिए ?
(अ) श्रावण मास (ब) चैत्र मास (स) आषाढ मास (द) मार्ग शीर्ष मास

(347) चरक संहिता में 'देह प्रकृति' का वर्णन किस अध्याय में है।
(अ) न वेगान्धारणीयाध्याय (ब) रोगभिषग्जितीय विमानाध्याय (स) महती गर्भावक्रान्ति (द) उपरोक्त कोई नहीं

(348) चरक संहिता में 'दोष प्रकृति' का वर्णन किस अध्याय में है।
(अ) न वेगान्धारणीयाध्याय (ब) रोगभिषग्जितीय विमानाध्याय (स) महती गर्भावक्रान्ति (द) उपरोक्त कोई नहीं

(349) चरक संहिता में 'सत्व प्रकृति (मानस प्रकृति)' का वर्णन किस स्थान में है।
(अ) सूत्र स्थान (ब) विमान स्थान (स) शारीर स्थान (द) इन्द्रिय स्थान

(350) दधि किसके साथ खाना चाहिए।
(अ) घृत (ब) शर्करा (स) मधु (द) उपरोक्त सभी

(351) मन को 'अतीन्द्रिय' की संज्ञा किस आचार्य ने दी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) तर्क संग्रह

(352) चेष्टाप्रत्ययभूतं इन्द्रियाणाम्। – किसका कथन है।
(अ) वायु का (ब) मन का (स) आत्मा का (द) मस्तिष्क का

(353) 'चक्षु' है।
(अ) इन्द्रिय (ब) इन्द्रियार्थ (स) इन्द्रियाधिष्ठान (द) इन्द्रिय द्रव्य

(354) 'अक्षि' है।
(अ) इन्द्रिय (ब) इन्द्रियार्थ (स) इन्द्रियाधिष्ठान (द) इन्द्रिय द्रव्य

(355) क्षणिका और निश्चयात्मिका – किसके भेद है।
(अ) पंचेन्द्रिय बुद्धि (ब) पंचेन्द्रियार्थ (स) पंचेन्द्रिय द्रव्य (द) पंचेन्द्रिय

(356) 'इन्द्रिय पंचपंचक' का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) उपरोक्त सभी

(357) चरक के मत से 'अध्यात्म द्रव्यगुणसंग्रह' है।
(अ) मन, मर्नोऽर्थ, बुद्धि आत्मा (ब) मन, मर्नोऽर्थ, बुद्धि (स) मन, मर्नोऽर्थ, (द) मन

(358) मन का अर्थ है।
(अ) चिन्त्य (ब) विचार्य (स) ऊह्य (द) उपरोक्त सभी

(359) मन का अर्थ है।
(अ) चिन्त्य (ब) विचार्य (स) ऊह्य (द) संकल्प

(360) चरक संहिता के किस अध्याय में 'सदवृत्त' का वर्णन मिलता है।
(अ) मात्राशितीय (ब) तस्याशितीय (स) इन्द्रियोपक्रमणीय (द) न वेगान्धारणीय

(361) चरकानुसार मनुष्य को 1 पक्ष में कितने बार केश, श्मश्रु, लोम व नख काटना चाहिए।
(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) 4

(362) चरकानुसार किस दिशा में मुख करके भोजन करना चाहिए।
(अ) पूर्व (ब) उत्तर (स) पश्चिम (द) दक्षिण

(363) इन्द्रियों को अंहकारिक किसने माना है।
(अ) वैशेषिक (ब) न्याय (स) सांख्य (द) चरक

(364) चरक के मत से 'अर्थद्वय' का अर्थ है
(अ) धर्म, अर्थ (ब) आरोग्य एवं इन्द्रियविजय (स) काम, मोक्ष (द) कोई नहीं

(365) 'विकारो धातुवैषम्यं साम्यं प्रकृतिरूच्यते' – किस आचार्य का कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) भावप्रकाश

(366) 'रोगस्तु दोषवैषम्यं दोषसाम्यमरोगता' – किस आचार्य का कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) भावप्रकाश

(367) 'निर्देशकारित्वम्' किसका गुण है।
(अ) वैद्य (ब) औषध (स) परिचारक (द) आतुर

(368) 'श्रुते पर्यवदातत्वं' किसका गुण है।
(अ) वैद्य (ब) औषध (स) परिचारक (द) आतुर

(369) 'दाक्ष्य्' किसका गुण है।
(अ) वैद्य (ब) परिचारक (स) आतुर (द) वैद्य, परिचारक दो

(370) 'उपचारज्ञता' किसका गुण है।
(अ) वैद्य (ब) औषध (स) परिचारक (द) आतुर

(371) चरकानुसार चिकित्सा के चतुष्पाद में वैद्य के प्रधान होने का कारण है।
(अ) दाक्ष्य, शौच (ब) मेधावी, युक्तिज (स) हेतुज्ञ, युक्तिज (द) विज्ञाता, शासिता

(372) प्राणाभिसर वैद्य के गुण है ?
(अ) 4 (ब) 6 (स) 10 (द) 12

(373) राजार्ह वैद्य के ज्ञान है ?
(अ) 4 (ब) 6 (स) 10 (द) 12

(374) चरकानुसार वैद्य के गुण है ?
(अ) 4 (ब) 6 (स) 10 (द) 12

(375) राजार्ह वैद्य के ज्ञान है ?
(अ) तस्मात् शास्त्रऽर्थ विज्ञाने प्रवृतौ कर्मदर्शने। (ब) योगमासां तु यो विद्यात् देशकालोपपादितम्।
(स) विद्या वितर्की विज्ञानं स्मृतिः तत्परता क्रिया। (द) हेतो लिंगे प्रशमने रोगाणाम् अपुनर्भवे।

(376) वैद्य की 4 वृत्तियों मे शामिल नहीं है।
(अ) मैत्री (ब) कारूण्य (स) मुदिता (द) उपेक्षा

(377) प्रकृति स्थेषु भूतेषु वैद्यवृत्तिः चतुर्विधा। – यहा पर प्रकृति स्थेषु का क्या अर्थ है।
(अ) स्वास्थ्य (ब) मृत्यु (स) चिकित्सा (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(378) निम्नलिखित में कौनसा वर्ग गुण या दोष उत्पन्न करने के लिए पात्र की अपेक्षा करता हैं।
(अ) शस्त्र, शास्त्र, वैद्य (ब) शस्त्र, शास्त्र, सलिल (स) शस्त्र, शास्त्र, द्रव्य (द) शस्त्र, शास्त्र, रो

(379) चरकानुसार 'साध्य' के भेद है ?
(अ) द्विविध (ब) त्रिविध (स) चतुर्विध (द) अ, ब दोनो

(380) न च तुल्य गुणों दूष्यो न दोषः प्रकृति भवेत् – किसका लक्षण है।
(अ) सुखसाध्य (ब) कृच्छ्रसाध्य (स) याप्य (द) अनुपक्रम रोग

(381) कालप्रकृति दूष्याणां सामान्येऽन्यतमस्य च – किसका लक्षण है।
(अ) सुखसाध्य (ब) कृच्छ्रसाध्य (स) याप्य (द) प्रत्याख्येय रोग

(382) मर्मसन्धिसमाश्रितम – किसका लक्षण है।
(अ) सुखसाध्य (ब) कृच्छ्रसाध्य (स) याप्य (द) प्रत्याख्येय रोग

(383) नातिपूर्ण चतुष्पदम् – किसका लक्षण है।
(अ) सुखसाध्य (ब) कृच्छ्रसाध्य (स) याप्य (द) प्रत्याख्येय रोग

(384) गम्भीरं बहु धातुस्थं – किसका लक्षण है।
(अ) सुखसाध्य (ब) कृच्छ्रसाध्य (स) याप्य (द) प्रत्याख्येय रोग

(385) क्रियापथम् अतिक्रान्तं – किसका लक्षण है।
(अ) सुखसाध्य (ब) कृच्छ्रसाध्य (स) याप्य (द) प्रत्याख्येय रोग

(386) रोगं दीर्घकालम् अवस्थितम् – किसका लक्षण है।
(अ) सुखसाध्य (ब) कृच्छ्रसाध्य (स) याप्य (द) प्रत्याख्येय रोग

(387) विद्यात् द्विदोषजम् – किसका लक्षण है।
(अ) सुखसाध्य (ब) कृच्छ्रसाध्य (स) याप्य (द) प्रत्याख्येय रोग

(388) .... द्विदोषजम्।
(अ) सुखसाध्य (ब) कृच्छ्रसाध्य (स) याप्य (द) प्रत्याख्येय रोग

(389) ज्वरे तुल्यतुदोषत्वं प्रमेहे तुल्यदूष्यता। रक्तगुल्मे पुराणत्वं ....स्य लक्षणं।
(अ) सुखसाध्य (ब) कृच्छ्रसाध्य (स) याप्य (द) अनुनक्रम

(390) ज्वरे तुल्यतुदोषत्वं प्रमेहे तुल्यदोषता। रक्तगुल्मे पुराणत्वं सुखसाध्यस्य लक्षणम्। – किसका कथन है ?
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) भावप्रकाश

(390) रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए – प्रमेहे .... सुखसाध्यस्य लक्षणम्।
(अ) तुल्यतुदोषत्वं (ब) तुल्यदोषता (स) तुल्यऋतुः (द) पुराणत्वम्

(391) चरकानुसार 'तिस्त्र एषणा' है।
(अ) धर्म, अर्थ, मोक्ष (ब) धर्म, काम, मोक्ष (स) प्राण, धन, परलोक (द) प्राण, धन, धर्म

(392) चरकानुसार 'प्रथम एषणा' है।
(अ) प्राणैषणा (ब) धनैषणा (स) परलोकैषणा (द) धर्मैषणा

(393) प्रत्यक्ष प्रमाण में बाधक कारण है।
(अ) 4 (ब) 8 (स) 6 (द) 10

(394) प्रमाण के लिए "परीक्षा" शब्द किसने प्रयोग किया है।
(अ) वैशेषिक (ब) सुश्रुत (स) जैन (द) चरक

(395) चरकानुसार 'अनुमान' के भेद है ?
(अ) द्विविध (ब) त्रिविध (स) चतुर्विध (द) पंचविध

(396) "षड्धातु पंचमहाभूत तथा आत्मा के संयोग से गर्भ की उत्पत्ति होती है" – ये किस प्रमाण का उदाहरण हैं।
(अ) प्रत्यक्ष (ब) अनुमान (स) आप्तोपदेश (द) युक्ति

(397) "बुद्धि पश्यति या भावान् बहुकारणयोगजान्" – किसके लिए कहा गया है।
(अ) प्रत्यक्ष प्रमाण हेतु (ब) अनुमान हेतु (स) युक्ति हेतु (द) उपमान हेतु

(398) त्रिवर्ग में शामिल नहीं है।
(अ) धर्म (ब) अर्थ (स) काम (द) मोक्ष

(399) चरकानुसार निम्न में कौन सा प्रमाण पुनर्जन्म सिद्ध करता है –
(अ) प्रत्यक्ष (ब) अनुमान (स) आप्तोपदेश (द) उपरोक्त सभी

(400) आचार्य चरक ने प्रत्यक्ष प्रमाणं से पुनर्जन्म सिद्धि के कितने उदाहरण दियें हैं।
(अ) 11 (ब) 12 (स) 13 (द) 8

(401) त्रिउपस्तम्भ है।
(अ) वात, पित्त, कफ (ब) आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य (स) सत्व, आत्मा, शरीर (द) हेतु, दोष, द्रव्य

(402) 'आहार, स्वप्न तथा ब्रह्मचर्य – किस आचार्य के अनुसार त्रय उपस्तम्भ हैं।
(अ) चरकानुसार (ब) अष्टांग संग्रहानुसार (स) सुश्रुतानुसार (द) अष्टांग हृदयानुसार

(403) वाग्भट्टानुसार त्रिउपस्तम्भ है।
(अ) वात, पित्त, कफ (ब) आहार, निद्रा, अब्रह्मचर्य (स) आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य (द) सत्व, आत्मा, शरीर

(404) त्रिस्तम्भ है।
(अ) वात, पित्त, कफ (ब) आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य (स) सत्व, आत्मा, इन्द्रिय (द) हेतु, दोष, द्रव्य

(405) त्रिस्थूण है।
(अ) हेतु, लिंग, औषध (ब) आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य (स) वात, पित्त, कफ (द) सत्व, रज, तम

(406) त्रिविध विकल्प है।
(अ) अतियोग, अयोग, सम्यक्योग (ब) अतियोग, हीनयोग, मिथ्यायोग
(स) अतियोग, अयोग, मिथ्यायोग (द) सम्यक्योग, हीनयोग, मिथ्यायोग

(407) चरकानुसार त्रिविध रोग है।
(अ) वातज, पित्तज, कफज रोग (ब) कायिक, मानसिक, स्वाभाविक रोग
(स) शारीरिक, मानसिक, आगन्तुक रोग (द) निज, आगन्तुज, मानस रोग

(408) किस इन्द्रिय की व्याप्ति सभी इन्द्रियों में है ?
(अ) चक्षु (ब) घ्राण (स) त्वक् (द) रासना

(409) देहबल के भेद होते है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 5 (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(410) शाखा में होने वाली व्याधियॉ की संख्या कही गयी है।
(अ) 14 (ब) 11 (स) 16 (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(411) त्रिविधं विकल्प व त्रिविधमेव कर्म है।
(अ) कर्म (ब) काल (स) प्रज्ञापराध (द) प्रवृत्ति

(412) "शोष, राजयक्ष्मा" कौनसे मार्गज व्याधियॉ हैं।
(अ) बाह्य रोगमार्ग (ब) मध्यम रोगमार्ग (स) आभ्यन्तर रोगमार्ग (द) सर्व रोगमार्ग

(413) विद्रधि, अर्श, विसर्प ,शोथ, गुल्म व्याधियॉ है।
(अ) शाखा आश्रित (ब) कोष्ठ आश्रित (स) अस्थिसंधि मर्माश्रित (द) अ, ब दोनों

(414) पुनः अहितेभ्योऽर्थेभ्यो मनोनिग्रहः – कौनसी औषध है।
(अ) दैव व्यापाश्रय (ब) युक्ति व्यपाश्रय (स) सत्वावजय (द) शोधन

(415) पुनः आहार औषधद्रव्याणां योजना – कौनसी औषध है।
(अ) दैवव्यापाश्रय (ब) युक्तिव्यापाश्रय (स) सत्वावजय (द) संशोधन

(416) "पल्लवग्राही" वैद्य कौन होता है।
(अ) प्राणभिसर (ब) रोगाभिसर (स) शास्त्रविद (द) छद्मर वैद्य

(417) प्रयोग ज्ञान विज्ञान सिद्धि सिद्धाः सुखप्रदाः। – किस वैद्य के गुण है।
(अ) जीविताभिसर (ब) रोगाभिसर (स) सिद्धसाधित (द) छद्मर वैद्य

(418) तिस्त्रैषणीय अध्याय में कुल त्रित्व है।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(419) अष्ट त्रित्व का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) पुनर्वसु आत्रेय (ब) मैत्रेय (स) भिक्षु आत्रेय (द) कृष्णात्रेय

(420) आचार्य कुश ने वात के कितने गुण बताये है।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(421) वात का गुण 'दारूण' किसने माना है।
(अ) कुश (ब) वडिश (स) वार्योविद (द) भारद्वाज

(422) प्राकृत शरारस्थ वायु का कर्म नहीं है।
(अ) तन्त्रयंत्रधर (ब) सर्वेन्द्रियाणामुद्योजक (स) समीरणोऽग्नेः (द) सर्वशरीरव्यूहकर

(423) मन का नियंत्रण कौन करता है।
(अ) मस्तिष्क (ब) मन (स) वायु (द) आत्मा

(424) वायुस्तन्त्रयन्त्रधर – में 'तंत्र' का क्या अर्थ है।
(अ) मस्तिष्क (ब) शरीर (स) शरीरवयव (द) आत्मा

(425) आयुषोऽनुवृत्ति प्रत्ययभूतो – किसका कर्म है।
(अ) वायु का (ब) मन का (स) आत्मा का (द) मस्तिष्क का

(426) वातकलाकलीय अध्याय में पित्त संबंधी वर्णन किसने किया है।
(अ) काप्य (ब) वडिश (स) वार्योविद (द) मरिच

(427) चरकानुसार ज्ञान–अज्ञान में कौनसा दोष उत्तरदायी होता है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) आम

(428) वायु एंव आत्मा दोनों का पर्याय है।
(अ) विभु (ब) विश्वकर्मा (स) विश्वरूपा (द) उपर्युक्त सभी

(429) आचार्य चरक के मत से 'प्रजापति' किसका पर्याय है।
(अ) वायु (ब) आत्मा (स) शुक्र (द) अन्न

(430) आचार्य काश्यप ने 'प्रजापति' की संज्ञा किसे दी है।
(अ) वायु (ब) आत्मा (स) शुक्र (द) अन्न

(431) आचार्य चरक ने 'भगवान्' की संज्ञा किसे दी है।
(अ) वायु (ब) काल (स) आत्रेय (द) अ, स दोनो

(432) आचार्य सुश्रुत ने 'भगवान्' संज्ञा किसे दी है।
(अ) वायु (ब) काल (स) जठराग्नि (द) उपर्युक्त सभी

(433) स्नेह की योनियॉ है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 8

(434) स्नेह कितने होते है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 8

(435) विरेचन हेतु उत्तम तैल है।
(अ) तिल तैल (ब) सर्षप तैल (स) एरण्ड तैल (द) उपर्युक्त कोई न

(436) सभी स्नेहों में उत्तम है।
(अ) घृत (ब) तैल (स) वसा (द) मज्जा

(437) 'तैल का सेवन' का निर्देश किस ऋतु में है।
(अ) शरद (ब) प्रावृट (स) माधव (द) वर्षा

(438) 'मज्जा सेवन' का निर्देश किस ऋतु में है।
(अ) शरद (ब) प्रावृट (स) माधव (द) वर्षा

(439) 'कर्ण शूल' में लाभप्रद है।
(अ) घृत (ब) तैल (स) वसा (द) मज्जा

(440) चरकानुसार 'शिरःरूजा' में लाभप्रद है।
(अ) घृत (ब) तैल (स) वसा (द) मज्जा

(441) चरकानुसार 'निर्वापण' किसका कार्य है।
(अ) घृत (ब) तैल (स) वसा (द) मज्जा

(442) चरकानुसार 'योनिविशोधन' किसका कार्य है।
(अ) घृत (ब) तैल (स) वसा (द) मज्जा

(443) 'मज्जा' का अनुपान है।
(अ) यूष (ब) मण्ड (स) पेया (द) उष्णजल

(444) 'यूष' किसका अनुपान है।
(अ) घृत (ब) तैल (स) वसा (द) मज्जा

(445) उष्ण काल में दिन में स्नेहपान करने कौन सा रोग हो सकता है।
(अ) मूर्च्छा (ब) पिपासा (स) उन्माद (द) उपरोक्त सभी

(446) श्लेष्माधिकता में रात्रि में स्नेहपान करने कौन सा रोग नहीं हो सकता है।
(अ) अरूचि (ब) आनाह (स) पाण्डु (द) कामला

(447) चरकानुसार स्नेह की प्रविचारणाये होती है।
(अ) 57 (ब) 20 (स) 24 (द) 64

(448) काश्यपानुसार स्नेह की प्रविचारणाये होती है।
(अ) 57 (ब) 20 (स) 24 (द) 64

(449) 'अच्छपेय स्नेह' निम्नलिखित में कौन सी कल्पना है।
(अ) प्रथम कल्पना (ब) प्रथम कल्पना एवं प्रविचारणा (स) प्रविचारणा (द) अल्प स्नेहन

(450) 'स्नेह' की प्रधान मात्रा का निर्देश किसमें नहीं है।
(अ) गुल्म (ब) विसर्प (स) कुष्ठ (द) सर्पदंष्ट्र

(451) वातरक्त में स्नेह की कौनसी मात्रा प्रयुक्त होती है।
(अ) ह्रस्व (ब) मध्यम (स) उत्तम (द) उपर्युक्त कोई नह

(452) अतिसार में स्नेह की कौनसी मात्रा प्रयुक्त होती है।
(अ) ह्रस्व (ब) मध्यम (स) उत्तम (द) उपर्युक्त कोई नह

(453) 'मृदुकोष्ठ' हेतु स्नेह की कौनसी मात्रा का निर्देशित है।
(अ) ह्रस्व (ब) मध्यम (स) उत्तम (द) उपर्युक्त कोई नह

(454) 'मंदबिभ्रंशा' नाम है।
(अ) स्नेह की ह्रस्व मात्रा (ब) स्नेह की मध्यम मात्रा (स) स्नेह की उत्तम मात्रा (द) स्नेह की अति मा

(455) स्नेह की कौनसी मात्रा का पाचनकाल अहोरात्र है।
(अ) ह्रस्व (ब) मध्यम (स) उत्तम (द) उपर्युक्त कोई नह

(456) स्नेह की ह्रस्वयसी मात्रा किसने बतलायी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(457) संशोधन हेतु स्नेह की कौनसी मात्रा प्रयुक्त होती है।
(अ) ह्रस्व (ब) मध्यम (स) उत्तम (द) उर्पयुक्त सभी

(458) 'कृमिकोष्ठ' में किसका प्रयोग करना चाहिए है।
(अ) घृत (ब) तैल (स) वसा (द) मज्जा

(459) 'क्षतक्षीण' में किसका प्रयोग करना चाहिए है।
(अ) घृत (ब) तैल (स) वसा (द) मज्जा

(460) नाडीव्रण में किसका प्रयोग करना चाहिए है।
(अ) घृत (ब) तैल (स) वसा (द) मज्जा

(461) क्रूरकोष्ठ में किसका प्रयोग करना चाहिए है।
(अ) घृत (ब) तैल (स) मज्जा (द) तैल, मज्जा

(462) अस्थि–सन्धि–सिरा–स्नायु–मर्मकोष्ठ महारूजः – में किसका प्रयोग करना चाहिए है।
(अ) घृत (ब) तैल (स) वसा (द) मज्जा

(463) जिनको वसा सात्म्य है उनको किस स्नेह का सेवन करना चाहिए।
(अ) घृत (ब) तैल (स) वसा (द) मज्जा

(464) 'घस्मरा' व्यक्ति में किसका प्रयोग करना चाहिए है।
(अ) घृत (ब) तैल (स) वसा (द) मज्जा

(465) केवल अच्छ स्नेह सेवन से मृदुकोष्ठ व्यक्ति कितनी रात्रि में स्निग्ध हो जाता है।
(अ) 5 (ब) 2 (स) 3 (द) 7

(466) केवल अच्छ स्नेह सेवन से क्रूरकोष्ठ व्यक्ति कितनी रात्रि में स्निग्ध हो जाता है।
(अ) 5 (ब) 2 (स) 3 (द) 7

(467) 'अल्पकफा मन्दमारुता ग्रहणी' – किस कोष्ठ के व्यक्ति में होती हैं ? (च. सू. 13/69)
(अ) मृदुकोष्ठ (ब) मध्य कोष्ठ (स) क्रूरकोष्ठ (द) बद्धकोष्ठ

(468) चरकानुसार स्नेह व्यापदों की संख्या है ?
(अ) 6 (ब) 10 (स) 12 (द) 19

(469) चरक संहिता में 'तक्रारिष्ट' का सर्वप्रथम उल्लेख किसके संदर्भ में आया है।
(अ) स्नेहव्यापत्ति भेषज (ब) अर्श चिकित्सा (स) उदररोग चिकित्सा (द) ग्रहणी चिकित्सा

(470) चरकानुसार स्नेहपान के कितने दिन बाद वमन कराते है।
(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) 7

(471) चरकानुसार स्नेहपान के कितने दिन बाद विरेचन कराते है।
(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) 7

(472) 'पांच प्रसृतिकी पेया' के घटकों में शामिल है।
(अ) घृत, तैल (ब) वसा, मज्जा (स) तण्डुल (द) उपर्युक्त सभी

(473) 'प्रस्कन्दन' किसका पर्याय है।
(अ) वमन (ब) विरेचन (स) वस्ति (द) नस्य

(474) 'उल्लेखन' किसका पर्याय है।
(अ) वमन (ब) विरेचन (स) लेखन (द) शोधन

(475) विचारणा के योग्य रोगी है।
(अ) क्लेशसहा (ब) नित्यमद्यसेवी (स) मृदुकोष्ठी (द) उपर्युक्त सभी

(476) चरकानुसार वंक्षण में कौनसा स्वेद कराते है।
(अ) मृदु स्वेद (ब) मध्यम स्वेद (स) स्वल्प स्वेद (द) अल्प स्वेद

(477) वाग्भट्टानुसार वंक्षण में कौनसा स्वेद कराते है।
(अ) मृदु स्वेद (ब) मध्यम स्वेद (स) स्वल्प स्वेद (द) अल्प स्वेद

(478) स्वेदन के अतियोग में ग्रीष्म ऋतु में वर्णित मधुर, स्निग्ध एवं शीतल आहार विहार चिकित्सा किसने बतलायी है
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) काश्यप (द) वाग्भट्ट

(479) स्वेदन के अतियोग शीघ्र शीतोपचार चिकित्सा किसने बतलायी है
(अ) चरक (ब) सुश्रुत, शारंर्गधर (स) काश्यप (द) वाग्भट्ट

(480) स्वेदन के अतियोग में विसर्प रोग की चिकित्सा किसने बतलायी है
(अ) चरक (ब) सुश्रुत, शारंर्गधर (स) काश्यप (द) वाग्भट्ट

(481) स्वेदन के अतियोग स्तम्भन चिकित्सा किसने बतलायी है
(अ) चरक (ब) सुश्रुत, शारंर्गधर (स) काश्यप (द) वाग्भट्ट

(482) स्वेदन के अयोग्य रोगी है।
(अ) संधिवात (ब) वातरक्त (स) गृधसी (द) कोई नहीं

(483) चरकानुसार किसमें स्वेदन का निषेध है।
(अ) नित्य कषाय द्रव्य सेवी (ब) नित्य मधुर द्रव्य सेवी (स) नित्य कटु द्रव्य सेवी (द) उपर्युक्त कोई न

(484) चरकानुसार साग्नि स्वेद की संख्या हैं ?
(अ) 4 (ब) 8 (स) 10 (द) 13

(485) चरकानुसार निराग्नि स्वेद की संख्या हैं ?
(अ) 4 (ब) 8 (स) 10 (द) 13

(486) चरक ने 'पिण्डस्वेद' का अंतर्भाव किया गया है।
(अ) संकर स्वेद (ब) प्रस्तर स्वेद (स) नाडी स्वेद (द) जेन्ताक स्वेद

(487) भावप्रकाश के अनुसार 4 मुर्हूत काल तक किया जाने वाला स्वेद है।
(अ) अवगाहन (ब) प्रस्तर स्वेद (स) नाडी स्वेद (द) जेन्ताक स्वेद

(488) नाडी स्वेद मे नाडी की आकृति होती है।
(अ) घुमावदार (ब) हाथी की सूड समान (स) S आकार की (द) सीधी

(489) जेन्ताक स्वेद में कूटागार का विस्तार होता है।
(अ) 8 अरत्नि (ब) 16 अरत्नि (स) 26 अरत्नि (द) पुरूषसम प्रमाण

(490) हन्सतिका की अग्नि का प्रयोग कौनसे स्वेद में किया जाता है।
(अ) कूर्ष (ब) कूप (स) कुटी (द) होलाक

(491) चरकानुसार निराग्नि स्वेद है।
(अ) अवगाहन (ब) परिषेक (स) बहुपान (द) अध्व

(492) सुश्रुत ने कौनसा निराग्नि स्वेद नहीं माना है।
(अ) उपनाह (ब) क्षुधा, भय (स) मद्यपान (द) उपर्युक्त सभी

(493) चरक संहिता के स्वेदाध्याय में कितने स्वेद संग्रह बताए गए है।
(अ) त्रयोदश (ब) दश (स) अष्ट (द) षट्

(494) अष्टांग संग्रहकार ने उष्म स्वेद के अतंगर्त कितने स्वेदों का वर्णन किया है ? (अ. सू. 26/7)
(अ) 8 (ब) 10 (स) 12 (द) 13

(495) चरकानुसार वमन विरेचन व्यापद्रों की संख्या है।
(अ) 8 (ब) 10 (स) 12 (द) 15

(496) सुश्रुतानुसार वमन विरेचन व्यापदों की संख्या है।
(अ) 8 (ब) 10 (स) 12 (द) 15

(497) 'मलापह रोगहरं बलवर्णप्रसादनम्' — किसका कर्म है।
(अ) आहार (ब) ओज (स) रक्त (द) संसोधन से लाभ

(498) वमन के पश्चात् प्रयुक्त धूम्रपान है।
(अ) स्नैहिक (ब) प्रायोगिक (स) वैरेचनिक (द) उपर्युक्त सभी

(499) चरकसंहिता के उपकल्पनीय अध्याय में वर्णित संसर्जन क्रम से वमनविरेचन की प्रधानशुद्धि में सर्वप्रथम देय है।
(अ) मण्ड (ब) पेया (स) विलेपी (द) यवागू

(500) चरक ने विरेचन हेतु त्रिवृत्त कल्क की मात्रा बतलायी है।
(अ) 1 पल (ब) 1 अक्ष (स) 1 प्रसृत (द) 1 शुक्ति

(501) चरकानुसार 'आध्मानमरूचिश्छर्दिर्दौर्बल्यं लाघवम्' — किसका लक्षण है।
(अ) सम्यग्विरिक्त (ब) अविरिक्त (स) दुर्विरिक्त (द) वमनेऽति

(502) चरकानुसार 'दौर्बल्यं लाघवं ग्लार्निव्याधिनामणुता रूचिः' — किसका लक्षण हैं।
(अ) सम्यग्विरिक्त (ब) अविरिक्त (स) दुर्विरिक्त (द) वमनेऽति

(503) "दोषाः कदाचित् कुप्यन्ति जिता लंघनपाचनैः। जिताः संशोधनैर्ये तु न तेषां पुनरूद्भवः" — किस आचार्य का कथन है
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(504) संशोधन के अतियोग की चिकित्सा हैं।
(अ) सर्पिपान (ब) मधुरौषध सिद्ध तैल का पान (स) अनुवासन वस्ति (द) उपरोक्त सभी

(505) 'उर्ध्वगत वातरोग एवं वाक्ग्रह'— किसके अतियोग के लक्षण हैं।
(अ) वमन (ब) विरेचन (स) दोनों (द) उपर्युक्त कोई नह

(506) चरक संहिता में 'स्वभावोपरमवाद' का वर्णन कहाँ मिलता है।
(अ) चू. सू. अ. 15 (ब) चू. सू. अ. 16 (स) चू. सू. अ. 17 (द) चू. सू. अ. 18

(507) "स्वभावात् विनाशकारणनिरपेक्षात् उपरमो विनाशः स्वभावोपरमः।" — किसका कथन है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) आत्रेय (द) वाग्भट्ट

(508) 'स्वभावोपरमवाद' का मुख्य अभिप्राय है।
(अ) स्वभावेन निरोध (ब) स्वभावेन प्रकृतिः (स) स्वभावेन वृद्धि (द) स्वभावेनोत्पत्तिः

(509) जायन्ते हेतु वैषम्याद् विषमा देहधातवः। हेतु साम्यात् समास्तेषां ....सदा।।
(अ) वृद्धि (ब) हानि (स) स्वभावोपरमः (द) सम

(510) याभिः क्रियाभिः जायन्ते शरीरे धातवः समाः। सा .... विकारणां कर्म तत् भिषजां मतम्।।
(अ) भेषज (ब) चिकित्सा (स) औषध (द) दोषाणां

(511) चरक के मत से शिरोरोग का सामान्य कारण नहीं है।
(अ) दिवास्वप्न (ब) रात्रि जागरण (स) प्रजागरण (द) प्राग्वात

(512) शिर को उत्तमांग की संज्ञा किसने दी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) काश्यप (द) वाग्भट्ट

(513) माधव निदान के अनुसार शिरो रोगों की संख्या है ?
(अ) 5 (ब) 10 (स) 11 (द) 13

(514) 'शीतमारूतसंस्पर्शात्' कौनसे रोग का निदान है ?
(अ) वातिक शिरोरोग (ब) शीतपित्त (स) दोनों (द) कोई नहीं

(515) 'मद्य सेवन्' से कौनसा शिरोरोग होता है ?
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(516) 'आस्यासुखैः स्वप्नसुखैर्गुरूस्निग्धातिभोजनै' – कौनसे रोग का निदान है ?
(अ) कफज शिरोरोग (ब) प्रमेह (स) मधुमेह (द) उपर्युक्त सभी

(517) 'आस्यासुखं स्वप्नसुखं दधीनि ग्राम्यौदकानूपरसाः पयांसि' – कौनसे रोग का निदान है ?
(अ) कफज शिरोरोग (ब) वातरक्त (स) प्रमेह (द) उपर्युक्त सभी

(518) 'व्यधच्छेदरूजा' कौनसे शिरोरोग का कारण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कृमिज (द) सन्निपातज

(519) आचार्य सुश्रुत ने कौनसा हृदय रोग नहीं माना है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कृमिज (द) सन्निपातज

(520) "दर" (हृदय में मरमर ध्वनि की प्रतीति होना) – कौनसे हृदय रोग का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) कृमिज

(521) कफज हृद्रोग का निदान है।
(अ) चिन्तन (ब) अतिचिन्तन (स) अचिन्तन (द) उपर्युक्त सभी

(522) हृदयं स्तब्धं भारिकं साश्मगर्भवत् – किसका लक्षण है ?
(अ) कफज हृदय रोग (ब) कफज अर्बुद (स) वातिक ग्रहणी (द) कफज ग्रहणी

(523) चरकानुसार 'सान्निपातिक हृद्रोग' होता है।
(अ) साध्य (ब) कष्टसाध्य (स) याप्य (द) प्रत्याख्येय

(524) चरक के मत से दोष के विकल्प भेद होते है।
(अ) 57 (ब) 62 (स) 63 (द) 3

(525) चरकानुसार क्षय के भेद होते है।
(अ) 5 (ब) 10 (स) 2 (द) 18

(526) सुश्रुतानुसार क्षय के भेद होते है।
(अ) 5 (ब) 10 (स) 2 (द) 18

(527) चरकानुसार निम्नलिखित मे कौनसा रस क्षय का लक्षण नहीं है।
(अ) शूल्यते (ब) घट्टते (स) हृदय ताम्यति (द) हृदयोक्लेद

(528) परूषा स्फुटिता म्लाना त्वग् रूक्षा' किस क्षय के लक्षण है।
(अ) रसक्षय (ब) कफक्षय (स) रक्तक्षय (द) मज्जाक्षय

(529) चरकानुसार 'संधिस्फुटन' कौनसी धातु के क्षय का लक्षण है।
(अ) मांस (ब) मेद (स) अस्थि (द) मज्जा

(530) चरकानुसार 'संधिशैथिल्य' कौनसी धातु के क्षय का लक्षण है।
(अ) मांस (ब) मेद (स) अस्थि (द) मज्जा

(531) चरकानुसार 'शीर्यन्त इव चास्थानि दुर्बलानि लघूनि च। प्रततं वातरोगीणि' – लक्षण है।
(अ) मांस (ब) मेद (स) अस्थि (द) मज्जा

(532) 'दौर्बल्यं मुखशोषश्च पाण्डुत्वं सदनं श्रमः' – चरकानुसार कौनसी धातु के क्षय का लक्षण है।
(अ) रस (ब) शुक्र (स) मूत्र (द) रक्त

(533) चरकानुसार 'पिपासा' किसके क्षय का लक्षण है।
(अ) रस (ब) शुक्र (स) मूत्र (द) रक्त

(534) बिभेति दुर्बलोऽभीक्ष्णं व्यायति व्यथितेन्द्रियः। दुश्छायो दुर्मना रूक्षः क्षामश्चैव – चरकानुसार किसका लक्षण है।
(अ) ओजनाश (ब) ओजक्षय (स) ओजविस्रंस (द) ओजच्युति

(535) चरकानुसार गर्भस्थ ओज का वर्ण होता है।
(अ) सर्पिवर्ण (ब) मधुवर्ण (स) रक्तमीषत्सपीतकम् (द) श्वेत वर्ण

(536) चरकानुसार हृदयस्थ ओज का वर्ण होता है।
(अ) सर्पिवर्ण (ब) मधुवर्ण (स) रक्तमीषत्सपीतकम् (द) श्वेत वर्ण

(537) 'तन्नाशान्ना विनश्यति' – चरक ने किसके संदर्भ में कहा गया है।
(अ) रक्त (ब) ओज (स) शुक्र (द) प्राणायतन

(538) प्रथमं जायते ह्योजः शरीरेऽस्मिन् शरीरिणाम्। – किस आचार्य का कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) काश्यप (द) वाग्भट्ट

(539) मधुमेह के निदान एंव सम्प्राप्ति का वर्णन चरक संहिता के किस स्थान में मिलता है।
(अ) सूत्र स्थान (ब) निदान स्थान (स) चिकित्सा स्थान (द) विमान स्थान

(540) तैरावृत्तगतिर्वायुरोज आदाय गच्छैति। यदा बस्तिं .... मधुमेहः प्रवर्तते ? (च. सू. 17/80)
(अ) तदा साध्यो (ब) तदा कृच्छ्रो (स) तदा याप्यो (द) तदासाध्यो

(541) मधुमेह की उपेक्षा करने से शरीर के किस स्थान पर दारूण प्रमेहपिडिकाए उत्पन्न हो जाती है।
(अ) मांसल प्रदेश में (ब) मर्म स्थान में (स) संधियों में (द) उपर्युक्त सभी

(542) प्रमेहपिडका की संख्या 9 किसने बतलायी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) काश्यप (द) भोज

(543) "कुलत्थिका" नामक प्रमेह पिडिका का वर्णन किस आचार्य ने किया हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) काश्यप (द) भोज

(544) "अरूंषिका" नामक प्रमेह पिडिका का वर्णन किस आचार्य ने किया हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) काश्यप (द) भोज

(545) पिडका नातिमहती क्षिप्रपाका महारूजा। – प्रमेह पिडिका है।
(अ) जालिनी (ब) सर्षपिका (स) अंजली (द) विनता

(546) पृष्ठ और उदर में होने वाली प्रमेह पिडिका है।
(अ) जालिनी (ब) सर्षपिका (स) अजली (द) विनता

(547) 'रूजानिस्तोदबहुला' कौनसी प्रमेहपिडका का लक्षण है।
(अ) जालिनी (ब) सर्षपिका (स) अजली (द) विनता

(548) 'विसर्पणी' प्रमेहपिडका है।
(अ) जालिनी (ब) सर्षपिका (स) अजली (द) विनता

(549) 'महती नीला' प्रमेहपिडका है।
(अ) जालिनी (ब) सर्षपिका (स) अजली (द) विनता

(550) 'कृच्छ्रसाध्य' प्रमेहपिडका नहीं है।
(अ) शराविका (ब) कच्छपिका (स) जालिनी (द) विनता

(551) चरकानुसार विद्रधि के कितने भेद होते हैं।
(अ) 2 (ब) 5 (स) 6 (द) 8

(552) सुश्रुतानुसार विद्रधि के कितने भेद होते हैं।
(अ) द्विविध (ब) पंचविध (स) षड्विध (द) सप्तविध

(553) 'जृम्भा' कौनसी विद्रधि का लक्षण है ?
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(554) 'वृश्चिक दंश सम वेदना' किसका लक्षण है।
(अ) पच्यमान विद्रधि (ब) पच्यमान शोफ (स) आमवात (द) उपरोक्त सभी

(555) "तिल, माष, एवं कुलत्थ के क्वाथ के समान स्राव निकलना"– कौनसी दोषज विद्रधि का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(556) अभ्यांतर विद्रधि का कौनसा स्थान चरक ने नहीं माना है।
(अ) कुक्षि (ब) गुदा (स) वंक्षण (द) वृक्क

(557) 'हिक्का' कौनसी अभ्यांतर विद्रधि का लक्षण है।
(अ) हृदय (ब) यकृत (स) प्लीहा (द) नाभि

(558) 'उच्छ्वासापरोध' कौनसी अभ्यांतर विद्रधि का लक्षण है।
(अ) हृदय (ब) यकृत (स) प्लीहा (द) नाभि

(559) 'पृष्ठकटिग्रह' कौनसी अभ्यांतर विद्रधि का लक्षण है।
(अ) कुक्षि (ब) वस्ति (स) वंक्षण (द) वृक्क

(560) 'सक्थिसाद' कौनसी अभ्यांतर विद्रधि का लक्षण है।
(अ) कुक्षि (ब) वस्ति (स) वंक्षण (द) वृक्क

(561) 'वातनिरोध' कौनसी अभ्यांतर विद्रधि का लक्षण है।
(अ) कुक्षि (ब) वस्ति (स) वंक्षण (द) गुदा

(562) क्रियाशरीरे दोषाणां कतिधा गतयः ?
(अ) दशः (ब) नवः (स) षट् (द) पंचदशः

(563) आशयापकर्ष दोषों की कितनी गतियाँ होती है।
(अ) 05 (ब) 07 (स) 10 (द) 09

(564) चरकानुसार प्राकृत श्लेष्मा कहलाता हैं।
(अ) बल (ब) ओज (स) स्वास्थ्य (द) अ, ब दोनों

(565) चरकानुसार दोषों की त्रिविध गतियों में सम्मिलित नहीं हैं।
(अ) ऊर्ध्व गति (ब) अधः गति (स) तिर्यक् गति (द) विषम गति

(566) चरकानुसार दोषों की त्रिविध गतियों में सम्मिलित नहीं हैं।
(अ) क्षय (ब) वृद्धि (स) स्थान (द) प्रसर

(567) सर्वा हि चेष्टा वातेन स प्राणः प्राणिनां स्मृतः। – सूत्र किस अध्याय में वर्णित है।
(अ) वातकलाकलीय (ब) वातव्याधिचिकित्सा (स) दीर्घजीवतीय (द) कियन्तःशिरसीय

(568) चरक ने शोथ के भेद कितने माने है।
(अ) 3 (ब) 5 (स) 6 (द) 7

(569) शोथ के पृथु, उन्नत और ग्रंथित भेद किसने माने है।
(अ) चरक (ब) माधव (स) काश्यप (द) वाग्भट्ट

(570) शोथ के उर्ध्वगत, मध्यगत और अधोगत भेद किसने माने है।
(अ) चरक (ब) माधव (स) काश्यप (द) वाग्भट्ट

(571) कौनसा शोथ दिवाबली होता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(572) कौनसा शोथ 'सर्षपकल्कावलिप्त' होता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(573) 'पूर्व मध्यात् प्रशूयते'– कौनसा शोथ का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(574) 'शोथो नक्तं प्रणश्यति'– कौनसा शोथ का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(575) 'निपीडतो नोन्नमति श्वयथु'– कौनसा शोथ का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(576) चरक ने शोथ के उपद्रव कितने माने है।
(अ) ९ (ब) 5 (स) 6 (द) 7

(577) चरकानुसार निम्नलिखित में कौन सा शोथ का उपद्रव नहीं है।
(अ) छर्दि (ब) ज्वर (स) श्वास (द) दाह

(578) जो शोथ पुरुष अथवा स्त्री के गुह्य स्थान से उत्पन्न होकर सम्पूर्ण शरीर फैल जाये वह शोथ .... होता है।
(अ) साध्य (ब) कष्टसाध्य (स) याप्य (द) असाध्य

(579) प्रकुपित कफ गले अन्तःप्रदेश में जाकर स्थिर हो जाये, शीघ्र ही शोथ उत्पन्न कर दे तो वह है ?
(अ) गुल्म (ब) गलगण्ड (स) गलग्रह (द) गलशुण्डिका

(580) गलशुण्डिका में शोथ का स्थान होता है ?
(अ) जिह्वा मूल (ब) जिह्वा अग्र (स) काकल प्रदेश (द) गल प्रदेश

(581) यस्य पित्तं प्रकुपितं त्वचि रक्तेऽवतिष्ठते – किसके लिए कहा गया है।
(अ) विसर्प (ब) पिडका (स) पिल्लु (द) नीलिका

(582) यस्य श्लेष्मा प्रकुपितो गलबाह्योऽवतिष्ठते शनैः संजनयेच्छोफं – है।
(अ) गलगण्ड (ब) गलग्रह (स) रोहिणी (द) गण्डमाला।

(583) तीनों दोष एक ही समय में एक स्थान प्रकुपित होकर जिह्वामूल में कौनसा भंयकर शोथ उत्पन्न करते है।
(अ) गलगण्ड (ब) गलग्रह (स) रोहिणी (द) कर्णमूलशोथ

(584) उदररोग शोथ में दोष अधिष्ठान का स्थान होता है।
(अ) आमाशय (ब) पक्वाशय (स) त्वङ्मांसान्तर आश्रित (द) महास्रोत्रस

(585) चरकानुसार 'आनाह' किस दोष के प्रकुपित हाने से होता है
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) त्रिदोष

(586) चरकानुसार 'कर्णमूलशोथ' किस दोष के प्रकुपित हाने से होता है
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) त्रिदोष

(587) चरकानुसार 'उपजिह्का शोथ' किस दोष के प्रकुपित हाने से होता है
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) त्रिदोष

(588) चरकानुसार 'रोहिणी' किस दोष के प्रकुपित हाने से होता है
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) त्रिदोष

(589) चरकानुसार 'शंखक शोथ' किस दोष के प्रकुपित हाने से होता है
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) त्रिदोष

(590) चरक संहिता में शंखक शोथ का वर्णन कहाँ मिलता है।
(अ) त्रिशोधीय अध्याय (ब) त्रिमर्मीय चिकित्सा अध्याय (स) त्रिमर्मीयसिद्धि अध्याय (द) कोई नहीं

(591) चरक संहिता में शंखक रोग का वर्णन कहाँ मिलता है।
(अ) त्रिशोधीय अध्याय (ब) त्रिमर्मीय चिकित्सा अध्याय (स) त्रिमर्मीयसिद्धि अध्याय (द) कोई नहीं

(592) त्रिरात्रं परमं तस्य जन्तोः भवति जीवितम्। कुशलेन त्वनुक्रान्तः क्षिप्रं संपद्यते सुखी – किसके लिए कहा गया है।
(अ) शंखक रोग (ब) रोहिणी (स) रक्तज अधिमन्थ (द) उर्पयुक्त सभी

(593) मेधा किस दोष का कर्म है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) कोई नहीं

(594) 'न हि सर्वविकाराणां नामतोऽस्ति धुर्वा स्थितिः' का वर्णन कहाँ है।
(अ) च. सू. अ. 16 (ब) च. सू. अ. 17 (स) च. सू. अ. 18 (द) च. सू. अ. 19

(595) त एवापरिसंख्येया .... भवनि हि।
(अ) भिद्यमाना (ब) छिद्यमाना (स) विद्यमाना (द) रूद्ररूपा

(595) चरकानुसार सामान्यज रोगों की संख्या है।
(अ) 40 (ब) 80 (स) 48 (द) 56

(596) चरकानुसार 'ग्रहणीद्रोष' के भेद होते है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 6 (द) 7

(597) चरकानुसार 'प्लीह दोष' के भेद होते है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 6 (द) 7

(598) 'तृष्णा' के भेद होते है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 6 (द) 7

(599) चरक ने 'प्रतिश्याय' के भेद बतलाए है
(अ) 6 (ब) 5 (स) 4 (द) 3

(600) चरक ने 'अरोचक' के भेद बतलाए है।
(अ) 5 (ब) 4 (स) 6 (द) 3

(600) चरक ने 'उदावर्त' के भेद बतलाए है।
(अ) 3 (ब) 4 (स) 6 (द) 8

(601) चरक ने अष्टौदरीय अध्याय में 5 भेद वाले कुल कितने रोग बताए है।
(अ) 9 (ब) 10 (स) 11 (द) 12

(602) चरक ने अष्टौदरीय अध्याय में 6 भेद बाले कुल कितने रोग बताए है।
(अ) 2 (ब) 5 (स) 6 (द) 7

(603) चरकानुसार ज्वर के भेद है।
(अ) 2 (ब) 5 (स) 8 (द) 7।

(604) चरक ने 'महागद' की संज्ञा किसे दी है।
(अ) उरूस्तंभ (ब) सन्यास (स) अतत्वाभिनिवेश (द) हलीमक

(605) चरक के मत से वह त्रिदोषज रोग जो मन व शरीर को अधिष्ठान बनाकर उत्पन्न होता है ?
(अ) उरूस्तंभ (ब) सन्यास (स) अतत्वाभिनिवेश (द) अपस्मार

(606) चरक के मत से 'आम और त्रिदोष समुत्थ' रोग है ?
(अ) उरूस्तंभ (ब) सन्यास (स) महागद (द) अजीर्ण

(607) दोषा एव हि सर्वेषां रोगाणामेककारणम् – किस आचार्य का कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) काश्यप (द) वाग्भट्ट

(608) असात्मेन्द्रियार्थ संयोग, प्रज्ञापराध और परिणाम – चरकानुसार किन रोगों के कारण है।
(अ) निज (ब) आगन्तुज (स) दोनों (द) कोई नहीं

(609) चरकानुसार पित्त का विशेष स्थान है।
(अ) आमाशय (ब) पक्वाशय (स) नाभि (द) पक्वामाशयमध्य

(610) चरकानुसार कफ का विशेष स्थान है।
(अ) आमाशय (ब) उरः प्रदेश (स) ऊर्ध्व प्रदेश (द) हृदय प्रदेश

AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

(611) सुश्रुतानुसार कफ का विशेष स्थान है।
(अ) आमाशय (ब) पक्वाशय (स) उरः प्रदेश (द) हृदय प्रदेश।

(612) चरक मतेन 'रस' किसका स्थान है
(अ) वातस्थान (ब) पित्तस्थान (स) कफस्थान (द) ब, स दोनो

(613) चरक मतेन 'आमाशय' किसका स्थान है
(अ) वातस्थान (ब) पित्तस्थान (स) कफस्थान (द) ब, स दोनो

(614) 'निम्नलिखित कौन सी व्याधि सामान्यज, नानात्मज दोनों में उल्लेखित है।
(अ) उदावर्त (ब) उरूस्तंभ (स) रक्तपित्त (द) उर्पयुक्त सभी

(615) 'निम्नलिखित कौन सी व्याधि सामान्यज, नानात्मज दोनों में उल्लेखित नहीं है।
(अ) हिक्का (ब) उदावर्त (स) पाण्डु (द) कामला

(616) 'तिमिर' किसका नानात्मज विकार है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) रक्त

(617) 'त्वगवदरण' किसका नानात्मज विकार है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) रक्त

(618) 'उरुस्तम्भ' किसका नानात्मज विकार है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) रक्त

(619) 'मन्यास्तम्भ' किसका नानात्मज विकार है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) रक्त

(620) 'हिक्का' किसका नानात्मज विकार है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) रक्त

(621) 'विषाद' किसका नानात्मज विकार है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) रक्त (द) कोई नहीं

(622) हृदद्रव, तमःप्रवेश, शीताग्निता क्रमशः किसके नानात्मज विकार है।
(अ) वात, पित्त, कफ (ब) कफ, रक्त, पित्त (स) कफ, वात, पित्त (द) वात, पित्त, रक्त

(623) 'उदर्द' किसका नानात्मज विकार है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) रक्त

(624) 'धमनीप्रतिचय' किसका नानात्मज विकार है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) रक्त

(625) 10 रक्तज नानात्मज विकार किसने माने है।
(अ) शार्ङ्गधर (ब) माधव (स) काश्यप (द) वाग्भट्ट

(626) 'रक्तपित्त' किसका नानात्मज विकार है।
(अ) रक्त (ब) पित्त (स) दोनों (द) कोई नहीं

(627) 'रक्तमण्डल' किसका नानात्मज विकार है।
(अ) रक्त (ब) पित्त (स) दोनों (द) कोई नहीं

(628) 'रक्तकोठ किसका नानात्मज विकार है।
(अ) रक्त (ब) पित्त (स) दोनों (द) उपरोक्त कोई न

(629) 'रक्तनेत्रत्वं' किसका नानात्मज विकार है।
(अ) रक्त (ब) पित्त (स) दोनों (द) कोई नहीं

(630) चरक ने वात को कौनसी संज्ञा दी है।
(अ) अचिन्त्यवीर्य (ब) आशुकारी (स) अव्यक्त (द) अमूर्त

(631) 'अष्टौनिन्दितीय' अध्याय चरकोक्त कौनसे चतुष्क में आता है।
(अ) निर्देश (ब) कल्पना (स) रोग (द) योजना

(632) चरकानुसार अतिस्थूलता जन्य दोष होते है।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(633) निम्न में से कौनसा रोग अतिकृशता के कारण होता है।
(अ) गुल्म (ब) अर्श (स) ग्रहणी (द) उर्पयुक्त सभी

(634) अतिस्थूल व अतिकृश की चिकित्सा क्रमशः है।
(अ) कर्षण व वृंहण (ब) वृंहण व कर्षण (स) लंघन व वृंहण (द) वृंहण व लंघन

(635) अतिस्थूलता की चिकित्सा सिद्वांन्त है।
(अ) गुरू आहार व संतर्पण (ब) लघु आहार व संतर्पण (स) गुरू व अपतर्पण (द) लघु व अवतर्पण

(636) अतिकृशता की चिकित्सा सिद्धांन्त है।
(अ) गुरू आहार व संतर्पण (ब) लघु आहार व संतर्पण (स) गुरू व अपतर्पण (द) लघु व अवतर्पण

(637) स्थौल्यकार्श्ये कार्श्य समोपकरणौ हि तो। यद्युभौ व्याधिरागच्छेत् स्थूलमेवाति पीडयेत। – किसका कथन हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) माधव

(638) 'कार्श्यमेव वरं स्थौल्याद् न हि स्थूलस्य भेषजम्'। – किसका कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) माधव

(639) वाग्भट्ट मतेन कस्यरोगस्य नौषधम् ?
(अ) मधुमेह (ब) संयास (स) स्थौल्य (द) कार्श्य

(640) 'स्फिक्, ग्रीवा व उदर शुष्कता' चरकानुसार किसका लक्षण है।
(अ) मांस धातु क्षय (ब) मेद धातु क्षय (स) अतिकार्श्य (द) अ, स दोनों

(641) अष्टौनिन्दितीय अध्याय में वर्णित रोग है।
(अ) दुष्ट रसज (ब) दुष्ट रक्तज (स) दुष्ट मेदज (द) दुष्ट मांसज

(642) चरक ने निम्न किसकी चिकित्सा में वृहत पंचमूल का प्रयोग शहद के साथ निर्देशित किया है।
(अ) प्रतिश्याय (ब) अतिस्थौल्य (स) अतिकार्श्य (द) पित्ताश्मरी

(643) अतिस्थूलता की चिकित्सा में प्रयुक्त औषध नहीं है
(अ) तक्रारिष्ट (ब) यवामलक चूर्ण (स) शिलाजीत (द) रसायन, बाजीकरण

(644) यदा तु मनसि क्लन्ति कर्मात्मानः क्लमान्विताः। विषयेभ्यो निवर्तन्ते तदा .... मानवः।।
(अ) निद्रां (ब) स्वपिति (स) जागरति (द) स्वप्नः

(645) चरकानुसार 'ज्ञान अज्ञान' किस पर निर्भर है।
(अ) निद्रा (ब) कफ (स) पित्त (द) अ, ब दोनो

(646) दिवास्वप्न के योग्य रोगी नहीं है।
(अ) तृष्णा (ब) अतिसार (स) शूल (द) शोथ

(647) दिवास्वप्न के योग्य ऋतु है।
(अ) ग्रीष्म (ब) वर्षा (स) शिशिर (द) प्रावृट्

(648) दिवास्वप्न निषेध नहीं है।
(अ) मेदस्वी (ब) कण्ठरोगी (स) दूषीविषार्त (द) अतिसारी

(649) चरकानुसार ग्रीष्म ऋतु को छोड़कर अन्य ऋतु में दिवास्वप्न से किसका प्रकोप होता है।
(अ) कफ (ब) कफपित्त (स) त्रिदोष (द) वात

(650) सुश्रुतानुसार ग्रीष्म ऋतु को छोड़कर अन्य ऋतु में दिवास्वप्न से किसका प्रकोप होता है।
(अ) कफ (ब) कफपित्त (स) त्रिदोष (द) वात

(651) दिवास्वप्न जन्य विकार है।
(अ) हलीमक (ब) गुरूगात्रता (स) इन्द्रिय विकार (द) उपर्युक्त सभी

(652) रात्रौ जागरण रूक्षं स्निग्धं प्रस्वपनं दिवा। अरूक्षं अनभिष्यन्दि ....।
(अ) प्रजारण (ब) त्वासीनं प्रचलायितम् (स) भुक्त्वा च दिवास्वप्नं (द) सम निद्रा

(653) ....समुत्थे च स्थौल्यकार्श्ये विशेषतः।
(अ) स्वप्नाहार (ब) रस निमित्तमेव (द) आहार निद्रा ब्रह्मचर्य (स) निद्रा

(654) चरक ने अतिनिद्रा की चिकित्सा में निम्न में किसका निर्देश किया है।
(अ) शिरोविरेचन (ब) कायविरेचन (स) रक्तमोक्षण (द) उपर्युक्त सभी

(655) चरक निद्रानाश के कारण बताएँ है।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(656) चरक निद्रा के भेद माने है।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 3

(657) सुश्रुत निद्रा का भेद नहीं माना है।
(अ) वैष्णवी (ब) व्याध्यनुवर्तनी (स) वैकारिकी (द) तामसी

(658) भूधात्री निद्रा हैं –
(अ) तमोभवा (ब) रात्रिस्वभावप्रभवा (स) वैकारिकी (द) आगन्तुकी

(659) कौनसी निद्रा व्याधि को निर्दिष्ट नहीं करती है।
(अ) श्लेष्मसमुद्भवा (ब) मनःशरीरश्रमसम्भवा (स) आगन्तुकी (द) तमोभवा

(660) समसंहनन पुरूष का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(661) स्वस्थ पुरूष का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(662) दशविध निन्दित बालकों का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(663) "स्थूल पर्वा" – किसका लक्षण है।
(अ) अतिस्थूल (ब) अतिकृश (स) दोनों (द) कोई नहीं

(664) स्थूलता से मुक्त होने के उपाय है।
(अ) प्रजागरण (ब) व्यायाम (स) व्यवाय (द) उपर्युक्त सभी

(665) रस निमित्तमेव स्थौल्यं कार्श्य च। – किस आचार्य का कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(666) निद्रानाश की चिकित्सा है ?
(अ) स्नान (ब) शाल्यन्न (स) मद्य (द) उपर्युक्त सभी

(667) निद्रानाश का हेतु नहीं है ?
(अ) कार्य (ब) काल (स) वय (द) विकार

(668) सुश्रुत निद्रा के भेद माने है।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 3

(669) वाग्भट्ट निद्रा के भेद माने है।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 3

(670) स्वाभावात् निद्रा – का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(671) चरक सूत्रस्थान अध्याय – 22 का नाम है।
(अ) महारोगाध्याय (ब) अष्टौनिन्दतीय (स) संतर्पणीय (द) लंघन बृंहणीय

(672) लंघन, बृंहण, रूक्षण, स्तम्भन, स्वेदन, स्नेहन – कहलाते है।
(अ) षट्कर्म (ब) षट्क्रिया (स) षट्क्रियाकाल (द) षड्विध उपक्रम

(673) 'सर एवं स्थिर' दोनों गुण कौनसे द्रव्यों में मिलते है।
(अ) स्नेहन (ब) लंघन (स) स्वेदन (द) रूक्षण

(674) 'स्निग्ध एवं रूक्ष' दोनों गुण कौनसे द्रव्यों में मिलते है।
(अ) स्नेहन (ब) लंघन (स) स्वेदन (द) रूक्षण

(675) 'स्थूलपिच्छिलम्' गुण कौनसे द्रव्यों में मिलते है।
(अ) बृंहण (ब) स्नेहन (स) स्तम्भन (द) रूक्षण

(676) 'प्रायो मन्दं स्थिरं श्लक्ष्णं द्रव्यं .... उच्यते।
(अ) बृंहणम् (ब) स्नेहनम् (स) स्तम्भनं (द) रूक्षणम्

(677) प्रायो मन्दं मृदु च यद् द्रव्यं तत् .... मतम्।
(अ) बृंहणम् (ब) स्नेहनम् (स) स्तम्भनं (द) रूक्षणम्

(678) शीतं मन्दं मृदु श्लक्ष्णं रूक्षं सूक्ष्मं द्रवं स्थिरम्। – कौनसे द्रव्यों के गुण है।
(अ) बृंहण (ब) स्नेहन (स) स्तम्भन (द) रूक्षण

(679) द्रवं सूक्ष्मं सरं स्निग्धं पिच्छिलम् गुरू शीतलम्। – कौनसे द्रव्यों के गुण है।
(अ) बृंहण (ब) स्नेहन (स) स्तम्भन (द) रूक्षण

(680) चरक ने लंघन के भेद माने है।
(अ) 2 (ब) 10 (स) 12 (द) 3

(681) चरकोक्त लंघन के प्रकारों में द्रव्यरूप लंघन है –
(अ) 7 (ब) 10 (स) 5 (द) 6

(682) वाग्भट्ट लंघन के भेद माने है।
(अ) 2 (ब) 10 (स) 12 (द) 3

(683) शमन किसका भेद है।
(अ) चिकित्सा (ब) द्रव्य (स) लंघन (द) उपर्युक्त सभी

(684) शमन किसका पर्याय है।
(अ) चिकित्सा (ब) द्रव्य (स) लंघन (द) उपर्युक्त सभी

(685) येषां मध्यबला रोगाः कफपित्त समुत्थिताः। – में लंघन का कौनसा प्रकार उपयुक्त है।
(अ) संशोधन (ब) दीपन (स) पाचन (द) आतप सेवन

SHYAM VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER
NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

(686) चरक ने निम्न किस व्याधि में पाचन द्वारा लंघन का निर्देश किया है।
(अ) हृदयरोग (ब) अतिसार (स) विबंध (द) उपर्युक्त सभी

(687) वातविकार रोगी में लंघन हेतु उपयुक्त ऋतु है।
(अ) शिशिर (ब) ग्रीष्म (स) हेमन्त (द) बंसत

(688) नित्य स्त्रीमद्यसेवी में बृंहण हेतु उपयुक्त ऋतु है।
(अ) शिशिर (ब) ग्रीष्म (स) हेमन्त (द) बंसत

(689) किस व्याधि से ग्रसित कार्श्य रोगी को क्रव्यादमांस का प्रयोग करना चाहिए।
(अ) शोष (ब) अर्श (स) ग्रहणी (द) उपर्युक्त सभी

(690) 'अभिष्यन्दी रोगी' में कौनसे उपक्रम का प्रयोग करना चाहिए।
(अ) स्नेहन (ब) लंघन (स) स्वेदन (द) रूक्षण

(691) 'क्षाराग्निदग्ध रोगी' में कौनसे उपक्रम का प्रयोग करना चाहिए।
(अ) स्नेहन (ब) स्तंभन (स) स्वेदन (द) रूक्षण

(692) हनुसंग्रहः हृद्वर्चोनिग्रहश्च – किसके अतियोग का लक्षण हैं।
(अ) लंघन (ब) स्तंभन (स) बृंहण (द) रूक्षण

(693) निम्न में से कौनसा द्रव्य रूक्षता कारक है।
(अ) तक्र (ब) खली (स) पिण्याक (द) उपर्युक्त सभी

(694) संतर्पणजन्य रोग नहीं है।
(अ) पाण्डु (ब) शोफ (स) क्लैव्य (द) प्रलाप

(695) अपतर्पणजन्य रोग नहीं है।
(अ) ज्वर (ब) विण्मूत्रसंग्रह (स) उन्माद (द) हृदयव्यथा

(696) संतर्पण एंव अपतर्पण दोनों जन्य रोग है।
(अ) ज्वर (ब) मूत्रकृच्छ्र (स) अरोचक (द) कुष्ठ

(697) संतर्पणजन्य की रोगों की चिकित्सा है।
(अ) वमन (ब) विरेचन (स) रक्तमोक्षण (द) उपयुर्क्त सभी

(698) संतर्पणजन्य की रोगों की चिकित्सा में प्रयुक्त रत्न है।
(अ) माणिक्य (ब) प्रवाल (स) गोमेद (द) पुखराज

(699) मधु + हरीतिकी किन रोगों की चिकित्सा में प्रयुक्त होती है।
(अ) संतर्पणजन्य (ब) अपतर्पणजन्य (स) दोनों (द) सभी असत्य

(700) मद्यविकार नाशक खर्जूरादि मन्थ किन रोगों की चिकित्सा में प्रयुक्त होती है।
(अ) संतर्पणजन्य (ब) अपतर्पणजन्य (स) दोनों (द) सभी असत्य

(701) त्र्यूषणादि मन्थ किन रोगों की चिकित्सा में प्रयुक्त होती है।
(अ) संतर्पणजन्य (ब) अपतर्पणजन्य (स) दोनों (द) सभी असत्य

(702) व्योषद्य सत्तु किन रोगों की चिकित्सा में प्रयुक्त होती है।
(अ) संतर्पणजन्य (ब) अपतर्पणजन्य (स) दोनों (द) सभी असत्य

(703) चरकानुसार "सक्षौद्रश्चाभयाप्राशः" किसकी चिकित्सा है।
(अ) संतर्पणजन्य रोग (ब) अपंतर्पणजन्य रोग (स) अतिस्थौल्य (द) अतिकार्श्य

(704) चरक ने संतर्पण के भेद माने है।
(अ) 2 (ब) 10 (स) 12 (द) 3

(705) चिरक्षीणं रोगी का पोषण चरकमतेन होता है .... ।
(अ) सद्य संतर्पण (ब) संतर्पणाभ्यास (स) सद्यः बृंहण (द) सत्वावजय

(706) चरकानुसार शर्करा, पिप्पलीचूर्ण, तैल, घृत, क्षौद्र और दुगुना सत्तु जल में घोलकर बनाया गया मन्थ होता है।
(अ) वृष्य (अ) बल्य (अ) कार्श्यहर (अ) स्थौल्यहर

(707) बलवर्णसुखायुषा किसका कार्य है।
(अ) रूधिर (ब) ओज (स) आहार (द) अ, स दोनो

(708) प्राणियों के प्राण किसका अनुवर्तन करते है।
(अ) रूधिर (ब) ओज (स) आहार (द) वायु

(709) निम्न में से रक्तज रोग है।
(अ) तन्द्रा (ब) प्रमीलक (स) उपकुश (द) उर्पयुक्त सभी

(710) रक्तज रोगों का निदान किससे होता है।
(अ) उपशय (ब) अनुपशय (स) रूप (द) पूर्वरूप

(711) शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष आदि उपक्रमों भी जो शान्त नहीं हो वे रोग कौनसे होते है।
(अ) असाध्य (ब) दारूण (स) धातुगत (द) रक्तज

(712) रक्तज रोगों की चिकित्सा है।
(अ) विरेचन (ब) उपवास (स) दोनों (द) बस्ति

(713) रक्तमोक्षण के पश्चात् किसकी रक्षा करनी चाहिए।
(अ) रस की (ब) धातु की (स) अग्नि की (द) वायु की

(714) "रक्तपित्तहरी क्रिया" – किन रोगों में करनी चाहिए ? (च. सू. 24/18)
(अ) पित्तज रोग (ब) रक्तजरोग (स) संतर्पणजरोग (द) रक्तपित्त

(715) चरक ने मद के प्रकार माने है।
(अ) 2 (ब) 4 (स) 7 (द) 3

(716) निम्न में से कौनसा एक मनोवह स्रोतस का रोग नहीं है।
(अ) मद (ब) मूर्च्छा (स) संन्यास (द) उपर्युक्त सभी

(717) मूर्च्छा कौनसे स्रोतस का रोग है।
(अ) रसवह (ब) रक्तवह (स) संज्ञावह (द) मनोवह

(718) "सम्प्रहार कलिप्रियम्" – कौनसे मद का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(719) जायते शाम्यति त्वाशु मदो मद्यमदाकृतिः। – कौनसे मद का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(720) 'भिन्नवर्च' कौनसी मूर्च्छा का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(721) कौनसी मूर्च्छा में अपस्मार के लक्षण देखने को मिलते है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(722) 'काष्ठीभूतो मृतोपमः' किसका लक्षण है।
(अ) मद (ब) मूर्च्छा (स) संन्यास (द) अपस्मार हेतु

(723) दोषों का वेग शान्त हो जाने पर शान्त हो जाने वाली व्याधियां है।
(अ) मद (ब) मूर्च्छा (स) दोनों (द) संन्यास

(724) 'विधि शोणितीय' अध्याय चरकोक्त किस सप्त चतुष्क में आता है।
(अ) निर्देश (ब) कल्पना (स) रोग (द) योजना

(725) 'सद्यः फलाक्रिया निर्दिष्टः' किसमें है।
(अ) अत्वाभिनिवेश (ब) मूर्च्छा (स) संन्यास (द) अपस्मार

(726) 'कौम्भघृत' निर्दिष्ट है।
(अ) अत्वाभिनिवेश (ब) मूर्च्छा (स) संन्यास (द) अपस्मार

(727) 'शिलाजतु' निर्दिष्ट है।
(अ) मद (ब) मूर्च्छा (स) दोनों (द) संन्यास

(728) कौनसा रोग बिना औषधि के ठीक नहीं हो सकता है।
(अ) मद (ब) मूर्च्छा (स) दोनों (द) संन्यास

(729) कौन सी अवस्था के लिए चिकित्सा परम आवश्यक है ?
(अ) मद (ब) मूर्च्छा (स) संन्यास (द) अपस्मार

(730) चरक संहिता के किस अध्याय मे सम्भाषा परिषद नहीं हुई है।
(अ) यज्जः पुरूषीयं (ब) आत्रेय भद्रकाप्यीय (स) वातकलाकलीय (द) अन्नपानविधि

(731) चरक संहिता के यज्जःपुरूषीय अध्याय निर्दिष्ट सम्भाषा परिषद में प्रश्नकर्ता कौन थे।
(अ) विदेह निमि (ब) आत्रेय (स) अग्निवेश (द) काशिपति वामक

(732) 'कालवाद' के प्रवर्तक है।
(अ) भारद्वाज (ब) भद्रकाप्य (स) कांकायन (द) भिक्षु आत्रेय

(733) मौदगल्य पारीक्ष किस मत के समर्थक थे।
(अ) सत्ववाद (ब) आत्मवाद (स) रसवाद (द) षड्धातुवाद

(734) पुरूष छः धातुओं के समूह से उत्पन्न हुआ है यह दृष्टिकोण किसका है –
(अ) भद्रकाप्य (ब) हिरण्याक्ष (स) कांकायन (द) भिक्षु आत्रेय

(735) मातृ–पितृवाद किससे सम्बन्धित है।
(अ) शरलोमा (ब) कौशिक (स) भरद्वाज (द) भद्रकाप्य

(736) निम्न में से आहार का कौनसा प्रकार चरक ने नहीं माना है।
(अ) पान (ब) अशन (स) भोज्य (द) भक्ष्य

(737) आहार में अन्न की मात्रा 1 कुडव किसने बतलायी है।
(अ) चरक (ब) आत्रेय (स) अग्निवेश (द) चक्रपाणि

(738) मृत्स्य वसा में हिततम है।
(अ) चुलुकी वसा (ब) चटक वसा (स) पाकहंस वसा (द) कुम्भीर वसा

(739) चरकानुसार मृग मांस वर्ग में अहिततम है ?
(अ) ऐण मांस (ब) गोमांस (स) आवि मांस (द) अजा मांस

(740) शूक धान्यों में अपथ्यतम है।
(अ) कोद्रव (ब) यवक (स) यव (द) प्रियंगु

(741) चरकानुसार फल वर्ग में अहिततम है।
(अ) आम्र (ब) मृद्वीका (स) ऑवला (द) लकुच

(742) चरकानुसार फल वर्ग हिततम है।
(अ) आम्र (ब) मृद्वीका (स) ऑवला (द) लकुच

(743) चरकानुसार कन्दो में प्रधानतम है।
(अ) आलु (ब) आर्द्रक (स) सूरण (द) वाराही

(744) सुश्रुतानुसार कन्द वर्ग में प्रधानतम है।
(अ) आलु (ब) आर्द्रक (स) सूरण (द) वाराही

(745) पत्रशाक में श्रेष्ठतम है।
(अ) सर्षप (ब) पालक (स) मूली (द) जीवन्ती

(746) जलचर पक्षी वसा में हिततम है।
(अ) चुलुकी वसा (ब) चटक वसा (स) पाकहंस वसा (द) कुम्भीर वसा

(747) चरकानुसार अग्रय भावों की संख्या है।
(अ) 125 (ब) 152 (स) 155 (द) 160

(748) वाग्भट्टानुसार श्रेष्ठ भावों की संख्या है।
(अ) 125 (ब) 152 (स) 155 (द) 160

(749) ....पथ्यानाम्।
(अ) गोवृत (ब) क्षीर (स) हरीतकी (द) आमलकी

(750) ....सांग्राहिक रक्तपित्तप्रशमनानां।
(अ) अनन्ता (ब) उत्पल (स) कुमुद (द) उपर्युक्त सभी

(751) एरण्डमूलं ....।
(अ) वातहराणां (ब) वृष्य त्रिदोषहराणां (स) वृष्य वातहराणां (द) वृष्य सर्वदोषहराणा

(752) अनारोग्यकराणां ....।
(अ) विषमासन (ब) विरूद्धवीर्यासन (स) वेगसंधारण (द) गुरू भोजन

(753) ....हृद्यानाम्।
(अ) गोघृत (ब) क्षीर (स) मधुर (द) अम्ल

(754) राजयक्ष्मा ....।
(अ) रोगाणाम् (ब) दीर्घरोगाणाम् (स) रोगसमूहानाम् (द) अनुषंगिणाम्

(755) जीवन देने में श्रेष्ठ है ?
(अ) क्षीर (ब) आयुर्वेद (स) जल (द) वैद्यसमूह

(756) जलम् ....।
(अ) आश्वासकराणां (ब) श्रमहराणां (स) स्तम्भनीयानां (द) बल्यानां

(757) .... पुष्टिकराणां।
(अ) निर्वृतिः (ब) सर्वरसाभ्यासो (स) कुक्कुटो (द) व्यायाम

(758) वस्ति ....।
(अ) वातहराणां (ब) व्याधिकराणां (स) तंत्राणां (द) अ एवं स दोनों

(759) ....सर्वापथ्यानाम्।
(अ) आविदुग्ध (ब) आयास (स) विरूद्धाहार (द) विषमासन

(760) छेदनीय, दीपनीय, अनुलोमन और वातकफ प्रशमन करने वाले द्रव्यों में श्रेष्ठ है।
(अ) हींगुनिर्यास (ब) निःसंशयकराणां (स) वैद्यसमूहानां (द) साधनानां

AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER Dr. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

(761) उदक् .... ।
(अ) आश्वासकराणां (ब) श्रमहराणां (स) स्तम्भनीयानां (द) बल्यानां

(762) "वृष्य वातहराणाम्" है।
(अ) एरण्ड पत्र (ब) एरण्ड मूल (स) एरण्ड पंचांग (द) उपर्युक्त सभी

(763) अन्नद्रव्य अरूचिकर भावों में श्रेष्ठ है।
(अ) पराघातनम् (ब) तिन्दुक (स) प्रमिताशन (द) रजस्वलाभिगमन

(764) कुष्ठ .... ।
(अ) रोगाणाम् (ब) दीर्घरोगाणाम् (स) रोगसमूहानाम् (द) अनुषंगिणाम्

(765) चरक ने अग्रय प्रकरण में आमलकी को .... बताया है।
(अ) वातहर (ब) दाहप्रशमन (स) वयःस्थापन (द) रसायन

(766) 'निम्नलिखित में से कौन सी एक औषधि संग्रहणीय, दीपनीय और पाचनीय के रूप में नित्य सर्वाधिक उपयोगी है।
(अ) मुस्ता (ब) कट्वंग (स) शतुपुष्पा (द) विल्ब

(767) कास, श्वास और हिक्का रोग में श्रेष्ठ औषधि कौन–सी है ?
(अ) अनंतमूल (ब) पुष्करमूल (स) दशमूल (द) शटी

(768) चरक ने श्रेष्ठ बल्य बताया हैं।
(अ) क्षीर (ब) बला (स) घृत (द) कुक्कुट

(769) एककाल भोजन ....
(अ) सुखपरिणाम कराणां (ब) कर्शनीयानाम् (स) दौर्बल्यकरणां (द) अग्निसन्धुक्षणानां

(770) .... उद्धार्याणां।
(अ) ग्रहणी (ब) आमदोष (स) अजीर्ण (द) आमविष

(771) ....विषघ्ननां।
(अ) गोघृत (ब) शिरीष (स) विडंग (द) आमलकी

(772) श्रमघ्न द्रव्यों में श्रेष्ठ है
(अ) सुरा (ब) क्षीर (स) वस्ति (द) सर्वरसाम्यास

(773) आसव का सर्वप्रथम वर्णन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) आत्रेय (द) वाग्भट्ट

(774) आसव का सर्वप्रथम परिभाषा दी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) आत्रेय (द) वाग्भट्ट

(775) आसव की योनियॉं है।
(अ) 8 (ब) 9 (स) 11 (द) 6

(776) चरकानुसार आसव की संख्या है।
(अ) 84 (ब) 90 (स) 80 (द) 9

(777) पुष्पासव की संख्या .... ।
(अ) 11 (ब) 10 (स) 6 (द) 4

(778) मूल आसव की संख्या .... ।
(अ) 11 (ब) 10 (स) 84 (द) 9

(779) चरकानुसार कितने प्रकार के त्वगासव है –
(अ) 4 (ब) 11 (स) 10 (द) 26

(780) निम्न में से किसका त्वक् आसव नहीं होता है।
(अ) तिल्वक (ब) लोध्र (स) अर्जुन (द) एलुआ

(781) निम्न में से किस द्रव्य का प्रयोग फल व सार दोनों आसवों मे होता है।
(अ) खर्जूर (ब) धन्वन (स) अर्जुन (द) श्रृंगाटक

(782) "पथ्यं पथोऽनपेतं यद्यच्चोक्तं मनसः प्रियम्" – किसने कहा है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(783) किस आचार्य ने पथ्य के साथ अपथ्य की भी परिभाषा दी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(784) आसव नाम आसुत्वाद् आसव संज्ञा। – किसने कहा है।
(अ) चरक (ब) आत्रेय (स) अग्निवेश (द) चक्रपाणि

(785) आसुत्वात् सन्धानरूपत्वात् आसव। – किसने कहा है।
(अ) चरक (ब) आत्रेय (स) अग्निवेश (द) चक्रपाणि

AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER BHOPAL (M.P.) Dr. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

(786) यद पक्वकौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः। – किसने कहा है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) शारंग्धर (द) चक्रपाणि

(787) आसव और अरिष्ट में अन्तर सर्वप्रथम किसने बतलाया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) शारंग्धर (द) चक्रपाणि

(788) चरक संहिता के किस अध्याय मे रस संख्या विनिश्चय संबंधी सम्भाषा परिषद हुई है।
(अ) यज्जः पुरूषीयं (ब) आत्रेय भद्रकाप्यीय (स) वातकलाकलीय (द) अन्नपानविधि

(789) क्षार की गणना रसों में किसने की है।
(अ) वैदेह (ब) धामार्गव (स) अ एवं ब दोनों (द) उपर्युक्त कोई नही

(790) रस की संख्या 6 किसने मानी है।
(अ) वार्योविद (ब) वाग्भट्ट (स) पुर्नवसु आत्रेय (द) उपर्युक्त सभी

(791) रस संख्या विषयक सम्भाषा परिषद में विदेह राज निमि ने कहा था रस होते है ?
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(792) 'एक एव रस इत्युवाच' – किसका कथन है।
(अ) भद्रकाप्य (ब) शाकुन्तेय (स) कुमारशिरा भरद्वाज (द) हिरण्याक्ष

(793) छेदनीय, उपशमनीय और साधारण किसके भेद है ?
(अ) रस (ब) दोष (स) भेषज (द) आसव

(794) रस की संख्या 8 किसने मानी है ?
(अ) वार्योविद (ब) निमि (स) धामार्गव (द) कांकांयन

(795) छेदनीय और उपशमनीय रसों को किसने माना है।
(अ) कुमारशिरा भारद्वाज (ब) हिरण्याक्ष मौद्‌गल्य पूर्णाक्ष (स) शाकुन्तेय (द) ब, स दानों

(796) किस आचार्य ने पंच महाभूतों के आधार पर रस माने है ?
(अ) कुमारशिरा भारद्वाज (ब) हिरण्याक्ष (स) शाकुन्तेय (द) मौद्‌गल्य पूर्णाक्ष

(797) स पुनरूदकादनन्य। – रस को किसने माना है।
(अ) भद्रकाप्य (ब) हिरण्याक्ष (स) शाकुन्तेय (द) मौद्‌गल्य पूर्णाक्ष

(798) रस की संख्या अपरिसंख्येय किसने मानी है।
(अ) भद्रकाप्य (ब) वार्योविद (स) कुमारशिरा भरद्वाज (द) कांकायन

(799) रस की योनि हैं।
(अ) जल (ब) रसेन्द्रिय (स) द्रव्य (द) कोई नहीं

(800) "सर्व द्रव्यं पाञ्चभौतिकम अस्मिन्नर्थः।" – किसने कहा है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(801) "इह हि द्रव्यं पञ्चमहाभूतात्मकम्।" – किसने कहा है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(802) कर्म पन्चविधंमुक्तं वमनादि – किसने कहा है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) काश्यप (द) वाग्भट्ट

(803) आचार्य चरकानुसार 'खर' गुण कौनसे महाभूत में होता है।
(अ) पृथ्वी (ब) वायु (स) आकाश (द) अ, ब दोनों

(804) आचार्य चरकानुसार 'गुरू' गुण कौनसे महाभूत में होता है।
(अ) पृथ्वी (ब) जल (स) पृथ्वी एवं जल (द) कोई नहीं

(805) 'आग्नेय द्रव्यों' में 'खर' गुण किस आचार्य ने माना है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्धर

(806) 'वायव्य द्रव्यों' 'व्यवायी, विकाशि' गुण अतिरिक्त किस आचार्य ने बतलाए है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्धर

(807) सुश्रुत एवं वाग्भट्ट के अनुसार 'आकाशीय द्रव्यों' का गुण नहीं है।
(अ) लघु (ब) सूक्ष्म (स) मृदु (द) श्लक्षण

(808) "नानौषधिभूतं जगति किन्चिद् द्रव्यमुपलभ्यते" – संदर्भ मूलरूप से उद्धत है ?
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहता (स) अष्टांग संग्रह (द) भाव प्रकाश

(809) "इत्थं च नानौषधभूतं जगति किञ्चिद द्रव्यमस्ति विविधार्थप्रयोगवशात्।" – संदर्भ मूलरूप से उद्धत है ?
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहता (स) अष्टांग संग्रह (द) भाव प्रकाश

(810) यदा कुर्वन्ति स ....।
(अ) कर्म (ब) वीर्य (स) कालः (द) उपायः

(811) यथा कुर्वन्ति स ....।
(अ) कर्म (ब) वीर्य (स) कालः (द) उपायः

(812) येन कुर्वन्ति तत् ....।
(अ) कर्म (ब) वीर्य (स) कालः (द) उपायः

(813) यत् कुर्वन्ति तत् ....।
(अ) कर्म (ब) वीर्य (स) कालः (द) उपायः

(814) रसों के संयोग भेद बतलाए गए है।
(अ) 57 (ब) 67 (स) 62 (द) 63

(815) रसों के विकल्प भेद बतलाए गए है।
(अ) 57 (ब) 67 (स) 62 (द) 63

(816) दो–दो, तीन–तीन, चार–चार, पॉच–पॉच एंव छः रस आपस में मिलकर क्रमशः द्रव्य बनाते है ?
(अ) 15, 20, 15, 20, 25 (ब) 12, 18, 24, 30, 36
(स) 30, 24, 18, 12, 6 (द) 15, 20, 15, 6, 1

(817) रसों के संयोग व कल्पना भेद है क्रमशः।
(अ) 63, 57 (ब) 57, 63 (स) 55, 62 (द) 62, 57

(818) 3 रसों के संयोग से रस भेद।
(अ) 15 (ब) 20 (स) 6 (द) 5

(819) शुष्क द्रव्य का जिह्वा से संयोग होने पर सर्वप्रथम अनुभूत होता है।
(अ) रस (ब) अनुरस (स) निपात (द) विपाक

(820) रस का विपर्यय है।
(अ) ऊषण (ब) अनुरस (स) क्षार (द) पटु

(821) 'रसो नास्तीह सप्तमः' — किस आचार्य का कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) विदेह निमि (द) शारंग्धर

(822) चरक संहिता के किस अध्याय में परादि गुणों एवं उनके लक्षणों का निर्देश है।
(अ) यज्जः पुरूषीय (ब) आत्रेय भद्रकाप्यीय (स) इन्द्रियोपक्रमणीय (द) अन्नपानविधि

(823) 'चिकित्सीय सिद्धि के उपाय' है।
(अ) इन्द्रिय गुण (ब) गुर्वादि गुण (स) परादि गुण (द) आत्म गुण

(824) 'चिकित्सीय गुण' हैं।
(अ) इन्द्रिय गुण (ब) गुर्वादि गुण (स) परादि गुण (द) आत्म गुण

(825) चरकानुसार संयोग, विभाग एंव पृथकत्व के क्रमशः भेद है —
(अ) 3, 3, 2 (ब) 3, 3, 4 (स) 3, 3, 3 (द) 3, 2, 3

(826) 'वियोग' किसका भेद है।
(अ) संयोग (ब) विभाग (स) पृथकत्व (द) परिमाण

(827) 'वैलक्षण्य' किसका भेद है।
(अ) संयोग (ब) विभाग (स) पृथकत्व (द) परिमाण

(828) शीलन किसका पर्याय है।
(अ) संयोग (ब) विभाग (स) संस्कार (द) अभ्यास

(829) परादि गुणों की संख्या 7 किसने मानी है।
(अ) न्याय दर्शन (ब) वैशेषिक दर्शन (स) सांख्य दर्शन (द) योग दर्शन

(830) कणाद ने परादि गुणों में किसकी गणना नहीं की है।
(अ) युक्ति (ब) अभ्यास (स) संस्कार (द) उपर्युक्त सभी

(831) "पवनपृथ्वी व्यतिरेकात्' से किस रस का निर्माण होता हैं ? (च. सू. 26/40)
(अ) अम्ल (ब) लवण (स) मधुर (द) कषाय

(832) लवण रस का भौतिक संगठन है।
(अ) पृथ्वी + जल (ब) जल + अग्नि (स) पृथ्वी + अग्नि (द) वायु + पृथ्वी

(833) गुरू, स्निग्ध व उष्ण गुण किस रस में उपस्थित होते है ?
(अ) कटु (ब) तिक्त (स) लवण (द) अम्ल

(834) 'मनो बोधयति' कौनसा रस है।
(अ) मधुर (ब) अम्ल (स) लवण (द) कषाय

(835) 'क्रिमीन् हिनस्ति' किस रस का कर्म है।
(अ) अम्ल (ब) कटु (स) तिक्त (द) कषाय

(836) 'आहार योगी' रस है।
(अ) मधुर (ब) अम्ल (स) लवण (द) कटु।

(837) 'हृदयं तर्पयति' रस है।
(अ) मधुर (ब) अम्ल (स) लवण (द) कटु

(838) 'हृदयं पीडयति' किस रस के अतिसेवन के कारण होता है।
(अ) अम्ल (ब) कटु (स) तिक्त (द) कषाय

(839) 'शोणितसंघात भिनत्ति' रस है।
(अ) अम्ल (ब) कटु (स) तिक्त (द) कषाय

(840) 'विषघ्न' रस है।
(अ) लवण (ब) कटु (स) तिक्त (द) कषाय

(841) 'विषं वर्धयति' किस रस के अतिसेवन के कारण होता है।
(अ) लवण (ब) कटु (स) तिक्त (द) कषाय

(842) 'पुंस्त्वमुपहन्ति' किस रस के अतिसेवन के कारण होता है।
(अ) कटु (ब) लवण (स) कषाय (द) उपर्युक्त सभी

(843) 'रक्त दूषयति' किस रस के अतिसेवन के कारण होता है।
(अ) अम्ल (ब) कटु (स) तिक्त (द) कषाय

(844) 'गलगण्ड और गण्डमाला रोग' किस रस के अतिसेवन के कारण होता है।
(अ) मधुर (ब) अम्ल (स) लवण (द) कषाय

(845) 'स्तन्यशोधन' किस रस का कार्य है।
(अ) अम्ल (ब) कटु (स) तिक्त (द) कषाय

(846) 'ज्वरघ्न' किस रस का कार्य है।
(अ) अम्ल (ब) कटु (स) तिक्त (द) कषाय

(847) 'संशमन' किस रस का कार्य है।
(अ) अम्ल (ब) कटु (स) तिक्त (द) कषाय

(848) तिक्त रस का कार्य है।
(अ) विषघ्न (ब) कृमिघ्न (स) ज्वरघ्न (द) उपर्युक्त सभी

(849) कषाय रस का कार्य है।
(अ) शोषण (ब) रोपण (स) पीडन (द) उपर्युक्त सभी

(850) मधुर रस का कार्य है।
(अ) प्रीणन (ब) जीवन (स) तर्पण (द) उपर्युक्त सभी

(851) 'लेखन' किस रस का कार्य है।
(अ) लवण (ब) कटु (स) तिक्त (द) कषाय

(852) 'सर्वरसप्रत्यनीक भूतः' रस है।
(अ) मधुर (ब) अम्ल (स) लवण (द) कटु

(853) 'भक्तं रोचयति' रस है।
(अ) मधुर (ब) अम्ल (स) लवण (द) कटु

(854) 'रोचयत्याहारम्' रस है।
(अ) मधुर (ब) अम्ल (स) लवण (द) कटु

(855) दीपन, पाचन कर्म किस रस का कर्म है।
(अ) मधुर, अम्ल (ब) अम्ल, लवण (स) कटु, लवण (द) तिक्त, लवण

(856) 'ऊर्जयति' किस रस का कर्म है।
(अ) अम्ल (ब) कटु (स) तिक्त (द) कषाय

(857) 'रूक्षः शीतोऽलघुश्च' गुण किस रस में उपस्थित होते है ?
(अ) अम्ल (ब) मधुर (स) लवण (द) कषाय

(858) 'लघु, उष्ण, स्निग्ध' गुण किस रस में उपस्थित होते है ?
(अ) अम्ल (ब) मधुर (स) लवण (द) कषाय

(859) चरक ने मध्यम गुरू किस रस को माना है।
(अ) अम्ल (ब) लवण (स) कषाय (द) मधुर

(860) चरक ने उत्तम लघु किस रस को माना है।
(अ) अम्ल (ब) लवण (स) कटु (द) तिक्त

(861) चरक ने उत्तम उष्ण किस रस को माना है।
(अ) अम्ल (ब) लवण (स) कटु (द) तिक्त

(862) चरक ने अवर रूक्ष किस रस को माना है।
(अ) अम्ल (ब) लवण (स) कटु (द) तिक्त

(863) चरक ने अवर स्निग्ध किस रस को माना है।
(अ) अम्ल (ब) लवण (स) कटु (द) तिक्त

(864) चरक ने लवण रस का विपाक माना है।
(अ) मधुर विपाक (ब) अम्ल विपाक (स) कटु विपाक (द) कोई नहीं

(865) पित्तवर्धक, शुक्रनाश, सृष्टविड्मूत्रले – कौनसे विपाक के गुणधर्म है।
(अ) मधुर विपाक (ब) अम्ल विपाक (स) कटु विपाक (द) उपर्युक्त सभी

(866) कौनसा विपाक 'सृष्टविड्मूत्रल' होता है।
(अ) मधुर विपाक (ब) अम्ल विपाक (स) कटु विपाक (द) अ, ब दोनों

(867) चरक मतानुसार कौनसा विपाक 'शुक्रलः' होता है।
(अ) मधुर विपाक (ब) अम्ल विपाक (स) कटु विपाक (द) अ, ब दोनों

(868) "विपाकः कर्मनिष्ठया" – किसका कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) काश्यप (द) वाग्भट्ट

(869) चरक ने वीर्य के भेद माने है।
(अ) 2 (ब) 15 (स) 8 (द) अ, स दोनों

(870) सुश्रुत ने वीर्य का कौनसा भेद नहीं माना है ?
(अ) गुरु, लघु (ब) विशद, पिच्छिल (स) स्निग्ध, रूक्ष, (द) मृदु, तीक्ष्ण

(871) वीर्य का ज्ञान होता है।
(अ) निपात (ब) अधिवास (स) दोनों से (द) कर्मनिष्ठा से

(872) 'विदाहच्चास्य कण्ठस्य' किस रस का लक्षण है।
(अ) अम्ल (ब) लवण (स) कटु (द) तिक्त

(873) 'स विदाहान्मुखस्य च' किस रस का लक्षण है।
(अ) अम्ल (ब) लवण (स) कटु (द) तिक्त

(874) 'विदहन्मुखनासाक्षिसंस्रावी' किस रस का लक्षण है।
(अ) अम्ल (ब) लवण (स) कटु (द) तिक्त

(875) 'वैशद्यस्तम्भजाडयैर्यो रसनं' किस रस का लक्षण है।
(अ) लवण (ब) कटु (स) तिक्त (द) कषाय

(876) मरिच की तीक्ष्णता का ज्ञान होता है।
(अ) निपात (ब) अधिवास (स) दोनों से (द) कर्मनिष्ठा से

(877) रसवीर्य विपाकानां सामान्यं यत्र लक्ष्यते। विशेषः कर्मणां चैव .... तस्य स स्मृतः।।
(अ) पाचनः (ब) दीपनः (स) प्रभावः (द) वीर्यसंक्रान्ति

(878) 'रसादि साम्ये यत् कर्म विशिष्टं तत् प्रभावजम्।' – किसका कथन है ?
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) काश्यप (द) वाग्भट्ट

(879) चरकानुसार निम्न में से किसका नैसर्गिक बल सर्वाधिक है।
(अ) रस (ब) विपाक (स) वीर्य (द) प्रभाव

(880) चरक ने वैरोधिक आहार के कितने घटक बताए हैं।
(अ) 15 (ब) 18 (स) 12 (द) 5

(881) अम्ल पदार्थों के साथ दूध पीना हैं।
(अ) संयोग विरूद्ध (ब) वीर्य विरूद्ध (स) विधि विरूद्ध (द) संस्कार विरूद्ध

(882) एरण्ड की लकड़ी की सींक पर भुना हुआ मोर का मांस हैं।
(अ) संयोग विरूद्ध (ब) परिहार विरूद्ध (स) उपचार विरूद्ध (द) संस्कार विरूद्ध

(883) वाराह आदि का मांस सेवन कर फिर उष्ण वस्तुओं का सेवन करना हैं।
(अ) संयोग विरूद्ध (ब) परिहार विरूद्ध (स) उपचार विरूद्ध (द) संस्कार विरूद्ध

(884) घृत आदि स्नेहों को पीकर शीतल आहार–औषध या जल पीना हैं।
(अ) संयोग विरूद्ध (ब) परिहार विरूद्ध (स) उपचार विरूद्ध (द) संस्कार विरूद्ध

(885) गुड के साथ मकोय खाना हैं।
(अ) संयोग विरूद्ध (ब) परिहार विरूद्ध (स) उपचार विरूद्ध (द) संस्कार विरूद्ध

SHYAM VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER BY DR. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

(886) श्रम, व्यवाय, व्यायाम आदि में आसक्त व्यक्ति द्वारा वातवर्धक आहार का सेवन हैं।
(अ) कर्म विरूद्ध (ब) प्रकृति विरूद्ध (स) विधि विरूद्ध (द) अवस्था विरूद्ध

(887) चरक ने दूध के साथ किसका निषेध नहीं बतलाया है।
(अ) मूली (ब) मत्स्य (स) सहिजन (द) सूकर मांस

(888) सभी मछलियों को दूध के साथ खाना चाहिए किन्तु चिलिचिम मछली को छोडकर – किसका मत है।
(अ) आत्रेय (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) भद्रकाप्य

(889) मछलियों को दूध के साथ खाना हैं।
(अ) संयोग विरूद्ध (ब) वीर्य विरूद्ध (स) विधि विरूद्ध (द) संस्कार विरूद्ध

(890) चरकोक्त "अर्जक, सुमुख और सुरसा" किसके भेद है ?
(अ) तुलसी (ब) त्रिवृत्त (स) शतावरी (द) दूर्वा

(891) "तुलसी" शब्द सर्वप्रथम मूलरूप से किस ग्रन्थ में उद्धत है ?
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) अष्टांग संग्रह (द) भाव प्रकाश

(892) सीधु .... ।
(अ) जर्जरीकरोति (ब) वधमति (स) ग्लयपति (द) माचिनोति

(893) मधु.............................. ।
(अ) सन्दधीति (ब) पाचयति (स) ग्लयपति (द) स्नेहयति

(894) प्रायः सभी तिक्त द्रव्य वातल और वृष्य होते हैं .... को छोड़कर।
(अ) निम्ब (ब) पटोलपत्र (स) पिप्पली (द) बृहती

(895) शोफं जनयति ?
(अ) पयः (ब) घृत (स) दधि (द) तक्र

(896) प्रायः सभी कटु द्रव्य वातल और अवृष्य होते हैं .... को छोड़कर।
(अ) चित्रक, मरिच (ब) वेताग्र, पटोलपत्र (स) पिप्पली, शुण्ठी (द) दाडिम

(897) द्राक्षासव ....
(अ) दीपयति (ब) पाचयति (स) बृंहयति (द) कर्षयति

(898) क्षार का स्वभाविक कर्म है।
(अ) पाचन (ब) दहन (स) क्षारण (द) ग्लपयन

(899) निम्न में से कौन मधुर रस वाली होने पर भी कफवर्धक नहीं है।
(अ) द्राक्षा (ब) मधु (स) एरण्ड (द) परूषक

(900) चरक ने आहार द्रव्यों के कितने वर्ग बताये है।
(अ) 12 (ब) 7 (स) 6 (द) 10

(901) सुश्रुत ने आहार द्रव्यों के कितने महावर्ग बताये है।
(अ) 2 (ब) 7 (स) 5 (द) 3

(902) 'चरक संहिता' में मधु का वर्णन कौनसे वर्ग में मिलता है।
(अ) मधु वर्ग (ब) इक्षु वर्ग (स) कृतान्न वर्ग (द) आहारयोगी वर्ग

(903) "वैदल वर्ग" का वर्णन कौनसे ग्रन्थ में है।
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) अष्टांग संग्रह (द) भाव प्रकाश

(904) "सर्वानुपान वर्ग" का वर्णन कौनसे ग्रन्थ में है।
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) अष्टांग संग्रह (द) अष्टांग हृदय

(905) "हरित वर्ग" का वर्णन कौनसे ग्रन्थ में है।
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) अष्टांग संग्रह (द) अष्टांग हृदय

(906) "औषध वर्ग" का वर्णन कौनसे ग्रन्थ में है।
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) अष्टांग संग्रह (द) अष्टांग हृदय

(907) "मूत्र वर्ग" का वर्णन कौनसे ग्रन्थ में नही है।
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) अष्टांग हृदय (द) अ, स दोनों

(908) "बहुवातशकृत कारक" धान्य है।
(अ) गोधूम (ब) यव (स) गवेधूक (द) षष्टिक धान्य

(909) 'वातहर' शिम्बी धान्य है ?
(अ) कलाय (ब) माष (स) राजमाष (द) अरहर

(910) 'ज्वर और रक्तपित्त' में प्रशस्त धान्य है ?
(अ) मूदग (ब) माष (स) मोठ (द) मसूर

(911) चरकमतानुसार कास, हिक्का, श्वास और अर्श के लिए हितकर द्रव्य है।
(अ) कुलत्थ (ब) काकाण्डोल (स) श्यामाक (द) उड़द

(912) आचार्य चरक ने मांसवर्ग में कितनें प्रकार की योनियाँ बतलाई है।
(अ) 2 (ब) 6 (स) 5 (द) 8

(913) आचार्य चरक ने 'चरणायुधा या कुक्कुट' को कौनसे योनि वाले मांसवर्ग में रखा है।
(अ) प्रसह (ब) प्रदुत (स) जांगल (द) विष्किर

(913) आचार्य चरक ने 'गवय या नीलगाय' को कौनसे योनि वाले मांसवर्ग में रखा है।
(अ) प्रसह (ब) आनूप (स) जांगल (द) भूशय

(914) चरक ने शुक्ति और शंखक का वर्णन किस वर्ग में किया है।
(अ) सुधा वर्ग (ब) सिकता वर्ग (स) कृतान्न वर्ग (द) मांसवर्ग

(915) आचार्य चरक ने 'कपोत और पारावत' को कौनसे योनि वाले मांसवर्ग में रखा है।
(अ) प्रसह (ब) प्रदुत (स) जांगल (द) विष्किर

(916) निम्न में से किस मांसवर्ग का मांस 'लघु' नहीं होता है।
(अ) प्रसह (ब) प्रदुत (स) जांगल (द) विष्किर

(917) निम्न में से किसका मासं 'बृंहण' होता है।
(अ) अजमांस (ब) चरणायुधा (स) मत्स्य (द) उपर्युक्त सभी

(918) निम्न में से किसका मासं 'मेधास्मृतिकरः पथ्यः शोषघ्न' होता है।
(अ) ऐण मांस (ब) मयूर मांस (स) कपोत मांस (द) कूर्म मांस

(919) शरीरबंहणे नान्यत् खाद्यं मांसाद्विशिष्यते – किस आचार्य का कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) भाव प्रकाश

(920) सक्षारं पक्वकूष्माण्डं मधुराम्लं तथा लघु। सृष्टमूत्रपुरीषं च..................। (च. सू. 27/113)
(अ) सर्वदोषनिवर्हणम् (ब) वातकफहर (स) त्रिदोषघ्न (द) वातपहा

(921) चरक ने फलवर्ग का आरम्भ किससे किया है।
(अ) खर्जूर (ब) मृद्विका (स) द्राक्षा (द) दाडिम

(922) सुश्रुत ने फलवर्ग का आरम्भ किससे किया है।
(अ) खर्जूर (ब) मृद्विका (स) द्राक्षा (द) दाडिम

(923) चरकमतानुसार 'टंक' किसका पर्याय है।
(अ) नाशपाती (ब) सेव (स) फल्गु (द) केला

(924) चरकमतानुसार 'मोचा' किसका पर्याय है।
(अ) नाशपाती (ब) सेव (स) फल्गु (द) केला

(925) कच्चा बिल्व होता है।
(अ) उष्णवीर्य (ब) कफवातजितम् (स) दीपन (द) उपर्युक्त सभी

(926) रसासृङ्मांसमेदोविकार नाशक है।
(अ) गुड (ब) हरीतकी (स) विभीतक (द) आमलकी

(927) चरकमतानुसार 'लवलीफल' होता है।
(अ) वातलं (ब) कफवातघ्नः (स) कफपित्तहर (द) त्रिदोषघ्नं

(928) 'सर्वान् रसान्लवणवर्जितान्' किसके लिए कहा गया है।
(अ) आमलक (ब) हरीतकी (स) रसोन (द) उपर्युक्त सभी

(929) चरकमतानुसार 'विश्वभेषज' किसका पर्याय है।
(अ) आर्द्रक (ब) हरीतकी (स) रसोन (द) गुडूची

(930) क्रिमिकुष्ठकिलासघ्नो वातघ्नो गुल्मनाशनः – किसके संदर्भ में कहा गया है।
(अ) आरग्वध (ब) यवक्षार (स) लशुन (द) पलाण्डु

(931) तीक्ष्ण मद्य है।
(अ) सुरा (ब) सीधु (स) सौवीरक (द) सुरासव

(932) सात्विक विधि से मद्यपान का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) काश्यप (द) भाव प्रकाश

(933) 'मधूलिका' होती है।
(अ) कफशामक (ब) कफवर्द्धक (स) कफघ्न (द) उपर्युक्त सभी।

(934) चरकोक्त अंतरिक्ष जल के गुण है।
(अ) 15 (ब) 9 (स) 6 (द) 5

(935) अंतरिक्ष जल के 'पाण्डुर भूमि' पर गिरने पर किस रस की उत्पत्ति होगी।
(अ) मधुर (ब) लवण (स) तिक्त (द) कषाय

(936) अंतरिक्ष जल के 'कपिल भूमि' पर गिरने पर किस रस की उत्पत्ति होगी।
(अ) अम्ल (ब) लवण (स) तिक्त (द) क्षार

(937) कौनसी ऋतु में बरसने वाला जल 'कषाय मधुर रस और रूक्ष गुण' वाला होता है।
(अ) हेमन्त (ब) बसन्त (स) ग्रीष्म (द) बर्षा

(938) 'पथ्यास्ता निर्मलोदकाः।' – यह गुण कौनसी नदियों के जल में मिलता है।
(अ) हिमवत्प्रभवाः (ब) मलयप्रभवाः (स) पूर्वसमुद्रगा (द) पश्चिमाभिमुखाः

(939) चरकानुसार शिरोरोग, हृदयरोग, कुष्ठ, श्लीपदजनक। – यह गुण कौनसी नदियों के जल में मिलता है।
(अ) पारियात्रप्रभवाः (ब) सह्यप्रभवा : (स) विन्ध्यप्रभवा (द) उपर्युक्त सभी

(940) निम्नलिखित त्रिदोषक प्रकोपक नहीं है।
(अ) कुसुम्भ तैल (ब) सामुद्र जल (स) प्रज्ञापराध (द) मिथ्या आहार विहा

(941) चरकोक्त गोदुग्ध के गुण है।
(अ) 15 (ब) 9 (स) 6 (द) 10

(942) प्रवरं जीवनीयानाम् .... उक्तं रसायनं (च. सू. 27/218)
(अ) क्षीर (ब) सर्पि (स) मधु (द) शिवा

(943) चरकानुसार किसका दुग्ध 'शाखा वातहरं' होता है।
(अ) हस्ति (ब) उष्ट्र (स) माहिषी (द) एकशफ

(944) जीवनं बृंहणं सात्म्यं स्नेहनं मानुषं पयः। नावनं ....च तर्पणं चाक्षिशूलिनाम्।।
(अ) पीनसे (ब) रक्तपित्ते (स) शिरशूले (द) अर्दिते

(945) चरकानुसार अत्यग्नि नाशक है।
(अ) गोमांस (ब) माहिषीदुग्ध (स) आविमांस (द) अ, ब दोनों

(946) त्रिदोषक प्रकोपक होता है।
(अ) मन्दक (ब) पीयूष (स) मोरट (द) किलाट

(947) चरकमतानुसार 'योनिकर्णशिरःशूल नाशक' है।
(अ) पुराण घृत (ब) अपुराण (स) जीर्ण घृत (द) कौम्भ घृत

(948) प्रभूतक्रिमिमज्जासृङ्मेदोमांसकरो है।
(अ) गुड (ब) हरीतकी (स) विभीतक (द) आमलकी

(949) 'घृत वर्ण' का मधु किससे प्राप्त होता है।
(अ) माक्षिक (ब) क्षौद्र (स) भ्रामर (द) पौत्तिक

(950) 'कपिल वर्ण' मधु होता है।
(अ) माक्षिक (ब) क्षौद्र (स) भ्रामर (द) पौत्तिक

(951) मधु का रस होता है।
(अ) मधुर (ब) कषाय (स) मधुर, कषाय (द) मधुर, लवण

(952) चरक ने किसे योगवाहि नहीं कहा है।
(अ) पिप्पली (ब) मधु (स) घृत (द) वायु

(953) नातः कष्टतमं किंचित ....तद्धि मानवम्! उपक्रम विरोधित्वात् सद्योहन्याद्यथाविषम्। – किसके संदर्भ में कहा है
(अ) दूषी विष (ब) मूढगर्भ (स) अजीर्ण (द) मध्वाम

(954) कौनसी जाति का मधु 'गुरू' होता है।
(अ) माक्षिक (ब) क्षौद्र (स) भ्रामर (द) पौत्तिक

(955) निम्नलिखित कौनसी अन्न कल्पना 'ग्राहि' है।
(अ) पेया (ब) विलेपी (स) मण्ड (द) वेशवार

(956) वाग्भट्टानुसार निम्नलिखित कौनसी अन्न कल्पना 'सबसे लघुतम' है।
(अ) पेया (ब) विलेपी (स) मण्ड (द) यवागू

(957) निम्नलिखित कौनसी अन्न कल्पना 'प्राणधारण' है।
(अ) पेया (ब) विलेपी (स) मण्ड (द) वेशवार

(958) निम्नलिखित कौनसी अन्न कल्पना 'दाहमूर्च्छानिवारण' है।
(अ) लाजपेया (ब) वेशवार (स) मण्ड (द) लाजमण्ड

(959) चरक ने 'रागषाडव' का वर्णन किस वर्ग में किया है।
(अ) हरित वर्ग (ब) कृतान्न वर्ग (स) आहारयोनि वर्ग (द) कोई नहीं

(960) .... संयोगसंस्करात् सर्वरोगापहं मतम्। – चरक ने किसके संदर्भ में कहा है।
(अ) तैलं (ब) घृत (स) पयः (द) लवणं

(961) निम्नलिखित में से कौनसा तैल 'सर्वदोषप्रकोपण' है।
(अ) कुसुम्भ तैल (ब) सर्षप तैल (स) एरण्ड तैल (द) तिल तैल

(962) सभी तैलों का अनुरस होता है।
(अ) मधुर (ब) लवण (स) तिक्त (द) कषाय

(963) चरक के मत से शुण्ठी का विपाक होता है।
(अ) मधुर (ब) अम्ल (स) कटु (द) उपरोक्त कोई नहीं

(964) आर्द्र पिप्पली का रस होता है।
(अ) मधुर (ब) कटु (स) तिक्त (द) कषाय

(965) कौनसी पिप्पली 'बृष्य' होती है।
(अ) आर्द्र (ब) शुष्क (स) दोनों (द) उपरोक्त कोई नहीं

(966) कौनसा लवण शीत वीर्य होता है।
(अ) सैन्धव (ब) सामुद्र (स) सौर्वचल (द) विड

(967) रोचनं दीपनं वृष्यं चक्षुष्यं अविदाहि। त्रिदोषघ्नं समधुरं। – कौनसा लवण होता है।
(अ) सैन्धव (ब) सामुद्र (स) सौर्वचल (द) विड

(968) उर्ध्व चाधश्च वातानामानुलोम्यकरं लवण है।
(अ) विड (ब) सामुद्र (स) सौर्वचल (द) औद्भिद्

(969) कौनसा क्षार अर्शनाशक होता है।
(अ) यवक्षार (ब) सज्जीक्षार (स) टंकण (द) उपर्युक्त सभी

(970) चरक ने अन्नपान परीक्षणीय विषय बताएँ है।
(अ) 8 (ब) 9 (स) 6 (द) 10

(971) कौनसे शरीरायव का मांस सर्वाधिक गुरू होता है।
(अ) सक्थि (ब) स्कन्ध (स) क्रोड (द) शिर

(972) कौनसे शरीरायव का मांस सर्वाधिक गुरू होता है।
(अ) वृषण (ब) वृक्क (स) यकृत (द) मध्य देह

(973) भोज्य, भक्ष्य, चर्व्य, लेह्य, चोष्ट और पेय – आहार के 6 भेद किसने माने है।
(अ) चरक, सुश्रुत (ब) भाव प्रकाश, शार्ङ्गधर (स) चरक, वाग्भट्ट (द) काश्यप, शार्ङ्गधर

(974) 'गुल्म' कौनसा धातु प्रदोषज विकार है।
(अ) रस प्रदोषज (ब) रक्त प्रदोषज (स) मांस प्रदोषज (द) मज्जा प्रदोषज

(975) 'ग्रन्थि' कौनसा धातु प्रदोषज विकार है।
(अ) रस प्रदोषज (ब) रक्त प्रदोषज (स) मांस प्रदोषज (द) उपधातु प्रदोषज

(976) 'मूर्च्छा' कौनसा धातु प्रदोषज विकार है।
(अ) रस प्रदोषज (ब) रक्त प्रदोषज (स) मांस प्रदोषज (द) मज्जा प्रदोषज

(977) 'अलजी' कौनसा धातु प्रदोषज विकार है।
(अ) मेद प्रदोषज (ब) रक्त प्रदोषज (स) मांस प्रदोषज (द) मज्जा प्रदोषज

(978) 'क्लैव्य' कौनसा धातु प्रदोषज विकार है।
(अ) रस प्रदोषज (ब) रक्त प्रदोषज (स) शुक्र प्रदोषज (द) रस, शुक्र प्रदोषज

(979) 'पाण्डुत्व' कौनसा धातु प्रदोषज विकार है।
(अ) रस प्रदोषज (ब) रक्त प्रदोषज (स) मांस प्रदोषज (द) मज्जा प्रदोषज

(980) 'गर्भपात व गर्भस्राव' कौनसा धातु प्रदोषज विकार है।
(अ) आर्तव प्रदोषज (ब) रक्त प्रदोषज (स) शुक्र प्रदोषज (द) शुक्रार्तव प्रदोषज

(981) रस धातुप्रदोषज विकारों की चिकित्सा है।
(अ) लंघन (ब) लंघन पाचन (स) दोषावसेचन (द) उर्पयुक्त सभी

(982) 'पंचकर्माणि भेषजम्' किस धातुप्रदोषज विकार की चिकित्सा में निर्देशित है।
(अ) मांस (ब) मेद (स) अस्थि (द) मज्जा

(983) व्यवाय, व्यायाम, यथाकाल संशोधन। – किस धातुप्रदोषज विकार की चिकित्सा में निर्देशित है।
(अ) अस्थि (ब) मज्जा (स) शुक्र प्रदोषज (द) मज्जा, शुक्र प्रदो

(984) 'संशोधन, शस्त्र, अग्नि, क्षारकर्म।' – किस धातुप्रदोषज विकार की चिकित्सा में निर्देशित हैं।
(अ) मांस प्रदोषज (ब) मेद प्रदोषज (स) अस्थि प्रदोषज (द) उपधातु प्रदोषज

(985) चरक ने दोषों के कोष्ठ से शाखा में गमन के कितने कारण बताए है।
(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) इनमें से कोई नहीं

(986) चरक ने दोषों के शाखा से कोष्ठ में गमन का कौनसा कारण नहीं बताया है।
(अ) वृद्धि (ब) विष्यन्दन (स) व्यायाम (द) वायुनिग्रह

(987) श्रुत बुद्धिः स्मृतिः दाक्ष्यं धृतिः हितनिषेवणम्। – किसके गुण है ?
(अ) आचार्य के (ब) शिष्य के (स) परीक्षक के (द) प्राणाभिसर के

(988) चरकोक्त दश प्राणायतन में शामिल नहीं है।
(अ) हृदय (ब) वस्ति (स) कण्ठ (द) फुफ्फुस

(989) चरकमतानुसार 'कुलीन' किसका गुण है ?
(अ) प्राणाभिसर वैद्य का (ब) धात्री का (स) परीक्षक का (द) रोगाभिसर वैद्य का

(990) 'अर्थ' किसका पर्याय है।
(अ) हृदय (ब) मन (स) आत्मा (द) धन

(991) "आगारकर्णिका" की तुलना किससे की गयी है।
(अ) हृदय (ब) मन (स) आत्मा (द) प्राणायतन

(992) .... हर्षणानां।
(अ) तत्वावबोधो (ब) इन्द्रियजयो (स) विद्या (द) अंहिसा

(993) 'चेतनानुवृत्ति' किसका पर्याय है।
(अ) हृदय (ब) मन (स) आत्मा (द) आयु

(994) हित आयु एवं अहित आयु के लक्षण, सुखायु एवं दुखायु के लक्षणों का विस्तृत वर्णन कहाँ मिलता है ?
(अ) चरक सूत्रस्थान 1 (ब) चरक सूत्रस्थान 30 (स) चरक इन्द्रियस्थान (द) चरक शारीरस्थान

(995) निरोध किसका पर्याय है।
(अ) मोक्ष (ब) मृत्यु (स) आत्मा (द) मन

(996) आयुर्वेद के नित्य या शाश्वत होने का कारण है।
(अ) अनादित्वात् (ब) स्वभावसंसिद्ध लक्षणत्वात् (स) भावस्वभाव नित्यत्व (द) उर्पयुक्त सभी

(997) चरक ने एक वैद्य को दूसरे वैद्य की परीक्षा करने के लिए कितने प्रश्न पूछने का निर्देश दिया है।
(अ) 8 (ब) 9 (स) 15 (द) 18

(998) वैद्य परीक्षा विषयक प्रश्न नहीं है।
(अ) तंत्र (ब) स्थान (स) सूत्र (द) ज्ञान

(999) 'आश्रय स्थान' कहा जाता है।
(अ) सूत्र स्थान (ब) शारीर स्थान (स) कल्प स्थान (द) चिकित्सा स्थान

(1000) आयुर्वेद तंत्र का "शुभ शिर" है।
(अ) सूत्र स्थान (ब) शारीर स्थान (स) कल्प स्थान (द) चिकित्सा स्थान

Model Test Papers (Answer) – चरक सूत्रस्थान

1.	A	21.	C	41.	B	61.	A	81.	C
2.	C	22.	A	42.	A	62.	D	82.	D
3.	D	23.	A	43.	C	63.	C	83.	C
4.	D	24.	C	44.	A	64.	D	84.	A
5.	A	25.	D	45.	B	65.	B	85.	B
6.	C	26.	A	46.	A	66.	C	86.	B
7.	A	27.	B	47.	A	67.	D	87.	D
8.	A	28.	C	48.	B	68.	C	88.	C
9.	A	29.	B	49.	C	69.	D	89.	D
10.	C	30.	A	50.	B	70.	D	90.	C
11.	C	31.	D	51.	C	71.	C	91.	B
12.	A	32.	C	52.	A	72.	C	92.	A
13.	B	33.	C	53.	A	73.	A	93.	B
14.	A	34.	A	54.	B	74.	B	94.	C
15.	C	35.	B	55.	D	75.	B	95.	D
16.	A	36.	A	56.	B	76.	C	96.	D
17.	C	37.	D	57.	B	77.	C	97.	D
18.	A	38.	A	58.	A	78.	D	98.	D
19.	D	39.	D	59.	C	79.	A	99.	B
20.	D	40.	A	60.	D	80.	A	100.	A

101.	D	121.	B	141.	B	161.	C	181.	C
102.	A	122.	C	142.	B	162.	D	182.	C
103.	D	123.	C	143.	B	163.	A	183.	D
104.	A	124.	D	144.	A	164.	B	184.	B
105.	C	125.	B	145.	A	165.	C	185.	C
106.	B	126.	A	146.	D	166.	D	186.	C
107.	D	127.	C	147.	B	167.	D	187.	C
108.	B	128.	D	148.	B	168.	B	188.	C
109.	D	129.	C	149.	B	169.	B	189.	C
110.	A	130.	B	150.	B	170.	C	190.	B
111.	A	131.	D	151.	D	171.	B	191.	A
112.	A	132.	D	152.	D	172.	D	192.	A
113.	A	133.	C	153.	C	173.	C	193.	C
114.	D	134.	C	154.	D	174.	B	194.	A
115.	C	135.	C	155.	B	175.	A	195.	C
116.	B	136.	B	156.	A	176.	B	196.	B
117.	A	137.	D	157.	D	177.	B	197.	B
118.	D	138.	B	158.	B	178.	C	198.	D
119.	C	139.	C	159.	C	179.	A	199.	D
120.	D	140.	A	160.	A	180.	B	200.	C

SHYAM-VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER BHOPAL (M.P.)
By. Dr. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

201.	A	221.	A	241.	A	261.	D	281.	A
202.	C	222.	C	242.	B	262.	C	282.	B
203.	D	223.	D	243.	C	263.	B	283.	D
204.	C	224.	D	244.	D	264.	D	284.	A
205.	C	225.	B	245.	B	265.	B	285.	C
206.	D	226.	C	246.	C	266.	C	286.	D
207.	D	227.	B	247.	D	267.	C	287.	B
208.	B	228.	D	248.	A	268.	D	288.	A
209.	C	229.	A	249.	B	269.	B	289.	B
210.	A	230.	D	250.	B	270.	A	290.	A
211.	B	231.	A	251.	D	271.	A	291.	B
212.	C	232.	C	252.	A	272.	C	292.	C
213.	D	233.	D	253.	A	273.	A	293.	C
214.	B	234.	C	254.	C	274.	D	294.	C
215.	B	235.	A	255.	D	275.	C	295.	C
216.	D	236.	A	256.	C	276.	C	296.	D
217.	C	237.	C	257.	D	277.	C	297.	A
218.	C	238.	A	258.	A	278.	B	298.	C
219.	B	239.	C	259.	A	279.	C	299.	A
220.	C	240.	D	260.	A	280.	B	300.	C

301.	C	321.	A	341.	D	361.	C	381.	B
302.	C	322.	B	342.	A	362.	B	382.	C
303.	A	323.	D	343.	D	363.	C	383.	B
304.	A	324.	D	344.	A	364.	B	384.	C
305.	B	325.	A	345.	A	365.	A	385.	D
306.	C	326.	A	346.	D	366.	C	386.	C
307.	A	327.	A	347.	A	367.	D	387.	C
308.	B	328.	A	348.	B	368.	A	388.	B
309.	C	329.	B	349.	C	369.	D	389.	A
310.	D	330.	B	350.	D	370.	C	390.	C
311.	B	331.	D	351.	A	371.	D	391.	C
312.	B	332.	A	352.	B	372.	A	392.	A
313.	C	333.	C	353.	A	373.	A	393.	B
314.	A	334.	B	354.	C	374.	B	394.	D
315.	A	335.	A	355.	A	375.	D	395.	B
316.	D	336.	B	356.	A	376.	C	396.	D
317.	D	337.	A	357.	A	377.	B	397.	C
318.	B	338.	C	358.	D	378.	B	398.	D
319.	A	339.	D	359.	A	379.	A	399.	D
320.	C	340.	D	360.	C	380.	A	400.	C

SHYAM VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER BHOPAL (M.P.)
BY: Dr. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

401. B	421. A	441. A	461. D	481. D
402. A	422. C	442. B	462. C	482. B
403. B	423. C	443. B	463. C	483. A
404. A	424. B	444. B	464. D	484. D
405. C	425. A	445. D	465. C	485. B
406. C	426. D	446. D	466. D	486. A
407. D	427. C	447. C	467. A	487. A
408. C	428. D	448. B	468. D	488. B
409. B	429. A	449. A	469. A	489. B
410. A	430. D	450. C	470. A	490. C
411. C	431. D	451. B	471. C	491. C
412. B	432. D	452. A	472. D	492. D
413. D	433. A	453. B	473. B	493. D
414. C	434. C	454. B	474. A	494. A
415. B	435. C	455. C	475. D	495. B
416. D	436. A	456. C	476. B	496. D
417. A	437. B	457. B	477. D	497. D
418. D	438. C	458. B	478. A	498. D
419. D	439. C	459. A	479. B	499. D
420. B	440. C	460. B	480. C	500. B

501. B	521. C	541. D	561. D	581. B
502. A	522. A	542. D	562. B	582. A
503. A	523. B	543. D	563. C	583. C
504. D	524. B	544. C	564. D	584. C
505. A	525. D	545. B	565. D	585. A
506. B	526. C	546. D	566. D	586. B
507. B	527. D	547. A	567. D	587. C
508. A	528. C	548. C	568. A	588. D
509. C	529. B	549. D	569. D	589. B
510. B	530. C	550. D	570. B	590. A
511. C	531. D	551. A	571. A	591. C
512. A	532. B	552. C	572. A	592. B
513. C	533. C	553. C	573. B	593. B
514. C	534. B	554. D	574. A	594. C
515. B	535. A	555. B	575. C	595. C
516. A	536. C	556. B	576. D	596. A
517. C	537. B	557. D	577. D	597. B
518. C	538. A	558. C	578. B	598. B
519. D	539. A	559. D	579. C	599. C
520. A	540. B	560. C	580. C	600. A

601.	D	621.	A	641.	C	661.	B	681.	C
602.	A	622.	A	642.	B	662.	D	682.	A
603.	A	623.	C	643.	D	663.	B	683.	D
604.	C	624.	C	644.	B	664.	D	684.	A
605.	B	625.	A	645.	D	665.	B	685.	B
606.	A	626.	B	646.	D	666.	D	686.	D
607.	D	627.	D	647.	A	667.	C	687.	A
608.	C	628.	B	648.	D	668.	D	688.	B
609.	A	629.	A	649.	B	669.	C	689.	D
610.	B	630.	D	650.	C	670.	B	690.	D
611.	A	631.	D	651.	D	671.	D	691.	B
612.	B	632.	D	652.	B	672.	D	692.	B
613.	D	633.	D	653.	A	673.	C	693.	D
614.	D	634.	A	654.	D	674.	C	694.	D
615.	C	635.	C	655.	A	675.	A	695.	A
616.	A	636.	B	656.	B	676.	A	696.	C
617.	B	637.	A	657.	B	677.	B	697.	D
618.	A	638.	C	658.	B	678.	C	698.	C
619.	A	639.	C	659.	D	679.	B	699.	A
620.	A	640.	D	660.	A	680.	A	700.	B

SHYAM VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER BHOPAL (M.P.)
BY- Dr. NEELIMA SINGH LODHI

701.	A	721.	D	741.	D	761.	A	781.	B
702.	A	722.	C	742.	B	762.	B	782.	A
703.	A	723.	C	743.	B	763.	A	783.	A
704.	A	724.	D	744.	C	764.	B	784.	A
705.	B	725.	C	745.	D	765.	C	785.	D
706.	A	726.	B	746.	C	766.	A	786.	C
707.	D	727.	C	747.	B	767.	B	787.	C
708.	A	728.	D	748.	C	768.	D	788.	B
709.	D	729.	C	749.	C	769.	A	789.	C
710.	B	730.	D	750.	D	770.	C	790.	D
711.	D	731.	D	751.	C	771.	B	791.	C
712.	C	732.	D	752.	C	772.	A	792.	A
713.	C	733.	B	753.	D	773.	A	793.	A
714.	B	734.	B	754.	C	774.	A	794.	C
715.	B	735.	B	755.	B	775.	B	795.	D
716.	D	736.	C	756.	C	776.	A	796.	A
717.	B	737.	D	757.	A	777.	B	797.	A
718.	B	738.	D	758.	D	778.	A	798.	D
719.	D	739.	B	759.	B	779.	A	799.	A
720.	B	740.	B	760.	A	780.	C	800.	A

801. C	821. A	841. A	861. B	881. A
802. A	822. B	842. D	862. D	882. D
803. D	823. C	843. A	863. B	883. B
804. A	824. B	844. A	864. A	884. C
805. B	825. C	845. C	865. B	885. A
806. C	826. B	846. C	866. B	886. D
807. A	827. C	847. D	867. B	887. D
808. A	828. D	848. D	868. A	888. D
809. C	829. B	849. D	869. D	889. B
810. C	830. D	850. D	870. A	890. A
811. D	831. D	851. C	871. C	891. C
812. B	832. B	852. C	872. A	892. B
813. A	833. C	853. B	873. B	893. A
814. A	834. B	854. C	874. C	894. B
815. D	835. B	855. D	875. D	895. C
816. D	836. C	856. A	876. C	896. C
817. B	837. B	857. D	877. C	897. A
818. B	838. D	858. A	878. D	898. A
819. A	839. B	859. C	879. D	899. B
820. B	840. C	860. D	880. B	900. A

901. A	921. B	941. D	961. A	981. A
902. B	922. D	942. A	962. D	982. C
903. B	923. A	943. D	963. A	983. D
904. A	924. D	944. B	964. A	984. A
905. A	925. B	945. D	965. B	985. B
906. D	926. C	946. A	966. A	986. C
907. D	927. A	947. C	967. A	987. C
908. B	928. A	948. A	968. A	988. D
909. B	929. A	949. D	969. A	989. A
910. C	930. C	950. B	970. B	990. A
911. A	931. D	951. C	971. D	991. A
912. D	932. A	952. C	972. D	992. A
913. D	933. B	953. D	973. B	993. D
914. D	934. C	954. C	974. B	994. B
915. B	935. C	955. B	975. D	995. B
916. A	936. D	956. C	976. D	996. D
917. D	937. B	957. C	977. C	997. A
918. D	938. D	958. D	978. D	998. D
919. A	939. D	959. B	979. A	999. B
920. A	940. D	960. A	980. C	1000. A

Shyam-Vidhya Ayurved P.G. Entrance Coaching Center, Bhopal (M.P.)
Model Test Papers – चरक निदान स्थान
By- Dr. Neelima Singh Lodhi (M.D.) Mob. 09300961664, 09993961427

(1) प्रत्यय और समुत्थान किसके पर्याय है।
(अ) निदान (ब) पूर्वरूप (स) रूप (द) सम्प्राप्ति

(2) कर्ता किसका पर्याय है।
(अ) भिषक् (ब) भेषज (स) रोग (द) निदान

(3) चरक निदान ने कितने भेद बताए है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) उपर्युक्त सभी

(4) व्याधि के 3 भेद – आग्नेय, सौम्य और वायव्य सर्वप्रथम किसने बतलाए है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) सुश्रुत (द) वाग्भट्ट

(5) यक्ष्मा किसका पर्याय है।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) ज्वर (स) रोग (द) उपर्युक्त सभी

(6) द्विविधं हि पूर्वरूपं भवति – सामान्यं विशिष्टं च। किस आचार्य का कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) माधव (द) अष्टांग हृदय

(7) 'भाविव्याधि बोधक एव लिङ्गम् पूर्वरूपम्' – किस आचार्य का कथन है।
(अ) चक्रपाणि (ब) डल्हण (स) वाग्भट्ट (द) माधव निदान

(8) 'पूर्वरूप' निम्न में से कौनसे दो रोगों के सांक्षेप निदान के लिए आवश्यक है।
(अ) अतिसार और ग्रहणी (ब) अतिसार और प्रवाहिका (स) मूर्च्छा और अपस्मार (द) प्रमेह और रक्तपित्त

(9) व्याधि का प्रार्दुभूत लक्षण है ?
(अ) हेतु (ब) पूर्वरूप (स) रूप (द) उपद्रव

(10) व्यंजन और संस्थान किसके पर्याय है।
(अ) हेतु (ब) पूर्वरूप (स) रूप (द) सम्प्राप्ति

(11) 'लक्षण' किसका पर्याय है।
(अ) रूप (ब) शास्त्र (स) तंत्र (द) उपर्युक्त सभी

(12) उपशय के 18 भेदों का सर्वप्रथम वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) माधव (द) वाग्भट्ट

(13) पित्त प्रधान व्रण में उष्ण उपनाह। – उपशय का कौनसा प्रकार है।
(अ) हेतुविपरीत (ब) व्याधि विपरीत (स) हेतुविपरीतार्थकारी (द) व्याधिविपरीतार्थकारी

(14) मद्यपान जन्य मदात्यय में मद्यकारक मद्य का पान। – उपशय का कौनसा प्रकार है।
(अ) हेतुविपरीतार्थकारी (ब) व्याधिविपरीतार्थकारी (स) उभयविपरीतार्थकारी (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(15) अग्नि से जलने पर प्लुष्ठ दग्ध में उष्ण अगरू का लेप। – उपशय का कौनसा प्रकार है।
(अ) हेतुविपरीतार्थकारी (ब) व्याधिविपरीतार्थकारी (स) उभयविपरीतार्थकारी (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(16) व्यायाम जनित संमूढ वात में जल में तैरना। – उपशय का कौनसा प्रकार है।
(अ) हेतुविपरीतार्थकारी (ब) व्याधिविपरीतार्थकारी (स) उभयविपरीतार्थकारी (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(17) उदावर्त में प्रवाहण करना। – उपशय का कौनसा प्रकार है।
(अ) हेतुविपरीत (ब) व्याधि विपरीत (स) हेतुविपरीतार्थकारी (द) व्याधिविपरीतार्थकारी

(18) वातज उन्माद मे भयदर्शन। – उपशय का कौनसा प्रकार है।
(अ) हेतुविपरीत (ब) व्याधि विपरीत (स) हेतुविपरीतार्थकारी (द) व्याधिविपरीतार्थकारी

(19) अतिसार में विरेचनार्थ दुग्ध का प्रयोग। – उपशय का कौनसा प्रकार है।
(अ) हेतुविपरीत (ब) व्याधि विपरीत (स) हेतुविपरीतार्थकारी (द) व्याधिविपरीतार्थकारी

(20) स्थावर विष की चिकित्सा में जांगम और जांगम विष की चिकित्सा में स्थावर विष का प्रयोग – उपशय का कौनसा प्रकार है।
(अ) हेतुविपरीतार्थकारी (ब) व्याधिविपरीतार्थकारी (स) उभयविपरीतार्थकारी (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(21) प्रमेह में यव का प्रयोग – उपशय का कौनसा प्रकार है।
(अ) व्याधि विपरीत अन्न (ब) व्याधि विपरीत औषध
(स) व्याधिविपरीतार्थकारी अन्न (द) व्याधिविपरीतार्थकारी औषध

(22) चरक ने 'अनुपशय' का अर्न्तभाव किसमें किया है।
(अ) निदान (ब) उपशय (स) रूप (द) पूर्वरूप

(23) जाति और आगति किसके पर्याय है।
(अ) हेतु (ब) पूर्वरूप (स) रूप (द) सम्प्राप्ति

(24) चरक ने सम्प्राप्ति के कितने भेद माने है।
(अ) 2 (ब) 5 (स) 6 (द) 7

(25) सम्प्राप्ति के भेद 5 किसने माने है।
(अ) वाग्भट्ट (ब) चक्रपाणि (स) सुश्रुत (द) काश्यप

(26) विधि जाति का सर्वप्रथम वर्णन किस संहिता में किया गया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) माधव (द) अष्टांग हृदय

(27) तस्माद् व्याधिजनक दोषव्यापारविशेषयुक्तं व्याधिजन्मेह सम्प्राप्तिः – किस आचार्य ने कहा है ?
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) माधव (द) वाग्भट्ट

(28) 'दोषों की तरतम उपलब्धि' किस सम्प्राप्ति के अंतगर्त आती है।
(अ) संख्या (ब) प्रधान (स) विधि (द) विकल्प

(29) 'रोगों के भेद' किस सम्प्राप्ति के अंतगर्त आते है।
(अ) संख्या (ब) प्रधान (स) विधि (द) विकल्प

(30) 'दोषों की अंशांश कल्पना' किस सम्प्राप्ति के अंतगर्त आती है।
(अ) संख्या (ब) प्रधान (स) विधि (द) विकल्प

(31) चरकानुसार ज्वर के कारण है।
(अ) 2 (ब) 5 (स) 7 (द) 8

(32) चरकानुसार ज्वर के भेद है।
(अ) 2 (ब) 5 (स) 7 (द) 8

(33) ज्वर की प्रकृति हैं।
(अ) 2 (ब) 5 (स) 7 (द) 8

(34) चरकानुसार ज्वर में कौनसे स्रोतस अवरूद्ध होते है।
(अ) रसवह (ब) स्वेदवह (स) प्राणवह (द) अ, ब दोनों

(35) 'विषमारम्भविसर्गित्वम्' कौन से ज्वर का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(36) 'घर्मान्ते' कौनसी ऋतु का पर्याय है।
(अ) शरद (ब) प्रावृट् (स) ग्रीष्म (द) वर्षा

(37) सूची–I को सूची–II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए

सूची – I	सूची – II
A. वातज ज्वर	1. कटुकास्यता
B. पित्तज ज्वर	2. मुखमाधुर्य
C. कफज ज्वर	3. कशायास्यता

कूट :–	A	B	C
(अ)	1	2	3
(ब)	3	2	1
(स)	2	1	3
(द)	3	1	2

(38) चरकानुसार "हरितहारिद्रत्व त्वङ्.नखनयनवदनमूत्रपुरीषश्च भवति" किसका लक्षण है।
(अ) पित्तज ज्वर (ब) पित्तज गुल्म (स) रक्तपित्त (द) पित्तज उन्माद

(39) 'अन्नद्वेष' कौन से ज्वर का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(40) 'अन्नरसखेद' कौन से ज्वर का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(41) 'आस्यवैरस्य' कौन से ज्वर का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(42) 'क्लृप्तिभावश्चः' कौन से ज्वर का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(43) 'पिण्डिकयोरूद्वेष्टन' कौन से ज्वर का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(44) 'रक्तकोठाभिर्निवृति' कौन से ज्वर का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज
(45) 'युगपदेव केवले शरीरे ज्वरस्याभ्यागमनभिवृद्धि' कौन से ज्वर का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) ब, स दोनों
(46) 'उष्णाभिप्रायता' कौन से ज्वर का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) अ, स दानों
(47) चरकानुसार आगन्तुज ज्वर का भेद नहीं है।
(अ) अभिघातज (ब) अभिमंत्रित (स) अभिचारज (द) अभिशापज
(48) चरकानुसार अभिचारज ज्वर होता है।
(अ) वातज (ब) वायु, दुष्ट शोणित जन्य (स) वात,पित्त जन्य (द) सन्निपातज
(49) चरकानुसार अभिषंगज ज्वर होता है।
(अ) वातज (ब) वायु, दुष्ट शोणित जन्य (स) वात,पित्त जन्य (द) सन्निपातज
(50) चरकानुसार अभिघातज ज्वर होता है।
(अ) वातज (ब) वायु, दुष्ट शोणित जन्य (स) वात,पित्त जन्य (द) सन्निपातज
(51) ज्वर का एक मात्र लक्षण है ?
(अ) देह संताप (ब) देहेन्द्रियमनस्तापकरः (स) सन्तापो देह मानसः (द) सन्ताप
(52) ज्वर का प्रत्यात्मिक लक्षण है।
(अ) देह संताप (ब) देहेन्द्रियमनस्तापकरः (स) सन्तापो देह मानसः (द) सन्ताप
(53) अल्पप्राणता, दीर्घसूत्रता – ज्वर का है।
(अ) हेतु (ब) पूर्वरूप (स) लक्षण (द) उपद्रव
(54) चरकानुसार ज्वर का पूर्वरूप है।
(अ) बालेभ्यः प्रद्वेषः (ब) अम्ललवणकटुकप्रियता (स) विनामः (द) उपर्युक्त
(55) ज्वर 'महेश्वरकोपप्रभवः' किसने कहा है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) सुश्रुत (द) माधव
(56) ज्वर 'रूद्रनिश्वाससम्भवः' किसने कहा है
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) सुश्रुत (द) माधव
(57) 'नान्ये व्याध्यस्तथा दारूणा बहुपद्रवा दुश्चिकित्स्यश्च।' – किसके लिए कहा गया है।
(अ) ज्वर (ब) यक्ष्मा (स) रक्तपित्त (द) प्रमेह
(58) 'सर्वप्राणभृतां प्राणहरो' – किसके लिए कहा गया है।
(अ) ज्वर (ब) यक्ष्मा (स) आमविष (द) प्रमेह
(59) ज्वर को "सर्वरोगाधिपति" किसने कहा है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) माधव
(60) ज्वर को "सर्वरोगपति" किसने कहा है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) माधव
(61) जीर्णज्वरेषु तु सर्वेष्वेव .... पानं प्रशस्यते।
(अ) सर्पिषः (ब) पयः (स) कषाय (द) तक्रः
(62) जीर्णज्वर में घृत अपने किस गुण के कारण कफ का शमन करता है।
(अ) स्नेहत्व (ब) शीतत्व (स) सूक्ष्म (द) संस्कारवाही
(63) नान्यः स्नेहस्तथा कश्चित् संस्कारमनुवर्तते। – किसके लिए कहा गया है।
(अ) घृत (ब) दुग्ध (स) मधु (द) तैल
(64) रक्तपित्त को "लोहितपित्त" की संज्ञा किसने दी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) माधव
(65) कच्चा (आम) दूध पीने से कौनसा रोग होता है।
(अ) ज्वर (ब) रक्तपित्त (स) अतिसार (द) छर्दि
(66) 'लोहलोहितमत्स्यामगन्धित्व' रक्तपित्त का .... है।
(अ) हेतु (ब) पूर्वरूप (स) लक्षण (द) उपद्रव
(67) चरकानुसार रक्तपित्त के संदर्भ में सत्य कथन है।
(अ) पित्त प्रदूषित रक्त के समान गुण वाला हो जाता है (ब) पित्त दूषित रक्त के समान मात्रा वाला हो जाता है
(स) पित्त प्रदूषित रक्त के समान गन्धवर्ण वाला हो जाता है (द) पित्त दूषित रक्त के समान प्रकृति वाला हो जाता

DIVYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER DR. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

(68) चरकानुसार रक्तपित्त के उपद्रव होते है।
(अ) 2 (ब) 9 (स) 7 (द) 11

(69) रक्तपित्त का उपद्रव नहीं है।
(अ) शोफ, शोष (ब) ज्वर, अतिसार (स) श्वास, कास (द) अर्श, कामला

(70) चरकानुसार रक्तपित्त के मार्ग है।
(अ) 2 (ब) 9 (स) 7 (द) 11

(71) विरेचनं तु पित्तस्य जयार्थे परमौषधम्। – कहाँ कहा गया है।
(अ) अपामार्गतण्डुलीय (ब) षड्विरेचनशताश्रितीय (स) रक्तपित्त निदान (द) कुष्ठ निदान

(72) प्रतिमार्गहरणं चिकित्सा किस रोग में की जाती है।
(अ) ज्वर (ब) रक्तपित्त (स) उन्माद (द) प्रमेह

(73) ऊर्ध्वग रक्तपित्त में किसका अनुबन्ध होता है।
(अ) वात (ब) कफ (स) वातकफ (द) त्रिदोष

(74) अधोग रक्तपित्त में किसका अनुबन्ध होता है।
(अ) वात (ब) कफ (स) वातकफ (द) त्रिदोष

(75) किन दोषों से संसर्गज रक्तपित्त में शरीर के सभी छिद्रों से रक्तस्राव होता है।
(अ) वात (ब) कफ (स) वातकफ (द) त्रिदोष

(76) कौनसा रक्तपित्त याप्य होता है।
(अ) ऊर्ध्वग (ब) अधोग (स) उभयग (द) त्रिदोषज

(77) अधोग रक्तपित्त में कौनसे रस प्रधान औषधियो से वमन कराते है।
(अ) कषाय, तिक्त (ब) कटु (स) मधुर (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(78) ऊर्ध्वग रक्तपित्त में कौनसे रस प्रधान औषधियों से विरेचन कराते है।
(अ) कषाय, तिक्त (ब) कटु (स) मधुर (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(79) बिना स्नेहन के वमन विरेचन कराने से कौनसा रोग हो सकता है।
(अ) ज्वर (ब) रक्तपित्त (स) गुल्म (द) प्रमेह

(80) प्रकुपित वायु किस स्रोत्र में प्रवेश कर गुल्म को उत्पन्न करती है।
(अ) प्राणवह (ब) अन्नवह (स) मलवह (द) महास्रोत्र

(81) कौनसा गुल्म 'निचय गुल्म' कहलाता हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) रक्तज (द) सन्निपातज

(82) निम्न में से कौनसी व्याधि का कोई दूष्य नहीं होता है।
(अ) ज्वर (ब) रक्तपित्त (स) गुल्म (द) अबुर्द

(83) किस रोग में ओज क्षय नहीं होता है ?
(अ) प्रमेह (ब) गुल्म (स) राजयक्ष्मा (द) ग्रहणी

(84) वाग्भट्टानुसार गुल्म के होते है।
(अ) 5 (ब) 7 (स) 8 (द) 9

(85) चरकानुसार गुल्म के आश्रय होते है।
(अ) 5 (ब) 9 (स) 7 (द) 11

(86) पित्तज गुल्म का आश्रय नहीं होता है।
(अ) हृदय (ब) नाभि (स) वस्ति (द) आमाशय

(87) 'दिवसान्ते ज्वर' किस गुल्म का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) रक्तज

(88) 'स्पर्शासहो' किस गुल्म का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) रक्तज

(89) 'कास, श्वास, प्रतिश्याय एंव राजयक्ष्मा की उत्पत्ति' यह लक्षण किस गुल्म में मिलता हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) रक्तज

(90) 'अत्यर्थग्लानिश्चक्षुषो:' किस गुल्म का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) रक्तज

(91) 'गलतालुमुखशोष' कौनसे गुल्म का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(92) निम्न में से कौनसा लक्षण रक्तज गुल्म में नहीं मिलता हैं।
(अ) स्तनयोश्च स्तन्यम् (ब) दोहृद। (स) रोमराजी की उत्पत्ति (द) आर्तवादर्शन

(93) शोणितगुल्मस्तु खलु स्त्रिया एव भवति न पुरुषस्य। – किसने कहा है।
(अ) चरक (ब) क्षारपाणि (स) चक्रपाणि (द) हारीत

(94) स्त्रीणामार्त्तवजो गुल्मो न पुंसामुपजायते। अन्यस्त्वसृग्भवो गुल्मः स्त्रीणां पुंसांश्च जायते। – किसने कहा है।
(अ) चरक (ब) क्षारपाणि (स) चक्रपाणि (द) हारीत

(95) आर्तवप्रतिबन्धजन्यः शोणितगुल्मः पुरूषस्य न भवति। सामान्यशोणितदुष्टिजन्यस्तु पुरूषस्यापि भवति – किसने कहा है।
(अ) चरक (ब) क्षारपाणि (स) चक्रपाणि (द) हारीत

(96) सुश्रुतानुसार रक्तज गुल्म में गर्भिणी का कौनसा लक्षण नहीं मिलता है।
(अ) स्पन्दन (ब) उदर वृद्धि (स) आर्तवादर्शन (द) अ, ब दोनों

(97) गर्भकोष्ठार्तवागमन वैशेष्यात् – किसके संदर्भ में कहा गया है।
(अ) गर्भस्राव (ब) गर्भपात (स) मूढगर्भ (द) शोणित गुल्म

(98) 'अग्निवैषम्यं, विदाहो भुक्तस्य, पाककाले चायुक्त्या छर्द्युद्गारौ' – किसका पूर्वरूप हैं।
(अ) अजीर्ण (ब) उदावर्त (स) अलसक (द) गुल्म

(99) चरकानुसार कौनसा गुल्म असाध्य होता हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) रक्तज (द) सन्निपातज

(100) सर्वेष्वपि खल्वेतेषु गुल्मेषु न कश्चिद् .... सम्भवति गुल्मः।
(अ) वात (ब) वाताद् (स) वातादृते (द) वायु

(101) चरक संहिता में प्रमेह रोग के निदानों का वर्णन सर्वप्रथम किस स्थान में है।
(अ) सूत्र स्थान (ब) निदान स्थान (स) चिकित्सा स्थान (द) सिद्धि स्थान

(102) मधुमेह के निदान एंव सम्प्राप्ति का वर्णन चरक संहिता के किस स्थान में मिलता है।
(अ) सूत्र स्थान (ब) निदान स्थान (स) चिकित्सा स्थान (द) सिद्धि स्थान

(103) प्रमेह के भेद 20 किसने माने है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) उपर्युक्त सभी

(104) चरक ने बहुद्रवः श्लेष्मा दोषविशेषः। – किसके लिए कहा है।
(अ) मेदोरोग (ब) स्थौल्य (स) प्रमेह (द) उपर्युक्त सभी

(105) प्रमेह का दूष्य नहीं होता है।
(अ) ओज (ब) रक्त (स) अस्थि (द) वसा

(106) लसीका किसका दूष्य है।
(अ) प्रमेह (ब) रक्तपित्त (स) कुष्ठ (द) अ, स दोनों

(107) वसा किसका दूष्य है।
(अ) प्रमेह (ब) रक्तपित्त (स) कुष्ठ (द) मेदोरोग

AYURVEDA ENTRANCE COACHING CENTER

(108) 'करपाद सुप्तता' किसका पूर्वरूप है।
(अ) गुल्म (ब) कुष्ठ (स) प्रमेह (द) राजयक्ष्मा

(109) किस प्रमेही का मूत्र 'र्निगन्ध' होता हैं।
(अ) उदकमेह (ब) सान्द्रमेह (स) शीतमेह (द) शनैर्मेह

(110) 'यस्य पर्युषितं मूत्रं सान्द्रीभवति भाजने' किस कफज प्रमेह का लक्षण हैं।
(अ) उदकमेह (ब) सान्द्रमेह (स) सान्द्रप्रसादमेह (द) शनैर्मेह

(111) 'कृच्छ्रपूर्वक मूत्रत्याग' किस कफज प्रमेह का लक्षण हैं।
(अ) उदकमेह (ब) सान्द्रमेह (स) शीतमेह (द) शनैर्मेह

(112) किस प्रमेही का मूत्र 'अत्यर्थमधुरं शीतं' होता हैं।
(अ) उदकमेह (ब) इक्षुबालिकामेह (स) शीतमेह (द) ब, स दोनों

(113) किस प्रमेही का मूत्र 'अत्यर्थमधुर शीतं मूत्रं मेहति यो भृशम्' होता हैं।
(अ) उदकमेह (ब) इक्षुबालिकामेह (स) शीतमेह (द) मधुमेह

(114) किस प्रमेही का मूत्र 'कषायमधुर पाण्डु एंव रूक्ष' होता हैं।
(अ) उदकमेह (ब) इक्षुबालिकामेह (स) शीतमेह (द) मधुमेह

(115) किस प्रमेही का मूत्र 'ईषत्पिच्छिलं' होता हैं।
(अ) शीतमेह (ब) इक्षुबालिकामेह (स) अलालमेह (द) ब, स दोनों

(116) किस प्रमेही का मूत्र 'चावल के आटे के समानं' होता हैं।
(अ) शीतमेह (ब) सान्द्रमेह (स) शुक्लमेह (द) सिकतामेह

(117) स्याही के रंग का मूत्र किस प्रमेह में आता हैं।
(अ) नीलमेह (ब) क्षारमेह (स) कालमेह (द) मंजिष्ठामेह

(118) मसीवर्ण का मूत्र किस प्रमेह में आता हैं।
(अ) नीलमेह (ब) क्षारमेह (स) कालमेह (द) मंजिष्ठामेह

(119) चाष पक्षी के पंखों के समान मूत्र किस प्रमेह में आता हैं।
(अ) नीलमेह (ब) हारिद्रमेह (स) कालमेह (द) रक्तमेह

(120) किस प्रमेही का मूत्र 'कटुक' गुणवाला होता हैं।
(अ) नीलमेह (ब) हारिद्रमेह (स) कालमेह (द) रक्तमेह

(121) किस प्रमेही का मूत्र 'लवण' गुणवाला होता हैं।
(अ) नीलमेह (ब) हारिद्रमेह (स) कालमेह (द) रक्तमेह

(122) किस प्रमेही का मूत्र 'विस्रं' गुणवाला होता हैं।
(अ) हारिद्रमेह (ब) मंजिष्ठामेह (स) रक्तमेह (द) ब, स दोनों

(123) चरक ने कौनसा प्रमेह नहीं माना हैं।
(अ) नीलमेह (ब) क्षारमेह (स) कालमेह (द) अम्लमेह

(124) सुरामेह, पिष्टमेह, फेनमेह, लवणमेह का वर्णन किस आचार्य ने किया हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) माधव

(125) सर्पिमेह का वर्णन किस आचार्य ने किया हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) भेल (द) हारीत

(126) भस्ममेह का वर्णन किस आचार्य ने किया हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) भेल (द) हारीत

(127) तक्रप्रमेह, घृतप्रमेह, खटिका प्रमेह का वर्णन किस आचार्य ने किया हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) भेल (द) हारीत

(128) चरकोक्त शुक्लमेह सम सुश्रुत कौनसा प्रमेह माना हैं।
(अ) सुरामेह (ब) पिष्टमेह (स) लवणमेह (द) फेनमेह

(129) चरकोक्त सान्द्रप्रसादमेह को से सुश्रुत ने कहा हैं।
(अ) सुरामेह (ब) पिष्टमेह (स) लवणमेह (द) फेनमेह

(130) मधुमेह के 2 भेद किस आचार्य ने बतलाए हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) माधव

(131) प्रमेह का पूर्वरूप हैं।
(अ) जटिली भावं केशेषु (ब) करपादयोः सुप्ततादाहौ (स) मुखतालुकण्ठशोष (द) उपर्युक्त सभी

(132) प्रमेह के संदर्भ में कौनसा कथन सही नहीं हैं।
(अ) सभी प्रमेह त्रिदोष प्रकोप के कारण होते हैं। (ब) मधुमेह के 2 भेद अष्टांग हृदय में बतलाए हैं।
(स) चरकानुसार कृच्छ्रपूर्वक मूत्रत्याग शनैमेह में होता है। (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(133) वातिक प्रमेह क्यों असाध्य होता हैं।
(अ) संसृष्टदोष मेदः स्थानत्वात् (ब) विरूद्धोपक्रमत्वात
(स) महात्ययिकत्वाद् \ (द) महात्ययिकत्वाद, विरूद्धोपक्रमत्वात्

(134) कफज प्रमेह के साध्य होने का कारण हैं।
(अ) समानगुण मेदः स्थानकत्वात् (ब) कफस्य प्राधान्यात्
(स) समक्रियत्वात् (द) उपर्युक्त सभी

(135) महात्ययिकत्वादिति मज्जप्रभृतिसारभूतधातुक्षयकरत्वात्। – ऐसा किस आचार्य ने कहा है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(136) चरक ने 'नीडद्रुममिवाण्डज' उदाहरण किस रोग के लिए कहा है।
(अ) मेदोरोग (ब) स्थौल्य (स) प्रमेह (द) कुष्ठ

(137) प्रमेह के उपद्रव होते है।
(अ) 9 (ब) 10 (स) 11 (द) 12

(138) प्रमेह का उपद्रव नहीं है।
(अ) तृष्णा, दाह (ब) ज्वर, अतिसार (स) अरोचक, अविपाक (द) ग्रन्थि, स्थौल्य

(139) "एवं कुष्ठं समुत्पन्नं त्वचि कालप्रकर्शतः। क्रमेण धातून व्याप्नोति।" –
अर्थात् कुष्ठ में सर्वप्रथम त्वचा फिर लसीका, रक्त, मांस आदि क्रम से दूषित होते है – ऐसा किस आचार्य ने कहा है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(140) कुष्ठ के दूष्य है ?
(अ) 7 (ब) 11 (स) 18 (द) 4

AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING
NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

(141) कुष्ठ के संदर्भ में कौनसा कथन सहीं हैं।

(अ) सभी कुष्ठ त्रिदोषज होते हैं (ब) त्वक्, रक्त, मांस और लसीका कुष्ठ के दूष्य हैं

(स) चरकानुसार कुष्ठ के सप्त, एकादश और असंख्य भेद है (द) उपर्युक्त सभी

(142) चरकानुसार कुष्ठ के भेद है।

(अ) सप्त (ब) अष्टदश (स) असंख्य (द) उपर्युक्त सभी

(143) चरक संहिता में 'महाकुष्ठ' के लक्षणों का वर्णन किस स्थान में है।

(अ) सूत्र स्थान (ब) निदान स्थान (स) चिकित्सा स्थान (द) ब, स दोनों

(144) चरक संहिता में 'क्षुद्रकुष्ठ' के लक्षणों का वर्णन किस स्थान में है।

(अ) सूत्र स्थान (ब) निदान स्थान (स) चिकित्सा स्थान (द) ब, स दोनों

(145) मण्डल कुष्ठ में कौनसा दोष होता है।

(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(146) पुण्डरीक कुष्ठ में कौनसा दोष होता है।

(अ) वातपित्तज (ब) वातकफज (स) कफपित्तज (द) त्रिदोषज

(147) कुष्ठ का पूर्वरूप हैं।

(अ) अस्वेदमतिस्वेदनं (ब) सुप्तता, परिदाह (स) परिहर्ष, लोमहर्ष (द) उपर्युक्त सभी

(148) निम्न में से किस कुष्ठ में कृमि पाये जाते है।

(अ) कपाल (ब) उदुम्बर (स) मण्डल (द) उपर्युक्त सभी

(149) बहुक्लेदकण्डूक्रिमीणि। – किस कुष्ठ का लक्षण है।

(अ) कपाल (ब) उदुम्बर (स) मण्डल (द) पुण्डरीक

(150) बहुबहलपूयक्तलसीकानि। – किस कुष्ठ का लक्षण है।

(अ) कपाल (ब) उदुम्बर (स) मण्डल (द) पुण्डरीक

(151) बहुबहलरक्तपूयलसीकानि। – किस कुष्ठ का लक्षण है।

(अ) कपाल (ब) उदुम्बर (स) मण्डल (द) पुण्डरीक

(152) कौनसा कुष्ठ असाध्य होता है।

(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(153) कुष्ठ के उपद्रव होते है।

(अ) 9 (ब) 10 (स) 11 (द) 12

(154) कुष्ठ का उपद्रव नहीं है।

(अ) तृष्णा, दाह (ब) ज्वर, अतिसार (स) अरोचक, अविपाक (द) विद्रधि, विसर्प

(155) पतनान्यगंवयवानां कुष्ठ का .... है।

(अ) कुष्ठ का पूर्वरूप (ब) कुष्ठ का लक्षण (स) कुष्ठ का उपद्रव (द) उपर्युक्त सभी

(156) संशोषणाद्रसादीनां शोष इत्यभिधीयते। – किस आचार्य का कथन है।

(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(157) शोष के आयतन होते है।

(अ) 4 (ब) 5 (स) 7 (द) 11

(158) चरकानुसार शोष के चार आयतन है ?

(अ) साहस, सन्धारण, क्षय, विषमाशन (ब) अयथाबलमारम्भ, वेगसन्धारण, क्षय, विषमाशन

(स) आघात, वेगप्रतिघात, क्षय, विषमाशन (द) साहस, वेगसंरोध, शुक्रौजःस्नेहसंक्षय, अन्नपानविधित्याग

(159) चरकानुसार यक्ष्मा के चार कारण है ?

(अ) साहस, सन्धारण, क्षय, विषमाशन (ब) अयथाबलमारम्भ, वेगसन्धारण, क्षय, विषमाशन

(स) आघात, वेगप्रतिघात, क्षय, विषमाशन (द) साहस, वेगसंरोध, शुक्रौजःस्नेहसंक्षय, अन्नपानविधित्याग

(160) सुश्रुतानुसार शोष के हेतु है ?

(अ) साहस, सन्धारण, क्षय, विषमाशन (ब) अयथाबलमारम्भ, वेगसन्धारण, क्षय, विषमाशन

(स) आघात, वेगप्रतिघात, क्षय, विषमाशन (द) साहस, वेगसंरोध, शुक्रौजःस्नेहसंक्षय, अन्नपानविधित्याग

(161) अष्टांग हृदयाकार अनुसार राजयक्ष्मा के चार निदान है ?

(अ) साहस, सन्धारण, क्षय, विषमाशन (ब) अयथाबलमारम्भ, वेगसन्धारण, क्षय, विषमाशन

(स) आघात, वेगप्रतिघात, क्षय, विषमाशन (द) साहस, वेगसंरोध, शुक्रौजःस्नेहसंक्षय, अन्नपानविधित्याग

(162) अष्टांग हृदयाकार अनुसार राजयक्ष्मा का एक निदान है ?

(अ) क्षय (ब) धातुक्षय (स) शुक्रक्षय (द) शुक्रौजःस्नेहसंक्षय

(163) 'योगक्षेमकरेषु प्रयतेत विशेषेण:' – का उल्लेख कौनसे आयतन जन्य शोष में है।
(अ) साहस जन्य (ब) सन्धारण जन्य (स) क्षय जन्य (द) विषमाशन जन्य

(164) राजयक्ष्मा के चार आयतनों से कौनसा दोष प्रकुपित होता है ?
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) उपर्युक्त सभी

(165) आहार का परम धाम होता है।
(अ) शुक्र (ब) ओज (स) रसधातु (द) रक्त

(166) आहार का परम धाम शुक्र ही है – ऐसा किस आचार्य ने कहा है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(167) सर्वमन्यत्परित्यज्य शरीरमनुपालयेत्। तदभावे हि भवानां सर्वाभावः शरीरिणाम्।। – का उल्लेख कहाँ मिलता है।
(अ) राजयक्ष्मा निदान (ब) ज्वर निदान (स) रक्तपित्त निदान (द) कुष्ठ निदान

(168) राजयक्ष्मा से पीडित व्यक्ति के.......................की रक्षा प्रयत्नपूर्वक करना चाहिए
(अ) अग्नि (ब) रस धातु (स) सर्वाग (द) पुरीष

(169) चरकानुसार राजयक्ष्मा का त्रिरूप नहीं है।
(अ) अंसपार्श्वाभिताप (ब) सन्तापः करपादयो (स) सर्वागज्वरः (द) कास

(170) सुश्रुतानुसार राजयक्ष्मा का षड्रूप नहीं है।
(अ) श्वास (ब) स्वरभेद (स) पार्श्वशूल (द) भक्तद्वेष

(171) चरकानुसार राजयक्ष्मा का षड्रूप नहीं है।
(अ) अतिसार (ब) श्वास (स) स्वरभेद (द) ज्वर

(172) चरकानुसार राजयक्ष्मा का एकादश नहीं है।
(अ) श्वास (ब) श्लेष्मछर्दन (स) शोणितष्ठीवन (द) रक्तवमन

(173) 'प्रतिश्याय' किस व्याधि का पूर्वरूप है।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) श्वास (स) कास (द) शिरःशूल

(174) बाह्वोश्च प्रमाणजिज्ञासा अर्थात् अपने हाथों के प्रमाण की जिज्ञासा किस व्याधि का पूर्वरूप है।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) गुल्म (स) प्रमेह (द) कुष्ठ निदान

(175) पाण्योश्चावेक्षणमत्यर्थम् अर्थात् बार बार अपने हाथों को निहारना किस व्याधि का पूर्वरूप है।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) गुल्म (स) प्रमेह (द) कुष्ठ निदान

(176) चरकानुसार उन्माद के भेद है।
(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

(177) उन्मादं पुनः मनोबुद्धिसंज्ञाज्ञानस्मृतिभक्तिशीलचेष्टाचारविभ्रमं विद्यात्। – इसका वर्णन किस ग्रन्थ में है।
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) अष्टांग हृदय (द) अष्टांग संग्रह

(178) 'अर्दिताकृतिकरणं च व्याधे।' – किस व्याधि का पूर्वरूप है।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) अर्दित (स) उन्माद (द) अपस्मार

(179) 'शिरसः शून्यता' – कौनसी व्याधि का पूर्वरूप है।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) अर्दित (स) उन्माद (द) अपस्मार

(180) 'तिलपीडकचक्राधिरोहिणं, वातकुण्डलिकाभि चोन्मथनं।' – किस व्याधि का लक्षण है।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) अपस्मार (स) उन्माद (द) कोई नहीं

(181) निम्नलिखित में से किस रोग 'स्मृति का नाश' यह लक्षण देखेने को नहीं मिलता हैं।
(अ) उन्माद (ब) अपस्मार (स) प्रज्ञापराध (द) अतत्वाभिनिवेश

(182) 'श्वयथुराननेे' कौनसे उन्माद का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) आगन्तुज

(183) 'सतत लोमहर्ष' किसका पूर्वरूप है।
(अ) वातज ज्वर (ब) कुष्ठ (स) उन्माद (द) अपस्मार

(184) 'कार्श्य' कौनसे उन्माद का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) आगन्तुज

(185) भूतोन्माद के कारण के कितने कारण होते है।
(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

(186) किस आचार्य ने आगन्तुज उन्माद का कारण प्रज्ञापराध माना है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(187) चरक ने अपस्मार के कितने भेद माने है।
(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

AYURVEDA NEELIMA SINGH ENTRANCE COACHING CENTRE

(188) .... पुनः स्मृतिबुद्धिसत्वसम्प्लवाद् बीभत्स चेष्टमावस्थिकं तमः प्रवेशमाचक्षते।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) मद (स) उन्माद (द) अपस्मार

(189) "अभीक्ष्णं स्वप्ने च मद–नर्तन व्यधन वेपन पतनादीनीति". – किस रोग का पूर्वरूप है।
(अ) अनिद्रा (ब) प्रमीलक (स) उन्माद (द) अपस्मार

(190) निम्न में से कौनसा एक मनोवह स्रोतस का रोग नहीं है।
(अ) उन्माद (ब) अपस्मार (स) संन्यास (द) विषाद

(191) 'अवकूजन्तम्' कौनसे अपस्मार का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(192) 'तीक्ष्ण संशोधन एंव उपशमन' किसकी चिकित्सा है।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) कुष्ठ (स) उन्माद (द) अपस्मार

(193) 'रक्तपित्त' किस व्याधि का निदानार्थकर रोग है।
(अ) कास (ब) ज्वर (स) शोथ (द) क्षय

(194) 'अर्श' किस व्याधि का निदानार्थकर रोग है।
(अ) उदर रोग (ब) गुल्म (स) दोनों का (द) ग्रहणी

(195) प्लीहाभिवृद्धया जठरं जठरात्............... एव च। अर्शोभ्यो जाठरं दुःखं गुल्मश्चाप्युपजायते।।
(अ) कास (ब) रक्तपित्त (स) शोथ (द) क्षय

(196) यदि कास से क्षय उत्पन्न हो और दोनों रोग एक साथ चले तो इसको क्या कहेंगें ?
(अ) निदानार्थकर रोग (ब) व्याधिसंकर (स) महाव्याधि (द) आशयापकर्ष

(197) दक्षप्रजापति के यज्ञ के विध्वंस के पश्चात प्राणियों के द्वारा हवि के खाने से किस रोग उत्पत्ति हुई।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) कुश्ठ (स) उन्माद (द) अपस्मार

(198) प्लीहाभिवृद्धया जठरं जठराच्छोथ एव च। अर्शोभ्यो .... दुखं गुल्मश्चाप्युपजायते।।
(अ) कासं (ब) जाठरं (स) शोथ (द) क्षय

(199) "व्याधि संकर" का वर्णन सर्वप्रथम किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(200) "क्रिया संकर" का वर्णन सर्वप्रथम किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

Model Test Papers (Answer) – चरक निदान स्थान

1. A	21. A	41. A	61. A	81. D
2. D	22. A	42. A	62. D	82. C
3. B	23. D	43. A	63. A	83. B
4. A	24. B	44. B	64. A	84. C
5. D	25. A	45. D	65. B	85. A
6. B	26. A	46. D	66. B	86. C
7. D	27. B	47. B	67. C	87. A
8. D	28. B	48. D	68. D	88. B
9. C	29. C	49. C	69. D	89. C
10. C	30. D	50. B	70. A	90. D
11. D	31. D	51. D	71. C	91. B
12. B	32. A	52. C	72. B	92. D
13. C	33. A	53. B	73. B	93. A
14. C	34. D	54. D	74. A	94. B
15. C	35. A	55. A	75. C	95. C
16. C	36. D	56. D	76. B	96. D
17. B	37. D	57. A	77. C	97. D
18. C	38. A	58. A	78. A	98. D
19. D	39. B	59. A	79. C	99. D
20. C	40. A	60. C	80. D	100. C

101. B	121. D	141. D	161. D	181. D
102. A	122. D	142. D	162. D	182. C
103. D	123. D	143. D	163. B	183. C
104. C	124. B	144. C	164. D	184. A
105. C	125. B	145. C	165. A	185. A
106. D	126. C	146. C	166. A	186. A
107. A	127. D	147. D	167. A	187. B
108. C	128. B	148. D	168. D	188. D
109. A	129. A	149. C	169. D	189. D
110. B	130. C	150. B	170. C	190. C
111. D	131. D	151. D	171. B	191. B
112. D	132. D	152. D	172. D	192. D
113. C	133. D	153. B	173. A	193. B
114. D	134. D	154. D	174. A	194. C
115. B	135. D	155. C	175. A	195. C
116. C	136. C	156. B	176. C	196. A
117. C	137. C	157. A	177. A	197. C
118. C	138. D	158. A	178. C	198. B
119. A	139. B	159. B	179. C	199. A
120. B	140. D	160. C	180. C	200. B

AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER BHOPAL
BY- DR. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

Shyam-Vidhya Ayurved P.G. Entrance Coaching Center, Bhopal (M.P.)

Model Test Papers – चरक विमान स्थान

By- Dr. Neelima Singh Lodhi (M.D.) Mob. 09300961664, 09993961427

(1) चरक संहिता का 'मान स्थान' कहलाता है।
(अ) सूत्र स्थान (ब) शारीर स्थान (स) कल्प स्थान (द) विमान स्थान

(2) पित्तं जनयन्ति रस है।
(अ) मधुर, अम्ल, लवण (ब) कटु, अम्ल, लवण (स) कटु, तिक्त, कषाय (द) मधुर, तिक्त, कषाय

(3) श्लेष्माणं शमयन्ति है।
(अ) मधुर, अम्ल, लवण (ब) कटु, अम्ल, लवण (स) कटु, तिक्त, कषाय (द) मधुर, तिक्त, कषाय

(4) चरक संहिता के विमान स्थान में निम्न में से किसका उल्लेख आया हैं।
(अ) प्रकृतिसमसमवेत (ब) विकृतिविषमसमवेत (स) समान प्रत्यारब्ध (द) विचित्र प्रत्यारब्ध

(5) प्रकृतिसमसमवेत और विकृतिविषमसमवेत का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) भेल (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(6) सतत अभ्यस्यमानम् द्रव्य हैं ?
(अ) तैल, सर्पि, मधु (ब) पयः, सर्पि, सलिल (स) पिप्पली, क्षार, लवण (द) पिप्पली, शुण्ठी, मरिच

(7) चरकानुसार किस द्रव्य का अधिक मात्रा में प्रयोग नहीं करना चाहिए।
(अ) पिप्पली (ब) क्षार (स) लवण (द) उपर्युक्त सभी

(8) पिप्पली का विपाक होता है ?
(अ) मधुर (ब) अम्ल (स) कटु (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(9) पिप्पली है ?
(अ) प्रक्लेदि (ब) उपक्लेदी (स) क्लेदी (द) क्लेदवाहिनी

(10) चरक ने 'योगवाहि' संज्ञा किसे प्रदान की है।
(अ) वायु (ब) मधु (स) पिप्पली (द) उपर्युक्त सभी

(11) चरकानुसार "आपातभद्रा" है।
(अ) पिप्पली (ब) क्षार (स) लवण (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(12) "कटुभद्रा" किसका पर्याय है।
(अ) पिप्पली (ब) क्षार (स) लवण (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(13) चरकानुसार "आपातभद्रं" है।
(अ) पिप्पली (ब) क्षार (स) लवण (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(14) 'केश अक्षि हृदय पुंस्त्वोघातकरः' है।
(अ) पिप्पली (ब) क्षार (स) लवण (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(15) किसका अधिक प्रयोग से लोग खालित्य, पालित्य, इन्द्रलुप्त और अकाल मे वलय रोगो से ग्रसित हो जाते हैं।
(अ) पिप्पली (ब) क्षार (स) लवण (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(16) किस देश के निवासी क्षार का अधिक सेवन करते है।
(अ) प्राच्य (ब) चीन (स) प्राच्य और चीन (द) वाह्लीक

(17) किस देश के निवासी दूध के साथ नमक खाते है।
(अ) सौराष्ट्र (ब) सिन्धु (स) सौवीरक (द) उपर्युक्त सभी

(18) चरकानुसार लवण होता है।
(अ) प्रक्लेदी (ब) उपक्लेदी (स) क्लेदी (द) क्लेदवाही

(19) पचन दहन भेदनार्थम् उपयुच्यते। – किसका गुण है ?
(अ) पिप्पली (ब) क्षार (स) लवण (द) उपर्युक्त सभी

(20) चरकानुसार सात्म्य किसका पर्याय है।
(अ) पथ्य (ब) अपथ्य (स) उपशय (द) अनुपशय

(21) चरकानुसार सात्म्य के भेद होते है।
(अ) त्रिविध (ब) चर्तुविध (स) सप्तविध (द) उपर्युक्त सभी

(22) 'अष्टविध आहारविशेषायतन' का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(23) 'सप्ताहार कल्पना' का वर्णन किस ग्रन्थ में है।
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) अष्टांग संग्रह (द) अष्टांग हृदय

(24) चरकोक्त 'अष्टविध आहारविशेषायतन' में शामिल नहीं है।
(अ) उपयोग संस्था (ब) उपयोक्ता (स) उपयोगव्यवस्था (द) उपर्युक्त सभी

(25) सर्वग्रह और परिग्रह – किसके भेद है।
(अ) मात्रा (ब) राशि (स) ग्रहरोग (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(26) 'नित्यग' के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौनसा कथन सही हैं ?
(अ) 'नित्यग' आयु का पर्याय है (ब) 'नित्यग' काल का भेद है
(स) दोनों (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

(27) चरकानुसार कौनसा काल 'ऋतुसात्म्य' की अपेक्षा रखता है
(अ) नित्यग (ब) आवस्थिक (स) वर्तमान (द) भूतकाल

(28) आहार उपयोग करने के नियम किसके अंर्तगत आते है।
(अ) उपयोग संस्था (ब) उपयोक्ता (स) उपयोगव्यवस्था (द) उपरोक्त कोई नहीं

(29) चरकानुसार 'ओकसात्म्य' किसके अधीन रहता है।
(अ) उपयोग संस्था (ब) उपयोक्ता (स) उपयोगव्यवस्था (द) उपभोक्ता

(30) 'क्षिप्रं जरा गच्छति' – किसका गुण है।
(अ) स्निग्ध आहार (ब) उष्ण आहार (स) मात्रावत् आहार (द) अ, ब दोनों

(31) आचार्य चरक ने कुक्षि में मूर्त आहार विकारों के कितना स्थान बतलाया है।
(अ) एकं अवकाशांश (ब) द्वि अवकाशांश (स) तृतीय अवकाशांश (द) चतुर्थ अवकाशांश

(32) कुक्षि के 4 प्रभाग किस आचार्य ने बतुलाए है।
(अ) काश्यप (ब) अष्टांग संग्रह (स) अष्टांग हृदय (द) उपर्युक्त सभी

(33) 'सर्वदोष प्रकोपण' है ?
(अ) आहार की अतिमात्रा (ब) प्रज्ञापराध (स) सामुद्र जल (द) उपर्युक्त सभी

(34) तं द्विविधं आमप्रदोषमाचक्षते भिषजः – विसूचिकाम् .... च।
(अ) अलसकं (ब) दण्डालसकं (स) विलमबिकां (द) आमाजीर्ण

(35) 'विलम्बिका' का किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(36) प्रयाति नोर्ध्व नाधस्तादाहारो न च पच्यते। आमाशयेऽलसीभूतस्तेन सोऽलसकः स्मृतः। – किस आचार्य का कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(37) चरकानुसार विषसदृश लक्षण वाला, परम असाध्य, आशुकारि और विरुद्धचिकित्सीय होता है।
(अ) अलसक (ब) दण्डालसक (स) विसूचिका (द) आमदोष

(38) उर्ध्व और अधः मार्ग से आमदोष का प्रवृत्त होना किसका लक्षण है।
(अ) अलसक (ब) दण्डालसक (स) विसूचिका (द) आमदोष

(39) लंघनमेवाग्रे – किसकी चिकित्सा है।
(अ) अलसक (ब) दण्डालसक (स) विसूचिका (द) आमदोष

(40) सर्वप्रथम 'सलवणमुष्ण जल से उल्लेखन' – किसकी चिकित्सा है।
(अ) अलसक (ब) दण्डालसक (स) विसूचिका (द) आमदोष

(41) चरक संहिता में आमाशय का वर्णन किस स्थान में मिलता है।
(अ) सूत्रस्थान (ब) विमान स्थान (स) चिकित्सा स्थान (द) शारीर स्थान

(42) नाभिस्तनान्तरं जन्तोरामशय इति स्मृतः। अशितं खादितं पीतं .... चात्र विपच्यते।
(अ) लीढं (ब) लेह्यं (स) भक्ष्यं (द) चर्व्यम्

(43) जनपदोद्ध्वंस को 'मरक' की संज्ञा किस आचार्य ने दी है।
(अ) भेल (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(44) जनपदोद्ध्वंस को 'जनमार' की संज्ञा किस आचार्य ने दी है।
(अ) भेल (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(45) जनपदोद्ध्वंस में कितने भाव विकृत होते है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 7 (द) 8

(46) जनपदोद्ध्वंस सभी चार भावों में सबसे दुष्परिहार्य भाव कौनसा है।
(अ) उदक (ब) वायु (स) देश (द) काल

(47) जनपदोध्वंस के भावों का दुष्परिहार्यता गरीयसी क्रम है।
(अ) वायु → जल → देश → काल (ब) काल → देश → जल → वायु
(स) जल → वायु → देश → काल (द) काल → देश → वायु → जल

(48) जनपदोद्ध्वंस का मुख्य कारण है।
(अ) मिथ्या आहार विहार (ब) ग्रहबाधा (स) अधर्म (द) पाप

(49) जनपदोध्वंस के भावों में 'धूम्रपवन' किसका लक्षण है।
(अ) विकृत जल (ब) विकृत वायु (स) विकृत देश (द) विकृत काल

(50) सुनामी लहर का मुख्य कारण होता है।
(अ) विकृत जल (ब) विकृत वायु (स) विकृत देश (द) विकृत काल

(51) कर्म पंचविधं तेषां भेषजं परमुच्यते। – किसके संदर्भ में कहा गया कथन है।
(अ) कुष्ठ (ब) उरूस्तंभ (स) प्रज्ञापराध (द) जनपदोद्ध्वंस

(52) 'युगे युगे धर्मपादः क्रमेणानेन हीयते। गुणपादश्च भूतानामेवं .... प्रलीयतें।
(अ) संवत्सर (ब) लोकः (स) धर्मपाद (द) दैव

(53) त्रेतायुग के मनुष्य की आयु –
(अ) 400 वर्ष (ब) 300 वर्ष (स) 200 वर्ष (द) 100 वर्ष

(54) चरकानुसार कर्म के भेद होते है।
(अ) द्विविध (ब) त्रिविध (स) पञ्चविध (द) ब, स दोनों

(55) पूर्वजन्म के शरीर द्वारा किये गए कर्म कहलाते है।
(अ) दैव (ब) पुरूषकार (स) दोनों (द) भाग्य

(56) चरकानुसार अपर्तपण के भेद है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

(57) चरकानुसार संपर्तपण के भेद है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

(58) "बहुदोष" में कौनसे अवतर्पण से चिकित्सा की जाती है।
(अ) लघनं (ब) लघनं पाचनं (स) दोषावसेचनं (द) उपर्युक्त सभी

(59) ह्यग्निमारूत वृद्धया – कौनसे अवतर्पण का गुण है।
(अ) लघनं (ब) लघनं पाचनं (स) दोषावसेचनं (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(60) चरकानुसार देश के भेद है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

(61) चरकानुसार रोगविशेष विज्ञान के साधन है।
(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) अ, ब दोनों

(62) तत्र आप्तोपदेश नाम आप्तवचनम् – किस आचार्य का कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वैशेषिक दर्शन (द) तर्कसंग्रह

(63) ह्यवितर्कस्मृतिविभाग विदो। – किसका गुण है।
(अ) गुरू (ब) शिष्य (स) आप्त जन (द) वैद्य

(64) .... खलु तर्को युक्त्यपेक्षः।
(अ) प्रत्यक्षं (ब) आप्तोपदेश (स) अनुमानं (द) युक्ति

(65) त्रिविध ज्ञान साधनों में सबसे पहले किसके द्वारा ज्ञान करना चाहिए।
(अ) प्रत्यक्ष (ब) आप्तोपदेश (स) अनुमान (द) युक्ति

(66) न हि ज्ञानावयवेन् कृत्स्ने ज्ञेये ज्ञानमुत्पद्यते। – उक्त सूत्र का वर्णन कहाँ मिलता है।
(अ) चरक सूत्रस्थान (ब) चरक विमानस्थान (स) चरक इन्द्रियस्थान (द) चरक सिद्धिस्थान

(67) रोग का कारण, लक्षण, स्थान, वेदना और रूप का ज्ञान किस प्रमाण करना चाहिए।
(अ) प्रत्यक्ष (ब) आप्तोपदेश (स) अनुमान (द) युक्ति

(68) अनुमान ज्ञेय भाव 'सुख दुखः' का अनुमान होता है।
(अ) व्याधि से (ब) गूढव्याधि से (स) वेदना से (द) आतुर प्रश्न से

(69) मनोऽर्थ का अनुमान होता है।
(अ) अमल से (ब) रज से (स) धृति से (द) व्यभिचरण से

(70) 'ह्रियम्' का अनुमान होता है।
(अ) अपत्रपणेन (ब) असात्म्य से (स) अवस्थान से (द) आतुर प्रश्न से

(71) अनुमान ज्ञेय भाव 'मेधा' का अनुमान किससे होता है।
(अ) ग्रहण (ब) नाम ग्रहण (स) संज्ञा धारण (द) धारण

(72) अनुमान ज्ञेय भाव 'क्रोध' का अनुमान किससे होता है।
(अ) ईर्ष्या से (ब) द्वेष से (स) अमर्ष से (द) अभिद्रोह से

AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER
BY DR. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

(73) 'दोष प्रमाण' का अनुमान किससे होता है।
(अ) अपचार से (ब) अनुपशय से (स) अवस्थान से (द) आतुर प्रश्न से

(74) "गूढलिङ्गव्याधि" का अनुमान किससे होता है।
(अ) उपशय से (ब) अनुपशय से (स) उपशय अनुपशय से (द) वेदना विशेष से

(75) 'अग्नि' का अनुमान किससे होता है।
(अ) जरण शक्ति से (ब) अभ्यवहरण शक्ति से (स) दोनों से (द) कोई नहीं

(76) 'आहार शक्ति' की परीक्षा किससे होती है।
(अ) जरण शक्ति से (ब) अभ्यवहरण शक्ति से (स) दोनों से (द) कोई नहीं

(77) किस आचार्य ने पुरूष को 'स्रोत्रस्' का समुदाय कहा है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) शांगर्धर (द) भावप्रकाश

(78) चरकानुसार 'स्रोत्रस्' है।
(अ) शरीरच्छिद्र (ब) सिरा (स) नाडी (द) उपर्युक्त सभी

(79) 'निकेत' किसका पर्याय है।
(अ) स्रोत्रस् (ब) सिरा (स) नाडी (द) धमनी

(80) स्रोत्रस् का पर्याय नहीं है।
(अ) कोष्ठ (ब) आशय (स) रसवाहिनी (द) रसायनी

(81) सुश्रुतानुसार योगवह स्रोत्रस् की संख्या है।
(अ) 11 (ब) 13 (स) 14 (द) कोई नहीं

(82) "स्तन्यवह स्रोतस्" का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) शारंगर्धर (द) भावप्रकाश

(83) "आर्तवह स्रोतस" का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) दोनों ने (द) शारंग्गर्धर

(84) आचार्य सुश्रुत ने कौनसे स्रोतस का वर्णन नहीं किया है।
(अ) अस्थिवह (ब) मज्जावह (स) स्वेदवह (द) उपर्युक्त सभी

(85) चरकानुसार शुक्रवह स्रोत्रस् का मूल है।
(अ) मूत्रेन्द्रिय, वृषण (ब) स्तन्य, वृषण (स) मेढ्र, स्तन्य (द) वृषण, शुक्रवाहिनियॉ

(86) चरकानुसार मेदवह स्रोत्रस् का मूल है।
(अ) मेद, त्वचा (ब) स्नायुमूल, त्वचा (स) वसा, त्वचा (द) वृक्क, वपावहन

(87) 'मेद' कौनसे स्रोत्रस् का मूल होता है।
(अ) मेदवह (ब) अस्थिवह (स) स्वेदवह (द) ब, स दोनों

(88) विरूद्धाहार सेवन से कौन सा स्रोत्रस् दुष्ट होता है।
(अ) अन्नवह (ब) रसवह (स) मज्जावह (द) रक्तवह

(89) भुक्त्वा च स्वपतां दिवा। – से कौनसा स्रोत्रस् दुष्ट होता है।
(अ) मांसवह (ब) मज्जावह (स) अस्थिवह (द) मेदवह

(90) अतिविद्यट्टनात – से कौनसा स्रोत्रस् दुष्ट होता है।
(अ) मांसवह (ब) मज्जावह (स) अस्थिवह (द) रक्तवह

(91) अतिसंक्षोभ – से कौनसा स्रोत्रस् दुष्ट होता है।
(अ) मांसवह (ब) मज्जावह (स) अस्थिवह (द) रक्तवह

(92) आमदोष से कौन सा स्रोत्रस् दुष्ट होता है।
(अ) अन्नवह (ब) रसवह (स) उदकवह (द) मलवह

(93) 'व्यायाम न करने से' किस स्रोत्रस् दुष्ट हो सकते है।
(अ) प्राणवह (ब) अस्थिवह (स) स्वेदवह (द) मेदवह

(94) शस्त्र, क्षार और अग्नि का प्रयोग करने से कौनसे स्रोत्रस् दुष्ट होता है।
(अ) मांसवह (ब) मेदवह (स) अस्थिवह (द) शुक्रवह

(95) चरकानुसार अन्नवह स्रोत्रोदुष्टि का लक्षण नहीं है।
(अ) अतिमात्रा भोजन (ब) अकाल भोजन (स) अहित भोजन (द) अध्यसन

(96) गर्भपात, गर्भस्राव – कौनसे स्रोत्रस् दुष्टता का लक्षण है।
(अ) आर्तवह स्रोत्रस् (ब) शुक्रवह स्रोत्रस् (स) मूत्रवह स्रोत्रस् (द) रसवह स्रोत्रस्

(97) चरकानुसार स्रोत्रोदुष्टि का लक्षण नहीं है।
(अ) अतिप्रवृत्ति (ब) विमार्गगमन (स) संग (द) मर्म ग्रन्थि

VAIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER
Dr. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

(98) मूत्रवह स्रोत्रस् की विकृति में किसके समान चिकित्सा की जाती है।
(अ) मूत्राघात (ब) मूत्रकृच्छ्र (स) वस्ति रोग (द) अश्मरी

(99) अन्नवह स्रोतस् की विकृति में किसके समान चिकित्सा की जाती है।
(अ) वमन (ब) लंघन (स) आमदोष सम (द) लंघन, आमदोष

(100) मलवह स्रोत्रस् की विकृति में किसके समान चिकित्सा की जाती है।
(अ) अतिसार (ब) प्रवाहिका (स) ग्रहणी (द) उपर्युक्त सभी

(101) 'रोगानीक' शब्द का क्या अर्थ है ?
(अ) रोगों के भेद (ब) रोगों के समूह (स) रोगों के आश्रय (द) रोगों के कारण

(102) रोग के 'स्वधातुवैषम्य एवं आगन्तुज भेद' किस आधार पर किए गए है।
(अ) प्रभाव भेद (ब) विधि भेद (स) निमित्त भेद (द) दोष भेद

(103) "भेत्ता हि भेद्यमन्यथा भिनत्ति"– उक्त सूत्र चरक संहिता के स्थान में वर्णित है।
(अ) च. सू. 19/31 (ब) च. वि. 6/4 (स) च. इ. 1/18 (द) च. शा. 7/12

(104) 'आतंक' किसका पर्याय है।
(अ) दोष (ब) व्याधि (स) दोनों का (द) विष

(105) मानस विकार है ?
(अ) रज (ब) तम (स) दोनों (द) ईर्ष्या

(106) वातपित्तश्लेष्माणस्तु खलु शारीरा दोषाः। – किस आचार्य का कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(107) स्वतन्त्रो व्यक्तलिंगों यथोक्तसमुत्थानप्रशमो भवति ....।
(अ) अनुबन्धः (ब) अनुबन्ध्यः (स) दोशप्रकृतिः (द) विकारः

(108) अनुबन्ध्य व अनुबन्ध – किसके भेद है।
(अ) दोष (ब) व्याधि (स) दोनों के (द) हेतु

(109) स्वतंत्र एवं व्यक्त लक्षणों वाला होता है ?
(अ) अनुबन्ध्य (ब) अनुबन्ध (स) दोनों (द) कोई नहीं

(110) चरक में अग्नि के भेदों का वर्णन किस अध्याय में है ?
(अ) अन्नपान विधि (ब) रोगानिक विमान (स) रसविमान (द) ग्रहणी चिकित्सा

(111) पित्त दोष से अभिभूत अग्नि होती है।
(अ) विषमाग्नि (ब) तीक्ष्णाग्नि (स) मन्दाग्नि (द) समाग्नि

(112) 'सर्वापचार सहः' कौनसी अग्नि के लिए कहा गया है।
(अ) विषमाग्नि (ब) तीक्ष्णाग्नि (स) मन्दाग्नि (द) समाग्नि

(113) 'सुरासव विधान' कौनसे दोष की चिकित्सा है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) उपर्युक्त सभी

(114) 'दीर्घकालिक तीक्ष्ण मद्य का सेवन' कौनसे दोष की चिकित्सा है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) उपर्युक्त सभी

(115) 'वित्रासन, विस्मापन और विस्मारण' कौनसे दोष की चिकित्सा है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) उपर्युक्त सभी

(116) 'उन्मर्दन' कौनसे दोष की चिकित्सा है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) उपर्युक्त सभी

(117) 'उत्सादन' कौनसे दोष की चिकित्सा है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) उपर्युक्त सभी

(118) 'सुखशीलता' कौनसे दोष की चिकित्सा है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) उपर्युक्त सभी

(119) 'सुखप्रतिषेध' कौनसे दोष की चिकित्सा है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) उपर्युक्त सभी

(120) 'जागरण' कौनसे दोष की चिकित्सा है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) उपर्युक्त सभी

(121) अभ्युदय श्रवण का प्रयोग किस उपक्रप में बतलाया गया है।
(अ) वातोपक्रम (ब) पित्तोपक्रम (स) कफोपक्रम (द) उपर्युक्त सभी

(122) 'धूम्रपान' का प्रयोग किस उपक्रप में बतलाया गया है।
(अ) वातोपक्रम (ब) पित्तोपक्रम (स) कफोपक्रम (द) उपर्युक्त सभी

(123) चरक संहिता में कृमियों का वर्णन किस अध्याय में मिलता है।
(अ) व्याधिरूपीय (ब) रोगभिषग्जितीय (स) त्रिविधरोग आयतन (द) रसविमान

(124) चरक संहिता में गुरूव्याधित और लघुव्याधित पुरूशों का वर्णन किस अध्याय में है।
(अ) व्याधिरूपीय (ब) रोगभिषग्जितीय (स) त्रिविधरोग आयतन (द) रसविमान

(125) 'कुष्ठैः समानं समुत्थानम्' – किसके लिए कहा गया है।
(अ) बाह्य कृमि (ब) शोणितज कृमि (स) श्लेष्मज कृमि (द) पुरीषज कृमि

(126) 'ताम्र वर्ण' का कृमि है।
(अ) बाह्य कृमि (ब) रक्तज कृमि (स) श्लेष्मज कृमि (द) पुरीषज कृमि

(127) कोठ, कण्डू, पिडका उत्पन्न करने वाले कृमि है।
(अ) बाह्य कृमि (ब) रक्तज कृमि (स) श्लेष्मज कृमि (द) पुरीषज कृमि

(128) 'सौसुराद' है।
(अ) बाह्य कृमि (ब) रक्तज कृमि (स) श्लेष्मज कृमि (द) पुरीषज कृमि

(129) 'सौरस' है।
(अ) बाह्य कृमि (ब) रक्तज कृमि (स) श्लेष्मज कृमि (द) पुरीषज कृमि

(130) 'हृदयाद' है।
(अ) बाह्य कृमि (ब) रक्तज कृमि (स) श्लेष्मज कृमि (द) पुरीषज कृमि

(131) सूची–I को सूची–II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

सूची – I	सूची – II
A. पिप्पलिका	1. बाह्य कृमि
B. जन्तुमाता	2. रक्तज कृमि
C. महागुद	3. श्लेष्मज कृमि
D. लेलिह	4. पुरीषज कृमि

कूट :–

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	4	2	3	1	(b)	1	2	3	4
(c)	2	3	1	4	(d)	4	3	1	2

(132) 'औदुम्बर' का कृमि है।
(अ) बाह्य कृमि (ब) रक्तज कृमि (स) श्लेष्मज कृमि (द) पुरीषज कृमि

(133) सहज किसका भेद नहीं हैं।
(अ) कृमि (ब) अर्श (स) कुष्ठ (द) क्लैव्य

(134) 'कार्श्य' उत्पन्न करने वाले कृमि है।
(अ) पुरीषज कृमि (ब) रक्तज कृमि (स) श्लेष्मज कृमि (द) अ, स दोनों

(135) पाण्डु का कारण होता है।
(अ) **Hook warm** (ब) **Tape warm** (स) मृत्तिकाभक्षण (द) अ, स दोनों

(136) सुश्रुतानुसार कौनसे कृमि अदृश्य होते है।
(अ) बाह्य कृमि (ब) रक्तज कृमि (स) श्लेष्मज कृमि (द) पुरीषज कृमि

(137) 'कृमि' चिकित्सा का सिद्धान्त है।
(अ) अपकर्षण (ब) प्रकृति विघात (स) निदान परिवर्जनम् (द) उपर्युक्त सभी

(138) कृमिनाशक 'विड़ंग घृत' किसने बताया है
(अ) काश्यप (ब) चरक (स) सुश्रुत (द) भावप्रकाश

(139) सभी कृमियों का आद्य उपक्रम है।
(अ) अपकर्षण (ब) निदान परिवर्जन (स) प्रकृति विघात (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(140) चरकानुसार कृमि चिकित्सा में अपकर्षण –आस्थापन, वमन, विरेचन आदि संशोधन कितने दिन में कराने का निर्देश है
(अ) 7 (ब) 15 (स) 1 माह (द) 1 दिन

(141) चरक ने अध्ययन योग्य शास्त्र के कितने गुण बतलाए है।
(अ) 8 (ब) 18 (स) 36 (द) 15

(142) चरकानुसार शास्त्रज्ञान का उपाय नहीं है।
(अ) अध्ययन (ब) अध्यापन (स) तद्विद्य सम्भाषा (द) तदविधाचार्य सेवा

(143) संधाय एंव विग्रह किसके भेद है।
(अ) जल्पक (ब) तद्विद्य संभाषा (स) परिषद (द) कोई नहीं

SHYAM-VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER BHOPAL (M.P.) BY- DR. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

(144) जल्पक के गुण बतलाए गए है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

(145) श्रुतं विज्ञानं धारणं प्रतिमानं वचनशक्तिः – किसके गुण है।
(अ) जल्पक (ब) प्रतिपक्षी (स) परिषद् (द) आप्तजन

(146) चरक मतानुसार गुण के आधार पर विपक्षी के कितने भेद होते है।
(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

(147) सिद्धान्त चतुष्टय है।
(अ) सर्वतंत्र, प्रतितंत्र, अधिकरण, अभ्युपगम् (ब) दृष्टार्थ, अदृष्टार्थ, सत्य, अनृत
(स) अभिधेय, प्रयोजन, संबंध, अधिकारी (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(148) चरक परिषद के कुल कितने भेद बतलाए है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 6

(149) किस परिषद में कभी भी किसी के साथ जल्प/वादविवाद नहीं करना चाहिए।
(अ) सुहत परिषद (ब) उदासीन परिषद (स) प्रतिनिविष्ट परिषद (द) उपर्युक्त सभी

(150) वाद मार्गो की संख्या है।
(अ) 44 (ब) 18 (स) 36 (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(151) अनुमानं नाम तर्को युक्त्यपेक्षः। – उक्त सूत्र का वर्णन कहाँ मिलता है।
(अ) चरक सूत्रस्थान (ब) चरक विमान अ. 4 (स) चरक विमान अ. 8 (द) चरक सिद्धिस्थान

(152) 'यत्र मूर्ख विदुषां बुद्धि यो वर्ण्यं वर्णयति' है।
(अ) हेतु (ब) दृष्टान्त (स) उपनय (द) निगमन

(153) ....नाम यद् वाक्यं वाक्यदोष युक्त तत्।
(अ) उपालम्भ (ब) प्रयोजन (स) अनुयोज्य (द) अननुयोज्य

(154) .... नाम हेतोः दोषवचनं।
(अ) उपालम्भ (ब) प्रयोजन (स) अनुयोज्य (द) अननुयोज्य

(155) जिज्ञासा नाम..........।
(अ) परीक्षा (ब) निश्चय (स) प्रमाण (द) प्रतिज्ञा

(156) व्यवसायो नाम.............।
(अ) परीक्षा (ब) निश्चय (स) अनुयोज्य (द) अननुयोज्य

(157) ....नाम पराजयप्राप्ति।
(अ) निग्रह स्थानं (ब) शक्तिग्रह (स) अर्थप्राप्ति (द) प्रतिज्ञा

(158) चरक ने सिद्धांत के भेद बतलाए है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

(159) "कृत्स्नो हि लोको बुद्धिमताचार्यः शत्रुश्चाबुद्धिमताम्" – उक्त सूत्र चरक संहिता के स्थान में वर्णित है।
(अ) च. सू. 30/24 (ब) च. वि. 6/12 (स) च. वि. 8/14 (द) च. शा. 7/5

(160) आयुर्वेद के पंचमहाभूत और त्रिदोषवाद कौनसे सिद्धान्त के उदाहरण है।
(अ) सर्वतंत्र (ब) प्रतितंत्र (स) अधिकरण (द) अभ्युपगम

(161) द्रव्य–प्रधान, गुण–प्रधान वीर्य–प्रधान उदाहरण है।
(अ) सर्वतंत्रसिद्धान्त (ब) प्रतितंत्र सिद्धान्त (स) अधिकरण सिद्धान्त (द) अभ्युपगम सिद्धान्त

(162) यद्वाक्यं, वाक्यदोषयुक्तं भवति, तत् कथ्यते।
(अ) अनुयोज्यम् (ब) छलम् (स) सव्यभिचारम् (द) अनुयोगः

(163) वादमार्ग पदों में 'जिज्ञासा' पद का क्या अर्थ है।
(अ) इच्छा (ब) निश्चय (स) परीक्षा (द) सन्देहः

(164) यदा 'प्रकृतहेतौ वाच्ये यद्विकृतहेतुमाह' तत् किम्।
(अ) संशय (ब) परिहार (स) हेत्वन्तरम् (द) अर्थान्तरम्

(165) चरक ने 'आयुर्वेदिकसमय' का क्या अर्थ निर्दिष्ट किया है।
(अ) ब्रह्ममूर्हूतम् (ब) क्रियाकालः (स) भेषजकालम् (द) चतुष्पाद भेषजमिति

(166) 'अर्थप्राप्ति' का क्या अभिप्राय है।
(अ) धन प्राप्ति (ब) अनुक्तार्थस्य सिद्धिः (स) प्रयोजनसिद्धि (द) शास्त्रार्थः

(167) 'वाक्यदोष' में विरूद्ध होता है।
(अ) सिद्धान्त (ब) दृष्टान्त विरूद्ध (स) समय विरूद्ध (द) उपर्युक्त सभी

(168) चरक ने अहेतु के भेद बतलाए है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

(169) दशविध परीक्ष्यभाव में 'कार्यफल' है।
(अ) धातुवैषम्य (ब) आरोग्य (स) धातुसाम्य (द) सुखावाप्तिः

(170) 'यत्प्रयोजना कार्याभिनिवृत्तिरिष्यते .... किसके लिये कहा गया है।
(अ) कार्यफल (ब) कार्ययोनि (स) करण (द) कार्य

(171) स यः कर्तारमवश्यमनुबध्नाति है।
(अ) कार्यफल (ब) कार्ययोनि (स) अनुबन्ध (द) प्रवृत्ति

(172) दशविध परीक्ष्य भावों में 'कार्य प्राप्तौ कारणं' है।
(अ) भिषक् (ब) भेषज् (स) चिकित्सा (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(173) दशविध परीक्ष्य भावों में 'करण' है।
(अ) भिषक् (ब) भेषज् (स) चिकित्सा (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(174) दशविध परीक्ष्य भावों में 'कार्य' है।
(अ) भिषक् (ब) भेषज् (स) चिकित्सा (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(175) दैवव्यापश्रय चिकित्सा में किसका समावेश नहीं होता है।
(अ) औषधि (ब) उपवास (स) उपहार (द) पूजापाठ

(176) विस्मापन और विस्मारण का का समावेश कौनसी चिकित्सा में होता है।
(अ) द्रव्यभूत (ब) अद्रव्यभूत (स) दैवव्यापश्रय (द) युक्तिव्यपाश्रय

(177) 'संवाहन' कौनसी चिकित्सा हैं ?
(अ) द्रव्यभूत (ब) अद्रव्यभूत (स) दैवव्यापश्रय (द) युक्तिव्यपाश्रय

(178) आचार्य चरक ने कितने प्रकार की परीक्षा बतलाई हैं।
(अ) चर्तुविध – प्रत्यक्ष, अनुमान, आप्तोपदेश, युक्ति। (ब) त्रिविध – प्रत्यक्ष, अनुमान, आप्तोपदेश
(स) द्विविध – प्रत्यक्ष, अनुमान (द) उपर्युक्त सभी

(179) दन्तशूका किस दोषज प्रकृति के लक्षण के पुरुष का लक्षण है।
(अ) वात प्रकृति (ब) पित्तज प्रकृति (स) कफज प्रकृति (द) कोई नहीं

(180) चरक ने कौनसा 'सार' का वर्णन नहीं किया जाता है।
(अ) रससार (ब) सत्वसार (स) ओजसार (द) अ, स दोनों

(181) महास्फिक्श्च – कौनसे सार का लक्षण है।
(अ) मांससार (ब) मज्जासार (स) अस्थिसार (द) शुक्रसार

(182) सूची–I को सूची–II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

सूची – I	सूची – II
A. भग विस्तार	1. 16 अंगुल
B. कटि विस्तार	2. 12 अंगुल
C. हृदय	3. 4 अंगुल
D. ग्रीवा	4. 2 अंगुल

कूट :–

	A	B	C	D
(अ)	4	2	3	1
(ब)	1	2	4	3
(स)	1	2	3	4
(द)	2	1	4	3

(183) चरकनुसार मनुष्य शरीर का प्रमाण होता है
(अ) 84 अंगुल (ब) 84 अंगुल पर्व (स) 120 अंगुल (द) 3½ हस्त

(184) चरक ने बाल्यावस्था काल बतलाया है।
(अ) 16 बर्ष तक (ब) 30 बर्ष तक (स) 12 बर्ष तक (द) 15 बर्ष तक

(185) वृहती को चरक ने किस स्कन्ध में रखा है।
(अ) मधुर (ब) कटु (स) तिक्त (द) कषाय

(186) कारवेल्लक को चरक ने किस स्कन्ध में रखा है।
(अ) मधुर (ब) कटु (स) तिक्त (द) कषाय

(187) भल्लातकास्थि को चरक ने किस स्कन्ध में रखा है।
(अ) कषाय (ब) कटु (स) तिक्त (द) अ, ब दोनों

(188) चरक ने शिरोविरेचन द्रव्यों के कितने आश्रय बतलाएँ है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 6 (द) 7

(189) शिरोविरेचन द्रव्यों में कौनसा रस नहीं होता है।

(अ) मधुर (ब) लवण (स) अम्ल (द) अ, स दोनों

(190) सूची–I को सूची–II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

सूची – I	सूची – II
A. हिंगुनिर्यास	1. मधुर स्कन्ध
B. वचा	2. कटु स्कन्ध
C. पुर्ननवा	3. तिक्त स्कन्ध
D. अर्जुन	4. कषाय स्कन्ध

कूट :–

	A	B	C	D		A	B	C	D
(अ)	4	2	3	1	(स)	1	2	3	4
(ब)	2	3	1	4	(द)	4	3	1	2

(191) वातकफज विकारों के लिए श्रेष्ठ है।

(अ) तैल (ब) घृत (स) वसा (द) मज्जा

(192) अंगभेद भेद से भेषज के कितने प्रकार होते है।

(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(193) "पिपीलिका भाररिणवद्र" परीक्षा से क्या तात्पर्य है।

(अ) सार परीक्षा (ब) प्रमाण परीक्षा (स) सत्व परीक्षा (द) संहनन परीक्षा

(194) चरकानुसार दशविध परीक्षा का प्रयोजन है।

(अ) जिज्ञासा शान्ति (ब) प्रतिपत्तिज्ञानम् (स) अ, ब दोनों (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(195) चरकानुसार साधारण ऋतु हैं।

(अ) शिशिर, बंसत, ग्रीष्म (ब) वर्षा, शरद, हेमन्त (स) शरद, बंसत, ग्रीष्म (द) प्रावृट, शरद, बसन्त

(196) चरकानुसार वमनार्थ 'निम्ब' का क्या प्रयोग किया जाता है।

(अ) मूल कषाय (ब) पुष्प कषाय (स) फल (द) बीज

(197) चरक ने शिरोविरेचनार्थ निम्न किसके निर्यास का प्रयोग बताया है।

(अ) हिंगु (ब) देवदारू (स) अगुरू (द) उपर्युक्त सभी

(198) कौन एक औषध चरक संहिता में कटु स्कन्ध में अंतर्विष्ट नहीं हैं।

(अ) पिप्पली (ब) चव्य (स) सुमुख (द) केबुक

(199) सार के ज्ञान से किसका विशेष ज्ञान होता हैं।

(अ) बल (ब) आरोग्य (स) कर्म शक्ति (द) सौभाग्य

(200) सूची–I को सूची–II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

सूची – I	सूची – II
A. दशविध परीक्षा	1. सुश्रुत
B. अष्टविध परीक्षा	2. भावप्रकाश
C. षड्विध परीक्षा	3. योग रत्नाकर
D. चतुर्विध परीक्षा	4. चरक

कूट :–

	A	B	C	D		A	B	C	D
(अ)	4	2	3	1	(स)	1	2	3	4
(ब)	3	2	1	4	(द)	4	3	1	2

VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER
DR. NEELIMA SINGH LODHI

Model Test Papers (Answer Sheet) – चरक विमान स्थान

1. D	21. D	41. B	61. A	81. A
2. B	22. A	42. A	62. A	82. C
3. C	23. C	43. B	63. C	83. B
4. B	24. C	44. A	64. C	84. D
5. D	25. B	45. A	65. B	85. A
6. A	26. C	46. D	66. B	86. D
7. D	27. A	47. A	67. B	87. D
8. A	28. A	48. C	68. D	88. C
9. A	29. B	49. C	69. D	89. A
10. D	30. D	50. C	70. A	90. C
11. A	31. A	51. D	71. A	91. C
12. A	32. D	52. B	72. D	92. C
13. C	33. D	53. B	73. A	93. D
14. B	34. A	54. D	74. C	94. D
15. C	35. B	55. A	75. A	95. D
16. C	36. C	56. B	76. C	96. B
17. D	37. D	57. A	77. A	97. D
18. B	38. C	58. C	78. D	98. B
19. B	39. C	59. A	79. A	99. C
20. C	40. A	60. B	80. A	100. A

101. B	121. B	141. B	161. D	181. D
102. A	122. C	142. D	162. A	182. D
103. B	123. A	143. B	163. C	183. B
104. C	124. A	144. D	164. C	184. B
105. C	125. B	145. A	165. D	185. A
106. A	126. B	146. A	166. B	186. C
107. B	127. A	147. A	167. C	187. D
108. A	128. D	148. D	168. B	188. D
109. A	129. B	149. C	169. D	189. D
110. B	130. C	150. A	170. A	190. C
111. B	131. B	151. B	171. C	191. A
112. B	132. B	152. B	172. A	192. A
113. A	133. C	153. C	173. B	193. A
114. C	134. D	154. A	174. C	194. B
115. A	135. A	155. A	175. D	195. D
116. D	136. B	156. B	176. B	196. B
117. C	137. D	157. A	177. B	197. D
118. A	138. A	158. C	178. D	198. D
119. C	139. A	159. C	179. B	199. A
120. D	140. D	160. B	180. D	200. D

Shyam-Vidya Ayurved P.G. Entrance Coaching Center, Bhopal (M.P.)
Model Test Papers – चरक शारीर
By- Dr. Neelima Singh Lodhi (M.D.) Mob. 09300961664, 09993961427

(1) चरकोक्त कतिधापुरूषीय शारीर अध्याय में पुरूष विषयक अग्निवेश के कितने प्रश्नों का उल्लेख है।
(अ) 6 (ब) 18 (स) 23 (द) 36

(2) चरक ने धातु भेद से पुरूष के कितने कुल भेद बतलाएँ है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 5 (द) 6

(3) चरक ने राशि पुरूष किसे कहा है।
(अ) एक धातुज पुरूष (ब) षड्धातुज पुरूष (स) चिकित्स्य पुरूष (द) चतुर्विंशति पुरूष

(4) चिकित्सीय पुरूष है।
(अ) एक धातुज पुरूष (ब) षड्धातुज पुरूष (स) सप्तदश पुरूष (द) चतुर्विंशति पुरूष

(5) मन का विषय नहीं है।
(अ) ऊह्य (ब) चिन्त्य (स) संकल्प (द) बुद्धि

(6) मन के कर्म है।
(अ) इन्द्रियाभिनिग्रह (ब) स्वस्यनिग्रह (स) ऊह्य (द) सभी

(7) ऊह्य एंव विचार्य मन के कर्म है।
(अ) मन के कर्म (ब) मन के विषय (स) मन के गुण (द) अ, ब दोनों

(8) 'सत्या ज्योतिः तमोऽनृता' – किस इन्द्रिय के लिए कहा गया है।
(अ) जिह्वा (ब) चक्षु (स) मन (द) घ्राण

(9) मन हैं ?
(अ) चेतन + क्रियावान् (ब) चेतन + क्रियाहीन (स) अचेतन + क्रियाहीन (द) अचेतन + क्रियावान

(10) चरकानुसार आत्मा के करण (साधन) है ?
(अ) 12 (ब) 13 (स) 14 (द) शून्य

(11) निर्विकार परस्त्वात्मा सर्वभूतानाम् गुणैन्द्रियैः। चैतन्ये कारणं नित्यो द्रष्टा पश्यति हि क्रियाः। – यह सूत्र कहाँ वर्णित है।
(अ) च. शा. अ. 4 (ब) च. शा. अ. 5 (स) च. शा. अ. 8 (द) च. सू. अ. 1

(12) 'अक्षि' है।
(अ) इन्द्रिय (ब) इन्द्रिय द्रव्य (स) इन्द्रिय अधिष्ठान (द) इन्द्रिय अर्थ

(13) चरक ने आत्मा के कितने लक्षण बतलाए है।
(अ) 12 (ब) 16 (स) 22 (द) ब, स दोनों

(14) चरकानुसार इन्द्रियाँ होती है।
(अ) भौतिक (ब) अंहिकारिक (स) अ, ब दोनों (द) सभी असत्य

(15) धी धृति स्मृति ....कर्म यत् कुरूतेऽशुभम्। प्रज्ञापराधं तं विद्यात् सर्वदोष प्रकोपणम्।।
(अ) भ्रशः (ब) विभ्रंशः (स) भ्रष्टः (द) विभ्रष्टः

(16) ....हि नियमात्मिका ।
(अ) साक्षी (ब) प्रज्ञा (स) धी (द) धृति

(17) नैष्ठिकी चिकित्सा है।
(अ) उपधा रहित चिकित्सा (ब) प्राकृतिक चिकित्सा (स) योग चिकित्सा (द) मोक्ष

(18) चरक ने स्मृति के कारण बताएँ है।
(अ) 4 (ब) 8 (स) 6 (द) 10

(19) चरकानुसार सुख दुःख का कारण है।
(अ) प्रज्ञापराधं (ब) चतुर्विध योग (स) उपधा (द) आत्मा

(20) सभी वेदनाओं का अधिष्ठान है।
(अ) मन (ब) शरीर (स) मन और शरीर (द) मन, शरीर, इन्द्रियाँ

(21) सभी वेदनाओं की निवृत्ति हो जाती है।
(अ) योग से (ब) मोक्ष से (स) योग, मोक्ष दानों से (द) सदवृतपालन से

(22) सभी वेदनाओं का अनुभव किसको होता है।
(अ) एक धातुज पुरूष (ब) षड्धातुज पुरूष (स) सप्तदश पुरूष (द) राशि पुरूष

(23) जरा व मृत्यु को कहा गया है।
(अ) स्वभाविक रोग (ब) स्वभावबल प्रवृत्त रोग (स) कालज रोग (द) उपर्युक्त सभी

(24) पंचमहाभूतो के लक्षण किस इन्द्रिय द्वारा ज्ञात होते हैं।
(अ) स्पर्श (ब) चक्षु (स) दानों से (द) सभी इन्द्रियों से

(25) सभी दुखों का कारण हैं।
(अ) प्रज्ञापराध (ब) उपधा (स) कालज रोग (द) पंचमहाभूत

(26) चरकोक्त अतुल्यगोत्रीय शारीर अध्याय में गर्भ विषयक अग्निवेश के कितने प्रश्नों का उल्लेख है।
(अ) 6 (ब) 18 (स) 23 (द) 36

(27) चरकानुसार सद्योगर्भा का लक्षण नहीं हैं।
(अ) निष्ठीविका (ब) आर्तवादर्शन (स) तन्द्रा (द) तृप्ति

(28) गर्भिणी में 'वृत्तगर्भा न च' – यह लक्षण होने पर क्या संतान होगी ?
(अ) पुत्र (ब) कन्या (स) नपुंसक (द) यमल

(29) 'पवेन्द्रिय' में वायु गर्भ का ....नष्ट कर देती हैं।
(अ) वृषण (ब) शुक्राशय (स) शुक्राशयद्वार (द) उपर्युक्त सभी

(30) चरक ने क्लैब्य के भेद माने है।
(अ) 4 (ब) 6 (स) 8 (द) 5

(31) चरकोक्त गर्भ विकृतियाँ की संख्या है।
(अ) 4 (ब) 6 (स) 8 (द) 5

(32) 'वातिक षण्ड' में वायु, पित्त गर्भ के ....नष्ट कर देती हैं।
(अ) वृषण (ब) शुक्राशय (स) शुक्राशयद्वार (द) उपर्युक्त सभी

(33) दुर्बल, अल्प शुक्र आर्तव वाले स्त्री पुरुष द्वारा बिना कामोत्तेजना के मैथुन में प्रवृत्त होने से कौनसी संतान पैदा होगी .
(अ) नरषण्ड (ब) नारीषण्ड (स) संस्कारवाहीषण्ड (द) अ, ब दानों

(34) 'शुक्र' के संदर्भ में कौनसा कथन सही नहीं है।
(अ) शुक्र सौम्य (जल महाभूत प्रधान) होता है (ब) शुक्र की उत्पत्ति 6 रसो से होती हैं
(स) शुक्र में 4 पाद (वायु, अग्नि, पृथ्वीं, जल) होते है (द) शुक्र शरीर का मूल है।

(35) घनात्यय का अर्थ हैं।
(अ) ग्रीष्म ऋतु (ब) वर्षा ऋतु (स) शरद ऋतु (द) उपर्युक्त सभी

(36) किस आचार्य ने 'भूतहृत गर्भ' का वर्णन किया है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) सुश्रुत (द) डल्हण

(37) गर्भ में 'धातुव्यूहन' कौनसा भाव है।
(अ) आकाशीय भाव (ब) वायव्य भाव (स) आग्नेय भाव (द) पार्थिव भाव

(38) गर्भ में 'सूक्ष्मता और विवेक' कौनसा भाव है।
(अ) आकाशीय भाव (ब) वायव्य भाव (स) आग्नेय भाव (द) पार्थिव भाव

(39) चरकानुसार ईर्ष्यक हैं।
(अ) क्लैब्य का भेद (ब) नुंपुसक का भेद (स) दृग्योनि (द) गर्भ विकृति

(40) 'जातिस्मर' का वर्णन किस आचार्य ने किया हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) शारर्ग्धर (द) वाग्भट्ट

(41) गर्भिणी स्त्री द्वारा लिए गये आहार का आहार रस कितने भागों में विभक्त हो जाता है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

(42) सत्वज भावों की संख्या होती है।
(अ) 10 (ब) 20 (स) 22 (द) 18

(43) मातृज भावों की संख्या होती है।
(अ) 10 (ब) 20 (स) 22 (द) 18

(44) गर्भोत्पादक भावों में 'मुख्य भाव' होते है।
(अ) 2 (ब) 4 (स) 6 (द) 20

(45) गर्भोत्पादक भावों में 'वपावहन' है।
(अ) मातृज भाव (ब) पितृज भाव (स) आत्मज भाव (द) सत्वज भाव

(46) गर्भोत्पादक भावों में 'धमनी, सिरा, स्नायु' है।
(अ) मातृज भाव (ब) पितृज भाव (स) आत्मज भाव (द) सत्वज भाव

(47) गर्भोत्पादक भावों में 'प्राणानुबंध' है।
(अ) रसज भाव (ब) सात्म्यज भाव (स) आत्मज भाव (द) सत्वज भाव

(48) गर्भोत्पादक भावों में 'आरोग्य' है।
(अ) रसज भाव (ब) सात्म्यज भाव (स) आत्मज भाव (द) सत्वज भाव

(49) गर्भोत्पादक भावों में 'आयु' है।
(अ) रसज भाव (ब) सात्म्यज भाव (स) आत्मज भाव (द) सत्वज भाव
(50) गर्भोत्पादक भावों में 'मेधा' है।
(अ) रसज भाव (ब) सात्म्यज भाव (स) आत्मज भाव (द) सत्वज भाव
(51) गर्भोत्पादक भावों में 'स्मृति' है।
(अ) आत्मज भाव (ब) सत्वज भाव (स) सात्म्यज भाव (द) आत्मज, सत्वज भाव
(52) 'गते पुराणे रजसि नवे चातस्थिते शुद्धस्नातां स्त्रियम् अत्यापन्न योनिशोणितं गर्भाशय' – किसका लक्षण है।
(अ) सद्योगर्भा का (ब) व्यक्त गर्भा का (स) ऋतुमती का (द) असन्न प्रसवा का
(53) शुक्रशोणित से संयोग होने के तत्काल पश्चात् चेतना धातु सर्वप्रथम किसका निर्माण करता है
(अ) आकाश का (ब) बुदबुद् का (स) गर्भोदक का (द) नाभिनाडी का
(54) किस आचार्य ने प्रथम मास में गर्भ की स्थिति "श्लेष्मभूतः" बतायी है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) सुश्रुत (द) वाग्भट्ट
(55) चरकानुसार लिंग विनिश्चय के किस माह का लक्षण हैं।
(अ) प्रथम (ब) द्वितीय (स) तृतीय (द) चतुर्थ
(56) किस माह में गर्भ अव्यक्तविग्रह वाला होता है।
(अ) प्रथम (ब) द्वितीय (स) तृतीय (द) चतुर्थ
(57) प्रथम माह में गर्भ में अंग–प्रत्यंग किस रूप में रहते हैं।
(अ) सत् (ब) असत् (स) दोनों रूपों में (द) अव्यक्त रूप में
(58) चरकानुसार दौहृद अवस्था गर्भिणी के किस माह में मिलती हैं।
(अ) तृतीय (ब) चतुर्थ (स) षष्टम् (द) सप्तम्
(59) चरकानुसार 'गर्भिणी गुरुगात्रता' किस माह का लक्षण है।
(अ) चतुर्थ (ब) पंचम (स) षष्टम् (द) सप्तम्
(60) चरकानुसार गर्भिणी 'कार्श्य' किस माह का लक्षण है।
(अ) चतुर्थ (ब) पंचम (स) षष्टम् (द) सप्तम्
(61) 'गर्भिणी क्लान्तिमा' गर्भिणी के कौन से माह का लक्षण है।
(अ) चतुर्थ (ब) पंचम (स) षष्टम् (द) सप्तम्
(62) चरक ने सामान्य प्रसवकाल कब तक माना है।
(अ) 9 माह (ब) 10 माह (स) 11 माह (द) 12 माह
(63) चरकानुसार गर्भ का पोषण प्रारम्भ काल में माता की रसवहा नाडी के .... से होता है।
(अ) उपस्नेह (ब) उपस्वेद (स) उपस्नेह व उपस्वेद (द) सभी असत्य
(64) चरक ने निम्न मे से कौनसा लक्षण व्यक्तगर्भा का नहीं बताया है।
(अ) आर्तवादर्शन (ब) स्तनमुखओष्ठ कृष्णता (स) रोमराज्या उत्पत्ति (द) योनिद्वारा बीजग्रहण
(65) 3 प्रकार के "स्त्री व्यापद" का वर्णन सर्वप्रथम किस आचार्य किया है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) सुश्रुत (द) वाग्भट्ट
(66) जब स्त्री के बीज एवं बीज अवयव का 1 अंश दूषित हो जाता है तो भावी संतान की संज्ञा होगी।
(अ) पूतिप्रजा (ब) पूतिप्रज (स) वार्ता (द) तृणपुत्रिक
(67) जब पुरुष के बीज एवं बीज का 1 अंश दूषित हो जाता है तो भावी संतान की संज्ञा होगी।
(अ) पूतिप्रजा (ब) पूतिप्रज (स) वार्ता (द) तृणपुत्रिक
(68) 'आदेय वाक्यं' किस सात्विक प्रकृति के पुरुष का लक्षण है।
(अ) ब्रह्म सत्व (ब) ऐन्द्र सत्व (स) आर्ष सत्व (द) याम्य सत्व
(69) 'उत्थानवन्तं' किस सात्विक प्रकृति के पुरुष का लक्षण है।
(अ) ब्रह्म सत्व (ब) ऐन्द्र सत्व (स) आर्ष सत्व (द) याम्य सत्व
(70) 'प्रतिभा वचन विज्ञानोपधारण शक्ति सम्पन्नं' किस सात्विक प्रकृति के पुरुष का लक्षण है।
(अ) ब्रह्म सत्व (ब) ऐन्द्र सत्व (स) आर्ष सत्व (द) याम्य सत्व
(71) 'अनुबन्धकोपं' किस राजस प्रकृति के पुरुष का लक्षण है।
(अ) आसुर सत्व (ब) राक्षस सत्व (स) प्रेत सत्व (द) सर्प सत्व
(72) 'क्रुद्ध शूरं–अक्रुद्ध भीरु' किस राजस प्रकृति के पुरुष का लक्षण है।
(अ) आसुर सत्व (ब) राक्षस सत्व (स) सर्प सत्व (द) पिशाच सत्व
(73) 'आहार काममति' किस राजस प्रकृति के पुरुष का लक्षण है।
(अ) आसुर सत्व (ब) राक्षस सत्व (स) प्रेत सत्व (द) पिशाच सत्व
(74) 'केवलम अभिनिविष्टम् आहारें' किस तामस प्रकृति के पुरुष का लक्षण हैं।
(अ) पाशव सत्व (ब) मात्स्य सत्व (स) वानस्पत्य सत्व (द) पिशाच सत्व

(75) चरकोक्त लोकपुरूष साम्य में लोकगत 'उत्साह' यह भाव पुरूषगत किस भाव से समानता रखता हैं।
(अ) आदित्य (ब) मरूत् (स) सोम (द) वसु

(76) चरकोक्त लोकपुरूष साम्य में 'त्रेता' पुरूषगत किस भाव से समानता रखता हैं।
(अ) गर्भाधान (ब) बाल्यावस्था (स) युवावस्था (द) वृद्धावस्था

(77) लोकपुरूषसाम्य में पुरूषगत 'कान्ति' भाव लोक गत किस भाव से समानता रखता है।
(अ) विश्वदेव (ब) अश्विनीकुमार (स) इन्द्र (द) रूद्र

(78) चरकोक्त लोकपुरूष साम्य में 'द्वापर' पुरूषगत किस भाव से समानता रखता हैं।
(अ) गर्भाधान (ब) बाल्यावस्था (स) युवावस्था (द) वृद्धावस्था

(79) निवृत्ति, अपवर्ग, विपाप, विरज, पर, शांत, अक्षर, अमृत, ब्रह्म, अपुर्नभव, निर्वाण और शांति। – किसके पर्याय हैं।
(अ) मोक्ष के (ब) ब्रह्मा के (स) मृत्यु के (द) आयुर्वेद के

(80) चरकानुसार शरीर है।
(अ) पंचममहाभूतविकार समुदायत्कम् (ब) चेतनाधिष्ठान भूतम् (स) समयोगवाही (द) उपर्युक्त सभी

(81) चरकानुसार शरीर वृद्धिकर भावों की संख्या है।
(अ) 4 (ब) 6 (स) 13 (द) 17

(82) चरकानुसार बल वृद्धिकर भावों की संख्या है।
(अ) 4 (ब) 6 (स) 13 (द) 17

(83) चरकानुसार आहार परिणामकर भावों की संख्या है।
(अ) 4 (ब) 6 (स) 13 (द) 17

(84) स्वभाव संसिद्ध है।
(अ) आहार परिणामकर भाव (ब) बल वृद्धिकर भाव (स) शरीर वृद्धिकर भाव (द) ब, स दोनों

(85) गर्भ में सर्वप्रथम नाभि की उत्पत्ति होती है। – किसका कथन है।
(अ) कांकायन (ब) भद्रकाप्य (स) भद्रशौनक (द) काश्यप

(86) चरकानुसार गर्भ की परमायु होती है।
(अ) 80 बर्ष (ब) 100 बर्ष (स) 120 बर्ष (द) शून्य

(87) त्वचा की संख्या 6 मानी है।
(अ) चरक (ब) अष्टांग संग्रह (स) काश्यप (द) उपर्युक्त सभी

(88) चरकानुसार दद्रु व कुष्ठ का आश्रय कौनसी त्वचा होती है।
(अ) तृतीय (ब) चतुर्थ (स) षष्ठम् (द) सप्तम्

(89) चरकानुसार 'विद्रधि' का आश्रयस्थान कौनसी त्वचा है।
(अ) मांसधरा (ब) रोहिणी (स) चतुर्थ त्वचा (द) पंचम त्वचा

(90) त्वचा की संख्या 7 किसने मानी है।
(अ) सुश्रुत (ब) अष्टांग हृदय (स) शारंग्धर (द) उपर्युक्त सभी

(91) शाखा, मध्यशरीर और शिर रूप में – शरीर का षडगंत्वम किसने माना हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) भाव प्रकाश (द) अष्टांग संग्रह

(92) चरक ने कौनसा कोष्टांग नहीं माना हैं।
(अ) डिम्भ (ब) उण्डूक (स) फुफ्फुस (द) उपर्युक्त सभी

(93) डिम्भ को कोष्टांग किसने माना हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) अष्टांग हृदय (द) अष्टांग संग्रह

(94) पक्वाशय कोष्टांग के स्थान पर फुफ्फुस सम 'निवाप्नहन' कोष्ठांग किसने बताया है।
(अ) भाव प्रकाश (ब) भेल (स) हारीत (द) वाग्भट्ट

(95) चरक शारीर स्थान में वर्णित दशविध प्राणायतन में से कितने मर्म है।
(अ) 10 (ब) 6 (स) 5 (द) 7

(96) चरकानुसार शरीर में अस्थियों की संख्या ....।
(अ) 300 (ब) 360 (स) 206 (द) 210

(97) सुश्रुतानुसार मध्य शरीर में अस्थियों की संख्या ....।
(अ) 128 (ब) 140 (स) 117 (द) 120

(98) सुश्रुतानुसार मानव शरीर में प्रत्यंगो की संख्या..............।
(अ) 56 (ब) 87 (स) 65 (द) 61

(99) चरकानुसार मानव शरीर में पेशियों की संख्या ....।
(अ) 200 (ब) 400 (स) 500 (द) 700

(100) चरकानुसार मानव शरीर में धमनियों की संख्या ....।
(अ) 200 (ब) 24 (स) 210 (द) 700

SHYAM VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER
Dr. NEELIMA SINGH LODHI

(101) चरकानुसार मानव शरीर में संधियों की संख्या ....।
(अ) 200 (ब) 210 (स) 8 (द) 12

(102) चरकानुसार मानव शरीर में सिरा, धमनी मुखाग्रों की संख्या ....।
(अ) 29956 (ब) 29959 (स) 29958 (द) 29756

(103) निम्न में से अनिर्देश्य लेकिन तर्कगम्य है।
(अ) अंग (ब) प्रत्यंग (स) नवमहाछिद्र (द) स्नायु

(104) चरक मतानुसार मानव शरीर में स्तन्य धातु का अंजली प्रमाण..........।
(अ) 2 (ब) 4 (स) 3 (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(105) चरक मतानुसार मानव शरीर में मेद धातु का अंजली प्रमाण..........।
(अ) 2 (ब) 4 (स) 3 (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(106) चरक मतानुसार मानव शरीर में वसा का अंजली प्रमाण..........।
(अ) 2 (ब) 4 (स) 3 (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(107) चरक मतानुसार मानव शरीर में मूत्र का अंजली प्रमाण..........।
(अ) 2 (ब) 4 (स) 3 (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(108) शरीरावयवास्तु परमाणुभेदेन अपरिसंख्येया भवन्ति। – किसने कहा हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) भाव प्रकाश (द) अष्टांग संग्रह

(109) बुद्धिनेन्द्रिय की संख्या है।
(अ) 1 (ब) 7 (स) 5 (द) 11

(110) चरकानुसार मानव शरीर में महत् छिद्र की संख्या होती है।
(अ) 3 (ब) 7 (स) 9 (द) 11

(111) शारर्ग्धर के अनुसार पुरूष शरीर में बर्हिमुख स्रोतस की संख्या होती है।
(अ) 9 (ब) 10 (स) 12 (द) 11

(112) चरकानुसार किस अवस्था में मैथुन करने पर कफ प्रकुपित होगा।
(अ) उत्तान (ब) न्युब्ज (स) दक्षिण पार्श्व (द) वाम पार्श्व

(113) चरकानुसार किस अवस्था में मैथुन करने पर पित्त प्रकुपित होगा।
(अ) उत्तान (ब) न्युब्ज (स) दक्षिण पार्श्व (द) वाम पार्श्व

(114) चरक ने पुंसवन कर्म में किस औषधि का प्रयोग नहीं बतलाया है।
(अ) जीवक (ब) अपामार्ग (स) सहचर (द) लक्ष्मणा

(115) चरक ने पुंसवन कर्म की कितनी विधियाँ बतलायी है।
(अ) 1 (ब) 3 (स) 5 (द) 7

(116) चरकानुसार पुंसवन कर्म का काल है।
(अ) प्राग्व्यक्तीभाव (ब) लब्धगर्भा (स) पूर्व व्यक्तेः (द) द्वितीय माह

(117) चरकानुसार कृष्ण वर्ण की उत्पत्ति में सहायक महाभूत होते है।
(अ) तेज, पृथ्वी, वायु (ब) तेल, जल, आकाश (स) सर्वमहाभूत समान (द) तेल, जल, पृथ्वी

(118) चरकानुसार गौर वर्ण की उत्पत्ति में सहायक महाभूत होते है।
(अ) तेज, पृथ्वी, वायु (ब) तेल, जल, आकाश (स) सर्वमहाभूत समान (द) तेल, जल, पृथ्वी

(119) चरकानुसार कितने माह से गर्भपात की अवस्था होती है।
(अ) 3 माह (ब) 4 माह (स) 5 माह (द) 6 माह

(120) चरकानुसार कितने माह का गर्भ 'अजात सार' रहता है।
(अ) 3 माह (ब) 4 माह (स) 5 माह (द) 6 माह

(121) चरकानुसार कौनसे माह में 'आत्ययिक रोग' हो जाये जिसमें वमन–विरेचन या नस्य का प्रयोग ही लाभप्रद हो, तो ऐसी स्थिति में मृदु वमन, मृदु विरेचन या मृदु नस्य का प्रयोग करना चाहिए।
(अ) 9 माह (ब) 8 माह (स) 7 माह (द) 6 माह

(122) स्तिमितं स्तब्धमुदरमाततं शीतममान्तर्गतमिव भवत्य अस्पन्दनो गर्भः। – किसका लक्षण है।
(अ) मृतगर्भा (ब) मूढगर्भ (स) उपविष्टक (द) लीन गर्भ

(123) गर्भः प्रसुप्तो न स्पन्दते। – किसका लक्षण है।
(अ) मृतगर्भा (ब) नागोदर (स) उपविष्टक (द) लीन गर्भ

(124) 'गर्भो वृद्धिं न प्राप्नोति परिशुष्कत्वात्। – किसका लक्षण है।
(अ) मृतगर्भा (ब) नागोदर (स) उपविष्टक (द) लीन गर्भ

(125) 'गर्भोवृद्धिं न प्राप्नोनि निःस्रुतत्वात्ः। – किसका लक्षण है।
(अ) मृतगर्भा (ब) नागोदर (स) उपविष्टक (द) लीन गर्भ

(126) भौतिकजीवनीयवृंहणीयमधुरवातहर औषध सिद्ध घृत। – किसका चिकित्सा है।
(अ) नागोदर (ब) उपविष्टक (स) लीन गर्भ (द) नागोदर, उपविष्टक

(127) श्येन गौ, मत्स्य व ताम्रचूड के मांस का प्रयोग। – किसकी चिकित्सा है।
(अ) नागोदर (ब) उपविष्टक (स) लीन गर्भ (द) नागोदर, उपविष्टक

(128) आचार्य सुश्रुत ने किसका वर्णन नहीं किया है।
(अ) नागोदर (ब) उपविष्टक (स) लीन गर्भ (द) मूढ गर्भ

(129) आचार्य सुश्रुत ने "वातभिपन्न गर्भ" किसे कहा है।
(अ) नागोदर (ब) उपविष्टक (स) लीन गर्भ (द) उपशुष्क

(130) आचार्य चरक ने "आमगर्भ" किसे कहा है।
(अ) नागोदर (ब) उपविष्टक (स) लीन गर्भ (द) नागोदर, उपविष्टक

(131) चरकानुसार गर्भिणी को किस माह में 'किक्किस' रोग की उत्पत्ति हो जाती है।
(अ) 9 माह (ब) 8 माह (स) 7 माह : (द) 6 माह

(132) किस आचार्य के मत से गर्भ की वृद्धि से उत्पीड़ित हुए वात पित्त–कफ उरः प्रदेश में आकर विदाह पैदा करते हैं तब कण्डूः उत्पन्न होती है और कण्डूः होने से 'किक्किस' विकार की उत्पत्ति हो जाती है।
(अ) चरक (ब) वाग्भट्ट (स) चक्रपाणि (द) अरूणदत्त

(133) गर्भ मे संपीड़ित दोष हृदयप्रदेश में आश्रित होकर कण्डूः व विदाह 'किक्किस रोग' की उत्पन्न करते है .... ने कहा है
(अ) चरक (ब) वाग्भट्ट (स) चक्रपाणि (द) अरूणदत्त

(134) किक्किसः चर्मविदरणम्। – किस आचार्य का कथन है ।
(अ) चरक (ब) वाग्भट्ट (स) चक्रपाणि (द) अरूणदत्त

(135) किस आचार्य के मत से उरू, उदर और स्तन पर रेखाओं का होना ही 'किक्किस' है
(अ) चरक (ब) वाग्भट्ट (स) चक्रपाणि (द) अरूणदत्त

(136) स्तन व उदर पर चन्दन, मृणाल कल्क का लेप किसमें करते है।
(अ) किक्किस (ब) अपरापातन में (स) चक्रपाणि (द) अरूणदत्त

(137) करवीर पत्र सिद्ध तिलतैल से अभ्यंग किसमें करते है।
(अ) किक्किस (ब) अपरापातन में (स) चक्रपाणि (द) अरूणदत्त

(138) चण्ड, औपधिक एवं असूयक संतान किस प्रकार की गर्भिणी की होती है।
(अ) अभिध्यात्री परो (ब) आस्तेय (स) अमर्षिणी (द) स्वप्ननित्या

(139) आनाह, उदावर्त, श्यामवर्ण संतान संतान किस प्रकार की गर्भिणी की होती है।
(अ) मधुर नित्या (ब) कटु नित्या (स) तिक्त नित्या (द) कषाय नित्या

(140) यदि गर्भिणी मधुर रस का अत्यधिक सेवन करेगी तब गर्भस्थ बालक में कौनसा विकार होगा।
(अ) अन्ध (ब) अल्पबुद्धि (स) मूक (द) तन्द्रालु

(141) यदि गर्भिणी "गोधा मांस" का अत्यधिक सेवन करेगी तब गर्भस्थ बालक में कौनसा विकार होगा।
(अ) मूत्रशर्करा (ब) अश्मरी (स) शनैःमेह (द) उपर्युक्त सभी

(142) यदि गर्भिणी 'मत्स्य मांस' का अत्यधिक सेवन करेगी तब गर्भस्थ बालक में कौनसा विकार होगा।
(अ) चिरनिमेष (ब) रक्ताक्षं (स) शनैःमेह (द) उपर्युक्त सभी

(143) चरकानुसार गर्भिणी को "क्षीर अनुपस्कृतं" का सेवन निर्दिष्ट किस माह में है।
(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) 7

(144) चरकानुसार गर्भिणी को 'क्षीर और मधुर औषध" का निर्दिष्ट किस माह में है।
(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) 7

(145) चरकानुसार गर्भिणी को "क्षीर, नवनीतं" का सेवन किस मास में कराना चाहिए ।
(अ) तृतीय (ब) चतुर्थ (स) पंचम् (द) षष्टम

(146) चरकानुसार गर्भिणी को "क्षीर, नवनीतं" का सेवन कितनी मात्रा में कराना चाहिए। →
(अ) 1 कोल (ब) 1 अक्ष (स) 1 पल् (द) 2 तोला

(147) चरकानुसार गर्भिणी को केवल "क्षीरसर्पि" का सेवन किस मास में कराना चाहिए।
(अ) तृतीय (ब) चतुर्थ (स) पंचम् (द) षष्टम

(148) सुश्रुतानुसार गर्भिणी को गोक्षुर साधित घृत/यवागूं का सेवन निर्दिष्ट किस माह में है।
(अ) 5 माह (ब) 6 माह (स) 7 माह (द) 8 माह

(149) सुश्रुतानुसार गर्भिणी को 'पृश्निपर्णी साधिक घृतं" का सेवन निर्दिष्ट किस माह में है।
(अ) 5 माह (ब) 6 माह (स) 7 माह (द) 8 माह

(150) चरकानुसार गर्भिणी को 'क्षीरसर्पि मधुर औषध सिद्धं" का निर्दिष्ट किस माह में है।
(अ) 5 माह (ब) 6 माह (स) 7 माह (द) ब, स दानों

(151) चरकानुसार गर्भिणी को 'क्षीर + यवागूं' का निर्दिष्ट किस माह में है।
(अ) 5 माह (ब) 6 माह (स) 7 माह (द) 8 माह

(152) किस आचार्य ने कहा है कि गर्भिणी को अष्टम मास में 'क्षीर + यवागूं' देने से गर्भ पिंगल वर्ण का हो जाता है।
(अ) चरक (ब) भद्रकाप्य (स) चक्रपाणि (द) अरूणदत्त

(153) चरकानुसार गर्भिणी में अनुवासन वस्ति का प्रयोग किस माह में करना चाहिए।
(अ) 6 माह (ब) 7 माह (स) 8 माह (द) 9 माह

(154) सुश्रुतानुसार गर्भिणी में अनुवासन वस्ति का प्रयोग किस माह में करना चाहिए।
(अ) 6 माह (ब) 7 माह (स) 8 माह (द) 9 माह

(155) सूतिकागार निर्माण में किसकी काष्ठ का प्रयोग बतलाया गया है।
(अ) बिल्व, तिन्दुक (ब) इन्दुक, भल्लातक (स) वरूण/खदिर काष्ठ (द) उपर्युक्त सभी

(156) विमुक्तबन्धनत्वं एवं वक्षसः कुक्षेवस्रंसनम्। किसका लक्षण है।
(अ) प्रजायनी (ब) आसन्न प्रसवा (स) प्रजजन काल (द) उपस्थित प्रसवा

(157) किस आचार्य ने प्रसवार्थ मूसल ग्रहण का निषेध बताया है
(अ) चरक (ब) काश्यप (स) चक्रपाणि (द) भावप्रकाश

(158) तथा ते शर्म लभन्ते चिराय। – उपर्युक्त कथन किसको इंगित करता है।
(अ) प्रसूता को (ब) प्रजाता को (स) कुमार को (द) धात्री को

(159) शून्य शरीरा कहा है।
(अ) सूतिका को (ब) प्रजाता को (स) ऋतुमति को (द) धात्री को

(160) निम्न में से किसमें होने वाले रोगों को कच्छ्रसाध्य तथा शीघ्र ही असाध्य कहा जाता है।
(अ) सूतिका (ब) सद्योजात (स) ऋतुमति को (द) ग्रहीतगर्भा

(161) सुश्रुतानुसार सूतिका काल होता है।
(अ) 1 सप्ताह (ब) 5 – 7 दिन (स) 1½ माह (द) 6 माह

(162) वाग्भट्टानुसार सूतिका काल होता है।
(अ) 1 सप्ताह (ब) 5 – 7 दिन (स) 1½ माह (द) 6 माह

(163) काश्यपानुसार सूतिका संज्ञा कब तक रहती है।
(अ) 1 सप्ताह (ब) 5 – 7 दिन (स) 1½ माह (द) 6 माह

(164) काश्यपानुसार प्रसूता संज्ञा कब तक रहती है।
(अ) 1 माह (ब) 5 – 7 दिन (स) 1½ माह (द) 6 माह

(165) आवी प्रादुर्भाव से पूर्व प्रवाहण करने पर होने वाला रोग है।
(अ) श्वास, कास (ब) शोष (स) प्लीहा (द) उपर्युक्त सभी

(166) प्रसव प्रवाहण काल में मंत्रोच्चारण विधि का उल्लेख किस आचार्य ने बताया है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) सुश्रुत (द) वाग्भट्ट

(167) भुर्जपत्र काचमणि सर्पनिर्मोकेश्च अस्या योनिं धूपयेत्। किसकी चिकित्सा है।
(अ) गर्भसंग (ब) मूढगर्भ (स) लीन गर्भ (अ) अपरा पातन

(168) शीतोदकेनोष्णोदकेन वा मुख परिषेकः। का उल्लेख है।
(अ) मूर्च्छा में (ब) सन्यास में (स) प्राण प्रत्यागमन में (द) मदात्यय में

(169) किस आचार्य ने प्राणप्रत्यागमन काल में मंत्रोच्चारण विधि का उल्लेख बताया है।
(अ) चरक (ब) काश्यप (स) सुश्रुत (द) वाग्भट्ट

(169) चरकोक्त प्राणप्रत्यागमन में कितनी इन्द्रियों में पुर्नः स्थापना बतलायी गयी है।
(अ) 5 (ब) 2 (स) 3 (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(170) नवजात शिशु को स्नान कराते हैं।
(अ) मन्दोष्ण क्षीरीकषाय से (ब) कपित्थ पत्र कषाय से (स) कोष्ण जल से (द) उपर्युक्त सभी

(171) नवजात शिशु में मुख विशोधनम् क्रम हैं।
(अ) तालु–ओष्ठ–कण्ठ–जिह्वा (ब) ओष्ठ–तालु–कण्ठ–जिह्वा (स) ओष्ठ–तालु–जिह्वा–कण्ठ (द) कोई नहीं

(172) चरकानुसार नवजात शिशु में गर्भोदक वमन कराते हैं।
(अ) मधुसर्पि से (ब) सैंधवसर्पि से (स) कोष्ण जल से (द) वचाचूर्ण से

(173) चरक ने कितने छोडकर नाभिनाल छेदन बताया है।
(अ) 8 अंगुल (ब) 4 अंगुल (स) 6 अंगुल (द) 12 अंगुल

(174) असम्यक् नाभिछेदन जन्य रोग कौनसा उपचार किया जाता है।
(अ) वातकफशामक (ब) वातपित्तशामक (स) कफपित्तशामक (द) त्रिदोषशामक

(175) चरक ने शिशु की नाभि पकने पर किन द्रव्यों से सिद्ध तैल का अभ्यंग करने को कहा है।
(अ) लोध्र, मधुक (ब) प्रियंगु, सुरदारू (स) हरिद्राकल्क (द) उपर्युक्त सभी

(176) वाग्भट्ट ने शिशु की नाभि पकने पर किस तैल का अभ्यंग करने को कहा है।
(अ) बला तैल (ब) वचा तैल (स) कुष्ठ तैल (द) नारायण तैल

(177) चरकानुसार नवजात शिशु के जातकर्म ....अभिमंत्रित कर देते हैं ।
(अ) मधुसर्पि से (ब) सैंधवसर्पि से (स) स्वर्ण भस्म (द) वचा चूर्ण

(178) चरक ने शिशु को सर्वप्रथम किस ओर के स्तन से दुग्धपान का निर्देश है।
(अ) उत्तर दिशा के (ब) पूर्व दिशा के (स) वाम स्तन (द) दक्षिण स्तन

(179) शिशु को प्रथम दिन ही 'स्तनपान' किसने बताया है
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(180) शिशु को 'प्रथमस्तन्य' का निषेध किस आचार्य ने बताया है
(अ) हारीत (ब) भेल (स) डल्हण (द) काश्यप

(181) प्रजापत्यय विधि से जातकर्म संस्कार किस आचार्य ने बतलाया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(182) चरकानुसार शिशु का नामकरण किया जाता है।
(अ) 10 वें दिन (ब) 12 वें दिन (स) 7 वें दिन (द) 1 वर्ष में

(183) किस आचार्य के अनुसार शिशु का नामकरण 10 वें दिन किया जाना बतलाया है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) सुश्रुत (द) उपर्युक्त सभी

(184) चरक ने वर्णन नहीं किया है।
(अ) कुमारागार (ब) कुमाराधार (स) बाल क्रीडनक (द) कुमार के वस्त्र

(185) चरकानुसार घृत–तैल–वसा–मज्जा गन्धी दुग्ध किस दोष से दूषित होता है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) त्रिदोष

(186) चरकानुसार कुणप/रक्त गन्धी स्तन्य किस दोष से दूषित होता है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) त्रिदाष

(187) चरकानुसार तन्तु युक्त स्तन्य किस दोष से दूषित होता है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) त्रिदोष

(188) चरकानुसार लवण अनुरस वाला स्तन्य किस दोष से दूषित होता है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) त्रिदोष

(189) चरकानुसार कषाय अनुरस वाला स्तन्य किस दोष से दूषित होता है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) त्रिदोष

(190) नातिलम्बावनतिकृशावनतिपीनौ युक्त पिप्पलकौ सुख प्रपानौ। – लक्षण है।
(अ) स्तन संपत (ब) प्रजाता धात्री संपत (स) कुमार धात्री संपत (द) धात्री संपत

(191) गर्भिणी को वस्ति किस अवस्था में देते है।
(अ) उत्तान (ब) न्युब्ज (स) दक्षिण पार्श्व (द) वाम पार्श्व

(192) वाग्भट्ट ने कितने छोडकर नाभिनाल छेदन बताया है।
(अ) 8 अंगुल (ब) 4 अंगुल (स) 6 अंगुल (द) 12 अंगुल

(193) असम्यक् नाभिनालछेदनजन्य रोग – आयाम, व्यायाम, उत्तुण्डिता, पिण्डलिका, विनामिका, विजृम्भिका किसने बताये हैं
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(194) चरकानुसार नवजात का रक्षा कर्म कितने दिन तक किया जाता है।
(अ) 10 दिन (ब) 12 दिन (स) 7 दिन (द) 6 दिन

(195) यकृत कौन सा गर्भोत्पादक भाव है।
(अ) पितृज (ब) मातृज (स) रसज (द) सत्वज

(196) चरकानुसार – रोमराजी भवेत निम्ना यस्याः – कौनसी संतान उत्पत्ति का लक्षण है।
(अ) यमक संतान (ब) नपुंसक संतान (स) पुत्र संतान (द) पुत्री संतान

(197) स्नायु, सिरा, रोम, बलवर्ण, नख, त्वचा की उत्पत्ति गर्भ के किस माह में होती है।
(अ) चर्तुथ (ब) पन्चम (स) षष्ठम (द) सप्तम

(198) शीतोदकेनोष्णोदकेन वा मुख परिषेकः। – का निर्देश कहाँ पर मिलता है।
(अ) मूर्च्छा में (ब) सन्यास में (स) प्राण प्रत्यागमन में (द) मदात्यय में

(199) गर्भाशय में अपरा गर्भाशय के किस भाग से जुडा रहता है।
(अ) ऊपरी भाग (ब) निचले भाग (स) मध्य भाग (द) कोई नहीं

(200) 'आवी' है।
(अ) सामान्य प्रसव वेदना (ब) दोषज प्रसव वेदना (स) गर्भाशय (द) जातकर्म

Model Test Papers (Answer Sheet) – चरक शारीर स्थान

1. C	21. C	41. B	61. D	81. A
2. B	22. D	42. D	62. B	82. C
3. D	23. D	43. B	63. C	83. B
4. B	24. D	44. B	64. D	84. D
5. D	25. B	45. A	65. A	85. B
6. D	26. D	46. B	66. A	86. B
7. D	27. B	47. A	67. B	87. D
8. A	28. B	48. B	68. B	88. B
9. D	29. B	49. C	69. D	89. D
10. A	30. A	50. B	70. C	90. D
11. D	31. C	51. D	71. B	91. B
12. C	32. A	52. C	72. C	92. D
13. C	33. D	53. B	73. C	93. C
14. A	34. D	54. B	74. C	94. B
15. D	35. C	55. B	75. B	95. D
16. D	36. A	56. A	76. C	96. B
17. A	37. B	57. C	77. B	97. C
18. B	38. A	58. A	78. D	98. D
19. B	39. D	59. A	79. A	99. B
20. D	40. A	60. B	80. D	100. A

101. A	121. B	141. D	161. C	181. C
102. A	122. A	142. A	162. D	182. A
103. D	123. D	143. A	163. D	183. D
104. A	124. B	144. B	164. A	184. B
105. A	125. C	145. B	165. D	185. C
106. C	126. D	146. B	166. A	186. B
107. B	127. C	147. C	167. D	187. C
108. A	128. B	148. B	168. C	188. C
109. C	129. D	149. C	169. C	189. A
110. C	130. D	150. D	170. D	190. A
111. B	131. C	151. D	171. A	191. B
112. C	132. A	152. B	172. B	192. B
113. D	133. B	153. D	173. A	193. A
114. D	134. C	154. C	174. B	194. D
115. C	135. D	155. B	175. D	195. B
116. A	136. A	156. C	176. C	196. A
117. A	137. A	157. A	177. A	197. C
118. B	138. C	158. A	178. D	198. C
119. B	139. D	159. A	179. A	199. A
120. A	140. C	160. A	180. A	200. A

Shyam-Vidya Ayurved P.G. Entrance Coaching Center, Bhopal (M.P.)
Model Test Papers – चरक इन्द्रिय स्थान
By- Dr. Neelima Singh Lodhi (M.D.) Mob. 09300961664, 9993961427

(1) चरक संहिता के कौनसे स्थान को 'अरिष्ट स्थान' कहा जाता है।
(अ) सूत्र स्थान (ब) शारीर स्थान (स) कल्प स्थान (द) इन्द्रिय स्थान

(2) 'इन्द्रिय स्थान' कौनसी संहिता में है।
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) अष्टांग हृदय (द) अष्टांग संग्रह

(3) चरक संहिता के इन्द्रिय स्थान में कुल कितने अध्याय हैं।
(अ) 08 (ब) 06 (स) 10 (द) 12

(4) चरक संहिता के इन्द्रिय स्थान के प्रथम अध्याय का नाम हैं।
(अ) वर्ण स्वरीय (ब) पन्नरूपीय (स) पूर्णरूपीयं (द) गोमय चूर्णीय

(5) चरक संहिता के इन्द्रिय स्थान के अन्तिम अध्याय का नाम हैं।
(अ) वर्ण स्वरीय (ब) पन्नरूपीय (स) पूर्णरूपीयं (द) गोमय चूर्णीय

(6) 'अरिष्ट' शब्द का क्या अर्थ है।
(अ) मृत्यु (ब) अशुभ (स) आत्मा (द) प्राण

(7) 'इन्द्र शब्देन आत्म उच्यते, तस्यान्तगर्तस्य लिंग रिष्टाख्यमिन्द्रियम्।' – किस आचार्य ने कहा है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) माधव (द) भावप्रकाश

(8) द्रव्यगुण विज्ञान के अनुसार 'अरिष्ट' किसका पर्याय है।
(अ) निम्ब (ब) रसोन (स) अरिष्टक (रीठा) (द) उपर्युक्त सभी

(9) 'रोगिणो मरणं यस्मादवश्यं भावि लक्ष्यते। तल्लक्षणमरिष्टं स्याद् रिष्टमप्यभिधीयते' – किस आचार्य ने कहा है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) माधव (द) भावप्रकाश

(10) 'नियतमरणख्यापकं लिंगम् अरिष्टम्।' – किस आचार्य का कथन है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) माधव (द) भावप्रकाश

(11) अरिष्ट भाव के 2 भेद – नियत और अनियत किसने बतलाये है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) डल्हण (द) माधव

(12) अरिष्ट के 2 भेद – पुरूषाश्रित और पुरूषानाश्रित किसने बतलाये है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) डल्हण (द) माधव

(13) चरकानुसार 'प्रकृति' के भेद है।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(14) चरकानुसार 'दोषज प्रकृति' के भेद है।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(15) चरकानुसार 'प्रत्यात्मनियता' किसका भेद है।
(अ) प्रकृति (ब) विकृति (स) अरिष्ट (द) नियति

(16) चरकानुसार 'विकृति' के भेद है।
(अ) 5 (ब) 4 (स) 3 (द) 2

(17) चरकानुसार "निमित्तानुरूपा" किसका भेद है।
(अ) प्रकृति (ब) विकृति (स) दोनों (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(18) वह विकृति जिसमें शरीर में पूर्वजन्मकृत कर्म के अनुरूप ही लक्षण उत्पन्न होते हो – है ?
(अ) लक्षणनिमित्ता (ब) लक्ष्यनिमित्ता (स) निमित्तानुरूपा (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(19) जिस विकृति का कारण स्पष्ट हो वह होता है ?
(अ) लक्षण निमित्ता (ब) लक्ष्यनिमित्ता (स) निमित्तानुरूपा (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(20) कौनसी विकृति रोगोत्पादक नहीं होती है ?
(अ) लक्षण निमित्ता (ब) लक्ष्यनिमित्ता (स) निमित्तानुरूपा (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(21) चरकानुसार कौनसी विकृति आयुषः प्रमाण ज्ञान कराती है।
(अ) लक्षणनिमित्ता (ब) लक्ष्यनिमित्ता (स) निमित्तानुरूपा (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(22) चरकानुसार प्राकृत वर्ण के भेद होते है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 7 (द) 8

(23) निम्न में कौनसा वर्ण प्राकृत वर्ण नहीं है।
(अ) कृष्ण (ब) श्याव (स) श्यामावदात (द) अवदात

(24) चरकानुसार विकृत वर्ण के भेद होते है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 7 (द) 8

(25) चरकानुसार 'झर्झर' के समान स्वर होता है।
(अ) प्राकृतिक (ब) वैकारिक (स) दोनों (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(26) चक्रपाणि के अनुसार अरिष्ट के भेद होते है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 5 (द) 7

(27) पुष्पित पुरूष कितनी समयावधि का अरिष्ट होता है।
(अ) 1 माह (ब) 3 माह (स) 6 माह (द) 1 वर्ष

(28) यदि किसी के शरीर से दिन रात फूलों की गन्ध आवे तो यह कितने दिन का अरिष्ट है।
(अ) 1 माह (ब) 7 दिन (स) 6 माह (द) 1 वर्ष

(29) गध द्रव्यों का लेप न किये जाने पर शरीर से गंध का आना यह कितने समय का अरिष्ट है।
(अ) 1 माह (ब) 7 दिन (स) 6 माह (द) 1 वर्ष

(30) शरीर से किसके समान गन्ध आना 'शुभ गन्ध" मानी जाती है।
(अ) चन्दन (ब) कुष्ठ (स) मधु (द) उपर्युक्त सभी

(31) पन्चेन्द्रिय अरिष्टों की परीक्षा कौनसे प्रमाण से करना चाहिए।
(अ) प्रत्यक्ष (ब) अनुमान (स) आप्तोपदेश (द) युक्ति

(32) जो रोगी प्राकृत अग्नि को विकृत वर्णो वाली देखता है, कितने समय बाद मर जाता है।
(अ) 7 दिन (ब) 7 रात्रि (स) 6 माह (द) 1 वर्ष

(33) चरकोक्त इन्द्रिय स्थान के किस अध्याय में स्वप्न के भेदों का वर्णन मिलता है।
(अ) वर्णस्वरीय (ब) गोमय चूर्णीय (स) पूर्णरूपीय (द) पन्नरूपीय

(34) चरकानुसार स्वप्न के भेद होते है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 7 (द) 8

(35) चरकानुसार स्वप्न का भेद नहीं है।
(अ) दृष्ट (ब) श्रुत (स) दोषज (द) कालज

(36) कौनसा स्वप्न निष्फल है।
(अ) प्रार्थित (ब) कल्पित (स) अनुभूत (द) उपर्युक्त सभी

(37) चरकानुसार 'शुभ और अशुभ' फल को देने वाला स्वप्न है।
(अ) दोषज (ब) भाविक (स) दोनों (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(38) चरकानुसार फलदायी स्वप्न होते है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 7 (द) 2

(39) दृष्टः प्रथमरात्रे यः स्वप्नः सो......................भवेत्।
(अ) निष्फलो (ब) ऽल्पफलो (स) महाफलः (द) सिद्धफलः

(40) काश्यपानुसार फलदायी स्वप्न के भेद होते है।
(अ) 6 (ब) 5 (स) 7 (द) 10

(41) काश्यपानुसार 'दिवास्वप्न' कौनसी श्रेणी का स्वप्न है।
(अ) फलदायी (ब) निष्फल (स) दोनों (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(42) 'पन्न' शब्द का क्या अर्थ है।
(अ) मृत्यु (ब) रूप (स) आत्मा (द) अरिष्ट

(43) "कुमारिका" किससे सम्बद्ध है।
(अ) नेत्र से (ब) कुमार से (स) आत्मा से (द) अरिष्ट से

(44) चरकानुसार संस्थान है ?
(अ) कोष्ठ (ब) आकृति (स) प्रमाण (द) निमित्त

(45) चरकानुसार 'सुषमा और विषमा' किसके भेद है।
(अ) संस्थान (ब) शरीर प्रमाण (स) छाया (द) प्रतिछाया

(46) चरकानुसार संस्थान के भेद होते है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 5 (द) 7

(47) मनुष्यों का शरीर प्रमाण कितने प्रकार का होता है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 5 (द) 7

(48) चरकोक्त इन्द्रिय स्थान के किस अध्याय में छाया और प्रभा भेदों का वर्णन मिलता है।
(अ) वर्णस्वरीय (ब) गोमय चूणीय (स) पूर्णरूपीय (द) पन्नरूपीय

(49) जल और दर्पण में जो प्रतिबिम्ब दिखलायी देता है उसे क्या कहते है।
(अ) छाया (ब) प्रतिच्छाया (स) आभा (द) प्रभा

(50) वर्ण और प्रभा पर आश्रित है ?
(अ) छाया (ब) प्रतिच्छाया (स) आभा (द) प्रभा

(51) चरकानुसार छाया भेद है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 7 (द) 8

(52) सप्रभा (प्रभा युक्त) छाया कौनसी होती है।
(अ) नाभसी (ब) वायवी (स) आग्नेयी (द) अम्भसी

(53) हतप्रभा (प्रभाहीन) छाया कौनसी होती है।
(अ) नाभसी (ब) वायवी (स) आग्नेयी (द) अम्भसी

(54) कौनसी छाया 'रोग, मृत्यु और क्लेश दायक' होती है।
(अ) नाभसी (ब) वायवी (स) आग्नेयी (द) अम्भसी

(55) 'दर्शनप्रिया' छाया कौनसी होती है।
(अ) नाभसी (ब) वायवी (स) आग्नेयी (द) अम्भसी

(56) 'शुद्धवैदूर्यविमला सुस्निग्धा' छाया कौनसी होती है।
(अ) नाभसी (ब) वायवी (स) आग्नेयी (द) अम्भसी

(57) 'श्याम और श्वेत' वर्ण की छाया कौनसी होती है।
(अ) नाभसी (ब) अम्भसी (स) आग्नेयी (द) पार्थिवी

(58) प्रभा की उत्पत्ति किससे होती है।
(अ) तैजस और आकाश से (ब) वायु और तैजस से (स) तैजस से (द) सभी महाभूत से

(59) प्रभा भेद है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 7 (द) 8

(60) निम्न में से प्रभा के प्रकार है।
(अ) रक्त, पीत (ब) हरित, पाण्डु, असित (स) श्वेत, श्याव (द) उपर्युक्त सभी

(61) छाया के संदर्भ में कौनसा कथन सत्य है ?
(अ) छाया वर्ण को आक्रान्त कर आच्छादित करती है (ब) यह वर्ण और प्रभा पर आश्रित है
(स) यह नजदीक से दिखती है और इसके 5 भेद होते है (द) उपर्युक्त सभी

(62) प्रभा के संदर्भ में कौनसा कथन सत्य है ?
(अ) प्रभा की उत्पत्ति केवल तैजस महाभूत से होती है (ब) प्रभा वर्ण को प्रकाशित करती है
(स) यह दूर से दिखती देती है और इसके 7 भेद होते है (द) उपर्युक्त सभी

(63) उत्थाप्यमानः शयनात्प्रमोहं याति यो नरः – जो मनुष्य नींद से जगाने पर भी पुनः पुनः मूर्छित हो जाये वह अरिष्ट है
(अ) 10 दिन का (ब) 7 दिन का (स) 15 दिन का (द) 3 दिन का

(64) जिस मनुष्य के अनुलोम एवं प्रतिलोम मार्ग में होने वाले रोग आपस में परस्पर मिल जायें तथ ग्रहणी विकृत हो जाए तो वह रोगी कितने दिन तक जीवित रहता है।
(अ) 10 दिन का (ब) 7 दिन का (स) 15 दिन का (द) 3 दिन का

(65) जिस मनुष्य के शिर के बालों को खींचकर उखाड़ लेने पर किसी प्रकार की वेदना का अनुभव न हो, यह कितने समयावधि का अरिष्ट है।
(अ) 6 रात्रि का (ब) 7 रात्रि का (स) 15 रात्रि का (द) 3 रात्रि का

(66) चरकानुसार महारोगो की संख्या है।
(अ) 4 (ब) 8 (स) 10 (द) 12

(67) सुश्रुतानुसार महारोगो की संख्या है।
(अ) 4 (ब) 8 (स) 10 (द) 12

(68) चरकोक्त अष्टमहारोगो मे शामिल नही है।
(अ) कुष्ट (ब) प्रमेह (स) रक्तपित्त (द) उदररोग

(69) सुश्रुतोक्त अष्टमहारोगो मे शामिल नही है।
(अ) कुष्ट (ब) प्रमेह (स) मूढगर्भ (द) ग्रहणी

(70) वाग्भट्टानुसार अष्टमहारोगो मे शामिल नही है।
(अ) कुष्ट (ब) प्रमेह (स) मूढगर्भ (द) ग्रहणी

(71) .... च मधुमेही च राजयक्ष्मा च यो नरः। अचिकित्सा भवन्त्येते बलमांसक्षये सति। (च. इ. 9/8)
(अ) गुल्मी (ब) पाण्डु (स) वातव्याधि (द) कुश्ठी

...AYURVEDA ...MA SINGH LO...

(72) चरकोक्त इन्द्रिय स्थान के किस अध्याय में अष्टमहारोगो का वर्णन मिलता है।
(अ) यस्य श्यावनिमित्तीय (ब) गोमय चूणीय (स) पूर्णरूपीय (द) पन्नरूपीय

(73) किस रोग में त्रिरात्रि में मृत्यु हो जाती है।
(अ) सूर्यावर्त्त (ब) अनन्तवात (स) अर्द्धावभेदक (द) शंखक

(74) बलमांसक्षयस्तीव्रो रोगवृद्धिररोचकः। यस्यातुरस्य लक्ष्यन्ते – कितनी समयावधि का अरिष्ट है।
(अ) 1 पक्ष (ब) 2 पक्ष (स) 3 पक्ष (द) 4 पक्ष

(75) 'सद्योमरण' का अर्थ सप्तरात्र से त्रिरात्र में मृत्यु होना – ऐसा किस आचार्य ने कहा है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) माधव (द) भावप्रकाश

(76) पुष्पित व्यक्ति कितनी समयावधि का अरिष्ट है ?
(अ) 1 माह (ब) 3 माह (स) 6 माह (द) 1 वर्ष

(77) अरून्धती तारे का दिखाई न देना ।– कितनी समयावधि का अरिष्ट/मृत्युसूचक होता है।
(अ) 1 माह (ब) 3 माह (स) 6 माह (द) 1 वर्श

(78) जिस व्यक्ति के हाथों से दी हुई बलि खाने वाले जीवन नहीं खाते है। – पुरूष कितनी समयावधि का मर जाता है।
(अ) 1 माह (ब) 3 माह (स) 6 माह (द) 1 वर्ष

(79) जिस व्यक्ति सभी आग्नेय भाव (जठराग्नि, कान्ति, पित्त, प्रभा) नष्ट हो गए हो वह कितनी समयावधि का मर जाता है
(अ) 1 माह (ब) 3 माह (स) 6 माह (द) 1 वर्ष

(80) ललाट में धमनियों का अत्यंत सुंदर जाल शोभायमान हो जाना – कितनी समयावधि का अरिष्ट होता है
(अ) 1 माह (ब) 3 माह (स) 6 माह (द) 1 वर्ष

(81) जिस व्यक्ति की इच्छा, अभ्यास, स्मरणशक्ति, त्याग, बुद्धि और बल – ये सब अकारण ही नष्ट हो गये हो – वह व्यक्ति कितनी समयावधि तक जीवित रह पाता है।
(अ) 1 माह (ब) 3 माह (स) 6 माह (द) 1 वर्ष

(82) जिस व्यक्ति के हस्त, पाद और मुख में शुष्क हो गये हो किन्तु शेष शरीर यथावत हो – वह व्यक्ति कितनी समयावधि तक जीवित रह पाता है।
(अ) 1 माह (ब) 3 माह (स) 6 माह (द) 1 वर्ष

(83) मल, मूत्र और शुक्र का पानी में डालने पर डूब जाना – कितनी समयावधि का अरिष्ट होता है।
(अ) 1 माह (ब) 3 माह (स) 6 माह (द) 1 वर्ष

(84) गोमचयूर्णाभं चूर्ण मूर्धनि जायते। – जिसके शिर में गोबर के चूर्ण की तरह चूर्ण उत्पन्न हो जाए और गिरता हो तो वह कितनी समयावधि का अरिष्ट होता है।
(अ) 1 माह (ब) 3 माह (स) 6 माह (द) 1 वर्ष

(85) चरकानुसार स्नान करके चन्दन आदि का लेपन करने के बाद जिसका पहले उर प्रदेश (वक्षःस्थल) का भाग सूखता है और शेष अंग आर्द्र रहते हैं तो ऐसा व्यक्ति कितनी समयावधि तक जीवित रह पाता है।
(अ) 1 माह (ब) 15 दिन (स) 6 माह (द) 1 वर्ष

(86) सुश्रुतानुसार यदि कोई व्यक्ति स्नान करके चन्दन आदि का लेपन करने के बाद उसका .... भाग पहले सूखता है। और शेष अंग आर्द्र रहते हैं तो ऐसा व्यक्ति 15 दिन तक ही जीवित रह पाता है।
(अ) उरः प्रदेश (ब) ऊर्ध्व प्रदेश (स) हृदय प्रदेश (द) कुक्षि प्रदेश

(87) काश्यपानुसार यदि कोई व्यक्ति स्नान करके चन्दन आदि का लेपन करने के बाद उसका .... भाग पहले सूखता है और शेष अंग आर्द्र रहते हैं तो ऐसा व्यक्ति 15 दिन तक ही जीवित रह पाता है।
(अ) उरः प्रदेश (ब) ऊर्ध्व प्रदेश (स) हृदय प्रदेश (द) कुक्षि प्रदेश

(88) चरकोक्त इन्द्रिय स्थान के किस अध्याय में मार्गगत के अरिष्ट का वर्णन मिलता है।
(अ) वर्णस्वरीय (ब) गोमय चूणीय (स) पूर्णरूपीय (द) पन्नरूपीय

(89) चरकोक्त इन्द्रिय स्थान के किस अध्याय में दूतगत के अरिष्ट का वर्णन मिलता है।
(अ) वर्णस्वरीय (ब) गोमय चूणीय (स) पूर्णरूपीय (द) पन्नरूपीय

(90) चरकोक्त इन्द्रिय स्थान के किस अध्याय में मार्गगत के अरिष्ट का वर्णन मिलता है।
(अ) वर्णस्वरीय (ब) गोमय चूणीय (स) पूर्णरूपीय (द) पन्नरूपीय

(91) चरकोक्त इन्द्रिय स्थान के किस अध्याय में शुभ – अशुभ सूचक शाकुन का वर्णन मिलता है।
(अ) वर्णस्वरीय (ब) गोमय चूणीय (स) पूर्णरूपीय (द) पन्नरूपीय

(92) चरकोक्त इन्द्रिय स्थान के किस अध्याय में शुभ – अशुभ सूचक स्वप्नों का वर्णन मिलता है।
(अ) वर्णस्वरीय (ब) गोमय चूणीय (स) पूर्णरूपीय (द) पन्नरूपीय

(93) सुश्रुत संहिता के किस स्थान में अरिष्ट संबंधी वर्णन है।
(अ) सूत्रस्थान (ब) चिकित्सास्थान (स) शारीरस्थान (द) इन्द्रियस्थान

(94) अष्टांग हृदय के किस स्थान में अरिष्ट संबंधी वर्णन है।
(अ) सूत्रस्थान (ब) चिकित्सास्थान (स) शारीरस्थान (द) इन्द्रियस्थान

(95) 'विकृति विज्ञान' कौनसी संहिता का अध्याय है।
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) काश्यप संहिता (द) अष्टांग हृदय

(96) अष्टांग हृदय के शारीर स्थान के कुल कितने अध्यायों मे अरिष्ट संबंधी वर्णन है।
(अ) 2 (ब) 6 (स) 8 (द) 12

(97) सुश्रुत संहिता के सूत्र स्थान के कुल कितने अध्यायों मे अरिष्ट संबंधी वर्णन है।
(अ) 2 (ब) 6 (स) 8 (द) 12

(98) चरक संहिता के इन्द्रिय स्थान में अरिश्ट संबंधी कुल कितने अध्यायों का वर्णन है।
(अ) 2 (ब) 6 (स) 8 (द) 12

(99) 'इन्द्रिय स्थान' कौनसी संहिता में है।
(अ) चरक संहिता (ब) काश्यप संहिता (स) भेल संहित (द) उपर्युक्त सभी

(100) 'अरिष्ट' भाब्द की निरूक्ति का वर्णन कौनसी संहिता में है।
(अ) चरक संहिता (ब) काश्यप संहिता (स) भेल संहित (द) उपर्युक्त सभी

SHRI VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER BHOPAL
DR. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

Model Test Papers (Answer) – चरक इन्द्रिय स्थान

1. D	21. C	41. B	61. D	81. C
2. A	22. A	42. A	62. D	82. C
3. D	23. B	43. A	63. B	83. A
4. A	24. C	44. B	64. C	84. A
5. D	25. B	45. A	65. A	85. B
6. C	26. A	46. A	66. B	86. C
7. B	27. D	47. B	67. B	87. D
8. D	28. D	48. D	68. D	88. B
9. D	29. D	49. B	69. D	89. B
10. C	30. D	50. A	70. C	90. B
11. B	31. B	51. B	71. A	91. B
12. A	32. B	52. A	72. A	92. B
13. B	33. C	53. B	73. D	93. A
14. C	34. C	54. B	74. C	94. C
15. A	35. D	55. C	75. B	95. D
16. C	36. D	56. D	76. D	96. A
17. B	37. C	57. D	77. D	97. B
18. A	38. D	58. C	78. D	98. D
19. B	39. B	59. C	79. D	99. D
20. B	40. A	60. D	80. C	100. A

Shyam-Vidya Ayurved P.G. Entrance Coaching Center, Bhopal (M.P.)

Model test papers – चरक चिकित्सा

By- Dr. Neelima Singh Lodhi (M.D.) Mob. - 09993961427, 09826438399

(1) चरक संहिता चिकित्सा स्थान के रसायन अध्याय के प्रथम पाद का क्या नाम है।
(अ) अभयामलकीय (ब) प्राणकामीय (स) करप्रचितीय (द) आयुर्वेद समुत्थानीय

(2) चरक संहिता के रसायन अध्याय में कुल कितने रसायन योगों का उल्लेख मिलता है।
(अ) 50 (ब) 60 (स) 63 (द) 36

(3) चरक संहिता में अभयामलकीय रसायन पाद में कुल कितने रसायन योगों का वर्णन है।
(अ) 6 (ब) 37 (स) 4 (द) 16

(4) चरक संहिता चिकित्सा स्थान के रसायन अध्याय के चतुर्थ पाद का क्या नाम है।
(अ) अभयामलकीय (ब) प्राणकामीय (स) करप्रचितीय (द) आयुर्वेद समुत्थानीय

(5) करप्रचितीय रसायन पाद में कुल कितने रसायन योगों का वर्णन है।
(अ) 6 (ब) 37 (स) 4 (द) 16

(6) चरकोक्त रसायन अध्याय के कौनसे पाद में 'च्यवनप्राश रसायन' का उल्लेख मिलता है।
(अ) अभयामलकीय (ब) प्राणकामीय (स) करप्रचितीय (द) आयुर्वेद समुत्थानीय

(7) चरकोक्त रसायन अध्याय के कौनसे पाद में '4 मेध्य रसायन' का उल्लेख मिलता है।
(अ) अभयामलकीय (ब) प्राणकामीय (स) करप्रचितीय (द) आयुर्वेद समुत्थानीय

(8) चरकोक्त रसायन अध्याय के कौनसे पाद में 'भल्लातक रसायन' का उल्लेख मिलता है।
(अ) अभयामलकीय (ब) प्राणकामीय (स) करप्रचितीय (द) आयुर्वेद समुत्थानीय

(9) चरकोक्त रसायन अध्याय के कौनसे पाद में 'आचार रसायन' का उल्लेख मिलता है।
(अ) अभयामलकीय (ब) प्राणकामीय (स) करप्रचितीय (द) आयुर्वेद समुत्थानीय

(10) 'स्वस्थस्योर्जस्करं' क्या है ?
(अ) रसायन (ब) वाजीकरण (स) दोनों (द) कोई नहीं

(11) प्रयोग भेद से रसायन के कितने भेद होते है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 5 (द) 7

(12) निम्नलिखित में से कौन–सा एक रसायन के प्रकार के रूप में वर्गीकृत नहीं है।
(अ) मेध्य (ब) काम्य (स) नैमित्तिक (द) आजस्रिक

(13) रसायनं च तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशनम्। – किस आचार्य का कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंर्ग्धर

(14) दीर्घमायुः स्मृतिं मेधामारोग्यं तरूणं वयः। – किसकी फलश्रुति है।
(अ) रसायन (ब) बाजीकरण (स) च्वयन प्राश (द) शिलाजतु

(15) मेधां स्मृति कान्तिमनामयत्वमायुः प्रकर्ष बलमिन्द्रियाणाम्। – किसकी फलश्रुति है।
(अ) रसायन (ब) बाजीकरण (स) च्वयन प्राश (द) शिलाजतु

(16) बाजीकरण द्रव्यों के प्रयोग से शरीर में कौनसे गुणों की वृद्धि होती है।
(अ) सात्विक गुण (ब) राजस गुण (स) तामस (द) उपर्युक्त सभी

(17) हरीतकी में कौनसा रस नहीं होता है।
(अ) अम्ल (ब) लवण (स) मधुर (द) तिक्त

(18) 'पञ्चरसामुष्णामलवणां शिवाम्' – के लिये कहा गया है।
(अ) आमलकी (ब) हरीतकी (स) लशुन (द) मद्य

(19) 'सर्वान् रसान्लवणवर्जितान्' – के लिये कहा गया है।
(अ) आमलकी (ब) हरीतकी (स) लशुन (द) मद्य

(20) "वयसः स्थापनीं पराम्" .... के लिये कहा गया है।
(अ) आमलकी (ब) हरीतकी (स) ब्राह्मी (द) अमृता

(21) स्मृतिबुद्धिप्रमोहं च जयेच्छीघ्रं ....।
(अ) आमलकी (ब) हरीतकी (स) शंखपुष्पी (द) पिप्पली रसायन

(22) चरकानुसार किस रोग में हरीतकी सेवन का निषेध है।
(अ) अजीर्ण (ब) शोथ (स) अर्श (द) अतिसार

(23) 'पंचपंचमूल' का सर्वप्रथम उल्लेख किसमें मिलता है।
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) अष्टांग हृदय (द) अष्टांग संग्रह

(24) 'पंचपंचमूल' का सर्वप्रथम विस्तृत वर्णन किसमें मिलता है।
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) अष्टांग हृदय (द) अष्टांग संग्रह

(25) ब्रह्मरसायन प्रथम में आमलकी और हरीतिकी का अनुपात होता है।
(अ) 1 : 3 (ब) 3 : 1 (स) 1 : 5 (द) 5 : 1

(26) चरकोक्त 'ब्रह्मरसायन प्रथम' में कौनसा पंचमूल नहीं होता है।
(अ) मध्यम पंचमूल (ब) वल्ली पंचमूल (स) वृहत पंचमूल (द) जीवनीय पंचमूल

(27) चरकोक्त च्यवनप्राश में ऑवलों की संख्या =
(अ) 300 (ब) 200 (स) 500 (द) 1000

(28) चरकोक्त च्यवनप्राश में अष्टवर्ग में से कितने द्रव्य शामिल नही है।
(अ) 7 (ब) 5 (स) 3 (द) 1

(29) कौनसे रसायन के सेवन काल में अन्न निषिद्ध है ?
(अ) आमलक रसायन (ब) ब्रह्म रसायन (स) भल्लातक रसायन (द) अ, स दोनों

(30) चरक ने आमलक रसायन सेवन की कितनी विधियॉ बतायी है।
(अ) 2 (ब) 5 (स) 4 (द) 3

(31) नागबला का संग्रह किस ऋतु में करना चाहिए।
(अ) ग्रीष्म ऋतु (ब) शरद ऋतु (स) हेमन्त ऋतु (द) बसन्त ऋतु

(32) चरकानुसार 'भल्लातक' का संग्रह किस माह में करना चाहिए।
(अ) ग्रीष्म ऋतु (ब) शरद ऋतु (स) हेमन्त ऋतु (द) बसन्त ऋतु

(33) भल्लातक रसायन योग का प्रारम्भ कितने भिलावों से होता है।
(अ) 1 (ब) 5 (स) 10 (द) 50

(34) वर्द्धमान पिप्पली रसायन योग का प्रारम्भ कितनी पिप्पलियों से होता है।
(अ) 1 (ब) 5 (स) 10 (द) 50

(35) भल्लातक रसायन का प्रयोग चरक द्वारा किस रोग की चिकित्सा में निर्देशित है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) रक्तज

(36) चरकोक्त भल्लातक के 10 योगों में शामिल नहीं है।
(अ) भल्लातक यवागू (ब) भल्लातक क्षार (स) भल्लातक पेया (द) उपर्युक्त सभी

(37) 'श्रुतधारी' कौनसे चरकोक्त रसायन के सेवन का फल है।
(अ) ब्रह्मरसायन (ब) ऐन्द्र रसायन (स) लौह रसायन (द) पिप्पली रसायन

(38) चरकोक्त 4 मेध्य रसायनों में श्रेष्ठ होता है।
(अ) मण्डूक पर्णी (ब) गुडूची (स) मधुयष्ठी (द) शंखपुष्पी

(39) चरकोक्त 4 मेध्य रसायनों में से गुडूची रसायन का अनुपान है।
(अ) दुग्ध (ब) घृत (स) मधु (द) शीतल जल

(40) चरकोक्त पिप्पली रसायन का रोगाधिकार है।
(अ) विषमज्वर (ब) प्लीहोदर (स) गरविष (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(41) चरकोक्त वर्धमान पिप्पली रसायन रोगाधिकार है।
(अ) विषमज्वर (ब) प्लीहोदर (स) गरविष (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(42) मध्यम बल वाले आतुर में वर्धमानपिप्पलीरसायन सेवन हेतु पिप्पली के कौनसे स्वरूप का प्रयोग करते है
(अ) स्वरस (ब) कल्क (स) क्वाथ (द) चूर्ण

(43) चरकानुसार अवर बल वाले आतुर में वर्धमानपिप्पलीरसायन सेवन कितने दिनों तक करना चाहिए ?
(अ) 3 (ब) 5 (स) 7 (द) 10

(44) चरकानुसार शिलाजतु का रस होता है।
(अ) अनम्लं एंव कषायं (ब) कटु (स) तिक्त (द) स्वादु

(45) नात्युष्णशीतं वीर्य होता है।
(अ) शिलाजतु (ब) पिप्पली (स) रक्त (द) उपर्युक्त सभी

(46) चरकानुसार शिलाजतु के भेद है।
(अ) 6 (ब) 4 (स) 8 (द) 3

(47) चरकानुसार कौनसा शिलाजतु श्रेष्ठ होता है।
(अ) स्वर्ण (ब) रजत (स) ताम्र (द) लौह

(48) चरकानुसार कौनसा शिलाजतु उष्ण वीर्य वाला होता है।
(अ) स्वर्ण (ब) रजत (स) ताम्र (द) लौह

(49) चरकानुसार कौनसा शिलाजतु कफपित्तज शामक होता है।
(अ) स्वर्ण (ब) रजत (स) ताम्र (द) लौह

(50) चरकानुसार शिलाजतु सेवन काल में अपथ्य है।
(अ) विदाही अन्नपान (ब) कुलत्थ (स) काकमाची (द) अ, ब दानों

(51) चरकानुसार शिलाजतु की अवर, मध्यम और उत्तम मात्रा कमशः होती है।
(अ) 1 पल, ½ पल, 1 कर्ष (ब) 2 पल, 1 पल, ½कर्ष
(स) 1 पल, ½ पल, ¼ कर्ष (द) 1 कर्ष, ½ पल, 1 पल

(52) चरकानुसार द्रोणीप्रावेशिक रसायन की 9 औषध में शामिल नहीं है।
(अ) ब्रह्मसुवर्चला (ब) नारी (स) सोम (द) वासा

(53) आचार रसायन में कितने द्रव्य होते है।
(अ) 2 (ब) 16 (स) 21 (द) 36

(54) कौनसा मिलाप सही है ?
(अ) चरक – चंदन रसायन (ब) सुश्रुत – गंभारी रसायन
(स) वाग्भट्ट – चित्रक रसायन (द) उपर्युक्त सभी

(55) "शीघ्र मेधाग्निवर्धनम्" किस रसायन द्रव्य के लिये कहा गया है।
(अ) शंखपुष्पी (ब) मण्डूकपर्णी (स) भल्लातक (द) पिप्पली रसायन

(56) निम्न में से कौनसा चरकोक्त भल्लातक रसायन नही है।
(अ) भल्लातक सर्पि, भल्लातक क्षीर (ब) भल्लातक क्षौद्र, भल्लातक गुड
(स) भल्लातक आसव, भल्लातक अवलेह (द) भल्लातक पलल, भल्लातक लवण

(57) चरकानुसार निम्नलिखित में से कौन–सा एक रसायन का कल्प प्रयोग नहीं होता है।
(अ) पिप्पली (ब) भल्लातक (स) शिलाजतु (द) त्रिफला

(58) चरकानुसार पिप्पली में रसायन गुण लाने के लिए किसकी भावना देते है।
(अ) आमलकी स्वरस (ब) किंशुक क्षार (स) गूडूची स्वरस (द) भल्लातक क्षार

(59) चरकोक्त त्रिफला रसायन प्रथम में विभीतक के प्रयोग का समय हैं ?
(अ) भोजन के पूर्व (ब) भोजन के बाद (स) भोजन जीर्ण होने पर (द) भोजन के मध्य

(60) चरकानुसार त्रिफला रसायन के अंतर्गत निम्न में से कौनसा द्रव्य भोजनोपरान्त लेना चाहिए।
(अ) 1 हरीतकी (ब) 2 विभीतकी (स) 4 आमलकी (द) 2 आमलकी

(61) सुश्रुत एवं वाग्भट्टानुसार शिलाजतु का रस होता है ?
(अ) अनम्लं कषाय (ब) तिक्त, कटु (स) तिक्त कषाय (द) इनमें से कोई नहीं

(62) सुश्रुतानुसार शिलाजतु का अनुरस होता है ?
(अ) अम्ल (ब) तिक्त (स) कषाय (द) कटु

(63) चरकानुसार कौनसा शिलाजतु मधुर विपाक वाला होता है।
(अ) स्वर्ण शिलाजतु (ब) रजत शिलाजतु (स) ताम्र शिलाजतु (द) लौह शिलाजतु

(64) 'सोम' का औषध का सर्वप्रथम उल्लेख किसमें मिलता है।
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) अष्टांग हृदय (द) अष्टांग संग्रह

(65) आचार रसायन में कितने औषध द्रव्य होते है।
(अ) 2 (ब) 16 (स) 21 (द) कोई नहीं

(66) 100 gm आमलकी में Vit C की मात्रा कितनी होती है ?
(अ) 100 gm (ब) 700 mg (स) 200 mg (द) 400 mg

(67) मधुयष्ठी किसमें Contraindicated है ?
(अ) Blood pressure (ब) kidney disease (स) liver cirrhosis (द) All

(68) कौनसी औषध का प्रयोग चरकोक्त रसायन एंव वाजीकरण योग के रूप में दोनों में वर्णित है।
(अ) माष (ब) मुलेठी (स) बला (द) अश्वगंधा

(69) श्रेष्ठ रसायन है ?
(अ) ब्रह्मरसायन (ब) ऐन्द्र रसायन (स) मेध्य रसायन (द) आचार्य रसायन

(70) अष्टांग हृदयाकार अनुसार "शरीरक्षयरक्षार्थ" है।
(अ) रसायन (ब) वाजीकरण (स) दोनों (द) कोई नहीं

(71) सर्वश्रेष्ठ वाजीकरण है।
(अ) संकल्प (ब) नक्रेतस (स) स्त्री (द) दुग्ध

(72) चरकोक्त बाजीकरण अध्याय के माषपर्णभृतीय पाद में कौनसी गाय का दुग्ध बाजीकारक बताया गया है।
(अ) श्वेता (ब) कृष्णा (स) रोहिणी (द) कृष्णा, रोहिणी

(73) चरक ने शुक्र क्षीणता के कितने कारण बतलायें है।
(अ) 6 (ब) 8 (स) 11 (द) 5

(74) वृष्य द्रव्यों के तीन भेद – शुक्रवृद्धिकर, स्रुतिकर और शुक्रस्रुतिकर – किस आचार्य ने बतलाये है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) शारंर्गधर (द) भावप्रकाश

(75) चरकानुसार स्त्री सहवास योग्य आयु बतलायी है।
(अ) 16–80 वर्ष (ब) 16–70 वर्ष (स) 18–70 वर्ष (द) 18–80 वर्ष

(76) शुक्र स्तम्भक है ?
(अ) हरीतकी (ब) बृहती (स) उशीर (द) जातीफल

(77) शुक्रशोषक है ?
(अ) हरीतकी (ब) बृहती (स) उशीर (द) जातीफल

(78) चरकोक्त बाजीकरण अध्याय कुल कितने बाजीकरण योगों का उल्लेख मिलता है।
(अ) 50 (ब) 60 (स) 62 (द) 36

(79) चरकोक्त बाजीकरण अध्याय के माषपर्णभृतीय पाद में कितने बाजीकरण योगों का उल्लेख मिलता है।
(अ) 12 (ब) 8 (स) 15 (द) 50

(80) 'अपत्यकर घृत' का वर्णन चरकोक्त बाजीकरण अध्याय के कौनसे पाद में मिलता हैं।
(अ) संयोगाशर मूलीय (ब) आसिक्तक्षीरीय (स) माषपर्णभृतीय (द) पुमानजातबलादिकं

(81) 'बृंहणी गुटिका' का वर्णन चरकोक्त बाजीकरण अध्याय के कौनसे पाद में मिलता हैं।
(अ) संयोगाशर मूलीय (ब) आसिक्तक्षीरीय (स) माषपर्णभृतीय (द) पुमानजातबलादिकं

(82) अपत्यकर स्वरस का वर्णन चरकोक्त बाजीकरण अध्याय के कौनसे पाद में मिलता हैं।
(अ) संयोगाशर मूलीय (ब) आसक्तक्षीरीय (स) माषपर्णभृतीय (द) पुमानजातबलादिकं

(83) अपत्यकर स्वरस का घटक द्रव्य नहीं हैं।
(अ) केवांच (ब) उड़द (स) शतावरी (द) विदारीकन्द

(84) चरक शुक्र स्राव के कितने कारण बतलाये है।
(अ) 6 (ब) [illegible] (स) 11 (द) 5

(85) चरतो विश्वरूपस्य रूपद्रव्यं यदुच्युते। – [illegible] है।
(अ) शुक्र (ब) आत्मा (स) मन (द) ओज

(86) तत् त्रिविधं जनकं प्रवर्तकं जनकप्रवर्तकं चेति – वृष्य द्रव्यों के उपर्युक्त तीन प्रकार किस आचार्य ने बतलाए है
(अ) चक्रपाणि (ब) डल्हण (स) वाग्भट्ट (द) हारीत

(87) "संकल्प" कौनसे प्रकार वृष्य द्रव्यों का उदाहरण है।
(अ) शुक्रवृद्धिकर (ब) शुक्रस्रुतिकर (स) शुक्रवृद्धिस्रुतिकर (द) इनमें से कोई नहीं

(88) "क्षीर" कौनसे प्रकार वृष्य द्रव्यों का उदाहरण है।
(अ) शुक्रवृद्धिकर (ब) शुक्रस्रुतिकर (स) शुक्रवृद्धिस्रुतिकर (द) इनमें से कोई नहीं

(89) कौनसे वृष्य द्रव्य 'देहमनोबलकर' होते है।
(अ) शुक्र जनक (ब) शुक्र प्रवर्तक (स) शुक्र जनकप्रवर्तक (द) इनमें से कोई नहीं

(90) शारंर्गधर के अनुसार 'भल्लातक फल मज्जा' होती है।
(अ) शुक्र जनक (ब) शुक्र प्रवर्तक (स) शुक्रलं (द) शुक्र स्तम्भक

(91) ज्वर को 'रोगपति' की संज्ञा किसने दी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) भेल

(92) चरकानुसार कौनसे विषम ज्वर का दूष्य मेद धातु होती है।
(अ) संन्तत (ब) सतत (स) अन्येद्युष्क (द) चतुर्थक ज्वर

(93) चरकानुसार चतुर्थक विपर्यय ज्वर का दूष्य कौनसी धातु होती है।
(अ) मेद (ब) अस्थि (स) मज्जा (द) ब, स दोनों

(94) चरकानुसार तृतीयक ज्वर का अधिष्ठान होता है।
(अ) आमाशय (ब) नाभि (स) उरः (द) कण्ठ

(95) चरकानुसार अन्येद्युष्क ज्वर का अधिष्ठान होता है।
(अ) आमाशय (ब) नाभि (स) उरः (द) कण्ठ

(96) निष्प्रत्नीक ज्वर कहलाता है।
(अ) सन्तत (ब) सतत (स) तृतीयक (द) विषम ज्वर

(97) दूष्यों में रूपांतरण होता है।
(अ) विषम ज्वर में (ब) वातरक्त में (स) अंर्तवेग, बर्हिवेग ज्वर (द) उपर्युक्त सभी

(98) जीर्णज्वराणां सर्वेषा .... प्रशमनं परम्।
(अ) लघंन (ब) पयः (स) सर्पि (द) कषाय

(99) 'कफस्थानानुपूर्व्या' चिकित्सा की जाती है।
(अ) सन्निपातज ज्वर में (ब) मदात्य में (स) लीन गर्भ में (द) अ, ब दोनों में

(100) ज्वर के संदर्भ में चरक ने "भिषग्जितम्" संज्ञा किसे दी है।
(अ) लघंन (ब) पयः (स) सर्पि (द) कषाय

(101) चरकानुसार 'विरेकवमने चाभे प्रकूजनम्'– कौनसे धातुगत ज्वर का लक्षण है।
(अ) मेद (ब) अस्थि (स) मज्जा (द) शुक्र

(102) चरकानुसार 'बहिः शैत्यं दाहोऽन्तश्च'– कौनसे धातुगत ज्वर का लक्षण है।
(अ) मेद (ब) अस्थि (स) मज्जा (द) शुक्र

(103) चरकानुसार कौनस धातुगत ज्वर असाध्य होता है।
(अ) मेद (ब) अस्थि (स) मज्जा (द) शुक्र

(104) चरकानुसार अभिषंगज ज्वर होता है।
(अ) वातज (ब) वायु, दुष्ट शोणित (स) वात, पित्त जन्य (द) सन्निपातज

(105) चरकानुसार अभिघातज ज्वर होता है।
(अ) वातज (ब) वायु, दुष्ट शोणित (स) वात, पित्त जन्य (द) सन्निपातज

(106) चरकानुसार 'ज्वरवेगोऽधिकस्तृष्णा प्रलापः श्वसनः भ्रमः'– कौनसे ज्वर का लक्षण है।
(अ) आमज (ब) पच्यमान (स) निराम (द) अर्न्तवेगी

(107) चरकानुसार 'बहुमूत्रता'– किसका का लक्षण है।
(अ) आमज ज्वर (ब) आमवात (स) निराम ज्वर (द) अ, ब दोनों

(108) नवज्वर में किसका निषेध नहीं है।
(अ) कषाय रस (ब) प्रवात (स) कषाय कल्पना (द) स्नान

(109) चरक ने ज्वर में कितने दिन बाद औषध पान का निर्देश दिया है।
(अ) 6 (ब) 7 (स) 10 (द) 21

(110) चरक ने ज्वर में कितने दिन बाद घृतपान का निर्देश दिया है।
(अ) 6 (ब) 7 (स) 10 (द) 21

(111) चरकानुसार पुनरावर्तक ज्वर में देय वस्ति है।
(अ) निरूह (ब) अनुवासन (स) उत्तर (द) यापना

(112) चरकानुसार पटोल, सारिवा, मुस्त, पाठा, कटुकरोहिणी का कषाय – कौनसे विषम ज्वर की चिकित्सा है।
(अ) सन्तत (ब) सतत (स) अन्येद्युष्क (द) चतुर्थक ज्वर

(113) ज्वर चिकित्सा के संदर्भ में चरक ने नस्य का उल्लेख किस नाम से किया है।
(अ) नावन (ब) शिरोविरेचन (स) अवपीड (द) मूर्धविरेचनम्

(114) ज्वर चिकित्सा के संदर्भ में रूद्र पूजा उल्लेख किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) हारीत (द) भेल

(115) सुश्रुतानुसार कौनसे ज्वर में विषहर चिकित्सा की जाती है।
(अ) पुनरावर्तक ज्वर (ब) अभिषंगज (स) अभिन्यास (द) प्रलेपक

(116) चरकानुसार ज्वर में कौनसे स्रोतस अवरूद्ध होते है।
(अ) रसवह (ब) स्वेदवह (स) प्राणवह (द) अ, ब दोनों

(117) ज्वर का एक मात्र लक्षण है ?
(अ) देह संताप (ब) देहेन्दियमनस्तापकरः (स) सन्तापो देह मानसः (द) सन्ताप

(118) ज्वर का प्रत्यात्मिक लक्षण है ?
(अ) देह संताप (ब) देहेन्दियमनस्तापकरः (स) सन्तापो देह मानसः (द) सन्ताप

(119) 'नान्ये व्याध्यस्तथा दारूणा बहुपद्रवा दुश्चिकित्स्याश्च।' – किसके लिए कहा गया है।
(अ) ज्वर (ब) यक्ष्मा (स) रक्तपित्तं (द) प्रमेह

(120) जीर्णज्वर में घृत अपने किस गुण के कारण कफ का शमन करता है।
(अ) स्नेहत्व (ब) शीतत्व (स) सूक्ष्म (द) संस्कारवाही

(121) रक्तपित्त को "लोहितपित्त" की संज्ञा किसने दी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) माधव

(122) चरकानुसार रक्तपित्त की गतियाँ होती है।
(अ) 2 (ब) 9 (स) 7 (द) 11

(123) ऊर्ध्वग रक्तपित्त में किसका अनुबन्ध होता है।
(अ) वात (ब) कफ (स) वातकफ (द) त्रिदोष

(124) कौनसा रक्तपित्त याप्य होता है।
(अ) ऊर्ध्वग (ब) अधोग (स) उभयग (द) त्रिदोषज

(125) मेचकागार धूमाभ सम कौनसा रक्तपित्त होता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(126) गोमूत्र सन्निभम् कौनसा रक्तपित्त होता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(127) सुख काल में साध्य है।
(अ) कुष्ठ (ब) राजयक्ष्मा (स) रक्तपित्त (द) अपस्मार

(128) 'लोहलोहितमत्स्यामगन्धित्व' रक्तपित्त का .... है।
(अ) हेतु (ब) पूर्वरूप (स) लक्षण (द) उपद्रव

(129) चरकानुसार रक्तपित्त के संदर्भ में सत्य कथन है।
(अ) पित्त दूषित रक्त के समान गुण वाला हो जाता है
(ब) पित्त दूषित रक्त के समान मात्रा वाला हो जाता है
(स) पित्त दूषित रक्त के समान गन्धवर्ण वाला हो जाता है
(द) पित्त दूषित रक्त के समान प्रकृति वाला हो जाता है

(130) प्रतिमार्गहरणं चिकित्सा किस रोग में की जाती है।
(अ) ज्वर (ब) रक्तपित्त (स) उन्माद (द) प्रमेह

(131) किन दोषों से संसर्गज रक्तपित्त में शरीर के सभी छिद्रों से रक्तस्राव होता है।
(अ) वात (ब) कफ (स) वातकफ (द) त्रिदोष

(132) कौनसा रक्तपित्त असाध्य होता है।
(अ) ऊर्ध्वग (ब) अधोग (स) उभयग (द) त्रिदोषज

(133) अधोग रक्तपित्त में कौनसे रस प्रधान औषधियों से वमन कराते है।
(अ) कषाय, तिक्त (ब) कटु (स) मधुर (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(134) ऊर्ध्वग रक्तपित्त में कौनसे रस प्रधान औषधियों से विरेचन कराते है।
(अ) कषाय, तिक्त (ब) कटु (स) मधुर (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(135) चरकानुसार रक्तपित्त के उपद्रव होते है।
(अ) 2 (ब) 9 (स) 7 (द) 11

(136) अधोग रक्तपित्त में देते है।
(अ) तर्पण (ब) पेया (स) यवागू (द) लंघन

(137) दूर्वा स्वरस का नस्य कौनसे रक्तपित्त में देते है।
(अ) गुदस्रावी में (ब) मूत्रमार्गगामी में (स) विड्मार्गगामी में (द) नासास्रावी में

(138) मोचरस का प्रयोग किसमें करते है।
(अ) गुदस्रावी में (ब) मूत्रमार्गगामी में (स) विड्मार्गगामी में (द) नासास्रावी में

(139) आन्तिकी गति रोग से सम्बंधित है।
(अ) कुष्ठ (ब) राजयक्ष्मा (स) रक्तपित्त (द) अपस्मार

(140) चरकानुसार रक्तपित्त की चिकित्सा में देय है।
(अ) आटरूषकादि क्वाथ (ब) किराततिक्तादि चूर्ण (स) पंचपंचमूलादि घृत (द) उपरोक्त सभी

(141) बिना स्नेहन के वमन विरचेन कराने से कौनसा रोग हो सकता है।
(अ) ज्वर (ब) रक्तपित्त (स) गुल्म (द) प्रमेह

(142) प्रकुपित वायु किस स्रोत्र में प्रवेश कर गुल्म को उत्पन्न करती है।
(अ) प्राणवह (ब) अन्नवह (स) मलवह (द) महास्रोत्र

(143) कौनसा गुल्म 'निचय गुल्म' कहलाता हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) रक्तज (द) सन्निपातज

(144) निम्न में से कौनसी व्याधि का कोई दूष्य नहीं होता है।
(अ) ज्वर (ब) रक्तपित्त (स) गुल्म (द) अबुर्द

(145) किस रोग में ओज क्षय नहीं होता है ?
(अ) प्रमेह (ब) गुल्म (स) राजयक्ष्मा (द) ग्रहणी

(146) वाग्भट्टानुसार गुल्म के भेद होते है।
(अ) 5 (ब) 7 (स) 8 (द) 9

(147) चरकानुसार गुल्म के आश्रय होते है।
(अ) 5 (ब) 7 (स) 8 (द) 9

(148) पित्तज गुल्म का आश्रय नहीं होता है।
(अ) हृदय (ब) नाभि (स) वस्ति (द) आमाशय

(149) 'दिवसान्ते ज्वर' किस गुल्म का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) रक्तज

(150) 'र्स्पशासहो' किस गुल्म का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) रक्तज

(151) 'कास, श्वास, प्रतिश्याय एंव राजयक्ष्मा की उत्पत्ति' यह लक्षण किस गुल्म में मिलता हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) रक्तज

(152) 'अत्यर्थ ग्लानिश्चक्षुषोः' किस गुल्म का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) रक्तज

(153) 'अश्मवद् घनोन्नत शीघ्रविदाहि दारूणम्' – कौनसे गुल्म का लक्षण हैं।
(अ) सन्निपातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) रक्तज

(154) निम्न में से कौनसा लक्षण रक्तज गुल्म में नहीं मिलता है।
(अ) स्तनयोश्च स्तन्यम् (ब) दोहद (स) रोमराजी की उत्पत्ति (द) आर्तवादर्शन।

(155) शोणितगुल्मस्तु खलु स्त्रिया एव भवति न पुरूषस्य। – किसने कहा है।
(अ) चरक (ब) क्षारपाणि (स) चक्रपाणि (द) हारीत

(156) स्त्रीणामार्त्तवजो गुल्मो न पुंसामुपजायते। अन्यस्त्वसृग्भवो गुल्मः स्त्रीणां पुंसांश्च जायते। – किसने कहा है।
(अ) चरक (ब) क्षारपाणि (स) चक्रपाणि (द) हारीत

(157) आर्तवप्रतिबन्धजन्यः शोणितगुल्मः पुरुषस्य न भवति। सामान्यशोणितदुष्टिजन्यस्तु पुरूषस्यापि भवति।
–किसने कहा है
(अ) चरक (ब) क्षारपाणि (स) चक्रपाणि (द) हारीत

(158) गर्भकोष्ठार्तवागमन वैशेष्यात्। – किसके संदर्भ में कहा गया है।
(अ) गर्भस्राव (ब) गर्भपात (स) मूढगर्भ (द) शोणित गुल्म

(159) 'अग्निवैषम्यं, विदाहो भुक्तस्य पाककाले चायुक्त्या छर्द्युद्गारौ' – किसका पूर्वरूप हैं।
(अ) अजीर्ण (ब) उदावर्त (स) अलसक (द) गुल्म

(160) चरकानुसार कौनसा गुल्म असाध्य होता हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) रक्तज (द) सन्निपातज

(161) सर्वेष्वपि खल्वेतेषु गुल्मेषु न कश्चिद् .... सम्भवति गुल्मः।
(अ) वात (ब) वाताद् (स) वातादृते (द) वायु

(162) जीर्णे जीर्यति चाध्यमानं भुक्ते स्वास्थ्यमुपैति च। – किसका लक्षण है।
(अ) वातिक ग्रहणी (ब) वातिक गुल्म (स) अजीर्ण (द) परिणाम शूल

(163) चरकानुसार कौनसा गुल्म की 3 अवस्थायें होती है – 1. अपक्व 2. पच्यमान और 3. पक्व –
(अ) वातज (ब) सन्निपातज (स) कफज (द) पित्तज

(164) दन्ती हरीतकी में हरीतिकी की संख्या है ?
(अ) 100 (ब) 200 (स) 25 (द) 1100

(165) स्निग्धस्विन्नशरीरायै दद्यात स्नेह विरेचनम्। – किस गुल्म की चिकित्सा में निर्देशित है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) रक्तज

(166) चरकानुसार "तैलपन्चक" का रोगाधिकार है।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) अर्श (स) शोष (द) गुल्म

(167) तस्मादग्निं सदा रक्षेन्निदानानि च वर्जयेत्। – किसकी चिकित्सा में निर्देशित है।
(अ) उदर रोग (ब) अर्श (स) ग्रहणी (द) गुल्म

(168) "क्षीरवस्ति" कौनसे गुल्म की चिकित्सा में निर्देशित है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) रक्तज

(169) अग्नि और क्षार कर्म कौनसे गुल्म की चिकित्सा में निर्देशित है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) रक्तज

(170) शस्त्रकर्म कौनसे गुल्म की चिकित्सा में निर्देशित है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) उपर्युक्त सभी

(171) वमन कौनसे गुल्म की चिकित्सा में निर्देशित है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) अ, स दानों

(172) चरकानुसार रक्तज गुल्म में चिकित्सा कितने माह बाद करना चाहिए।
(अ) 10 (ब) 12 (स) 9 (द) 7

(173) चरक संहिता में प्रमेहपिडका का वर्णन किस स्थान में है।
(अ) सूत्र स्थान (ब) निदान स्थान (स) चिकित्सा स्थान (द) सिद्धि स्थान

(174) मधुमेह के निदान एंव सम्प्राप्ति का वर्णन चरक संहिता के किस स्थान में मिलता है।
(अ) सूत्र स्थान (ब) निदान स्थान (स) चिकित्सा स्थान (द) सिद्धि स्थान

(175) प्रमेह के भेद 20 किसने माने है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) उपर्युक्त सभी

(176) चरक ने बहुद्रवः श्लेष्मा दोषविशेषः। – किसके लिए कहा है।
(अ) मेदोरोग (ब) स्थौल्य (स) प्रमेह (द) उपर्युक्त सभी

(177) प्रमेह का दूष्य नहीं होता है।
(अ) ओज (ब) रक्त (स) अस्थि (द) वसा

(178) लसीका किसका दूष्य है।
(अ) प्रमेह (ब) रक्तपित्त (स) कुष्ठ (द) अ, स दोनों

(179) वसा किसका दूष्य है।
(अ) प्रमेह (ब) रक्तपित्त (स) कुष्ठ (द) मेदोरोग

(180) 'करपाद दाह' किसका पूर्वरूप है।
(अ) गुल्म (ब) कुष्ठ (स) प्रमेह (द) राजयक्ष्मा

(181) किस प्रमेही का मूत्र 'निगन्ध' होता हैं।
(अ) उदकमेह (ब) सान्द्रमेह (स) शीतमेह (द) शनैर्मेह

(182) 'यस्य पर्युषितं मूत्रं सान्द्रीभवति भाजने' किस कफज प्रमेह का लक्षण हैं।
(अ) उदकमेह (ब) सान्द्रमेह (स) सान्द्रप्रसादमेह (द) शनैर्मेह

(183) 'कृच्छ्रपूर्वक मूत्रत्याग' किस कफज प्रमेह का लक्षण है।
(अ) उदकमेह (ब) सान्द्रमेह (स) शीतमेह (द) शनैर्मेह

(184) किस प्रमेही का मूत्र 'अत्यर्थमधुर शीतं' होता है।
(अ) उदकमेह (ब) इक्षुबालिकामेह (स) शीतमेह (द) ब, स दोनों

(185) किस प्रमेही का मूत्र 'अत्यर्थमधुर शीतं मूत्रं मेहति यो भृशम' होता हैं।
(अ) उदकमेह (ब) इक्षुबालिकामेह (स) शीतमेह (द) मधुमेह

(186) किस प्रमेही का मूत्र 'कषायमधुर पाण्डु एवं रूक्ष होता है।
(अ) उदकमेह (ब) इक्षुबालिकामेह (स) शीतमेह (द) मधुमेह

(187) किस प्रमेही का मूत्र 'ईषत्पिच्छिलं' होता हैं।
(अ) शीतमेह (ब) इक्षुबालिकामेह (स) लालामेह (द) ब, स दोनों

(188) किस प्रमेही का मूत्र 'चावल के आटे के समानं' होता हैं।
(अ) शीतमेह (ब) सान्द्रमेह (स) शुक्लमेह (द) सिकतामेह

(189) स्याही के रंग का मूत्र किस प्रमेह में आता हैं।
(अ) नीलमेह (ब) क्षारमेह (स) कालमेह (द) मंजिष्ठामेह

(190) मसीवर्ण का मूत्र किस प्रमेह में आता हैं।
(अ) नीलमेह (ब) क्षारमेह (स) कालमेह (द) मंजिष्ठामेह

(191) चाष पक्षी के पंखों के समान मूत्र किस प्रमेह में आता हैं।
(अ) नीलमेह (ब) हारिद्रमेह (स) कालमेह (द) रक्तमेह

(192) किस प्रमेही का मूत्र 'कटुक' रस वाला होता हैं।
(अ) नीलमेह (ब) हारिद्रमेह (स) कालमेह (द) रक्तमेह

(193) किस प्रमेही का मूत्र 'लवण' रस वाला होता हैं।
(अ) नीलमेह (ब) हारिद्रमेह (स) कालमेह (द) रक्तमेह

(194) किस प्रमेही का मूत्र 'अम्लं' रस वाला होता हैं।
(अ) नीलमेह (ब) हारिद्रमेह (स) कालमेह (द) रक्तमेह

(195) चरक ने कौनसे प्रमेह का वर्णन नहीं किया हैं।
(अ) नीलमेह (ब) क्षारमेह (स) कालमेह (द) अम्लमेह

AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING
DR. NEELIMA SINGH LODHI

(196) सुरामेह, पिष्टमेह, फेनमेह, लवणमेह का वर्णन किस आचार्य ने किया हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) माधव

(197) सर्पिमेह का वर्णन किस आचार्य ने किया हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) भेल (द) हारीत

(198) लसिकामेह का वर्णन किस आचार्य ने किया हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) भेल (द) हारीत

(199) भस्ममेह का वर्णन किस आचार्य ने किया हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) भेल (द) हारीत

(200) तक्रप्रमेह, घृतप्रमेह, खटिका प्रमेह का वर्णन किस आचार्य ने किया हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) भेल (द) हारीत

(201) चरकोक्त शुक्लमेह सम सुश्रुत कौनसा प्रमेह माना हैं।
(अ) सुरामेह (ब) पिष्टमेह (स) लवणमेह (द) फेनमेह

(202) चरकोक्त सान्द्रप्रसादमेह को ने सुश्रुत ने कहा हैं।
(अ) सुरामेह (ब) पिष्टमेह (स) लवणमेह (द) फेनमेह

(203) मधुमेह के 2 भेद किस आचार्य ने बतलाए है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) माधव

(204) प्रमेह का पूर्वरूप हैं।
(अ) जटिली भावं केशेषु (ब) करपादयोः सुप्तता (स) मुखतालुकण्ठशोष (द) उपर्युक्त सभी

(205) प्रमेह के संदर्भ में कौनसा कथन सही हैं।
(अ) सभी प्रमेह त्रिदोष प्रकोप के कारण होते है। (ब) मधुमेह के 2 भेद अष्टांग हृदय में बतलाए हैं।
(स) चरकानुसार कृच्छ्रपूर्वक मूत्रत्याग शनैर्मेह में होता है। (द) उपर्युक्त सभी

(206) वातिक प्रमेह क्यों असाध्य होता हैं।
(अ) संसृष्टदोष मेदः स्थानत्वात् (ब) विरूद्धोपक्रमत्वात्
(स) महात्ययिकत्वाद् (द) महात्ययिकत्वाद, विरूद्धोपक्रमत्वात्

(207) चरकानुसार कफज प्रमेह के साध्य होने का कारण है।
(अ) समानगुण मेदः स्थानकत्वात् (ब) कफस्य प्राधान्यात् (स) समक्रियत्वात् (द) उपर्युक्त सभी

(208) महात्ययिकत्वादिति मज्जप्रभृतिसारभूतधातुक्षयकरत्वात्। – ऐसा किस आचार्य ने कहा है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(209) चरक ने 'नीडद्रुममिवाण्डज' उदाहरण किस रोग के लिए कहा है।
(अ) मेदोरोग (ब) स्थौल्य (स) प्रमेह (द) कुष्ठ

(210) प्रमेह के उपद्रव होते है।
(अ) 9 (ब) 10 (स) 11 (द) 12

(211) कौनसा प्रमेह कृच्छ्रसाध्य होता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(212) चरकानुसार मध्वासव का रोगाधिकार है।
(अ) क्षतक्षीण (ब) अर्श (स) प्रमेह (द) ग्रहणी

(213) 'वृषणयोरवदरणं' कौनसे प्रमेह का उपद्रव है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

214) 'हृदि शूल' कौनसे प्रमेह का उपद्रव है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(215) 'मक्षिकापसर्पणं' कौनसे प्रमेह का उपद्रव है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(216) प्रमेहपिडका की संख्या 8 किसने बतलायी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) काश्यप (द) भोज

(217) 'कुलत्थिका' नामक प्रमेहपिडका का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) काश्यप (द) भोज

(218) 'धान्वन्तर घृत' का प्रमुख रोगाधिकार है।
(अ) प्रमेह (ब) मधुमेह (स) प्रमेहपिडका (द) पाण्डु

(219) आचार्य सुश्रुत ने 'नवायस लौह' का निर्देश किसकी चिकित्सा में किया है।
(अ) प्रमेह (ब) मधुमेह (स) प्रमेहपिडका (द) पाण्डु

(220) अष्टांग हृदयाकार ने 'अयस्कृति' का निर्देश सर्वप्रथम किसकी चिकित्सा में किया है।
(अ) प्रमेह (ब) रक्तपित्त (स) कुष्ठ (द) उदररोग

(221) कुष्ठ में सर्वप्रथम त्वचा फिर लसीका, रक्त, मांस आदि क्रम से दूषित होते है –किस आचार्य ने कहा है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(222) "सप्तको द्रव्यसङ्ग्रहः" का निर्देश किस रोग के संदर्भ में है।
(अ) प्रमेह (ब) विसर्प (स) कुष्ठ (द) उदररोग

(223) कुष्ठ के दूष्य है ?
(अ) 7 (ब) 11 (स) 18 (द) 4

(224) कुष्ठ के संदर्भ में कौनसा कथन सहीं हैं।
(अ) सभी कुष्ठ त्रिदोषज होते हैं (ब) त्वक्, रक्त, मांस और लसीका दूष्य हैं
(स) चरकानुसार कुष्ठ के सप्त, एकादश और असंख्य भेद है (द) उपर्युक्त सभी

(225) चरकानुसार कुष्ठ के भेद है।
(अ) सप्त (ब) अष्टदश (स) असंख्य (द) उपर्युक्त सभी

(226) चरक संहिता में 'महाकुष्ठ' के लक्षणों का वर्णन किस स्थान में है।
(अ) सूत्र स्थान (ब) निदान स्थान (स) चिकित्सा स्थान (द) ब, स दोनों

(227) चरक संहिता में 'क्षुद्रकुष्ठ' के लक्षणों का वर्णन किस स्थान में है।
(अ) सूत्र स्थान (ब) निदान स्थान (स) चिकित्सा स्थान (द) ब, स दोनों

(228) "मण्डल" कुष्ठ में कौनसा दोष होता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(229) "पुण्डरीक" कुष्ठ में कौनसा दोष होता है।
(अ) वातपित्तज (ब) वातकफज (स) कफपित्तज (द) त्रिदोषज

(230) कुष्ठ का पूर्वरूप हैं।
(अ) स्पर्शाज्ञत्वम (ब) सुप्तता (स) लोमहर्ष (द) उपर्युक्त सभी

(231) चरकानुसार निम्न में से किस कुष्ठ में कृमि पाये जाते है।
(अ) कपाल (ब) उदुम्बर (स) मण्डल (द) उपर्युक्त सभी

(232) 'कर्ण नासाभंग अक्षिराग' कौनसे कुष्ठ का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) अस्थिमज्जागत (द) ब, स दोनों

(233) 'स्वरोघात' कौनसे कुष्ठ का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) अस्थिमज्जागत (द) अ, स दोनों

(234) 'कौण्य' कौनसे कुष्ठ का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) शुक्रगत (द) अ, स दोनों

(235) 'क्रिमिसम्भवः' कौनसे कुष्ठ का लक्षण है।
(अ) रक्तगत (ब) पित्तज कुष्ठ (स) मेदगत (द) अस्थिमज्जागत

(236) नातः कष्ठतरो रोगो यथा................ प्रकीर्तितम्।
(अ) मूढगर्भ शल्योद्धरणम् (ब) कुष्ठं (स) मूढगर्भ (द) दूष्योदर

(237) सुश्रुतानुसार मेद धातुगत कुष्ठ होता है।
(अ) साध्य (ब) कच्छ्र साध्य (स) याप्य (द) असाध्य

(238) सुश्रुतानुसार औपसर्गिक रोग नहीं है।
(अ) कुष्ठ (ब) शोष (स) उपदंश (द) नेत्राभिष्यन्द

(239) सहज किस रोग का भेद है।
(अ) कुष्ठ (ब) प्रमेह (स) कृमि (द) उपरोक्त सभी

(240) मलपूरस चिकित्सा किस रोग में बतलायी गयी है।
(अ) कुष्ठ (ब) श्वित्र (स) गुल्म (द) राजयक्ष्मा

(241) चरक द्वारा कुष्ठरोगाधिकार में निर्देशित नहीं है।
(अ) कनकक्षीरी तैल (ब) तुवरक तैल (स) सिद्धार्थक स्नान (द) लेलीतक

(242) अस्वेद, मत्स्यशकलोसन्निभम्। – कौनसा कुष्ठ होता है।
(अ) चर्मकुष्ठ (ब) एककुष्ठ (स) विचर्चिका (द) चर्मदल

(243) चरकानुसार कनकक्षीरी तैल का रोगाधिकार है।
(अ) कुष्ठ (ब) अर्श (स) शोथ (द) गुल्म

(244) कितने कितने समय के बाद कुष्ठ में विरेचन कराना चाहिए।
(अ) 15–15 दिन (ब) 1–1 माह (स) 6–6 माह (द) 3–3 दिन

(245) 'सप्तदशकुष्ठघाती' है।
(अ) शिलाजतु (ब) माक्षिक (स) लेलीतक (द) अयस्कृति

SHYAM VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTRE
BY. DR. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

(246) संशोषणाद्रसादीनां शोष इत्यभिधीयते। – किस आचार्य का कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(247) शोष के आयतन होते है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 7 (द) 11

(248) चरकानुसार शोष के चार आयतन है ?
(अ) साहस, सन्धारण, क्षय, विषमाशन (ब) अयथाबलमारम्भ, वेगसन्धारण, क्षय, विषमाशन
(स) साहस, वेगसंरोध,शुक्रौजःस्नेहसंक्षय, अन्नपानविधित्याग (द) आघात, वेगप्रतिघात, क्षय, विषमाशन

(249) चरकानुसार यक्ष्मा के चार कारण है ?
(अ) साहस, सन्धारण, क्षय, विषमाशन (ब) अयथाबलमारम्भ, वेगसन्धारण, क्षय, विषमाशन
(स) साहस, वेगसंरोध,शुक्रौजःस्नेहसंक्षय, अन्नपानविधित्याग (द) आघात, वेगप्रतिघात, क्षय, विषमाशन

(250) सुश्रुतानुसार शोष के हेतु है ?
(अ) साहस, सन्धारण, क्षय, विषमाशन (ब) अयथाबलमारम्भ, वेगसन्धारण, क्षय, विषमाशन
(स) साहस, वेगसंरोध,शुक्रौजःस्नेहसंक्षय, अन्नपानविधित्याग (द) आघात, वेगप्रतिघात, क्षय, विषमाशन

(251) अष्टांग हृदयाकार अनुसार राजयक्ष्मा के चार निदान है ?
(अ) साहस, सन्धारण, क्षय, विषमाशन (ब) अयथाबलमारम्भ, वेगसन्धारण, क्षय, विषमाशन
(स) साहस, वेगसंरोध,शुक्रौजःस्नेहसंक्षय, अन्नपानविधित्याग (द) आघात, वेगप्रतिघात, क्षय, विषमाशन

(252) अष्टांग हृदयाकार अनुसार राजयक्ष्मा का एक निदान है ?
(अ) क्षय (ब) धातुक्षय (स) शुक्रक्षय (द) शुक्रौजःस्नेहसंक्षय

(253) 'योगक्षेमकरेषु प्रयतेत विशेषणः' – का उल्लेख कौनसे आयतन जन्य शोष में है।
(अ) साहस जन्य (ब) सन्धारण जन्य (स) क्षय जन्य (द) विषमाशन जन्य

(254) राजयक्ष्मा के चार आयतनों से कौनसा दोष प्रकुपित होता है ?
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) उपर्युक्त सभी

(255) आहार का परम धाम होता है।
(अ) शुक्र (ब) ओज (स) रसधातु (द) रक्त

(256) आहार का परम धाम शुक्र ही है – ऐसा किस आचार्य ने कहा है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(257) सर्वमन्यत्परित्यज्य शरीरमनुपालयेत्। तदभावे हि भावानां सर्वाभावः शरीरिणाम्। – का उल्लेख कहाँ है।
(अ) राजयक्ष्मा निदान (ब) ज्वर निदान (स) रक्तपित्त निदान (द) कुष्ठ निदान

(258) राजयक्ष्मा से पीडित व्यक्ति के.................की रक्षा प्रयत्नपूर्वक करना चाहिए
(अ) अग्नि (ब) रस धातु (स) सर्वांग (द) पुरीष

(259) चरकानुसार राजयक्ष्मा का त्रिरूप नहीं है।
(अ) अंसपार्श्वाभिताप (ब) सन्तापः करपादयोः (स) सर्वांगज्वरः (द) कास

(260) सुश्रुतानुसार राजयक्ष्मा का षड्रूप नहीं है।
(अ) श्वास (ब) स्वरभेद (स) पार्श्वशूल (द) भक्तद्वेष

(261) चरकानुसार राजयक्ष्मा का षड्रूप नहीं है।
(अ) अतिसार (ब) श्वास (स) स्वरभेद (द) ज्वर

(262) चरकानुसार राजयक्ष्मा का एकादश नहीं है।
(अ) श्वास (ब) श्लेष्मछर्दन (स) शोणितष्ठीवन (द) रक्तवमन

(263) 'प्रतिश्याय' किस व्याधि का पूर्वरूप है।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) श्वास (स) कास (द) शिरःशूल

(264) बाह्वोश्च प्रमाणजिज्ञासा अर्थात अपने हाथों के प्रमाण की जिज्ञासा किस व्याधि का पूर्वरूप है।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) गुल्म (स) प्रमेह (द) कुष्ठ निदान

(265) पाण्योश्चावेक्षणमत्यर्थम् अर्थात बार बार अपने हाथों को निहारना किस व्याधि का पूर्वरूप है।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) गुल्म (स) प्रमेह (द) कुष्ठ निदान

(266) केशानां नखानां चाभिवर्धानाम किसका पूर्वरूप है।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) प्रमेह (स) शोथ (द) स्थौल्य

(267) चरकानुसार क्रोध किसका पर्याय है।
(अ) ज्वर (ब) पित्त (स) राजयक्ष्मा (द) रक्तपित्त

(268) 'पिच्छिलं बहुलं विस्र हरितं श्वेतपीतकम्। – किसका लक्षण है।
(अ) क्षतज कास (ब) क्षयज कास (स) राजयक्ष्माजन्य कास (द) उपद्रवयुक्त कास

(269) वैदिक चिकित्सा किस रोग में बतलायी गयी है।
(अ) कुष्ठ (ब) श्वित्र (स) गुल्म (द) राजयक्ष्मा

(270) निम्न में से सही मिलाप है।
(अ) राजयक्ष्मा – जुगुप्सा चिकित्सा
(ब) रक्तपित्त – प्रतिलोम चिकित्सा
(स) उन्माद – प्रतिद्वन्द्व चिकित्सा
(द) उपर्युक्त सभी

(271) चरकानुसार उन्माद के भेद है ?
(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

(272) उन्मादं पुनः मनोबुद्धिसंज्ञाज्ञानस्मृतिभक्तिशीलचेष्टाचारविभ्रम विद्यात्। – इसका वर्णन किस ग्रन्थ में है।
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) अष्टांग हृदय (द) अष्टांग संग्रह

(273) 'अर्दिताकृतिकरणं च व्याधे।' – किस व्याधि का पूर्वरूप है।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) अर्दित (स) उन्माद (द) अपस्मार

(274) 'शिरसः शून्यता' – कौनसी व्याधि का पूर्वरूप है।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) अर्दित (स) उन्माद (द) अपस्मार

(275) 'तिलपीडकचक्राधिरोहिणं, वातकुण्डलिकाभिश्चोन्मथनं।' – किस व्याधि का लक्षण है।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) अपस्मार (स) उन्माद (द) इनमें से कोई नहीं

(276) निम्नलिखित में से किस रोग 'स्मृति विभ्रम' सह लक्षण देखने को नहीं मिलता हैं।
(अ) उन्माद (ब) मदात्यय (स) प्रज्ञापराध (द) अतत्वाभिनिवेश

(277) 'श्वयथुराननें' कौनसे उन्माद का लक्षण हैं।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) आगन्तुज

(278) 'सतत लोमहर्ष' किसका पूर्वरूप है।
(अ) वातज ज्वर (ब) कुष्ठ (स) उन्माद (द) अपस्मार

(279) 'कार्श्य' कौनसे उन्माद का लक्षण हैं।
(अ) वातज ज्वर (ब) कुष्ठ (स) उन्माद (द) अपस्मार

(280) भूतोन्माद के कारण के कितने कारण होते है।
(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

(281) किस आचार्य ने आगन्तुज उन्माद का कारण प्रज्ञापराध माना है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(282) सुश्रुत ने उन्माद के भेद माने है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 6 (द) 8

(283) मनोवहस्त्रोतस् की व्याधि नहीं है।
(अ) उन्माद (ब) अपस्मार (स) अतत्वाभिनिवेश (द) संयास

(284) 'विषम चेष्टा' किस व्याधि का निदान है।
(अ) उन्माद (ब) अपस्मार (स) अतत्वाभिनिवेश (द) संयास

(285) 'बीभत्स चेष्टा' किस व्याधि का लक्षण है।
(अ) उन्माद (ब) अपस्मार (स) अतत्वाभिनिवेश (द) संयास

(286) चरकानुसार "विनग्नभावः" कौनसे उन्माद का लक्षण होता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(287) चरक ने भूतोन्माद के भेद माने है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 6 (द) 8

(288) तर्जनं त्रासनं दानं हर्षणं सान्त्वनं भयम्। – किस व्याधि में की चिकित्सा हेतु निर्देशित है।
(अ) उन्माद (ब) अपस्मार (स) अतत्वाभिनिवेश (द) हिक्का

(289) उन्माद रोगाधिकार में निर्देशित महाकल्याण घृत के घटकों की संख्या है ?
(अ) 36 (ब) 25 (स) 21 (द) 28

(290) चरकानुसार पुराणघृत का रस कौनसा होता है।
(अ) कटु (ब) तिक्त (स) कटु, तिक्त (द) कषाय

(291) चरकानुसार कितने वर्ष पुराना घृत "पुराण घृत" कहलाता है।
(अ) 10 वर्ष (ब) 1 वर्ष (स) 100 वर्ष (द) 5 वर्ष

(292) भावप्रकाश के अनुसार कितने वर्ष पुराना घृत "पुराण घृत" कहलाता है।
(अ) 10 वर्ष (ब) 1 वर्ष (स) 100 वर्ष (द) 5 वर्ष

(293) कौनसा घृत का वर्ण लाक्षारसनिभं के समान होता है।
(अ) पुराण घृत (ब) प्रपुराण घृत (स) कौम्भ घृत (द) सिद्धार्थक घृत

(294) शंख एंव केशान्त संधि के बीच में सिरावेधन किस रोग में करते हैं।
(अ) उन्माद (ब) विषमज्वर (स) अपस्मार (द) उपर्युक्त सभी

(295) चरक ने अपस्मार के भेद माने है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 6 (द) 7

(296) चरकानुसार तीक्ष्ण नस्य, अंजन किया जाता है।
(अ) उन्माद (ब) अपस्मार (स) पाण्डु (द) कामला

(297) चरकानुसार तीक्ष्ण संशोधन किया जाता है।
(अ) उन्माद (ब) अपस्मार (स) कास (द) कामला

(298) यमक स्नेह का निर्देश है।
(अ) ग्रहबाधा में (ब) उन्माद मे (स) अपस्मार में (द) गुल्म में

(299) मिश्रक स्नेह का निर्देश है।
(अ) ग्रहबाधा में (ब) उन्माद मे (स) अपस्मार में (द) गुल्म में

(300) चरकानुसार 'कायस्थादि वर्ति' का प्रयोग किया जाता है।
(अ) उन्माद (ब) अपस्मार (स) प्रतिश्याय (द) शिरोरोग

(301) .... पुनः स्मृतिबुद्धिसत्वसम्प्लवाद् बीभत्स चेष्टमावस्थिकं तमः प्रवेशमाचक्षते।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) मद (स) उन्माद (द) अपस्मार

(302) निम्न में से कौनसा एक मनोवह स्रोतस् का रोग है।
(अ) उन्माद (ब) अपस्मार (स) अत्वाभिनिवेश (द) उपरोक्त सभी

(303) 'अवकूजन्तम्' कौनसे अपस्मार का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(304) 'दोषवेगे च विगते सुप्तवत् प्रतिबुद्ध्यते' किस रोग के लिए कहा गया है।
(अ) राजयक्ष्मा (ब) कुष्ठ (स) उन्माद (द) अपस्मार

(305) चरकानुसार "महाव्याधि" है।
(अ) हलीमक (ब) कूटपाकल (स) वातव्याधि (द) अत्वाभिनिवेश

(306) काश्यपानुसार "महाव्याधि" है।
(अ) हलीमक (ब) कूटपाकल (स) वातव्याधि (द) अत्वाभिनिवेश

(307) चरकानुसार "महगद" है।
(अ) हलीमक (ब) कूटपाकल (स) वातव्याधि (द) अत्वाभिनिवेश

(308) चरकानुसार मेध्य अन्नपान एंव औषध का प्रयोग किस रोग में किया जाता है।
(अ) उन्माद (ब) अपस्मार (स) अत्वाभिनिवेश (द) शिरोरोग

(309) 'अव्यक्त' लक्षण यह कौनसी व्याधि के पूर्वरूप के रूप में मिलता है।
(अ) क्षतक्षीण (ब) वातव्याधि (स) दोनों (द) कोई नहीं

(310) चरकानुसार "अमृतप्राश घृत" का रोगाधिकार है।
(अ) क्षतक्षीण (ब) छर्दि (स) तृष्णा (द) विसर्प

(311) चरकानुसार "एलादि गुटिका" का रोगाधिकार है।
(अ) क्षतक्षीण (ब) छर्दि (स) तृष्णा (द) विसर्प

(312) चरकानुसार "नागबला कल्प" का रोगाधिकार है।
(अ) क्षतक्षीण (ब) छर्दि (स) तृष्णा (द) विसर्प

(313) चरकानुसार "सर्पिगुड" का रोगाधिकार है।
(अ) क्षतक्षीण (ब) छर्दि (स) तृष्णा (द) विसर्प

(314) चरक ने क्षतक्षीण की चिकित्सा हेतु कितने सर्पिगुड बतलाए है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 6 (द) 7

(315) एक वर्ष का पुराना क्षतक्षीण रोग................ होता है।
(अ) कृच्छ्रसाध्य (ब) याप्य (स) असाध्य (द) साध्य

(316) कौनसा रोग एक वर्ष पुराना हो जाने पर याप्य हो जाता है।
(अ) दूषीविष (ब) वातरक्त (स) क्षतक्षीण (द) उपरोक्त सभी

(317) 'स्त्रीषु चातिप्रसक्तस्य रूक्षाल्पप्रमिताशिनः' – किस रोग का निदान हैं।
(अ) क्षतक्षीण (ब) वातव्याधि (स) यक्ष्मा (द) कोई नहीं

(318) 'पृष्ठकटिग्रह' – किस रोग का लक्षण हैं।
(अ) क्षतक्षीण (ब) वातव्याधि (स) वृक्क आभ्यन्तर विद्रधि (द) अ, स दोनों

(319) क्षतक्षीण रोग की चिकित्सा में निर्दिष्ट "नागबला कल्प" सेवन की अवधि होती है।
(अ) 1 सप्ताह (ब) 1 पक्ष (स) 1 माह (द) 2 माह

(320) क्षतक्षीण रोग की चिकित्सा में निर्दिष्ट "नागबला कल्प" का अनुपान है।
(अ) मधु (ब) सर्पि (स) तक्र (द) दुग्ध

(321) 'अर्शांस्यचेष्टा न च देहशुद्धिर्मर्मोपघातो विषमा प्रसूतिः' – किस रोग का निदान हैं।
(अ) सूतिका रोग (ब) अर्श (स) उदररोग (द) शोथ

(322) चरक ने शोथ के कितने भेद माने है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 6 (द) 9

(323) सुश्रुतानुसार ने शोथ के कितने भेद माने है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 6 (द) 9

(324) शोथ के पृथु, उन्नत और ग्रंथित भेद किसने माने है।
(अ) चरक (ब) माधव (स) काश्यप (द) वाग्भट्ट

(325) शोथ के सर्वांग, एकांग और अर्धांग भेद किसने माने है।
(अ) चरक (ब) माधव (स) काश्यप (द) वाग्भट्ट

(326) चरकानुसार "सिराणायाम" ने शोथ का क्या है ?
(अ) पूर्वरूप (ब) लक्षण (स) उपद्रव (द) अरिष्ट

(327) चरकानुसार कौनसा शोथ 'दिवावली' होता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(328) चरकानुसार कौनसा शोथ 'रात्रिवली' होता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(329) वल्लूर है ?
(अ) कर्णपालीगत रोग (ब) कर्णपालीसंधान विधि (स) सीवन का प्रकार (द) शुष्क मांस

(330) शोथ में अपथ्य है।
(अ) वल्लूर (ब) दधि (स) मैथुन (द) उपरोक्त सभी

(331) शोथ में किसका दुग्ध लाभकारी होता है।
(अ) उष्ट्रदुग्ध (ब) आविदुग्ध (स) अजादुग्ध (द) उपरोक्त सभी

(332) चरकानुसार 'गण्डीराद्यरिष्ट' का रोगाधिकार है।
(अ) कुष्ठ (ब) अर्श (स) शोथ (द) कास

(333) चरकानुसार 'अष्टशत अरिष्ट' का रोगाधिकार है।
(अ) कुष्ठ (ब) अर्श (स) शोथ (द) कास

(334) चरकानुसार 'पुर्ननवाद्यरिष्ट' का रोगाधिकार है।
(अ) कुष्ठ (ब) अर्श (स) शोथ (द) कास

(335) चरकानुसार 'फलत्रिकाद्यरिष्ट' का रोगाधिकार है।
(अ) कुष्ठ (ब) अर्श (स) शोथ (द) कास

(336) चरकानुसार 'गुडार्द्रक' का रोगाधिकार है।
(अ) कुष्ठ (ब) अर्श (स) शोथ (द) कास

(337) चरकानुसार चित्रक घृत का रोगाधिकार है।
(अ) शोथ (ब) छर्दि (स) ग्रहणी (द) गुल्म

(338) चरकानुसार शोथनाशक होती है।
(अ) दन्ती हरीतकी (ब) कंस हरीतकी (स) गोमूत्र हरीतकी (द) चित्रक हरीतकी

(339) चरकानुसार शुद्ध शिलाजतु को त्रिफला क्वाथ के साथ सेवन करने पर कौनसे शोथ का शमन होता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(340) कंस हरीतकी में हरीतकी की संख्या होती है।
(अ) 200 (ब) 100 (स) 25 (द) 50

(341) चक्रदत्त ने कंस हरीतकी का वर्णन किस नाम से किया है।
(अ) दशमूल हरीतकी (ब) पंचमूल हरीतकी (स) चित्रक हरीतकी (द) दन्ती हरीतकी

(342) ताम्रा सशूला पिडका है।
(अ) अलजी (ब) विडालिका (स) मसूरिका (द) शालूक

(343) चरकानुसार त्रिदोषज शोथ है।
(अ) दन्तविद्रधि (ब) तालुविद्रधि (स) मांसास्रदूषी (द) उपकुश

(344) 'कक्षा' नामक पिडिका में कौनसा दोष होता है।
(अ) वातपित्तज (ब) वातकफज (स) कफपित्तज (द) त्रिदोषज

(345) 'विदारिका' नामक पिडिका में कौनसा दोष होता है।
(अ) वातपित्तज (ब) वातकफज (स) कफपित्तज (द) त्रिदोषज

(346) 'रोमान्तिका' नामक पिडिका में कौनसा दोष होता है।
(अ) वातपित्तज (ब) वातकफज (स) कफपित्तज (द) त्रिदोषज

(347) 'मसूरिका' नामक पिडिका में कौनसा दोष होता है।
(अ) वातपित्तज (ब) वातकफज (स) कफपित्तज (द) त्रिदोषज

(348) चरक संहिता में 'गलगण्ड' का वर्णन किस रोग के अंतगर्त किया गया है।
(अ) शोथ (ब) तालुरोग (स) कण्ठरोग (द) गलरोग

(349) चरक संहिता में 'उपकुश' का वर्णन किस रोग के अंतगर्त किया गया है।
(अ) शोथ (ब) जिह्वारोग (स) दन्तरोग (द) कण्ठरोग

(350) चरक संहिता में 'अधिजिह्वा' का वर्णन किस रोग के अंतगर्त किया गया है।
(अ) शोथ (ब) जिह्वारोग (स) दन्तरोग (द) कण्ठरोग

(351) चरक संहिता किस रोग का वर्णन नहीं है।
(अ) मदोजवृद्धि (ब) मूत्रजवृद्धि (स) आंत्रवृद्धि (द) उपरोक्त सभी

(352) चरकानुसार मलत्याग समय प्रवाहण करने से कौनसा रोग होता है।
(अ) अर्श (ब) भगन्दर (स) गुदभ्रंश (द) उपरोक्त सभी

(353) चरक संहिता में 'क्षारसूत्र' का प्रयोग किस व्याधि की चिकित्सा में निर्दिष्ट है।
(अ) अर्श (ब) भगन्दर (स) नाडीव्रण (द) उपरोक्त सभी

(354) सुश्रुत संहिता में 'क्षारसूत्र' का प्रयोग किस व्याधि की चिकित्सा में निर्दिष्ट है।
(अ) अर्श (ब) भगन्दर (स) नाडीव्रण (द) उपरोक्त सभी

(355) चक्रदत्त में 'क्षारसूत्र' का प्रयोग किस व्याधि की चिकित्सा में निर्दिष्ट है।
(अ) अर्श (ब) भगन्दर (स) नाडीव्रण (द) उपरोक्त सभी

(356) चरक संहिता में 'भगन्दर' की चिकित्सा में कौनसा शस्त्रकर्म निर्दिष्ट है।
(अ) पाटन (ब) छेदन (स) भेदन (द) लेखन

(357) किस दोष की प्रबलता के कारण 'जालकगर्दभ' शोथ होता है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) त्रिदोष

(358) चरकानुसार 'सर्षप लेपन' किस शोथ की चिकित्सा में निर्दिष्ट है।
(अ) श्लीपद (ब) भगन्दर (स) जालकगर्दभ (द) ब्रध्न

(359) चरकानुसार 'धात्री प्रयोग' किस शोथ की चिकित्सा में निर्दिष्ट है।
(अ) श्लीपद (ब) भगन्दर (स) जालकगर्दभ (द) ब्रध्न

(360) चरकानुसार दोष भेद से शोथ होते है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 6 (द) 9

(361) पापं कर्म च कुर्वताम् – किस रोग का निदान है।
(अ) शोथ (ब) कुष्ठ (स) उदर रोग (द) ब, स दानों

(362) चरकानुसार उदर रोग में कौनसे स्रोतस् अवरूद्ध होते है।
(अ) अन्नवह (ब) स्वेदवह (स) उदकवह (द) ब, स दानों

(363) प्रायः सभी उदर रोग विशेष रूप से कौनसी अग्नि के कारण होते है।
(अ) मंदाग्नि (ब) तीक्ष्णाग्नि (स) विषमाग्नि (द) उपरोक्त सभी

(364) जीर्णाजीर्णपरिज्ञांन उदररोग का .... है।
(अ) निदान (ब) पूर्वरूप (स) लक्षण (द) उपद्रव

(365) चरकानुसार उदर रोग के भेद होते है।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(366) नानावर्णराजीसिरासन्ततम – किसका लक्षण है।
(अ) प्लीहोदर (ब) जलोदर (स) सन्निपातोदर (द) ब, स दानों

(367) नाभेरूपरि च प्रायो गोपुच्छाकृति जायते।– किसका लक्षण है ।
(अ) प्लीहोदर (ब) जलोदर (स) बद्धोदर (द) छिद्रोदर

(368) उदकपूर्णदृतिक्षोभसंस्पर्श – किसका लक्षण है।
(अ) प्लीहोदर (ब) जलोदर (स) ब्रद्धोदर (द) छिद्रोदर

(369) यकृद्दाल्युदर का सर्वप्रथम वर्णन किसने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) अष्टांग हृदय (द) अष्टांग संग्रह

(370) क्षतोदर कौनसे उदररोग को कहते है।
(अ) पित्तोदर (ब) दकोदोर (स) छिद्रोदर (द) सन्निपातोदर

(371) "शोणितं वा रसादिभ्यो विवृद्धं तं विवर्धयेत्।" – किस व्याधि की सम्प्राप्ति है ?
(अ) रक्तपित्त (ब) रक्तार्श (स) प्लीहोदर (द) रक्तातिसार

(372) जातं जातं जलं स्राव्यमेवं तद्यापयेद् भिषक् – किसका लक्षण है ।
(अ) प्लीहोदर (ब) जलोदर (स) बद्धोदर (द) छिद्रोदर

(373) दूषी विष का सेवन करने से कौनसा उदररोग होता है।
(अ) सन्निपातोदर (ब) दकोदोर (स) क्षतोदर (द) बद्धगुदोदर

(374) यकृद्दोल्युदर में वृद्धि कौनसे स्थान पर होती है।
(अ) दक्षिणपार्श्व (ब) वामपार्श्व (स) मध्य में (द) उपरोक्त सभी

(375) प्लीहोदर का लक्षण है।
(अ) वामपार्श्वाश्रितः च्युत (ब) कूर्मपृष्ठवत् (स) अष्ठीलावत कठिन (द) उपरोक्त सभी

(376) बद्ध गुदोदर कितने दिन बाद मृत्युकारक हो जाते है।
(अ) 15 दिन (ब) 10 दिन (स) 30 दिन (द) 7 दिन

(377) मुर्दे सी गंधवाला अपक्व पुरीष आना – कौनसे उदररोग का लक्षण है।
(अ) दूष्योदर (ब) दकोदोर (स) छिद्रोदर (द) बद्धगुदोदर

(378) सभी उदर रोगों की अंतिम अवस्था है।
(अ) सन्निपातोदर (ब) दकोदोर (स) क्षतोदर (द) बद्धगुदोदर

(379) कौनसा उदररोग असाध्य होता है।
(अ) सन्निपातोदर (ब) दकोदोर (स) छिद्रोदर (द) ब, स दोनों

(380) ह्रन्नाभिवंक्षणकटीगुद प्रत्येक शूलिनः – किसका लक्षण है।
(अ) अजातोदक (ब) दकोदोर (स) छिद्रोदर (द) बद्धगुदोदर

(381) कौनसे रोग में नित्य विरेचन कराने को कहा गया है।
(अ) कुष्ठ (ब) उदर रोग (स) गुल्म (द) उन्माद

(382) प्रयोगाणां तु सर्वेषामनु क्षीरं प्रयोजयेत्। – किसके लिए कहा गया है।
(अ) उदर रोग (ब) जीर्ण ज्वर (स) ग्रहणी (द) अर्श

(383) चरक ने किस रोग में सर्प से दंशित विषमय फल रोगी को खिलाने के कहा गया है।
(अ) प्लीहोदर (ब) जलोदर (स) दूष्योदर (द) छिद्रोदर

(384) अक्रियायां ध्रुवो मृत्युः क्रियायां संशयो भवेत्। – चरक ने किसके लिए कहा है।
(अ) अश्मरी (ब) दूष्योदर (स) जलोदर (द) मूढगर्भ

(385) समीक्ष्य कारयेद्बाहौ वामे वा व्यधयेत्सिराम्। – किसके लिए कहा गया है।
(अ) प्लीहोदर (ब) विषमज्वर (स) दूष्योदर (द) यकृद्दाल्युदर

(386) चरक संहिता में 'अयस्कृति' किसकी चिकित्सा में निर्दिष्ट है।
(अ) वातोदर (ब) पित्तोदर (स) कफोदर (द) जलोदर

(387) 'षट्पल घृत' किसकी चिकित्सा में निर्देशित है।
(अ) कुष्ठ (ब) राजयक्ष्मा (स) प्लीहोदर (द) जलोदर

(388) 'रोहितक घृत' किसकी चिकित्सा में निर्देशित है।
(अ) कुष्ठ (ब) राजयक्ष्मा (स) प्लीहोदर (द) जलोदर

(389) किस रोग में अग्निकर्म निर्दिष्ट है ?
(अ) प्लीहोदर (ब) जलोदर (स) दूष्योदर (द) छिद्रोदर

(390) चरक संहिता में कौनसे उदर रोग में उदावर्तहर चिकित्सा निर्दिष्ट है।
(अ) वातोदर (ब) पित्तोदर (स) कफोदर (द) बद्धगुदोदर

(391) चरक संहिता में उदर रोग की चिकित्सा में निर्दिष्ट 'नारायण चूर्ण' का मुख्य घटक है।
(अ) दन्ती (ब) त्रिवृत (स) सातला (द) चित्रक

(392) उदर रोग में नारायण चूर्ण का अनुपान होता है ?
(अ) तक्र (ब) प्रसन्ना (स) बदिर क्वाथ (द) उष्णाम्बु

(393) वातरोग में नारायण चूर्ण का अनुपान होता है ?
(अ) तक्र (ब) प्रसन्ना (स) बदिर क्वाथ (द) उष्णाम्बु

(394) गुल्म रोग में नारायण चूर्ण का अनुपान होता है ?
(अ) तक्र (ब) प्रसन्ना (स) बदिर क्वाथ (द) उष्णाम्बु

(395) अजीर्ण में नारायण चूर्ण का अनुपान होता है ?
(अ) तक्र (ब) प्रसन्ना (स) बदिर क्वाथ (द) उष्णाम्बु

(396) 'स्नुहीक्षीर घृत' किसकी चिकित्सा में निर्देशित है।
(अ) उदर रोग (ब) गुल्म (स) अर्श (द) ग्रहणी

(397) जब उदर रोगी शोथ, आनाह, अर्ति, तृष्णा एवं मूर्च्छा से पीडित हो तो किसका पान करना चाहिए।
(अ) उष्ट्रदुग्ध (ब) आविदुग्ध (स) अजादुग्ध (द) एरण्ड तैल

(398) जब उदर रोगी में कफ वात पित्त से या केवल वात से आवृत्त हो तो किसका पान करना चाहिए।
(अ) उष्ट्रदुग्ध (ब) आविदुग्ध (स) अजादुग्ध (द) एरण्ड तैल

(399) जलोदर में शल्य कर्म के पश्चात् कितनी अवधि तक पथ्य सेवन का विधान है।
(अ) 1 माह (ब) 3 माह (स) 6 माह (द) 1 वर्ष

(400) छिद्रोदर एवं बद्धोदर में किस स्थान पर शस्त्र से पाटन (चीरा) लगाने का विधान है ?
(अ) नाभि के नीचे वाम भाग में 4 अंगुल नापकर (ब) नाभि के ऊपर वाम भाग में 4 अंगुल नापकर
(स) नाभि के नीचे दक्षिण भाग में 4 अंगुल नापकर (द) नाभि के ऊपर दक्षिण भाग में 4 अंगुल नापकर

(401) 'चित्रक घृत' किसकी चिकित्सा में निर्देशित है।
(अ) उदर रोग (ब) शोथ (स) दोनों (द) ग्रहणी

(402) 'चित्रकादि वटी' किसकी चिकित्सा में निर्देशित है।
(अ) उदर रोग (ब) शोथ (स) दोनों (द) ग्रहणी

(403) 'क्षार वटी' किसकी चिकित्सा में निर्देशित है।
(अ) उदर रोग (ब) शोथ (स) दोनों (द) ग्रहणी

(404) 'क्षार गुटिका' किसकी चिकित्सा में निर्देशित है।
(अ) उदर रोग (ब) शोथ (स) दोनों (द) ग्रहणी

(405) उदर रोग में कौनसा लेप निर्दिष्ट है ?
(अ) मनःशिलादि लेप (ब) देवदार्वादि लेप (स) एडगजादि लेप (द) दशांग लेप

(406) चरकानुसार अर्श के भेद होते है।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 2 (द) 3

(107) गुदा का प्रमाण होता है
(अ) पन्चांगुल (ब) अर्द्धपन्चांगुल अवकाश (स) अर्द्ध चर्तुगुल (द) चर्तुगुंल

(408) अर्श का पूर्वरूप है।
(अ) अल्पविट्कता। (ब) कार्श्यमुद्गार बाहुल्य (स) कुक्षेराटोप (द) उपर्युक्त सभी

(409) बाह्य वलि में स्थित अर्श होता है।
(अ) साध्य (ब) कृच्छ्रसाध्य (स) याप्य (द) प्रत्याख्येय

(410) अर्श का परिणाम है।
(अ) उदावर्त (ब) अतिसार (स) बद्धगुदोदर (द) पाण्डु

(411) अर्श का उपद्रव है।
(अ) उदावर्त (ब) अतिसार (स) बद्धगुदोदर (द) पाण्डु

(412) गुद के अलावा अर्श के अन्य स्थान मेढ्र, योनि, नाभि, आंत्र, नासा आदि किस आचार्य ने बतलाएँ है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) भावप्रकाश

(413) अर्श में प्रशस्त आहार है।
(अ) यवागू (ब) यूष (स) मांसरस (द) सभी

(414) निम्नलिखित में से कौनसा रोग गुद वालि पर आघात से उत्पन्न होता है।
(अ) गुदभ्रंश (ब) गुदपाक (स) गुद अर्श (द) उपरोक्त तीनों

(415) अर्श में पथ्य है ?
(अ) शुण्ठी (ब) अपामार्ग (स) शिग्रु (द) मरिच

(416) काले सर्प की चर्बी से अभ्यंग करने का विधान आचार्य चरक ने किस व्याधि की चिकित्सा में बताया है।
(अ) आमवात (ब) संधिवात (स) अर्श (द) भगन्दर

(417) शुष्क अर्श में कौनसा दोष होता है।
(अ) वात, कफ (ब) पित्त, कफ (स) कफ, रक्त (द) रक्त, पित्त

(418) चरकानुसार आर्द्र अर्श में कौनसा दोष होता है।
(अ) वात, कफ (ब) पित्त, कफ (स) कफ, रक्त (द) रक्त, पित्त

(419) चरकानुसार अर्श में दूष्य है।
(अ) त्वक्, मांस, मेद (ब) त्वक्, मांस (स) त्वक्, मांस, रक्त (द) त्वक्, रक्त, मेद

(420) सुश्रुतानुसार अर्श में दूष्य है।
(अ) त्वक्, मांस, मेद (ब) त्वक्, मांस (स) त्वक्, मांस, रक्त (द) त्वक्, रक्त, मेद

(421) एक वर्ष का पुराना अर्श होता है ?
(अ) कृच्छ्रसाध्य (ब) याप्य (स) असाध्य (द) साध्य

(422) चरकानुसार तक्र के भेद होते है।
(अ) 3 (ब) 2 (स) 7 (द) 5

(423) चरकानुसार 'तक्रारिष्ट' का रोगाधिकार है।
(अ) प्रमेह (ब) शोथ (स) अर्श (द) कुष्ठ

(424) चरकानुसार किस रोग में विशेष रूप से अग्निबल की रक्षा करने को कहा गया है।
(अ) अर्श (ब) अतिसार (स) ग्रहणी (द) उपर्युक्त सभी

(425) "सगुडामभयां वाऽपि प्राशयेत्पौर्वभक्तिकीम्" – किसकी चिकित्सा में निर्देशित किया है।
(अ) अर्श (ब) अतिसार (स) ग्रहणी (द) उपर्युक्त सभी

(426) चरकानुसार "अभयारिष्ट" का रोगाधिकार है ।
(अ) अर्श (ब) अतिसार (स) ग्रहणी (द) उदर रोग

(427) "अभयारिष्ट" का मुख्य घटक है।
(अ) आमलकी (ब) विभीतकी (स) हरीतकी (द) कुटज

(428) चरकानुसार सुनिषण्णकचाङ्गेरी घृत का रोगाधिकार है ।
(अ) अर्श (ब) अतिसार (स) ग्रहणी (द) उदर रोग

(429) कनकारिष्ट में कनक मात्रा की होती है।
(अ) 200 पल (ब) 50 पल (स) 100 पल (द) शून्य

(430) कनकासव में कनक मात्रा की होती है।
(अ) 2 पल (ब) 1 पल (स) 4 पल (द) शून्य

(431) सुश्रुतानुसार ग्रहणी रोग का कारण कौनसी अग्नि होती है।
(अ) मंदाग्नि (ब) तीक्ष्णाग्नि (स) विषमाग्नि (द) उपरोक्त सभी

(432) लोहामगन्धिस्तिक्ताम्ल उद्गार – किसका लक्षण है।
(अ) रक्तपित्त (ब) अन्नद्रव शूल (स) ग्रहणी (द) अजीर्ण

(433) "कर्णक्ष्वेड" किसका पूर्वरूप है।
(अ) रक्तपित्त (ब) कास (स) ग्रहणी (द) पाण्डु

(434) "कर्णक्ष्वेड" किसका लक्षण है।
(अ) रक्तपित्त (ब) कास (स) ग्रहणी (द) पाण्डु

(435) स वातगुल्महृदरोगप्लीहाशंकी च मानवः। – कौनसी ग्रहणी का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(436) अकृशस्यापि दौर्बल्यमालस्यं च। – कौनसी ग्रहणी का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(437) "मनसः सदनं" – कौनसी ग्रहणी का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(438) "अजीर्ण" – कौनसी ग्रहणी का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(439) "अवस्थिकी चिकित्सा" – कौनसी ग्रहणी में बतलाई गई है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(440) चरक द्वारा ग्रहणीरोगाधिकार में निर्देशित नहीं है।
(अ) पिण्डासव (ब) मूलासव (स) भल्लातकासव (द) मधूकासव

(441) कृष्णात्रेयेण पूजितम् है।
(अ) क्षार गुटिका (ब) चित्रकादि वटी (स) मूलासव (द) नागराद्यं चूर्ण

(442) बालकों में ग्रहणी रोग होता है ?
(अ) कृच्छ्रसाध्य (ब) याप्य (स) असाध्य (द) साध्य

(443) दुर्बल अग्नि में दीपनार्थ श्रेष्ठ है ?
(अ) स्नेह (ब) आर्द्रक (स) पिप्पली (द) तक्र

(444) मन्दाग्नि में दीपनार्थ श्रेष्ठ है ?
(अ) स्नेह (ब) आर्द्रक (स) पिप्पली (द) तक्र

(445) चरक में अग्नि के भेदों का वर्णन किस अध्याय में है।
(अ) अन्नपान विधि (ब) रोगानिक विमान (स) दोषविमान (द) ग्रहणी चिकित्सा

(446) पित्त दोष से अभिभूत अग्नि होती है।
(अ) विषमाग्नि (ब) तीक्ष्णाग्नि (स) मन्दाग्नि (द) समाग्नि

(447) "सर्वापचार सहः" कौनसी अग्नि के लिए कहा गया है।
(अ) विषमाग्नि (ब) तीक्ष्णाग्नि (स) मन्दाग्नि (द) समाग्नि

(448) विदग्धजीर्ण की चिकित्सा है ?
(अ) वमन (ब) स्वेदन (स) लंघन (द) दिन में सोना

(449) आमाजीर्ण की चिकित्सा है ?
(अ) वमन (ब) स्वेदन (स) लंघन (द) दिन में सोना

(450) सुश्रुत अनुसार रसशेषाजीर्ण की चिकित्सा है ?
(अ) वमन (ब) स्वेदन (स) परिशोषण (द) दिन में सोना

(451) 'प्राकृत अजीर्ण' का वर्णन किस आचार्य ने किया है ?
(अ) माधव (ब) काश्यप (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्धर

(452) 'श्लेष्माजीर्ण' का वर्णन किस आचार्य ने किया है ?
(अ) माधव (ब) काश्यप (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्धर

(453) मूर्च्छा प्रलापो वमथुः प्रसेकः सदनं भ्रमः। – किसके उपद्रव है।
(अ) अजीर्ण (ब) अलसक (स) विसूचिका (द) बिलम्बिका

(454) भुक्तेऽन्ने लभते शान्तिं जीर्णमात्रे प्रताम्यति। – किसका लक्षण है।
(अ) अत्याग्नि (ब) परिणाम शूल (स) विसूचिका (द) अन्नद्रवशूल

(455) पथ्य और अपथ्य का एक साथ सेवन करना कहलाता है।
(अ) अध्यशन (ब) विषमासन (स) समशन (द) विरूद्धाहार

(456) तं द्विविधं आमप्रदोषमाचक्षते भिषजः – विसूचिकाम् ....च।
(अ) अलसकं (ब) दण्डालसकं (स) विलमबिकां (द) आमाजीर्ण

(457) 'विलम्बिका' का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(458) प्रयाति नोर्ध्व नाधस्तादाहारो न च पच्यते। आमाशयेऽलसीभूतस्तेन सोऽलसकः स्मृतः। –किसका कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(459) चरकानुसार विषसदृश लक्षण वाले, परम असाध्य, आशुकारी और विरूद्धचिकित्सीय होता है।
(अ) अलसक (ब) दण्डालसक (स) विसूचिका (द) आमदोष

(460) उर्ध्व और अधः मार्ग से आमदोष का प्रवृत्त होना किसका लक्षण है।
(अ) अलसक (ब) दण्डालसक (स) विसूचिका (द) आमदोष

(461) लंघनमेवाग्रे – किसकी चिकित्सा है।
(अ) अलसक (ब) दण्डालसक (स) विसूचिका (द) आमदोष

(462) सर्वप्रथम 'सलवणमुष्ण जल से उल्लेखन' किसकी चिकित्सा है।
(अ) अलसक (ब) दण्डालसक (स) विसूचिका (द) आमदोष

(463) निद्रानाशोऽरतिः कम्पो मूत्राघातो विसंज्ञता। – किसके उपद्रव है।
(अ) अजीर्ण (ब) अलसक (स) विसूचिका (द) बिलम्बिका

(464) प्रायः सभी प्रकार के शूलों में कौनसे दोष प्रधान रूप से रहता है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) त्रिदोष

(465) माधवानुसार 'शूल' के भेद होते हैं।
(अ) 2 (ब) 6 (स) 8 (द) 4

(466) सुश्रुतानुसार 'शूल' के भेद होते हैं।
(अ) 2 (ब) 6 (स) 8 (द) 4

(467) भुक्ते जीर्यति यच्छूलं – कौनसे शूल का लक्षण है।
(अ) परिणामशूलं (ब) अन्नद्रवशूल (स) उदरशूल (द) कोई नहीं

(468) जीर्णे जीर्यत्यजीर्णे वा यच्छूलमुपजायते – किसका लक्षण है।
(अ) वातिक ग्रहणी (ब) वातिक गुल्म (स) अन्नद्रव शूल (द) परिणाम शूल

(469) 'अम्लपित्त' का सर्वप्रथम वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) माधव (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप

(470) माधवानुसार 'अम्लपित्त' के भेद होते हैं।
(अ) 2 (ब) 6 (स) 3 (द) 5

(471) अम्लपित्त में वमन कब कराते है।
(अ) दाह होने पर (ब) अम्लोद्गार आने पर (स) तृष्णा रहने पर (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

(472) अम्लपित्त रोग की संशमन औषध है।
(अ) अविपत्तिकर चूर्ण (ब) सूतशेखर रस (स) कामदुधा रस (द) उपरोक्त सभी

(473) हारीत ने पाण्डु रोग के भेद माने होते हैं।
(अ) 3 (ब) 8 (स) 7 (द) 5

(474) चरकानुसार पाण्डु रोग में कौनसा दोष होता है।
(अ) साधक पित्त (ब) रक्त (स) पाचक पित्त (द) रंजक पित्त

(475) चरकानुसार पाण्डु रोग में दूष्य है।
(अ) त्वक्, मांस (ब) रक्त (स) त्वक्, रक्त, मांस (द) त्वक्, मांस, मेद

(476) सुश्रुतानुसार पाण्डु रोग में दूष्य है।
(अ) त्वक्, मांस (ब) रक्त (स) त्वक्, रक्त, मांस (द) त्वक्, मांस, मेद

(477) शूनाक्षिकूटो हरितः शीर्णलोमा हतप्रभः। – किसका लक्षण है।
(अ) पाण्डु (ब) कामला (स) हलीमक (द) उपर्युक्त में कोइ नहीं

(478) क्रिमिकोष्ठोऽतिसार्येत मलं सासृक् कफान्वितम्। – किसका लक्षण है।
(अ) कृमि रोग (ब) अतिसार (स) मृद्भिकाभक्षण पाण्डु (द) दूष्योदर

(479) रक्तपीतशकृन्मूत्रो भेकवर्णो हतेन्द्रियः। – किसका लक्षण है।
(अ) पाण्डु (ब) कामला (स) कुम्भ कामला (द) हलीमक

(480) बलोत्साहक्षयस्तन्द्रा मन्दाग्नित्वं मृदुज्वरः। – किसका लक्षण है।
(अ) पाण्डु (ब) कामला (स) कुम्भ कामला (द) हलीमक

(481) नवायस लौह में कुल कितने द्रव होते है।
(अ) 4 (ब) 7 (स) 9 (द) 10

(482) निम्न में से कौनसा योग पाण्डु में देय है।
(अ) बीजकारिष्ट (ब) धात्र्यरिष्ट (स) गौडोऽरिष्ट (द) उपर्युक्त सभी

(483) 'तिलपिष्टनिभ' मलत्याग। – किसका लक्षण है।
(अ) कोष्ठात्रित कामला (ब) शाखात्रित कामला (स) हलीमक (द) पानकी

(484) कृष्णात्रेयेण भाषितम् है।
(अ) बीजकारिष्ट (ब) पुर्ननवा मण्डूर (स) नवायस चूर्ण (द) नागराद्यं चूर्ण

(485) हलीमक में कौनसी चिकित्सा की जाती है।
(अ) वातकफशामक (ब) वातपित्तशामक (स) पित्तकफशामक (द) उपर्युक्त में कोइ नहीं

(486) वाग्भट्ट ने किसे 'लोढर' की संज्ञाए दी है ?
(अ) हलीमक (ब) मदात्यय (स) वातव्याधि (द) अत्वाभिनिवेश

(487) हिक्का श्वास होते है।
(अ) पित्तस्थान समुद्भव (ब) कफस्थान समुद्भव (स) अन्नस्थान समुद्भव (द) प्राणस्थान समुद्भव

(488) किसके सेवन काल में कुलत्थ का निषेध है।
(अ) योगराज (ब) शिलाजतु (स) भल्लातक (द) उपरोक्त सभी

(489) कौनसे रोग में तीक्ष्ण संशोधन कराने का विधान है।
(अ) मृत्तिका भक्षण जन्य पाण्डु (ब) कामला (स) कुम्भकामला (द) हलीमक

(490) पुनर्नवामण्डूर का अनुपान है।
(अ) मधु (ब) सर्पि (स) तक्र (द) जल

(491) मृत्तिका भक्षण जन्य पाण्डु में संशोधन पश्चात् कौनसे घृत से स्नेहन का विधान है।
(अ) दन्ती घृत (ब) दार्वी घृत (स) त्रिवृत्त घृत (द) व्योषाद्य घृत

(492) चरक ने किस व्याधि की चिकित्सा में गोदुग्ध एवं गोमूत्र को मिलाकर पीने के लिए निर्देश है ?
(अ) कामला (ब) पाण्डु (स) रक्तपित्त (द) वातरक्त

(493) चरकानुसार गोमूत्र+त्रिफलारस का कितनी समयावधि तक प्रयोग करने पर पाण्डु रोग ठीक हो जाता है
(अ) 1 माह (ब) 1 पक्ष (स) 1 सप्ताह (द) 1 वर्ष

(494) चरकानुसार कामला रोग में दूष्य है।
(अ) त्वक्, मांस (ब) रक्त (स) रक्त, मांस (द) त्वक्, रक्त, मांस

(495) सुश्रुतानुसार कामला रोग में दूष्य है।
(अ) त्वक्, मांस (ब) रक्त (स) रक्त, मांस (द) त्वक्, रक्त, मांस

(496) कामला के रोगी में देय अंजन है।
(अ) कुष्माण्ड स्वरस (ब) अगस्तपत्र स्वरस (स) द्रोणपुष्पी स्वरस (द) अग्निमन्थ स्वरस

(497) चक्रपाणि ने कामला के रोगी में किसका नस्य देने का निषेध बतलाया है।
(अ) निशागैरिक धात्री चूर्ण (ब) कर्कोटमूल (स) जालिनीफल (द) उपरोक्त सभी

(498) सुश्रुतानुसार "महान शोथ और पर्वभेद" किसके लक्षण है।
(अ) कुम्भकामला (ब) कामला (स) हलीमक (द) पानकी

(499) हलीमक कौनसा दोष प्रधान रोग है।
(अ) वातकफ प्रधान (ब) वातपित्त प्रधान (स) पित्तकफ प्रधान (द) उपर्युक्त में कोई नहीं

(500) चरक ने "द्राक्षावलेह" का निर्देश किसकी चिकित्सा में किया है।
(अ) कुम्भकामला (ब) कामला (स) हलीमक (द) पानकी

(501) "हरितश्यावपीतकः" – किसका लक्षण है।
(अ) कुम्भकामला (ब) कामला (स) हलीमक (द) पानकी

SHYAM VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING

(502) "बहिरन्तश्च पीतता" – किसका लक्षण है।
(अ) कुम्भकामला (ब) कामला (स) हलीमक (द) पानकी

(503) चरक ने हलीमक की चिकित्सा में कौनसी का निर्देश दिया है।
(अ) यापना बस्ति (ब) क्षीर बस्ति (स) अनुवासन बस्ति (द) उपरोक्त सभी

(504) प्राणनाशु निकृन्ततः। – किस रोग के लिए कहा गया है।
(अ) हिक्का, श्वास (ब) अतिसार, प्रवाहिका (स) कुष्ठ, विसर्प (द) वातव्याधि

(505) श्वास कौनसा दोष प्रधान रोग है।
(अ) वातकफ प्रधान (ब) वातपित्त प्रधान (स) पित्तकफ प्रधान (द) उपर्युक्त में से कोइ नहीं

(506) 'प्राणस्य च विलोमत्वं' श्वासानां...............लक्षणम् ।
(अ) पूर्व (ब) सामान्य (स) कच्छ्रसाध्य (द) मारक

(507) 'प्राणोपरोधिनी' हिक्का है।
(अ) महा हिक्का (ब) व्यपेता हिक्का (स) गम्भीरा हिक्का (द) क्षुद्रा हिक्का

(508) 'प्राणान्तिकी' हिक्का है।
(अ) महा हिक्का (ब) व्यपेता हिक्का (स) गम्भीरा हिक्का (द) क्षुद्रा हिक्का

(509) चरकानुसार हिक्का का भेद नही हैं।
(अ) महा हिक्का (ब) व्यपेता हिक्का (स) गम्भीरा हिक्का (द) यमला हिक्का

(510) नाभि, पक्वाशय से उत्पन्न हिक्का हैं।
(अ) महा हिक्का (ब) व्यपेता हिक्का (स) गम्भीरा हिक्का (द) यमला हिक्का

(511) रक्तैकलोचनः। – कौनसे रोग का लक्षण है।
(अ) महाश्वास में (ब) छिन्नश्वास से (स) उर्ध्वश्वास में (द) क्षुद्रश्वास में

(512) उर्ध्वश्वासे प्रकुपिते ह्यधःश्वासो निरूध्यते। – कौनसे रोग का लक्षण है।
(अ) महाश्वास में (ब) छिन्नश्वास से (स) उर्ध्वश्वास में (द) क्षुद्रश्वास में

(513) 'तमसा वर्धते' किस व्याधि विशेष अवस्था का लक्षण है ?
(अ) संतमक श्वास (ब) प्रतमक श्वास (स) महाश्वास (द) छिन्न श्वास

(514) 'परिदेवी' किस व्याधि विशेष का लक्षण है ?
(अ) उर्ध्व श्वास (ब) तमक श्वास (स) महाश्वास (द) छिन्न श्वास

(515) मूर्च्छा, तथा ज्वर युक्त कौनसा श्वास होता है।
(अ) संतमक श्वास (ब) प्रतमक श्वास (स) महाश्वास (द) छिन्न श्वास

(516) सुश्रुतानुसार तमक श्वास होता है।
(अ) साध्य (ब) कच्छ्र साध्य (स) याप्य (द) असाध्य

(517) लशुन या प्याज या गाजर के स्वरस का नस्य किस रोग में देते हैं।
(अ) श्वास (ब) कास (स) हिक्का (द) हिक्का, श्वास

(518) शीताम्बुसेकः सहसा त्रासो विस्मासनं भयम्। – किस व्याधि में की चिकित्सा हेतु निर्देशित है।
(अ) उन्माद (ब) अपस्मार (स) श्वास (द) हिक्का

(519) "शट्यादि चूर्ण" का निर्देश किस रोग में है ?
(अ) रक्तपित्त (ब) कास (स) ग्रहणी (द) हिक्का, श्वास

(520) चरकानुसार 'मुक्तादि चूर्ण' का प्रयोग किया जाता है।
(अ) कास में (ब) श्वास में (स) तिमिर में (द) उपरोक्त सभी

(521) 'कुक्षि में आटोप होना' किस व्याधि का पूर्वरूप है।
(अ) हिक्का (ब) अर्श (स) उदररोग (द) अ, ब दोनों

(522) हिक्का श्वास में कौनसी चिकित्सा की जाती है।
(अ) बृंहण, शमन (ब) बृंहण, दीपन (स) क्षपण, शोषण (द) बृंहण, स्तम्भन

(523) 'तेजोवत्यादि घृत' का रोगाधिकार है।
(अ) हिक्का (ब) श्वास (स) कास (द) अतिसार

(524) कास का पूर्वरूप है।
(अ) शूकपूर्णगलास्यता (ब) कण्ठे कण्डू (स) भोज्यानामवरोध (द) उपर्युक्त सभी

(525) "शुष्को वा सकफो वाऽपि कसनात्कास उच्यते।" – किसका कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) चक्रपाणि (द) दृढबल

(526) "स्वरभेद" कौनसे कास का लक्षण है।
(अ) वातिक कास (ब) क्षतज कास (स) क्षयज कास (द) अ, स दोनों

(527) पारावत इवा कूजन्। – किसका लक्षण है।
(अ) अपतानक (ब) अपतंत्रक (स) क्षयज कास (द) क्षतज कास

(528) कपोत इव कूजनं। – किसका लक्षण है।
(अ) अपतानक (ब) अपतंत्रक (स) क्षयज कास (द) क्षयत कास

(529) "अकस्मादुष्णशीतार्तो बह्वाशी दुर्बलः कृशः" – कौनसे कास का लक्षण है।
(अ) वातिक कास (ब) क्षतज कास (स) क्षयज कास (द) पित्तज कास

(530) 'दुर्गन्धं हरितं रक्तं ष्ठीवेत् पूयोपमं कफम्' – किसका लक्षण है।
(अ) क्षतज कास (ब) क्षयज कास (स) राजयक्ष्माजन्य कास (द) उपद्रवयुक्त कास

(531) किस कास की 'आत्ययिक चिकित्सा' करने का निर्देश है। (च. चि. 18/134)
(अ) वातिक कास (ब) कफज कास (स) क्षयज कास (द) क्षतज कास

(532) अगस्त्य हरीतकी में हरीतिकी की संख्या है
(अ) 100 (ब) 200 (स) 25 (द) 50

(533) कौनसे कास की चिकित्सा में 'कण्टकारी घृत' देने का निर्देश है।
(अ) वातिक कास (ब) कफज कास (स) क्षयज कास (द) अ, ब दोनों

(534) पैत्तिके सकफे कासे ....सर्पिषां हितम्।
(अ) वमनं (ब) विरेचनं (स) स्नेहनं (द) अनुवासनं

(535) वातज कास में कौनसा धूम्र दिया जाता है।
(अ) पाठादि धूम (ब) मनःशिलादि धूम (स) शट्यादि धूम (द) दशमूलादिधूम

(536) व्यत्यास चिकित्सा कौनसे कास में की जाती है।
(अ) वातज कास में (ब) क्षतज कास में (स) क्षयज कास में (द) उपर्युक्त सभी में

(537) "द्विपंचमूलादि घृत' कौनसे कास की चिकित्सा में निर्दिष्ट है।
(अ) वातज कास में (ब) क्षतज कास में (स) क्षयज कास में (द) उपर्युक्त सभी में

(538) अतिसार का पर्याय है।
(अ) उदरामय (ब) त्रिकाण्ड शोथ (स) गिलोद शोथ (द) उपर्युक्त सभी

(539) अतिसार का कौनसा भेद चरक ने नहीं बतलाया है।
(अ) शोकज (ब) भयज (स) आमज (द) उपर्युक्त सभी

(540) "ज्वरातिसार" की चिकित्सा किस आचार्य ने बतलायी है।
(अ) चरक (ब) भावप्रकाश (स) चक्रपाणि (द) माधव

(541) 'विडसंग' यह लक्षण अतिसार के पूर्व में .... मिलता है। (सु. उ. 40/9)
(अ) सर्वदा (ब) नहीं (स) कभी कभी (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(542) अतिसार के 36 भेद किस आचार्य ने बतलाए है
(अ) चरक (ब) भावप्रकाश (स) चक्रपाणि (द) शारंगधर

(543) 'कृतेऽप्यकृतसंज्ञः'– कौनसे अतिसार का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(544) कौनसा अनुग्रथित अतिसार है। (च. चि. 19/5)
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(545) चरकानुसार 'प्रवाहिका युक्त' अतिसार है ?
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(546) वाग्भट्टानुसार 'दग्धगुडाभासं सपिच्छापरिकर्तिकम्' कौनसे अतिसार का लक्षण है ?
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(547) हर्षणी चिकित्सा की जाती है।
(अ) शोकज अतिसार में (ब) मदात्य में (स) लीन गर्भ में (द) उपर्युक्त सभी में

(548) आश्वासन चिकित्सा की जाती है।
(अ) भयज अतिसार में (ब) द्विष्टार्थ संयोगज छर्दि में
(स) उन्माद में (द) उपर्युक्त सभी में

(549) चरकानुसार सन्निपातज अतिसार में सर्वप्रथम किसकी चिकित्सा की जाती है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) उपर्युक्त कोई नही

(550) चरकानुसार "गुदभ्रंदारूजापहम्" हैं।
(अ) चांगेरी घृत (ब) चव्यादि घृत (स) सुनष्णिकचांगेरी घृत (द) द्राव्यादि घृत

(551) चरकानुसार पिच्छा वस्ति का रोगाधिकार है।
(अ) अतिसार (ब) प्रवाहिका (स) गुदभ्रंश (द) उपर्युक्त सभी

(552) "बिम्बिशि" किस रोग का पर्याय है।
(अ) अतिसार (ब) प्रवाहिका (स) गुदभ्रंश (द) विसूचिका

AYURVEDA PG ENTRANCE BY DR. SHYAM VIDHYA SINGH

(553) अष्टांग हृदयाकार ने 'दाडिमाष्टक चूर्ण' कौनसे रोग की चिकित्सा में बताया है ?
(अ) वातज अतिसार (ब) पित्तज अतिसार (स) कफज अतिसार (द) ग्रहणी रोग

(554) मधु शर्करा मिश्रित श्रृतशीत अजा दुग्ध पान, भोजन और गुदप्रक्षालन हेतु किसकी चिकित्सा में निर्दिष्ट है
(अ) पित्तासार (ब) रक्तातिसार (स) प्रवाहिका (द) गुदभ्रंश

(555) सुश्रुतानुसार प्रवाहिका के भेद है ?
(अ) 6 (ब) 5 (स) 4 (द) 2

(556) चरकानुसार आमातिसार में मलनिष्काशनार्थ किस द्रव्य का प्रयोग करना चाहिए।
(अ) निशोथ (ब) आरग्वध (स) कुटकी (द) हरीतकी

(557) "कुटज" किस रोग की एकल औषध है ?
(अ) अतिसार (ब) प्रवाहिका (स) दोनों (द) इनमें से कोई नहीं

(558) "निःसारक" किस रोग का पर्याय है ?
(अ) अतिसार (ब) प्रवाहिका (स) गुदभ्रंश (द) विसूचिका

(559) वातस्यानु जयेत् पित्तं पित्तस्यानु जयेत कफम्। त्रयाणां वा जयेत्पूर्वं यो भवेत् बलवत्तमः । –किसकी चिकित्सा है
(अ) सन्निपातज अतिसार (ब) योनिव्यापद (स) त्रिदोज मूत्रकृच्छ्र (द) उपर्युक्त सभी

(560) हृदुत्क्लेशकफप्रसकौ द्वेशोऽशने च – किसको पूर्वरूप है।
(अ) ग्रहणी (ब) अजीर्ण (स) उदावर्त (द) छर्दि

(561) कृमिज छर्दि का सर्वप्रथम वर्णन किसने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) अष्टांग हृदय (द) अष्टांग संग्रह

(562) छर्दि में कौनसी चिकित्सा की जाती है।
(अ) वातपित्तहर (ब) वातकफहर (स) कफपित्तहर (द) वातशामक

(563) चरकानुसार कौनसी छर्दि में लंघन नहीं करना चाहिए।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) कृमिज

(564) चरकानुसार कौनसी छर्दि में संशोधन नहीं करना चाहिए
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) कृमिज

(565) कौनसी छर्दि में वातनाशक बृंहण, स्तम्भन चिकित्सा की जाती है।
(अ) कफज छर्दि (ब) चिरकालीक छर्दि (स) कृमिज छर्दि (द) द्विष्टार्थ संयोगज

(566) "विज्ञेयाः सप्त धातवः" का निर्देश किस रोग के संदर्भ में है।
(अ) प्रमेह (ब) विसर्प (स) कुष्ठ (द) उदररोग

(567) "लसिका" किस रोग का दूष्य है ?
(अ) प्रमेह (ब) विसर्प (स) कुष्ठ (द) उपरोक्त सभी

(568) विसर्प रोग का प्रथम दूष्य है ?
(अ) त्वक् (ब) रक्त (स) लसीका (द) मांस

(569) चरकानुसार विसर्प के भेद होते है ?
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(570) सुश्रुतानुसार विसर्प के भेद होते है ?
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(571) वाग्भट्टानुसार विसर्प के भेद होते है ?
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(572) "कर्दम विसर्प" में कौनसा दोष होता है ?
(अ) वातपित्तज (ब) वातकफज (स) कफपित्तज (द) सन्निपातज

(573) "ग्रन्थि विसर्प" में कौनसा दोष होता है ?
(अ) वातपित्तज (ब) वातकफज (स) कफपित्तज (द) सन्निपातज

(574) "आग्नेय विसर्प" की साध्यासाध्यता है ?
(अ) साध्य (ब) कृच्छ्रसाध्य (स) याप्य (द) असाध्य

(575) निम्न में से कौनसा कथन विसर्प के संदर्भ में सही नहीं है।
(अ) विसर्प एंव परिसर्प एक ही होते है (ब) विसर्प में रक्तमोक्षण ही श्रेष्ठ उपचार है
(स) सन्निपातज विसर्प कृच्छ्रसाध्य होता है (द) कर्दम विसर्प कुणप गंधी होता है

(576) कौनसा विसर्प आमाशय आश्रित होता है।
(अ) आग्नेय विसर्प (ब) ग्रन्थि विसर्प (स) कर्दम विसर्प (द) सन्निपातज विसर्प

(577) कौनसा विसर्प "एकदेशग्राही" होता है।
(अ) आग्नेय विसर्प (ब) ग्रन्थि विसर्प (स) कर्दम विसर्प (द) सन्निपातज विसर्प

(578) कौनसा विसर्प "कुणपगन्धी" होता है।
(अ) आग्नेय विसर्प (ब) ग्रन्थि विसर्प (स) कर्दम विसर्प (द) सन्निपातज विसर्प

(579) चरकानुसार "कम्पिल्लकादि तैल" का रोगाधिकार है।
(अ) वातरक्त (ब) उरूस्तंभ (स) कुष्ठ (द) विसर्प

(580) एकतस्तानि सर्वाणि रक्तमोक्षणमेकतः। – किस रोग की चिकित्सा के संदर्भ में कहा गया है।
(अ) वातरक्त (ब) उरूस्तंभ (स) कुष्ठ (द) विसर्प

(581) चरकानुसार तृष्णा के भेद है ?
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(582) वाग्भट्टानुसार तृष्णा के भेद है ?
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(583) सुश्रुतानुसार तृष्णा के भेद है ?
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(584) चरकानुसार उपसर्गज रोग है।
(अ) विसर्प (ब) कुष्ठ (स) तृष्णा (द) दुष्ट व्रण

(585) सुश्रुतानुसार औपसर्गिक रोग है।
(अ) विसर्प (ब) कुष्ठ (स) तृष्णा (द) दुष्ट व्रण

(586) तृष्णा किस रोग का उपद्रव है ?
(अ) विसर्प (ब) अतिसार (स) व्रण (द) छर्दि

(587) निम्न में से किस रोग का क्षतज भेद होता है।
(अ) विसर्प (ब) कास (स) तृष्णा (द) उपरोक्त सभी

(588) निम्न में से कौनसी तृष्णा का वर्णन आचार्य चरक ने नहीं किया है।
(अ) कफज (ब) आमज (स) उपसर्गज (द) क्षयज

(589) निम्न में से कौनसी तृष्णा का वर्णन आचार्य वाग्भट्ट ने नहीं किया है।
(अ) कफज (ब) आमज (स) उपसर्गज (द) क्षयज

(590) निम्न में से कौनसी तृष्णा का वर्णन आचार्य सुश्रुत ने नहीं किया है।
(अ) कफज (ब) आमज (स) उपसर्गज (द) क्षयज

(591) सर्वदाऽम्बुकामित्वम् – निरन्तर जल पीने की इच्छा का बना रहना। – किस रोग का लक्षण है ?
(अ) विसर्प (ब) अतिसार (स) तृष्णा (द) छर्दि

(592) तृष्णा का उपद्रव है ?
(अ) चित्तनाश (ब) बाधिर्य (स) दोनों (द) कोई नहीं

(593) चरकानुसार कौनसी तृष्णा आग्नेय होती है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) उपसर्गज (द) आमज

(594) चरकानुसार "शिरोभ्रम" कौनसी तृष्णा का लक्षण है ?
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) उपसर्गज (द) आमज

(595) तृष्णा में कौनसी चिकित्सा की जाती है।
(अ) वातशामक (ब) वातपित्तशामक (स) वातकफशामक (द) कफपित्तशामक

(596) स्पर्श चिकित्सा की जाती है।
(अ) पीनस में (ब) अतिसार में (स) पक्षाघात में (द) तृष्णा में

(597) तृष्णा की चिकित्सा में कौनसे पंचमूल से साधित जल का प्रयोग कियया जाता है।
(अ) लघु पंचमूल (ब) बृहत् पंचमूल (स) तृण पंचमूल (द) वल्ली पंचमूल

(598) कौनसी व्याधि में जल का निषेध है ?
(अ) उदर रोग (ब) अतिसार (स) गुल्म (द) सभी

(599) कौनसी व्याधि में जल का निषेध नहीं है ?
(अ) प्रमेह (ब) पाण्डु (स) प्लीहा (द) यक्ष्मा

(600) कौनसी व्याधि में उष्ण जल निर्दिष्ट है ?
(अ) पीनस (ब) श्वास (स) गलग्रह (द) उपरोक्त सभी

(601) चरकानुसार विष के भेद होते है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

(602) किस ऋतु में विष तेजी से फैलता है ?
(अ) वर्षा ऋतु (ब) शरद ऋतु (स) ग्रीष्म ऋतु (द) शिशिर ऋतु

(603) किस काल में विष का वेग मंद हो जाता है
(अ) वर्षा ऋतु (ब) शरद ऋतु (स) ग्रीष्म ऋतु (द) शिशिर ऋतु

SHYAM VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER BY. DR. NEELIMA SINGH LODHI

(604) चरक, सुश्रुत के अनुसार स्थावर विष के वेग होते है क्रमशः –

(अ) 7, 8 (ब) 8, 7 (स) 8, 8 (द) 7, 7

(605) चरकानुसार विष के गुण होते है।

(अ) 8 (ब) 9 (स) 10 (द) 11

(606) चरकानुसार विष के उपक्रम होते है।

(अ) 60 (ब) 24 (स) 14 (द) 36

(607) चरक ने गरविष में किसके साथ 1 शाण स्वर्णयोग मिलाकर वमन कराने के लिए कहा है।

(अ) पुत्रजीवक (ब) धार्मागव (स) ताम्ररज चूर्ण (द) मदनफल

(608) गरविष नाशक श्रेष्ठ औषध है।

(अ) पुत्रजीवक (ब) अंकोल (स) अक्षीव पिप्पली (द) धामार्गव

(609) 'कालान्तरविपाकि' कौनसे विष का लक्षण है।

(अ) गरविष (ब) दूषीविष (स) स्थाविर विष (द) जांगम विष

(610) चरकानुसार स्थाविर विष की गति होती है।

(अ) अधोगति (ब) ऊर्ध्वगति (स) तिर्यकगति (द) उपर्युक्त सभी

(611) 'दन्तहर्ष, गलग्रहम्, फेनवम्य' कौनसे विष का लक्षण है।

(अ) गरविष (ब) दूषीविष (स) स्थाविर विष (द) जांगम विष

(612) 'निद्रा, तन्द्रा, क्लम' कौनसे विष का लक्षण है।

(अ) गरविष (ब) दूषीविष (स) स्थाविर विष (द) जांगम विष

(613) चरकानुसार "लोमहर्ष" कौनसे विष का लक्षण है।

(अ) गरविष (ब) दूषीविष (स) स्थाविर विष (द) जांगम विष

(614) चरकानुसार मनुष्य, पशु एंव पक्षी में स्थाविर विष के वेग क्रमशः .... होते है।

(अ) 7, 4, 3 (ब) 7, 3, 4 (स) 8, 4, 3 (द) 8, 3, 4

(615) चरकानुसार 'दन्तहर्ष' कौनसे स्थाविर विष वेग का लक्षण है।

(अ) प्रथम (ब) द्वितीय (स) तृतीय (द) चतुर्थ

(616) चरकानुसार 'तमक श्वास' कौनसे स्थाविर विष वेग का लक्षण है।

(अ) प्रथम (ब) द्वितीय (स) तृतीय (द) चतुर्थ

(617) चरकानुसार 'मण्डल, कोठ, कण्डू' कौनसे स्थाविर विष वेग का लक्षण है।

(अ) प्रथम (ब) द्वितीय (स) तृतीय (द) चतुर्थ

(618) चरकानुसार 'सर्वदोष प्रकोप' कौनसे स्थाविर विष वेग का लक्षण है।

(अ) प्रथम (ब) द्वितीय (स) तृतीय (द) चतुर्थ

(619) चरकानुसार 'रक्तप्रकोप' कौनसे स्थाविर विष वेग का लक्षण है।

(अ) प्रथम (ब) द्वितीय (स) तृतीय (द) चतुर्थ

(620) चरकानुसार 'हिक्का' कौनसे स्थाविर विष वेग का लक्षण है।

(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

(621) चरकानुसार 'मृत्यु' कौनसे स्थाविर विष वेग का लक्षण है।

(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(622) स्थावर विष के किस वेग में 'मांस दूषित' होता हैं।

(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

(623) चरकानुसार कौनसे स्थावर विष वेग की चिकित्सा में नस्य देते है।

(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

(624) कौनसे स्थावर विष वेग की चिकित्सा में क्षारागद देते है।

(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

(625) कौनसे स्थावर विष वेग की चिकित्सा में संज्ञास्थापन औषध देते है।

(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

(626) कौनसे स्थावर विष वेग की चिकित्सा में शिरीष का आश्च्योतन, अंजन, नस्य देते है।

(अ) तृतीय (ब) चतुर्थ (स) पंचम (द) षष्टम्

(627) कौनसे स्थावर विष वेग की चिकित्सा में प्रतिविष चिकित्सा की जाती है।

(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

(628) 'भ्रमति' पशुओं में विष के किस वेग का लक्षण हैं।

(अ) प्रथम (ब) द्वितीय (स) तृतीय (द) चतुर्थ

(629) विष का रस अनिर्देश्यरस किस आचार्य ने बतलाया है।

(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) शारग्धर (द) वाग्भट्ट

(630) निम्नलिखित में से विष का कौनसा गुण आचार्य सुश्रुत ने नहीं बतलाया है।
(अ) व्यवायी (ब) अपाकी (स) छेदी (द) विशद

(631) चरकानुसार विष अपने के किस गुण के कारण मर्मघ्न होता है।
(अ) लघु (ब) तीक्ष्ण (स) विकाशी (द) व्यवायि

(632) विष अपने के किस गुण के कारण दुश्चिकित्सीय होता है ।
(अ) लघु (ब) तीक्ष्ण (स) विकाशी (द) व्यवायि

(633) चरकानुसार विष अपने के किस गुण के कारण प्राणघ्न होता है।
(अ) लघु (ब) आशु (स) विकाशी (द) व्यवायि

(634) सुश्रुतानुसार विष अपने किस गुण के कारण सद्यःप्राणहर होता है।
(अ) लघु (ब) आशु (स) विकाशी (द) व्यवायि

(635) दोषानुसार विष के लक्षणों का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) काश्यप (द) वाग्भट्ट

(636) चरकानुसार किटिभकोठलिंगं कौनसे विष का लक्षण है।
(अ) गरविष (ब) दूषीविष (स) स्थाविर विष (द) जांगम विष

(637) 'आदौ हृदयं रक्ष्य'' का वर्णन चरक ने किसकी चिकित्सा के अन्तर्गत किया है।
(अ) विष (ब) हृद्रोग (स) हृच्छूल (द) हृदयाभिघात

(638) चरकानुसार विष का प्रथम उपक्रम है ?
(अ) मन्त्रोपचार (ब) अरिष्टा बंधन (स) रक्तमोक्षण (द) मृतसंजीवन

(639) चरकानुसार विष का अन्तिम उपक्रम है ?
(अ) मन्त्रोपचार (ब) अरिष्टा बंधन (स) रक्तमोक्षण (द) मृतसंजीवन

(640) निम्न में से कौनसा अगद चरकोक्त नहीं है।
(अ) मेघनाद अगद (ब) गन्धहस्तीनामक अगद (स) मृतसंजीवन अगद (द) क्षारागद

(641) मृतसंजीवन अगद कौनसे विष की चिकित्सा में देते है।
(अ) दूषी विष (ब) सर्पविष (स) गरविष (द) सभी विषों में

(642) महागन्धहस्ती अगद में कितनी औषध होती है।
(अ) 60 (ब) 24 (स) 80 (द) 85

(643) क्षारागद में कौनसे क्षार का प्रयोग होता है।
(अ) कालमुष्क (ब) पलाश (स) अपामार्ग (द) यवक्षार

(644) चरकानुसार विषमिश्रित अन्न के सेवन से काक पर क्या प्रभाव पडता है।
(अ) मृत्यु (ब) ग्लानि (स) स्वर वैकृत्य (द) क्षाम स्वर

(645) चरकानुसार विषमिश्रित अन्न के सेवन से मक्षिका पर क्या प्रभाव पडता है।
(अ) मृत्यु (ब) ग्लानि (स) स्वर वैकृत्य (द) क्षाम स्वर

(646) चरकानुसार 'हनुस्तम्भ' किस स्थानगत विष का लक्षण है।
(अ) मुखगत (ब) आमाशयगत (स) पक्वाशयगत (द) उदरगत

(647) चरकानुसार 'दृष्टिहदयोपरोध' किस स्थानगत विष का लक्षण है।
(अ) मुखगत (ब) आमाशयगत (स) पक्वाशयगत (द) उदरगत

(648) चरकानुसार 'मूर्च्छा, मद, मोह' किस स्थानगत विष का लक्षण है।
(अ) मुखगत (ब) आमाशयगत (स) पक्वाशयगत (द) उदरगत

(649) चरकानुसार 'तन्द्रा और कार्श्य' किस स्थानगत विष का लक्षण है।
(अ) मुखगत (ब) आमाशयगत (स) पक्वाशयगत (द) उदरगत

(650) चरकानुसार सर्प के भेद होते है।
(अ) 4 (ब) 5 (स) 7 (द) 3

(651) स्वस्तिक, अंकुश चिह्न् युक्त फण वाले सर्प है ?
(अ) दर्वीकर (ब) मण्डली (स) राजीमान (द) संयोगज

(652) चरकानुसार 'वृद्धावस्था' में प्रकुपित होने वाले' सर्प है।
(अ) दर्वीकर (ब) मण्डली (स) राजीमान (द) संयोगज

(653) चरकानुसार 'तरूणावस्था में प्रकुपित होने वाले' सर्प है।
(अ) दर्वीकर (ब) मण्डली (स) राजीमान (द) संयोगज

(654) राजिमान सर्पो के दंश से कौनसा दोष प्रकुपित होता है।
(अ) वात (ब) पित्तज (स) कफ (द) त्रिदोष

(655) मण्डली सर्पो के दंश से कौनसा दोष प्रकुपित होता है
(अ) वात (ब) पित्तज (स) कफ (द) त्रिदोष

(656) 'सूक्ष्मदंष्ट्रा' सर्प है।
(अ) दर्वीकर (ब) मण्डली (स) राजीमान (द) संयोगज

(657) रात्रि के पिछले प्रहर में करने वाले सर्प है ?
(अ) दर्वीकर (ब) मण्डली (स) राजीमान (द) संयोगज

(658) 'कूर्मपृष्ठसम शोथ' कौनसे सर्पदंष्ट्र का लक्षण है।
(अ) दर्वीकर (ब) मण्डली (स) राजीमान (द) संयोगज

(659) 'उपजिह्वा रोग' कौनसे सर्पदंष्ट्र का लक्षण है।
(अ) बाल (ब) वृद्ध (स) गर्भिणी (द) प्रसूता

(660) 'पाण्डुवक्त्रता' कौनसे सर्पदंष्ट्र का लक्षण है।
(अ) बाल (ब) वृद्ध (स) गर्भिणी (द) प्रसूता

(661) सर्पदंष्ट्रा दांतो का सही वर्ण मिलाप नहीं है।
(अ) वामाधरा = असिता (ब) वामोत्तरा – पीता
(स) दक्षिणाधरा – रक्त (द) दक्षिणोत्तरा – श्याम

(662) चरकानुसार कीटविष के भेद होते है ?
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

(663) दंशे स्वेदं रूजं दाहं कुर्यात् – किसकी दंशता का लक्षण है।
(अ) शदपदी (ब) मण्डूक (स) गृहगोधिका (द) गलगोलिका

(664) एकदंष्ट्रार्दितः शूनः सरूकः स्यात् – किसकी दंशता का लक्षण है।
(अ) शदपदी (ब) मण्डूक (स) गृहगोधिका (द) सविष मत्स्य

(665) दाहतोदस्वेदशोथकारी – किसकी दंशता का लक्षण है।
(अ) शदपदी (ब) मण्डूक (स) गृहगोधिका (द) सविष मत्स्य

(666) दाहशोफरूज – किसकी दंशता का लक्षण है।
(अ) शदपदी (ब) मण्डूक (स) गृहगोधिका (द) सविष मत्स्य

(667) जलौका दंश में कौनसी चिकित्सा की जाती है ?
(अ) वातहर (ब) वातपित्तहर (स) वातकफहर (द) कफपित्तहर

(668) कणभ विष होता है ?
(अ) श्लैष्मिक (ब) वातप्रधान (स) वातपित्तज (द) त्रिदोषज

(669) मूषक विष होता है ?
(अ) श्लैष्मिक (ब) वातप्रधान (स) वातपित्तज (द) त्रिदोषज

(670) वृश्चिक विष होता है ?
(अ) श्लैष्मिक (ब) वातप्रधान (स) वातपित्तज (द) त्रिदोषज

(671) उच्चिटिंग विष होता है ?
(अ) श्लैष्मिक (ब) वातप्रधान (स) वातपित्तज (द) त्रिदोषज

(672) कीट विष होता है ?
(अ) श्लैष्मिक (ब) वातप्रधान (स) वातपित्तज (द) त्रिदोषज

(673) लूता विष होता है ?
(अ) श्लैष्मिक (ब) वातप्रधान (स) वातपित्तज (द) त्रिदोषज

(674) पागल कुत्ते के दंश से कौनसा दोष प्रकुपित होता है।
(अ) वात (ब) पित्तज (स) कफ (द) त्रिदोष

(675) पागल कुत्ते के लक्षण है।
(अ) शिरोऽभिताप (ब) मुख नीचे लटकाए रखना (स) लालास्राव (द) उपरोक्त सभी

(676) चरक ने खदिरारिष्ट का प्रयोग किसकी चिकित्सा में बतलाया है ?
(अ) कुष्ठ (ब) मांसधातुगत विष में (स) विसर्प (द) श्वित्र

(677) शंका विष का वर्णन सर्वप्रथम किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शांरर्ग्धर

(678) 'पञ्चशिरीष अगद' का प्रयोग चरकानुसार किस विष की चिकित्सार्थ प्रयुक्त किया जाता है ?
(अ) दूषी विष (ब) सर्पविष (स) अर्लविष (द) सभी विषों में

(679) 'पञ्चशिरीष अगद' में कितनी औषधियाँ होती है ?
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 1

(680) 'अमृत घृत' का प्रयोग चरकानुसार किस विष की चिकित्सार्थ प्रयुक्त किया जाता है ?
(अ) दूषी विष (ब) सर्पविष (स) अर्लविष (द) सभी विषों में

SHYAMVIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTRE BHOPAL (M.P.) BY Dr. NEELIMA SINGH LODHI

(681) 'कफस्थानानुपूर्व्या' चिकित्सा की जाती है।
(अ) सन्निपातज ज्वर में (ब) मदात्य में (स) लीन गर्भ में (द) अ, ब दोनों में

(682) चरकानुसार मद्य की अवस्थाए होती है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

(683) "प्रलाप" मद्य की कौनसी अवस्था का लक्षण है।
(अ) प्रथम मद (ब) मध्यम मद (स) उत्तम मद (द) उपरोक्त सभी

(684) दशभिर्दश संक्षोभ्य चेतो नयति विक्रियाम्। – किसके लिये कहा गया है।
(अ) मद्य (ब) विष (स) मदात्यय (द) ओज

(685) चरकानुसार मद्य के अनुरस होते है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

(686) चरकानुसार मद्य के गुण होते है।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 8 (द) 10

(687) चरकानुसार ओज के गुण होते है।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 8 (द) 10

(688) चरकानुसार मद्य और ओज के कितने गुण एक दूसरे के विपरीत होते है।
(अ) 5 (ब) 6 (स) 8 (द) 10

(689) "सुखनिद्राप्रबोध" मद्य की कौनसी अवस्था का लक्षण है।
(अ) प्रथम मद (ब) मध्यम मद (स) उत्तम मद (द) उपरोक्त सभी

(690) " निष्क्रियः" मद्य की कौनसी अवस्था का लक्षण है।
(अ) प्रथम मद (ब) मध्यम मद (स) उत्तम मद (द) उपरोक्त सभी

(691) मद्यपान करने से किसका विभ्रंश होता है।
(अ) धीविभ्रंश (ब) धृतिविभ्रंश (स) स्मृतिविभ्रंश (द) उपरोक्त सभी

(692) 'सात्विक मद्यपान' का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) चक्रपाणि (द) भावप्रकाश

(693) 'राजस मद्यपान' का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) चक्रपाणि (द) भावप्रकाश

(694) 'कितने त्रिको का विचार करने के पश्चात ही मद्यपान करने का निर्देश आचार्यो ने दिया है।
(अ) षट त्रिक (ब) सप्त त्रिक (स) अष्ट त्रिक (द) कोई नहीं

(695) चरकानुसार मदात्यय के भेद होते है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

(696) प्रायः सभी मदात्यय कौनसे दोषज होते है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(697) 'बहुप्रलाप' कौनसे मदात्यय का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(698) अष्टांग लवण का प्रयोग किसकी चिकित्सा में होता है।
(अ) वातज मदात्यय (ब) पित्तज मदात्यय (स) कफज मदात्यय (द) त्रिदोषज

(699) अष्टांग लवण के घटकों में कौनसे लवण का प्रयोग है।
(अ) सैंधव लवण (ब) सौवर्चल लवण (स) सामुद्र लवण (द) उपर्युक्त सभी

(700) किस रोग में हर्षणी चिकित्सा करने का विधान है।
(अ) शोकज अतिसार (ब) लीन गर्भ (स) मदात्यय (द) उपर्युक्त सभी

(701) चरकानुसार व्रण के भेद होते है ?
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

(702) चरकानुसार नानात्व भेद से व्रण होते है ?
(अ) विंशति (ब) चतुर्दश (स) द्वादश (द) चत्वारोविंशति

(703) चरकानुसार प्रदुष्ट व्रण होते है ?
(अ) विंशति (ब) चतुर्दश (स) द्वादश (द) चत्वारो विंशति

(704) चरकानुसार दोष भेद से व्रण होते है ?
(अ) विंशति (ब) चतुर्दश (स) द्वादश (द) चत्वारो विंशति

(705) चरकानुसार व्रण के उपद्रव होते है।
(अ) 2 (ब) 10 (स) 16 (द) 36

(706) सुश्रुतानुसार व्रण के उपद्रव होते है।
(अ) 2 (ब) 10 (स) 16 (द) 36

(707) चरकानुसार व्रण के उपक्रम होते है।
(अ) 60 (ब) 24 (स) 14 (द) 36

(708) सुश्रुतानुसार व्रण के उपक्रम होते है।
(अ) 60 (ब) 24 (स) 14 (द) 36

(709) चरकानुसार व्रण के स्थान होते है।
(अ) 5 (ब) 8 (स) 14 (द) 16

(710) चरकानुसार व्रण के गंध होते है।
(अ) 5 (ब) 8 (स) 14 (द) 16

(711) चरकानुसार व्रण के स्राव होते है।
(अ) 5 (ब) 8 (स) 14 (द) 16

(712) व्रण परीक्षा होती है।
(अ) त्रिविध (ब) षडविध (स) अष्टविध (द) दशविध

(713) चरकानुसार व्रण की परीक्षा है।
(अ) दर्शन (ब) स्पर्शन (स) प्रश्न (द) उपरोक्त सभी

(714) चरकानुसार व्रण का स्थान नहीं है।
(अ) सिरा (ब) स्नायु (स) संधि (द) मर्म

(715) चरकानुसार व्रण का उपद्रव नहीं है।
(अ) पक्षाघात (ब) सिरास्तम्भ (स) हनुग्रह (द) मन्यास्तम्भ

(716) त्वचा, मांस प्रदेश पर स्थित व्रण होता है ?
(अ) सुखसाध्य (ब) कृच्छ्रसाध्य (स) याप्य (द) असाध्य

(717) चरकानुसार शस्त्र कर्म होते है।
(अ) 6 (ब) 8 (स) 12 (द) 24

(718) चरकानुसार शस्त्र कर्म का प्रकार नहीं है।
(अ) एषण (ब) आहरण (स) चूषण (द) उपर्युक्त सभी

(719) सुश्रुतानुसार व्रण का प्रथम उपक्रम है।
(अ) अपतर्पण (ब) रक्षाविधान (स) शोफघ्न (द) लोमरोहण

(720) चरकानुसार व्रण का प्रथम उपक्रम है।
(अ) अपतर्पण (ब) रक्षाविधान (स) शोफघ्न (द) लोमरोहण

(721) चरकानुसार प्रच्छान योग्य व्रण है।
(अ) वातरक्त (ब) ग्रन्थि (स) पिडका (द) उपर्युक्त सभी

(722) चरकानुसार सूक्ष्माननाः कोषवन्त – व्रण में कौनसा शस्त्र कर्म करते है।
(अ) एषण (ब) पीडन (स) चूषण (द) अ, ब दानों

(723) चरकानुसार नाडी व्रण में कौनसा शस्त्र कर्म करते है।
(अ) पाटन (ब) व्यधन (स) लेखन (द) प्रच्छान

(724) चरकानुसार दकोदर रोग में कौनसा शस्त्र कर्म करते है।
(अ) पाटन (ब) व्यधन (स) लेखन (द) प्रच्छान

(725) चरकानुसार कुष्ठ तथा किलास रोग में कौनसा शस्त्र कर्म करते है।
(अ) पाटन (ब) व्यधन (स) लेखन (द) प्रच्छान

(726) चरकानुसार ऐषणी के प्रकार होते है ?
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

(727) व्रणरोपण हेतु चिकित्सा मे निर्देशित नहीं है।
(अ) दूर्वा तैल (ब) कम्पिलक तैल (स) प्रपौण्डरीकादि तैल (द) निर्गुण्डी तैल

(728) चरकानुसार व्रण बंधन के प्रकार होते है।
(अ) 2 (ब) 8 (स) 14 (द) 15

(729) सुश्रुतानुसार व्रण बंधन के प्रकार होते है।
(अ) 2 (ब) 8 (स) 14 (द) 15

(730) निम्न मे से कौनसा चरकोक्त अग्निदाह का साधन है।
(अ) मधु (ब) मोम (स) गुड (द) गोदन्त

(731) त्रिमर्म में शामिल नहीं है ?
(अ) हृदय (ब) वस्ति (स) शिर (द) नाभि

(732) उदावर्त का लक्षण है ?
(अ) विण्मारूतसंग (ब) विण्मारूतमूत्रसंग (स) विड्संग (द) विड्मूत्रसंग

(733) "आध्मानहृल्लासविकर्तिका" – किसका लक्षण है।
(अ) उदावर्त (ब) आनाह (स) अजीर्ण (द) अरोचक

(734) प्रच्छर्दन एंव लघंन पाचन किसकी चिकित्सा है।
(अ) उदावर्त (ब) आनाह (स) अजीर्ण (द) अरोचक

(735) श्यामादि वर्ति का प्रयोग किस रोग में किया जाता है।
(अ) उदावर्त (ब) आनाह (स) अजीर्ण (द) अरोचक

(736) द्विरूत्तर हिंग्वादि चूर्ण का प्रयोग किया जाता है।
(अ) उदावर्त (ब) हृदय रोग (स) विसूचिका (द) उपरोक्त सभी

(737) द्विरूत्तर हिंग्वादि चूर्ण का घटक द्रव्य नहीं है।
(अ) वचा (ब) चित्रक (स) यवक्षार (द) वायविडंग

(738) चरक ने मूत्रकृच्छ्र के कितने भेद बतलाए है ?
(अ) 4 (ब) 8 (स) 12 (द) 13

(739) प्रवाल चूर्ण का प्रयोग कौनसे मूत्रकृच्छ्र चिकित्सा में होता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(740) पुनर्नवादि मिश्रक स्नेह का प्रयोग कौनसे मूत्रकृच्छ्र चिकित्सा में होता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) शुक्रज

(741) मधुकासव का प्रयोग कौनसे मूत्रकृच्छ्र चिकित्सा में होता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) शुक्रज

(742) एर्वारूबीजादि योग का प्रयोग कौनसे मूत्रकृच्छ्र चिकित्सा में होता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सभी में

(743) 'सितोपला और सम मात्रा में यवक्षार का सेवन', किसकी चिकित्सा में होता है।
(अ) मूत्राघात (ब) मूत्रकृच्छ्र (स) बिवन्ध (द) अश्मरी

(744) 'वायोः स्थानानुपूर्व्या प्रसमीक्ष्य कार्यम्'। – किसकी चिकित्सा का सूत्र है।
(अ) सन्निपातज अतिसार (ब) योनिव्यापद (स) त्रिदोज मूत्रकृच्छ्र (द) उपर्युक्त सभी

(745) मूत्रकृच्छ्र में कौनसे रस प्रधान द्रव्य अपथ्य होता है ?
(अ) अम्ल (ब) कटु (स) तिक्त (द) कषाय

(746) अश्मरी का कौनसा लक्षण चरक ने नहीं बताया है।
(अ) मधुवर्णा (ब) कदम्बपुष्प आकृति (स) त्रिपुटी (द) श्लक्षणा

(747) ससेवनीमेहनबस्तिशेलं विशीर्णधारं च करोति मूत्रम् – कौनसे रोग का लक्षण है।
(अ) मूत्राघात (ब) मूत्रकृच्छ्र (स) बिवन्ध (द) अश्मरी

(748) 'शिग्रुकमूलकल्क यूष' का प्रयोग किसकी चिकित्सा में होता है।
(अ) मूत्राघात (ब) मूत्रकृच्छ्र (स) बिवन्ध (द) अश्मरी

(749) अश्मरी भेदनार्थ चरकोक्त निर्दिष्ट योग है ?
(अ) पाषणभेदादि चूर्ण (ब) पाषणभेदादि घृत (स) गोक्षुरादि योग (द) उपरोक्त सभी

(750) खर्जूर, कपित्थ एवं जम्बू का प्रयोग किस रोग में अपथ्य है।
(अ) मूत्राघात (ब) मूत्रकृच्छ्र (स) बिवन्ध (द) अश्मरी

(751) चरक ने हृदय रोग के भेद बतलाए है।
(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

(752) सुश्रुत ने हृदय रोग के भेद बतलाए है।
(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

(753) पुष्करमूलादि चूर्ण, पुष्करमूलादि घृत का प्रयोग कौनसे हृदय रोग की चिकित्सा में होता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(754) सर्पिगुड का प्रयोग कौनसे हृदय रोग की चिकित्सा में होता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(755) ब्रह्मरसायन और अभयाआमलकी रसायन औषधियों का प्रयोग कौनसे हृदयरोग की चिकित्सा में होता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(756) निम्निलिखित में से कौनसा प्रतिश्याय रोग का निदान चरक ने नहीं बतलाया है।
(अ) क्रोध (ब) प्रजागरण (स) शिरोभिताप (द) जलक्रीडा

(757) 'जलाभ स्राव' कौनसे प्रतिश्याय का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) दुष्ट

(758) 'नासाग्र पाक' कौनसे प्रतिश्याय का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) दुष्ट

(759) 'कास, अरूचि' कौनसे प्रतिश्याय का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) दुष्ट

(760) चरकानुसार दुष्ट प्रतिश्याय का उपद्रव है ?
(अ) उपजिह्वा (ब) प्रतिनाह (स) स्वरनाश (द) बाधिर्य

(761) 'यस्य न वेत्ति गन्धम्' कौनसे प्रतिश्याय का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) दुष्ट

(762) न वेत्ति यो गन्धरसांश्च। – किसका लक्षण है।
(अ) दुष्ट प्रतिश्याय (ब) पूतिनस्य (स) अपीनस (द) नासानाह

(763) चरक ने किसका वर्णन नहीं किया है।
(अ) भ्रंशथु (ब) पुटक रोग (स) शिरःकम्प (द) उपर्युक्त सभी

(64) भ्रंशथु और क्षवथु किस रोग में सम्मिलित है ?
(अ) नासा रोग (ब) अक्षि रोग (स) मुख रोग (द) शिरो रोग

(765) नासाप्रतिनाह में कौन–सा दोष प्रकुपित कारण है ?
(अ) वात (ब) पित्त (स) वातकफ (द) त्रिदोष

(766) कौन से नासा रोग में नासिका में अग्नि प्रदीप्त होने सम दाह होती है।
(अ) पित्तज प्रतिश्याय (ब) दीप्त (स) भ्रशंथु (द) नासिकापाक

(767) यदि किसी रोगी की नासा कभी कफ की अधिकता से बंद हो जाती है, कभी शुष्क, कभी प्रक्लिद्य हो जाती है, कभी धुआँ उगलती सी प्रतीत होती है। – यह सब किस नासा रोग के लक्षण है।
(अ) दुष्ट प्रतिश्याय (ब) पूतिनस्य (स) नासिका शोथ (द) अपीनस

(768) 'नासा अंरूषिका' का सर्वप्रथम वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंगर्धर

(769) 'दीप्त' रोग किससे संबंधित रोग है ?
(अ) कर्ण (ब) नासा (स) मुख (द) उदर

(770) 'पूयरक्त' रोग में पूय स्राव किस भाग से होता है ?
(अ) श्रवण (ब) घ्राण (स) मुख (द) उपरोक्त सभी

(771) नासा अंरूषिका में कौन–सा दोष प्रकुपित कारण है ?
(अ) वात (ब) वातपित्त (स) वातकफ (द) त्रिदोष

(772) निम्न में से कौन सा नासा रोग है ?
(अ) आनाह (ब) उपनाह (स) प्रतिनाह (द) कोई नहीं

(773) चरक ने शिरोरोग के कितने भेद बतलाए है।
(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

(774) चरक ने मुखरोग के कितने भेद बतलाए है।
(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

(775) संस्थानदूष्याकृति नाम भेद से मुखरोग कितने प्रकार के होते है।
(अ) 63 (ब) 64 (स) 75 (द)74

(776) चरक ने अरोचक के भेद बतलाए है।
(अ) 5 (ब) 4 (स) 6 (द) 3

(777) कौनसे अरोचक में मुख का रस 'कषाय' हो जाता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) आगन्तुज

(778) कौनसे अरोचक में मुख का रस 'विरस' हो जाता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) आगन्तुज

(779) कौनसे अरोचक में मुख का रस स्वाभाविक रहता है, किन्तु अरूचि बनी रहती है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) आगन्तुज

(780) चरक ने कर्णरोग के कितने भेद बतलाए है।
(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

(781) "कर्णनाद" कौनसे कर्णरोग का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(782) "दरणं" कौनसे कर्णरोग का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(783) "वैश्रुत्य" कौनसे कर्णरोग का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) त्रिदोषज

(784) चरक ने नेत्ररोग के कितने भेद बतलाए है।
(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

(785) चरक ने संस्थानदूष्याकृति नाम भेद से नेत्ररोग कितने प्रकार के होते है।
(अ) 76 (ब) 78 (स) 94 (द) 96

(786) निम्न में कौनसा योग कृष्णात्रेय भाषितम है।
(अ) नवायस चूर्णम् (ब) नागराद्य चूर्णम् (स) प्रपौण्डरीकादि तैल (द) बलातैल

(787) मुखरोगेषु च श्रेष्ठं..................नाम कीर्तितम्।
(अ) कालक चूर्ण (ब) पीतक चूर्ण (स) क्षार गुटिका (द) तैल गण्डूष

(788) चरकानुसार महामायूर घृत का रोगाधिकार है।
(अ) शिरोरोग (ब) मुखरोग (स) गलरोग (द) कर्णरोग

(789) चरकानुसार खदिरादि गुटिका का रोगाधिकार है।
(अ) शिरोरोग (ब) मुखरोग (स) गलरोग (द) कर्णरोग

(790) चरकानुसार क्षार तैल का रोगाधिकार है।
(अ) शिरोरोग (ब) मुखरोग (स) गलरोग (द) कर्णरोग

(791) चरकानुसार महानील तैल का रोगाधिकार है।
(अ) खलित (ब) पलित (स) इन्द्रलुप्त (द) उपर्युक्त सभी

(792) चरकानुसार कौनसा रोग पंचकर्म के असाध्य है।
(अ) वातरक्त (ब) उरूस्तंभ (स) आमवात (द) विसर्प

(793) किस रोग में रोगी अपनी टाँगों को दूसरे की टाँग समझता हैं।
(अ) गृधसी (ब) उरूस्तम्भ (स) संधिवात (द) कालायखज्ज

(794) तस्यं संशमनं नित्यं क्षपणं शोषणं तथा। – का प्रयोग किसकी चिकित्सा में होता है।
(अ) अर्दित (ब) वातरक्त (स) धनुस्तम्भ (द) उरूस्तम

(795) "शीतस्पर्श न वेत्ति च।" – किस रोग का लक्षण है।
(अ) वातरक्त (ब) उरूस्तंभ (स) कुष्ठ (द) विसर्प

(796) चरकानुसार "अष्टकटवर तैल" का रोगाधिकार है।
(अ) वातरक्त (ब) उरूस्तंभ (स) कुष्ठ (द) विसर्प

(797) चरकानुसार "गुन्जाभद्र रस" का रोगाधिकार है।
(अ) वातरक्त (ब) उरूस्तंभ (स) कुष्ठ (द) विसर्प

(798) उरूस्तम्भ को "आढयवात" किसने कहा है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) चक्रपाणि (द) शारंग्धर

(799) यदि वायु यदि कफ एंव पित्त दोनों से आवृत हो तो सर्वप्रथम किसकी चिकित्सा करना चाहिए है।
(अ) वात की (ब) पित्त की (स) कफ की (द) तीनों दोषो की

(800) स्वेदनं स्नेहसंयुक्त............... विरेचनम्। – किसकी चिकित्सा है।
(अ) वातशोणिते (ब) पक्षाघाते (स) अर्दित (द) उरूस्तंभ

(801) चरकानुसार अर्दित रोग में कौनसा नस्य देते है।
(अ) नावन (ब) अवपीड (स) प्रतिमर्श (द) गर्श

(802) मूलक तैल का प्रयोग किसकी चिकित्सा में होता है।
(अ) वातव्याधि (ब) वातरक्त (स) विसर्प (द) कर्ण रोग

(803) चरकानुसार गृध्रसी की चिकित्सा मे निर्देशित नहीं है।
(अ) बस्ति कर्म (ब) अग्नि कर्म (स) क्षार कर्म (द) सिरावेध

(804) चरकानुसार खल्ली की चिकित्सा है।
(अ) उपनाह (ब) अग्नि कर्म (स) क्षार कर्म (द) सिरावेधन

(805) क्षार का प्रयोग करते है ?
(अ) आमाशयगत वात में (ब) पक्वाशयगत वात में (स) कोष्ठगत वात में (द) त्वचागत (806)
शालपर्णी साधित दुग्ध का प्रयोग करते है।
(अ) मांसमेदोगत वात में (ब) अधोनाभिगत वात में (स) हृदयगत वात में (द) बाहुशीर्षगत वात में

(807) षड्धरण योग का निर्देश किसकी चिकित्सा में है।
(अ) उरूस्तंभ (ब) पक्वाशयगत वात (स) आमाशयगत वात (द) वातव्याधि

(808) स्नेह रहित षड्धरण चूर्ण का निर्देश किसकी चिकित्सा में है।
(अ) उरूस्तंभ (ब) पक्वाशयगत वात (स) आमाशयगत वात (द) वातव्याधि

(809) षड्धरण योग का घटक द्रव्य नहीं है।
(अ) चित्रक (ब) अभया (स) हरिद्रा (द) पाठा

(810) आमाशयगते वाते च्छर्दयित्वा यथाक्रमम्। देयः षड्धरणो योगः ....सुखाम्बुना।।
(अ) सप्तदिवसे (ब) सप्तरात्रं (स) त्रिरात्रं (द) एकः पक्षे

(811) निम्नलिखित में से कौनसा रोग जन्मजात हो सकता है।
(अ) आमवात (ब) वातरक्त (स) संधिवात (द) संर्वागवात

(812) वातरोगों में देय योग लवण नहीं है।
(अ) पत्रलवण (ब) काण्डलवण (स) कल्याणक लवण (द) अष्टांग लवण

(813) वायु के आवरणों की संख्या के संदर्भ में – कौनसा मिलाप सहीं नही है।
(अ) चरक – 42 (ब) सुश्रुत – 13 (स) वाग्भट्ट – 22 (द) माधव – 20

(814) व्यत्यास चिकित्सा की जाती है।
(अ) अर्श में (ब) आवृत वायु की चिकित्सा में (स) क्षयज कास में (द) उपर्युक्त सभी में

(815) आवृत वायु की चिकित्सा की प्रयोग होता है।
(अ) रसायन औषधियों (ब) गुग्गुलु (स) शुद्ध शिलाजीत (द) उपर्युक्त सभी में

(816) चरक संहिता में अपतंत्रक रोग कहाँ का उल्लेख मिलता है।
(अ) त्रिमर्मीया सिद्धि अध्याय (ब) त्रिमर्मीया चिकित्सा अध्याय (स) वातव्याधि चिकित्सा (द) उत्तरवस्ति सिद्धि

(817) प्रसारणाकुञ्चनयोः प्रवृत्तिश्च सवेदना – किसका लक्षण है।
(अ) आमवात (ब) संधिवात (स) रक्तगत वात (द) वातरक्त

(818) कृत्वाऽऽदौ हस्तपादे तु मूलं देहे विधावति। – किसका लक्षण है।
(अ) आमवात (ब) संधिवात (स) रक्तगत वात (द) वातरक्त

(819) पिण्ड तैल का रोगाधिकार है।
(अ) वातरक्त (ब) वातव्याधि (स) अ, ब दोनों (द) संधिवात

(820) पिण्ड तैल का प्रयोग किस रूप में किया जाता है।
(अ) पान (ब) बस्ति (स) अभ्यंग (द) उर्पयुक्त सभी

(821) सुश्रुतानुसार सिराव्यध का निषेध है ?
(अ) ग्रधृसी (ब) अवबाहुक (स) अपची (द) पादहर्ष

(822) सुश्रुतानुसार अष्ठीला–प्रत्यष्ठीला की चिकित्सा किसके समान करना चाहिए।
(अ) गुल्म (ब) अभ्यंतर विद्रधि (स) अश्मरी (द) अ, ब दोनों

(823) सुश्रुतानुसार नवीन गुग्गुलु होता है
(अ) वृहंण, वृष्य (ब) अपकर्षक (स) मेदोघ्न (द) क्लैब्य कारक

(824) सुश्रुतानुसार आक्षेपक के भेद होते है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

(825) निम्नलिखित में कौनसी एक वातव्याधि 'वातकफज' दोश जन्य नहीं है।
(अ) मन्यास्तम्भ (ब) धनुस्तंभ (स) अपतंत्रक (द) दण्डापतानक

(826) कौनसा पक्षाघात कृच्छ्रसाध्य होता है।
(अ) वात + कफज (ब) वात + पित्तज (स) केवल वात प्रकोपज (द) धातुक्षयज

(827) 'असृक्क्षय' निम्नलिखित में से किस रोग का निदान है।
(अ) वातरक्त (ब) पक्षाघात (स) अर्दित (द) अपतंत्रक

(828) अर्दित को एकायाम की संज्ञा किसने दी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) माधव

(829) ....वर्ष पुराना तथा कम्पन्न युक्त अर्दित रोग असाध्य होता है।
(अ) 1 वर्ष (ब) 2 वर्ष (स) 3 वर्ष (द) 4 वर्ष

(830) तलं प्रत्यगुंलीनां तु कण्डरा बाहुपृष्ठतः।
(अ) गृधसी (ब) विश्वाची (स) अवबाहुक (द) खज्ज

(831) निम्नलिखित में से किस रोग में बाहु का प्रस्पन्दन नहीं होता है।
(अ) सिराग्रह (ब) विश्वाची (स) अवबाहुक (द) खज्ज

(832) निम्नलिखित में से किस रोग में बाहु की गति का ह्रास हो जाता है।
(अ) सिराग्रह (ब) विश्वाची (स) अवबाहुक (द) खज्ज

(833) किस रोग में रोगी चलने के प्रारम्भ में कांपता तथा लंगड़ाता है।
(अ) गृधसी (ब) उरुस्तम्भ (स) संधिवात (द) कालायखज्ज

(834) गुदा तथा उपस्थ से उत्पन्न पीड़ा → ऊपर पक्वाशय में जाकर भेदन सम पीड़ा करे। वह रोग है।
(अ) तूनी (ब) प्रतितूनी (स) अष्ठीला (द) प्रत्यष्ठीला

(835) वातविण्मूत्ररोधी रोग है।
(अ) तूनी (ब) प्रतितूनी (स) अष्ठीला (द) प्रत्यष्ठीला

(836) बाह्वोः कर्म क्षयकरी व्याधि है।
(अ) सिराग्रह (ब) विश्वाची (स) अवबाहुक (द) खज्ज

(837) आखोर्विषमिव क्रुद्धं तत् देहमुपसर्पति। – चूहे के विष के समान शरीर में फैलने वाला रोग हैं।
(अ) वातरक्त (ब) आमवात (स) हिक्का श्वास (द) ग्रधसी

(838) चरक ने 'आढ्यवात' की संज्ञा किसे नहीं दी है।
(अ) वातरक्त को (ब) मेदसावृत वात को (स) मांसावृत वात को (द) अ, ब दोनों

(839) स्वेदोऽत्यर्थ न वा कार्ष्ण्य स्पर्शाज्ञत्वं – किसका पूर्वरूप है।
(अ) वातरक्त (ब) कुष्ठ (स) विसर्प (द) अ, ब दोनों

(840) वाग्भट्टानुसार प्रसारणी तैल का रोगाधिकार है।
(अ) वातरक्त (ब) उरूस्तंभ (स) वातव्याधि (द) विसर्प

(841) चरकानुसार सुकुमारक तैल का रोगाधिकार है।
(अ) वातरक्त (ब) उरूस्तंभ (स) वातव्याधि (द) विसर्प

(842) चरकानुसार प्रपौण्डरीकादि लेप का रोगाधिकार है।
(अ) वातरक्त (ब) उरूस्तंभ (स) वातव्याधि (द) विसर्प

(843) चरकानुसार प्रपौण्डरीकादि तैल का रोगाधिकार है।
(अ) वातरक्त (ब) पलित (स) वातव्याधि (द) व्रण

(844) द्विदोषज वातरक्त .... होता है।
(अ) कृच्छ्रसाध्य (ब) याप्य (स) असाध्य (द) साध्य

(845) कौनसा वातरक्त रोगी को खञ्ज या पंगु बना देता है।
(अ) उत्तान (ब) गम्भीर (स) उभयाश्रित वातरक्त (द) कोई नही

(846) 'कार्पास अस्थ्यादि तैल' का प्रयोग किसकी चिकित्सा में निर्दिष्ट है।
(अ) मन्यास्तम्भ (ब) [illegible] (स) अवबाहुक (द) उपर्युक्त सभी

(847) 'अंशुमति घृत' किसकी चिकित्सा में निर्दिष्ट है।
(अ) वातरक्त (ब) संधिवात (स) ऊरुस्तम्भ (द) वातव्याधि

(848) 'अंगुलीवक्रता और स्फोट' किस व्याधि के उपद्रवजनित लक्षण है।
(अ) वातरक्त (ब) संधिवात (स) ऊरुस्तम्भ (द) वातव्याधि

(849) वातरक्त के संदर्भ में कौनसा कथन सही है।
(अ) वात और रक्त दोनों प्रकुपित होते है
(ब) वात और रक्त दोनों दूषित होते है
(स) वात प्रकुपित एंव रक्त दूषित होता है
(द) वात दूषित एंव रक्त प्रकुपित होता है

(850) क्षयं वृद्धि समत्वं च तथैवावरणं भिषक्। विज्ञाय पवनादीनां न प्रमुह्यति कर्मसु।
–उक्त सूत्र चरक में कहाँ वर्णित है।
(अ) वातव्याधि चिकित्सा
(ब) वातरक्त चिकित्सा
(स) उरूस्तम्भ चिकित्सा
(द) विसर्प चिकित्सा

(851) "पारूषक घृत" का प्रयोग किस रोग की चिकित्सा में किया जाता है ?
(अ) राजयक्ष्मा (ब) कास (स) वातरक्त (द) उरूस्तम्भ

(852) प्रायशः सुकुमाराणां मिथ्याहारविहाराणाम्। अचङ्क्रमणशीलानां कुप्यते वातशोणितम्। – किसका कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) भावप्रकाश

(853) प्रायाः सुकुमाराणां मिथ्याहारविहाराणाम्। शोकाश्च प्रमदामद्यव्यायामैश्चातिपीडनात्। – किसका कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) भावप्रकाश

(854) वातरक्त को आढ्यवात की संज्ञा किसने दी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) भावप्रकाश

(855) वातरक्त को आढ्यरोग की संज्ञा किसने दी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) भावप्रकाश

(856) प्राग्रूपे शिथिलौ, स्विन्नौ शीतलौ सविपर्ययौ। – किसका पूर्वरूप है।
(अ) आमवात (ब) संधिवात (स) रक्तगत वात (द) वातरक्त

(857) आखोर्विषमिव क्रुद्धं तत् देहमुपसर्पति। – चूहे के विष के समान शरीर में फैलने वाला रोग कौनसा हैं।
(अ) वातरक्त (ब) आमवात (स) हिक्का श्वास (द) ग्रधसी

(858) कौनसा रोग एक वर्ष पुराना होने पर याप्य हो जाता है।
(अ) वातरक्त (ब) क्षतक्षीत (स) दूषीविष (द) उर्पयुक्त सभी

(859) न हि बस्तिसमं किंचिद् .... चिकित्सितम्। – किसके लिए कहा गया है।
(अ) आमवात (ब) संधिवात (स) एकांग वात (द) वातरक्त

(860) "बोधिवृक्ष कषाय" का निर्देश निम्न में से किस रोग की चिकित्सा में बतलाया गया है।
(अ) आमवात (ब) संधिवात (स) एकांग वात (द) वातरक्त

(861) चरकानुसार योनिव्यापद की संख्या कितनी हैं।
(अ) 10 (ब) 20 (स) 24 (द) 30

(862) माधव के अनुसार योनिव्यापद की संख्या कितनी हैं।
(अ) 10 (ब) 20 (स) 24 (द) 30

(863) सुश्रुत के अनुसार योनिव्यापद की संख्या कितनी हैं।
(अ) 10 (ब) 20 (स) 24 (द) 30

(864) वाग्भट्ट के अनुसार योनिव्यापद की संख्या कितनी हैं।
(अ) 10 (ब) 20 (स) 24 (द) 30

(865) चरकानुसार योनिव्यापद के कारण होते हैं।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 6

(866) चरकानुसार योनि व्यापद का कारण है।
(अ) मिथ्या आहार विहार (ब) आर्तवदुष्टि (स) बीजदोष (द) उपरोक्त सभी

(867) योनि व्यापद का कारण 'दैव' किस आचार्य ने बतलाया है।
(अ) सुश्रुत (ब) वाग्भट्ट (स) चरक (द) भावप्रकाश

(868) योनि व्यापद का कारण 'विषमांग शयन' किस आचार्य ने बतलाया है।
(अ) सुश्रुत (ब) वाग्भट्ट (स) चरक (द) भावप्रकाश

(869) योनि व्यापद का कारण 'अपद्रव्यों का प्रयोग' किस आचार्य ने बतलाया है।
(अ) सुश्रुत (ब) वाग्भट्ट (स) चरक (द) भावप्रकाश

(870) योनि व्यापद का कारण 'बीजदोष' किस आचार्य ने बतलाया है।
(अ) माधव (ब) वाग्भट्ट (स) चरक (द) उपरोक्त सभी

(871) 'अरजस्का' नामक योनिव्यापद का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्धर

(872) 'असृजा' नामक योनिव्यापद का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्धर

(873) 'बन्ध्या' नामक योनिव्यापद का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्धर

(874) 'प्रसंसिनी' नामक योनिव्यापद का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्धर

(875) 'फलिनी' नामक योनिव्यापद का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्धर

(876) 'रक्तयोनि' नामक योनिव्यापद का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्धर

(877) 'जातघ्नी' नामक योनिव्यापद का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्धर

(878) 'नन्दा' नामक योनिव्यापद का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्धर

(879) 'खण्डिता योनिव्यापद' का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्धर

(880) 'अण्डली' नामक योनिव्यापद का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) माधव

(881) चरक कौन से योनि व्यापद का वर्णन नहीं किया है।
(अ) अचरणा (ब) कर्णिनी (स) शुष्का (द) प्रस्रंसिनी

(882) सुश्रुत ने कौन से योनिव्यापद का वर्णन नहीं किया है।
(अ) शुष्का (ब) विप्लुता (स) फलिनी (द) प्रसंसिनी

(883) वाग्भट्ट ने कौन से योनिव्यापद का वर्णन नहीं किया है।
(अ) रक्तयोनि (ब) लोहितक्षया (स) अचरणा (द) शुष्का

(884) चरकानुसार 'पुत्रघ्नी' योनिव्यापद है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(885) सुश्रुतानुसार 'पुत्रघ्नी' योनिव्यापद है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(886) चरकानुसार 'अरजस्का' योनिव्यापद है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(887) चरकानुसार वातज योनिव्यापद नहीं है।
(अ) शुष्का (ब) षण्डी (स) महायोनि (द) कर्णिनी

(888) चरकानुसार 'वामिनी' योनिव्यापद है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) वातकफज (द) वातपित्तज

(889) सुश्रुतानुसार 'वामिनी' योनिव्यापद है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) वातकफज (द) वातपित्तज

(890) चरकानुसार 'उपप्लुता' योनिव्यापद है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) वातकफज (द) वातपित्तज

(891) वंक्षण एवं पार्श्व में वेदना – कौनसे योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) वातला (ब) प्राक्चारणा (स) परिप्लुता (द) महायोनि

(892) 'पिपीलिकासृप्तिमिव अर्थात् शरीर में चींटियों के रेंगने जैसी प्रतीति' – कौनसी योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(893) 'कुणपगंधीस्राव' कौनसी योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(894) 'ज्वर' लक्षण युक्त योनिव्यापद है।
(अ) पित्तज (ब) रक्तजा (स) परिप्लुता (द) अ, स दोनों

(895) 'कण्डू' लक्षण युक्त योनिव्यापद है।
(अ) कफज (ब) सन्निपातज (स) अचरणा (द) अ, स दोनों

(896) 'पाण्डुपिच्छिलार्तववाहिनी' कौनसी योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(897) 'श्वेतपिच्छिल वाहिनी' कौनसी योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(898) 'दाहशूलार्ता' कौनसी योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(899) "लब्धेगर्भेऽपि सासृजा" कौन से योनि व्यापद का लक्षण है।
(अ) पित्तज (ब) असृजा (स) लोहितक्षरा (द) अरजस्का

(900) सदाहं प्रक्षरव्यस्नं वामिनी। – कौन से योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) वामिनी (ब) प्रस्रंसिनी (स) लोहितक्षरा (द) उदार्वता

(901) "सदाह कार्श्य वैवर्ण्य"– कौन से योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) पित्तज (ब) असृजा (स) लोहितक्षरा (द) अरजस्का

(902) कार्श्य वैवर्ण्य जननी भृशम् – कौनसी योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) अरजस्का (ब) असृजा (स) अ, ब दोनों (द) फलिनी

(903) योनिधावन न करने से कौनसा योनि व्यापद होता है।
(अ) अचरणा (ब) अतिचरणा (स) प्राक्चरणा (द) शुष्का

(904) 'अतिनरकांक्षिणी' – कौनसे योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) अचरणा (ब) अतिचरणा (स) प्राक्चरणा (द) शुष्का

(905) अत्यधिक मैथुन करने से कौनसा योनि व्यापद होता है।
(अ) अचरणा (ब) अतिचरणा (स) प्राक्चरणा (द) शुष्का

(906) 'शोफसंयुक्ता' – कौनसे योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) अचरणा (ब) अतिचरणा (स) प्राक्चरणा (द) शुष्का

(907) अतिबाला कन्या के साथ मैथुन करने से कौनसा योनि व्यापद होता है।
(अ) अचरणा (ब) अतिचरणा (स) प्राक्चरणा (द) शुष्का

(908) पृष्ठ, कटि, ऊरू, वंक्षण में वेदना – कौनसे योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) अचरणा (ब) अतिचरणा (स) प्राक्चरणा (द) परिप्लुता

(909) कौनसा योनिव्यापद केवल गर्भिणी स्त्री को होता है।
(अ) अचरणा (ब) अतिचरणा (स) प्राक्चरणा (द) परिप्लुता

(910) योनि से श्वेत स्राव – यह लक्षण कौनसे योनिव्यापद में देखने को मिलता है।
(अ) कफज (ब) विप्लुता (स) परिप्लुता (द) उपप्लुता

(911) परिप्लुता योनि व्यापद कौनसी प्रकृति की स्त्रीयों को होता है।
(अ) वातज प्रकृति (ब) पित्तज प्रकृति (स) कफज प्रकृति (द) सम प्रकृति

(912) किसका वेगधारण करने से परिप्लुता योनि व्यापद की उत्पत्ति होती है।
(अ) छर्दि तथा निःश्वास (ब) क्षवथु व उद्गार (स) मूत्र तथा पुरीष (द) अधोवायु तथा मूत्र

(913) ग्राम्य धर्मे रूजा भृशम्। – किस योनि व्यापद का लक्षण है।
(अ) परिप्लुता (ब) उपप्लुता (स) कर्णिनी (द) अर्न्तमुखी

(914) श्रोणि, वक्षंण, पृष्ठ में शूल होना – कौनसे योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) वातला (ब) प्राक्चारणा (स) परिप्लुता (द) महायोनि

(915) "शूनस्पर्शासहा" कौनसे योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) प्राक्चरणा (ब) परिप्लुता (स) रक्तजा (द) पित्तला

(916) अष्टांग हृदयाकार के अनुसार 'अरोचक और अतिसार" – कौनसे योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) परिप्लुता (ब) अतिचरणा (स) विप्लुता (द) रक्तयोनि

(917) 'कच्छ्रार्तव' कौनसी योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) परिप्लुता (ब) षण्डी (स) प्रसंसिनी (द) उदार्वता

(918) आर्तवे सा विमुक्ते तु तत्क्षणं लमते सुखम्। – कौनसे योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) परिप्लुता (ब) षण्डी (स) प्रसंसिनी (द) उदार्वता

(919) आवि के अनुपस्थित होने पर भी अकाल में प्रवाहण करने से कौनसा योनिव्यापद होता है।
(अ) उदार्वता (ब) कर्णिनी (स) पुत्रघ्नी (द) जातघ्नी

(920) योनि में मांसाकुंर उत्पन्न हो जाता – यह लक्षण कौनसे योनिव्यापद में देखने को मिलता है।
(अ) उदार्वता (ब) कर्णिनी (स) पुत्रघ्नी (द) जातघ्नी

(921) 'दुष्टार्तव' कौनसी योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) उदार्वता (ब) कर्णिनी (स) पुत्रघ्नी (द) जातघ्नी

(922) जातं जातं विनाशयेत् – कौनसे योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) उदार्वता (ब) कर्णिनी (स) पुत्रघ्नी (द) जातघ्नी

(923) जातं जातं सुतं हन्ति – कौनसे योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) उदार्वता (ब) कर्णिनी (स) पुत्रघ्नी (द) जातघ्नी

(924) भोजन के पश्चात् मैथुन करने से कौनसा योनि व्यापद होता है।
(अ) सूचीमुखी (ब) अर्न्तमुखी (स) शुष्का (द) षण्डी

(925) भृशार्तिमैथुनाशक्ता – कौनसे योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) सूचीमुखी (ब) अर्न्तमुखी (स) शुष्का (द) षण्डी

(926) कौनसे योनिव्यापद में योनिमुख व्रक हो जाता है।
(अ) सूचीमुखी (ब) अर्न्तमुखी (स) शुष्का (द) षण्डी

(927) चरकानुसार मातृदोष से होने वाला योनिव्यापद है ?
(अ) उदावर्ता (ब) असृजा (स) षण्डी (द) सूचीमुखी

(928) चरकानुसार बीजदोषज योनिव्यापद है।
(अ) सूचीमुखी (ब) षण्डी (स) महायोनि (द) अ, ब दोनों

(929) विण्मूत्रसंग – कौनसे योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) सूचीमुखी (ब) अर्न्तमुखी (स) शुष्का (द) षण्डी

(930) कौनसे योनिव्यापद में योनिमुख में शोष हो जाता है।
(अ) सूचीमुखी (ब) अर्न्तमुखी (स) शुष्का (द) षण्डी

(931) संभोग समय वेगावरोध करने से कौनसा योनिव्यापद हो जाता है।
(अ) सूचीमुखी (ब) अर्न्तमुखी (स) शुष्का (द) षण्डी

(932) वामिनी योनिव्यापद में कितने समय बाद गर्भाशयस्थ शुक्र को बाहर स्रवित हो जाता है।
(अ) 4–5 रात्रि (ब) 5–6 रात्रि (स) 6–7 रात्रि (द) 7–8 रात्रि

(933) 'अनुपक्रम्य' योनिव्यापद है।
(अ) परिप्लुता (ब) षण्डी (स) प्रसंसिनी (द) उदार्वता

(934) नृद्वेषी या पुरूषों से द्वेष – कौनसे योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) परिप्लुता (ब) षण्डी (स) सूचीमुखी (द) महायोनि

(935) पर्व एवं वंक्षण में शूल – कौनसे योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) वातला (ब) प्राक्चारणा (स) परिप्लुता (द) महायोनि

(936) सुश्रुतानुसार 'षण्डी' योनिव्यापद होता है।
(अ) साध्य (ब) कृच्छ्रसाध्य (स) याप्य (द) असाध्य

(937) सुश्रुतानुसार 'फलिनी' योनिव्यापद होता है।
(अ) साध्य (ब) कृच्छ्रसाध्य (स) याप्य (द) असाध्य

(938) 'नष्टार्तव' कौनसी योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) उदार्वता (ब) कर्णिनी (स) पुत्रघ्नी (द) बन्ध्या

(939) 'दुष्प्रजाता' योनिव्यापद है।
(अ) परिप्लुता (ब) षण्डी (स) प्रसंसिनी (द) उदार्वता

(940) वाग्भट्टानुसार 'संजातजन्तुः कण्डूला कण्ड्वा चाति रतिप्रिया' – कौनसे योनिव्यापद का लक्षण है।
(अ) अचरणा (ब) अतिचरणा (स) विप्लुता (द) रक्तयोनि

(941) योनिव्यापद वाली स्त्रीयाँ गुल्म, अर्श, प्रदर, व वातज के लिए अधिक संवेदी होती है – किसने कहा है।
(अ) भावप्रकाश (ब) शारंर्गधर (स) अष्टांग हृदय (द) काश्यप

(942) योनिशोष का कारण नस्य व्यापद् होता है। – किसने कहा है।
(अ) भावप्रकाश (ब) शारंर्गधर (स) अष्टांग हृदय (द) काश्यप

(943) वातव्याधिहरं कर्म वातार्तानां सदा हितम – किसका कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) माधव (द) भावप्रकाश

(944) न हि वातादत्ते योर्निवनितानां प्रदूष्यति। – किसका कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) माधव (द) भावप्रकाश

(945) "योनिव्यापत्सु भूयिष्ठं शस्यते कर्म वातजित्" – किस आचार्य का कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) चक्रपाणि (द) भावप्रकाश

(946) 'उदावर्ता' की तुलना किससे की जा सकती है।
(अ) **Dysmenorrhoea** (ब) **Luccorrhoea pregnency** (स) **Dyspareunia** (द) **Nymphomania**

(947) उपप्लुता की तुलना किससे की जा सकती है।
(अ) **Dysmenorrhoea** (ब) **Luccorrhoea pregnency** (स) **Dyspareunia** (द) **Nymphomania**

(948) 'परिप्लुता' की तुलना किससे की जा सकती है।
(अ) **Dysmenorrhoea** (ब) **Luccorrhoea pregnency** (स) **Dyspareunia** (द) **Nymphomania**

(949) 'अत्यानन्दा' की तुलना किससे की जा सकती है।
(अ) **Dysmenorrhoea** (ब) **Luccorrhoea pregnency** (स) **Dyspareunia** (द) **Nymphomania**

(950) 'फलिनी' की तुलना किससे की जा सकती है।
(अ) **Dysmenorrhoea** (ब) **Prolapse of uterus** (स) **Dyspareunia** (द) **Nymphomania**

(951) योनिव्यापद रोगों में कौनसा स्वेद निर्देशित है।
(अ) कुम्भीस्वेद (ब) जेन्ताक स्वेद (स) नाडीस्वेद (द) अ,स दोनों

(952) 'गुडूच्यादि तैल' का प्रयोग कौनसे योनिव्यापद में किया जाता है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(953) 'वृहत् शतावरी घृत' का प्रयोग कौनसे योनिव्यापद में किया जाता है ?
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(954) 'उदुम्बर तैल' का प्रयोग कौनसे योनिव्यापद में किया जाता है ?
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(955) 'वर्ति' का प्रयोग कौनसे योनिव्यापद में किया जाता है ?
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज

(956) योनिशूल में निर्देशित है।
(अ) बलातैल (ब) महानारायण तैल (स) सैन्धवादि तैल (द) माष तैल

(957) सूअर की चर्वी का धारण कौनसे योनिव्यापद की चिकित्सा में निर्देशित है।
(अ) श्लेष्मला (ब) अचरणा (स) महायोनि (द) उदावर्ता

(958) 'वेशवार बंध' कौनसे योनिव्यापद की चिकित्सा में निर्देशित है।
(अ) परिप्लुता (ब) फलिनी (स) प्रस्रंसिनी (द) महायोनि

(959) कर्णिनी, अचरणा, प्राक्चरणा की चिकित्सा हेतु चरक ने कौनसी वस्ति देने का विधान बतलाया है।
(अ) अनुवासन बस्ति (ब) मात्रा बस्ति (स) यापना बस्ति (द) उत्तर बस्ति

(960) अचरणा, प्राक्चरणा की चिकित्सा में कौनसी तैल की निरूह व अनुवासन वस्ति देने का निर्देश है।
(अ) बलातैल (ब) महानारायण तैल (स) धातक्यादि तैल (द) शतपाकी तैल

(961) फलप्रद शुक्र के लक्षणों का वर्णन किस आचार्य ने किया है ।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(962) शुक्र का रस 'मधुर' किसने माना है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि

(963) शुक्र का वर्ण 'स्फटिकसन्निभ' किसने माना है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) चक्रपाणि
(964) शुक्रदोष होते है।
(अ) 10 (ब) 6 (स) 8 (द) 5
(965) सुश्रुतानुसार शुक्र दोषों की संख्या =
(अ) 11 (ब) 8 (स) 5 (द) 9
(966) कौनसा शुक्र दोष चरक और सुश्रुत दोनों आचार्यो ने माना है ?
(अ) कुणप (ब) रक्तज (स) पूति (द) उपर्युक्त सभी
(967) चरकानुसार शुक्र दोषों की सामान्य चिकित्सा किस के समान है ?
(अ) रक्तपित्त चिकित्सा (ब) वाजीकरण चिकित्सा (स) योनिव्यापद चिकित्सा (द) उपर्युक्त सभी
(968) कौनसे दोष जन्य शुक्रदोष की चिकित्सा में 'अभयामलकी रसायन' का प्रयोग करने का निर्देश है।
(अ) वात दुष्ट (ब) पित्त दुष्ट (स) कफ दुष्ट (द) रक्त दुष्ट
(969) कौनसे दोष जन्य शुक्रदोष की चिकित्सा में 'त्रिफला रसायन' का प्रयोग करने का निर्देश है।
(अ) वात दुष्ट (ब) पित्त दुष्ट (स) कफ दुष्ट (द) रक्त दुष्ट
(970) चरक ने क्लैब्य के भेद माने है।
(अ) 4 (ब) 6 (स) 8 (द) 5
(971) सुश्रुतानुसार क्लैब्य के भेद होते है।
(अ) 4 (ब) 6 (स) 8 (द) 5
(972) चरकानुसार 'ध्वजभंग' किसका भेद है।
(अ) नपुंसक (ब) क्लैब्य (स) शुक्रदोष (द) उपदंश
(973) चरकानुसार 'ध्वजभंग' के भेद होते है ?
(अ) 4 (ब) 6 (स) 8 (द) 5
(974) चरकानुसार निम्नलिखित में से कौनसा क्लैब्य असाध्य होता है।
(अ) मानस (ब) शुक्रक्षयजन्य (स) ब्रह्मचर्यजन्य (द) सहज
(975) चरकानुसार शुक्रक्षयजन्य क्लैब्य चिकित्सा में कौन सी बस्ति का प्रयोग करने का निर्देश है।
(अ) अनुवासन बस्ति (ब) मात्रा बस्ति (स) यापना बस्ति (द) उत्तर बस्ति
(976) किसका वर्णन 'प्रदर' रोगों में नहीं मिलता है।
(अ) वातज प्रदर (ब) पित्तज प्रदर (स) कफज प्रदर (द) श्वेत प्रदर
(977) पुष्यानुग चूर्ण का रोगाधिकार है।
(अ) योनिव्यापद् (ब) प्रदर (स) अर्श (द) बन्ध्या
(978) 'पुष्यानुग चूर्ण' का अनुपान है ?
(अ) तण्डुलोदक (ब) मधु + तण्डुलोदक (स) घृत + तण्डुलोदक (द) मधु
(979) आत्रेय द्वारा पूजित योग है ?
(अ) पुष्यानुग चूर्ण (ब) महामायूर घृत (स) दोनों (द) नागराद्य चूर्ण
(980) किंशिकोदक के समान सरूज या नीरूज स्राव होना – कौनसे प्रदर का लक्षण है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज
(981) गुंजाफल सर्वणम् च पदमालक्त सन्निभम्। इन्द्रगोपक संकाशं – किसका लक्षण है।
(अ) शुद्ध शुक्र (ब) शुद्ध आर्तव (स) शुद्ध रक्त (द) कोई नहीं
(982) चरकानुसार आर्तव स्राव की काल अवधि होती है ?
(अ) 3 दिन (ब) 5 रात्रि (स) 7 रात्रि (द) कोई नहीं
(983) चरकानुसार आर्तव दोषों की संख्या हैं ?
(अ) 11 (ब) 8 (स) 5 (द) 9
(984) चरकानुसार स्तन्य दुष्टि की संख्या हैं ?
(अ) 11 (ब) 8 (स) 5 (द) 9
(985) आयार्य चरक के अनुसार कफ दोष से दूषित स्तन्य दुष्टि हैं।
(अ) पिच्छिल (ब) रूक्षता (स) वैगन्ध्य (द) विवर्णता
(986) आयार्य चरक के अनुसार वात दोष से दूषित स्तन्य दुष्टि नहीं हैं।
(अ) वैरस्य (ब) रूक्षता (स) वैगन्ध्य (द) फैनसंघात
(987) स्तन्य में 'विवर्णता' कौनसे दोष से दूषित होने पर होती है।
(अ) वातज (ब) पित्तज (स) कफज (द) सन्निपातज
(988) 'तृष्णा, भिन्नविट' कौनसे स्तन्य दुष्टि का परिणाम है ?
(अ) फेनसंघात (ब) विवर्णता (स) पिच्छिल (द) अतिस्निग्ध

SHYAM VAIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER
DR. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.)

(989) 'बद्धविण्मूत्रमारूत' कौनसे स्तन्य दुष्टि का परिणाम है ?
(अ) फेनसंघात (ब) विवर्णता (स) पिच्छिल (द) अतिस्निग्ध

(990) आयार्य चरक के अनुसार 'पंचमूल प्रलेप' का प्रयोग कौनसे दोष से दूषित स्तन्य दुष्टि में किया जाता हैं।
(अ) पिच्छिल (ब) रूक्षता (स) वैगन्ध्य (द) विवर्णता

(991) आयार्य चरक के अनुसार 'तक्रारिष्ट' कौनसे दोष से दूषित स्तन्य दुष्टि में किया जाता हैं।
(अ) पिच्छिल (ब) रूक्षता (स) वैगन्ध्य (द) विवर्णता

(992) चरकसंहिता के सम्पूरक कौन हैं।
(अ) आत्रेय (ब) चन्द्रट (स) चक्रपाणि (द) दृढबल

(993) दृढ़बल ने चरक संहिता के चिकित्सा स्थान में कितने अध्यायों को पूरित कर सम्पूर्ण किया हैं।
(अ) 17 (ब) 15 (स) 14 (द) 13

(994) चरक संहिता के चिकित्सा स्थान का निम्न में से कौनसा अध्याय दृढबल द्वारा पूरित नहीं है।
(अ) पाण्डु चिकित्सा (ब) ग्रहणी चिकित्सा (स) विष चिकित्सा (द) अतिसार चिकि.

(995) चरक के अनुसार औषध सेवन के काल होते है ?
(अ) 8 (ब) 10 (स) 5 (द) 11

(996) अष्टांग संग्रहकार के अनुसार औषध सेवन के काल होते है ?
(अ) 8 (ब) 10 (स) 5 (द) 11

(997) चरक के अनुसार हिक्का, कास, आक्षेपक में औषध सेवन का उचित काल है ?
(अ) सामुदग (ब) मुहूर्मुहू (स) सग्रास (द) ग्रासान्तर

(998) चरक के अनुसार श्वास, कास, हिक्का, छर्दि, विष, पिपासा में औषध सेवन का उचित काल है ?
(अ) सामुदग (ब) मुहूर्मुहू (स) सग्रास (द) ग्रासान्तर

(999) चरक के अनुसार अपानवायु विकार में औषध सेवन का उचित काल है ?
(अ) अभक्त (ब) प्राग्भक्त (स) मध्यभक्त (द) सभक्त

(1000) चरक के अनुसार वाजीकरण योग सेवन का भेषज काल है ?
(अ) सामुदग (ब) मुहूर्मुहु (स) सग्रास (द) ग्रासान्तर

Model Test Papers (Answer) – चरक चिकित्सा स्थान

1. A	21. B	41. B	61. B	81. A
2. B	22. A	42. C	62. C	82. B
3. A	23. A	43. A	63. B	83. D
4. D	24. B	44. A	64. A	84. B
5. D	25. B	45. D	65. D	85. A
6. A	26. B	46. B	66. B	86. B
7. C	27. C	47. D	67. D	87. B
8. B	28. C	48. C	68. B	88. B
9. D	29. D	49. B	69. D	89. C
10. C	30. C	50. D	70. B	90. B
11. A	31. B	51. D	71. C	91. C
12. A	32. A	52. D	72. D	92. C
13. D	33. A	53. A	73. A	93. D
14. A	34. C	54. C	74. B	94. D
15. C	35. C	55. C	75. B	95. C
16. B	36. D	56. C	76. D	96. A
17. B	37. C	57. D	77. A	97. A
18. B	38. D	58. B	78. A	98. B
19. A	39. C	59. A	79. C	99. D
20. B	40. A	60. C	80. D	100. C

101. B	121. A	141. C	161. C	181. A
102. C	122. A	142. D	162. A	182. B
103. D	123. B	143. D	163. D	183. D
104. C	124. B	144. C	164. C	184. D
105. B	125. B	145. B	165. D	185. C
106. B	126. B	146. C	166. D	186. D
107. D	127. C	147. A	167. D	187. B
108. A	128. B	148. C	168. B	188. C
109. A	129. C	149. A	169. C	189. C
110. C	130. B	150. B	170. B	190. C
111. D	131. C	151. C	171. D	191. A
112. B	132. C	152. D	172. A	192. B
113. D	133. C	153. A	173. A	193. D
114. C	134. A	154. D	174. A	194. A
115. C	135. D	155. A	175. D	195. D
116. D	136. B	156. B	176. C	196. B
117. D	137. D	157. C	177. C	197. B
118. C	138. A	158. D	178. D	198. A
119. A	139. C	159. D	179. A	199. C
120. D	140. D	160. D	180. C	200. D

201. B	221. B	241. B	261. B	281. A
202. A	222. C	242. B	262. D	282. C
203. C	223. D	243. A	263. A	283. D
204. D	224. D	244. B	264. A	284. A
205. D	225. D	245. B	265. A	285. B
206. D	226. B	246. B	266. A	286. B
207. D	227. C	247. A	267. C	287. D
208. D	228. C	248. A	268. C	288. A
209. C	229. C	249. B	269. D	289. C
210. C	230. D	250. D	270. D	290. C
211. D	231. D	251. C	271. C	291. A
212. C	232. B	252. D	272. A	292. B
213. B	233. C	253. B	273. C	293. B
214. B	234. D	254. C	274. C	294. D
215. C	235. B	255. A	275. C	295. A
216. C	236. B	256. A	276. D	296. A
217. D	237. C	257. A	277. C	297. B
218. C	238. C	258. D	278. C	298. C
219. C	239. D	259. D	279. A	299. D
220. A	240. B	260. C	280. A	300. B

301. D	321. D	341. A	361. D	381. B
302. D	322. B	342. A	362. D	382. A
303. B	323. C	343. A	363. A	383. C
304. D	324. D	344. A	364. B	384. C
305. A	325. A	345. B	365. D	385. A
306. B	326. A	346. C	366. D	386. C
307. D	327. A	347. C	367. C	387. C
308. C	328. C	348. A	368. B	388. C
309. C	329. D	349. A	369. B	389. A
310. A	330. D	350. A	370. C	390. D
311. A	331. A	351. C	371. C	391. C
312. A	332. C	352. B	372. D	392. A
313. A	333. C	353. B	373. A	393. B
314. A	334. C	354. C	374. A	394. C
315. B	335. C	355. A	375. D	395. D
316. D	336. C	356. A	376. A	396. A
317. A	337. A	357. B	377. C	397. A
318. D	338. B	358. A	378. B	398. D
319. C	339. D	359. C	379. D	399. D
320. D	340. B	360. B	380. A	400. A

401.	C	421.	A	441.	D	461.	C	481.	D
402.	D	422.	A	442.	D	462.	A	482.	D
403.	A	423.	C	443.	A	463.	C	483.	B
404.	D	424.	D	444.	B	464.	A	484.	C
405.	B	425.	A	445.	B	465.	C	485.	B
406.	C	426.	A	446.	B	466.	D	486.	A
407.	B	427.	A	447.	B	467.	A	487.	A
408.	D	428.	A	448.	A	468.	C	488.	D
409.	A	429.	D	449.	C	469.	D	489.	D
410.	C	430.	C	450.	D	470.	A	490.	C
411.	A	431.	D	451.	A	471.	B	491.	D
412.	B	432.	C	452.	B	472.	D	492.	B
413.	D	433.	C	453.	A	473.	B	493.	C
414.	C	434.	D	454.	A	474.	A	494.	C
415.	A	435.	A	455.	C	475.	C	495.	B
416.	C	436.	C	456.	A	476.	B	496.	C
417.	A	437.	A	457.	B	477.	A	497.	D
418.	D	438.	B	458.	C	478.	C	498.	A
419.	A	439.	C	459.	D	479.	B	499.	B
420.	B	440.	C	460.	C	480.	D	500.	C

501.	C	521.	D	541.	A	561.	B	581.	A
502.	D	522.	A	542.	A	562.	C	582.	B
503.	D	523.	A	543.	C	563.	A	583.	C
504.	A	524.	D	544.	A	564.	A	584.	C
505.	A	525.	A	545.	C	565.	B	585.	B
506.	A	526.	D	546.	A	566.	B	586.	A
507.	B	527.	D	547.	D	567.	D	587.	D
508.	C	528.	B	548.	A	568.	B	588.	A
509.	D	529.	C	549.	A	569.	C	589.	B
510.	C	530.	B	550.	A	570.	A	590.	C
511.	B	531.	B	551.	D	571.	D	591.	C
512.	C	532.	A	552.	B	572.	C	592.	C
513.	A	533.	D	553.	C	573.	B	593.	D
514.	D	534.	A	554.	B	574.	D	594.	A
515.	B	535.	B	555.	C	575.	C	595.	B
516.	B	536.	C	556.	D	576.	C	596.	D
517.	D	537.	C	557.	A	577.	C	597.	C
518.	D	538.	D	558.	B	578.	C	598.	D
519.	D	539.	C	559.	A	579.	D	599.	D
520.	D	540.	C	560.	D	580.	D	600.	D

601.	A	621.	D	641.	D	661.	D	681.	D
602.	A	622.	B	642.	A	662.	A	682.	B
603.	C	623.	C	643.	B	663.	A	683.	B
604.	B	624.	A	644.	D	664.	B	684.	A
605.	C	625.	D	645.	A	665.	C	685.	C
606.	B	626.	C	646.	A	666.	D	686.	D
607.	C	627.	C	647.	B	667.	B	687.	D
608.	A	628.	A	648.	C	668.	A	688.	D
609.	A	629.	A	649.	D	669.	A	689.	A
610.	B	630.	C	650.	D	670.	B	690.	C
611.	C	631.	B	651.	A	671.	B	691.	C
612.	D	632.	A	652.	B	672.	C	692.	A
613.	D	633.	C	653.	A	673.	D	693.	A
614.	C	634.	B	654.	C	674.	D	694.	C
615.	A	635.	A	655.	B	675.	D	695.	C
616.	B	636.	B	656.	A	676.	B	696.	D
617.	C	637.	A	657.	C	677.	A	697.	A
618.	D	638.	A	658.	A	678.	D	698.	C
619.	B	639.	D	659.	D	679.	D	699.	B
620.	D	640.	A	660.	C	680.	D	700.	D

SHYAM VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER BHOPAL (M.P.)
By. Dr. NEELIMA SINGH

701.	A	721.	D	741.	D	761.	D	781.	A
702.	A	722.	A	742.	D	762.	C	782.	B
703.	C	723.	A	743.	B	763.	A	783.	C
704.	D	724.	B	744.	C	764.	A	784.	B
705.	C	725.	C	745.	D	765.	C	785.	D
706.	A	726.	A	746.	A	766.	B	786.	A
707.	D	727.	D	747.	D	767.	B	787.	B
708.	A	728.	A	748.	D	768.	A	788.	A
709.	B	729.	C	749.	D	769.	B	789.	C
710.	B	730.	B	750.	B	770.	D	790.	D
711.	C	731.	D	751.	C	771.	B	791.	B
712.	A	732.	B	752.	B	772.	C	792.	B
713.	D	733.	A	753.	A	773.	C	793.	B
714.	C	734.	B	754.	B	774.	B	794.	D
715.	D	735.	A	755.	C	775.	B	795.	B
716.	A	736.	A	756.	D	776.	A	796.	B
717.	A	737.	C	757.	A	777.	A	797.	B
718.	D	738.	B	758.	B	778.	B	798.	A
719.	A	739.	C	759.	C	779.	D	799.	B
720.	C	740.	A	760.	B	780.	B	800.	B

801.	A	821.	B	841.	A	861.	B	881.	D
802.	A	822.	D	842.	D	862.	B	882.	C
803.	C	823.	A	843.	D	863.	B	883.	C
804.	A	824.	C	844.	B	864.	B	884.	A
805.	C	825.	B	845.	C	865.	C	885.	B
806.	C	826.	C	846.	A	866.	D	886.	B
807.	C	827.	C	847.	A	867.	C	887.	D
808.	A	828.	C	848.	A	868.	B	888.	D
809.	C	829.	C	849.	C	869.	B	889.	A
810.	B	830.	A	850.	A	870.	D	890.	C
811.	D	831.	C	851.	C	871.	A	891.	A
812.	D	832.	B	852.	A	872.	A	892.	A
813.	D	833.	D	853.	B	873.	B	893.	B
814.	D	834.	B	854.	A	874.	B	894.	B
815.	D	835.	D	855.	C	875.	B	895.	D
816.	A	836.	B	856.	B	876.	C	896.	C
817.	B	837.	A	857.	A	877.	C	897.	D
818.	D	838.	D	858.	D	878.	D	898.	D
819.	A	839.	A	859.	D	879.	D	899.	B
820.	C	840.	C	860.	D	880.	D	900.	C

SHYAM VIDYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER BHOPAL (M.P.)
Dr. NEELIMA SINGH

901.	B	921.	C	941.	C	961.	A	981.	B
902.	A	922.	C	942.	D	962.	D	982.	B
903.	A	923.	D	943.	A	963.	A	983.	B
904.	A	924.	B	944.	D	964.	C	984.	B
905.	B	925.	B	945.	C	965.	A	985.	A
906.	B	926.	B	946.	A	966.	C	986.	C
907.	C	927.	D	947.	B	967.	D	987.	B
908.	C	928.	D	948.	C	968.	B	988.	B
909.	D	929.	C	949.	D	969.	C	989.	A
910.	D	930.	C	950.	B	970.	A	990.	B
911.	B	931.	C	951.	D	971.	B	991.	A
912.	B	932.	C	952.	A	972.	B	992.	D
913.	A	933.	B	953.	B	973.	D	993.	A
914.	C	934.	B	954.	C	974.	B	994.	D
915.	B	935.	D	955.	C	975.	C	995.	B
916.	A	936.	D	956.	C	976.	A	996.	D
917.	D	937.	D	957.	C	977.	B	997.	A
918.	D	938.	D	958.	C	978.	B	998.	B
919.	B	939.	C	959.	D	979.	C	999.	B
920.	B	940.	C	960.	D	980.	A	1000.	C

Shyam -Vidya Ayurved P.G. Entrance Coaching Center, Bhopal (M.P.)

Model Test Papers – चरक कल्प स्थान

By- Dr. Neelima Singh Lodhi (M.D.) Mob. 09300961664, 09993961427

(1) चरकानुसार 'जांगल देश' होता है।
(अ) वात बहुल (ब) वातपित्त बहुल (स) कफ बहुल (द) वातकफ बहुल

(2) चरकानुसार आनूप देश' होता है।
(अ) वात बहुल (ब) वातपित्त बहुल (स) कफ बहुल (द) वातकफ बहुल

(3) 'पुण्डरीक, कादम्ब, मदगु एंव भृंगराज पक्षी किस देश में मिलते है।
(अ) जांगल (ब) आनूप (स) सम (द) साधारण

(4) पर्याकाशभूयिष्ठ देश है।
(अ) जांगल (ब) आनूप (स) सम (द) साधारण

(5) अश्वत्थ, वट, एंव आमलकी के वन किस देश में मिलते है।
(अ) जांगल (ब) आनूप (स) सम (द) साधारण

(6) सुरा का प्रयोग अनुपान रूप में किस दोष में किया जाता है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) त्रिदोष

(7) मूत्र का प्रयोग अनुपान रूप में किस दोष में किया जाता है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) त्रिदोष

(8) मधुक का प्रयोग अनुपान रूप में किस दोष में किया जाता है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) ब, स दोनों

(9) मधु का प्रयोग अनुपान रूप में किस दोष में किया जाता है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) ब, स दोनों

(10) चरकानुसार 'शरद ऋतु' में संग्रह योग्य होता है।
(अ) त्वक् (ब) कन्द (स) क्षीर (द) उपर्युक्त सभी

(11) चरकानुसार 'सार' का संग्रह किस ऋतु में करना चाहिए।
(अ) बंसत (ब) ग्रीष्म (स) शरद (द) हेमन्त

(12) सुश्रुतानुसार 'सार' का संग्रह किस ऋतु में करना चाहिए।
(अ) बंसत (ब) ग्रीष्म (स) शरद (द) हेमन्त

(13) 'पचांग' का संग्रह किस ऋतु में करना चाहिए।
(अ) बंसत (ब) ग्रीष्म (स) शरद (द) हेमन्त

(14) 'पुष्प' का संग्रह किस ऋतु में करना चाहिए।
(अ) बंसत (ब) ग्रीष्म (स) शरद (द) हेमन्त

(15) तेषां शाखा पलाशमचिरप्ररूढं ....ग्राह्यं, ग्रीष्मे मूलानि शिशिरे वा शीर्णप्ररूढपर्णानां।
(अ) वर्षाबसन्तयो (ब) शरदि (स) प्रावृटे (द) हेमन्ते

(16) मदनफल का संग्रह किन ऋतओं के मध्य में करना चाहिए।
(अ) बसन्त एंव ग्रीष्म (ब) ग्रीष्म एंव वर्षा ऋतु (स) शरद और हेमन्त (स) शिशिर एवं बसन्त

(17) औषध भण्डार ग्रह का वर्णन सर्वप्रथम किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (स) शार्ङ्गधर

(18) 'मदनफल' का पर्याय नहीं है ।
(अ) फल (ब) श्वसन (स) करहाट (द) पिण्डफला

(19) मदनफल का पर्याय विषपुष्पक किसने बताया है।
(अ) चरक (ब) भावप्रकाश (स) वाग्भट्ट (स) राजनिघण्टु

(20) मदनफल का कौनसा भाग 'पिप्पली' कहलाता है।
(अ) फल (ब) बीज (स) निर्यास (स) फलमज्जा

(21) मदनफल का प्रयोज्यांग होता है।
(अ) फल (ब) फलसार (स) फलपिप्पली (स) फलमज्जा

(22) '1 अन्तर्नखमुष्टि मात्रा' कही गयी है।
(अ) मदनफल (ब) वत्सक (स) इक्ष्वाकु (द) अ, ब दोनों

(23) चरकानुसार मदनफल के षाडव योग होते है।
(अ) 10 (ब) 20 (स) 12 (द) 16

SHYAM VIDHYA AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER BHOPAL DR. NEELIMA SINGH LODHI (M.D.) Mob. 09993961427, 09

(24) चरकानुसार मदनफल के उत्कारिका, लेह, मोदक योग होते है।
(अ) 10 (ब) 20 (स) 12 (द) 16

(25) 'निम्नलिखित में से किसके 8 मात्रा योग नहीं होते है।
(अ) मदनफल (ब) जीमूतक (स) इक्ष्वाकु (द) धामार्गव

(26) 'वेणी' किसका पर्याय है।
(अ) मदनफल (ब) जीमूतक (स) इक्ष्वाकु (द) धामार्गव

(27) जीमूतक की मात्रा है।
(अ) 1 अन्तर्नखमुष्टि (ब) 1 पल (स) 1 शुक्ति (द) 1 पाणिपादतल

(28) जीमूतक के वमन योगों की कुल संख्या है।
(अ) 45 (ब) 48 (स) 35 (द) 39

(29) 'लम्बा, कटुकालाबु, तुम्बी, कटुतुम्बी, पिण्डफला, फलिनी' किसके पर्याय है।
(अ) कृतवेधन (ब) जीमूतक (स) इक्ष्वाकु (द) धामार्गव

(30) 'श्वास, कास, विष, वमन, ज्वर एवं कफज विकारों में' किसका प्रयोग होता है।
(अ) कृतवेधन (ब) जीमूतक (स) इक्ष्वाकु (द) धामार्गव

(31) इक्ष्वाकु के वमन योगों की कुल संख्या है।
(अ) 45 (ब) 48 (स) 35 (द) 39

(32) वर्धमान इक्ष्वाकु योग का प्रारम्भ कितने इक्ष्वाकु बीजों से होता है।
(अ) 5 (ब) 10 (स) 20 (द) 50

(33) 'निम्नलिखित में से किसका 1 नस्य योग नहीं होता है।
(अ) मदनफल (ब) जीमूतक (स) इक्ष्वाकु (द) धामार्गव

(34) 'कोठफला' किसका पर्याय है।
(अ) इक्ष्वाकु (ब) धामार्गव (स) वत्सक (द) कृतवेधन

(35) धामार्गव का प्रयोज्यांग होता है।
(अ) फल (ब) पुष्प (स) प्रवाल (स) उपर्युक्त सभी

(36) धामार्गव के वमन योगों की कुल संख्या है।
(अ) 45 (ब) 39 (स) 60 (द) 18

(37) इन्द्रयव किसका पर्याय है।
(अ) इक्ष्वाकु का (ब) वत्सक का (स) आरग्वध का (द) कुटज बीज का

(38) निम्न में चरक ने किसके भेद 2 नहीं बताये है।
(अ) वत्सक (ब) धामार्गव (स) स्नुही (द) तिल्वक

(39) निम्न में चरक ने किसका वर्धमान योग बताया है।
(अ) मदनफल (ब) जीमूतक (स) इक्ष्वाकु (द) धामार्गव

(40) हृदय रोग, ज्वर, वातरक्त और विसर्प रोगाधिकार में किसका प्रयोग उत्तम है।
(अ) चतुरऽगुल (ब) जीमूतक (स) वत्सक (द) सुधा

(41) हृदय रोग, ज्वर, वातरक्त और उदावर्त रोगाधिकार में किसका प्रयोग उत्तम है।
(अ) चतुरऽगुल (ब) जीमूतक (स) वत्सक (द) सुधा

(42) वत्सक के वमन योगों की कुल संख्या है।
(अ) 45 (ब) 39 (स) 60 (द) 18

(43) 'मृदंगफल' किसका पर्याय है।
(अ) इक्ष्वाकु (ब) धामार्गव (स) वत्सक (द) कृतवेधन

(44) कृशरा योग किसका होता है।
(अ) इक्ष्वाकु (ब) धामार्गव (स) वत्सक (द) कृतवेधन

(45) गरविष में किसका प्रयोग उत्तम है।
(अ) धामार्गव (ब) कृतवेधन (स) सप्तला–शंखिनी (द) उपर्युक्त सभी

(46) दूषीविष में किसका प्रयोग उत्तम है।
(अ) स्नुही (ब) सप्तला–शंखिनी (स) दन्ती–द्रवन्ती (द) उपर्युक्त सभी

(47) मदनफल की **Family** है।
(अ) **Rubiaceae** (ब) **Cucurbitaceae** (स) **Apocynaceae** (द) **Euphorbiaceae**

(48) 'श्यामा त्रिवृत्त' के विरेचन योगों की संख्या है।
(अ) 133 (ब) 130 (स) 112 (द) 110

AYURVEDA P.G. ENTRANCE COACHING CENTER

(49) श्यामा त्रिवृत्त का पर्याय नहीं है।
(अ) कूटरणा (ब) सुवहा (स) सुरसा (द) सर्वानुभूति

(50) विरेचन हेतु समभाग शर्करा और त्रिवृत्ता चूर्ण का प्रयोग किस ऋतु में करना चाहिए।
(अ) बंसत (ब) ग्रीष्म (स) शरद (द) हेमन्त

(51) 'कल्याण गुड' का मुख्य घटक है ।
(अ) तिल्वक (ब) निशोथ (स) वत्सक (द) आरग्वध

(52) व्योषदि गुटिका की मात्रा है।
(अ) 1 अन्तर्नखमुष्टि (ब) 1 पल (स) 1 शुक्ति (द) 1 पाणिपादतल

(53) आरग्वध का पर्याय नहीं है।
(अ) प्रग्रह (ब) कर्णिकार (स) कृतमाल (द) दीर्घफला

(54) आरग्वध का प्रयोज्यांग होता है।
(अ) फल (ब) बीज (स) फलचूर्ण (द) फलमज्जा

(55) 'आरग्वध' के विरेचन योगों की संख्या है।
(अ) 10 (ब) 12 (स) 16 (द) 20

(56) '1 पाणितल मात्रा' कही गयी है।
(अ) तिल्वक (ब) वृहत्फल (स) तिरीटक (द) उपर्युक्त सभी

(57) 'तिल्वक' के विरेचन योगों की संख्या है।
(अ) 10 (ब) 12 (स) 16 (द) 20

(58) स्नुही के विरेचन योगों की संख्या है।
(अ) 39 (ब) 20 (स) 12 (द) 16

(59) स्नुही क्षीर का संग्रह किस ऋतु के अन्त में करना चाहिए।
(अ) ग्रीष्म ऋतु (ब) शिशिर ऋतु (स) हेमन्त ऋतु (द) बसन्त ऋतु

(60) चरक ने 'महावृक्ष' की संज्ञा किसे दी है।
(अ) आरग्वध को (ब) दन्ती को (स) द्रवन्ती को (द) स्नुही को

(61) 'यवतिक्ता' किसका पर्याय है।
(अ) सप्तला का (ब) शंखिनी का (स) दन्ती का (द) द्रवन्ती का

(62) 'चित्रा' किसका पर्याय है।
(अ) चित्रक का (ब) दन्ती का (स) द्रवन्ती का (द) स्नुही का

(63) दन्ती के किस वर्ण के मूल का संग्रह करना चाहिए।
(अ) श्वेत (ब) श्याम (स) ताम्र (द) पीत

(64) 'दन्ती द्रवन्ती' के विरेचन योगों की संख्या है।
(अ) 45 (ब) 48 (स) 35 (द) 39

(65) चरक संहिता के कल्प स्थान में वर्णित औषध योगों में द्रव्य–प्रमाणों का निर्देश किसके के लिए है
(अ) मदुकोष्ठ (ब) मध्यकोष्ठ (स) क्रूरकोष्ठ (द) सभी कोष्ठों हेतु

(66) 'शीर्यमाणे तु निर्यासे' किसका लक्षण है।
(अ) मृदु पाक (ब) मध्य पाक (स) खरपाक (द) उपर्युक्त में कोई नहीं

(67) चरकानुसार अभ्यंग में कौनसे पाक का प्रयोग होता है।
(अ) मृदु पाक (ब) मध्य पाक (स) खर पाक (द) उपर्युक्त सभी

(68) 'अष्ट पल' किसका पर्याय है।
(अ) 1 शुक्ति (ब) कुडव (स) प्रस्थ (द) शराब

(69) 'कर्ष' का पर्याय नहीं है।
(अ) कवलग्रह (ब) तिन्दुक (स) षोडशी (द) करमध्य

(70) चरकानुसार मान की न्यूनतम इकाई है।
(अ) ध्वंसी (ब) गौरसर्षप (स) धान्यमाष (द) अणु

(71) 1 पल =
(अ) 2 शाण (ब) 2 कर्ष (स) 2 शुक्ति (द) 2 प्रस्थ

(72) मधुमेह में किसका प्रयोग उत्तम है।
(अ) आरग्वध (ब) सुधा (स) सप्तला–शंखिनी (द) दन्ती द्रवन्ती

(73) 'दिव्य स्थान' कहा जाता है।
(अ) सूत्रस्थान (ब) शारीर स्थान (स) कल्पस्थान (द) चिकित्सास्थान

(74) चरकानुसार धामार्गव के अवलेह योग होते है।
(अ) 10 (ब) 20 (स) 9 (द) 8

(75) चरकानुसार धामार्गव के क्षीर योग होते है।
(अ) 6 (ब) 4 (स) 9 (द) 8

(76) निम्नलिखित में वत्सक बीज है।
(अ) इन्द्रयव (ब) कलिंगक (स) दोनों (द) कुटज

(77) चरकानुसार कृतवेधन के क्वाथ योग होते है।
(अ) 22 (ब) 14 (स) 20 (द) 10

(78) चरकानुसार कास रोग में कृतवेधन चूर्ण किसके साथ देना चाहिए।
(अ) मधु (ब) सर्पि (स) इक्षुरस (द) उष्ण जल

(79) चरकानुसार स्नुही क्षीर का शोधन किसके क्वाथ में किया जाता है।
(अ) बिल्वादि पंचमूल क्वाथ (ब) बृहती क्वाथ (स) कण्टकारी क्वाथ (द) उपर्युक्त सभी में

(80) चरकानुसार सप्तला शंखिनी के मद्य योग होते है।
(अ) 16 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

(81) चरक संहिता कल्प स्थान में मदनफल के कितने कषाय योग निर्दिष्ट है।
(अ) 10 (ब) 20 (स) 9 (द) 6

(82) वातपित्तार्दित रोगों में प्रयुक्त जीमूतक चूर्ण की मात्रा है।
(अ) अन्तर्नखमुष्टि प्रमाण (ब) पाणिपादतल (स) शुक्ति प्रमाण (द) पल प्रमाण

(83) जीमूतक के क्षीर योग कितने होते हैं।
(अ) 8 (ब) 20 (स) 9 (द) 6

(84) वमनार्थ क्वाथ हेतु गृहीत इक्ष्वाकु का प्रमाण होता है।
(अ) अन्तर्नखमुष्टि प्रमाण (ब) पाणिपादतल (स) मुष्टि प्रदेश संमितम् (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(85) मनोविकार में वमन हेतु किसका प्रयोग उत्तम है।
(अ) धामार्गव (ब) कृतवेधन (स) वत्सक (द) उपर्युक्त सभी

(86) गम्भीर स्थिति के पाण्डु, कुष्ठ, प्लीहा रोग, आध्मान, गुल्म तथा गरविष में वमनार्थ प्रयुक्त होता है।
(अ) धामार्गव (ब) कृतवेधन (स) वत्सक (द) ताम्र रज चूर्ण

(87) चरकानुसार 'त्रिवृत्त' का विपाक होता है।
(अ) मधुर (ब) अम्ल (स) कटु (द) लवण

(88) चरकानुसार वमनार्थ 'निशोथ मूल' की मात्रा है।
(अ) अक्षमात्रं (ब) प्रकुचमात्रं (स) शुक्तिमात्रं (द) यवमात्रं

(89) निम्नलिखित में से किस योग का प्रयोग सभी ऋतुओं में किया जा सकता है।
(अ) पथ्यादि मोदक (ब) व्योषादि गुटिका (स) कल्याणक गुड (द) त्र्यूषणादि चूर्ण

(90) आरग्वध के पक्व फलों को तोडकर को 7 दिनों तक किसमें दबाकर रखा जाता है।
(अ) धान्य (ब) स्नुही क्षीर (स) सिकता (स) सुरा

(91) चरकानुसार 'स्नुही' के कितने भेद होते है।
(अ) दो (ब) तीन (स) चार (द) पांच

(92) चरकानुसार स्नुही क्षीर का संग्रह शिशिर ऋतु के अन्त में कितने वर्ष पुराने वृक्ष से करना चाहिए।
(अ) द्विवर्ष (ब) त्रिवर्ष (स) द्विवर्ष या त्रिवर्ष (स) चर्तुवर्ष

(93) निम्न में से सप्तला का प्रयोज्यांग है।
(अ) फल (ब) मूल (स) क्षीर (द) त्वक्

(94) दन्तीमूल कल्क का निम्न में से किसके साथ प्रयोग करने पर कामला नाशक होता है।
(अ) मधु के साथ (ब) गुड के साथ (स) द्राक्षा के साथ (द) हरिद्रा के साथ

(95) निम्न में किस द्रव्य के साथ दन्तीमूल का क्वाथ बनाकर प्रयोग करने पर पित्तज कास एवं पाण्डु नाशक होता है।
(अ) मधु के साथ (ब) गुड के साथ (स) द्राक्षा के साथ (द) हरिद्रा के साथ

(96) अपरिज्ञात कोष्ठ में वमन विरेचन के लिए प्रयुक्त औषध कैसा होना चाहिए।
(अ) तीक्ष्ण (ब) मध्य (स) मृदु (द) विषम

(97) 'मुकूलक' किसका पर्याय है।
(अ) दन्ती (ब) द्रवन्ती (स) दोनों (द) उपर्युक्त में से काई नहीं

(98) 'उन्मान' किसका पर्याय है।
(अ) द्रोण (ब) द्रोणी (स) कुम्भ (द) खारी

(99) चरकानुसार कौनसा स्नेह पाक 'वस्ति' में प्रयुक्त होता है।
(अ) मृदु पाक (ब) मध्य पाक (स) खर पाक (द) उपर्युक्त सभी

(100) चरकानुसार 'स्नेह पाक' के कितने भेद होते है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 5

Model Test Papers (Answer) – चरक कल्प स्थान

1. B	21. C	41. A	61. B	81. C
2. D	22. D	42. D	62. C	82. C
3. B	23. A	43. D	63. B	83. D
4. A	24. B	44. C	64. B	84. A
5. A	25. D	45. D	65. B	85. A
6. A	26. B	46. A	66. C	86. B
7. C	27. C	47. A	67. C	87. C
8. B	28. D	48. D	68. D	88. A
9. C	29. C	49. C	69. B	89. C
10. D	30. C	50. B	70. A	90. C
11. D	31. A	51. B	71. C	91. A
12. A	32. D	52. B	72. B	92. C
13. C	33. B	53. D	73. C	93. B
14. A	34. B	54. A	74. C	94. B
15. A	35. D	55. C	75. B	95. C
16. A	36. C	56. A	76. C	96. C
17. A	37. D	57. C	77. A	97. A
18. D	38. B	58. B	78. C	98. A
19. B	39. C	59. B	79. D	99. B
20. B	40. C	60. D	80. C	100. B

Shyam -Vidya Ayurved P.G. Entrance Coaching Center, Bhopal (M.P.)
Model Test Papers – चरक सिद्धि स्थान
By- Dr. Neelima Singh Lodhi (M.D.) Mob. 09300961664, 09993961427

(1) चरक ने स्नेहकाल मर्यादा अधिकतम कितने दिन की बताई है।
(अ) 3 दिन (ब) 5 दिन (स) 7 दिन (द) 12 दिन

(2) सम्यक् विरेचन कब होता है? (च. सि. 1/9)
(अ) उदीर्ण पित्ते (ब) मन्द कफे (स) उदीर्ण कफे (द) मन्द पित्ते

(3) पेया, विलेपी, अकृत और कृत यूष रस – का क्रमशः प्रधान शुद्धि में कितने अन्नकाल तक सेवन करना चाहिए।
(अ) त्रि (ब) द्वि (स) एकं (द) उपर्युक्त कोई नही

(4) पेया, विलेपी, अकृत और कृत यूष रस – का क्रमशः अवर शुद्धि में कितने अन्नकाल तक सेवन करना चाहिए।
(अ) त्रि (ब) द्वि (स) एकं (द) उपर्युक्त कोई नही

(5) जघन्य वमन में आने वाले वेगों की संख्या होती है।
(अ) 4 (ब) 6 (स) 8 (द) उपर्युक्त कोई नही

(6) वमन के मध्यम प्रकार में आने वाले वेगों की संख्या होती है।
(अ) 4 (ब) 6 (स) 8 (द) उपर्युक्त कोई नही

(7) प्रवर वमन में आने वाले वेगों की संख्या होती है।
(अ) 4 (ब) 6 (स) 8 (द) उपर्युक्त कोई नही

(8) जघन्य विरेचन में आने वाले वेगों की संख्या होती है।
(अ) 10 (ब) 20 (स) 30 (द) 15

(9) विरेचन के मध्यम प्रकार में आने वाले वेगों की संख्या होती है।
(अ) 10 (ब) 20 (स) 30 (द) 15

(10) विरेचन के उत्तम प्रकार आने वाले वेगों की संख्या होती है।
(अ) 10 (ब) 20 (स) 30 (द) 15

(11) काश्यप के अनुसार विरेचन के मध्यम प्रकार में आने वाले वेगों की संख्या होती है।
(अ) 10 (ब) 20 (स) 30 (द) 15

(12) विरेचन के प्रवर प्रकार में निकलने वाले विरेच्य द्रव्य की मात्रा होती है।
(अ) 4 प्रस्थ (ब) 3 प्रस्थ (स) 2 प्रस्थ (द) 1 प्रस्थ

(13) विरेचन के मध्य प्रकार में निकलने वाले विरेच्य द्रव्य की मात्रा होती है।
(अ) 4 प्रस्थ (ब) 3 प्रस्थ (स) 2 प्रस्थ (द) 1 प्रस्थ

(14) विरेचन के जघन्य प्रकार में निकलने वाले विरेच्य द्रव्य की मात्रा होती है।
(अ) 4 प्रस्थ (ब) 3 प्रस्थ (स) 2 प्रस्थ (द) 1 प्रस्थ

(15) वमन में निकलने वाले द्रव्य का परिमाण विरेचन का .... होता है।
(अ) द्विगुण (ब) त्रिगुण (स) चर्तुगुण (द) अर्द्ध

(16) किसके अतियोग से तृष्णा, मोह और मूर्च्छा हो जाते है।
(अ) वमन के (ब) विरेचन के (स) निरूह के (द) शिरोविरेचन के

(17) किसके दुर्योग से प्रतिश्याय, तन्द्रा, छर्दि और अरोचक हो जाते है।
(अ) वमन के (ब) विरेचन के (स) निरूह के (द) शिरोविरेचन के

(18) 'हृत्पार्श्वमूर्धेन्द्रियमार्ग शुद्धौ' – किसका लक्षण है।
(अ) सम्यक् वमित (ब) सम्यक् विरिक्त (स) सम्यक् नस्य (द) सम्यक् धूम्रपान

(19) 'हृद्वर्णशुद्धिः' – किसका लक्षण है। (च. सू. 16/6)
(अ) सम्यक् वमित (ब) सम्यक् विरिक्त (स) सम्यक् नस्य (द) सम्यक् धूम्रपान

(20) 'उरःशिरोलाघवं इन्द्रियाच्छयं स्रोतोविशुद्धिश्च' – किसका लक्षण है।
(अ) सम्यक् वमित (ब) सम्यक् विरिक्त (स) सम्यक् नस्य (द) सम्यक् धूम्रपान

(21) हृत्कण्ठेन्द्रिय संशुद्धिः लघुत्वं शिरसः शमः। – किसका लक्षण है।
(अ) सम्यक् वमित (ब) सम्यक् विरिक्त (स) सम्यक् नस्य (द) सम्यक् धूम्रपान

(22) 'स्रोतोविशुद्धि' – किसका लक्षण है।
(अ) सम्यक् वमित (ब) सम्यक् विरिक्त (स) सम्यक् नस्य (द) ब, स दोनों

(23) चरकानुसार वमन विरेचन के पश्चात् कौनसे दिन अनुवासन बस्ति देनी चाहिए।
(अ) 7 वें दिन (ब) 8 वें दिन (स) 9 वें दिन (द) 12 वें दिन

(24) चरकानुसार अनुवासन बस्ति के पश्चात् कितने दिन बाद निरूह बस्ति देनी चाहिए।
(अ) तीन दिन (ब) पॉच दिन (स) सात दिन (द) आठ दिन

(25) चरकानुसार शीत ऋतु में अनुवासन बस्ति देने का काल है।
(अ) दिन में (ब) रात्रि में (स) अपराह्न में (द) मध्य रात्रि में

(26) चरकानुसार शरद ऋतु में अनुवासन बस्ति देने का काल है।
(अ) दिन में (ब) रात्रि में (स) अपराह्न में (द) मध्य रात्रि में

(27) चरकानुसार वात दोष में अधिकतम कितनी बस्ति देनी चाहिए।
(अ) 1–3 (ब) 5–7 (स) 9–11 (द) 11–13

(28) चरकानुसार पित्त दोष में कितनी बस्ति देनी चाहिए।
(अ) 1–3 (ब) 5–7 (स) 9–11 (द) 16

(29) किस दोषाधिक्य जन्य रोगों में एक या तीन बस्तियों का प्रयोग करना चाहिए।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) रक्त

(30) किस दोषाधिक्य जन्य रोगों में पॉच या सात बस्तियों का प्रयोग करना चाहिए।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) रक्त

(31) किस दोषाधिक्य जन्य रोगों में नौ या ग्यारह बस्तियों का प्रयोग करना चाहिए।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) रक्त

(32) किसी भी स्थिति में विरेचन के कितने दिनों तक निरूह का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
(अ) तीन दिन (ब) पॉच दिन (स) सात दिन (द) आठ दिन

(33) सर्वार्थकारी शिशूवृद्धयूनां निरत्ययः – कौनसी बस्ति के लिए कहा गया है।
(अ) निरूह बस्ति (ब) अनुवासन बस्ति (स) मात्रा बस्ति (द) यापना बस्ति

(34) काले महान् पुष्पफलप्रदश्च – कौनसी बस्ति के लिए कहा गया है।
(अ) निरूह बस्ति (ब) अनुवासन बस्ति (स) मात्रा बस्ति (द) यापना बस्ति

(35) सर्वकालं निरत्ययः – कौनसी बस्ति के लिए कहा गया है।
(अ) निरूह बस्ति (ब) अनुवासन बस्ति (स) मात्रा बस्ति (द) यापना बस्ति

(36) सर्वकालं देयाः – – कौनसी बस्ति के लिए कहा गया है।
(अ) निरूह बस्ति (ब) अनुवासन बस्ति (स) मात्रा बस्ति (द) यापना बस्ति

(37) निम्न में से किस अवस्था मे निरूह बस्ति का निषेध है।
(अ) मूर्च्छा में (ब) राजयक्ष्मा मे (स) उरःक्षत में (द) उपर्युक्त सभी

(38) निम्न में से किसमें बृंहण बस्ति का निषेध है।
(अ) कुष्ठ (ब) प्रमेह (स) मेदो रोग (द) उपर्युक्त सभी

(39) चरकानुसार ने बस्ति को कहा है।
(अ) श्रेष्ठ चिकित्सा (ब) सम्पूर्ण चिकित्सा (स) अर्द्ध चिकित्सा (द) उत्तम चिकित्सा

(40) चरकानुसार निरूह बस्ति के अतियोग के लक्षण किसके अतियोग के लक्षण समान होते है।
(अ) वमन के (ब) विरेचन के (स) अनुवासन बस्ति के (द) शिरोविरेचन के

(41) चरकानुसार 'विकर्तिका' किसके अतियोग का लक्षण है।
(अ) वमन (ब) विरेचन (स) अनुवासन बस्ति (द) निरूह बस्ति

(42) चरकानुसार सम्यक् अनुवासन में शरीर में स्नेह कितने समय तक रहना चाहिए।
(अ) 1 मूर्हूत (ब) 1 प्रहर (स) ½ दिन (द) 3 याम

(43) निरूह वस्ति प्रत्यागमन काल =
(अ) 1 मूर्हूत (ब) 1 प्रहर (स) ½ दिन (द) 3 याम

(44) चरकानुसार कर्म बस्ति मे कुल वस्तियों की संख्या होती है।
(अ) 30 (ब) 12 (स) 18 (द) 16

(45) चरकानुसार कर्म बस्ति मे कुल निरूह वस्तियों की संख्या होती है।
(अ) 30 (ब) 12 (स) 18 (द) 16

(46) चरकानुसार कर्म बस्ति मे कुल अनुवासन वस्तियों की संख्या होती है।
(अ) 30 (ब) 12 (स) 18 (द) 16

(47) चरकानुसार काल बस्ति मे कुल वस्तियों की संख्या होती है।
(अ) 16 (ब) 10 (स) 6 (द) 8

(48) चरकानुसार काल बस्ति मे कुल निरूह वस्तियों की संख्या होती है।
(अ) 16 (ब) 10 (स) 6 (द) 8

(49) चरकानुसार काल बस्ति मे कुल अनुवासन वस्तियों की संख्या होती है।
(अ) 16 (ब) 10 (स) 6 (द) 8

(50) चरकानुसार योग बस्ति मे कुल वस्तियों की संख्या होती है।
(अ) 5 (ब) 3 (स) 6 (द) 8

(51) चरकानुसार काल बस्ति मे कुल निरूह वस्तियों की संख्या होती है।
(अ) 5 (ब) 3 (स) 6 (द) 8

(52) चरकानुसार काल बस्ति मे कुल अनुवासन वस्तियों की संख्या होती है।
(अ) 5 (ब) 3 (स) 6 (द) 8

(53) चरकानुसार 'तिमिर' शिरोविरेचन के .... से होता है।
(अ) अयोग (ब) अतियोग (स) मिथ्या योग (द) हीन योग

(54) चरकानुसार प्रबल दोष में कितनी बार नस्य देते है।
(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) शून्य

(55) चरकानुसार बस्त्यादि पंचकर्म के पश्चात् कितने समय तक अपथ्य का परित्याग करना चाहिए।
(अ) 15 दिन (ब) 1 माह (स) दुगने समय तक (द) चौगुने समय तक

(56) वम्य रोगी है।
(अ) हृदयरोग (ब) उर्ध्वरक्तपित्त (स) अधोगरक्तपित्त (द) शंखक

(57) मूत्राघात के रोगी को वमन कराने से उसे निम्न में से क्या हो जाता हैं।
(अ) मूत्रकृच्छ्र (ब) तीव्रतर शूल (स) उदावर्त (द) गुल्म

(58) 'नवज्वर' में विरेचन देने से कौनसा दोष प्रकुपित होता है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) रक्त

(59) अनास्थाप्य रोगी है।
(अ) मधुमेह (ब) अजीर्ण (स) श्वास (द) उपर्युक्त सभी

(60) 'नवज्वर, पाण्डु तथा प्रमेह' में निरूह बस्ति देने से निम्न में से क्या हो जाता हैं।
(अ) विषम ज्वर (ब) रक्तपित्त (स) उदररोग (द) मंदाग्नि

(61) चरकानुसार ग्रीष्म ऋतु में नस्य का काल होता है।
(अ) पूवाह्ने (ब) मध्याह्ने (स) अपराह्ने (द) मध्य रात्रि

(62) बंसत ऋतु में नस्य का काल होता है।
(अ) पूवाह्ने (ब) मध्याह्ने (स) अपराह्ने (द) मध्य रात्रि

(63) शीत ऋतु में नस्य का काल होता है।
(अ) पूवाह्ने (ब) मध्याह्ने (स) अपराह्ने (द) मध्य रात्रि

(64) चरकानुसार 12 वर्ष के बालक के लिए बस्ति नेत्र की लम्बाई कितनी होती है।
(अ) 6 अंगुल (ब) 8 अंगुल (स) 10 अंगुल (द) 12 अंगुल

(65) सुश्रुत के अनुसार 16 वर्ष के बालक के लिए बस्ति नेत्र की लम्बाई कितनी होती है।
(अ) 6 अंगुल (ब) 8 अंगुल (स) 10 अंगुल (द) 12 अंगुल

(66) चरकानुसार बस्ति नेत्र के मूल भाग में बस्ति को बॉधने के लिए कितनी कर्णिका होनी चाहिए।
(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) 4

(67) कौनसी अवस्था में शयन कराकर बस्ति दी जानी चाहिए। (च सि. 3/24)
(अ) उत्तान (ब) दक्षिणपार्श्व (स) वामपार्श्व (द) न्युब्ज

(68) अति लवण युक्त बस्ति देने का क्या परिणाम होता है।
(अ) दाह (ब) अतिसार (स) दोनो (द) उपरोक्त कोई नहीं

(69) निरूह बस्ति द्रव्य में औषध द्रव्यों के मिलाने का क्रम होता है।
(अ) मधु → लवण → स्नेह → कल्क → क्वाथ (ब) लवण → मधु → स्नेह → कल्क → क्वाथ
(स) स्नेह → मधु → लवण → कल्क → क्वाथ (द) उपर्युक्त मे से कोई नहीं

(70) प्रथम निरूह बस्ति किस दोष को अपने स्थान से हटाती है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) उपरोक्त सभी

(71) द्वितीय निरूह बस्ति किस दोष को अपने स्थान से हटाती है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) उपरोक्त सभी

(72) निरूह बस्ति में वात दोष हेतु स्नेह का प्रमाण क्या होना चाहिए।
(अ) चतुर्थ भाग (ब) षष्ठ भाग (स) अष्ट भाग (द) उपरोक्त कोई नहीं

(73) निरूह वस्ति में कफ दोष हेतु स्नेह का प्रमाण क्या होना चाहिए।
(अ) चतुर्थ भाग (ब) षष्ठ भाग (स) अष्ट भाग (द) उपरोक्त कोई नहीं

(74) द्वादश प्रसृत निरूह बस्ति में वात दोष हेतु स्नेह का प्रमाण क्या होना चाहिए।
(अ) 3 प्रसृत (ब) 2 प्रसृत (स) 1 प्रसृत (द) 1.5 प्रसृत

(75) द्वादश प्रसृत निरूह बस्ति में पित्त दोष हेतु सैंधव का प्रमाण क्या होना चाहिए।
(अ) 3 प्रसृत (ब) 2 प्रसृत (स) 1 प्रसृत (द) 1.5 प्रसृत

(76) द्वादश प्रसृत निरूह बस्ति में कफ दोष हेतु मधु का प्रमाण क्या होना चाहिए।
(अ) 3 प्रसृत (ब) 2 प्रसृत (स) 1 प्रसृत (द) 1.5 प्रसृत

(77) 14 वर्ष हेतु निरूह बस्ति की मात्रा होती है।
(अ) 8 प्रसृत (ब) 10 प्रसृत (स) 12 प्रसृत (द) 7 प्रसृत

(78) 18 वर्ष हेतु निरूह बस्ति की मात्रा होती है।
(अ) 8 प्रसृत (ब) 12 प्रसृत (स) 10 प्रसृत (द) 7 प्रसृत

(79) 50 वर्ष हेतु निरूह वस्ति की मात्रा होती है।
(अ) 8 प्रसृत (ब) 12 प्रसृत (स) 10 प्रसृत (द) 16 प्रसृत

(80) 100 वर्ष हेतु निरूह बस्ति की मात्रा होती है।
(अ) 8 प्रसृत (ब) 10 प्रसृत (स) 12 प्रसृत (द) 16 प्रसृत

(81) निरूह वस्ति की उत्तम मात्रा होती है।
(अ) 12 पल (ब) 12 प्रस्थ (स) 12 प्रसृत (द) 12 कर्ष

(82) अनुवासन वस्ति की उत्तम मात्रा होती है।
(अ) 6 पल (ब) 12 पल (स) 6 प्रसृत (द) 12 कर्ष

(83) चरकानुसार 'सर्वसंसर्गकृत रोगों' में कौनसी निरूह बस्ति देनी चाहिए।
(अ) दशमूलादि निरूह बस्ति (ब) रास्नादि निरूह बस्ति (स) पुनर्नवादि निरूह बस्ति (द) एरण्डमूलादि निरूह बस्ति

(84) चरकानुसार वात दोष में कितनी निरूह बस्ति देते है।
(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) विषम

(85) चरकानुसार पित्त दोष में कितनी निरूह बस्ति देते है।
(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) विषम

(86) चरकानुसार कफ दोष में कितनी निरूह बस्ति देते है।
(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) विषम

(87) जनयेत् प्रजानां च प्रजां स्त्रीणां तथा नृणाम् [illegible] कौनसी बस्ति के लिए कहा गया है।
(अ) निरूह बस्ति (ब) [illegible] (स) मात्रा बस्ति (द) यापना बस्ति

(88) स्नेह बस्ति व्यापद की संख्या =
(अ) 7 (ब) 6 (स) 15 (द) 9

(89) स्नेह बस्ति के किस आवृत होने पर तमक श्वास हो जाता है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) सभी दोष

(90) स्नेह बस्ति के किस आवृत होने पर छर्दि, मूर्च्छा और ग्लानि हो जाता है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) सभी दोष

(91) चरकानुसार मात्रा बस्ति की मात्रा कितनी होती है।
(अ) स्नेह की ह्रस्व मात्रा सम (ब) 6 पल (स) 3 पल (द) स्नेह बस्ति का ¼ भाग

(92) सुश्रुतानुसार मात्रा बस्ति की मात्रा कितनी होती है।
(अ) स्नेह की ह्रस्व मात्रा सम (ब) 6 पल (स) 3 पल (द) स्नेह बस्ति का ¼ भाग

(93) चरकानुसार बस्ति दोषों की संख्या =
(अ) 10 (ब) 6 (स) 8 (द) 7

(94) चरकानुसार बस्ति नेत्र दोषों की संख्या है ?
(अ) 10 (ब) 6 (स) 8 (द) 7

(95) चरकानुसार बस्ति दाता दोषों की संख्या =
(अ) 10 (ब) 6 (स) 8 (द) 7

(96) चरकानुसार 'प्रावृट् ऋतु' के माह है।
(अ) शुचि भाक्र (ब) नभ नभस्य (स) शुचि नभ (द) शक्र नभ

(97) चरकानुसार 'बसन्त ऋतु' के माह है।
(अ) मधु माधव (ब) तप तपस्य (स) माधव तप (द) मधु तपस्य

(98) नातिस्निग्धशरीराय दद्यात् स्नेहविरेचनम्। स्नेहोत्क्लिष्टशरीराय रूक्षं दद्यात् विरेचनम् –सूत्र का वर्णन चरक में कहाँ है
(अ) च. क. 12/79 (ब) च. सि. 6/9 (स) दोनो (द) चरक में वर्णन नहीं है।

(99) संशोधन के समय चतुष्पाद की विगुणता से कुल कितनी व्यापत्तियाँ हो सकती है।
(अ) 15 (ब) 12 (स) 10 (द) 6

(100) सुश्रुतानुसार वमन विरेचन व्यापत की संख्या होती है।
(अ) 15 (ब) 12 (स) 10 (द) 6

AYURVEDA ... COACHING CENTRE

(101) निम्न में से संशोधन के अतियोग से उत्पन्न व्यापत्ति है।
(अ) परिकर्तिका (ब) जीवादान (स) गुदभ्रंश (द) उपर्युक्त सभी

(102) 'गुदभ्रंश' किसका व्यापद् है।
(अ) वमन (ब) विरेचन (स) निरूह बस्ति (द) अ, ब दोनों

(103) चरकानुसार 'परिकर्तिका' किसके अतियोग का लक्षण है।
(अ) वमन (ब) विरेचन (स) निरूह बस्ति (द) उपर्युक्त सभी

(104) चरकानुसार किस रोग में संशोधन कराने पर औषध का विपरीत मार्ग से प्रवर्तन होने लगता है।
(अ) अजीर्ण (ब) मूर्च्छा (स) मदात्यय (द) उपर्युक्त सभी

(105) सुश्रुतानुसार निरूह बस्ति व्यापत की संख्या होती है।
(अ) 15 (ब) 12 (स) 10 (द) 9

(106) चरकानुसार निरूह बस्ति व्यापत की संख्या होती है।
(अ) 15 (ब) 12 (स) 10 (द) 9

(107) 'जीवादान' किसका व्यापद् है।
(अ) वमन विरेचन (ब) स्नेह बस्ति (स) निरूह बस्ति (द) अ, स दोनों

(108) 'हिक्का' किसका व्यापद् है।
(अ) वमन विरेचन (ब) स्नेह बस्ति (स) निरूह बस्ति (द) नस्य व्यापद्

(109) 'शिरः शूल' किसका व्यापद् है।
(अ) वमन विरेचन (ब) स्नेह बस्ति (स) निरूह बस्ति (द) नस्य व्यापद

(110) 1 प्रसृत =
(अ) 2 पल (ब) 2 कर्ष (स) 2 शुक्ति (द) 2 प्रस्थ

(111) चरक संहिता सिद्धि स्थान में उपद्रव युक्त अतिसार के कितने भेद बतायें गए है।
(अ) 2 (ब) 6 (स) 36 (द) अ, स दानों

(112) चरकानुसार अतिसार के भेद होते है।
(अ) 2 (ब) 6 (स) 36 (द) उपर्युक्त सभी

(113) खाली पेट नहीं कराते है।
(अ) वमन (ब) विरेचन (स) निरूह बस्ति (द) अ, स दोनों

(114) चरक सिद्धि स्थान के अनुसार शाखाश्रित मर्मों की अपेक्षा कौनसे मर्म अधिक महत्वपूर्ण होते है।
(अ) कोष्ठाश्रित (ब) स्कन्धाश्रित (स) धात्वाश्रित (द) सन्ध्याश्रित

(115) चरकानुसार 'चेष्टानाश' कौनसी मर्माभिघात का लक्षण है।
(अ) त्रिमर्म (ब) वस्ति (स) शिर (द) हृदय

(116) चरकानुसार श्वास, कास तथा स्वरभेद निम्न में से कौनसी मर्म पर आघात होने से होते है
(अ) श्रृंगाटक (ब) बस्ति (स) शिर (द) हृदय

(117) चरकानुसार 'चित्तनाश' कौनसी मर्माभिघात का लक्षण है।
(अ) त्रिमर्म (ब) वस्ति (स) शिर (द) हृदय

(118) चरकानुसार उन्माद, अपस्मार तथा प्रलाप निम्न में से कौनसी मर्म पर आघात होने से होते है
(अ) श्रृंगाटक (ब) बस्ति (स) शिर (द) हृदय

(119) चरक संहिता में 'निद्रा' का वर्णन किस अध्याय में हैं।
(अ) अष्टौनिन्दितीय (ब) लंघन बृंहणीय (स) त्रिमर्मीय चिकित्सा (द) त्रिमर्मीय सिद्धि

(120) चरक संहिता में 'तन्द्रा' का वर्णन किस अध्याय में हैं।
(अ) अष्टौनिन्दितीय (ब) लंघन बृंहणीय (स) त्रिमर्मीय चिकित्सा (द) त्रिमर्मीय सिद्धि

(121) चरक संहिता के अध्याय वर्णित विषय के संदर्भ में कौनसा कथन सत्य नहीं है।
(अ) 'अपतंत्रक' – त्रिमर्मीय सिद्धि (ब) 'आक्षेपक' – त्रिमर्मीय सिद्धि
(स) 'हृद्रोग' – त्रिमर्मीय चिकित्सा (द) 'अर्दित' – वातव्याधि चिकित्सा

(122) कपोत इव कूजेच्च निःसंज्ञः......... ।– किसका लक्षण है।
(अ) अपतानक (ब) अपतंत्रक (स) क्षयज कास (द) क्षयत कास

(123) चरकानुसार मूत्र दोषों की संख्या =
(अ) 8 (ब) 12 (स) 13 (द) 20

(124) चरकानुसार मूत्राघात की संख्या =
(अ) 8 (ब) 12 (स) 13 (द) 20

(125) चरकानुसार मूत्रकृच्छ्र रोगों की संख्या =
(अ) 8 (ब) 12 (स) 13 (द) 20

(126) सुश्रुतानुसार मूत्राघात की संख्या =
(अ) 8 (ब) 12 (स) 13 (द) 20

(127) वाग्भट्टानुसार मूत्राघात की संख्या =
(अ) 8 (ब) 12 (स) 13 (द) 20

(128) माधव के अनुसार मूत्राघात की संख्या =
(अ) 8 (ब) 12 (स) 13 (द) 20

(129) चिरं धारयतो मूत्रं त्वरया न प्रवर्तते। – किसका लक्षण है।
(अ) वातबस्ति (ब) मूत्रातीत (स) बस्तिकुण्डल (द) मूत्रजठर

(130) अपक्ति कौनसे वस्ति रोग का लक्षण है।
(अ) वातबस्ति (ब) मूत्रातीत (स) बस्तिकुण्डल (द) मूत्रजठर

(131) 'रक्त वर्ण का मूत्रत्याग करना' कौनसे वस्ति रोग का लक्षण है।
(अ) वातबस्ति (ब) मूत्रातीत (स) मूत्रौकसाद (द) मूत्रजठर

(132) 'अश्मरी सम शूलं' कौनसे वस्ति रोग का लक्षण है।
(अ) वातबस्ति (ब) रक्तग्रन्थि (स) उष्णवात (द) मूत्रजठर

(133) 'त्रिदोषज' मूत्र दोष है।
(अ) वातबस्ति (ब) वातकुण्डिलिका (स) बस्तिकुण्डल (द) मूत्रजठर

(134) चरकानुसार पुरूष में उत्तर वस्ति नेत्र का प्रमाण =
(अ) 12 अंगुल (ब) 14 अंगुल (स) 10 अंगुल (द) उपर्युक्त में से कोई नही

(135) सुश्रुतानुसार पुरूष में उत्तर वस्ति नेत्र का प्रमाण =
(अ) 12 अंगुल (ब) 14 अंगुल (स) 10 अंगुल (द) उपर्युक्त में से कोई नही

(136) स्त्रियो में अपत्य मार्ग हेतु उत्तर वस्ति के पुष्पनेत्र का प्रमाण होता है।
(अ) 1 अंगुल (ब) 2 अंगुल (स) 3 अंगुल (द) 4 अंगुल

(137) स्त्रियो में मूत्रमार्ग हेतु उत्तर वस्ति के पुष्पनेत्र का प्रमाण होता है।
(अ) 1 अंगुल (ब) 2 अंगुल (स) 3 अंगुल (द) 4 अंगुल

(138) चरकानुसार पुरूष हेतु उत्तर वस्ति की मात्रा =
(अ) 1 पल (ब) [illegible] (स) 1 प्रस्थ (द) 1/2 पल

(139) कौनसी अवस्था में शयन कराकर स्त्रियो में उत्तर बस्ति दी जानी चाहिए। (च सि. 9/67)
(अ) उत्तान (ब) दक्षिणपार्श्व (स) वामपार्श्व (द) न्युब्ज

(140) चरकानुसार शंखक रोग में कौनसा दोष होता है।
(अ) त्रिदोष (ब) वातज/वातकफज (स) रक्त, पित्त, वात (द) रक्त, मारूत

(141) चरकानुसार अर्द्धावभेदक रोग में कौनसा दोष होता है ।
(अ) त्रिदोष (ब) वातज/वातकफज (स) रक्त, पित्त, वात (द) रक्त, मारूत

(142) चरकानुसार सूर्यावर्त्त रोग में कौनसा दोष होता है ।
(अ) त्रिदोष (ब) वातज/वातकफज (स) रक्त, पित्त, वात (द) रक्त, मारूत

(143) सुश्रुतानुसार अनन्तवात रोग में कौनसा दोष होता है ।
(अ) त्रिदोष (ब) वातज/वातकफज (स) रक्त, पित्त, वात (द) रक्त, मारूत

(144) परं त्र्यहाज्जावितं चेत् प्रत्याख्यार्चरेत् कियाम्।– किसका लक्षण है।
(अ) अनन्तवात (ब) अर्धावभेदक (स) सूर्यावर्त (द) शंखक

(145) शिरःकायविरेकौ च मूर्ध्ना त्रिस्नेहधारणम्।– का निर्देश किसकी चिकित्सा में मिलता है।
(अ) अनन्तवात (ब) अर्धावभेदक (स) सूर्यावर्त (द) शंखक

(146) नयनं वाऽथवा श्रोत्रमतिवृद्धो विनाशयेत। – किसका लक्षण है।
(अ) अनन्तवात (ब) अर्धावभेदक (स) सूर्यावर्त (द) शंखक

(147) हन्यात् सिरार्कावर्तनाशनैः। – सिराव्यधन का निर्देश किसकी चिकित्सा में मिलता है।
(अ) अर्धावभेदक (ब) अनन्तवात (स) सूर्यावर्त (द) शंखक

(148) उपनाहः शिरो बस्तिः दहनं च शस्यते। – का निर्देश किसकी चिकित्सा में मिलता है।
(अ) अनन्तवात (ब) अर्धावभेदक (स) सूर्यावर्त (द) शंखक

(149) 'शिरःकम्प' सर्वप्रथम वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) भाव प्रकाश

(150) 'सूर्यावर्त्त विपयर्य' का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) विदेह निमि (द) गद निग्रह

(151) 'द्वन्द्वज सूर्यावर्त्त' का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) विदेह निमि (द) गद निग्रह

(152) 'द्वन्द्वज सूर्यावर्त्त' में कौनसा दोष होता है।
(अ) त्रिदोष (ब) वात, पित्त (स) कफ, पित्त (द) वात, रक्त

(153) चरकानुसार निम्न में से किस रोग में 3 रात्रि में मृत्यु होती है।
(अ) रोहिणी (ब) शंखक (स) अ, ब दोनों (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(154) चरक संहिता में 'शिरःकम्प' किस रोग में सम्मिलित है
(अ) अनन्तवात (ब) अर्धावभेदक (स) सूर्यावर्त (द) शंखक

(155) नासा हि शिरसो द्वारं तेन तद्व्याप्य हन्ति तान्। – किस आचार्य का कथन हैं।
(अ) सुश्रुत (ब) चरक (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्धर

(156) द्वारं हि शिरसो नासा तेन तद् व्याप्य हन्ति तान्। – किस आचार्य का कथन हैं।
(अ) सुश्रुत (ब) चरक (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्धर

(157) अष्टांग हृदयाकार के अनुसार नस्य के कितने भेद होते है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 5 (द) 7

(158) सूची –I सूची –II – के साथ सुमेलित कीजिए और सही कूट चुनिए

सूची –I	सूची –II
A. चरक	1. नस्य भेद : 5 – नावन, अवपीड, ध्मापनं, धूम एवं प्रतिमर्श
B. सुश्रुत	2. नस्य भेद : 2 – नस्य एवं शिरोविरेचन
C. अष्टांग हृदय	3. नस्य भेद : 3 – विरेचन, बृंहण एवं शमन
D. शारर्ग्धर	4. नस्य भेद : 2 – रेचन एवं स्नेहन

कूट :–	A	B	C	D		A	B	C	D
(अ)	1	2	3	4	(ब)	1	2	3	4
(स)	3	2	1	4	(द)	4	3	2	1

(159) चरकानुसार क्रियाशीलता के आधार पर नस्य के कितने भेद होते है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 5 (द) 7

(160) 'शोधन और स्तम्भन' किस नस्य के भेद है।
(अ) नावन (ब) अवपीड (स) ध्मापन (द) प्रतिमर्श

(161) 'स्नेहन और शोधन' किस नस्य के भेद है
(अ) नावन (ब) अवपीड (स) ध्मापन (द) प्रतिमर्श

(162) चरकानुसार देहस्रोत्रोविधोधनार्थ कौनसा नस्य होता है।
(अ) नावन (ब) अवपीड (स) ध्मापन (द) प्रतिमर्श

(163) चरकानुसार 'शमन' किसका भेद है ?
(अ) द्रव्य (ब) लंघन (स) नस्य (द) उपरोक्त सभी का

(164) चरकानुसार 'शिर में स्तम्भता, सुप्ति और गुरुता होने पर निम्न में से कौनसे नस्य का प्रयोग करना चाहिए ?
(अ) रेचन (ब) तर्पण (स) शमन (द) उपर्युक्त सभी

(165) चरकानुसार 'शिरःकम्प' में कौनसे नस्य का प्रयोग करना चाहिए ?
(अ) रेचन (ब) तर्पण (स) शमन (द) उपर्युक्त सभी

(166) चरकानुसार 'अर्दित' में कौनसे नस्य का प्रयोग करना चाहिए ?
(अ) रेचन (ब) तर्पण (स) शमन (द) उपर्युक्त सभी

(167) चरकानुसार 'रक्तपित्त' में कौनसे नस्य का प्रयोग करना चाहिए ?
(अ) रेचन (ब) तर्पण (स) शमन (द) उपर्युक्त सभी

(168) वाग्भट्टानुसार प्रतिमर्श नस्य की मात्रा होती है।
(अ) 2 बूंद (ब) 4 बूंद (स) 6 बूंद (द) 8 बूंद

(169) 'निर्दोष और उभयार्थकृत' नस्य है।
(अ) नावन (ब) अवपीड (स) ध्मापन (द) प्रतिमर्श

(170) चरकानुसार वस्ति के भेद है।
(अ) 2 (ब) 3 (स) 16 (द) 30

(171) चरक संहिता के सिद्धि स्थान के किस अध्याय में सम्भाषा परिषद का उल्लेख मिलता है।
(अ) त्रिमर्मीया–सिद्धि (ब) वस्ति सिद्धि (स) फलमात्रा सिद्धि (द) उत्तर वस्ति सिद्धि

(172) चरक संहिता के सिद्धि स्थान के अनुसार श्रेष्ठ पाण्डु रोगहर है।
(अ) मदनफल (ब) जीमूतक (स) इक्ष्वाकु (द) धामार्गव

(173) चरक संहिता के सिद्धि स्थान के अनुसार श्रेष्ठ कुष्ठ रोगहर है।
(अ) मदनफल (ब) जीमूतक (स) इक्ष्वाकु (द) धामार्गव

(174) चरक संहिता के सिद्धि स्थान के अनुसार श्रेष्ठ प्रमेह नाशक है।
(अ) मदनफल (ब) जीमूतक (स) इक्ष्वाकु (द) धामार्गव

(175) चरक संहिता के सिद्धि स्थान के अनुसार 'सर्वगदाविरोधि' है।
(अ) मदनफल (ब) जीमूतक (स) इक्ष्वाकु (द) धामार्गव

(176) चरक संहिता के सिद्धि स्थान के अनुसार 'हृदामय में हितकर' है।
(अ) अर्जुन (ब) पुष्करमूल (स) कोठफलम् (द) कुटजफलम्

(177) चरक संहिता के सिद्धि स्थान के अनुसार 'उदररोग में हितकर' है।
(अ) तक्र (ब) कृतवेधन (स) कोठफलम् (द) कुटजफलम्

(178) किस ऋर्षि के अनुसार 'कफपित्तहर' होने से जीमूतक फलों में श्रेष्ठ है।
(अ) शौनक (ब) वडिश (स) धार्मागव (द) काप्य

(179) किस ऋर्षि के अनुसार 'बलघ्न कफपित्तहारि' होने से कुटज फलों में श्रेष्ठ है।
(अ) शौनक (ब) वडिश (स) धार्मागव (द) काप्य

(180) किस ऋर्षि के अनुसार 'कफपित्तनिबर्हणं' होने से कुटज फलों में श्रेष्ठ है।
(अ) शौनक (ब) वडिश (स) धार्मागव (द) काप्य

(181) किस ऋर्षि के अनुसार 'वातलं कफपित्तं प्रबल हरेत्' होने से कुटज फलों में श्रेष्ठ है।
(अ) शौनक (ब) वडिश (स) धार्मागव (द) काप्य

(182) चरक संहिता के सिद्धि स्थान के किस अध्याय में पशुओं हेतु वस्ति नेत्र के प्रमाणों का उल्लेख मिलता है
(अ) त्रिमर्मीया–सिद्धि (ब) वस्ति सिद्धि (स) फलमात्रा सिद्धि (द) उत्तर वस्ति सिद्धि

(183) उष्ट्र हेतु वस्ति नेत्र का प्रमाण है।
(अ) 22 अंगुल (ब) 18 अंगुल (स) 16 अंगुल (द) 10 अंगुल

(184) अश्व हेतु वस्ति नेत्र का प्रमाण है।
(अ) 22 अंगुल (ब) 18 अंगुल (स) 16 अंगुल (द) 10 अंगुल

(185) चरकानुसार 'सदातुर' है।
(अ) श्रोत्रिय (ब) राजसेवक (स) वैष्या (द) उपर्युक्त सभी

(186) चरकानुसार महादोषकर भाव होते है।
(अ) 3 (ब) 5 (स) 8 (द) 9

(187) चरक संहिता में अष्ट महादोषकर भावों का वर्णन किस अध्याय में आया है।
(अ) त्रिमर्मीया–सिद्धि (ब) वस्ति सिद्धि (स) फलमात्रा सिद्धि (द) उत्तर वस्ति सिद्धि

(188) यापना वस्ति व्यापत होते है।
(अ) 10 (ब) 8 (स) 12 (द) 7

(189) सर्वकाल देय वस्ति है।
(अ) निरूह (ब) अनुवासन (स) उत्तर (द) यापना

(190) प्रतिदिन देय वस्ति है।
(अ) निरूह (ब) अनुवासन (स) उत्तर (द) यापना

(191) यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्। -- किसने कहा है।
(अ) चरक ने (ब) सुश्रुत ने (स) भट्टारहरिश्चन्द्र ने (द) दृढबल ने

(192) चरक संहिता के अंतिम अध्याय का नाम है।
(अ) त्रिमर्मीया–सिद्धि (ब) वस्ति सिद्धि (स) फलमात्रा सिद्धि (द) उत्तर वस्ति सिद्धि

(193) चरकानुसार तंत्र युक्ति की संख्या होती है।
(अ) 32 (ब) 36 (स) 40 (द) 42

(194) भट्टार हरिश्चंद्र के अनुसार तंत्र युक्ति की संख्या होती है।
(अ) 32 (ब) 36 (स) 40 (द) 42

(195) तंत्र युक्ति का सर्वप्रथम उल्लेख सर्वप्रथम किसमें मिलता है।
(अ) चरक संहिता (ब) सुश्रुत संहिता (स) कौटिल्य अर्थशास्त्र (द) अर्थववेद में

(196) संकीर्ण, लीन और गूढ का प्रकाशन किसके द्वारा होता है।
(अ) तंत्र गुण (ब) तंत्र युक्ति (स) ताच्छील्य (द) अर्थाश्रय

(197) तंत्र युक्ति की संख्या 40 किसने मानी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) भट्टारहरिश्चन्द्र (द) भावप्रकाश

(198) सुश्रुत ने कौनसी तन्त्र युक्ति नहीं बतलाई है।
(अ) एकान्त (ब) पूर्वपक्ष (स) प्रयोजन (द) विकल्प

(199) 'परिप्रश्न' का तंत्रयुक्ति में समावेश किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) भट्टार हरिशचन्द्र (द) भाव प्रकाश

(200) 'व्युत्क्रान्ताभिधान' का तंत्रयुक्ति में समावेश किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) भट्टार हरिशचन्द्र (द) भाव प्रकाश

Model Test Papers (Answer) – चरक सिद्धि स्थान

1. C	21. D	41. C	61. A	81. C
2. B	22. D	42. D	62. A	82. A
3. A	23. C	43. A	63. B	83. C
4. C	24. A	44. A	64. A	84. A
5. A	25. A	45. B	65. C	85. B
6. B	26. B	46. C	66. B	86. C
7. C	27. C	47. A	67. B	87. B
8. A	28. B	48. B	68. C	88. B
9. B	29. C	49. C	69. A	89. B
10. C	30. B	50. D	70. A	90. C
11. D	31. A	51. B	71. B	91. A
12. A	32. C	52. A	72. A	92. D
13. B	33. A	53. B	73. C	93. B
14. C	34. B	54. C	74. A	94. B
15. D	35. C	55. C	75. B	95. A
16. A	36. D	56. C	76. A	96. C
17. B	37. D	57. B	77. A	97. D
18. A	38. D	58. A	78. B	98. C
19. B	39. C	59. D	79. C	99. C
20. C	40. B	60. D	80. B	100. A

101. D	121. B	141. B	161. A	181. D
102. D	122. B	142. D	162. C	182. C
103. D	123. C	143. A	163. D	183. B
104. A	124. A	144. D	164. A	184. C
105. D	125. A	145. C	165. B	185. D
106. B	126. B	146. B	166. B	186. C
107. A	127. D	147. A	167. C	187. D
108. C	128. C	148. B	168. A	188. D
109. C	129. B	149. A	169. D	189. D
110. A	130. D	150. C	170. B	190. B
111. C	131. C	151. D	171. C	191. D
112. D	132. B	152. B	172. D	192. D
113. A	133. C	153. C	173. B	193. B
114. B	134. A	154. A	174. C	194. A
115. C	135. B	155. C	175. A	195. C
116. C	136. D	156. B	176. D	196. B
117. D	137. B	157. C	177. B	197. C
118. D	138. D	158. A	178. A	198. C
119. A	139. A	159. B	179. B	199. C
120. D	140. C	160. B	180. C	200. C